Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी-व्युत्पत्ति-कोश

DICTIONARY OF HINDI ETYMOLOGY

डॉ० नरेश कुमार

इण्डो-विजन प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Gyaan Kosha

प्रस्तुत 'हिन्दी-व्युत्पत्ति-कोश' का निर्माण भाषा-इतिहास, ध्वनि-नियमों और उनमें परिवर्तन को दृष्टि में रखकर किया गया है, जिससे शब्द के अर्थ-विकास और रूप-विकास की क्रमिक-शृंखला को समझने में सहायता मिल सके। यत्र-तत्र भारतीय एवं विदेशी भाषाओं और बोलियों में प्रयुक्त शब्दावली का भी उल्लेख किया गया है। निश्चय ही इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन से व्युत्पत्ति के निर्णय में सहायता मिली है। पूर्वाग्रहों से ग्रस्त न होकर व्युत्पत्ति तर्क-संगत भाषा-वैज्ञानिक आधार पर दी गई है। वस्तुतः यह आवश्यक नहीं है कि हिन्दी में प्रचलित सभी शब्द संस्कृत से व्युत्पन्न हों। अतः व्युत्पत्ति-निर्धारण में शब्द के आरम्भिक स्वरूप, प्रयोग और विकास-क्रम पर सम्पादक की सतत् दृष्टि रही है। प्रत्येक शब्द के अर्थ का निरूपण प्रामाणिक साहित्य की सामग्री के आधार पर किया गया है। यदि एक शब्द के कई अर्थ हैं, तो उनकी व्युत्पत्ति अलग से दी गई है। अनेक जनपदीय शब्दों को इस कोश में सर्वप्रथम समाविष्ट किया गया है और अनेक शब्दों की व्युत्पति इस कोश में पहली बार दी गई है। जिन शब्दों की व्युत्पत्ति सन्देहास्पद रही है अथवा जिनकी विकास-प्रक्रिया शब्द-कोशों में नहीं दिखाई गई है अथवा हिन्दी-साहित्य में प्रयुक्त जिन शब्दों का समावेश हिन्दी के शब्द-कोशों में नहीं हुआ है, उनको इस कोश में समाविष्ट किया गया है। निःसन्देह हिन्दी में प्रामाणिक व्युत्पत्ति-कोश के अभाव की पूर्ति कुछ सीमा तक प्रस्तुत कोश से हो सकेगी।

मूल्य : १२५-०० रु०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदरणीय प्रो. श्री सत्यव्रत जी को सादर भेंट।

[illegible]
24-7.86

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी-व्युत्पत्ति-कोश

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी-व्युत्पत्ति-कोश

(हिन्दी भाषा का तुलनात्मक एवं व्युत्पत्तिमूलक कोश)

Dictionary of Hindi Etymology

(A Comparative and Etymological Dictionary of the Hindi Language)

संपादक

डॉ० नरेश कुमार

प्रकाशक

इण्डो-विज़न प्रा० लि०,

II ए २२०, नेहरुनगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ० प्र०)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम संस्करण १९८५

C डॉ नरेश कुमार

मूल्य १२५ रु०

मुद्रक :

तथागत प्रिंटिंग प्रेस, १५०, तेजाब मिल, जी० टी० रोड, गाजियाबाद-२०१००१,
उ० प्र०, भारत ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूमिका

शब्दों की व्युत्पत्ति का निर्माण काफ़ी कठिन काम है, इसीलिए विश्व में बहुत कम भाषाओं के व्युत्पत्ति-कोश बन पाए हैं, और जो बने भी हैं उनमें बहुत ही कम संतोषजनक हैं। भारतीय भाषाओं पर तो इस दृष्टि से और भी कम काम हुआ है। कुछ थोड़े शब्दों पर टर्नर ने अवश्य काम किया था जो आधुनिक भारतीय भाषाओं के शब्दों की व्युत्पत्ति के लिए काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। भारतीय विद्वानों में व्युत्पत्ति पर ध्यान देते हुए गुजराती पर मेहता तथा मेहता ने १९२५ में, बंगला पर ज्ञानेन्द्र मोहनदास ने १९३१ में, मराठी पर कुलकर्णी ने १९४६ में, तथा असमी पर हेमचन्द्र बरुआ ने १९५५ में अपने-अपने कोश प्रकाशित किए। हिंदी पर पिछली सदी में प्लैट्स ने सबसे पहले उल्लेख्य काम किया। बाद में 'हिन्दी शब्द-सागर' में हिंदी शब्दों की व्युत्पत्तियाँ दी गईं, हालांकि वे बहुत प्रामाणिक नहीं बन पाईं और समय-समय पर डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० हेमचंद्र जोशी तथा डॉ० भोलानाथ तिवारी ने बहुत सी व्युत्पत्तियों को काटते हुए लेख प्रकाशित किए। अन्य भाषाओं के विद्वानों में डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, तथा डॉ० हरिवल्लभ भायाणी ने भी प्रत्यक्षतः एवं परोक्षतः हिंदी व्युत्पत्ति के काम को आगे बढ़ाया। जिन अन्य लोगों ने इस दिशा में काम किए, उनमें डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० बाबूराम सक्सेना, रामचन्द्र वर्म्मा, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० उदय नारायण तिवारी, डॉ० भोलानाथ तिवारी, डॉ० अम्बा प्रसाद 'सुमन' तथा डॉ० हेमचन्द्र जोशी आदि प्रमुख हैं।

यह प्रसन्नता की बात है जिन लोगों ने इस दिशा में काम किया है, उनमें से मुख्य बीस-इक्कीस लोगों की व्युत्पत्तियों को नरेश जी ने इस हिंदी व्युत्पत्ति-कोश में बहुत ही ईमानदारी से और परिश्रमपूर्वक वर्णानुक्रम से रख दिया है। साथ ही कोशों में जहाँ अशुद्धियाँ मिलीं, उन्हें ठीक भी किया है और प्रायः सभी शब्दों का पालि-प्राकृत-अपभ्रंश में विकास भी दिया है। स्थान-स्थान पर अन्य भारतीय तथा अभारतीय भाषाओं के शब्दों की तुलना के कारण यह कोश और भी उपयोगी हो गया है।

लगभग दस हजार हिन्दी शब्दों का यह व्युत्पत्ति-कोश निश्चय ही आगे इस दिशा में काम करने वालों के लिए बहुत काम का होगा। इस कोश में यों तो कुछ कमियाँ हैं और वे होती ही हैं किन्तु एक बात संकेत्य है कि मानक हिंदी के काफी शब्दों को यहाँ समाहित नहीं किया जा सका है। विश्वास है अगले संस्करण में मानक हिंदी के अधिकाधिक शब्दों को लेते हुए तथा अपने काम में और वैज्ञानिकता लाते हुए नरेश जी इसे और भी उपयोगी तथा प्रामाणिक बनाएँगे। इस क्षेत्र में पहला कार्य होने के कारण अपूर्णता के बावजूद यह कोश

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्तुत्य एवं स्पृहणीय है। वस्तुतः कोई भी कोश पहले संस्करण में तो आधार ही तैयार करता है। बाद में सुधरते-बढ़ते वह सभी अपेक्षाओं के अनुरूप बनता है।

नरेश जी निश्चय ही हिंदी संसार की ओर से इस उपयोगी कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं। उनके प्रति तथा उनकी इस कृति के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भोलानाथ तिवारी
डी० लिट्०
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आरम्भिक निवेदन

राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्दों के उद्गम, विकास, रचना-प्रक्रिया, व्युत्पत्ति आदि पर ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में विचार करने से संबंधित गवेषणा-पूर्ण अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है। वस्तुतः स्पष्टतापूर्वक अर्थ का बोध निर्वचन बिना असंभव है। शब्दों की व्युत्पत्ति न केवल अर्थ को जानने में सहायक होती है, अपितु लोक एवं साहित्य में प्रचलित शब्दों के ऐतिहासिक विकास के गूढतम रहस्यों को भी उद्घाटित करती है। जो व्यक्ति निरुक्ति के बिना अर्थ का ज्ञान करते हैं, उनका ज्ञान भाषा की ऊपरी सतह तक ही सीमित रह जाता है।

व्युत्पत्ति-निर्वचन की दृष्टि से यास्क का निरुक्त सर्वप्रथम उल्लेखनीय ग्रन्थ है। श्री कुलकर्णी का 'मराठी व्युत्पत्ति-कोश' प्लैट्स, का 'ए डिक्शनरी ऑव उर्दू, क्लासिकल हिन्दी एण्ड इंग्लिश', वेजउड द्वारा संपादित 'डिक्शनरी ऑव इंगलिश एटीमोलाजी', वाटर डब्ल्यू स्काट की 'ऐन एटीमोलाजिकल डिक्शनरी ऑव दि इंग्लिश लैंग्वेज', वी० वी० शास्त्री की 'ए कम्प्लीट एटीमोलाजिकल डिक्शनरी ऑव दि वैदिक लैंग्वेज' एवं टी० बरो की 'ए द्रविडियन् एटीमोलाजिकल डिक्शनरी' आदि व्युत्पत्ति-कोश यह प्रेरणा प्रदान करते हैं कि राष्ट्रीय अभिव्यक्ति की माध्यम हिन्दी भाषा में भी व्युत्पत्तिमूलक कोश के अभाव को दूर किया जाए।

'हिन्दी शब्द-सागर' में शब्दों की व्युत्पत्ति के महत्त्वपूर्ण कार्य पर सर्व-प्रथम ध्यान दिया गया। इस ऐतिहासिक महत्त्व के कोश के प्रति श्रद्धा-भाव रखते हुए यह कहना असंगत न होगा कि इस महत्त्वपूर्ण कोश में व्युत्पत्तिगत बातें अपूर्णता की स्थिति में बनी रहीं। 'हिन्दी शब्द-सागर' के उपरान्त 'संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर', 'प्रामाणिक हिन्दी कोश', 'नालंदा विशाल शब्द-सागर', 'बृहत् हिन्दी ज्ञान-कोश', 'मानक हिन्दी कोश', 'हिन्दी शब्द-संग्रह', 'भाषा शब्द-कोश' आदि शब्द-कोशों के निर्माण तो हुए, परन्तु ये सभी कोश व्युत्पत्ति की दृष्टि से अपूर्ण कहे जा सकते हैं। 'बृहत् हिन्दी कोश' में 'हिन्दी शब्द-सागर' की व्युत्पत्ति संबंधी गलतियों का उल्लेख कर यह कहा गया है कि इस कोश में व्युत्पत्तियाँ इसलिए नहीं दी गई, 'क्योंकि 'हिन्दी शब्द-सागर' को इस दिशा में सफलता नहीं मिली।' 'मानक हिन्दी कोश' में दी गई व्युत्पत्तियों की जिम्मेदारी श्री रामचन्द्र वर्म्मा ने अपने ऊपर न लेकर अपने सहायक श्री तारिणीश झा पर रखी। उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि के लिए विभिन्न कोशों में दी गई व्युत्पत्तियों एवं भाषावैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी गई व्युत्पत्तियों का यहाँ उल्लेख करना अपेक्षित है—

अंकुड़ा—पुं० (लोहे का टेढ़ा काँटा या छड़)—(अ) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई०)—सं० अंकुर। (आ) हिं० श० सा० (संस्क० १९६५ ई०)—सं० अङ्कुडक। (इ) रामचन्द्र वर्म्मा—(१) संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर (संस्क० १९३३ ई०)—सं० अंकुर (२) प्रामाणिक हिन्दी कोश (सं० २००८)—सं० अंकुश।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(३) मानक हिन्दी कोश—सं० अंकुरक। मैंने इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी है—सं० अङ्कुटक>प्रा० अंकुडग (नागदन्ती, खूँटी), अंकुडय>हिं० अंकुड़ा। तुल० म० आंकड़ा। कारण यह है कि सं० अङ्कुर>प्रा० अंकुर (प्ररोह, फुनगी) से अंकुड़ा का विकास दिखाना अर्थ की दृष्टि से समीचीन नहीं है। इसी प्रकार ध्वनि की दृष्टि से 'सं० अङ्कुश>प्रा० अंकुस (एक देव-विमान, अंकुशाकार खूँटी) से अंकुड़ा को व्युत्पन्न मानना ठीक नहीं कहा जा सकता।

अंगा—पुं० (अंगरखा)-(क) हिं० श० सा० (सं० अङ्ग)। (ख) रामचन्द्र वर्म्मा—(अ) सं० अंग। (सं० हिं० श० सा०, सं० २०००८) (आ) पु० दे० अंगरखा (हिं० अंग+रखना)। (प्रा० हिं० कोश)। हिं० श० सा० तथा वर्म्मा जी द्वारा दी गई व्युत्पत्ति में सं० अङ्ग में ह्रस्व का दीर्घ कैसे हो गया, इसका समाधान नहीं होता है। अतः सं० अङ्ग+क (स्वार्थे प्र०) से ही विकास समीचीन होगा।

अंटी या अंठुली—स्त्री० (गुठली गाँठ)-(क) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई०)-सं० अष्ठि। हिं० श० सा० (संस्क० शक १८८७)-सं० अस्थि, प्रा० अट्ठि, अंठी। (ख) रामचन्द्र वर्म्मा—प्रा० हिं० को०—सं० अंड। श्री रामचन्द्र वर्म्मा के द्वारा 'अंठी' को सं० अंड से दिखाना सर्वथा असंगत है। हिं० श० सा० द्वारा निर्दिष्ट सं० अष्ठि तथा सं० अस्थि से ही 'अंठी' का विकास सम्भव है। इस कोश में व्युत्पत्ति इस प्रकार दी गई है—सं० अस्थि>प्रा० अट्ठि>अंठि, अंठी, म० अठळी।

अँधौटी—स्त्री० (बैल या घोड़े की आँख बन्द करने का ढक्कन)-१-(क) हिं० श० सा० (१९१६ ई०)—सं० अंध+पट>प्रा० अंधवटी, अंधौटी। (ख) हिं० श० सा० (संस्क० १९६५ ई०)—सं० अंध+पटी>प्रा० अंधवटी>अंधौटी। २- श्री रामचन्द्र वर्म्मा—(अ) सं० हिं० श० सा० (१९३३ ई० तथा अन्य संस्क० सं० २०००९)—सं० अंध+पट, प्रा० अंधवटी, अंधौटी। (आ) प्रा० हिं० को०—हिं० अन्धा>अंधौटी। हिं० श० सा० तथा श्री रामचन्द्र वर्म्मा द्वारा सुझायी गई—'सं० 'अन्ध+पट' से 'अंधौटी' की व्युत्पत्ति का जहाँ तक प्रश्न है—अंध+पट से 'अंधवट>अंधौट' बनेगा। वर्म्मा जी द्वारा दिये गए मूल शब्द 'अंधा' से 'अंधौटी' की व्युत्पत्ति नहीं मानी जा सकती। वास्तव में, सं० अन्ध-पट्टिका' शब्द से ही 'अंधौटी' का सहज विकास सम्भव है—सं० अंध+पट्टिका>प्रा० अंधवट्टीआ>अंधोट्टीआ>अंधौटिआ>अंधौटी।

अँबराऊँ—पुं० (बाग)-(क) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई०) सं० आम्राराजी, (ख) हिं० श० सा० (संस्क० १९६५ ई०)—दे० अँबराई। उपर्युक्त व्युत्पत्ति समाचीन नहीं है। सं० आम्रराजी से 'अमराई' को तो व्युत्पन्न दिखाया जा सकता है, परन्तु 'अँबराऊँ' को सं० 'आम्रराजी' से व्युत्पन्न दिखाना असंगत है। ध्वनि-नियम एवं अर्थ की दृष्टि से 'अंबराऊँ' 'सं० आम्राराम' से ही व्युत्पन्न

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिखाना ठीक रहेगा। 'आम्रराजी' का अर्थ 'आमों की पंक्ति' है और 'आम्राराम' का अर्थ—'आमों का बाग' है। विकास इस प्रकार रहेगा– सं० आम्राराम>प्रा० अंबाराम>अम्मारांव>हिं० अमराऊँ, अँबराव, अवधी अँबराउँ।

अगुवा—पुं० (अग्रसर, आगे चलने वाला)–(अ) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई०)—सं० अग्र+हिं० आ। (हिं० श० सा० शका० १८८७)–दे० अगुआ। (आ०) श्री रामचन्द्र वर्म्मा—प्रा० हिं० को०—हिं० आगे। हिं० श० सा० तथा प्रामाणिक हिं० कोश से दी गई व्युत्पत्ति ठीक नहीं है। यह शब्द सं० 'अग्रपद+क' से व्युत्पन्न है।

अपाहिज—वि० (अंग-भंग, लूला लंगड़ा)–(क) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई० तथा सं० २०२२ वि०)— सं० अपभञ्ज>प्रा० अपहञ्ज। डॉ० वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने इस शब्द की निम्नलिखित व्युत्पत्ति दी है—'अपाथेय (पथ में यात्रा के अयोग्य) >अपाहेज्ज>अपाहिज्ज>अपाहिज।' (ना० प्र० प०, सं० २००६, अंक २-३, पृ० ९४-९५)। हिं० श० सा० में दी गई व्युत्पत्ति में अंग-भंग होने का भाव विद्यमान है और डॉ० अग्रवाल की उक्त व्युत्पत्ति ध्वनि-परिवर्तन के नियमों के आधार पर दी गई है। डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति अर्थ की दृष्टि से युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होती है। 'पाथेय' का अर्थ—'रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन, राहखर्च' है जो कि डॉ० अग्रवाल द्वारा बताये गये 'अपाथेय' के अर्थ— 'पथ में यात्रा के अयोग्य' से भिन्न है। कालिदास-कृत 'मेघदूत' (श्लोक ११, पूर्वमेघ) में 'पाथेय' शब्द 'रास्ते के भोजन' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार 'पाथेय' के प्रचलित अर्थ की संगति 'अपाहिज, (जिसका अंग-भंग हो गया हो) से नहीं बैठती है। 'सं० अपादहस्त>प्रा० अपादहत्थ>अप० अपाहत्थ>अपाहज, अपाहिज' के रूप में विकास दिखाना मुझे उचित लगा।

अयाना—वि० (बुद्धिहीन, अज्ञानी – (१) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई०)—हिं० अजान। हिं० श० सा० (संस्क० शक सं० १८८७)—सं० अज्ञान>प्रा० अयाण। (२) श्री रामचन्द्र वर्म्मा—प्रा० हिं० को०—हिं० आजाना >अयाना। हिं० श० सा० (प्रथम संस्क०) तथा वर्म्मा जी द्वारा सुझायी गई व्युत्पत्ति 'अजाना>अयाना' अनुमानमात्र ही है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसका विकास इस प्रकार दिया है—'अज्ञान>प्रा० अजाण>अयाना' (सम्मेलन-पत्रिका, भाग ५३, पृ० ७५)। डॉ० अग्रवाल द्वारा दिखाये गए विकास-क्रम में 'ज' का 'य' में परिवर्तन चिन्त्य है। प्राकृत में स्वरीभवन के नियम के अनुसार—'अज्ञान>अजाण>अआन>अयान' का विकास हुआ। सं० हृदय>हिअ, हिअय का उदाहरण भी इस संबंध में द्रष्टव्य है। इस शब्द की व्युत्पत्ति मैंने इस प्रकार देनी उचित समझी है—'सं० अज्ञान+क>प्रा० अज्जाण्णा, अयाणअ, अआना। तुल० ब्र० अयाना, म० अडाणी, गु० अज्ञानी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अलाय-बलाय—स्त्री० (विपत्ति, विघ्न, बाधा)–हिन्दी-शब्द सागर (सन् १९१६ ई०) में 'अलाय' शब्द समाविष्ट नहीं है, किन्तु 'बलाय' को अरबी बला से व्युत्पन्न माना गया है। श्री बाल गंगाधर तिलक ने भी इन शब्दों की परम्परा पर विचार किया था, परन्तु वे इन शब्दों के मूल तक नहीं पहुँच सके।[1] 'शब्द-परिजात' में 'अलैया-बलैया' का पर्याय 'निछावर, खेल' गौण अर्थ के रूप में दिया गया, जबकि इसका मूल अर्थ 'आपत्ति' या 'बाधा' है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल से अथर्ववेद के निम्नलिखित सूक्त का उल्लेख करते हुए 'अलैया-बलैया का सम्बन्ध 'आलिगी-विलगी' से माना है—

"आलिगी च बिलगी च पिता च माता च
विद्म वः सर्वतो बन्ध्व रसाः किं करिष्यथ।"

अर्थात् 'आलिगी और बिलगी पिता और माता तुम्हारे सब बन्धुओं को हम जानते हैं। रस-विहीन होकर तुम क्या करोगे ?' अथर्ववेद के उपर्युक्त सूत्र से सम्बन्धित सांप के काटने के प्रसंग को देखकर यह बात विचारणीय है कि 'अलाय' शब्द की उत्पत्ति क्या 'अरि' से हो सकती है। मूल शब्द 'अरि' का उच्चारण 'अलि' संभव है। अनुमानतः इस 'अलि' का बहुवचन 'अलयः' म्लेच्छों द्वारा उच्चारित होता होगा, यही अलैया हो सकता है, जो अरबी भाषा के 'बला' शब्द के साथ जुड़कर 'अलैया-बलैया या 'अला-बला' बना होगा।

अहेरा—पुं० (शिकार)–(क) हिं० श० सा० (संस्क० १९१६ ई०)—सं० आखेट>अहेर। (ख) श्रीधर भाषा कोश—सं० आखेट>अहेर। डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल—सं० आखेट>प्रा० आहेड़+क>अहेरा (पदमावत, संजीवनी व्याख्या, पृ० ४४७)। वस्तुतः प्राकृत में 'ड़' लिपि-चिह्न नहीं मिलता है। दूसरी बात यहाँ यह उल्लेखनीय है कि संस्कृत की बोलचाल की भाषा में स्वार्थे प्रत्यय 'क' जोड़ने की प्रवृत्ति मिलती है, परन्तु प्राकृत में यह प्रवृत्ति नहीं मिलती है। अतः मैंने इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी है—सं० आखेट+क>प्रा० आहेडा >आहेर>अहेरा, अवधी अहेर।

कचहरी—स्त्री० (१- गोष्ठी, जमावड़ा/दरबार, राज्य-सभा)–(क) हिं० श० सा० (१९१६ ई०)—हिं० कच कच=वाद-विवाद+हरि (प्र०)। हिं० श० सा० (सं० २०२३ वि०) देश० अथवा सं० कष+गृह=कषगृह>कशवरी> कछहरी>कचहरी अथवा सं० कृत्य=कर्त्तव्य+गृह>कच्चवरी>कचहरी। हिं० श० सा० (प्रथम संस्क०) में व्युत्पत्ति कल्पना के आधार पर दी गई है और इसके द्वितीय संस्क० में मूल शब्द के एक से अधिक रूपों की जो अनेक व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं। उनमें से अशुद्ध व्युत्पत्ति को पुनः प्रकाशित होने पर हटा दिया जाना अपेक्षित है। मैंने डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के द्वारा दी गई व्युत्पत्ति को ठीक

(१) द्रष्टव्यः बालगंगाधर तिलक, वैदिक क्रानालाजी एण्ड वेदांग ज्योतिष, पृ० १३४।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
मानकर उसे परिवर्तित रूप में अपनाया है। डॉ० अग्रवाल के अनुसार इसकी व्युत्पत्ति निम्नलिखित है—

'सं० कृत्यगृहिका > किच्चहरिया > कचहरी' (ना० प्र० प०, वर्ष, अंक २-३, पृ० ९६)। मेरे द्वारा दी गई व्युत्पत्ति इस प्रकार है—'सं० कृत्यगृहिका > किच्चधरिका > किच्चहरिया, किच्चहरिआ > कच्चहरिअ > कचहरी'।

खाद—पुं० (वह पदार्थ जो खेत में उसकी उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए डाला जाता है, पांस)–(क) हिं० श० सा०—सं० खाद्य।

(ख) श्री रामचन्द्र वर्म्मा—(१) प्रा० हिं० कोश—सं० खाद्य। (२) मा० हिं० को०—सं० खात। सं० खात का अर्थ— 'खुदा हुआ गड्ढा, गर्त' है। खुदे हुए गड्ढे में पांस का खाद दबाया जाता है। अतः सं० खात में 'खाद' के अर्थ की कल्पना की जा सकती है—सं० खात > प्रा० खत्त > हिं० खाद।

खीस—स्त्री० (दांत, जिन्हे कील कहते हैं)– (क) हिं० श० सा०—खीस (ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत) को सं० कीश (बन्दर) से व्युत्पन्न। (ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार—फ़ा० खीस (हल में लगने वाली फाली कील या नुकीली शंकु) से व्युत्पन्न है। उसी तरह के लम्बे दाँत खीस कहलाते हैं। जंगली सुअर के निकले दाँतों को भी खीस कहते हैं (ना० प्र० प०, वर्ष ५४, सं० २००६, पृ० ९६)। डॉ० अग्रवाल ने व्युत्पत्ति सादृश्य के आधार पर दी है। मैंने डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति को समीचीन मानकर अपनाया है।

खाँवाँ—पुं० (क) हिं० श० सा०—सं० (अधिक चौड़ी खाई)। (ख) प्रा० हिं० को०—खं० > खाँवाँ। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने सं० स्कन्धक से विकसित माना है। वस्तुतः खाँवाँ (मिट्टी की चहारदीवारी)–सं० खं० से व्युत्पन्न नहीं हो सकता। सं० स्कन्धक से विकास संभव है—सं० स्कन्ध + क > खन्धा > खाँधा > खाँहा > खाँआ > खाँवा। 'स्कन्ध + क' (कन्धा) के अर्थ में 'कन्धे के बराबर दीवार की कल्पना करनी होगी। तभी माप के लिए 'स्कन्ध + क' का प्रयोग समीचीन होगा। महाराष्ट्री, अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में 'स्कन्ध' का 'खन्ध' में विकास मिलता है।

खोआ—पुं० (मावा, खोवा)– (क) हिं० श० सा० (१) सं० क्षुद्र। (२) हिं० दे० 'खोया'। (ख) वर्म्मा—सं० क्षुद्र। अर्थ की दृष्टि से सं० क्षुद्र से खोआ का विकास संभव नहीं है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने सं० क्षोद से 'खोआ' को व्युत्पन्न माना है। श्री रामचन्द्र वर्म्मा ने बाद में डॉ० अग्रवाल द्वारा सुझायी व्युत्पत्ति को अपनाया। सं० क्षोद में 'क्षुद्' का अर्थ 'अल्प करना' होता है। खोआ में दूध की घुटाई कर उसे कम कर लिया जाता है। तभी वह खोया का रूप धारणा करता है। अतः सं० क्षोद से ही 'खोआ' का विकास संभव है।

गुहेरा—पुं० (गोह नाम का कीड़ा)–हिं० श० सा० में इस शब्द को सं० गोध से व्युत्पन्न दिखाया गया है। डॉ० अग्रवाल ने सं० गौधेरक (गोधा + एरक प्र०) से

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'गुहेरा' की व्युत्पत्ति दी है, जो कि ग्राह्य है। (ना० प्र० प०, सं० २००६, वर्ष ५४, पृ० ९९)।

जोइना—पुं० (जूना)–वास्तव में 'जोइना' (जूना) का सं० यून से विकास बताने का श्रेय डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल को है (पृथिवीपुत्र, पृ० २७३)। ध्वनि-परिवर्तन के नियमों की दृष्टि से वै० सं० यून+क से 'जूना' की व्युत्पत्ति ग्राह्य है—यून+क=यूनक>जूनअ>जूना। पूर्व की बोली स्वर प्रधान है। अतः स्वर का मध्यागम होने से 'जूना' का 'जोइना' होना संभव है। डॉ० हरिहर प्रसाद गुप्त ने पहले 'ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली' में इस शब्द की व्युत्पत्ति 'योजनिका' से दी थी जो कि अर्थ की दृष्टि से अग्राह्य है। हिं० श० सा० में सं० जूर्ण>जूण्ण>जून तथा सं० जीर्ण>प्रा० जुण्ण>जुन्न>जूना' के विकास को दृष्टि में रखकर ही संभवतः उक्त शब्दों से व्युत्पत्ति दी गई हो, परन्तु 'जूर्ण' (जुर्+क्त) का अर्थ 'पुराना' है, परन्तु 'जूना' का अर्थ— 'घास-फूस का लच्छा या पूला, जिससे बरतन माँजते हैं', 'पुराना' नहीं।

तिन्नि—वि० (तीन)– (क) हिं० श० सा० (संस्क० १९२० ई०)—सं० त्रीणि>तीन।

(ख) डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या—त्रीणि>तिर्णि>तिण्णि। (भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, पृ० १०६)।

(ग) डॉ० अग्रवाल—सं० त्रि>प्रा० ति>तिण्ण>अप० तिन्न, तिन्नि। (की०, पृ० २३)।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा सुझायी गयी व्युत्पत्ति में सं० त्रि>प्रा० ति>तिण्ण के विकास-क्रम में 'ण' का आगम कहाँ से हुआ, यह स्पष्ट नहीं है। सं० त्रीणि से ही 'तिन्नि' का विकास समीचीन होगा—सं० त्रीणि>प्रा० तीणि, तिण्ण>अप० तिण्णि>अवहट्ट तिन्नि>हिं० तीन। डॉ० चाटुर्ज्या ने सं० त्रीणि से तिर्णि के विकास की सम्भावना की है। यह सम्भव है कि तिर्णि से द्वित्व की प्रवृत्ति के कारण प्रा० तिण्णि हो गया हो। रिचर्ड पिशेल के अनुसार नपुंसक लिंग में तिण्णि=त्रीण्णि, यह ण्ण सम्बन्ध कारक के रूप में 'तिण्ण' की नकल पर है। 'हिन्दी शब्द-सागर' तथा डॉ० चाटुर्ज्या द्वारा दी गयी व्युत्पत्ति अधिक समीचीन है।

पाजी—पुं० (पैदल सेना का सिपाही)–

(क) हिं० श० सा०—सं० पदाति।

(ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल— (अ) सं० पदाजि (ना० प्र० प०, सं० २००६, अंक २-३, पृ० १०२)।

(आ) सं० पत्ति (पैदल)–पदमावत (संजीवनी व्याख्या), पृ० ४९।

सं० पदाति तथा सं० पत्ति की अपेक्षा सं० पदाजि से 'पाजी' का विकास दिखाना अधिक युक्तिसंगत है। सं० पत्ति का प्राकृत में पत्ति ही मिलता है। अतः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० पत्ति की अपेक्षा सं० पदाजि से 'पाजी' का विकास समीचीन है—सं० पदाजि >पआजि>पाजि>पाजी।

पारधी—पुं० (१- टट्टी आदि की ओट से पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने वाला बहेलिया, २- शिकारी, ३- बधिक)- (क) हिं० श० सा० (संस्क० १९२५ ई०)- (अ) सं० परिधान (आच्छादन)। (आ) हिं० श० सा० (सं० २०२६)—सं० परिधान अथवा पापधिक>प्रा० पारिद्धअ। (ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—सं० पापर्द्धिक (ना० प्र० प०, सं० २००६, अंक २-३, पृ० १०२)।

अर्थ की दृष्टि से सं० परिधान से पारधी की व्युत्पत्ति कल्पित है। ध्वनि एवं अर्थ की दृष्टि से 'सं० पापर्द्धिक (बहेलिया)>पारद्धिअ>पारधी' ही ग्राह्य है। हिं० श० सा० (सं० २००६) में पारधी की व्युत्पत्ति सं० पापर्द्धिक से दिखाई गई है, परन्तु सं० परिधान को 'अथवा' में देकर अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है।

पाहुना—पुं० (अतिथि)–कुछ विद्वानों ने इसकी व्युत्पत्ति 'प्राघुण' से मानी है, जबकि मूल शब्द 'प्राघूर्ण' से निम्नलिखित विकास-क्रम हुआ—'पाघुण्ण>पाहुण्ण >पाहुन' है। हिं० श० सा० में सं० 'प्राघूर्ण' तथा 'प्राघुण' दोनों शब्दों से पाहुन को विकसित दिखाया गया है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने सं० 'पाघुण' (?) से 'पाहुन' को व्युत्पन्न माना है (पदमावत की संजी० व्या०, पृ० ४६९)। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सं० 'पाघुण' शब्द अशुद्ध रूप में छपा हुआ माना जा सकता है। 'प्राघूर्णकः' तथा 'प्राघुणः' दोनों शब्द अतिथि के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु प्राघूर्णकः में 'घूर्ण' धातु 'इधर-उधर घूमने' के अर्थ में प्रयुक्त होती है। 'पाहुना' भी 'इधर-उधर भ्रमण' करने के कारण 'प्राघूर्णक' कहलाता है। सं० पाघूर्ण+क >प्रा० पाहुण्णग>पाहुणअ>पाहुना' से विकास-क्रम संभव है, क्योंकि शौरसेनी अपभ्रंश में संस्कृत की असंयुक्त ध्वनि क्>ग् में परिवर्तित हो गई थी और संस्कृत की ध्वनि 'घ्' का परिवर्तन महाराष्ट्री प्राकृत के 'ह्' में हुआ। ध्वनि में इसी परिवर्तन के आधार पर सं० 'प्राघूर्णकः' का 'पाहुना' में विकास हुआ। जहाँ तक 'प्राघुणः' शब्द का संबंध है, इसमें प्रयुक्त धातु 'घुण्' का अर्थ 'चक्कर खाना, लड़खड़ाना, अटेरना, प्राप्त करना' आदि है। अतः अर्थ की दृष्टि से 'प्राघुणः' से 'पाहुन' विकसित मानना असंगत होगा।

पौ—स्त्री० (किरण, प्रकाश की रेखा, ज्योति)- (क) हिं० श० सा० (संस्क० १९२५ ई० सं० २०१६)–सं० पाद>प्रा० पाय, पवा।

(ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—सं० प्रभा>पव>पउ>पौ (ना० प्र० प०, सं० २००६, अंक २-३)। हिं० श० सा० की व्युत्पत्ति अर्थ की दृष्टि से संगत नहीं है। ध्वनि-परिवर्तन तथा अर्थ की दृष्टि से डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति समीचीन है। 'भ' का अल्प प्राणीकरण से 'ब' हो जायेगा तथा 'ब' का शैथिल्य के कारण 'व' में परिवर्तन होगा, परन्तु प्रभा का विकास 'पव' में दिखाने से पूर्व प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
प्रभा में दिखाया जाना अपेक्षित हैं—सं० प्रभा > प्रा० पभा > पबा > पवा > पव > पौ ।

फफोला— पुं० (आग से जलने पर पड़ा हुआ छाला)– (क) हिं० श० सा० संस्क० १९२५ ई० तथा सं० २०२७ वि०)– सं० प्रस्फोट । (ख) डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल –सं०पूगफल (ना० प्र० प०, सं० २००६, अंक २-३, पृ० १०२) । सं० पूगफल (सुपारी) का 'फफोला' में विकास ध्वनि-परिवर्तन की दृष्टि से सम्भव है— सं० पूगफल > प्रा० पुअफल > पुपफल > पुप्फल > पोफल > फोफल > फोफला > फफोला । परन्तु अभिधात्मक अर्थ की दृष्टि ले सं० पूगफल से 'फफोला' की व्युत्पत्ति गले नहीं उतरती । लाक्षणिक अर्थ एवं आकृति-साम्य को दृष्टि में रखकर सम्भवतः डॉ० अग्रवाल ने 'पूगफल' से 'फफोला' को व्युत्पन्न माना हो । यह भी सम्भव है कि सं० पूय (मवाद पीप) के स्थान पर 'पूग' शब्द प्रकाशन की त्रुटि के कारण छप गया हो । डॉ० अग्रवाल द्वारा दी गई व्युत्पत्ति की तुलना में हिं० श० सा० की व्युत्पत्ति ग्राह्य है । 'सं० प्रस्फोट (सं० स्फोट=फोड़ा, व्रण विशेष) > प्रा० पप्फोड > पफोड > फफोड़ > फफोड़ा > फफोला' का विकास-क्रम संभव है ।

बिरवा—पुं० (वृक्ष, पौधा, चना, बूट)– (१) हिं० श० सा०— सं० विरुह ।

(२) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल— सं० विटपक > बिरवअ > बिरवा । सं० विरुह > प्रा० विरुह का अर्थ 'विशेष रूप से उगना, अंकुरित होना' है । अतः हिन्दी शब्द सागर की व्युत्पत्ति अनुमान पर आधारित कही जा सकती है । विटप का अर्थ 'वृक्ष की नई शाखा' है । डॉ० अग्रवाल के अनुसार—"विटप का अर्थ है वह जो विट से पानी पिए । ज्ञात होता है विट निषाद भाषा का शब्द था । उसका अर्थ था पत्ता ।" अर्थ के विकास की दृष्टि से डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति संगत है । अतः मैंने ध्वनि के विकास और अर्थ के औचित्य की दृष्टि से 'सं० विटप + क' से 'बिखा' का विकास माना है ।

बीच—पुं० (किसी पदार्थ का मध्य भाग)– (क) हिं० श० सा०—सं० विच । (ख) श्री राम चन्द्र वर्म्मा— प्रा० हि० को०—द्वीच । (ग) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—सं० द्वीच ।

डॉ० अग्रवाल ने हेम चन्द्र के द्वारा बिच्च > बीच की व्युत्पत्ति दिये जाने का उल्लेख किया था, परन्तु बिच्च से बीच की व्युत्पत्ति को उन्होंने पं० किशोरी-दास वाजपेयी की आपत्ति उठाने के बाद स्वीकार नहीं किया । डॉ० अग्रवाल ने डॉ० आयेन्द्र शर्मा के द्वारा सुझायी गयी द्वीच से बीच की व्युत्पत्ति को ठीक माना, परन्तु प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को 'द्वीच' शब्द कोशों में नहीं मिल सका और इस शब्द के सम्बन्ध में पं० किशोरीदास वाजपेयी से भी लगभग १२ वर्ष पूर्व पत्र-व्यवहार करने पर कुछ भी पता नहीं चल सका था । अतः हिं० श० सा० की व्युत्पत्ति ही ग्राह्य है । अर्थ की दृष्टि से सं० विच् शब्द का अर्थ 'अलग करना'

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। डॉ० चाटुर्ज्या ने पंजाबी विच्च और हिन्दी बीच में साम्य का उल्लेख किया है।

ब्यालू—पुं० (शाम का भोजन)–हिं० श० सा० के विभिन्न संस्करणों में तीन मूल शब्द सुझाये गए—सं० विहार, सं० वेला, सं० व्याल (दिनांत)। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में सं० विहार में विकसित माना गया। सं० विहार (सैर, सपाटा, जैन या बौद्ध मठ) से व्युत्पत्ति कल्पना पर आधारित है। डॉ० अग्रवाल इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार दी है—सं० विकाल भोजन > बिआल > ब्याल + उक > ब्यालू। उनका कथन है—"ब्यालू भोजन विहारों तक ही सीमित नहीं था, आज भी व्रज में शाम के भोजन को सब लोग 'ब्यालू' बिआलु कहते हैं।" उपर्युक्त दिये गये तर्क के आधार पर सं० विकाल से ही 'ब्यालू' की व्युत्पत्ति ग्राह्य है।

लंगोटा—पुं० (कमर पर बाँधने का एक प्रकार बना हुआ वस्त्र जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है, रुमाली)–(क) हिं० श० सा० (संस्क० १९२८ ई०) —लिंग + ओट। हिन्दी शब्द सागर में दी गई लंगोटा की व्युत्पत्ति समीचीन नहीं है। वस्तुतः 'ओट' शब्द 'पट' के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला कोई शब्द ही नहीं है। डॉ० अग्रवाल ने 'लिंग + पट्ट' से व्युत्पन्न माना है (ना० प्रा० प०, सं० २०००६, वर्ष ५४, पृ० १०८)। डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति स्वार्थे प्रत्यय 'क' जोड़ने के बाद ही ग्राह्य है—सं० लिंग + पट्ट + क > प्रा० लिंगपट्ट + अ > लिंगउट्टअ > लंगोटा।

साहनी—(घुड़सवार सेना का अध्यक्ष)–

(क) हिं० श० सा०—सं० सेनानी ? (सेना, साथी, परिषद्)

(ख) रामचन्द्र वर्म्मा—सं० हिं० श० सा०—सं० सेनानी या अ० शहना।

(ग) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—सं० साधनिक > साहनिय > साहनी (ना० प्र० प०, सं० २००६, वर्ष ५४)।

(घ) डॉ० अम्बा प्रसाद 'सुमन'—अ० शहन।

मेरे सामने यह विचारणीय प्रश्न रहा कि उपर्युक्त व्युत्पत्तियों में से किस को समीचीन मानकर अपनाया जाए। हिं० श० सा० में सं० साधनिक से दी गई व्युत्पत्ति का जहाँ तक संबन्ध है, सं० सेनानी से 'साहनी' के विकास-क्रम मे ध्वनि-परिवर्तन की कठिनाई आती है। श्री रामचन्द्र वर्म्मा ने मूल शब्द अरबी 'शहना' तथा डॉ० अम्बा प्रसाद 'सुमन' ने अरबी 'शहन' से व्युत्पन्न होने का उल्लेख किया है, परन्तु अ० 'शहन' का अर्थ—'हाँकना' होता है। डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति का जहाँ तक संबंध है, उन्होंने 'साहणी' शब्द के इतिहास को गिला लेख तथा बृहत्कथा कोष में आये हुए उल्लेख से पुष्ट किया है। अतः उनकी व्युत्पत्ति शब्द के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दी होने के कारण ग्राह्य है, परन्तु विकास-क्रम में 'सं० साधनिक > प्रा० साहणिअ' को दिखाया जाना अपेक्षित है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुथना, सुत्थना—पुं० (पायजामा)–(क) हिं० श० सा० (सन् १९२८) देशज सूथन। (ख) रामचन्द्र वर्म्मा—देशज सूथनी (सं० हिं० श० सा०, षष्ठ संस्क०, पृ० ९९२)। (ग) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—सं० स्वस्थान। (उच्चिनेत्र सुकुमार स्वस्थानस्थगित जंघा कांडैञ्च, हर्षचरित, सप्तम् उच्छ्वास)। डॉ० अग्रवाल ने लिखा है कि वाणभट्ट ने फूलदार रेशम के बने हुए सूथने पहने हुए राजाओं का उल्लेख किया है। 'हर्षचरित्' में 'स्वस्थान' शब्द उपलब्ध है। डॉ० भोलानाथ तिवारी ने प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को 'सूत्रनद्ध' शब्द सुझाया था, परन्तु यह शब्द साहित्य में उपलब्ध नहीं है। उपर्युक्त व्युत्पत्तियों को यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो डॉ० अग्रवाल की व्युत्पत्ति की संभावना ठीक हो सकती है।

सोहर—पुं० (एक प्रकार का मंगल-गीत जिसे स्त्रियाँ घर में बच्चा पैदा होने पर गाती हैं)–(क) हिं० श० सा० (सन् १९२८)–सोहर (हिं० सोहना, सोहला) (ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—सूतिगृह (ना० प्र० प० सं० २००६, वर्ष ५४)। हिं० श० सा० की व्युत्पत्ति का आधार यह प्रतीत होता है कि 'सोहर' नामक मंगल-गीत केवल सूतिगृह से ही संबंधित नहीं है, बल्कि इन गीतों के पीछे शुभ या शोभा का भाव भी निहित है। डॉ० अग्रवाल के अनुसार 'सोहर' का संबंध सौरगृह (प्रसूतिगृह) से है। बुन्देलखण्डी साहित्य में जच्चा के मन को बहलाने वाले गीत को 'सोहर' कहा जाता है। ध्वनि-नियम की दृष्टि से 'सूतिग्रह >सूइहर>सोइहर>सोहर' का विकास सम्भव है।

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि हिन्दी के कोशों में दी गई व्युत्पत्तियों पर पुनः विचार कर संशोधित रूप में देने की आवश्यकता बनी हुई है। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त विवेचन से मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि तर्कसंगत आधार पर भाषावैज्ञानिकों द्वारा दी गई व्युत्पत्तियों को परखकर प्रस्तुत व्युत्पत्ति-कोश में व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं। कोशों की त्रुटियाँ दिखाना मेरा उद्देश्य कदापि नहीं रहा, अपितु इस क्षेत्र में भाषावैज्ञानिकों के द्वारा किये गए कार्य को आदर की दृष्टि से देखते हुए कुछ कमियों को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहा हूँ। मैं उन सभी भाषावैज्ञानिकों के प्रति कृतज्ञतापूर्ण हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिनकी व्युत्पत्तियों का मैंने संपादन किया है, उनके नाम का उल्लेख कर देने मात्र से ही मैं ऋषि-ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। बिना किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त हुए मैंने शब्दों की व्युत्पत्ति भाषावैज्ञानिक नियमों को दृष्टि में रखकर दी है। कहीं-कहीं शब्द का विकास संस्कृत के मूलशब्द के न मिलने के कारण पालि या प्राकृत से भी दिखाया गया है। यदि शब्द का संबंध द्रविड़ भाषाओं, मुण्डारी भाषा अथवा विदेशी भाषाओं से रहा है, तो उसे उन भाषाओं से व्युत्पन्न दिखाने के लिए प्रयत्नशील रहा हूँ। यह भी उल्लेख्य है कि इस कोश में सभी मानक हिन्दी के शब्दों को कतिपय सीमाओं के कारण नहीं लिया जा सका है। यह प्रयास

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवश्य रहा हैं कि जहाँ कुछ कमी कोशों में दिखाई पड़ी, उसको परिष्कृत रूप में प्रस्तुत कर दिया जाए।

वस्तुतः हिन्दी शब्दों की व्युत्पत्ति निश्चित करने का काम बहुत ही गम्भीर और जटिल है। कहीं शब्दों के परिवर्तन में वर्ण का आगम हुआ है तो कहीं विपर्य्यय या लोप। इस क्षेत्र में अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए यह 'हिन्दी व्युत्पत्ति-कोश' शुरूआत मात्र ही कही जा सकती है। शब्दों की व्युत्पत्ति दिखलाने के लिए वैदिक संस्कृत, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट में यथासंभव विकास दिखाने के साथ-साथ प्रान्तीय भाषाओं, स्थानिक बोलियों, विदेशी भाषाओं से उनका रूप-साम्य दिखाने का प्रयास किया गया है। अरबी-फ़ारसी के शुद्ध मूल रूप को देने के लिए मैं प्रयत्नशील रहा हूँ। यदि एक शब्द के कई अर्थ हैं, तो उनकी व्युत्पत्ति अलग से दी गई है। इस कोश में अनेक जनपदीय शब्दों को भी सर्वप्रथम समाविष्ट किया गया है। शब्द के अर्थ का निरूपण प्रामाणिक साहित्य की सामग्री के आधार पर किया गया है। प्रविष्टियों का स्वरूप इस प्रकार है—शब्द, यदि शब्द प्राचीन हिन्दी, प्रान्तीय प्रयोग, ग्राम्य प्रयोग या काव्य में प्रयुक्त है तो उसके स्रोत का उल्लेख किया गया है, व्याकरणिक कोटि का निर्देश, कोष्ठक में अर्थ, व्युत्पत्ति और फिर उसकी यथासंभव प्रादेशिक एवं विदेशी भाषाओं के शब्दों से तुलना की गई है।

'हिन्दी-व्युत्पत्ति कोश' की रचना के वैज्ञानिक पक्ष को पुष्ट करने के लिए आवश्यक है कि खड़ीबोली और प्रादेशिक भाषाओं एवं जत्-जातियों की बोलियों से उसका साम्य दिखाया जाए। अरुणाचल की जन-जाति की खामति भाषा में बुद्धकालीन संस्कृत एवं पाली का स्पष्ट प्रभाव आज भी प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है, उदाहरणार्थ—खामति के संगकाहो (सं० संग्रह), 'थाम्मा पुक्त्राम्' (धर्मपुत्र युधिष्ठिर), सांखला (सं० संस्कार), सांगखा थेला (पा० संघ थेर=संघ का प्रमुख), चेचना (सं० चेतना), चोन (शत्रु, बदमाश के लिए प्रयुक्त, हिं० चोर), सामाना (शमन, शान्ति), सामुत्तो (सं० समुद्र>पा० समुद्द), फास्सा (सं० स्पर्श, पा० सम्फुसना), सालाना (शरण), चातासात (अजातशत्रु), सुनाखा (श्वान), सुला (सुरा), मेलिङ् (मिलिन्द, राजा-विशेष) निपान, निकपान (सं० निर्वाण>पा० निब्बान), चाउमुन (श्रीमुनि=भिक्षु), साथा (सं० श्रद्धा>पा० सद्धा), सांगखा (संघ), पुक्था (बुद्ध), मेत्ता (सं० मैत्री), पेतना (वेदना), पिति (प्रीति), साफाङ् (सभा), प्वय (सं० उपवास>पा० उपोसथ), लाथा (रथ) आदि शब्द आज भी अपनी प्राचीन प्रारंपरा को सुरक्षित रखे हुए हैं (द्रष्टव्य : डॉ० भिक्षु कौण्डिन्य, त्रिभाषा बोधिनी)।

जन-जातियों की भाषाओं एवं बोलियों के अध्ययन से अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति सुलभ जाती है, उदाहरणार्थ—मुण्डारी भाषा के अध्ययन से हिन्दी के—'बनाना, धोती, सस्ता, डूबना, बचाना' आदि अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति को ढूंढने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में सहायता मिलती है। इन शब्दों का मूल रूप संस्कृत में सुरक्षित न होकर मुण्डारी भाषा में निहित है। विभिन्न भारतीय भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन शब्दों के आदान-प्रदान को स्पष्ट करने में सहायक हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

वस्तुतः हिन्दी के शब्दों की व्युत्पत्ति का विषय अभी भी अधूरा ही है। श्रद्धेय डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के निम्नलिखित विचार मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत बने रहे और रहेंगे—"कितने विद्वान् परिश्रम करके जब इस विषय को मथेंगे तब अब तक के अनजाने शब्दों की ठीक-ठीक कुण्डली शोधनी होगी। ..... हिन्दी की शब्द-व्युत्पत्ति का काम बहुत पित्तोमारी का है और अभी तक इस पर रुपए में एक आने भर काम ही हो पाया है। अनहुए काम के पहाड़ खड़े हैं, उनकी चोटी पर पहुँचने की साधें रखने वालों का जन्म भविष्य में होगा"— (श्री रामचन्द्र वर्म्मा को दिनांक ३०-४-५० को लिखे पत्र से उद्धृत)।

रूसी भाषा के आगोन (अग्नि), पीत् (पीना), दात् (देना), सूखा (हिं० सूखा), द्वा (सं० द्वि), प्याच pyat (हिं० पाँच), स्कोला (स्कूल), त्रि (सं० त्रि), पापा (पिता), मामा, मात्च् (माता), ब्रात (भाई), ज्याज्या (चाचा), च्योच्या (चाची), साक्खर (शक्कर), सल्दात्त (सिपाही), वोज़्दुख (वायु), वैस्ती (वहन करना), लोब (ललाट), ल्यूदी (लोग), मास्लो (मक्खन) आदि शब्दों का रूप एवं अर्थगत साम्य शब्दों के इतिहास को उद्घाटित करने में निश्चिय ही सहायक होगा। बल्गारियन भाषा के मैद (मधु), व्यातर (वायु), सेक्रवा (सास) जेम्या (जमीन), कुचे (कुत्ता), नैवे(नभ), स्नखा(वधू), चक्रक (चरखा), मेज्झदु(मध्य), पादम (सं० पतति), नोश्त (निशि), प्रियातेल (मित्र), पत (सं० पथ), ज़्हनी स्त्रियाँ), संदि (सन्धि), रका (हाथ), ति(तू) आदि अनेक शब्दों के रूप एवं अर्थगत साम्य का ज्ञान मुझे डॉ० रामकृष्ण कौशिक से प्राप्त हुआ। विदेशी भाषा विद्यालय, आर० के० पुरम, नई दिल्ली की प्राध्यापिका श्रद्धेय श्रीमती वी० भट्टाचार्य से स्पेनी भाषा सीखने का अवसर मिला। उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान के आधार पर ही स्पेनी के शब्दों की तुलना की जा सकी। इसी विद्यालय के पश्तों भाषा के प्राध्यापक श्री अखनवी से पश्तों के 'झागल, अट्टी, अटेरन, उजबक, टकटकी, धींग, ढूढी (तिरक रीढ़ और कूल्हे के बीच का जोड़), दचका, ढांढ़ा (छोटा कुँआ), गवांडी, डील, आदि शब्दों की पुष्टि हो सकी। जर्मन भाषा के कतिपय शब्दों का ज्ञान इसी विद्यालय के प्राध्यापक श्री पटवर्धन एवं रूसी शब्दों का ज्ञान मेजर श्री एन० एल० पोल से हुआ। चैक भाषा के 'श्कोला (स्कूल), मात्का (माँ), ब्रात्र (भाई), सेस्त्र (बहन), त्री (तीन), ने (नहीं), देसेत (दस)' आदि शब्दों का रूप एवं अर्थगत साम्य का ज्ञान मुझे श्रीमती यादव से प्राप्त हुआ। उपर्युक्त सभी के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

शब्दो की व्युत्पत्ति के संबंध में सर्व श्री डॉ० भोलानाथ तिवारी,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डॉ० अम्बा प्रसाद 'सुमन', डॉ० एल० बी० राम, डॉ० रामेश्वर दयालु अग्रवाल, डॉ० ओमप्रकाश शर्मा, डॉ० महेश भारतीय, डॉ० हरीश शर्मा से समय-समय पर विचार-विमर्श किया गया। डॉ० राधेश्याम मिश्र से अपभ्रंश की शब्दावली की मुझे जानकारी प्राप्त हुई। उपर्युक्त विद्वानों के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ। व्युत्पत्ति-कोश की प्रकाशन संबंधी तत्परता का समस्त श्रेय आदरणीय डॉ० श्री महेश भारतीय को ही है। प्रो० श्री भोलानाथ तिवारी ने अपना मूल्यवान् समय भूमिका लिखने के लिए दिया, उनके कृपापूर्ण स्नेह के लिए मैं बहुत आभारी हूँ।

सर्व श्री डॉ० नरेन्द्र व्यास, डॉ० जयचन्द्र राय, डॉ० एल० बी० राम अनन्त, डॉ० रामकृष्ण कौशिक ने कोश के संबन्ध में अपना अभिमत देकर मुझे अनुगृहीत किया। उपर्युक्त सभी विद्वानों का धन्यवादपूर्वक आभार स्वीकार करता हूँ।

मुद्रण कार्य में सहयोग के लिए मैं श्री कमल कुमार एवं शरद कुमार को साधुवाद देता हूँ।

विद्वज्जन-कृपाकांक्षी
नरेश कुमार
जे २३५, पटेलनगर प्रथम,
गाजियाबाद-२०१००१
(उ० प्र०)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकेतिका

अं०—अंग्रेजी
अ०—अरबी
अखरा०—अखरावट
अप०—अपभ्रंश
अप० प्र०—अपभ्रंश प्रवेश
अम०—अमरकोश
अ० मा०—अर्ध मागधी
अव०—अवहट्ट
अव्य०—अव्य०
अस०—असमीया
उ०—उदाहरण
ओ०—ओड़िया
क०—कन्नड
कश्मी०—कश्मीरी
क्रि०—क्रिया
की०—कीर्तिलता
कु०—कुमाउनी
कृ०—कृदन्त
कों०—कोंकणी
ख०—खड़ी बोली
खा०—खामति (अरुणाचल प्रदेश की जन-जाति की भाषा)
गु०—गुजराती
ग्रा० प्र०—ग्राम्य प्रयोग
च०—चतुर्भाणी
चु०—चुरादिगण
छ०—छत्तीसगढ़ी बोली
ज०—जर्मन
ज० प्र०—जनपदीय प्रयोग
जा०—जायसी
जै० महा०—जैन महाराष्ट्री
टि०—टिप्पणी
ढो०—ढोलामारुरा दूहा
त०—तमिल भाषा
तु०—तुर्की
तुल०—तुलना
ते०—तेलुगु
द० हिं०—दक्षिणी हिन्दी
दे०—देखिए
देश०—देशज
दे० ना० मा०—देशी नाम माला
द्र० ए० डि०—द्रविडियन एटीमोलाजिकल डिक्शनरी
धा०—धातु
न०—नपुंसकलिंग
ने०—नेपाली
पं०—पंजाबी
प०—पश्तो
प० च०—पउम चरिउ
पद०—पदमावत
पह०—पहलवी
पा०—पाली
पाइअ०—पाइअ-सद्द-महण्णवो
पी० इं० डि०—परसियन इंग्लिश डिक्शनरी
पुं०—पुंल्लिग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त०—पुर्तगाली
पू० हिं०—पूर्वी हिन्दी
पै०—पैशाची
पृ०—पृष्ठ
प्र०—प्रत्यय

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र० को०—प्रबन्ध कोश
प्र० चि०—प्रबन्ध चिन्तामणि
प्रा०—प्राकृत
प्रा० पैं०—प्राकृत पैंगल
प्रा० प्र०—प्रान्तीय प्रयोग
पू० का० कृ०—पूर्व कालिक कृदन्त
फ़ा०—फ़ारसी
फ्रे०—फ्रेंच
ब०—बहु वचन
बल्गा०—बल्गारियन भाषा
बं०—बाङ्गला
बी० एच० एस०— बुद्धिस्ट हाइब्रिड संस्कृत ग्रामर एण्ड डिक्शनरी
बु०—बुन्देलखण्डी
बो०—बोली
ब्र०—ब्रजभाषा
भा० प्र०—भाव प्रकाश निघण्टुः (श्री भाव मिश्र कृत)
भी०—भीली
भू० कृ०—भूत कृदन्त
भो०—भोजपुरी
म०—मराठी
मग०—मगही
मल०—मलयालम
महा०—महापुराण
मा०—मारवाड़ी
मु०—मुण्डारी भाषा
मु० इं० डि०—मुण्डारी इंग्लिश डिक्शनरी।
मो० वि०—मोनियर विलियम संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी
यू०—यूनानी
राज०—राजस्थानी
राम०—रामचरित मानस
ला०—लाक्षणिक प्रयोग
लै०—लैटिन
व०—वर्ण रत्नाकर
वि०—विशेषण
विभ०—विभक्ति
विस्म०—विस्मयादि बोधक
वै०—वैदिक
शौ०—शौरसेनी
सं०—संस्कृत
संयो०—संयोजक
सं० रा०—सन्देश रासक
सं० श० कौ०—संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ
सं०—सन्धा भाषा (सिद्धों की भाषा)
सर्व०—सर्वनाम
सि०—सिन्धी
सिंह०—सिंहली
स्त्री०—स्त्री० लिंग
स्था० प्र०—स्थानिक प्रयोग
स्पे०—स्पेनी भाषा
ह०—हरियाणी बोली
हिं०—हिन्दी।
हे०—हेमचन्द्र कृत प्राकृत व्याकरण।
√ धातु का चिह्न
> व्युत्पन्न
★ पद्य में प्रयुक्त
A.C.D.P.L.—A Concise Dictionary of the Persian Language.
A.O.P.P.G.— An Old Pahlavi Pazand Glossory (Edited by Destur Hoshanji Jamaspji Asa)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

A.P.V.D.—A Practical Vedic Dictionary (Edited by Suryakanta)

H.G.O.A.—Historical Grammar of Apabhramsa written by Gomesh Vasudev Tagare

S.L.D.—Seven Language Dictionary (Edited by David Shumkar

संकेताङ्कों का विवरण

(१) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल,
(२) टर्नर,
(३) हिन्दीशब्द-सागर,
(४) टी० डब्लू राइस डेविडस एवं विलियम स्टेड,
(५) डॉ० पूर्ण सिंह डवास,
(६) मानक हिन्दी कोश,
(७) यास्क, निरुक्त,
(८) डॉ० हेमचन्द्र जोशी,
(९) डा० अम्बा प्रसाद सुमन,
(१०) डा० भोलानाथ तिवारी,
(११) डा० धीरेन्द्र वर्मा,
(१२) ग्रियर्सन,
(१३) हार्नली,
(१४) बीम्स,
(१५) कैलाग,
(१६) डा० उदय नारायण तिवारी,
(१७) डा० बाबू राम सक्सेना,
(१८) किशोरी दास वाजपेयी,
(१९) डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या,
(२०) कामता प्रसाद गुरु,
(२१) रामचन्द्र वर्म्मा,
(२२) डा० माता प्रसाद गुप्त,
(२३) आर० पिशल,
(२४) डा० एल० पी० तेस्सितोरी,
(२५) डा० एल० बी० राम अनन्त,
(२६) डा० देवेन्द्र कुमार जैन।

ध्वनिविचार संबन्धी संकेत

अॅ—प्रसारित ओष्ठ, अग्र, अर्ध विवृत।
ऑ— गोलाकार ओष्ठ, पश्च, अर्ध विवृत्त।
उॅ—प्रसारित ओष्ठ, पश्च, संवृत, ह्रस्व।
ऊॅ—प्रसारित ओष्ठ, पश्च, संवृत्त, दीर्घ
—'—उर्दू 'ऐन' और 'अलिफ' का
—'— अन्तर करने के लिए, जैसे—
आ'ला, मा' क़ुल।
फ़ारसी, अरबी, अंग्रेजी से गृहीत चिह्न—
क़, ख़, ग़, ज़, फ़।
कश्मी० चवर्ग—च़, छ़।

corresponds to the Sanskrit

a—अ
ā—आ
i—इ
ī—ई
u—उ
ū—ऊ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी-व्युत्पत्ति-कोश

अ

अंक—पुं० (संख्या, संख्या का चिह्न)—सं० अङ्क>प्रा० अंक>हिं० अंक।

अंक-पलई—स्त्री० (लिखने का वह प्रकार जिसमें अक्षरों के स्थान पर अंकों का प्रयोग किया जाता है)—सं० अंक-पल्लव>प्रा० अंक पल्लव>हि० अंक-पलइ।

अंकिल—पुं० (दागा हुआ साँड)—सं० अङ्कित>प्रा० अंकिल>हिं० अंकिल।

अकुड़ा—पुं० (१—लोहे का झुका हुआ टेढ़ा काँटा या छड़, २- लोहे का एक गोल पच्चड़ जो किवाड़ की चूल में ठुका रहता है, ३- लोहे का एक टेढ़ा काँटा, जो लकड़ी आदि तोलने वाली तराजू की डांडी के बीचोबीच लगा रहता है) —सं० अङ्कुटक> प्रा० अंकुडग, अंकुडय>हिं० अंकुड़ा अँकड़ी (स्त्री०) म० आंकड़ा।

अंकुरित—वि० (अंकुर युक्त)—सं० अङ्कुरित>प्रा० अंकुरिय>हिं० ब्र० अंकुरित।

अंकोर, अकोर — (रिश्वत) – सं० उत्कोचः> प्रा० उक्कोया > हिं० अँकोर, अंकोर, अकोर। तुल० अवधी अँकोर, ब्र० अकोर।

अंगवना—क्रि० (अंगीकार करना)—सं० अंगी+कृ>प्रा० अंगीकर, अंगीकरेइ>अव० अंगवइ।

अंगा—पुं० (अँगरखा)— सं० अङ्ग+क>अंगा। अवधी आँगा (अञ्चुक, म० अंगरखा, गु० अंगरखुं।

अंच्छया—पुं० (इच्छा, कामना)—सं० इच्छा>प्रा० इच्छा>अंच्छया, अंछ्या, गु० इंछा, अवधी इंछा।

अंजन—पुं० (सुरमा, काजल, आँजन)—सं० अञ्जन, (अंज=आँजना, सुरमा लगाना)>प्रा० अंजण>हिं० अंजन ह० अंजन्।

अंजनिआरी, अंजनहारी—स्त्री० (आँख की पलक के किनारे की फुंसी, अंजन-नामिका)—सं० अञ्जनकारिन्>प्रा० अंजणकारि>हिं० अंजनियारी। गु० अंजनी।

अंजल—पुं० (दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट)—सं० अञ्जलि <प्रा० अप० अंजलि, गु० अंजलि, म० ओंजल, ने० अँजुलि।

अंजु—वि० (सरल, स्पष्ट)—सं० ऋजु >प्रा० अंजु। अंजुमन—पुं० (सभा, समाज)—फा० अंजुमन। गु०, म० सभा, संस्था।

अंजुरी—स्त्री० (हथेली का वह रूप जो उँगलियों को कुछ ऊपर उठाने से बनता है)—सं० अंजलि=प्रा० अंजलि >हि० उंजल, अंजुरी, ओ० अंजुली, म० ओंजल, अवधी अँजुरी, भो० अँजूरी, अँजुरी, बं० ऑञ्जोलि।

अजोर—पुं० (प्रकाश)—सं० उज्ज्वल >प्रा उज्जल>अंजवर>हिं० अंजोर अँजोर। भो० अँजोर, गु० अजवाळुं, भी० अजवाळु, ने० उज्यालो।

अंझा—पुं० (विद्यालय में पठन-पाठन

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का स्थगन)–सं० अनध्याय >पा० अनज्झा>प्रा० अणज्झाय>अनज्झाय >अनज्झा>अंझा। गु० अणोजो।

अंटा—पुं० (बड़ी गोली, बड़ी कौड़ी, सूत वा रेशम का लच्छा)–सं० अण्डज> प्रा० अंडय, अंडा, अंटा।

अंठी, अंठुली—पुं० (गुठली, गाँठ)– सं० अस्थि>प्रा० अट्ठि>अंठि, अंठी म० अठळी।

अंडी[1]—पुं० (रेंडी, रेंड के फल का बीज, एरंड का पेड़)–सं० एरण्ड>प्रा० एरंड>अंडी।

अंडी[2]—स्त्री०—(एक प्रकार का रेशमी कपड़ा)–सं० अण्डज>प्रा० अण्डय> हिं अंडी। म० एरंडी।

अंडुआ—पुं० (वह पशु जो बधिया न किया गया हो)–सं० अण्डवान्। अवधी अण्डू। तुल० गु० आँडू।

अंत[1]—क्रि० वि० (दूसरी जगह)–सं० अन्यत्र>प्रा० अण्णत्त, अप० अन्नत, हि० अनत-अंत।

अंत[2]—पुं० (समाप्ति)–सं० अन्त> प्रा० अंत

अंत[3]—पुं० (अंतःकरण, भेद, रहस्य)– सं० अंतस्>प्रा० अंत।

अंतेउर—पु० (अन्तःपुर, राजस्त्रियों का निवासगृह)–सं० अंतःपुर>प्रा० अंतेवुर, अंतेउर।

अंदाज, अंदाजा—पुं० (अनुमान, नाप-जोख, ढंग)–फा० अंदाज। गु० अन्दाज, म० अंदाज। ने० अन्दाज।

अंदेश, अंदेशा—पुं० (संशय, खटका) फ़ा० अंदेशा।

अंद्रसत्र—पु० (वज्र)–सं० इन्द्रशस्त्र >प्रा० इंदसत्थ>अंद्रसत्र।

अंधेरा—पुं० (अंधेर)–सं० अन्धकार> पा० अंधकारो>प्रा० अंधयार>अंध-यार>अंधआर>अंधार, अंधेर। म० अंधार, गु० अंधारुं, भी० अंदारुँ, ने० अँध्यारो, पं० अन्हेरा, अस० आन्धार्, बं० आंधार, (आँन्धाँकार्), ओ० अंधार (आँन्धारॉ)।

अंबर—पुं० (वस्त्र)–सं० अम्बर> प्रा० अंवर>अव० अंवर हिं० अंबर।

अंबापोली—स्त्री० (अमरस)–सं० आम्र +पौलि>प्रा० अंवा+पोलि। म० आंबरस।

अंबारी—स्त्री०(हाथी के पीठ पर रखने का हौदा, छज्जा, मंडप)–अ० अमारी। म० हौदा, गु० अमारी।

अंभोद—पुं० (बादल)–सं० अम्भोद (स० अंभस्√दा (देना), द=देने वाला)>प्रा० अंभोदय>हिं० अंभोद।

अंभोधर—पुं० (बादल, समुद्र)–सं० अंभोधर–(सं० अंभस्√धृ) >प्रा० अंभोधर।

अंह (स्)—पु० (दुष्कर्म, दुःख, बाधा)– सं० अंहस्>प्रा० अंह।

अँकरा—पुं० (एक खर वा कुधान्य जो गेहूँ के पौधों के बीच में उगता है)– सं० अङ्कुर>प्रा० अंकुर, अवधी अँकरा।

अँकवार—स्त्री० (गोद, छाती)– सं० अङ्कपालि, अङ्कमाल, प्रा० अँकवारि, अँकवाल, अँकवार। ने० अँगालो।

अँकाई—स्त्री० (आँकने की क्रिया, अन्दाजा, अटकल, फसल में से जमींदार

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और काश्तकार के हिस्सों का ठहराव) सं० अङ्कन>प्रा० अंकण।

अँकोर—पुं० (गोद, छाती)–सं० अङ्क-माल>प्रा० अंकवार। हिं० अँकोर, गु० अंक।

अँखड़ी—स्त्री० (नेत्र)–सं० अक्षि, प्रा० अक्खि, अक्ख, पं० अँखड़ी।

अँखिया—स्त्री० (आँख)—सं अक्षि> प्रा० अक्खि, अक्ख, हिं० अँखिया। गु० आंखिया।

अँगड़ाना—क्रि० (सुस्ती से ऐंड़ाना)–सं० अङ्ग+अट्>प्रा० अंग+अड> हिं० अँगड़ाना।

अँगरखा—पुं० (एक पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है)–सं० अंग+रक्षक>प्रा० अंगरक्खअ>हिं० अँगरखा, गु० अंगरखुं, ह० अंगर्खा।

अँगरा—पुं० (अँगार, दहकता हुआ कोयला)–सं० अङ्गार>पा० अङ्गार >प्रा० अप० अंगार>अवधी अँगरा, हिं० अँगारा। ब० म० अंगार, ने० अङार्, गु० भी० अंगारो, सिं० अनारु (anaru)।

अँगरी[1]—स्त्री० (कवच, बख्तर)–सं० अङ्ग+रक्षिका>प्रा० अँगरक्खिआ< हिं० अँगरी।

अँगरी[2]—स्त्री० (अंगुलित्राण, उँगलियों को धनुष की रगड़ से बचाने के लिए गोह के चमड़े का दस्ताना)– सं० अङ्गुरीय, हिं० अँगरी।

अँगारी—स्त्री० (गँडेरी, गेंडी, ईख के सिर पर की पत्ती जिसे काटकर पशुओं को खिलाते हैं)–प्रा० अंगालिय>अवधी अँगारी।

अँगिया—स्त्री० (चोली, कंचुकी)–सं० अङ्गिका>प्रा० अंगिआ>अवधी अँगिया, गु० चोळी, ने० भित्री चोलो।

अँगीठा—पुं० (बड़ी अँगीठी) –सं० अग्निस्था, अग्निष्ठा>प्रा० अग्गिट्ठा> हिं० अँगीठा।

अँगीठी—स्त्री० (आग रखने का छोटा वर्तन)–सं० अग्निष्ठिका>प्रा० अग्गि-ट्ठिआ>अङ्गीठी। तुल० म० आँक्टि, पं० उ० अंगीठी।

अँगुसा—पुं० (अंकुर, अँखुआ)–सं० अङ्कुश+क>प्रा० अंकुसअ>अँगुसा।

अँगूठा—पुं० (हाथ या पैर की सबसे छोटी और मोटी उँगुली)–सं० अंगुष्ठक >प्रा० अंगुट्ठअ>अँगूठा। फा० अंगुस्त, सिंह० अंगुट, पं० अंगूठा, भी० गु० अंगूठो, म० आंगठा, सिं० आङ्ठो, अंगूठो; ने० औंठा।

अँगूठी—स्त्री० (मुँदरी, छल्ला)–सं० अँगुष्ठिका>प्रा० अंगुट्ठिआ>अँगुट्ठी >अँगूठी, बं० अनुठि, गु० अंगुश्तरी, ने० अङ्गुठि, औंठी।

अँगरेना—क्रि० (अंकीकार करना, स्वीकार करना)–सं० अङ्गीकरण>प्रा० अंगीकरण, अंगीअरण या अंगीरण> अँगेरना।

अँगोंगा—पुं० (पुजौरा, किसी वस्तु का वह भाग जो धर्मार्थ पहले निकाल लिया जाए)–सं० अग्र+अङ्ग प्रा० अग्ग+अंग>हि० अँगोगा।

अँगोछना— क्रि० (अँगोछे से शरीर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पोंछना)–सं० अङ्ग प्रोक्षण>अंगपोछ, अंगवोंछ, अंगोछ+ना।

अँगोछा—पुं० (शरीर पोछने का एक प्रकार का छोटा कपड़ा, तौलिया)–सं० अङ्गप्रोक्षक > अंगपोंछ > अंगवोंछ> अंगोछा। गु० अंगुछो, सिं० अंगोछो, म० अंगुचें, अवधी अँगौछा, अँगौछा, कश्मी० अँगोछ, अस० गामछा, ने० गम्छा।

अँगोला—पुं० (गन्ने का अग्र भाग)–सं० अग्र पोतलक>प्रा० अग्गओलअ> अप० अग्गोला>हिं० अँगोला।

अँघड़ा—पुं० (काँसे का एक प्रकार का छल्ला जिसे नीच जाति की स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहनती हैं)–सं० अंघ्रि।

अँचरा—पुं० (पल्ला, दुपट्टे व दुशाले के दोनों छोर)–सं० अञ्चल>प्रा० अंचल। तुल० अवधी अँचरा, गु० अंचल; ने० आँचल।

अँजवाना—क्रि० (सुरमा लगवाना)–सं० अञ्जन (√अञ्ज)>प्रा० अंजण। आँजना का प्रे० रूप।

अँठई—स्त्री० (किलनी, चिचड़ी)–सं० अष्टपदी>प्रा० अट्ठअई, अंठई, भो० अँठई।

अँठी–स्त्री० (गुठली, गाँठ, किशोरी के स्तन, गिलटी) –सं० अष्ठि>प्रा० अट्ठी>हिं० अँठी, अवधी अँठुली।

अँडुआना—क्रि० (बधिया करना)–सं० अण्डवध>प्रा० अंडवधिअ, हिं० अँडुआना

अँड़ुवारी—स्त्री० (एक प्रकार की बहुत छोटी मछली)–सं० अण्डज>अंडअ> अंडव>अँडउ+वारी।

अँतड़ी—स्त्री० (आँत)–सं० अन्त्रिका >प्रा० अप० अंत्रड़ी>अँतडी। अवधी अँतरी, पं० अंतडी, गु० आंतरडुं, भो० अँतरी। उ० आँते, म० आतडें (आतडँ) बं० आन्त्रो।

अँतरौटा—पुं० (कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जो व्रज में स्त्रियाँ प्रायः (चोली आदि के ऊपर) पेट और पेडू पर लपेटती हैं) सं० अन्तरपट>प्रा० अंतरपट्ट >हि० अँतरौटा।

अँतावरि—स्त्री० (अन्तड़ियाँ, अँतडिया)–सं० अंत्रावली>हिं० अँतावरि, अँतावरि।

अँदरसा—पुं० (चावल के आटे की मीठी टिकिया)–सं० अन्तररसः(अन्तरेरसम् अस्य अन्तररसः) >प्रा० अंतररस >अवधी अँदरसा।

अँधरा—पुं० (अन्धा)–सं० अन्ध> प्रा० अंधरअ, ब्र० अंधरा, अवधी आँधर, गु० आंधळो।

अँधरी—स्त्री० (पहिए की पुट्ठियों अर्थात् गोलाई को पूरा करने वाली धनुषाकार लकड़ियों की चूल) – सं० आधारित>प्रा० आधारिअ>आधरी> अँधरी।

अँधेरा—पुं० (अंधकार)– सं० अंधकार, पा० अंधकारो>प्रा० अंधयार, हिं० अंधेर, ब्र० अँधेरा। अवधी अँधियार, बं० आंधार, गु० अंधारूं, सिं० अंधारु, पं० अन्हेरा, मै० अन्हरिया, सिं० अन्दुर, ने० अँध्यारो।

अँधौटी—स्त्री० (बैल या घोड़े की आँख बन्द करने का ढक्कन या परदा)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० अंधपट्टिका>प्रा० अंधवट्टीआ> अंधोट्टीआ>अंधौटिआ>अंधौटी।

अँबराऊँ—पुं० (बाग)–सं० आम्राराम>प्रा० अंबाराम > अम्मावराँ> हिं० अमराऊँ, अँबराव, अवधी अँबराउँ।

अंबिया—स्त्री० (आम का छोटा फल जिसमें जाली न पड़ी हो)–सं० आम्रिका >प्रा० अम्बिआ>अवधी अँबिया।

अँबुआ—पुं० (आम, रसाल)–सं० आम्र>प्रा० अंब>हिं० आम, ब्र० अँबुआ।

अँसुव—पुं० (आँसू) –सं० अश्रु> पा० प्रा० अस्सु>ब्र० अँसुव, हिं० अँसुवा, आँसू।

अइसन—वि० (ऐसा)–सं० एतादृश> एताहशन>एअइसण> एइसन > छ० अइसन।

अई—सर्व० (ये)–सं० एतत्>प्रा० एअ >एइ>अई।

अउ—अव्य० (और, तथा)–सं० अवर >प्रा० अवर, अवधी अऊ, भो० अउर, अउरि।

अउत—वि० (अनुपयुक्त, अनुचित)–सं० अयुक्त>अउत

अउलगना—क्रि० (उल्लघंन करना)–सं० उल्लंघन>पा०उल्लंघन>प्रा० उल्लंघण।

अउलना—क्रि० (औलना गरम होना, जलना, गरमी पड़ना) –सं० उल्= जलना।

अऊत—वि० (बिना पुत्र का) –सं० अपुत्र>प्रा० अपुत्त>अउत>अऊत।

अएरना—क्रि० (अङ्गीकार करना, ग्रहण करना)–सं० अङ्गीकरण>प्रा० अंगीअरण, हिं० अँगेरना, अएरना।

अकड़—स्त्री० (ऐंठ, तनाव, मरोड़, बल)–सं० आ+कड्ड>हिं० अकड़। तुल० अवधी अकड़ब, गु० अकडाट।

अकड़बाई—स्त्री० (ऐंठन, शरीर की नसों का पीड़ा के सहित एक बारगी खिचना)–सं० आकड्डवायु, हिं० अकड़बाई।

अकड़ा—पुं० (चौपायों का एक छूत रोग)–सं० आकड्ड>भो० अकड़ा।

अकत—वि० (सारा, समूचा)–सं० अक्षत >प्रा० अक्खत>हिं० अकत।

अकत्थ—वि० (जो कहा न जा सके)–सं० अकथ्य>प्रा० अकत्थ। तुल० अवधी राज० अकथ।

अकनना—क्रि० (कान लगाकर सुनना)–सं० आकर्णन>प्रा० आकण्णण>हिं० अकनना।

अकना—क्रि० (उकताना, घबराना)–सं० आकुल।

अकनि—कृ० (सुनकर)–सं० आकर्ण्य> प्रा० आकण्ण>हिं० अकनि।

अकनै—वि० (सुनने योग्य) –सं० आकर्ण्य>प्रा० आकण्णिय>ब्र० अकनै।

अकबक—वि० (अक्का बक्का, चौचक्का) सं० अवाक्>भो० अकबक।

अकरकरा—पुं० (उत्तरी अफ्रीका का एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती हैं)–सं० आकारकरभ। अ० अक़रकर्हा। तुल० म० अक्कलकाढा, गु० अककलगरो।

अकरखन—पु० हिं०-पुं० (आकर्षण)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० आकर्षण>प्रा० आकड्ढण>हिं० अकरखन, अकरखना।*

अकरा—वि० (महँगा, अधिक दाम का)—सं० अक्रय्य>प्रा० अकरय्य, अकरय, हिं० अकरा।

अकर्मी—वि० (दुष्कर्मी, बुरा काम करने वाला)—सं० अकर्मिन्>प्रा० अकम्मिअ, अकम्मि>हिं० अकर्मी।

अकवन—पुं० (आक, मदार)—सं० अर्कपर्ण>भो० अकवन।

अकसर[1]—वि० (जिसके साथ और कोई न हो)—सं० एकसृ>एकसर> हिं० गु० अकसर।

अकसर[2]—क्रि० वि० (प्राय:)—अ० अकसर। तुल० अक्सर, कश्मी० अकसर्।

अकसीर—वि० (निश्चित रूप से अपना गुण या प्रभाव दिखाने वाला)—अ० अक्सीर।

अकह—वि० (अकथनीय)—सं० अकथ्य >प्रा० अकत्थ>ब्र० अकह। तुल० गु० अकथ।

अकामी—वि० (कामनारहित) —सं० अकामिन्>प्रा० अकामी।

अकारज—पुं० (किसी काम में होने वाली बाधा, कार्य की हानि)—सं० अकार्य >प्रा० अकज्ज>हिं० अकारज, अवधी अकाज (हर्ज)।

अकारथ—वि० (व्यर्थ, बेकाम) —सं० अकार्यार्थ>प्रा० अकारियत्थ, अकारयथ्थ, अकारअथ>ब्र० अवधी अकारथ।

अकाली—पुं० (सिक्खों का एक सम्प्रदाय विशेष)—सं० अकाल+ई (प्र०) (अकाल पुरुष=परमेश्वर)।

अकेला—वि० (एकाकी)—सं० एकल> प्रा० अक्केल्लय, एकल्लय>अकेला, तुल० ब्र० अकेलौ। अवधी अकेल, म० एकटा, गु० एकलुं, एकलो, रा० एकला, ने० एकलै, पं० इकल्ला, अस० अकले (ऑकॅले)।

अकोर—पुं० (आलिंगन, भेंट)—सं० क्रोड>प्रा० कोड>हिं० अकोर अथवा सं० अङ्कक्रोड>प्रा० अँककोड, अँककोर >हिं० अँकोर, अकोर।

अकोला[1]—पुं० (अँकोल वृक्ष)—सं० अङ्कोल>अवधी अकोल।

अकोला[2]—पुं० (अगोला, ऊख के सिरे पर की पत्ती)—सं० अग्र>प्रा० अगर, अकर>हि० अकोर।

अकोसना—क्रि० (कोसना, बुरा भला कहना)—सं० आक्रोशन>प्रा० अक्कोस >हिं० अकोस+ना (प्र०)।

अकौआ—पुं० (मदार, कौआ, कोपल, आक का पेड़)—सं० अर्क>प्रा० अक्क+ औआ>अवधी अकौआ।

अकौटा—पुं० (धुरा)—सं० अक्षाटन> (सं० अक्ष>प्रा० अक्ख, अक्क, अक= धुरा+अटन=घूमना) अकौटा।

अक्खर—पुं० (अक्षर)—सं० अक्षर> प्रा० अव० अक्खर। अवधी आखर, ह० ऑक्खर।

अक्खो-मक्खो—पुं० (दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुँह पर फेरना ताकि उसे कुदृष्टि न लगे, टोटका)—सं० अक्षि+मुख, प्रा० अक्खि+ मुख।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अखज—पुं० (एक पौधा जिसे पशु भी नहीं खाते हैं) –सं० अखाद्य>प्रा० अखज्ज>हिं० अखज।

अखरावट—स्त्री० (वर्णमाला लिखने का ढंग)–सं० अक्षरावर्त्तन>पा० अक्खरावट्टन >प्रा० अक्खरावट्टण> अखरावट।

अखरोट—पुं० (एक बहुत ऊँचा पेड़)–सं० अक्षोट>प्रा० अकखोड। तुल० म० अक्रोड; गु० अखोड़, अख्रोट्, उर्दू अखरोट, बं० आखरोट, अस० आख्रोत, ओ० आख्रोट, ने० ओखर।

अखाड़ा — पुं० (मल्लशाला) – सं० अक्षवाट>प्रा० अक्खाडग>अप० अक्खवाडअ >हिं० अखाडा, भो० अखडा। ब्र० अवधी अखारा, म० अखाडा, गु० अखाडो, ने० अखड़ा।

अखीन—वि० (अक्षीण)–सं० अक्षीण> प्रा० अक्खीण>ब्र० अखीन।

अगर[1]—पुं० (एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है) –सं० अगरु>प्रा० अगुरू, अगुरअ, गु० बं० अगर।

अगर[2]—अव्य० (यदि, जो) –फा० अगर।

अगरे—(अखरा०)–क्रि० वि० (आगे, सामने)–सं० अग्र>प्रा० अग्ग>ब्र० अगरे, तुल० भो० अगिला।

अगला—वि० (आगे का)–सं० अग्रिमः >अग्गिनो>अग्गिलो<अप० अग्गिम, अग्गलउ, आगलो>अग्गिलो>अगिला >अगला। अवधी अगल्ला। सिं० आगरो, बं० आगलि, गु० आगलुं, ने० अगिल्लो, म० अगला, ओ० आगलि।

अगहन—पुं० (मार्गशीर्ष, मंगसिर)–सं० आग्रहायण > प्रा० अग्गाहण > हिं० अगहन। गु० अग्रहायण।

अगहनी—वि० (अगहन मास में होने वाला)–सं० आग्राहयणी>अगहनी।

अगाऊ—वि० (आगे का, अगला)–सं० अग्र>प्रा० अग्ग>हिं० अग+आऊ।

अगाह[1]—वि० (ज्ञात)–फा० आगाह।

अगाह[2]—वि० (अथाह, गहरा)–सं० अगाध>प्रा० अगाह>ब्र० अगाह।

अगीठा—पुं०(मकान का अगला भाग)–सं० अग्र+इष्ट>प्रा० अग्गइट्ठ>ब्र० अगीठा।

अगुआ[1]—पु०, (आगे चलने वाला व्यक्ति)–सं० अग्रपद>अग्गवय>अग्गउअ>अगुआ, अगुवा। तुल० गु० अगुआ, ने० अगुवा।

अगुसारना—क्रि० (आगे बढ़ना, आगे रखना)–सं० अग्रसारण>प्रा० अग्गसरण >हि० अगुसारना।

अगूठना—कि० (चारों ओर से घेर लेना)–सं० अवगुण्ठन>अगूठना।

अगूठी (पद०)—स्त्री० (कारागार, बन्धन)–सं० आगुप्ति > आगुत्ति> अप० अगुट्ठि>अगूठी।

अगौरा—पुं० (ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग, जिसमें पत्तियाँ रहती हैं और गाँठें नजदीक होती हैं)–सं० अग्र >पा० अग्न>प्रा० अंगालिअ>अप० इंगाली (दे० ना० मा०)>अवधी अगोरी, अगौरी, ब्र० भो० अंगोला।

अघाड़ा—पुं० (एक प्रकार का विषनाशक पौदा, चिचड़ा)–सं० आघाट्टक>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० अग्घाड, अग्घाडग > हिं० अघाड़ा, अगाड़ा ।

अघाना—क्रि० (भोजन या पान से तृप्त होना) – सं० आघ्राण > प्रा० अग्घाण, अग्घा > अप० अग्घाणो (दे० ना० मा०) > हि० अघाना ।

अचंभा—पुं० (विस्मय)–सं० अत्यद्भुत > पा० चंभेति, प्रा० अच्चब्भुय > अवधी अचंभव, गु० अचंबो, म० अचंबा, हिं० अचंभो, ने० अचम्म ।

अचकन—पुं० (बन्द गले के कोट की भाँति एक लंबा पहनावा, लम्बा अंगा)–सं० कञ्चुक > प्रा० अंचुक > हिं० अचकन ।

अचरज—पुं० (आश्चर्य)–सं० आश्चर्य > प्रा० अच्चरिय, अच्छरज > हिं० अचरज । तुल० गु० अचरज, ने० आश्चर्य ।

अचानक—क्रि० वि० (सहसा, बिना पूर्व सूचना के)–सं अकस्मात् > अचानक, तुल० गु० ओचिंतु अकस्मात्; पं० अचानक; ते० अकस्मातुगा, ने० अकस्मात् ।

अचार[1]—पुं० (मसालों के साथ तेल, नमक, सिरका में रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी)–फा० आचार, ने० अचार ।

अचार[2]—पुं० (आचरण) –सं० आचार > प्रा० आयार, हिं० आचार, अचार, गु० आचार ।

अचूक—वि० (जो न चूके)–सं० अच्युत > प्रा० चुक्कइ > हिं० चुक्, पं० चुक्क ।

अचेत—वि० (चेतनाहीन)–सं० अचेतस् > हिं० अचेत । ने० विचेत ।

अचोना—पुं० (आचमन का पात्र)–सं० आचमन > प्रा० आचवंनअ > अचउनअ > ब्र० अवोना, अचौना ।

अचौनी—स्त्री० (एक छोटी चम्मच)–सं० आचमनी > हिं० अचौनी ।

अच्छर—पुं० (अक्षर, हरफ)–सं० अक्षर > प्रा० अक्खर, अच्छर > अवधी अच्छर ।

अच्छरा—स्त्री० (अप्सरा)–सं० अप्सरस्, पा० प्रा० अच्छरा, अछरा, अछरी । गु० अप्सरा ।

अच्छा[1]—अव्य० (विस्मयादि बोधक स्वीकृति सूचक शब्द)–सं० अच्छ > पा० अच्छ > प्रा० अच्छअ > अच्छा ।

अच्छा[2]—वि० (उत्तम, निर्मल)–सं० अच्छ + क > पा० अच्छ > प्रा० अच्छअ > अप० अच्छं (दे० ना० मा० १-४९) > अच्छा । ने० असल । पं० उर्दू अच्छा ।

अच्छि—पुं० हिं० (नेत्र)–सं० अक्षि > प्रा० अच्छि ।

[3]**अछत**[1]—पु० हिं०, क्रि० वि० (विद्यमान, होते हुए, रहता हुआ) सं० आसत् > प्रा० आच्छत > अछत ।

[3]**अछत**[2]—पु० हिं०, क्रि० वि० (न रहते हुए, अनुपस्थित) सं० अ + अस्ति > प्रा० अच्छइ ।

अछत[3]—पुं० (देवताओं पर चढ़ाने के अक्षत)—सं० अक्षत > ब्र० अछत ।

अजवायन—स्त्री० (एक पौधा जिसके बीज ओषधी तथा मसाले के काम में आते हैं, जवायन)–सं० यवानी, तुल० पं० जवेण, ओ० जुआणि, बं० जोवान ।

अजाँ—स्त्री० (अजान)—अ० अजाँ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजा[1]—स्त्री० (प्रकृति, बकरी) (राम०, बाल० ६८/३)–सं० अजा।

अजा[2]—पुं० (मृत्युशोक)—अ० अजा।

अजा[3]—वि० (जिसका जन्म न हुआ हो)—सं० अजा।

अजाचक—पु० हिं०, पुं० (न माँगने वाला) –सं० अयाचक>प्रा० अजायग, हिं० अजाचक, अवधी अजाची।

अजाची—वि० (जिसे मांगने की आवश्यकता न हो)–सं० अयाचिन्>ब्र० अजाची।

अजान[1]—वि० (अबोध)–सं अज्ञान> पा० अजानन>प्रा० अजाण।

अजान[2]—स्त्री० (वह पुकार जो मस्जिद की सूचना देने के लिए की जाती है)– अ० अजान। सं० आह्वान, गु० अझान।

अजिन—पुं० (चीता, शेर, हिरण, बकरी आदि की खाल)–सं० अजिन> प्रा० अजिण।

अजिर(राम०)—पुं० (आँगन, मैदान)– सं० अजिर>प्रा०, अवधी अजिर।

अजुगुत—वि० (अयुक्त)–सं० अयुक्त> प्रा० अजुत्त>हिं० अजुगत, अजुगुत।

अजुगुति (जा०)—स्त्री० (अयुक्त बात, अनहोनी बात)–सं० अयुक्ति> प्रा० अजुत्तीय>हिं० अजुगुति। तुल० अवधी अजगुति।

अजुध्या—पुं० (अयोध्या नगर)–सं० अयोध्या>हिं० अजुध्या, राज० अजोध्या।

अजोरी[1] (राम०)—वि० (प्रकाशमान्, निर्मल)–सं० उज्ज्वल>उजोर, अजोर, अवधी स्त्री० अजोरी।

अजोरी[2]—क्रि० वि० (जबरदस्ती) – फा० जोर।

अज्ञा—स्त्री० (आदेश)–सं० आज्ञा> प्रा० अज्जा> हिं० अज्ञा। राज० आग्या।

अटक—स्त्री० (अटकने की क्रिया या भाव, अड़चन)–सं० आर्त+कृ>प्रा० आत्तकर, हिं० अटक, गु० अटक।

अटाला—पुं० (ढेर, राशि)–सं० अट्टाल >हिं० अटाला। तुल० अवधी अटाला।

अट्टा—पुं० (मचान, मकान का ऊपरी भाग) –सं० अट्ट>अट्टा।

अट्टालिका—स्त्री० (बड़ा और ऊँचा मकान) –सं० अट्टालक>प्रा० अट्टालग >हिं० अट्टालिका। ते० अट्टालकमु, गु० पं० अटारी।

अट्ठा—पुं० (ताश का एक पत्ता जिस पर किसी भी रग की आठ बूटियाँ होती हैं) –सं० अष्टक>प्रा० अट्ठय>अवधी अट्ठा। म० अठ्ठया।

अट्ठाईस—वि० (जो गिनती में बीस और आठ हो) – सं० अष्टाविंश>प्रा० अट्ठाइस>अप० भो० अट्ठाइस, म० अट्ठावीस, ने० अठ्ठाईस।

अट्ठानबे—वि० (नब्बे और आठ)–सं० अष्टानवति >पा० अट्ठानवति>प्रा० अट्ठाणउइ > हिं० अट्ठानबे। ने० अन्ठान्नब्बे, म० अठयाण्णव।

अट्ठावन—वि० (पचास और आठ)–सं० अष्टपञ्चाशत्>प्रा० अट्ठावण्ण>अप० अट्ठावन्न, हिं० अट्ठावन। तुल० ने० अठाउन्न।

अट्ठासी—वि० (अठासी; अस्सी और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आठ) –सं० अष्टाशीति>प्रा० अट्ठासीइ >अप० अट्ठासि। ने० अठासी। म० अट्ठावन।

अठखेल—पुं० (विनोद, क्रीडा) –सं० अष्टकेलि>प्रा० अट्ठखेल>हिं० अठखेल।

अठतालीस, अढ़तालीस—वि० (चालीस और आठ)–सं० अष्टचत्वारिंशत्, अट्ठचत्तारिस, अट्ठअत्तारीस, अठतालीस, अढ़तालीस।

अठपहला—वि० (आठ कोने वाला, जिसके आठ पहल या पार्श्व हों)–सं० अष्टपटल>पा० अट्ठपटल>प्रा० अट्ठपडल>अप० अट्ठपअल >हिं० अठपहला।

अठपाव—पुं० (उपद्रव, ऊधम) –सं० अष्टपाद>पा० अट्ठपाद, प्रा० अट्ठपाव >हिं० अठपाव।

अठवाँसा—वि० (वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाए)– सं० अष्टमास्यक>पा० प्रा० अट्ठमास>भो० अठवाँसा, हिं० अठमासा, गु० अठमासा।

अठवारा—पुं० (आठ दिन का समय)–सं० अष्ट+वार>प्रा० अट्ठवार>हिं० अठवारा। म० आठवडा, गु० अठवाडियुं।

अठहत्तर—वि० (सत्तर और आठ)–सं० अष्टसप्तति>प्रा०, अवधी अठहत्तरि> भो० अठहत्तर, म० अठ्ठयाहत्तर, गु० इठ्ठोतेर।

अठानबे—वि० (नब्बे और आठ)–सं० अष्टनवति>प्रा अट्ठणवति>हिं० अठानबे।

अठारह—वि० (दस और आठ) –सं० अष्टादशः>पा० प्रा० अट्ठारस>अप० अट्ठारह। पं० अठारां, ओ० उठर, गु० अढार, म० अठरा, भी० अडर, ने० अठार, सिं० अढरहाँ।

अठावन—वि० (पचास और आठ)–सं० अष्टापञ्चाशत्>प्रा० अट्ठावण्ण,>हिं० अठावन। तुल० ह० ठावन।

अठासी—वि० (अस्सी और आठ)–सं० अष्टाशीति>प्रा० अट्ठासीइ>प्रा० अप० अट्ठासि>हिं० अठासी, ह० ठाँस्सी, म० अठ्ठयाऐंशी, गु० अट्ठासी।

अठोतर सौ—वि० (एक सौ आठ)–सं० अष्टोत्तरशत>पा० अट्ठुत्तरसत, प्रा० अट्ठुत्तरसय>भो० अठोत्तर सो।

अड़तीस—वि० (तीस और आठ) –सं० अष्टत्रिंशत्>प्रा० अट्ठतीस, अप० अठतीस>हिं० अड़तीस। तुल० ह० अड़तीस्, अट्ठत्तीस्; म० अडतीस, गु० आडत्रीस, ने० अठतीस।

अड़ना—क्रि० (बीच में रुक जाना, आगे न बढ़ना, बीच में पड़कर फंसना या रुकना) – सं० अल>प्रा० अड्ड>हिं० अड़+ना।

अड़सठ—वि० (साठ और आठ)–सं० अष्टषष्टि>प्रा०अट्ठसट्ठि>हिं० अड़सठ। तुल० अवधी अड़सठि, म० अडुसष्ट, गु० अडसठ, ने० अठसठ्ठी।

अडीठ—वि० (जो दिखाई न पड़े)–सं० अदृष्ट>प्रा० अडिट्ठ>हिं० अडीठ।

अढ़न— स्त्री० (महत्ता, श्रेष्ठता, मर्यादा)–सं० आढ्यक>प्रा० आढिअ> हिं० आढ, अढ़न।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अढ़ाई—वि० (ढाई, दो और आधा)—सं० अर्द्धोनतृतीय>पा० अड्ढतियो> प्रा० अडतीय>अर्ध मा० अड्ढाइज्ज> अप० अढ्ढाइय>हिं० अढ़ाई। अथवा सं० सार्द्धद्वितीय>पा० अड्ढतिय>प्रा० अठ्ढाइय>हिं० अढ़ाई । तुल० पं० ढाई, सिं० अढ़ाई, बं० अडाई, म० अडीच, गु० अढी ।

अणि—स्त्री० (धार, नोक, बाढ़)—सं० अण् (शब्द करना) +इन्>प्रा० अण >हिं० अणि ।

अणु—पुं० (परमाणु, कन का आठवाँ हिस्सा, कनिका)—सं० अणु (सं० अण् +उन्)>पा० प्रा० अणु ।

अतर—पुं० (फूलों की सुगन्ध का सार)—अ० इत्र । भो० अवधी अतर, गु० अत्तर ।

अता—स्त्री० (बड़ों की ओर से छोटों को मिलने वाला दान)—अ० अता (दान, उपहार) ।

अतिसार—पुं० (अधिक दस्त होने का एक रोग, पेट चलना)—सं० अति+सृ (जाना)अतिसारः । तुल० मल० अतिसारम्, ओ० अस० अतिसार, पं० दस्त, सिं० अतिसारु, गु० अतिसार, अतीसार ।

अथउँ—पुं० (शाम का भोजन, वह भोजन जो जैन लोग सूर्यास्त के पहले करते हैं)—सं० अस्तमयन>प्रा० अत्थमण, अत्थवण>अत्थवन> अथउंन> अथऊँ ।

अथाई—स्त्री० (बैठक, चबूतरा, बैठने की जगह)—सं०आस्थानी>पा० ठानीय, प्रा० ठाणि, ठाइअँ ।

अथाह—वि० (जिसकी कोई थाह न हो, बहुत गहरा)—सं० अस्ताघ>प्रा० अत्थाह (दे० ना० मा० १-५४)>हिं० अथाह, गु० अगाध ।

अदरक—(एक छोटा पौधा जिसकी जड़ तीक्ष्ण और चरपरी होती है और मसाले की तरह खाद्य पदार्थों में डाली जाती है)—सं० आर्द्रक>प्रा० अल्लय, अद्दअ >हिं० अदरक । तुल० गु० आदु, बं० अस० आदा, म० आलें, ओ० अदा, ने० अदुवा । फ़ा० अदरक ।

अदीठ—वि० (बिना देखा हुआ)—स० अदृष्ट>पा० अदिट्ठ>प्रा० अद्दिट्ठ> हिं० अदीठ, अदीठा ।

अदेसू (जा०)—पुं० (आज्ञा)—सं० आदेश >पा० प्र० आदेस > हिं० अदेस, अदेसू । तुल० ह० राज० अदेस ।

अधकपाली—स्त्री० (आधे सिर का दर्द जो सूर्योदय से आरम्भ होकर दोपहर तक बढ़ता जाता है, आधासीसी)—सं० अर्द्धकपाल, अधकपाली <अधकपारी ।

अधबर—पुं० (आधा मार्ग)—सं० अर्द्धवर्त्मन् > प्रा० अधवट्ट > अधबड्ड> अधबर ।

अधमरा—वि०(आधा मरा हुआ सा, बहुत ही सुस्त)—सं० अर्द्धमृतः (अर्द्ध+मृ—(मू० धातु)+क्त) प्रा० अधमरिअ> हिं० अधमरा, ने० अधमरो, गु० अधमूउं ।

अधमाई—स्त्री० (नीचता)—सं० अधमता (सं० अधम+तल्-टाप्) पा०> अधम्म, अवधी अधमई, हिं० अधमाई । तुल० ओ० अस० अधमता, ते० आध-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म्यमु ।

अधिकार—पुं० (हक, आधिपत्य)–सं० अधिकार (अधि√कृ+घञ्) >पा० अधिकार>हिं० अधिकार । तुल० ने० अधिकार, अख्तियार ।

अधूरा—वि० (अपूर्ण)–सं० अर्धपूरक> प्रा० अद्धपूरग>अप० अद्धवूरअ>हिं० अधूरा ।

अधेला—पुं० (आधा पैसा)–सं० अर्द्ध +एला (प्र०)। ने० आधा पैसे सिक्का, गु० अधेलो ।

अधौटा—वि० (आधा औंटा हुआ)–सं० अर्ध+आवृत्त>छ० अधौंटा ।

अधौग्न—वि० (आधा मन, २० सेर)–सं० अर्धमान>अद्धवाँण> अधउन > अधौग्न ।

अध्व—पुं० (पथ, यात्रा)–सं० अध्वन् >हिं० अध्व ।

अनट—पुं० (राम० अयो०, २६८) (झूठ, उपद्रव, अनीति)–सं० अनृत> प्रा० अणट्ट>भो० अनट ।

अनत—क्रि० वि० (पराए स्थान)–सं० अन्यत्र>प्रा० अण्णत्त, अप० अन्नत> हिं० अनत, गु० अन्यत्र ।

अनपायनी—(राम०) स्त्री० (अविनाशिनी)–सं० अनपायन, स्त्री० अनपायनी ।

अनन्नास—पुं० (रामबाँस की तरह का एक पौधा और उसका फल)–पुर्त० अनानाज (ananas)>हिं० अनन्नास । तुल० ओ० अनारस, गु० अनेनास, म० अननस, पं० अनानास, कश्मी० अन्नास, सिं० अनासु (अन्नासु), ते० अनास, क० अनानस ।

अनबेधा—वि० (अनविधा, अवेध्य)–सं० अन्+विद्ध>हिं० अनबेधा । म० न वेंधलेला ।

अनमना—वि० (उदास, सुस्त, उचटे हुए चित्त का)–सं० अन्यमनस्क>प्रा० अण्णमण>हिं० अनमना । तुल० अवधी अनमन ।

अनवाँसा—पुं० (कटी हुई फसल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला)–सं० अन्नवंश <प्रा० अण्णवंस>हिं० अनवाँसा ।

अनाज— पुं० (धान्य, अन्न) –सं० अन्नाद्य>हिं० अनाज । तुल० सिं० अनाजु; पं० कश्मी० गु० अनाज ।

अनारी[1]—वि० (अनाड़ी, मूर्ख, गँवार, अकुशल)–सं० अनार्य>प्रा० अणारियय > अवधी अनारी, गु० अनाड़ी । अथवा—सं० अज्ञानिन्>प्रा० अण्णाण्णिय>अड़ानी (विपर्यय)>अनारी ।

अनारी[2]—वि० (अनार सम्बन्धी, अनार के छिलके या दाने की तरह का)–फ़ा० अनारी ।

अनियारे—(नुकीले, धारदार, पैने)–सं० अणीधारक>अनीहारक>अनीआरअ>अनियारा । अवधी अनीदार, म० टोंकदार, गु० अणीदार ।

अनी[1]—स्त्री० (सेना, समूह)–सं० अनीक <पा० अनीक, प्रा० अणीय>अवधी अनी । गु० अणी ।

अनी[2]—स्त्री० (किसी चीज का अगला नुकीला सिरा)–सं० अणि>पा० अनिक >हिं० अनी ।

अनेर[1]—वि० (अकेले या छुट्टा)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्यतर > अनेर ।

अनेरा—वि० (झूठ, निष्प्रयोजन)–सं० अनृत > प्रा० अणिर > हिं अनेरा । तुल० ब्र० अनेरे ।

अनोखा—वि० (जिसे पहले कभी न देखा हो, विशिष्ट)–सं० अन् + ईक्ष् > प्रा० नोक्खा > अप० नवक्खा, स्त्री० नवक्खी (हे०, शृंगारप्रकाश), अप० णोक्खा (सरस्वतीकंठाभरण), ब्र० अनोखौ । तुल० गु० अनोखुं ।

अन्तावरी, अन्तावली—स्त्री० (अँतड़ी)–सं० अन्त्रावलि > हिं० अन्तावरी ।

अन्दा—स्त्री० (लोहे की गोल पत्ती)–सं० अन्दुक > हिं अन्दा ।

अन्दाज— पुं० (अनुमान)– फ़ा० अन्दाज़ ।

अन्दोर—पुं० (हलचल, शोर)–सं० अन्दोल > हिं० अन्दोर ।

अन्हान—पुं० (स्नान)– सं० स्नान > प्रा० सणाण > हिं० अन्हान ।

अपना—सर्व० (स्वयं, निज)–सं० आत्मनः > प्रा० अप्पणो > अप० अप्पनो, ब्र० भो० अपनो, अवधी अपुना, अपनौ ।

अपनास—पुं० (अपना नाश)– सं० आत्मनाश > प्रा० अप्पणास > हिं० अपनास ।

अपाहिज—वि० (अंगहीन, लूला लंगड़ा) –सं० अपादहस्त > प्रा० अपादहत्थ > अपाहत्थ > अपाहज ।

अपेल(१) (पद०)—क्रि० (हटाना, विचलित करना)– सं० प्रेरयति > प्रा० पेल्लइ > अपेल ।

अपैठ—वि० (दुर्गम, जहाँ पहुँच न हो सके)–सं० अप्रविष्ट > पा० अपविट्ठ > प्रा० अपइठ्ठ > ब्र० अपैठ ।

अफगान— पुं० (अफगानिस्तान का रहने वाला व्यक्ति, काबुली, पठान)–सं० अश्वकायन > हिं० अफ़गान । अ० अफ़गान । गु० अफघान ।

अफरना—क्रि० (इतना अधिक भोजन करना कि पेट फूल जाए)–सं० आस्फार > प्रा० अप्फार > हिं० अफर + ना ।

अफीम—स्त्री० (पोस्त के डंठलों से निकाला जाने वाला एक मादक पदार्थ)–यूनानी ओपिअन (पोस्त का रस) > अफीम । अ० अफ़यून, अफ़यन, म० अफीम, गु० अफीण ने० अफिम ।

अब— क्रि० वि० (इस समय, इस क्षण)–सं० अद्य > प्रा० अदो, भो० अबर, मगही अबरी, मा० अवरी, इबरी । अवधी अबयँ ने० अब, यसपछि । म० आती, गु० आ वख्ते ।

अबरक—पुं० (एक प्रकार का खनिज)–सं० अभ्रक > हिं० अबरक । तुल० अवधी गु० अबरख, म० अभ्रक ।

अबरी—स्त्री० (जिल्द पर का कागज़, एक प्रकार की रंगाई जो बादल की तरह होती है, बादल जैसा)–फ़ा० अब्र + इ (प्र०), (सं० अभ्र = बादल) > अबरी ।

अबलक— (जा०) पुं० (ऐसा घोड़ा जिसके चारों पैर सफेद या पीले रंग के हों)–अ० अबलक ।

अबीर—पुं० (गुलाल)–अ० अबीर । तुल० अवधी अबीरि, ने० अबीर, म० अबीर, गु० अबील ।

अबूझ—वि० (अबोध) –सं० अबुद्ध >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पा० अबुज्झ>प्रा० अबुद्ध>ब्र० अबूझ।

अबेर—स्त्री० (विलंब, देर)–सं० अवेला >हिं० अबेर। तुल० अवधी अबेर, अबेरि। ब्र० अबेर, अबेरौ; भो० अबेरि, म० उशीर, ने० अबेर।

अभाऊ—वि० (असुन्दर, जो अच्छा न लगे)–सं० अभव्य>प्रा० अभव्व> अभाव>अभाऊ।

अभारू(१)—पुं० (कृतज्ञता, राम० में जिम्मेदारी के अर्थ में प्रयुक्त, अयोध्या २६८/३)–सं० आभारः >अभारु> अवधी अभारू।

अमड़ा—पुं० (एक पेड़ जिसके खट्टे फल चटनी और अचार के काम में आते हैं)–सं० आम्रात>पा० प्रा० अंबाड> अमड़ा।

अमचूर—पुं० (कच्चे आम के टुकड़ों को सुखाकर तथा उन्हें पीस कर बनाया हुआ चूर्ण)–सं० आम्र चूर्ण>प्रा० अम्म-चूर>हिं० अमचूर।

अमरती—स्त्री० (गुलोइ, गिलोइ, एक बड़ी कड़वी बेल जिसका डंठल औषधियों में प्रयोग होता है)–सं० अमृतिका> अमृतिआ>अमरतिआ>अमरती।

अमावट—पुं० (आम के सुखाये हुए रस की जमाई हुई पर्त या तह)–सं० आम्र+आवर्त>प्रा० अंबिर+आवट्ट >अमावट।

अमावस—स्त्री० (अमावस्या, कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि)–सं० अमावस्या> पा० अमावसी>प्रा० आओस>अमा-वस्स, हिं० अमावस। सिं० उमासु, ने० अमावस्या, आँसी। म० अमावस्या, गु० अमास।

अमिय—पुं० (अमृत)–सं० अमृत> प्रा० अमिअ>अप० अमिञ्ञ > हिं० अमिय, अमी। अवधी अमिरित, ब्र० अमिय।

अमीरी—स्त्री० (धनाढ्यता)–अ० अमीर +ई (प्रत्य०)।

अमोल—वि० (मूल्यवान्, अमूल्य) सं०–अमूल्य>प्रा० अमोल्ल>अमोल। गु० अमूल्य।

अम्माँ—स्त्री० (माता, माँ)–सं० अम्बा >प्रा० अम्मा>हिं० अम्माँ। गु० अम्मा।

अयन[1]— (राम०, अयो०)–पुं० (घर) सं० अयन।

अयन[2]—पुं० (गति)–सं० अयन।

अयाना— वि० (बुद्धिहीन, अज्ञानी, अबूझ)–सं० अज्ञान+क>प्रा० अजा-ण्णा, अप० अयाण, अञ्जाना, ब्र० अयाना। म० अडाणी, गु० अज्ञानी।

अरंड—पुं० (वृक्ष का नाम)–सं० एरण्ड >प्रा० एरंड>हिं० अरंड। तुल० म० एरंड, गु० एरंडो।

अरगजा[1]—पुं० (एक सुगन्धित द्रव्य)–फ़ा० अरगज।

अरधंगी—स्त्री० (पत्नी)–सं० अर्द्धां-गिनी>प्रा० अद्धांगिणी> ब्र० अर-धंगी।

अरना—पुं० (भैंसा)–सं० आरण्यक> प्रा० अरण्णय>अरना।

अरब[1]—पुं० (सौ करोड़ की सूचक संख्या)–वि० (जो गिनती में सौ करोड़

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो), सं० अर्बुद>अरब।

अरब[2]—पुं० (एक मरु देश, अरब का निवासी, अरब देश का उत्पन्न घोड़ा)—अ० अरब।

अरब[3]—पुं० (१-घोड़ा, २-इन्द्र)—सं० अर्वन्।

अरहट—पुं० (एक यन्त्र जिसमें तीन चक्कर या पहिये होते हैं)—सं० अरघट्ट >प्रा० अरहट्ट>अप० अरहट्ट। ख० रहट। गु० रहेंट।

अरहना—स्त्री० (पूजा) —सं० अर्हणा (स्त्री०)>प्रा० अरहणा>ब्र० अरहना।

अरहर—स्त्री० (एक अनाज जो दल के दाने का होता है, रहर)—सं० आढकी >प्रा० अड्ढकी>अवधी अरहरि> अरहर। तुल० पं० हरहर, बं० अड़हर, अस० अरहर (ऑरॉहॉर्)।

अलंटलं—पुं० (देर करने की चाल)—सं० अलम्+म० टाळम्।

अलइक पलवा—पुं० (झूठ, गप, इधर उधर की बातें)—सं० अलीक प्रलाप> पा० अलिक पलाप>प्रा० अलियपोरु-सालाव>अलीक पौरुषालाप< अवधी अलई-पलवा।

अलख—वि० (अदृश्य, अप्रत्यक्ष, ईश्वर का एक विशेषण)—सं० अलक्ष्य>प्रा० अलक्ख>ब्र० अलख।

अलग—वि० (पृथक्, दूर)—सं० अलग्न, सं० अ+लग>पा० प्रा० अलग्ग> अलग। म० अलगत, क० अलोग (alog), बं० अलग, सिं० अलगु।

अलबत्ता—अव्य० (बेशक, परन्तु, हाँ)—अ० अल्बत्त:। तुल० म० अलबत।

अलसी—स्त्री० (तीसी, एक पौधा और उसका बीज)—सं० अलसी, गु० अलसी, इलसी; सिं० एलसी, बं० तिसि, ते० अविसेलु, ने० तिसी, म० अळसी।

अलान—पुं०, अवधी (हाथी के बाँधने में काम आने वाला खूँटा या लोहे की बेड़ी)—सं० आलान >अलान, स्त्री० अलानी।

अवल—वि० (उत्तम, पहिला) —अ० अव्वल>अवल। तुल० म० अवल।

अवि[1]—(की०) अव्य० (भी)—सं० अपि >प्रा० अव० अवि।

अवि[2]—पुं० (सूर्य, आक, बकरा)—सं० अवि।

अस—(जा०) वि० (ऐसा, ऐसी, इस प्रकार का)—सं० ईदृश>ब्र० अवधी भो० अस।

असवार—पुं० (अश्वारोही, सवार)—सं० अश्ववार>प्रा० अस्सवार, अस-वार। तुल० भो० अवधी असवार, म० स्वार, गु० सवार, भी० [अस्वार। फ़ा० सवार।

असाढ़—पुं० (आषाढ़ का महीना)—सं० आषाढ़>प्रा० असाढ>हिं० असाढ़।

असामी—पुं० स्त्री० (संपन्न मनुष्य)—अ० असामी।

असिय—पुं० (फसल की कटाई के लिए लोहे का बना हुआ धारदार औजार)—सं० असि> पा० प्रा० असि>अप० असियं>अवधी हँसिया, ब्रजभाषा असि।

असी—वि० (अस्सी)—सं० अशीति> प्रा० असीइ<हिं० अस्सी, ब्र० असी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० पं० उर्दू अस्सी, सिं० असी (अस्सी), बं० अस० आशी, ओ० अशि।

असीस—स्त्री० (आशीर्वाद)– सं० आशिष् > प्रा० आसी > हिं० असीस। तुल० म० आशीर्वाद, गु० आशिष।

असूझ—वि० (जिसका कोई वार पार न दिखाई पड़े)–सं० असुध्यात > प्रा० असुज्झ > हिं० असूझ।

असोज—पुं० (आश्विन, क्वार या कुआर का महीना)–सं० अश्वयुज् > प्रा० असोय > हिं० असोज, म० आश्विन, गु० आसो मास।

अस्तुरा—पुं० (बाल बनाने का छूरा, उस्तरा)–फ़ा० उस्तरा। अवधी अस्तुरा, म० वस्तरा।

अहान[1]—स्त्री० (लोक में ख्याति)–सं० आख्यान > प्रा० अक्खाण, आहाण > आहान > अहान।

अहान[2]— पुं० (शोर, चिल्लाहट, पुकार)–सं० आह्वान > प्रा० आहाण < अहान।

अहाहा— वि० अव्य० (विस्मयादि बोधक)–सं० अहह > प्रा० अहो।

अहिवातु[5]— (राम०) पुं० (सौभाग्य, सोहाग)–सं० अविधवात्व > अइहवात > अहइवात्त > भो० अवधी अहिवात, गु० हेवातण।

अहीर—पुं० (ग्वाला, एक जाति जिसका काम गाय भैंस रखना और दूध बेचना है)–सं० आभीर > प्रा० अहीर > भो० अवधी अहिरा > गु० आहीर।

अहुठ—वि० (साढ़े तीन)–सं० अध्युष्ठ[11] > पा० अड्ढुडढ > प्रा० अड्ढुट्ठ > ब्र० अहुठ। म० औट।

अहेरा—पुं० (शिकार)–सं० आखेट + क > प्रा० आहेडा > आहेर > अवधी अहेर, हिं० अहेरा।

अहै—क्रि० (है)–सं० अस्ति > प्रा० अहइ > अवधी अहै।

आ

आ—अव्य० (सम्मति सूचक अव्यय)–सं० आम् > प्रा० आम > आं।

आंचू[5]—पुं० (औंछ, एक प्रकार की कँटीली झाड़ी जिसमें शरीफे के आकार के फल लगते हैं)–सं० आक्षीव > पा० आच्छिव > प्रा० अच्छव > हिं० आचू, आंचू।

आँक—पुं० (चिह्न, अंक, संख्या का चिह्न)–सं० अङ्क > प्रा० अंक > राज० अवधी भो० आँक।

आँकना—क्रि० (चिह्नित करना)–सं० अंकनम् > प्रा० अंकण > हिं० आँकणो।

आँकुस—पुं० (अंकुश) –सं० अंकुश > प्रा० अंकुस > भो० अवधी आँकुस, राज० आँकस।

आँख—स्त्री० (चक्षु) –सं० अक्षि, अक्षिन् > पा० प्रा० अक्खि > हिं० आँख। तुल० अवधी भो० बं० आँखि, गु० आंख, सिं० अख, पं० अँक्ख, राज० आँखड़ी।

आँखी—स्त्री० (आँख)–सं० अक्षीणि, अक्षिणी > पा० अक्खि > प्रा० अक्खीइं > अप० अक्खीइँ > पूर्वी अवधी आँखी।

आँग—पु० हिं०[6] + पुं० (अंग)–सं० अङ्ग > प्रा० अंग > हिं० आँग।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आँगन—पुं० (प्रांगण, आंगन, चौक)—सं० अङ्गण > प्रा० अंगण > हिं० आँगन। तुल० राज० आँगणो।

आँगुरी—पु० हिं०(६) स्त्री० (उंगली)—सं० अंगुली > प्रा० अंगुलि > हिं० आँगुरी। तुल० राज० आँगळी।

आँगी—पु० हिं०(६), स्त्री० (अँगिआ, चोली)—सं० अङ्गिका > प्रा० अंगिया > हिं० राज० आँगी।

आँच—स्त्री० (गरमी, ताप, अर्ची)—सं० अर्चि > पा० प्रा० अच्चि > हि०, राज० आँच। तुल० भो० अवधी आँचि, गु० आंच।

आँचल—पुं० (पल्ला, छोर, धोती, दुपट्टा, बिना सिले हुए वस्त्रों के दोनों छोरों पर का भाग)—सं० अञ्चल > प्रा० अंचल > हिं० आँचल। राज०, आँचळ।

आँठी—स्त्री० (गाँठ; गठली; दही, मलाई आदि का लच्छा)—सं० अष्टि > पा० प्रा० अट्ठि > अवधी आँठी। भो० आँठि।

आँत—स्त्री० (प्राणियों के पेट के भीतर वह लम्बी नली जो गुदा मार्ग तक रहती है)—सं० अन्त्र > प्रा० अंत > हिं० आँत। तुल० अवधी आँत, भो० आँति, राज० आँतड़ी, गु० आंतरडुं, सिं० अंदरु, पं० आँदराँ, म० आंतड़े।

आँतर—प्रा० प्र०, पुं० (खेत का उतना भाग जितना एक बार जोतने के लिए घेर लिया जाता है)—सं० अन्तर (ला०) > प्रा० अंतर > हिं० आँतर। भो० आँतरि।

आँधरा—पु० हिं०, वि० (अंधा)—सं० अन्ध > प्रा० अन्धरअ > हिं० आँधरा।

आँय बाँय साँय(१)—वि० (अंट संट बात, असम्बद्ध प्रलाप, व्यर्थ का)—सं० अति-पात-शांति (जैन धर्म का शब्द) > अप० आइ-बाइ-साँइ > आय-बाय-साँय > आँय बाँय साँय। गु० आँय-बाँय।

आँव—पुं० (मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है)—सं० पा० आम > अवधी आँव, म० आंव, आँव; सिं० अमु।

आँवल—पुं० (झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं)—सं० उल्बम्।

आँवला—पुं० (इमली की तरह छोटी पत्तियों वाला एक वृक्ष और उसका फल)—सं० आमलक > प्रा० आमलग, आँवलअ, आँवला। ब० आम्ला, सिं० आंविशे, गु० आमळुं, म० अवला।

आँवा—पुं० (वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं)—सं० आपाकः > पा० आवाप > प्रा० आवय > हिं० आँवाँ। अवधी आँवा, गु० अवाँ।

आँसू—पुं० (वह जल जो आँख के भीतर उस स्थान पर जमा रहता है, जहाँ से नाक की ओर नली जाती है)—सं० अश्रु, पा० अस्सु, प्रा० अंसु, अंसुय; गु० आंसु; ने० आँसु, पं० अंझू, म० अँसू, सिंह० अस।

आइ[1]—स्त्री० (युद्ध, संग्राम)—आजि > प्रा० आइ।

आइ[2]—स्त्री० (आयु, जीवन)—सं० आयु > प्रा० आउ०। गु० आयुं।

आइना—पुं० (आईना, दर्पण)—फा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आईनह् । तुल० राज० आइनो, गु० आयनो ।

आई—स्त्री० (पितामही, दादी)–सं० अर्यिका > प्रा० अज्जिआ, अवधी आजी ।

आईन—पुं० (नियम, कानून, कायदा, व्यवहार की व्यवस्था)–सं० अयन (मार्ग, रास्ता), फा० आयीन, जंद अयन ।

आउज—पुं० (ताशा नाम का बाजा, आउज) –सं० आतोद्य > प्रा० आओज्ज, आवज्ज > हिं० आउज ।

आएउ—क्रि० (आना)–सं० पा० आगत > प्रा० आगय > अप० आइअ > ब्र० आयौं, अव० आएउ ।

आक[1]—पुं० (अकउआ, अकौआ, अकवन)–सं० अर्क < प्रा० अक्क । गु० आकड़ो ।

आक[2]—वि० (दुःखी)–सं० अक ।

आकन—पुं० (जोते हुए खेत से घास फूस निकालने की क्रिया)–सं० आखनन > हिं० आकन ।

आकर्षन—पुं० (खींचना, सम्मोहन)–सं० आकर्षण > प्रा० आकड्ढण > अवधी आकरसन, सिं० बं० अस० आकर्षण, मल० आकर्षणम् राज० आकरसण, आकरखण ।

आका[1]—पुं० (भठ्ठी, पजावा, आँवाँ)–सं० आकाय > हिं० आका । गु० भठ्ठी, चूलो ।

आका[2]—पु० (मालिक, स्वामी)–अ० आक़ा ।

आखत—पुं० हिं०, पुं० (अक्षत, चंदन या केसर में रँगा हुआ चावल जो मूर्ति के मस्तक पर स्थापना के समय और दूल्हा दुलहिन के माथे पर विवाह के समय लगाया जाता है)–सं० अक्षत > प्रा० अक्खत > हिं० आखत ।

आखना[1]— पु० हिं०, क्रि० (कहना, बोलना)–सं० आख्यान > प्रा० आकखाण > हिं० आखना । पं० आखना ।

आखना[2]— क्रि० (चाहना, इच्छा करना)–सं० आकांक्षा > प्रा० आंकखा > हिं० आखना ।

आखर—पु० हिं०, पुं० (अक्षर)– सं० अक्षर > प्रा० अकखर > हिं० आखर ।

आखा—वि० (पूरा, समूचा, समस्त)–सं० अक्षय > प्रा० अक्खय > हिं० आखा ।

तीज—स्त्री० (वैशाख सुदी तीज)–सं० अक्षय तृतीया > प्रा० अक्खयतीज > हिं० राज० आखातीज । तुल० म० अखजा, गु० अखात्रीज ।

आखौं—क्रि० (कहना)– सं० आख्या (ख्या प्रकथने) > प्रा० अक्खा > हिं० आखा, आखौं, पं० आक्खा ।

आग—स्त्री० (अग्नि)–सं० अग्नि > पा० प्रा० अग्गि > अग्गी, अवधी आगि भो० आगी > हिं० आग । गु० मरा० आग, सिं० आगि, पं० अग्ग, बं० आगुन्, सिंह० अग ।

आगर—पुं० (खान, भंडार) –सं० आगारम् > पा० आगार > प्रा० आगर, हिं०, राज० आगर । अवधी आगरु, गु० अगर ।

आगरि—(पद०)–स्त्री० (छप्पर के द्वार को बन्द करने के लिए उसके पीछे लगायी जाने वाली लकड़ी, अर्गला, ब्योंडा, डंडा)–सं० अर्गला > प्रा० अग्गल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>आगल>आगर >अगरि । गु० आगळो, राज० आगळ ।

आगा—पुं० (आगे सामने का भाग)—शरीर का अगला भाग)—सं० अग्र> प्रा० अग्ग>हिं० आगा ।

आगिल★—वि० (अगला, अग्रवर्ती)—सं० अग्रिम > प्रा० अग्गिल्ल>अवधी आगिल ।

आगें—(पद०) वि० (आग के बने हुए, अत्यन्त क्रोधी, तेज स्वभाव के)—सं० आग्नेय>प्रा० अग्गेय>हिं० आगें ।

आगे—क्रि० वि० (और दूर पर, समक्ष, पूर्व)—सं० अग्रे > प्रा० अग्गे>हिं० आगे, अवधी आगें, राज० आगै ।

आघ—क्रि० (सूँघना) —सं० आघ्रा (आङ् उपसर्ग घ्रा धातु) >प्रा० अग्घा >आघ ।

आघण—पुं० (अगहन)—सं० अग्राहयण >हिं०, राज०. आघण ।

आज—क्रि० वि० (वर्तमान दिन)—सं० अद्य>पा० प्रा० अज्ज>राज० हिं० आज, भो० आजु, आजू; गु० आजे ।

आजा—पुं० (पितामह)—सं० आर्य> प्रा० अज्जअ>हिं० आजा । तुल० गु० आजो, म० आजा ।

आजी—स्त्री० (दादी, पितामह)—सं० आर्या> प्रा० अप० अज्जिआ >हिं० आजी ।

आटा—पुं० (पिसा हुआ अन्न, चून)—फ़ा० आर्द । तुल० सिं०, गु० राज० आटो, बं० आटा ।

आठ—वि० (चार का दूना)—सं० अष्ट >पा० प्रा० अट्ठ>राज०, हिं० आठ । अवधी आठि, आठ । तुल० बं० आट, सिं० अठ्, पं० अट्ठ ।

आठवाँ—वि० (अष्टम, संख्या में आठ के स्थान पर का)—सं० अष्टम्>पा० अट्ठवँ > प्रा० अट्ठय>अट्ठवँ> हिं० आठवाँ ।

आठवारा, आठवाडा— पुं० (एक सप्ताह)—सं० अष्टवार>प्रा० अट्ठवाड, हिं० आठवारा । तुल० म० आठवडा, सिं० अठिड्यो ।

आड़[1]—स्त्री० (व्यवधान, शरण, ओट, परदा, आश्रय, प्रतिबन्ध)— सं० अल् (रोकना)>हिं० आड़ । अवधी आड़, राज० आड ।

आड़[2]—स्त्री० (बिच्छू या भिड़ आदि का डंक)—सं० अल (डंक) >पा० अड >प्रा० आड>हिं० आड़ ।

आड़ें—वि० (कुँड, रेखा, वार से पार तक रखा हुआ)— सं० आलि>प्रा० आल, आड, आड़ा, आड़ी, गु० आडुं ।

आढ़त—स्त्री० (किसी अन्य व्यापारी का माल रखकर कुछ कमीशन लेकर उसकी बिक्री करा देने का व्यवसाय)—सं० आढ्यत्व>अड्ढत । भो० आड़ति, गु० आडत ।

आणी—स्त्री० (प्याज की गंठी, कमल-गट्टा)—सं० आंडीक> आलीक> आणीक>हिं० आणी ।

आथना—क्रि० (अस्त होना, डूबना)—सं० अस्त>प्रा० अत्थ>हिं० आथ+ना ।

आथि—स्त्री० (उपस्थिति, विद्यमानता)—सं० अस्ति>अत्थि>आथि ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आथी[1]—(स्थित)–सं० आस्थित>प्रा० आत्थिअ>आथी।

आथी[2]—वि० (घनी)–सं० आर्थिक> प्रा० अत्थिय>आथी।

आथी[3]—स्त्री० (अर्थ-सम्पन्नता, पूँजी)– सं० आर्थिकी>प्रा० अत्थिई, आथइ।

आधा—वि० (किसी वस्तु के दो बाराबर हिस्सों में से एक)–सं० अर्द्ध+क> प्रा० अद्धअ>हिं० आधा।

आन[1]—पुं०, (भोज्य पदार्थ, चावल का भात)–सं० अन्न>प्रा० अण्ण>अव० आंन।

आन[2]—स्त्री० (आज्ञा)– सं० आज्ञा> प्रा० आण>अव० आन।

आन[3]—वि० (दूसरा, और) –सं०> अन्य अवधी आन।

आन[4]—स्त्री० (क्षण)–अ० आन।

आन[5]—स्त्री० (मर्यादा, शपथ, सीमा)– सं० आणि>हिं०, राज० आन। गु० आण।

आना[1]—क्रि० (धातु √आन्+आ= लाया)–सं० आनयति>प्रा० आणवइ> हिं० आना, म० आण्णें।

आना[2]—पुं० (किसी वस्तु का सोल-हवां भाग)–सं० आणकः>हिं० आना।

आना[3]—क्रि० (जाकर वापस आना)– सं० पा० आगमन>प्रा० आगमण> हिं० आना।

आन्ना—पुं० (जंगल में गोबर के सूख जाने पर बना कंडा)–सं० आरण्य+क >पा० आरञ्ञक>प्रा० आरण्णग> हिं० आन्ना। तुल० बु० आरना।

आप[1]—सर्व० (स्वयं)–सं० आत्मा> प्रा० अप्पा>आप। भो० आपु। अथवा सं० आत्मन्>प्रा० अप्प>हिं० आप। अवधी आपहि। तुल० बं० आपनि, ओ० आपे, ने० आपनु।

आप[2]—पुं० (जल)–सं० आपः>पा० आप>हिं० आप।

आपन—सर्व० (अपना)–सं० आत्मनः >प्रा० अप्पण>अप० अप्पुणु>भो० अवधी आपन।

आपे—सर्व० (आपसे)–सं० आत्मना> प्रा० अप्पणो>अप्पना> अवधी आपै, अव० आपे।

आपें—क्रि० (अर्पण करना)–सं० अर्पय >प्रा० अप्प >अव० आपें।

आपस—स्त्री० (सम्बन्ध, एक दूसरे का सम्बन्ध)–सं० आत्मनः>प्रा० अप्पस्स >हिं० आपस, अवधी आपुस।

आपूर—वि० (भरपूर, जो भरा हो)– सं० आपूर्ण >प्रा० आपुण्ण> हिं० आपूर।

आपूरना★—क्रि० (भरना)–सं० आपू-रण>हिं० आपूरना।

आमचुर—पुं० (सुखाये आम के टुकड़े अथवा फाँक का चूरा)–सं० आम्रचूर्ण >प्रा० अंबचुण्ण>अमचुर, आमचुर।

आमड़ा, अमड़ा—पुं० (अमरे का वृक्ष, अमावट)–सं० आम्रातक>प्रा० अंबा-डग, अंबाडय>हिं० अमड़ा, आमड़ा।

आमणदूमन—वि० (उद्विग्नमन, खिन्न) सं० उन्मन+दुर्मन> प्रा० उम्मण दुमण, राज० आमणदूमनो।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आमद—स्त्री० (आमदनी, आय)–फ़ा० आमद ।

आमना-सामना—क्रि० वि० (परस्पर एक दूसरे के सामने होने की अवस्था या भाव, साक्षात्कार, भेंट)–सं० आमुख-सम्मुख>हिं० आमना-सामना । पं० आंमणे-सामणे, ह० आंह्मा-सांह्मी, औंही-सौंही । राज० आमनै-सामनै ।

आमरखना—क्रि० (क्रुद्ध होना, दुःख पूर्वक रोष करना)–सं० आमर्ष>प्रा० अमरिस>हिं० आमरखना ।

आम्राई—स्त्री० (आम का बाग़)–सं० आम्रराजि>हिं० आम्राई, अवधी अमराई ।

आयँती-पायँती—स्त्री० (सिरहना-पायताना) सं० अंगस्थ+फ़ा० पायताना ।

आयसी–वि० (लोहे का, लोह-निर्मित)–सं० आयसीय>पा० प्रा० आयस>आयसी ।

आयसु—स्त्री० (आदेश)– सं० पा० आदेश>प्रा० आएस, आएसु, आयसु । म० आदेश ।

आया—क्रि० (आना क्रिया का भूतकालिक रूप)– (आए हुए थे)– सं० आगत>प्रा० आयअ>अव० आआ>हिं० आया ।

आरज—वि० (आर्य, उत्तम, श्रेष्ठ, निर्दोष, आर्य गोत्र में उत्पन्न)–सं० आर्य्य>प्रा० आरिय, अज्ज>हिं० आरज ।

आरती—स्त्री० (पूजा में देवता के सामने दीप दिखाना, पूर्ण रात्रि पर्यन्त जो कार्य किया जाय)–सं० आरात्रिक>प्रा० आरत्तिय>हिं० आरती ।

आरन—पुं० (जंगल, वन)– सं० अरण्य>प्रा० अरण्ण>हिं० आरन । गु०अरण्य ।

आरपार—क्रि० वि० (एक छोर से दूसरे छोर तक)–सं० आरपारम् ।

आरस—स्त्री० (शीशा, दर्पण, काँच)–सं० आदर्श>प्रा० आरसिय>हिं० आरस । राज० आरसी ।

आरसी—स्त्री० (दर्पण, एक गहना जिसे स्त्रियाँ दाहने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं)–सं० आदर्शिका>प्रा० आरसिका>आअरसिआ>हिं० आरसी ।

आरिया[1]—स्त्री० (एक फल जो ककड़ी के समान होता है)–सं० आरूक>हिं० आरिया । तुल० गु० आरियुं ।

आरिया[2]—स्त्री० (आर्या)–सं० आर्या>प्रा० आरिया ।

आरेसू(१)—(राम०)–स्त्री० (डाह)–सं० आ+ईर्षा>आ+ इरस>आ +रइस>पुं० आरेस, स्त्री० आरेसु ।

आरोपना—क्रि० (लगाना, स्थापित करना)–सं० आरोपणम्>पा० आरोपन>प्रा० आरोवण>हिं० आरोपना ।

आरौ(१)—(राम०)–पुं० (आहट, शब्द, ध्वनि)–सं० आख (आ+ख)>आरउ>आरौ ।

आल—वि० (गीला, कच्चा)–सं० आर्द्र>प्रा० अद्द>हिं० आल ।

आलन—पुं० (दीवार आदि बनाने की मिट्टी में मिलाया जाने वाला घास, भूसा आदि; आटा या बेसन जो साग में पकाते समय उन्हें गाढ़ा करने के लिए

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलाया जाए)–सं० आलापन(२)>प्रा० आलावण(२)>हिं० आलन। अवधी आलन।

आला[1]—पुं० (भीगा हुआ बिनौला)–सं० आर्द्र>प्रा० अद्द, अल्ल>आला।

आला[2]—पुं० (कुम्हार का आँवा, पजावा)–सं० अलात।

आला[3]—वि० (गीला)–सं० आर्द्र>प्रा० अल्ल>आला।

आला[4]—(दीए का ताक)–सं० प्रा० आलय>आलअ>आला।

आला[5]—वि० (सबसे बढ़िया)–अ० आला।

आला[6]—पुं० (औजार, उपकरण)–अ० आला। भो० आला।

आलापन—क्रि० (वार्त्तालाप करना)–सं० आलापन>प्रा० आलवण>हिं० आलापन। राज० आलापणो।

आली—स्त्री० (सखी, सहेली, भ्रमरी, पंक्ति)–सं० आलि>प्रा० आली।

आवन★—(आना)–सं० आगमन>प्रा० आगमण>हिं० आवन।

आवन्नाल[1]—स्त्री० (तुरन्त के हुए बच्चे की नाभि में लगी हुई लम्बी नाल और उस नाल के दूसरे सिरे पर लगा हुआ जरायु अपरा कहलाता है)–सं० अपरा+नाल>आवन्नाल। अपरा>अवरा>अवर>आँवर+नाल>आवन्नाल (बोली में), हिं० आँवला-नाल।

आवरि, अवली—स्त्री० (पंक्ति)–सं० आवलि>पा० प्रा० आवलि>हिं० आवरि।

आवा, आँवाँ—पुं० (भट्टी, कुम्हार का आवा)–सं० आपाक>पा० आवाप>प्रा० आवग>आवाअ>आवा>आँवाँ।

आसतोष—वि० (जल्द प्रसन्न होने वाला)–सं० आशुतोष>हिं० आसतोष।

आस-पास—क्रि० वि० (आस-पास में)–सं० आस्य (मुख, सामने)>प्रा० आस>अव० अस। सं० पार्श्व (बगल)>पास>पस। अथवा सं० पक्ष>पक्ख>पख>अव० पष।

आसमान—पुं० (आकाश)–सं० अश्मानः>हिं० आसमान।

आसरा—पुं० (अवलंब, शरण)–सं० आश्रय>प्रा० आसय>आसरअ>आसरा। गु० आशरो।

आसवार—पुं० (घुड़सवार)–सं० अश्ववार>हिं० आसवार।

आसा—(उम्मेद)–सं० आशा>पा० प्रा० आसा>भो० अवधी आसा।

आसार—पुं० (लक्षण, चिह्न)–अ० आसार।

आसिन—पुं० (कुवाँर का महीना)–सं० आश्विन>हिं० आसिन, आसुन, गु० आसोमास, म० आश्विन महिना।

आसोई—स्त्री० (आश्विन मास की पूर्णिमा, आश्विन मास की अमावस)–सं० आश्वयुजी>प्रा० आसोई।

आसोज—पुं० (आश्विन मास, कुवाँर का महीना)–सं० आश्वयुज>प्रा० आसोअ>हिं० आसोज।

आह—अव्य० (पीड़ा, शोक)–सं० अहह>प्रा० अहह>हिं० आह।

आहर[1]—पुं० (आहार)–सं० आ+हृ>पा० आहार>प्रा० आहर।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आहर[२]—पुं० (युद्ध)–सं० आहव।

आहर[३]—पुं० (वह हौज जो पोखरे से छोटा हो)–सं० आहाव।

आहर[४]—पुं० (समय, दिन)–सं० अहः।

आहरन—पुं० (लोहारों और सुनारों की निहाई)–सं० आहनन>प्रा० आहणण>हिं० आहरण।

आहा—अव्य० (आश्चर्य)–सं० अहह> प्रा० अहह>हिं० आहा।

आहि—क्रि० (है)–सं० अस्ति>हिं० आहि।

इ

इंदुर—पुं० (चूहा)–सं० इन्दूर>प्रा० इंदुर। म० उंदीर, गु० उंदर सि० उन्दुरु।

इंदौर—पुं० (एक नगर)–सं० इन्द्रपुर >इंउउर>इंदौर

इक—वि० (एक)–सं० एक > प्रा० एक्क। गु० म० एक, राज० इक।

इकट्ठा—वि० (एकत्र)—सं० एकस्थ> प्रा० एकठ्ठ, अप० एकत्थ>हिं० इकट्ठा, ह० कट्ठा। गु० एकठुं, म० एकत्र केलेलें, राज० इकट्ठो।

इकतरा—पु० हिं०—पुं० (वह ज्वर जो जाड़ा देकर एक दिन छोड़ दूसरे दिन आता है)–सं० एकान्तर>प्रा० एक्कांतर, इक्कांतर>इकन्तर > हिं० इकतरा।

इकतार—क्रि० वि० (निरन्तर, सतत)–सं० एकतारः>प्रा० इक्कतार>हिं० इकतार।

इकल्ला—वि० (अकेला)–सं० एकल> प्रा० एगल्ल, एकल्ल, इकला, इकल्ला इक्कल। गु० एकलुं; म० एकेरी, एकटा।

इकसार—वि० (समान, सदृश)–सं० एकसार>प्रा० इक्कसरय>हिं० इकसार।

इक्कीस—वि० (बीस और एक)–सं० एकविंशत्>प्रा० एक्कवीस। म० एकव्वीस, राज० इकीस।

इक्यावन—वि० (पचास और एक)–सं० एकपंचाशत्>प्रा० एक्कावण्ण, इक्कावन>इक्यावन। म० एक्यावन, राज० इकावन।

इकौंज—स्त्री० (वह स्त्री जो एक बार जनकर बाँझ हो जाए)–सं० काकवंध्या >काकवज्झा>ककौंज्झा> इकौंजा> हिं० इकौंज।

इच्छना—क्रि० (इच्छा करना)—सं० इच्छन>पा० इच्छति>प्रा० इच्छ> हिं० इच्छ+ना। गु० इच्छुवुं, म० इच्छा करने, राज० इंछणो।

इज्जत—स्त्री० (प्रतिष्ठा, मर्यादा)–अ० इज़्ज़त। राज० इज्जत।

इडली—स्त्री० (चावलों को पीसकर बनाया जाने वाला एक दक्षिण भारतीय पकवान) मल० त० इट्टलि, क० इड्डलि।

इत—क्रि० वि० (इधर)–सं० इतः> हिं० इत। तुल० गु० अहीं।

इतना—वि०(इस मात्रा का)–सं० इयत् >पा० इयन्त>प्रा० इत्तिय, एत्तअ> एत्तिअं<अप० एत्तउ, इत्तिय, अव०एत, ह० एता, एतै; अवधी इत्ते, हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इतना। तुल० म० इतके, राज० इतरा, गु० एटलो, सिं० एतिरो।

इतराई—क्रि० (इतराता है)—सं० इत्वरायते>इतराय > इतराई। भो० इतराइल, म० गर्वानें।

इतलाक—पुं० (कथन, जारी करना, बंधन मुक्त करना)–अ० इतलाक।

इतवार—पुं० (रविवार)–सं० आदित्य-वार>प्रा० आइत्तवार>हिं० इतवार। म० ऐतवार, आइतवार, गु० आतवार, राज० इतवार।

इत्तफाक—पुं० (सहमति, मतैक्य, संयोग)– अ० इत्तिफ़ाक़।

इत्तला—स्त्री० (किसी घटना के सम्बन्ध में दी जाने वाली सूचना)–अ० इत्ति-लाअ>हिं० इत्तला, इत्तिला। तुल० म० इतल्ला, गु० इत्तला।

इन, इन्ह—सर्व० (इस का वहुवचन)–सं० एतेषाम्>प्रा० एआणं>अप० एण्ह >एन्ह, हिं० इन्ह, इन।

इनकार—पुं० (अस्वीकार)—अ० इन-कार।

इनसाफ—पुं० (न्याय)–अ० इन्साफ़।

इनार, इनारा—पुं०(कूआँ)–सं० इन्द्रा-गार>पा० इन्दागार, अवधी इनारा, हिं० इनार। गु० इन्दारा।

इमली—स्त्री० (एक वृक्ष जिसमें खट्टी फलियाँ लगती हैं)—सं० अम्लिका> प्रा० अम्बिलिआ>इमलिआ>इमली। गु० आमली।

इरखा—स्त्री० (ईर्ष्या)–सं० ईर्ष्या> पा० प्रा० इस्सा, हिं० इरिषा, इरषा, अवधी छ० इरखा।

इस—सर्व० ('यह' सर्वनाम का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से प्राप्त होता है)–सं० एतस्य>प्रा एअस्स>इस।

इसबगोल—पुं० (चिकित्सा कार्य में प्रयुक्त एक पौधा और उसके बीज)–फा० इस्पग़ोल।

इस्तीफ़ा—पुं० (त्यागपत्र)–अ०इस्ते-फ़ा। म० इस्ताफा।

इहाँ—क्रि० वि० (यहाँ)–सं० पा० प्रा० इह>अवधी इहाँ। भो० इहा, म० येथें।

ई

ईंगुर—पुं० (सिंदूर)–सं० हिंगुल> प्रा० इंगुल। अवधी ईंगुर, भो० ईंगुरवा।

ईंट—स्त्री० (ईंठ, साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा, लंबा टुकड़ा जो पजावे में पकाया जाता है)– सं० इष्टिका, इष्टका>पा० इट्ठका>प्रा० इट्ठआ, इट्ठा>इट्ठअ>ईंट। अवधी ईंटा, भो० ईंटा, ईंटि।

ईंधन—पुं० (रसोई पकाने, धातुएं आदि गलाने के लिए जलाने की लकड़ी, कोयला आदि)– सं० इन्धन>प्रा० इन्धण>हिं० ईंधन। अवधी ईन्हन।

ईख—स्त्री० (शर जाति का एक प्रकार जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है, उख, गन्ना)–सं० इक्षु>प्रा० इक्खु>उख्खु>हिं० अख। अवधी ईखि, राज० ईख।

ईठ—पुं० (प्रिय, मित्र, जिसे चाहें,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभिलषित)–सं० इष्ट>प्रा० इट्ठ> हिं०, राज० ईठ।

ईठि—स्त्री० (मित्रता, प्रीति)– सं० इष्टि>प्रा० इट्ठि>हिं० ईठि।

ईठी—स्त्री० (दंड, सोटा)–सं० यष्टि, यष्ठी>प्रा० इट्ठि>हिं० ईठी।

ईमान—पुं० (विश्वास, धर्म, सत्य, चित्त की सद्वृत्ति)–अ० ईमान। तुल० म० इमान।

ईरमद★—स्त्री० (बिजली, वज्राग्नि)– सं० इरम्मद>हिं० ईरमद।

ईल—पुं० (एक प्रकार का बनैला जन्तु)–प्रा० इल्लि, इल्ल>हिं० ईल।

ईस—पुं० (परमेश्वर)–सं० ईश> पा० प्रा० ईस>हिं० राज० ईस, भो०, अवधी ईसर।

ईसन—पुं० (ईशान कोण, पूरब और उत्तर के बीच का कोना)–सं० ईशान >हिं० ईसन।

ईहित—वि० (जिसकी इच्छा की गई हो)–सं० √ईह्+क्त > प्रा० ईहिय >हिं० ईहित।

उ

उंघना—क्रि० (नींद लेना)–प्रा० उंघइ, उग्घई, >हिं० उंघना।

उँ, उँह—अव्य० (अस्वीकार, असहमति, उदासीनता तथा घृणा आदि का सूचक शब्द)–सं० ऊम्>हिं० उँ, उँह।

उँगली—स्त्री० (हथेली के छोरों से निकले हुए फलियों के आकार के पाँच अवयव जो वस्तुओं को ग्रहण करते हैं)– सं० अङ्गुलि।

उँच—वि० (ऊँच)–सं० उच्च>प्रा० उच्च>हिं० ऊँच।

उँबरी—पुं० (गूलर का छोटा फल, उडुंबर)–सं० उदुम्बर>प्रा० उंबर> ऊँबर।

उकड़ूँ—पुं० (घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे जमीन पर पूरे बैठते हैं और चूतड़ एँड़ियों से लगे रहते हैं)–सं० उत्कुटुक>प्रा० उक्कुडुग, उक्कुडुय>हिं० उकड़ूँ।

उकास—स्त्री० (उकासने की क्रिया या भाव)– सं० उत्कर्ष>प्रा० उक्कास, उक्कस>हिं० उकास, ह० उकास्।

उकीरना—क्रि० (खोदना, नक्काशी करना)–सं० उत्+कृ>प्रा० उक्किर, उक्किरइ>हिं० उकीरना।

उकेर—स्त्री० (उकेरनी से की गई खुदाई)–सं० उत्कीर्य>प्रा० उक्कीरिअ, उक्करिअ>उक्कइर>उकेर। या सं० उत्कीर्य>प्रा० उक्कारिऊण (कर्पूर-मंजरी, ३/१७), उक्किर, उक्कइर> उकेर।

उकेरना—क्रि० (नक्काशी करना)–सं० उत्+कृ>उत्किरति>प्रा० उक्किरइ, उक्किर>हिं० उकेर+ना।

उक्खल, उखल—स्त्री० (ओखली, काँडी)–सं० उदूखल> उद्खल>पा०, प्रा० उक्खल, प्रा० उऊखल>उऊहल, अप० उक्खलि>हिं० ऊखल, ओखल। भो० उखरी।

उखड़ना—क्रि० (खोंटना, कुतरना, विच्छेदन करना)–सं० उत्खण्डन>प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उक्खंडण > हिं० उखड़ना ।

उखाड़ना—क्रि० (जमी हुई या लगी हुई चीज को खींचकर या निकाल कर अलग करना)–सं० उत्+कृष्ट, उत्+खन् > प्रा० उक्खण, उकखाल, उक्खणाहि > हिं० उखाड़+ना ।

उगना—क्रि० (निकलना, उदय होना, प्रकट होना)–सं० उद्गत > पा० उग्गतो > प्रा० उग्गय > उग्गअ+ ना । गु० उगवूं, म० उगणें, सिं० उगणुं ।

उगलना—क्रि० (पेट में पहुँची या मुँह में डाली हुई चीज को मुँह के रास्ते फिर से बाहर निकालना)–सं० उद्गिरण (उद्+गृ+ल्युट्) > प्रा० उग्गिरण > हिं० उगलना) भो० उगलल, म० उगलणें, राज० उगळणो ।

उगवै[1] (पद०) क्रि० (निकलना)–सं० उद्गमयति > प्रा० उग्गवइ > उगवै । म० उगव ।

उगा—क्रि० (निकलना, उदय हुआ, प्रकट हुआ)–सं० उद्गत > प्रा० उग्गय > उग्गअ > उगा ।

उगाहना—क्रि० (वसूल करना)–सं० उद्ग्राहण, प्रा० उग्गाहण > उग्गहन > हिं० उगाहना ।

उगाहिय[1]–(की०) क्रि० (उगाहना)–सं० उद्ग्राह > प्रा० उग्गाह > अप० उग्गहिअं (दे० ना० मा०) > अव० उगाहिय ।

उगाही—स्त्री० (उगहनी)–सं० उद्ग्राहयति > प्रा० उग्गाहयति > उगाही ।

उग्गाहा—पुं० (आर्या छंद का एक भेद जिसके सम चरणों में अट्ठारह और विषम चरणों में बाहर मात्राएँ होती हैं)–सं० उद्गाथा > प्रा० उग्गाहा ।

उघटना[1]—क्रि० (गई बीती बात को उठाना, दबी दबाई बात को उभाड़ना, किसी को भला बुरा कहते उसके बाप दादे को भी भला बुरा कहने लगना)–सं० उत्कत्थन, उक्कथन, प्रा० उक्कथण > हिं० उघटना ।

उघटना[2]—क्रि० (किसी का कोई भेद खोलना)– सं० उद्घाटन > प्रा० उग्घाडण > हिं० उघटना । भो० उघटल, सिं० उघडणु, म० उघड ।

उघाइ—स्त्री० (उगाही)–सं० उद्ग्राह > प्रा० उग्गाह, उग्गाहइ > हिं० उघाइ ।

उघाड़ना—क्रि० (खोलना, प्रकट करना, गुप्त बात को खोलना)–सं० उद्घाटन > पा० उग्घाटन > प्रा० उग्घाडण > उघाडण > उग्घाडना > उघाड़ना ।

उघाडै—क्रि० (रहस्य खोलना, प्रगट करना)–सं० उद्घाटयति > प्रा० उग्घाडिअ > हिं० उघाडै । राज० उघाड़णो ।

उचटना—क्रि० (उचड़ना, जी ऊब जाना, जमी हुई वस्तु का उखड़ना)–सं० उच्चाटन > प्रा० उच्चाडण > अप० उच्चाडो (दे० ना० मा०), उच्चाडणु > हिं० उचटना । गु० उच्चाट, सिं० उचाटु ।

उचरना—क्रि० (उच्चारण करना)–सं० उत्+चारय् > प्रा० उच्चार > हिं० उचरना ।

उच्छलना—क्रि० (उछलने की क्रिया करना)–सं० उच्छलन > प्रा० उच्छलण > हिं० उच्छलना, उछलना, उछ्छरना ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्छ्वास★—पुं० (ऊपर की ओर छोड़ा या निकाला हुआ श्वास या साँस)–सं० उच्छ्वास>प्रा० उस्सास> ऊसास>उच्छ्वास।

उछंग—पुं० (गोद)–सं० उत्सङ्ग> प्रा० उच्छंग।

उछलना—क्रि० (वेगपूर्वक ऊपर की ओर उठना)–सं० उच्छलन (उद्+ √शल् +ल्युट्) >प्रा० उच्छलण> हिं० उछलना।

उजबक—वि० (सीधा, बुद्धू, परम मूर्ख)–सं० ऋजुक>प्रा० उज्जुअ> उजुक>उजउक>उजबक।

उजरत—पुं० (पारिश्रमिक)– अ० उज्रत।

उजला—वि० (चमकता हुआ, प्रकाश से युक्त)–सं० उज्ज्वल+क>पा० उज्जल >प्रा० उज्जलअ>हिं० उजला, भो० उजरा। पं० उज्जला, राज० उजळो, सिं० गु० उजलू।

उजहि—क्रि० (छोड़कर जाना)–सं० उज्झ् (उत्सर्गे)–<प्रा० उज्झ<हिं० उजहि।

उजा[१] (पद०)—क्रि० (दौड़ना, चले जाना)–सं० उद्याति>प्रा० उजाई> उजाइ>उजाना।

उजागर—वि० (प्रकाशित, दीप्तिमान)– सं० उद्द्योतकार>प्रा० उज्जोअगर> अप० उज्जोउगरा (हे०)>उज्जागर> हिं० उजागर।

उजाड़—वि० (ध्वस्त, गिरा पड़ा, जो आबाद न हो)–सं० उत्+जृ>प्रा० उज्जड, उज्जाडिय>अप० उजाड़>हिं० उजाड़।

उजाड़ना—क्रि० (ध्वस्त करना, नाश करना)–सं० उत्पाटन>प्रा० उज्जाडण, उज्जाडिअ>हिं० उजाड़ना। अवधी उजारब, भो० उजारल।

उजानी—स्त्री० (वाटिका)–सं० उद्यानिका > प्रा० उज्जाणिका> गुज० उजानी।

उजालना—क्रि० (गहना और हथियार आदि साफ करना, निखारना, चमकाना, प्रकाशित करना)–सं० उज्ज्वालन>प्रा० उज्जालण>हिं० उजालना।

उजाला—पुं० (प्रकाश)–सं० उज्ज्वल >प्रा० उज्जलअ>हिं० उजाला। राज० उजाळो, भो० अवधी उजिआर।

उजास—पुं० (चमक, उजाला)–सं० उद्भास>प्रा० उज्झास>हिं० उजास।

उजासना—क्रि० (प्रकाशित करना)– सं० उद्भासन>प्रा० उज्झासण>हिं० उजासना।

उजियाना—क्रि० (उत्पन्न करना, पैदा करना, प्रकट करना, पुनर्जीवित करना, जिलाना)–सं० उज्जीवन>प्रा० उज्जीवण>हिं० उजियाना।

उजियारना—क्रि० (प्रकाशित करना, उजाला, करना जलाना)–सं० उद्+ ज्वालय्>प्रा० उज्जाल, उज्जालिय। अथवा सं० उज्ज्वालन>प्रा० उज्जालण >हिं०उजियारना।

उजीता—वि०(प्रकाशमान, चमकीला)– सं० उद्द्योत>पा० उज्जोत> प्रा० उज्जोअ>हिं० उजीता।

उठना—क्रि० (नीचे के तल से ऊपर

CC-0. Swami Satyavrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के तल की ओर चलना या बढ़ना, खड़ा होना)–सं० उत्थान> (उद्+√स्था +ल्युट्)>प्रा० उट्ठाण, उद्ठण, उट्ठ, उत्थ >हिं० उठ+ना। पं० उठ्ठना, म० उठणें, गु० उठवुँ।

उठान—स्त्री० (उठने की क्रिया, ऊँचाई)–सं० उत्थान>पा० उट्ठान> प्रा० उट्ठाण>उट्ठण>अप० उट्ठन> हिं० उठान, ह० उठाण्।

उठाना— क्रि० (उभारना, खड़ा करना)–सं० उत्थापन>प्रा० उट्ठावण >हिं० उठाना।

उठावना—पुं० (१- दाह-संस्कार के बाद सगे-सम्बन्धी शोकाकुल परिवार के घर इकट्ठे होकर प्रमुख व्यक्तियों को देव-स्थान ले जाते हैं और वहाँ से उन्हें घर छोड़ देते हैं। २- मृतक के दाह-कर्म के दूसरे, तीसरे या चौथे दिन श्मशान में जाकर उसकी अस्थियाँ चुनने की क्रिया 'उठावनी' कहलाती है)–सं० उत्थापन >प्रा० उट्ठावण>उठावणा>उठावना।

उड़—क्रि० (उड़ना)–सं० उड्ड (उत्+ √डीङ्)>प्रा० उड्डेइ, उड्डाइ>अप० उड्डाणें>हिं० उड़। अवधी उड़ब, भो० उड़ल।

उड़ना—क्रि० (पखेरू का आकाश में चलना)–सं० उड्डयन>प्रा० उड्डाण> हिं० उड़ना। भो० उड़ल।

उड़ेलना—क्रि० (कोई पदार्थ एक पात्र से दूसरे पात्र में गिराना या डालना)– सं० उल्लण्डति> (टर्नर, श० संख्या २३६९) प्रा० उल्लण्डिय, टर्नर, श० सं० २३६९) हिं०, उड़ेलना, उडेरना, उलेड़ना, उंडालना, उंडलना।

उढ़ाना—क्रि० (ओढ़ाना, ढकना)–सं० उर्णुञ् (आच्छादने)>प्रा० उण्ण>हिं० उढ़ाना।

उढ़ैया—पुं० (ओढ़ने वाला, पहनने वाला, उर्द्ध वस्त्र)– सं० ऊर्णुञ् (आच्छादने)> प्रा० उड्ढिया>हिं० उढ़ैया।

उण[1]—(की०) क्रि० वि० (फिर)–सं० पुन> प्रा० पुण, उण>अव० ञुण र्> उण।

उण[2]—प्रा० प्र०, सर्व० (उन, उस का बहुवचन)–सं० अमुण्याम>अम्नाम> उण्ह>उन्ह>हिं० उन>राज० उण।

उणती—स्त्री० (उन्नति)–सं० उन्नति >प्रा० उण्णइ>हिं० उणती, भो० उनति।

उतंग—वि० (बहुत ऊँचा)–सं० उत्तुंग (उद्=ऊपर, तुंग=ऊँचा)>उतंग, उतंक।

उतन्न—पुं० (जन्मभूमि)–अ० वतन> हिं० उतन्न। राज० उतन।

उतरना—क्रि० (अपनी चेष्टा से ऊपर से नीचे आना)–सं० उत्तरण >प्रा० उत्तरण, गु० उतवुँ, सिं० उतरणु, राज० उतरणो, म० उतरणें।

उत्पन—पु० हिं०, वि० (पैदा, जन्मा हुआ)–सं० उत्पन्न>प्रा० उप्पण्ण> अप० उप्पणउ।

उत्सव—पुं०(जलसा, पर्व, मंगलसमय)– सं० उत्सव>प्रा० उच्छव>अप० उस्सव >अव० ऊसव>हिं० उत्सव। रा० उच्छव, सिं० उच्छऊ, म० उच्छाव।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्साह—पुं० (हौसला, जोश, साहस)—सं० उत्साह>प्रा० उच्छाह, उस्साह, अव० उच्छाहे। राज० उछाह, सिं० उसा, म० उच्छाव।

उतारना—क्रि० (ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना)—सं० प्रा० उत्तारण> हिं० उतारना।

उतावला—वि० (जल्दबाज जो जल्दी काम करने के लिए बहुत आतुर हो)—सं० आतुर>प्रा० अप० उत्तावल>हिं० उतावला। राज० उतावळो, गु० उतावल।

उत्तर[1]—पुं० (प्रश्न का उत्तर)—सं० पा० उत्तर।

उत्तर[2]—पुं० (उत्तर दिशा)—सं० पा० प्रा० हिं० रा० उत्तर।

उत्पलुत—पुं० (लौट-पौट जाना, ऊपर हो जाना)— सं० उत्+√प्लु=कूद जाना>प्रा० उप्पुअ।

उथलपुथल—पुं० (उलट पुलट, क्रम-भंग, अंडबंड)—सं० उत्स्थल, अपस्थल+ पर्यस्त >प्रा० उत्थल्लपत्थल्ल>हिं० उथलपुथल।

उथला—वि० (जो कम गहरा हो, छिछला)—सं० उत्स्थलक>प्रा० उत्थलअ >उत्थला>हिं० उथला।

उथापना—क्रि० (ऊपर उठाना या खड़ा करना)—सं० उत्थापन>प्रा० उट्ठवण> हिं० उथापना।

उदगरना—क्रि० (उद्गार के फलस्वरूप बाहर निकलना)—सं० उद्गारण>प्रा० उग्गाल, उग्गार>हिं० उदगरना।

उदभट★—वि० (बहुत बड़ा, श्रेष्ठ)—सं० उद्भट>प्रा० उब्भड>हिं० उदभट।

उदासी—पुं० (उदासीन, तटस्थ, सुख-दुःख से रहित)—सं० उदासिन्>प्रा० उदासि>हिं० उदासी।

उदोत—(जा०) पुं० (प्रकाश, दीप्ति)—सं० उद्द्योत>प्रा० अप० उज्जोअ> उदोत।

उनंत—पु० हिं० (पद०) वि० (भार से झुकी हुई)—स० अवनत>प्रा० अवणय >हिं० उनंत।

उन—सर्व० (उस का बहुवचन)—सं० अमून>प्रा० अमूण>अउण>उण्ह> उन।(१०)

उनइस—वि० (उन्नीस, दस और नौ)—सं० एकोनविंशति>पा० एकोनवीसा, प्रा० एकोन्नीस, उन्नीस, अवधी उनइस।

उनचास—वि० (चालीस और नौ)—सं० एकोनपंचाशत्>पा० एकोनपंचास ऊनपंचास>उणवंचास>उन्चास।

उनतालीस—वि० (तीस और नौ)—सं० एकोनचत्वारिंशत्> ऊनचत्तारिंस >उणअत्तालिस>हिं० उनतालीस, भो० उनतालिस।

उनतीस—(बीस और नौ)—सं० एकोनत्रिंशत्>पा० एकुनतीसा>ऊनत्तिंश >उणत्तिसं>उनतीस।

उनवना—क्रि० (झुकना, लटकना, नीचे नमना)—सं० अव+नम्>प्रा० ओणम हिं० उनवना।

उन्ना[1]—(भेड़ का छोटा नर बच्चा)—सं० उरणक>उण्णअ>उन्ना।

उन्ना[2]—स्था० प्र०, पुं० (लत्ता)—सं० ऊर्णक>प्रा० उण्णअ>अप० उन्नअ>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्ना।

उन्नीस—वि० (दस और नौ)– सं० एकोनविंशति>प्रा० एकूणविंस, एकूणवीस, अणवीस>हिं० उन्नीस, उन्नईस। म० एकूणीस, एकोणीस, बं० उनीस, गु० ओगणीस।

उन्मना—वि० (अनमना, उदास)–सं० उन्मनस्>हिं० उन्मना, ह० उन्मण।

उन्हारू, उन्हालु—स्था० प्र०, स्त्री० (गर्मी में होने वाली फसल)–सं० उष्णालु>उण्हालु>उन्हारू, उन्हारी स्त्री० (बु०)।

उपकार—पुं० (परोपकार)–सं० उपकार>प्रा० उअआर>अप० उँअआर>अव० उँअआरे>हिं० उपकार।

उपज—स्त्री० (पैदावार)–सं० उत्पाद्य प्रा० उप्पज्ज>हिं० उपज।

उपजना—क्रि० (उत्पन्न होना, उगना)–सं० उत्+पद्>प्रा० उप्पज्ज, उप्पज्जंति>उप्पज्जइ>हि० उपज+ना। अवधी उपजब, भो० उपजल, सिं० उपजल, सिं० उपजणु, गु० उपजवूँ, म० उपजणें।

उपजाऊ—वि० (जिसमें अधिक मात्रा में उत्पन्न करने की शक्ति हो)– सं० उत्पादक>प्रा० उप्पज्जउ>हिं० उपजाऊ।

उपटना, उपड़ना—क्रि० (उखड़ना, निशान पड़ना)–सं० उत्पाटन>प्रा० उप्पाडण>उपड़ना, उपाड़ना)–अथवा सं० उत्+पत्>प्रा० उप्पट, उप्पड हिं० उपट+ना। सिं० उपटणु, म० उपटणें।

उपबरहन—पुं० (तकिया)–सं० उपबर्हण>हिं० उपबरहन।

उपर—वि०, क्रि० वि० (ऊपर)–सं० उपरि>प्रा० अप० उप्परिं, उवरि, हिं० गु० उपर, ज० ओवर।

उपाई—क्रि० (उत्पन्न की)–सं० उत्पादयति>प्रा० उप्पाअइ>उपाना।

उपास—(पद०) पुं० (अन्न न ग्रहण करना)– सं० पा० उपवास> प्रा० ओवास>उपास।

उफणना— क्रि० (उबलना, उफान खाना)–सं० उत्+√स्फल् (संचलने)>अप० उप्फुणं(दे० ना० मा०)>हिं० उफण, उफन+ना (प्र०)।

उबकना—क्रि० (वमन करना)– सं० उद्वम्>प्रा० उव्वक्क, अप० उव्वकइ हिं० उबकना।

उबकाई—स्त्री०(उल्टी, वमन, मिचली, मितली)–सं० उद्वान्त>प्रा० उव्वक्किय>हिं० उबकाई।

उबटन—पुं० (शरीर का मैल उतारने के लिए आटा, सुगंन्धित द्रव्य)–स० उद्वर्त्तनम्>पा० उब्बहन प्रा० उट्टवण, उब्बट्टण, उब्बउणं>पूर्वी हिं० अबटन, हिं० उवटन, उवटना। गु० उटवुं, उटणुं, हिं० उवटणु।

उबड़-खाबड़— वि० (खराब रास्ता, असमतल, ऊँचा-नीचा मार्ग)–सं० उद्वर्त्मन्>पा० उब्बटुम>प्रा० उव्वट्ट अप० उवड्ड, उवड़>हिं० उबड़। स० स्थपुट>थाउड>ठाउड> खाउर > खाबर>खाबड़।

उबरना—क्रि० (उद्धार पाना, मुक्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होना, शेष रहना, वच जाना)–सं० उद् +√वृ>प्रा० उव्वर>अप० उव्वरिअं (दे० ना० मा०)>हिं० उबरना।

उबहनी—स्त्री० (उबहन, पानी निकालने की रस्सी या डोरी)–सं० उद्वाहनी >अव० अवधी उबहनि, हिं० उबहनी।

उबार—पुं० (उद्धार, छुटकारा)–सं० उद्धार>हिं० उद्धार, भो० उबारल।

उबारहु—क्रि० (उद्धार करना)– सं० उद्वर्त्तयति>अप० उव्वारइ, उव्वरिअं (दे० ना० मा०)>उबारहु।

उबारना—क्रि० (उद्धार करना, बचाना, रक्षा करना)–सं० प्रा० उद्धारण> उबारना।

उबाल—पुं० (उबलने की क्रिया या भाव)–सं उद्वालन (उद्वा, मो० वि०)> प्रा० उब्वालण>हिं० उबाल।

उबेहे[1]—(पद०) वि०(पचीकारी करके जड़े हुए)–सं० उद्वेध>उव्वेह, उबेह, धा० उबेहना।

उभड़ना—क्रि० (उकसना, फूलना, प्रकट होना, पैदा होना, वृद्धि को प्राप्त होना)–सं० उद्+√भिद्, उद्भिदन> प्रा० उब्भिंदण>उब्भडण>हिं० उभड़ना।

उभरना—क्रि० (उभड़ना, उमड़ना, निकलना)–सं० उद्भरण (सं० उद्= ऊपर, √भृ=भरना)>प्रा० उब्भरण >हिं० उभरना।

उभासना—क्रि० (प्रकाशित करना)–सं० उद्+भासय्> प्रा० उब्भास>हिं० उभास+ना।

उभदा—वि० (उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया)– अ० उम्दः।

उमरी—स्त्री० (एक पौदा जिसे जलाकर सब्जी बनाते हैं)–सं० उदुम्बर> पा० प्रा० अदुंबर>प्रा० उम्बर, उउंबर, उंबर, हिं० ऊमर, ऊमरी, उमरी। त० मल० उमरि।

उमेठ—स्त्री० (ऐंठन, मरोड़, पेंच, किसी वस्तु को इस प्रकार घुमाते हुए मोड़ना कि उसमें बल पड़ जाए)–सं० उद्वेष्टते>प्रा० उव्वेढइ, उव्वेठइ> अप० उम्मेट्ठ (प० च०, २५/१४) हिं० उमेठ। अवधी उमेटव।

उमेठन—स्त्री० (ऐंठन, मरोड़, पेंच)– सं० उद्वेष्ठन>प्रा० उव्वेढण (परवेष्टित) >हिं० उमेठन।

उमेलना—क्रि० (खोलना, उघाड़ना, प्रकट करना)– सं० उद्मील्>प्रा० उम्मिल्ल, उम्मिल्लइ>हिं० उमेल+ ना।

उम्मेद—स्त्री० (भरोसा, आशा)-फ़ा० उम्मीद।

उरध—पुं० हिं० (पद०) क्रि० वि० (ऊपर की ओर)–सं० उर्ध्व।

उलझन—पुं० (अटकाव)–सं० अवरुन्धन>पा० ओरुज्झन>हिं० उलझन।

उलझना—क्रि० (फँसना, अटकना)– सं० आ+रुध्य>प्रा० अरुज्झाला> अव० ओरझत>हिं० उलझ+ना।

उलट-पलट अथवा **उलट-पुलट**—पुं० (चीजें बार-बार उलटने-पलटने की क्रिया, अव्यवस्था, परिवर्तन)–प्रा० अप० अल्लट्ट पल्लट>हिं० उलट-पलट, अवधी उलटब-पलटब।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उलथना—क्रि० (उलटना, उलीचना)—सं० उदस्त>प्रा० उअल्लत्थ, हिं० उलथ+ना (प्र०)।

उलाहना— पुं० (शिकायत, गिला, किसी की भूल या अपराध को उसे दुःखपूर्वक जताना)—सं० उपालंभ>प्रा० उवालंभ, उवालह>हिं० उलाहना।

उल्लू— पुं० (उलूक, उल्लू नामक पक्षी)—सं० उलूक>प्रा० उलूअ>हिं० उल्लू। म० गु० उल्लू (मूर्ख)।

उवा[1]—(पद०) क्रि० (उदित हुआ)—सं० उद्गत>प्रा० उग्गिय>ऊग>ऊव।

उस—सर्व० (सर्व० 'वह' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है)—सं० अमुष्य (अदस्)>पा० अमुस्स>प्रा० अउस्स>उस।[2]

उसबा—पुं० (एक वृक्ष जिसकी छाल और पत्तियों से रक्त साफ करने की औषध बनती है)—अ० उश्बः।

उसरना—क्रि० (हटना, बीतना, कम होना, दूर होना, छिन्न-भिन्न होना)—सं० अपसरण, सं० अपसारयति>पा० ओसारेति, अपसरित, ओसरति>प्रा० ओसरइ>हिं० उसर+ना। गु० ओसरवूं, म० ओसर (णें)।

उसलना—क्रि० (तरना, उतरना, उसरना)—सं० उत्+सरण>प्रा० उस्सर।

उससना—क्रि० (गहरा या ठंडा साँस लेना)—सं० उच्छ्वसन>प्रा० उस्सस>हिं० उसस+ना।

उसास—पुं० (लंबी साँस)—सं० उच्छ्वास>प्रा० उस्सास>उस्वास, उसास।

उस्तरा—पुं० (बाल मूँड़ने का छुरा)—फ़ा० उस्तरा।

उस्ताद—पुं० (प्रवीण, चतुर, गुरु)—फ़ा० उस्ताद।

उष्मा—स्त्री० (गरमी, ताप)— सं० उष्मः (उष्+मक्)।

उहास—पुं० (प्रकाश)—सं० उद्भास>प्रा० उब्भास>हिं० उहास।

ऊ

ऊँच—पुं० (वह जो उत्तम जाति या कुल का हो)— सं० उच्च। (वि० (ऊँचा)—सं० उच्च>प्रा० उच्च, उच्चअ>अवधी ऊँच।

ऊँचा—वि० (उठा हुआ, उन्नत)—सं० पा० उच्च>प्रा० उच्च, उच्चअ, हिं० ऊँचा। पं० उच्चा, म० उचा, गु० ऊँचो, सिं० ऊचो।

ऊँट—पुं० (एक ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ ढोने के काम में आता है)—सं० उष्ट्र>प्रा० उट्ट>हिं० ऊँट।

ऊँहू—अव्य० (किसी बात के उत्तर में कहे जाने वाला अस्वीकृति सूचक शब्द)—सं० उम्, ऊम्।

ऊख[1]—पुं० (ईख, गन्ना)—सं० इक्षु>प्रा० इक्खु, गु० ऊस, बं० आकु, उ० आखु, अवधी ऊखि।

ऊख[2]—वि० (तपा हुआ)—सं० उष्मः>प्रा० उखम्>हिं० ऊख।

ऊखल—पुं० (ओखली, काठ या पत्थर का वह गहरा बरतन जिसमें धान आदि मूसल से कूटते हैं)—सं० उलूखलम्, उदू-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खलम् > प्रा० उक्खल, उऊखल, हिं० ऊखल, औखली।

ऊन[1]—(भेड़ बकरी आदि का रोयाँ)—सं० ऊर्ण > प्रा० उण्ण > गु० उर्णा, सिं० उन, सिं० उणु, म० उण, पं० उन्न।

ऊन[2]—वि० (तुच्छ, कम, थोड़ा)—सं० ऊन > प्रा० ऊण > हिं० ऊन। गु० उणु, सिं० ऊणु, सिंह० उन।

ऊपर—अव्य० (किसी तल, बिन्दु या विस्तार की तुलना में ऊँचाई की ओर, पद के विचार से उच्च स्थिति में)—सं० उपरि > पा० उपर > प्रा० उपरि > हिं० छ० ऊपर।

ऊभ(१)—(पद०) क्रि० (ऊभना, ऊँचा होना)—सं० ऊर्द्ध्वयति > प्रा० उम्भइ > हिं० ऊभ।

ऊभि(१)—(पद०) वि० (ऊपर की ओर उठी हुई)—सं० उर्ध्व > प्रा० उब्भ > ऊभि।

ऊमस—स्त्री० (गर्मी, उमस)—सं० ऊष्म > उषम > ऊसम > ऊमस, उम्मस।

ऊर्मि—स्त्री० (छोटी लहर, प्रवाह, वेग)—सं० ऊर्मि (√ऋ+मि (गति) उर् आदेश) > प्रा० उम्मि।

ऊषा—स्त्री० (तड़का, प्रभात, पौ फटने के समय दिखाई देने वाली उक्त लाली)—सं० उषा (√उष्+क—टाप्), उषस् > प्रा० उसा > हिं० ऊषा।

ऊसर—वि० (बंजर भूमि जिसमें पौधा उत्पन्न न हो)—सं० ऊषर > प्रा० ऊसर > हिं० ऊसर।

ऊहापोह—पुं० (तर्क-वितर्क, सोच-विचार)—सं० ऊह+अपोह। प्रा० ऊहा-पोह।

ऋ

ऋच्छ—पुं० (भालू, रीछ)—सं० ऋक्षः।

ऋनी—वि० (ऋणी, कर्ज़दार)—सं० ऋणिकः।

ऋषिराई—पुं० (ऋषियों में श्रेष्ठ)—सं० ऋषिराज।

ए

एक—पुं० (इकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या)—सं० एक > पा० प्रा० अप० एक्क > हिं० एक, यक। फ़ा० यक्, उ० गु० बं० म० एक, पं० इक्क, सिंह० एक्, सिं० एकु।

एक-जाई—वि० (परिवार के लोग जो सब मिलकर एक ही स्थान में या साथ-साथ रहते हों)—फ़ा० यकजाई।

एकजात—(एक माँ बाप से पैदा हुआ, एक ही जाति या वंश का)—सं० एक+जाति (√जन्) > एकजात।

एकतालीस—वि० (गिनती में चालीस और एक)—सं० एकचत्वारिंशत् > पा० एकचत्तालीसा > अ० मा० एकचात्तिलिस > अप० एकत्तालीस।

एकतीस—वि० (गिनती में तीस और एक)—सं० एकत्रिंशत् > पा० एकतीसा > प्रा० एक्कत्तिसह > अप० एक्कतीस > हिं० एकतीस।

एकबग्गा—वि० (जो व्यक्ति एक दल का हो या एक तरफ ही रहे)—सं० एक-वर्ग्य > प्रा० एक्क बग्ग हिं० एकबग्गा।

एकला—वि० (अकेला)—सं० एकल > प्रा० अकेल्लय (पाइअ०) > अप० एक्खल्ल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिं० एकल, एकला। गु० एकल, एकलुं, म० एकला।

एकसाला—वि० (जिसकी अवधी एक ही साल तक हो)–फ़ा० एकसाला।

एकहज़ारी—पुं० (एक हजार सेना का स्वामी)–फ़ा० यकहज़ारी।

एकहत्था—वि० (जिसका एक ही हाथ हो, दूसरा हाथ न हो)–सं० एकहस्त+क>प्रा० एक्कहत्थअ>एकहत्था।

एकहा[1]—(की०) वि० (एक-एक)–सं० एकशः>अव० एकहा।

एका—पुं० (मेल, एकत्व)–सं० ऐक्य या सं० एकता>प्रा० एकआ।

एकाक्ष—वि० (एक आँख वाला)–सं० एकाक्षि।

एकात्म—वि० (जो आत्मा की दृष्टि से किसी के साथ मिलकर बिलकुल एक हो गया हो)–सं० एकात्मन्।

एकाह—वि० (एक ही दिन में पूर्ण हो जाने वाला)–सं० एकाहन्।

एकतरसो—वि० (एक सौ एक)–सं० एकोत्तरशत।

एकौझा[1]—(पद०) क्रि० (एक को संमुख करना, अथवा एक के संमुख होना)–सं० एक+आवर्ज<एकआउज्ज+अ> एकौझा। अथवा एक युद्ध>एक जुज्झ >एकौझ>एकौझा।

एक्का— पुं० (एक प्रकार की दो पहिया गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है)–फ़ा० यक्कः। बं० एक्का, गु० एक्को, म० एक्का।

एग्यारह—वि० (दस और एक)–सं० एकादश>पा० एकादस, एकारस> प्रा० एक्कारह, एग्गारह, एआरह> हिं० एग्यारह, ग्यारह, छ० गियारा।

एत, एता—वि० (इतना, इस मात्रा का)–सं० इयत्>पा० एतक>प्रा० एत्तअ, एत्तिअ>हिं० एता। अवधी एतना।

एत्ता— वि० (इतना)–सं० एतावत्> प्रा० एत्तअ> अप० एत्तए> अव० एत्ता।

एथ—क्रि० वि० (यहाँ)–सं० अत्र> प्रा० एत्थ>अव० एथ्थ (की०), अप० एत्थु, इत्थु, इत्थि। पं० इत्थे।

एनी—पुं० (दक्षिण भारत में होने वाला एक प्रकार का बड़ा वृक्ष)–सं० अजकर्ण, अजकर्णक,>हिं० एनी।

एमन—पुं० (एक सम्पूर्ण जाति का राग जो कल्याण और केदारा राग के मिलाने से बना है)–सं० यवन, फ़ा० यमन।

एलुआ—पुं० (एक प्रकार का पौधा जिसके कई अंग दवा के काम में आते हैं)–सं० एलुक> प्रा० एलुय>हिं० एलुआ।

एषा— स्त्री० (इच्छा, चाह)– सं० √इष्>प्रा० एस>हिं० एषा।

एहसान—पुं० (उपकार, कृतज्ञता)–अ० एहसान।

एहसान फ़रामोश—वि० (किसी का किया हुआ एहसान न मानने वाला)–अ० एहसान फ़ा० फरामोश।

एहि—(पद०) सर्व० (यही)– सं० एषः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐ

ऐं ऐंय—अव्य० (एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह सुनी या समझी हुई बात को फिर से कहलाने के लिए होता है)–सं० अयि > प्रा० ऐ > हिं० ऐं, ऐंय।

ऐंचना—क्रि० (खींचना, तानना)–सं० अवाञ्चन, पू० हिं० हींचना।

ऐंठना—क्रि० (घुमाव देना, बटना, मरोड़ना, लपेटना)–सं० आवेष्टन > पा० आवेठ्टन > प्रा० आवेढण > हिं० ऐंठना।

ऐंड़ा[1]—वि० (टेड़ा, टेढ़ा, ऐंडा हुआ)–सं० अकांड > प्रा० अयंड > अइंड > ऐंड।

ऐंड़ा[2]—पुं० (अँहड़ा, बाट)– सं० आढक > प्रा० आढग, आढय > हिं० ऐंड़ा।

ऐंड़ा-बैंड़ा—वि० (टेढ़ा-तिरछा, विकृत आकार वाला)–सं० अकांड + विकांड > प्रा० अयंड, अकंड, अक्कंड > हिं० ऐंड़ा-बैंड़ा।

ऐगुन—(पद०) पुं० (दोष)–सं० प्रा० अवगुण।

ऐन[1]—पुं० (घर)–सं० अयन > प्रा० अयण > अइन > ऐन।

ऐन[2]—पुं० (मृग)– सं० एण > प्रा० एण > हिं० ऐन।

ऐन[3]—पुं० (आँख)–अ० ऐन।

ऐन[4]—वि० (जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा ही)–अ० ऐन।

ऐब—पुं० (दोष)–अ० ऐब।

ऐबी—वि० (दोषों या ऐबों से युक्त)– अ० ऐबी।

ऐया—स्त्री० (बड़ी-बूढ़ी स्त्री के लिए सम्बोधन)–सं० आर्या > प्रा० अज्जा > हिं० ऐया।

ऐयाशवि०—(बहुत आराम करने वाला, विषयी, लम्पट, व्यभिचारी)– अ० ऐयाश।

ऐयाशी—स्त्री० (ऐयाश होने की अवस्था या भाव, व्यभिचार)–अ० ऐयाशी।

ऐसआराम—पुं० (चैन, सुखोपभोग)–अ० ऐश + फ़ा० आराम।

ऐसा—वि० (इस प्रकार का)– सं० एत दृश > प्रा० एआइस, एइस > अप० अइस > हिं० ऐसा, अवधी ऐसन। म० अइसा।

ओ

ओंकना— क्रि० (खिचना, दूर होना, हटना)–सं० अपक्रमण > प्रा० अवक्कण > हिं० ओंकन।

ओंगना—क्रि० (गाड़ी की धुरी में दिया जाने वाला तेल)–सं० अञ्जन।

ओंठ—पुं० (होंठ)–सं० ओष्ठ > प्रा० ओट्ठ > अप० ओंठ्ठ > हिं० ओंठ। गु० म० ओठ, सिं० ओट, ओ० ओठ।

ओ[1] (की०)—संयो० (और)–सं० अपि > प्रा० अवि, अव, औ। अव० ओ।

ओ[2]—अव्य० (विस्मय सूचक)–सं० भो > ओ।

ओ[3]—पुं० (ब्रह्मा)–सं० ओम्, एमेनियम ओम।

ओकना—क्रि० (वमन करना)– प्रा० ओक्किअ, उव्वक्क, हिं० ओकना।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० सिं० ओकणू, गु० ओकवूँ, ओ० ओकवूं, सिंह० ओक्कारे।

ओकाई— स्त्री० (वमन करने की इच्छा)–प्रा० ओक्किअ>अवधी हिं० ओकाई, तुल० मल० ओक्कानम, क० ओकारि, ते० ओकर, ओकिलि ।

ओछा—वि० (क्षुद्र, छिछोरा, बुरा)–सं० तुच्छ>प्रा० उच्छ>ओच्छह> उच्छुअ>औछा, अवधी ओछर।

ओज—पुं० (तेज, चमक)–सं० ओजस्, ऊर्जस्>प्रा० उज्ज, प्रा० ओज्जल्लो> हिं० ओज। गु० ओजवूँ, सिं० ओजु।

ओझा—पुं० (ब्राह्मण जाति भेद)–सं० उपाध्याय>प्रा० उवज्झाय, उज्झाय, उवज्झाअ>उअज्झा> उज्ज्झा>हिं० ओझा।

ओटना—क्रि० (चरखी द्वारा कपास से बिनौला अलग करना)–सं० आवर्तन> पा० आवट्टन>प्रा० आउट्टण> हिं० ओटना।

ओठँघि— क्रि० (सहारा लेना, टेक लगाना)–सं० अवष्टम्भ>अवस्तम्भ> अवट्टंभ>ओठंभ।

ओठ—पुं० (ओंठ)–सं० ओष्ठ>प्रा० औट्ठ>हिं० ओठ, होठ (ह–श्रुति)।

ओढ़ना[1]—पुं० (ओढ़ने का वस्त्र)–प्रा० ओड्ढण>हिं० ओढ़ना, ह० ओढ्णां।

ओढ़ना[2]—क्रि० (शरीर के किसी भाग को वस्त्रादि से आच्छादित करना)–सं० उपवेष्टन>प्रा० >ओवेड्ढन अप०> ओड्ढणं (दे०ना०मा०)>हिं० ओढ़ना।

ओढ़नी—स्त्री० (स्त्रियों के ओढ़ने का एक वस्त्र)– सं० अवघाटनी>प्रा० ओहाढणी, ओहाढणी>हिं० ओढ़नी। सिं० ओढिणी, म० गु० ओढणी।

ओत[1]—स्त्री० (प्राप्ति, लाभ)– सं० अवाप्ति।

ओत[2]—पुं० (ताने का सूत)– सं० ओत।

ओत[3]—वि० (बुना हुआ, गुँथा हुआ)– सं० ओत।

ओत-प्रोत—वि० (भरपूर, सब दिशाओं में फैला हुआ)– वै० सं० ओतु-प्रोत (सूर्यकान्त, ए प्रेक्टिकल वैदिक डिक्शनरी)।

ओद—पुं० (नमी, सील)–सं० आर्द्र> प्रा० उद्द>ओद। वि० (गीला)–सं० आर्द्र>प्रा० उद्द>अवधी ओद।

ओदनी—स्त्री० (बरियारा या बीजगंध नामक पौदा)– सं० ओदनिका>हिं० ओदनी।

ओदरना—क्रि० (विदीर्ण होना, फाड़ना, छिन्नभिन्न होना)–सं० अवदारण।

ओदा—वि० (गीला)– सं० आर्द्र+क >प्रा० उद्दअ>ओदा।

ओदारना— क्रि० (विदीर्ण करना, फाड़ना, नष्ट करना)–सं० अवदारण> प्रा० अव+दार (पाइअ०)> हिं० ओदारना।

ओधा[1]— पुं० (पद, अधिकार)–ओ० ओहदा।

ओधा[2]—(आबद्ध हुए, उलझा या फँसा हुआ)–सं० आबद्ध>प्रा० आउद्ध>हिं० ओधा।

ओनइ—वि० (झुकी हुई)–सं० अवनता >अवनया>ओनया>ओनइ ।

ओना—पुं० (तालाब में पानी निकलने का मार्ग, निकास)–सं० उद्गमन>प्रा० उग्गमण>हिं० ओना।

ओनाना—क्रि० (किसी ओर प्रवृत्त होना,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किसी ओर उठना या लगना)– सं० उन्नयन > प्रा० उण्णयण > हिं० ओनाना।

ओनामासी—स्त्री० (अक्षरारंभ, आरम्भ)–विशेष-बच्चों से पाठ आरंभ करने से पूर्व 'ओं नमः सिद्धम्' कहलाया जाता है। सं० ओं नमः सिद्धानां > ओनामा सिद्धं > ओनामासीधम > ओनामासी।

ओफ, ओफो—अव्य० (मानसिक पीड़ा सूचक एक अव्यय)–अ० उफ्।

ओबरी—स्त्री० (तंग कोठरी)– सं० अपवरक > प्रा० अववरक > ओबरी, अवधी ओबरि।

ओभा—स्त्री० (शोभा, कान्ति)– सं० अवभा > प्रा० ओभास, ओभासेइ > हिं० ओभा।

ओर— स्त्री० (दिशा, तरफ)– सं० अवार।

ओरा[1]— पुं० (ओला)– सं० उपल + क > प्रा० उवल > अवधी ओरा।

ओरा[2]—(पद०) पुं० (अंत, किनारा, छोर, सीमा)–सं० अवार।

ओल[1]—(की०) वि० (सुन्दर)– सं० अतुल > प्रा० अप० अउल > अव० ओल।

ओल[2]—वि० (गीला)– सं० आर्द्र > प्रा० ओल्ल > अप० उल्ल (हे०) > हिं० ओल। म० ओल (णें)।

ओलना— क्रि० (गीला करना)– सं० आर्द्रयण > प्रा० ओल्लण (पाइअ०) > हिं० ओलना।

ओला— पुं० (बादलों से जल-वर्षा के बदले गिरते हुए बरफ के गोले)– सं० उपल + क > प्रा० उवलअ > अउला > हिं० ओला। पं० औला, उर्दू औला।

ओवारी[1]—स्त्री० (गुफाओं में भिक्षुओं की कोठरियाँ)– सं० अपवरक > प्रा० ओवरक, उवरओ > ओवारी। तुल० गु० ओरडो म० ओवरी।

ओस— स्त्री० (तुषार, शबनम)–सं० अवश्याय > पा० उस्साव > प्रा० उस्सा, ओसा > अप० ओसा (दे० ना० मा०)।

ओसर[1]—स्त्री० (जवान बछिया)–सं० उपसर्या > ओसर।

ओसर[2]—पुं० (समय, अवसर, मौका)– सं० अवसर > प्रा० ओसर > हिं० ओसर।

ओसहा—स्त्री० (दवाई)–सं० औषध > प्रा० ओसधि, ओसहि, छ० ओसहा।

ओसाना—क्रि० (भूसा मिले हुए अनाज को इस प्रकार गिराना कि भूसा हवा के झोंके से उड़कर अलग हो जाय और अनाज के दाने अलग हो जायँ)–सं० आवर्षण > पा० आवस्सन > अप० ओसणं (दे० आ० मा०) > हिं० ओसाना।

ओसार—(दालान, बरामदा। ओसारे की छाजन। सायबान)–सं० उपशाल > उवशाल > ओशार > ओसार, ओसारा। अथवा सं० अपसार (निकास) > प्रा० ओसार > अप० ओसरिया (दे०ना०मा०) > अवधी ओसार।

ओहटना—क्रि० (ओझल होना)–सं० अवघटन > अप० ओहट्टो (दे० ना० मा०) > हिं० ओहट + ना।

ओहटे—क्रि० वि० (दूर)–सं० अपभ्रष्ट > अवहट्ट > ओहट्ट > ओहट।

ओहरना—क्रि० (बढ़ती या उमड़ती हुई चीज़ का उतार पर होना)– सं० अवहरण > प्रा० ओहरण (पाइअ०) >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओहरणं (दे० ना० मा०)>हिं० ओहरना।

ओहार—पुं०(परदा, वह कपड़ा जिससे पालकी, रथ आदि ढके जाते हैं)–सं० अवघाटक > अउहाडअ > ओहारअ, अवधी ओहार।

ओहो—विस्म० अव्य० (आश्चर्य, दुःख या बेपरवाही का सूचक शब्द)– सं० प्रा० अहो>अप० उहु>हिं० ओहो।

औ

औंटना—क्रि० (कपास को इस प्रकार औंटनी में से निकालना कि उसके रूई और बिनौले अलग हो जाए, अपनी बात बराबर कहते या दोहराते चलना)–सं० आवर्तन>प्रा० आवत्तण>हिं० औंटना।

औंदना—क्रि० (उन्मत्त होना)– सं० उन्मादन > प्रा० उम्मायण> हिं० औंदना।

औंदाना— क्रि० (ऊबना, व्याकुल होना)–सं० उद्वेजन।

औंधा— वि० (जिसका मुँह या सिर नीचे की ओर हो गया हो, अधोमुख)– सं० अवमूर्द्धक > प्रा० ओमुद्धग> औवँधा>औंधा।

औख—प्रा० प्र०, स्त्री० (ऐसी ऊसर भूमि जिसे पुनः कृषि के योग्य बनाया गया हो)– सं० ऊषर>प्रा० ऊसर> हिं० औख।

औगाह—वि० (गंभीर, गहरा, व्याप्त)– सं० अवगाह> प्रा० ओगाह >हिं० औगाह।

औगाहन—पुं० (जलाशय या जल में घुसकर या पैठकर किया जाने वाला स्नान)–सं० अवगाहन>प्रा० ओगाहण >ब्र० औगाहन>हिं० औगाहन।

औघड़—पुं० (काम में सोच विचार न करने वाला मनमौजी व्यक्ति)– सं० अवघट> प्रा० ओघट> अउगढ़ > औगढ़>हिं० औघड़।

औटि—क्रि० (औंटना, दूध या किसी पतली वस्तु को अग्नि पर रखकर धीरे-धीरे हिलाना और गाढ़ा करना)–सं० आवर्त>प्रा० आउट्ट>औट, औटि। अवधी औटब।

औतार—पु० हिं० >पुं० (अवतार)– सं० अवतार>अउतार>हिं० औतार।

औतरी— (पद०) क्रि० (अवतरित हुई)–सं० अवतरित।

औधान— पुं० (गर्भाधान, धारण करना)–सं० अवधान>औधान, अउधान। अवधी अवधान।

औन[1]— प्रा० प्र०–वि० (अदन्त)–सं० अदन्त>अउन>औन।

औन[2]★—पुं० (पृथ्वी)–सं० अवनि।

औना—(पद०) क्रि० (आना)– सं० आगमन>प्रा० आगमण>औना।

औनिप★—पुं० (राजा)– सं० अवनिप>प्रा० अवणिय, अवणीय, अवणिंद हिं० औनिप।

औबट—पुं० (बुरा या दुर्गम रास्ता)– सं० अवबाट।

और[1]—अव्य० (दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द, अन्य)–सं० अपर >प्रा० अवर> आउएं (दे० ना० मा०), अवधी अउर, औरउ>और।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भो० औउर, म० और।

औरत—स्त्री० (महिला)–अ० औरत।

औल-फौल—पुं० (अंडबंड बकवाद)–सं० आकुल-व्याकुल>आउल-बाउल> औल-बौल, औल-फौल।

औलाद— स्त्री० (सन्तान)– अ० औलाद।

औलिया—पुं० (मुसलमान सिद्ध)–अ० औलिया।

औसत—पुं० (अनुपात, सामान्य, दरमियान, बराबर का परता)–अ० औसत।

औसान[1]—पुं० (अंत, परिणाम)– सं० अवसान> प्रा० अवसाण > हिं० औसान।

औसान[2]—पुं० (होश, हवास)– अ० औसान।

औसि★—क्रि० वि० (अवश्य)–सं० अवश्य>प्रा० अवस्स>अउस्स>औस, औसि।

औहत—स्त्री० (अपमृत्यु, दुर्गति, अपघात)– सं० अपहत> प्रा० अवहय (पाइअ०)>हिं० औहत।

क

कंकड़— पुं० (पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े)–सं० कर्कर>प्रा० कक्कर> अप० कक्कर छ० काँकर (प० च०) म० कंकर, पं० कक्कर, ने० बं० काँकर, सि० कँकिरो, गु० कांकरी (काँक्री)– ते० कंकर।

कंकर—पुं० (सेवक, दास)– सं० किङ्कर>प्रा० किंकर।

कंकरीट— स्त्री० (छोटी कंकड़ियाँ, कंकड़, बालू, सीमेंट आदि से बना हुआ मसाला जो इमारत के काम आता है)– अं० कांक्रीट।

कंकाल—पुं० (अस्थिपंजर, ठठरी)–सं० कङ्काल>प्रा० कंकाल।

कंगन—पुं० (कंकण, हाथ का कड़ा)– सं० पा० कङ्कण>प्रा० गु० म० कंकण; पं० हिं० कंगण; भो० ककना, सिं० कंगणु, बँ० काँकन, कांगन; ते० कंकणमु, ओ० कंकण।

कंगाल—वि० (भुक्खड़, निर्धन)– सं० कङ्काल>पा० प्रा० कंकाल>कंगाल। बं० कगाल, सिं० ककालु।

कंघा—पुं० (बड़े आकार की कंघी)– सं० कङ्कत>प्रा० कक्कत, कंकअ> हिं० कंघा। सिं० कंगो, म० कंगवा।

कंघी— स्त्री० (छोटा कंघा)– सं० कङ्कती>प्रा० कंकई>हिं० कंघी, छ० कोकई, अवधी ककही, कंघइ, पं० कंघी, कश्मी० कंगुव्, म० कंगवा।

कंचुआ—प्रा० प्र०, पुं० (अंगिया, चोली)–सं० कञ्चुक>प्रा० कंचु,कंचुअ।

कंजूस— वि० (जो न खाय और खिलावे, जो धन का भोग न करे)–सं० कण+जुष्> प्रा० कणभूस> हिं० कंजूष। म० कञ्जूस, पं० गु० कंजूस।

कंटीला—वि० (काँटेदार)– सं० कण्टकिल>प्रा० कंटकिल्ल, कंटइअ>हिं० कंटीला, ह० कंटील्ला।

कंठी—स्त्री० (छोटी गुरियों की माला, छोटा हार)–सं० कंठिका>प्रा० कंठिआ >कंठी।

कंडारि—क्रि० (छीलछाल कर ठीक

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करना, कूट कर भूसी अलग करना)–सं० कण्डयति > प्रा० कंडार, अवधी कँडना।

कंडारी—पुं० (जहाज का मांझी)–सं० कर्णधारिन् > पा० प्रा० कण्णधार > हिं० कंडारी।

कंडुरी— स्त्री० (बाँस या बेंत की टोकरी)–सं० कण्डोलिका > कंडोलिआ > कंडोरिआ > कंडोरी > कंडुरी।

कंति— पुं० हिं०, स्त्री० (स्त्री)–सं० कांता > पा० कन्ता > प्रा० कंता > हिं० कंति।

कंथ— पुं० (कंत)–सं० कान्त > पा० कन्त > प्रा० कंत > अवधी कंथ।

कंध[1]—पुं० हिं० (पद०) पुं० (दीवार या कंधा, जिस पर छप्पर टिकता है)–सं० स्कन्ध > प्रा० खंध > हिं० कंध।

कंधा—पुं० (मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में है)–सं० स्कन्ध + क > पा० प्रा० खन्ध > अप० खंध > कंधा। गु० खभो, खाँद, खांधो; पं० कन्नहा, कनाडा; बं० काँध; सिं० कांधो; म० खाँदा; ओ० कांध (कान्धाँ)।

कंधार[1]— पुं० (केवट, मल्लाह)–सं० कर्णधार > पा० प्रा० कण्णधार > हिं० कंधार।

कंधार[2]—पुं० (अफगानिस्तान के एक प्रदेश और उसकी राजधानी का नाम)–सं० गांधार।

कंबख्त— वि० (बेहूदा, कमीना, अभागा)– फ़ा० कमबख्त (कम भाग्य वाला)।

कंबख्ती—स्त्री० (भाग्यहीनता, दुर्भाग्य)–फ़ा० कम्बखती।

कंबोज—पुं० (आधुनिक सोविएत रूस के अन्तर्गत उस प्रदेश का पुराना नाम, जिसमें आजकल पामीर और बदख्शाँ है)–सं० कम्बल-भोजाः[७] (ठंडा प्रदेश होने के कारण कम्बलों का प्रयोग)। सं० काम्बोज > प्रा० कंबोय > हिं० कंबोज।

कँचेरा—पुं० (वह जो काँच की चीज़ बनाता हो)– सं० काचकार > प्रा० कच्चआर > कँचेर > कँचेरा।

कँगनी—स्त्री० (एक अन्न का नाम)–सं० कङ्गु (अम०) > प्रा० कंगु, कंगणी > हिं० कँगनी।

कँदरी—प्रा० प्र०, स्त्री० (कीचड़)–सं० कर्दम > प्रा० कद्दम > कद्दमग > कँदरी।

कँवल—पुं० (कमल)– सं० कमल > पु० हिं० कवल, भो० कँवल। तुल० उर्दू पं० कँवल, मि० कँवँलु।

कँहार—पुं० (कहार)–सं० स्कन्धभार (डोली उठाने वाला) > प्रा० कंधहार > कँहार। अथवा सं० क + हार (पानी ढोने वाला) > कँहार।

कइ[1]—पुं० (कवि)–सं० कवि > प्रा० कइ > अव० कइ।

कइ[2]—वि० (कितनी, कुछ) –सं० कति > प्रा० कइ > अवधी कइउ > हिं० कइ, कई।

कइ[3]—क्रि० वि० (कब)–सं० कदा > प्रा० कया, कयाइ > कइ।

कई[4]—वि० (एक से अधिक, अनेक)–सं० कति > प्रा० कइ > हिं० कई, द०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिं० कइ।

कई[६]—वि० (की हुई)–सं० कृत>प्रा० किअ, कय>हिं० कई।

कउतक—पुं० (कौतुक) –सं० कौतुक >प्रा० कोत्तिअ>कउतक।

ककई—स्त्री० (कंघी)–सं० कंकतिका।

ककड़ी—स्त्री० (ककरी)–सं० कर्कटिका >प्रा० कक्कडिआ, कक्कडी>हिं० ककड़ी, अवधी ककरी। तुल० म० गु० काकडी, ओ० काकुडि।

ककना—पुं० (हाथ का आभूषण)–सं० कङ्कण> प्रा० कंकण> हिं० कँगण, अवधी छ० ककना।

ककेड़ा—पुं० (ककोड़ा, चिचड़ा)–सं० कर्कटक>प्रा० कक्कड>हिं० ककेड़ा।

ककोड़ा—पुं० (परवल के आकार का एक फल जो तरकारी के काम आता है, ककरौल)–स० कर्कोट+क>पा० प्रा० ककडोक>हिं० ह० ककोड़ा।

कच[१]—पुं० (किसी मुलायम वस्तु में किसी पैनी चीज के चुभने या धँसने का शब्द)–द्रविड़ भाषाओं से गृहीत। तु० कचक (कीचड़ में ढेले के गिरने का शब्द), क० कचक।

कच[२]—पुं० (बाल)–सं० कच।

कचरा—पुं० (कचड़ा, कूड़ा-करकट)–सं० कर्दट> कद्दड> कच्चड़> कच्चर>कचरा।

कचहरी[१]—स्त्री० (१-गोष्ठी, जमावड़ा। २- दरबार। राजसभा)– सं० कृत्यगृहिका>प्रा० किच्चधरिका> किच्चहरिया या किच्चहरिआ>कच्चहरिअ> कचहरी। फ़ा० कचेरी, बं० काछारी म० कचेरी।

कचौड़ी—स्त्री० (कचौरी, पिट्ठी की पूड़ी)–(सं० कचपूरिका>प्रा० कचउरिआ > कच्चउडिया>कच्चोडिआ> कच्चौड़ी>कचौड़ी।

कछलंपट—पुं०:(व्यभिचारी, लुच्चा)–सं० कक्षलंपट (सं० कक्ष=काछ, लंपट-झूठा) प्रा० कच्छ+लंपड (पाइअ०)> हिं० कछलंपट।

कछु—वि० (कुछ, थोड़ा)–सं० किंचित्।

कछुआ, कछुवा—पुं० (एक जन्तु जिसके पीठ पर ढाल के आकार की कड़ी खोपड़ी होती है)–सं० कच्छप+क > प्रा० कच्छभ। म० कासव, कांसव; सिं० कुमी, कछउं, कछूं;बं० काछिम, बं० कच्छप, ओ० कइंछ।

कछौटा—पुं० (कमर में पहनने का काछा)–सं० कच्छपट्ट>कच्छवट्ट> कच्छउट्ट>कच्छोट्ट>कछौटा।

कछौटी—स्त्री० (लँगोटी, छोटी धोती)–सं० कच्छपटिका>प्रा० कच्छुट्टिया> प्रा० कच्छोटी (पाइअ०)>कछौटी।

कट्टा, कटड़ा— पुं० (भैंस का नर बच्चा)–सं० कटाह (मो० वि०)।

कटना—क्रि० (कट जाना)–सं० कर्त्तन >प्रा० कट्ट>हिं० कट+ना (प्र०)।

कटहरा— पुं० (कटघरा, काठ का घेरा)–सं० काष्ठगृह> प्रा० कट्ठघर, कट्ठहर>हिं० कटहरा, अवधी कटरा।

कटहल—पुं० (कटहर, एक प्रकार का फल, पनस फल)–सं० कंठकफल>प्रा० कंटयफल, कंटगफल> अवधी कटहर। तुल० पं० कठल, कश्मी० कठल्, बं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काँठाल, अस० कँठाल ।

कटार— पुं० (छोटी तलवार)– सं० कट्टार> प्रा० अप० कटार> हिं० कटार । तुल० मल० कठारम् ।

कटारी—स्त्री० (छुरी)–सं० कट्टारिका >प्रा० कट्टरिआ>प्रा० कट्टारी, अप० कट्टारी (दे० न० मा०)–हिं० कटारी ।

कटेरी— स्त्री० (एक कँटीली रूखड़ी, कटेहरी)– सं० कण्टकारिका> प्रा० कंटाली>हिं० कटेरी ।

कठपुतली—स्त्री० (काठ की बनी हुई पुतली)–सं० काष्ठपुत्तलिका>प्रा० कट्ठ-पुत्तिआ>हिं० कठपुतली, ह० कठ्पु-त्ली ।

कठरा—पुं० (कटहरा, काष्ठगृह)–सं० काष्ठगृह>प्रा० कट्ठहर>हिं० कठरा ।

कठहरा—पुं० (कठरा)–सं० काष्ठगृह >प्रा० कट्ठघर>कठघरा>कठहरा ।

कठ्ठिया—स्त्री० (घेरा, सीमा)– सं० काष्ठा>प्रा० कट्ठा>हिं० कठ्ठिया ।

कठिनाई— स्त्री० (कठिनता)– सं० कठिनता>कठिनाई ।

कठैंगर—पुं० (वह डंडा जो किवाड़ों के पीछे अटकाव के लिए लगाया जाता है)–सं० काष्ठार्गल>प्रा० कट्ठअग्गल> हिं० कठैंगर ।

कठौता—पुं० (काठ का एक बड़ा बर-तन)–सं० काष्ठपात्रम्>आ० कट्ठपत्त, कट्ठवत्त>कठवता>हिं० कठौता ।

कड़—पुं० (कुसुम्भ या बरें नाम का पौदा, जिसके बीज का तेल निकाला जाता है)– सं० करट> प्रा० करड, करंडा>हिं० कड़ ।

कड़-कड़, कड़कड़ाना— क्रि० (कड़-कड़ की आवाज करना)– सं० कडकडित> प्रा० कडकडिअ (पाइअ०)>हिं० कड़-कड़, कड़कड़ाना ।

कड़क— स्त्री० (कड़कड़ाहट का शब्द, कठोर शब्द)– सं० कक्खट>प्रा० कक्खड>हिं० कड़क ।

कड़ा—वि० (कठोर, रूखा, सख्त)–सं० कड्ड>हिं० कड़ा । तुल० भो० कर्रा, गु० कठण, ओ० कठिण, म० कठीण ।

कड़ाह—पुं० (बड़ी कढ़ाई)– सं० पा० कटाह> प्रा० अप० कडाह > हिं० कड़ाह, कढ़ाह ।

कड़ाहा—पुं० (कड़ाह)–सं० कटाह+ क>कडाहअ>कड़ाहा ।

कड़ाही—स्त्री० (कढ़ाई)–सं० कटाहिका >प्रा० कडाहिआ>हिं० कड़ाही ।

कड़ुआ—वि० (कटु, जो स्वाद में तीक्ष्ण होने के कारण अप्रिय हो)– सं० पा० कटुक>प्रा० कडुअ> हिं० कड़वा, कड़ुआ भो० कड़ुआ । तुल० पं० कौडा, सिं० कौडो, म० कडू, गु० कडवो ।

कढ़ना[1]—क्रि० (बाहर आना या निक-लना)– सं० कर्षण>पा० कड्ढन> प्रा० कड्ढण>हिं० कढ़ना ।

कढ़ना[2]—क्रि० (दूध का औटाया जाकर गाढ़ा होना)–सं० क्वथ्>पा० कढ्ढ> प्रा० कढ>हिं० कढ़ना । पं० कढ्ढणा, गु० कढवूं ।

कढ़ी— स्त्री० (एक प्रकार का प्रसिद्ध तरल व्यंजन जो घुले हुए बेसन को उबाल कर बनाया जाता है)– सं० क्व-थिका>प्रा० कढिआ> (पाइअ०) >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिं० कढ़ी। सिं० कढही।

कण्यर, कणयार— पुं० (कनेर का वृक्ष)— सं० कर्णिकार>प्रा० कण्णिआर>हिं० कणियर, कणयार, कण्यर।

कत[1]—क्रि० वि० (कहाँ, किधर)–सं० कुत्र>प्रा० कुत्थ>कत।

कत[2]—पुं० (देशी कलम की नोक की आड़ी काट)–सं० कृत>प्रा० कत्त>हिं० कत।

कत[3]—अव्य० (क्यों, किस लिए)–सं० कुतः>प्रा० कुतो>कत।

कत[4]—वि० (कितना, कितना अधिक)–सं० कियत्> प्रा० कियंत > अवधी कत।

कतरना— क्रि० (कैंची से काटना)–सं० कर्त्तन (कृत्=काटना) >प्रा० कत्तण >हिं० कतरना। तुल० म० कातरणें, गु० कातरवुं, ओ० काटिबा, पं० उर्दू कतरना।

कतरनी—स्त्री० (कैंची)– सं० कर्त्तनी >प्रा० कत्तरी>हिं० कतरनी।

कतीरा— पुं० (गूल नामक वृक्ष का गोंद, जो प्रायः औषध के रूप में प्रयुक्त होता है)– फ़ा० कतीरः।

कतेक—वि० (कितने,अनेक, थोड़ से)– सं० कति+एक>हिं० कतेक।

कत्ती[1]—स्त्री० (चर्खा कातने वाली)– सं० कर्त्री>प्रा० कत्ती।

कत्ती[2]—स्त्री (कटारी)–सं० कर्तरी> पा० कट्टारी (Kattari)>प्रा० कत्तरी >हिं० कत्ती, म० कत्ति, सिं० काती।

कत्था— पुं० (खदिरसार, खदिरसत्व, खैर का पेड़)– सं० क्वाथ। तुल० कश्मी० कथुँ, सिं० कथो, गु० काथो।

कथड़ी—स्त्री० (कंथारी, गुदड़ी, थेगली लगा वस्त्र)– सं० कन्थिका > प्रा० कंथिडा>कथड़ा>कथड़ी।

कदंबा— पुं० (कदम नाम का वृक्ष)– सं० कदंबक> प्रा० कदम्बअ>कदंब, कदंबा।

कद[1]—अव्य० (कब)–सं कदा।

कद[2]—पुं० (डील, ऊँचाई)–अ० क़द।

कद[3]—स्त्री० (द्वेष, हठ)– अ० कद्द।

कदउआ—पुं० (एक सर्प)– सं० काद्रवेय।

कनअ—पुं० (सोना)–सं० कनक>पा० कनक>प्रा० कणग>अप० कणय> हिं० कनअ।

कनकनाना—क्रि० ('कन-कन' की ध्वनि करना)–सं० क्वणक्वणित>प्रा० कणक्कणिअ>हिं० कनकनाना।

कनपटी— स्त्री० (परपड़ी, आँख और कान के बीच का स्थान)– सं० कर्णपट्टिका, प्रा० कण्णपट्टिया>हिं० कनपटी।

कनागत— पुं० (पितृपक्ष, श्राद्धपक्ष)– सं० कन्यागत (कन्याराशि में आगत चन्द्र के समय किया जाने वाला पितरों का श्राद्ध) >प्रा० कण्णागत >हिं० कनागत।

कनिष्ठ—वि० (लघु)– सं० कनिष्ठ> प्रा० कणिट्ठ>अव० कनिट्ठ।

कनिहार— पुं० (मल्लाह, पतवार चलाने वाला)– सं० कर्णधार>प्रा० कण्णहार>कनहार, कनिहार।

कनी— स्त्री० (छोटा टुकड़ा, हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा)–सं० कणिका>प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कणिय > हिं० कनी ।

कनेर—पुं० (एक पेड़)–सं० कणेर > प्रा० कण्णेर > कन्नेर > हिं० कनेर ।

कनै—पुं० (कंचन)–सं० कनक > प्रा० कणय > कनय > कनै ।

कनौज—पुं० (कन्नौज)– सं० कान्यकुब्ज > प्रा० कण्णउज्ज > हिं० कनौज ।

कनौजिया— वि० (कन्नौज निवासी)–सं० कान्यकुब्ज > कनउज्ज > कन्नौज + इया ।

कपटा[1]— पुं० (गन्ना काटने के लिए कपटा)–सं० कलृप्ता > कपटा ।

कपटा[2]— पुं० (धान की फसल को हानि पहुँचाने वाला कीड़ा)–सं० कपट ।

कपटी—वि० (कपट करने वाला)–सं० कार्पटिक > प्रा० कप्पडिअ > हिं० कपटी, ह० कप्टी ।

कपड़ा—पुं० (वस्त्र, पट)– सं० कर्पट > प्रा० कप्पड > कपड़ा । अवधी कपरा, म० बं० कापड, पं० कप्पड़ा, कपडा (कण्डा); सिं० कपिडो, कपिडा, अस० कापोर ।

कपार, कपाल— पुं० (खोपड़ी)– सं० कर्पर > प्रा० कप्पर > अवधी कपार > हिं० कपार, कपाल, भो० कापारा ।

कपास—स्त्री० (रूई, एक पौधा जिसके ढेंढ से रूई निकलती है)–सं० कर्पास > पा० कप्पास[४] > प्रा० कप्पास, गु० कापुस; बं० कापास; म० कापूस, कपाशी, अस० कपाह ।

कपूर— पुं० (एक सफेद रंग का जमा हुआ सुगन्धित द्रव्य जो वायु में उड़ जाता है और जलाने से जलता है)–सं० कर्पूर, पा० प्रा० कप्पूर > हिं० कपूर । तुल० म० कापूर, बं० कर्पूर, अस० ओ० कर्पुर, ते० कर्पुरगु, त० कर्पुरम् ।

कपोल—पुं० (गाल)–सं० पा० कपोल > प्रा० कवोल > अप० कओल > हिं० कपोल ।

कफ़न—(मुर्दा लपेटने का कपड़ा)–अ० फ़ा० कफ़न ।

कब—क्रि० वि० (किस समय)– सं० कदा + एव > प्रा० कआ + एव्व > कब, हिं० कद । तुल० पं० कदों, सिं० कदहिं ।

कबरा=वि० (चित-कबरा)–सं० कर्बुर > पा० कबरा[४], प्रा० कव्वुर > कव्बुरय > हिं० कबरा ।

कबि—पुं० (कवि)–सं० काव्य > पा० कावेय्य > कव्व > कब > कवि ।

कबिलास[1]—पुं० (कैलाश पर्वत)–सं० कैलाश > प्रा० कइलास > कविलास > कबिलास ।

कबिलास[2]—पुं० (स्वर्ग)– सं० क + विलास > प्रा० कविलास (पाइअ०) > कबिलास ।

कबीला—पुं० (झुंड, किसी एक कुल के सब लोग)–अ० क़बील ।

कबूतर—पुं० (एक पक्षी)–फ़ा० कबूतर > हिं० कबूतर । सं० पा० कपोत, कश्मी० कोतुर, सिं० कबूतरु ।

कबूतरखाना— पुं० (एक प्रकार की खानेदार अलमारी जिसमें बहुत-से पालतू कबूतर रखे जाते हैं)–फ़ा० कबूतरखानः । सं० कपोतपालिका । तुल० सिं० कबूतरखानो, गु० कबुतरखानुं ।

कमर— स्त्री० (कटि)– फ़ा० कमर ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कमरा—पुं० (कोठरी)–पुर्त० कामरा (Camara)। तुल० लैटिन कैमेरा (Camera), पं० उर्दू कमरा, कश्मी० कुठ्, सिं० कोठी।

कमलनाल—स्त्री० (मृणाल, कमल की डंडी जिस पर फूल रहता है, कमल की पोली डंडी)– सं० कमलनाल>प्रा० कमलणाल>हिं० कमलनाल।

कमेरा=पुं० (श्रमिक)–सं० कर्मकर> पा० प्रा० कम्म-कर, प्रा० कम्मक्कर> कम्मयर>कम्मइर>कमेरा।

करंडिका—स्त्री० (बाँस की बनी छोटी पिटारी)–सं० करण्डिका>प्रा० करंडिआ>हिं० करंडिका।

करकराना— क्रि० ('कर-कर' की आवाज करना)– सं० करकर>प्रा० करकर (पाइअ०)>हिं० करकर।

करना—क्रि० (कार्य करना)–सं० करणम्>पा० कर>हिं० करना। तुल० कश्मी० करणु, म० करणें, गु० करवुं, बं० करा, ओ० करिबा (कॉरिबा)।

करआ— पुं० (करवा, बदना, करवली)– सं० करक>प्रा० करग, करय >हिं० करआ।

करकट—स्त्री० (रम्भाने वाली चंचल गाय, इतरी, कठिनाई से दुही जाने वाली गाय)– सं० करटा>भो० करकट।

करछा—पुं० (बड़ा चम्मच)–सं करर-क्षक> पा० कटच्छु>प्रा० कडच्छु> अप० कडच्छू (दे० ना० मा०)>हिं० करछा, कड़छी, छ० करछुल।

करतूत—स्त्री० (कर्म)–सं० कर्तृत्व> हिं० करतूत।

करन[1]—वि० (करने वाला)–सं० प्रा० करण>अवधी करन।

करन[2]—पुं० (कान)–सं० कर्ण>प्रा० कण्ण>करन।

करना— पु० हिं०, पुं० (करनी, करतूत)–सं० करणीय>प्रा० करणीअ> करणअ> हिं० करना। तुल० सिं० करणु, म० करणें, गु० करवुं, ओ० करिबा।

करबच— पुं० (पशुओं की पीठ पर रखा जाने वाला वह थैला, जिसमें सामान भरा जाता है)– अ० क़िर्बत> किरबत>करबत>हिं० करबच।

करम—पुं० (काम, कर्म,, करनी)–सं० कर्म>प्रा० कम्म>हिं० करम।

करमा—पुं० (जंगली जातियों का एक प्रकार का गाना)–अ० क़लबानः।

करवट—स्त्री० (बैठने, लेटने आदि में शरीर का वह पार्श्व या बल जिस पर शरीर का सारा भार पड़ा रहता है)– सं० करवर्त्त>प्रा० करवट्ट>हिं० करवट।

करवत— पुं० (बड़ी लकड़ियाँ चीरने का एक प्रकार का बड़ा आरा)– सं० करपत्र>प्रा० करवत्त>हिं० करवत।

करसी—स्त्री० (उपले का टुकड़ा)–सं० करीष>पा० प्रा० करीस>करिस> हिं० करसी, छ० खरसी।

करहा—पुं० (सफेद सिरस का पेड़)– सं० करहाट, करहाटक>पा० करहाट >प्रा० करहाड, करहाडय (पाइअ०) हिं० करहार, करहा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करा[1]—क्रि० (किया)–सं० कृतः, प्रा० करिअ>हिं० करा।

करा[2]—पुं० (ओला)–सं० करक>प्रा० करग, हिं० करका, छ० करा।

कराड़िया— (ढो०)–स्त्री० (गर्दन)–सं० कृकाटिका> प्रा० किआडिआ> हिं० कराड़िया।

करारा—(राम०) पुं० (कौआ, कौवा, एक पक्षी)–सं० करट+क>प्रा० करडअ>कररअ>करारा>अवधी करारा।

करि, कर—(करके)–सं० कृत्वा>प्रा० करेंत, करित, अप० करिअ> हिं० करि, कर।

करिअ[1]— क्रि० (की जाती है)–सं० क्रियते>प्रा० करिअ, करिअव्व>अवधी करिअ।

करिअ[2]—पुं० (पतवार, कर्णधार)–सं० कर्ण (पतवार)–कर्णिक (मतवरिया)> कण्णिअ>कड्डिअ>करिअ>करिया।

करिया—पुं० (कर्णधार, मल्लाह)–सं० कर्णिक>कण्णिक>करिया।

करिल, करिल्ल— स्त्री० (बांस का अंकुर, कोंपल, नया कल्ला)–सं० करीर >प्रा० करिल्ल>अप० करिल्ल (दे० ना० मा०)>हिं० करिल।

करिह—क्रि० (करेगा)–सं० करिष्यति >करिहइ>करिह।

करिहाँउ—स्त्री० (कमर, कटि भाग)–सं० कटिभाग>प्रा० कडिभाग>करिहाउँ, अवधी करिहाँव।

करीजे—क्रि० (करिए)–सं० क्रियते> करिज्जइ>अवधी करीजे।

करील—पुं० (झाड़ीदार वृक्ष जिस पर पत्ते कम और काँटे अधिक होते हैं)–सं० प्रा० करीर> अप० करिल्ल> हिं० करील।

करेला—पुं० (एक छोटी बेल, जिसके लंबोतरे फलों की तरकारी बनायी जाती है)–सं० कारबेल्ल+क>प्रा० कारेल्लय (पाइअ०)>हिं० करेला।

करो—क्रि० (करने के लिए आदेश)–सं० कुरुथ>अप० करहु>करउ।

करोड़—वि० (सौ लाख की संख्या)–सं० पा० कोटि>प्रा० कोडि>हिं० करोड़। भो० करोर।

करौंजा—पुं० (वृक्ष विशेष)–सं० करमर्द+क>प्रा० करमद्द>हिं० करौंजा।

करौंत—पुं० (दाँतिदार औजार, आरा)–सं० करपत्र>प्रा० करवत्त>करउत> करोत>करौंत।

कर्धनी— स्त्री० (कमर में पहनने का गहना)–सं० कटिधारणीय>प्रा० कडिधारणीय>हिं० कर्धनी।

कल[1]— क्रि० वि० (आने वाला या बीता हुआ दिन)– सं० कल्य>प्रा० कल्ल>अप० कल्लये (प० च०) (भावी कल) भो० काल्हि, कल।

कल[2]—पुं० (युद्ध)–सं० कलइ।

कल[3]—स्त्री० (युक्ति, ढंग)– सं० प्रा० कला।

कल[4]— पुं० (अव्यक्त और अस्पष्ट मधुर ध्वनि)–सं०√कल्+घञ्>प्रा० कल।

कल-कल, कलकना— क्रि० (कल्लाना, संज्ञाशून्य होना, बेचैन होना)–सं० कड्>हिं० कल, कल-कल, कलकना।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलप—पुं० (समूह)– सं० कलाप> प्रा० कलाव>हिं० कलप।

कलम— पुं० (लेखनी, जो काटकर बनाई जाए, एक तरह का धान)– सं० कलम। यू० कलमास, लै० कैलमुस, फ़ा० क़लम, अ० क़लम।

कलशिरा—वि० (काले सिर वाला)– सं० कृष्णशिरस्>प्रा० कण्हसिर>हिं० कलसिरा।

कलांकुर—पुं० (कराकुल पक्षी)–सं० कलाङ्कुर।

कलापी—पुं० (मोर)–सं० कलापिन्> पा० कलापी>प्रा० कलावि> हिं० कलापी।

कलाल—पुं० (मद्य बेचने वाला)– सं० कल्यपाल>प्रा० कल्लाल, हिं० कलाल।

कलावा—पुं०(लाल-पीले रंग का सूत)– फ़ा० कलाबः।

कलि—क्रि० वि० (कल गया हुआ या आगामी दिन, कालवाचक)–सं० कल्य >प्रा० कल्ल>हिं० कलि।

कलिकान— स्था० प्र०, वि० (हैरान, परेशान)–अ० क़लक़ या क़लिक़।

कलिया—पुं० (पशुओं का वह कच्चा मांस जो पका कर खाया जाता है)–अ० कलीयः।

कलिल— पुं० (भ्रम)– सं० कलिल> अवधी कलिल।

कलेजा—पुं० (प्राणियों का एक भीतरी अवयव)–सं० कालेय+क>हिं० कलेजा >ह० काल्जा।

कलेवा—पुं० (भोर का जलपान)–सं० कल्यवर्त>प्रा० कल्लवत्त>कल्लेउय> कलेवअ>कलेवा।

कल्याणभार्ज—पुं० (विधुर, वह पुरुष जिसकी स्त्री मर जाय)– सं० कल्याण-भार्य>प्रा० कल्लाणभज्ज >कल्याण-भार्ज। **कल्ला**[1]—(शराब)– सं० कल्या- प्रा०>कल्ला।

कल्ला[2]—पुं० (जबड़ा)–फा० कल्लः।

कल्हक—स्त्री० (कबूतर के आकार की लाल रंग की एक प्रकार की चिड़िया)– सं० कल्हंस, कलहंसक>प्रा० कल्हंस> हिं० कल्हक।

कवीट, कवीठ— पुं० (कैथा, कैथ, कवीथ)–सं० कपित्थ>प्रा० कवित्थ, कविट्ठ>हिं० कवीट, कवीठ।

कसना—क्रि० (बंधन आदि इस प्रकार खींचना कि वह और भी दृढ़ हो जाय)– सं० कर्षण > प्रा० कस्सण > हिं० कसना।

कसवट्ट— पुं० (कसौटी का पत्थर)– सं० कषपट्ट>प्रा० अव० कसवट्ट।

कसीस[1]— स्त्री० (कशिश, खिचाव)– फ़ा० कशिश>अव० कसीस।

कसीस[2]—पुं० (एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो लोहे का विकारी रूप होता है)–सं० कासीस।

कसेरा— पुं० (काँसे के बर्तन बनाने वाला)–सं० कांस्यकार>प्रा० कंसआर, कंसयर>अप० कंसालो (हे०), अव० कँसेरा (की०)>कसेरा।

कसेरु[1]— पुं० (रीढ़ की हड्डी का टुकड़ा)– सं० कशेरुक>प्रा० कसेरुग, कसेरुअ>हिं० कसेरु।

कसेरु[2]—पुं० (एक प्रकार के पौधे की

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जड़ जो झीलों के किनारे पर मिलती है)–सं० कशेरु>प्रा० कसेरु >अप० हिं० कसेरु (महा०)।

कसै—क्रि० (खींचता)–सं० कर्षति> पा० कड्ढति> प्रा० कस्सइ >हिं० कसै।

कसैला—वि० (कडुआ, स्वाद में ऐसा जिसके खाने से जीभ में हलकी ऐंठन या कुछ तनाव होता है)–सं० कषायित >प्रा० कसाइअ> कसाइल्ल> कसैल्ल >हिं० कसैला।

कसौटी—स्त्री० (एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़ कर सोने की परख की जाती है)—स० कर्षपट्टिका> प्रा० कसवट्टिआ>अप० कसउट्टिया> कसोट्टिआ>कसौटी।

कह—क्रि० (कहना)–सं० कथय्>प्रा० कह।

कहउ—क्रि० (कहना)–सं० कथयतु> अवधी कहउ।

कहती—क्रि० (कहती है)– सं० कथयति>हिं० कहती, अवधी कहति।

कहना— पुं० (कथन)–सं० कथन> प्रा० कहण>हिं० कहना।

कहाँ—क्रि० वि० (किस जगह)– वैदिक सं० कुह>पा० कहं, क्व>प्रा० कहु> हिं० कहाँ। तुल० पं० कित्थे, सिं० किथे (कित्थे), बं० कोथाय।

कहा[1]— पुं० (कथन)– सं० कथना> प्रा० कहणा>हिं० कहा।

कहा[2]—क्रि० वि० (कैसे)– सं० कथम् >प्रा० कइं।

कहा[1]—सर्व० (क्या)–सं० कः।

कहानी— स्त्री० (पूरी वार्ता या हाल-चाल)– सं० कथानक>प्रा० अप० कहाणय, कहाणिआ> अव० कहाणी> हिं० कहानी।

कहार— पुं० (एक हिन्दुओं की जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है)–सं० स्कन्धभार+क >प्रा० काहार>अप० काहारो>हिं० कहार। भो० कहाँर।

कहीं— क्रि० वि० (किसी अनिश्चित स्थान में)–सं० कस्मिन्>प्रा० कहिं> कहीं।

कहूँ—अव्य० (किसी स्थान पर)–वै० सं० कुह>प्रा० अप० कहु।

कांची—स्त्री० (मेखला, करधनी)– सं० काञ्ची>हिं० कांची।

कांदहु—पुं० (कीचड़, काँदौ, कीचर)– सं० कर्दम>प्रा० कद्दम, कद्दमग>काँदौ, कांदहु।

कांप—क्रि० (कांपना)– सं०>√कम्प् >प्रा० कंप>हिं० कांप।

काँकन—(कँगना)– सं० कंकण>पा० कङ्कण>प्रा० कंकण>काँकन।

काँख—स्त्री० (बगल, बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा)– सं० कक्ष>प्रा० कक्ख>काँख।

काँच—स्त्री० (शीशा)– सं० पा० काच >प्रा० कच्च>काँच।

काँचली—स्त्री० (काँचरी, सर्प के ऊपर का निर्मोक)– सं० कञ्चुलिका>प्रा० कंचु, कंचुअ>प्रा० कंचुलिया, काँचली, कँचुली।

काँचुली— स्त्री० (अँगिया, चोली)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० कञ्चुलिका > प्रा० कंचुलिआ > हिं० काँचुली ।

काँजी— स्त्री० (राई डालकर खट्टा किया हुआ पानी)–सं० काञ्जिक > हिं० काँजी ।

काँटई—पुं० (काँटा)–सं० कण्ट + क > प्रा० कंटय, कंटग > हिं० काँटइ ।

काँटा—पुं० (कँटक)—सं० कण्टक > प्रा० कंटग, कंटय > कण्टअ > काँटा ।

काँडना— पुं० हिं०, क्रि० (रौंदना, कूटना, धान को कूटकर चावल और भूसी अलग करना)– सं० कण्डन (√कण्ड + ल्युट्) > प्रा० कंडण > हिं० काँडना ।

काँडा— पुं० (काना)– सं० काण > काँडा ।

काँडी—स्त्री० (ओखली का वह गड्ढा जिसमें धान आदि डालकर मूसल से कूटते हैं)–सं० कण्डनी > काँडी ।

काँदना—क्रि० (रोना, चिल्लाना)–सं० क्रन्दन > प्रा० कंदण, कंदइ, कन्दमाण > हिं० काँदना ।

काँय-काँय, काँव-काँव—पुं० (बकवक)– सं० काक > काँव-काँव, काँय-काँय ।

काँवर— स्त्री० (बहँगी, बाँस का एक मोटा कट्टा जिसके दोनों छोरों पर वस्तु लादने के लिए छींके लगे रहते हैं और जिसे कंधे पर रखकर कहार चलते हैं)– सं० कर्पटिक (जीर्ण शीर्ण कपड़ों से ढका हुआ) > प्रा० कावड > हिं० काँवर, ह० कावड़ ।

काँवरि—स्त्री० (कम्बल)–सं० कम्बल > कामरी > काँवरी ।

काँवरू—पुं० (काम रूप देश, इच्छा के अनुसार रूप रखना)– सं० कामरूप > काँवरूअ > काँवरू ।

काँवाँरथी—पुं० (वह जो किसी तीर्थ में किसी कामना से काँवर लेकर जाए)– सं० कार्पटिक > कावडिअ > कावरिआ > काँवरिया > काँवाँरथी ।

काँस—पुं० (एक प्रकार की घास जो छत छाने और चटाई बनाने के काम में आती है)–सं० काश > हिं० काँस ।

काँसा[1]—पुं० (एक धातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है)–सं० कांस्य > प्रा० कंस, कास > हिं० काँसा ।

काँसा[2]—पुं० (भीख मांगने का खप्पर, प्याला)–अ० कासः ।

का[1]—सर्व० (क्या)–सं० किम् > प्रा० किं > अप० काई, काहि > छ० का ।

का[2]—प्र० (षष्ठी या संबंध का चिह्न)– सं० कः ।

काउदर—पुं० (साँप की एक जाति)– सं० काकोदर > प्रा० काउदर ।

काऊ[1]—क्रि० वि० (कभी)–सं० कदापि > प्रा० कयाइ (पाइअ०) > हिं० काऊ ।

काऊ[2]—सर्व० (कोई, कुछ)–सं० कोपि ।

काक्खड—वि० (कठोर, खुरदरा)–सं० कर्कश > प्रा० कक्कस > कक्खड (पाइअ०) > हिं० काक्खड ।

काखासोती— (राम०) पुं० (पीला दुपट्टा और जनेऊ)–सं० कक्षसूत्रिका > प्रा० कक्खसूत्तिआ > अप० कक्खसूती > काखासोती ।

कागा—पुं० (कौआ)–सं० काक > प्रा० काग > कागा ।

काछ(1)—पुं० (पार्श्व भाग, पेडू और जांघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान)–सं० कक्ष्य > प्रा० कच्छ > अव० काछ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काज[1]—पुं० (कार्य)–सं० कार्य>प्रा० कज्ज>अप० कज्जहि, अव० कज्ज> हिं० काज।

काज[2]—पुं० (छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है)– पुर्त० काज़ा, कों० काज़।

काजल—पुं० (काजर)–सं० कज्जल> पा० प्रा० कज्जल>काजल।

काजलवन—पुं० (शस्य श्यामल वन)– सं० कज्जलवन >प्रा० कज्जलवण > हिं० काजलवन।

काट—क्रि० (काटना)–सं० कर्त्त>प्रा० कट्ट>हिं० काट। तुल० पं० कटणा, सिं० कटणु, बं० काटा, अस० काट, ओ० काटिबा।

काठ—पुं० (लकड़ी)–सं० काष्ठ>पा० काट्ठ(४)>प्रा० कट्ठ>हिं० काठ।

काठी—स्त्री० (शरीर का गठन)–सं० कायस्थिति > प्रा० कायठिइ > हिं० काठी।

काढ़ना—क्रि० (निकालना)–सं० कर्षण >प्रा० कड्ढण>अव० काढल>हिं० काढ़ना।

काढ़ा[1]—पुं० (औषधियों को पानी में औटा कर बनाया हुआ शरबत, कषाय, क्वाथ, जोशांद)–सं० क्वाथ+क>प्रा० काढअ>हिं० काढ़ा। तुल० उ० पं० म० काढा, सिं० काढो, अस० कोवाथ, क० कषाय।

काढ़ा[2]—क्रि०(खींचा)–सं० कृष्ट>पा० कड्ढति>प्रा० कड्ढिय>हिं० काढ़ा।

कान[1]—पुं०(श्रोत्र, सुनने की इन्द्रिय)– सं०>कर्ण>पा० प्रा० कण्ण> कान, पु० हिं० काँन्ह। तुल० अस० काण, पं० कन्न, कश्मी० कन्।

कान[2]—स्त्री० (खान)–फ़ा० कान।

कान[3]—पुं० (कान्ह, कृष्ण)–सं० कृष्ण, प्रा० कण्ह>पु० हिं० कान्ह।

कान[4]—पुं० (नाव की पतवार जिसका आकार प्रायः कान जैसा होता है)–सं० कर्ण>प्रा० कण्ण>हिं० कान।

कान्ह—पुं० (कृष्ण)–सं० कृष्ण>प्रा० कण्ह, कन्ह>अप० कण्ण, हिं० कान्ह।

काना—वि० (जिसकी एक आँख फूट गई हो)–सं० काणः, पा० प्रा० काण> हिं० काना।

कापर[1]—पुं० (सिर, मूँड)–सं० कर्पर >प्रा० कप्पर>कापर।

कापर[2]—(कपड़ा)– स० कर्पट>पा० कप्पट>प्रा० कप्पड>हिं० कापर।

काम—पुं० (वह जो किया जाय)–सं० कर्म>पा० प्रा० कम्म>हिं० काम।

कामरी—स्त्री० (कंबल, लोइ, काम रिया)–सं०पा० कम्बल।

कारकुन—पुं० (किसी के बदले काम करने वाला)– फ़ा० कारकुन।

कारखाना—पुं० (वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु बनायी जाती है)–फ़ा० कारख़ानः। तु० भो० करखन्ना।

कार्यवाही— स्त्री० (कार्यवाई, कारवाई)– फ़ा० 'काररवाई' का हिन्दी रूपान्तर।

कालीमिर्च—स्त्री० (एक मसाला)–सं० कृष्ण मिरिच>प्रा० कण्हमिरिअ। तुल० सिं० कारामिर्च।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कार्षापण[१]— पुं० (एक प्राचीन सिक्का)–असीरियन भाषा कर्ष, यूनानी केरसस् (Kerasos)। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में 'कर्ष' तोले का वाची। सं० कर्ष+पण (चांदी का सिक्का)। >पा० कहापण>प्रा० कहावण (पाइअ०)>कार्षापण।

काहा— सर्व० (कैसा, क्या)– सं० कथं >पा० प्रा० कत्थ>काहा।

काहिल— वि० (जो फुर्तीला न हो, आलसी)–अ० काहिल।

काहे[१]—सर्व० (क्या)–सं० किम्>अप० किम (कैसे)>काहे।

काहे[२]—क्रि० वि० (कब, किस समय)–सं० कदा>प्रा० काहे।

किंकिनि— स्त्री० (करधनी, क्षुद्र-घण्टिका)– सं० किङ्किणी > प्रा० किंकिणी>हिं० किंकिनी।

किटकिटाना— क्रि० (किड़किड़ाना, क्रोध से दाँत पीसना)–सं० किटकिटायते>प्रा० किडिकिडिआ>किटकिटाना, किड़किड़ाना।

किता—वि० (कितना का संक्षिप्त रूप)–सं० कियत्>प्रा० अप० कित्त>अव० कत्त>हिं० किता।

किन[१]—सर्व० (किस का बहुवचन)–सं० केन>अप० केण, किण>किन। म० किण-किणें।

किन[२]— पुं० (दाग, किसी वस्तु के लगने, चुभने वा रगड़ पहुँचने का चिह्न)–सं० किण>प्रा० किण।

किन[३]—क्रि० वि० (क्यों न)–सं० किम्+न>अप० किम (हे०)>हिं० किन।

किन्हीं—सर्व० (किसी को)–सं० केषामपि>अप० काणइ=हिं० किन्हीं।

किन्हें—सर्व० (किसको)–सं० केषाम्>प्रा० किणो> अप० किणहं + इ> किन्हें।

किया—क्रि० (कार्य-निष्पादन किया)–सं० कृत+क>किअअ>किया।

किरकिरा—वि० (कँकरीला)–सं० कर्कर >प्रा० कक्कर>किरकिरा।

किरकल— पुं० (धूल, कंकड़, तिनके आदि का कण जो वस्तु को किरकिरा बना देता है)–सं० कर्कर>प्रा० कक्कर >हिं० किरकल>ह० किर्कल्।

किराना—पुं० (पंसारी की दुकान पर बिकने वाली चीजें)–सं० क्रयण>प्रा० किणण>हिं० किराना। सिं० किर्याणी। म० किराणा।

किरानी— पुं० (हिसाब किताब की जाँच करने वाला)– सं० कारणिक> प्रा० कारणिय>हिं० किरानी।

किरिया— पु० हिं०, स्त्री० (मृत्यु के उपरान्त एक धार्मिक प्रक्रिया जो कि हिन्दुओं में की जाती है, काम)– सं० क्रिया>पा० किरिय>प्रा० किरिया> छ० किरिया।

किलकना, किलकिलाना—क्रि० (किल-किल ध्वनि उत्पन्न करना)– सं० किलकिलायते>प्रा० किलकिल>हिं० किलकना, किलकिलाना।

किल-किल— स्त्री० (किल-किल की ध्वनि करना)– सं० किलकिला>प्रा० किलकिल, किलिकिल, किलिकिलि, किलकिलाइय>हिं० किलकिल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किलकैया—पुं० (चौपायों के खुरों में होने वाला एक रोग)–सं० कीलक, कील >हिं० किलकैया।

किला—पुं० (दुर्ग, गढ़)–अ० क़िलाअ।

किलावा—पुं० (हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा जिसमें पैर फँसाकर महावत हाथी को चलने का संकेत करता है)–सं० कलापकम् > प्रा० कलावअ > किलावा।

किल्लत—स्त्री० (न्यूनता, दुर्लभता)–अ० क़िल्लत।

किल्ला—पुं० (बिनौला अंकुर रूप में जब धरती से निकलता है)–सं० कीलक >कीलअ>कीला>किल्ला।

किल्ला[1]—पुं० (किला)–अ० क़िलाअ।

किवाट, किवाड़— पुं० (लकड़ी का पल्ला जो द्वार बन्द करने के लिए द्वार की चौखट पर जड़ा होता है)– सं० कपाट > प्रा० अप० कवाड> हिं० किवार, किवाट, किवाड़ भो० केवाडी, केवड़िया।

किस—सर्व०('कौन' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है)–सं० कस्य> प्रा० कस्स> कीस्स > किस्स>किस।

किसम— स्त्री० (किस्म, भाँति भाँति का, प्रकार)–अ० क़िस्म।

किसमत—स्त्री० (क़िस्मत, भाग्य)–अ० क़िस्मत।

किसान—पुं० (खेती करने वाला)–सं० कृषाण>किस्साण>हिं० किसान। पं० म० किसाण।

किसी— सर्व० (कोई का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है)–सं० कस्यापि>प्रा० कस्स-वि> अप० कस्सइ>हिं० किसी।

किस्त—स्त्री० (ऋण चुकाने में धन-राशि के कई भाग करके प्रत्येक भाग के चुकाने के लिए अलग-अलग समय निश्चित करना)–अ० क़िस्त।

की[1] (की०) अव्य० (क्या)– सं० किम् >प्रा० किं>अव० की।

की[2]—क्रि० (करना)–सं० कृत>प्रा० किय>की।

कीच-काँद—पुं० (कीचड़, कीचर)–सं० पा० प्रा० कच्छ>कीच। सं० कर्दम> पा० प्रा० कद्दम> भो० काँदो, हिं० काँद। तु० पं० किच्चड, चिक्कड़; म० चिखल, गु० कादव।

कीट—पुं० (जमी हुई मैल, मल)–सं० किट्ट>प्रा० किट्ट>हिं० कीट। तुल० पं० कीडा, म० कीटक, मल० कीटम, क० कीट।

कीड़—पु० हिं०, स्त्री० (क्रीड़ा)– सं० क्रीडा>प्रा० कीड>हिं० कीड़।

कीड़ा—पुं० (कीट)–सं० पा० कीट+ क>प्रा० कीडअ>अप० कीडउ>हिं० कीड़ा। तुल० उर्दू कीडा, म० किडा।

कीड़ी—स्त्री० (चींटी, पिपीलिका)–सं० कीटिका>पा० कीटक>प्रा० कीडिया हिं० कीड़ी।

कीना— पुं० (द्वेष, शत्रुता)– फ़ा० कीन।

कीलना—क्रि० (मन्त्र फूँकना, साँप को मंत्र से वश में कर लेना)– सं० कीलन >प्रा० कीलण>कीलना।

कुंकुम—पुं० (केसर, रोली, कुंकुमा)–सं० कुङ्कुम>पा० प्रा० कुंकुम।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुंज—पुं० (वह स्थान जिसके चारों ओर लता छाई हो)–सं० कुञ्ज। भो० कूँज।

कुंजल— पु० हिं०, पुं० (हाथी)–सं० पा० कुञ्जर > प्रा० कुंजर > हिं० कुंजल।

कुंजी—स्त्री० (चाभी, ताली)–सं० पा० कुञ्चिका > प्रा० कुंचिआ > कुंजिआ > कुंजी।

कुंपल—स्त्री० (मुकुल, कलिका)–सं० कुड्मल > प्रा० कुप्पल, कुंपल > अप० कुम्पल (हे०) > हिं० कुंपल।

कुंभ—पुं० (मिट्टी का घड़ा)–सं० कुम्भ > प्रा० कुंभ।

कुँआ—पुं० (कूप, कुवाँ)– सं० कूप > प्रा० कूव, कूवय > हिं० कुँआ। तुल० उर्दू कुवाँ, गु० कूवो, बं० कुवो, ओ० कुअ।

कुँआरा— (वि० बिन ब्याहा)– सं० कुमार + क > प्रा० कुमार > कुँवारआ > कुँवारा > कुँआरा।

कुँई—स्त्री० (कुमुदनी)–सं० कुमुदनी > प्रा० कुमुइणी > हिं० कुँई।

कुँवर—पुं० (लड़का, राजपुत्र)–सं० प्रा० कुमार > कुँमर, हिं० कुँवर। गु० कुवर, सिं० कुंयारो, पं० कंवर।

कुकुर—पुं० (कुत्ता)– सं० पा० प्रा० कुक्कुर > अप० कूकुरु > हिं० कुकुर। भो० कुकुरा।

कुचकार— स्त्री० (उत्तरी कश्मीर में होने वाली एक प्रकार की भेड़, कुलंजा)– फ़ा० कुचकार > हिं० कुचकार।

कुछ[1]—सर्व० (कोई वस्तु)–सं० कश्चित् > कच्छिय > कच्छिउ > कच्छुइ > कछु > कुछ। भो० किछऊ, कीछू।

कुछ[2]— वि० (थोड़ी संख्या या मात्रा का)–सं० किञ्चिद् > पा० कोचि > प्रा० किंचि > कुचु > कुछु > पू० हिं० कछु, किछु, बं० किछु, ब्र० कछु।

कुटुंबी— पुं० (कुटुंब वाला, कुनबे वाला)–सं० कुटुम्बिन् > प्रा० कुडुंबि, कुडुंबिअ > अप० कुडुम्बि > हिं० कुटुंबी।

कुटनी—स्त्री० (दूती, वह स्त्री जिसका पेशा स्त्रियों को बहका कर पर-पुरुषों से मिलाना और इस प्रकार रुपया कमाकर जीविका निर्वाह करना होता है, दो पक्षों में झगड़ा कराने वाली स्त्री)– सं० कुट्टिनी (√कुट्ट–निन्दा करना) > प्रा० कुट्टिणी > हिं० कुटनी।

कुटुम—पुं० (कुटुंब)–सं० कुटुम्ब > प्रा० कुडुंब > अप० कुडुम्ब > हिं० कुटुम, ह० कुटम।

कुठिया— स्था० प्र०, स्त्री० (अनाज रखने का मिट्टी का गहरा बरतन)–सं० कोष्ठिका > प्रा० कोट्ठिया > हिं० कुठिया। भो० कुठला।

कड़कुड़ाना— क्रि० (बड़बड़ाना; कुढ़ना)–सं० कुरुकुराय > प्रा० कुरुकुरु > हिं० कुड़कुड़ाना।

कुड़री—स्त्री० गेंडुरी; इँडुरी, वह भूमि जो नदी के घूमने से बीच में पड़कर तीन तरफ जल से घिर जाय)– सं० कुण्डली।

कुड़ी[1]—प्रा० प्र०, स्त्री० (कन्या)–सं० कुटिका (हरिषेण कृत बृहत्कथा कोष में

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रयुक्त) > प्रा० कुडिआ > पंजाबी कुड़ी। पुं० कुटंक या कुडय।

कुढ़न— स्त्री० (वह क्रोध जो मन ही मन रहे)–सं० क्रुद्ध > प्रा० कुद्ध > हिं० कुढन।

कुढ़ना—क्रि० (भीतर ही भीतर क्रोध करना)–सं० क्रुद्ध > प्रा० कुड्ढ > हिं० कुढ़ + ना।

कुतूहल—पुं० (अचम्भा, उत्कंठा)– सं० कौतूहल > पा० कुतूहल > प्रा० कोतुहल, कुऊहल > हिं० कुतूहल।

कुत्ता—पुं० (कुक्कुर)–प्रा० कुत्त, कुत्ती (स्त्री०) > हिं० कुत्ता। गु० कुत्तो।

कुथुआ—पुं० (आँख का एक रोग)– सं० कुतूणक, कुकूणक।

कुदरत—स्त्री० (ईश्वर-शक्ति, प्रभुत्व)– अ० क़ुद्रत।

कुदाल, कुदाली— स्त्री० (लोहे का बना एक औजार)–सं० पा० प्रा० कुद्दाल > हिं० कुदाल, भो० कुदार, छ० कुदरी, कुदारी। तुल० उर्दू कुदाली, सिं० कोदरी, म० कुदळ, बं० कोदाल, ओ० कोदाळ।

कुन्नस बजाना— क्रि० (टहल या सेवा करना)–तु० कोरनिश > कुन्नस।

कुन्दा—पुं० (एक औजार जो काठ को छीलने के काम आता है)–फ़ा० कुन्दः।

कुप—पुं० (घास, भूसा, पुआल आदि का ढेर जो खलिहान में लगाया जाता है)– तुलु कोप्पा (कुटीर)। (द्र० ए० डि०)।

कुप्पा—पुं० (तेल रखने के लिए चमड़े का गोल आकार का पात्र)– सं० कुतुपं प्रा० कुतुव > हिं० कुप्पा।

कुवलय—पुं० (नीलकमल)– सं० पा० प्रा० कुवलय > अवधी कुबलय।

कुबानी—स्त्री० (बुरा व्यवसाय)– सं० कुवाणिज्य > प्रा० कुवाणिज्ज, कुवाणिय > कुवानी > कुबानी।

कुम्हड़बतिआ—पुं० (पेठे या काशीफल का निकलने वाला अंकुर)– सं० कूष्माण्डवर्तिका > प्रा० कुम्हंडबत्तिआ > हिं० कुम्हड़बतिआ।

कुम्हड़ा—पुं० (कोहड़े का फल, काशीफल, एक बेल का फल जिसकी तरकारी बनती है)–सं० कुष्मांड > पा० कुम्हंड > प्रा० कुम्हंडा > हिं० कुम्हड़ा। बं० कुमड़ा, भो० कोंहड़ा, अस० कोमोरो।

कुम्हार—पुं० (मिट्टी का बरतन बनाने वाला मनुष्य)– सं० कुम्भकार > प्रा० कुंभार > प्रा० कुम्भआर, कुम्भार > हिं० कुम्हार। सिं० कुंभरु, बं० कुमार।

कुरकी—स्त्री० (कुर्की)–तु० क़ुर्क़।

कुरकुराना—क्रि० (कुर-कुर की आवाज करना)– सं० कुरुकुराय् > प्रा० कुरुकुरु (पाइअ०) > हिं० कुरकुराना।

कुरबान— वि० (जो बलिदान किया गया हो)–अ० क़ुर्बान।

कुरवा[1]—पुं० (कटसरैया)–सं० कुरबक > प्रा० कुरवय > हिं० कुरवा।

कुरवा[2]—पुं० (लकड़ी का एक बर्तन जो अन्न नापने के काम में आता है)– सं० प्रा० कुडव (पाइअ०) > कुरुआ, कुरवा।

कुराई—स्त्री० (बुरा मार्ग, बदचलनी)– कु + फ़ा० राह > कुराय, कुराई, अवधी कुराई।

कुरुआ—पुं० (कटसरैया का तेल, एक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काँटेदार पौधा जिसके दानों से घटिया तरह का तेल निकाला जाता है)– सं० कुरुबक>प्रा० कुरुंबअ>अव० कुरुआ।

कुरेरै[1]— (पद०) पुं० (कुलेल, क्रीडाएँ)– सं० कुलकेलि>कुलएलि>कुलेलि>भो० कुलेल>कुरेर, कुरेरै।

कुलकुल— पुं० (बोतल या सुराही से पानी उँडेलने पर होने वाला शब्द, उक्त शब्द करना)–प्रा० कुलकुल>हिं० कुलकुल।

कुलकुलाना—क्रि० (बहुत से छोटे-छोटे कीड़ों या पक्षियों का एक साथ रेंगना, हिलना-डुलना या शब्द करना)–सं० कुरुकुराय्>प्रा० कुरुकुरु>कुरकुर>कुलकुल (कुलकुलाना), कुलबुल (कुलबुलाना)।

कुलथ— पुं० (कुलथी, उरद की तरह की एक दाल)–सं० प्रा० कुलत्थ>हिं० कुलथ।

कुलफत—स्त्री० (मानसिक चिन्ता या दुःख)–अ० कुल्फ़त।

कुलह—स्त्री० (टोपी)–फ़ा० कुलाह> अवधी कुलह।

कुल्ला[1]—पुं० (गरारा, मुँह को साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर इधर उधर हिलाकर फेंकने की क्रिया)– सं० प्रा० कवल।

कुल्ला[2]— पुं० (घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ की रीढ़ पर काली धारी होती है)–सं० कुल्या>कुल्ला।

कुल्ला[3]—पुं० (चोटी)–अ० कुल्ल।

कुल्हड़—पुं० (पुरवा, चुक्कड़, एक मिट्टी का पात्र)-सं० कुल्हर>प्रा० कुल्लड>अप० कुल्लड़ (दे० ना० मा०)>हिं० कुल्हड।

कुल्हाड़ा— पुं० (कुठार, एक औजार जिससे पेड़ काटते हैं)– सं० कुठार+क>प्रा० कुहाड>हिं० कुल्हाड़ा, स्त्री० कुल्हाड़ी; गु० कुहाड़ो, म० कुरहाड्, पं० कुल्हाड़ा।

कुल्हाड़ी—स्त्री० (छोटा कुल्हाड़ा)–सं० कुठारिका> कुढारिआ> कुढालिआ> कुड्हारिआ>कुल्हाडिया>कुल्हाड़ी (सं० पा० कुठारी>प्रा० कुहाडी)। तुल० पं० सिं० गु० कुहाडी; बं० कुडुल, अस० कुठार, ओ० कुराढी।

कुल्हिया—स्त्री० (कुल्हड़ी)–सं० कुल्हरिका>प्रा० कुल्लुडिया>हिं० कुल्हिया।

कुवाण—पुं० (धनुष)–फ़ा० कमान> हिं० कंमाण, कुमाण, कुवाण। ह० कंमाण, कुमाण।

कुवार— पुं० (कुमार, पुत्र, अविवाहित)– सं० पा० प्रा० कुमार>हिं० कुवार।

कुशली—वि० (कल्याणयुक्त)–सं० कुशलिन्>प्रा० कुसलि>हिं० कुशली।

कुश्ती—स्त्री० (मल्लयुद्ध)–फ़ा० कुश्ती।

कुसुमाउह[1]—(की०) पुं० (कामदेव)– सं० कुसुमायुध>कुसुमाउह, कुसुमाउँह, कुसुमायुध>अव० कुसुमाउह।

कुहरा— पुं० (जल का अत्यन्त सूक्ष्म कण जो ठण्डक पाकर वायु की भाफ में जम जाता है। ये जल-कण घास पर पड़ कर बूंदों के रूप में दिखाई देते हैं)–सं० कुहेडिका। सिं० कोहीड़ो, उर्दू कोहरा, ओ० कुहुडी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुहासा—पुं० (कुहरा, कुहेसा)– सं० कुज्झटि>कुहासा। भो० कुहेसा।

कूँचा—पुं० (झाड़ू)–सं० कूर्च>प्रा० कुच्च>कूँचा।

कूँड़ा—पुं० (पानी रखने के लिए काठ या मिट्टी का बड़ा और गहरा पात्र)– सं० कुण्ड>प्रा० कुंड>कूँड>कूँडा।

कूँडी[1]—स्त्री० (मिट्टी या कंकड़-पत्थर का बना पात्र)–सं० पा० कुण्डिका> प्रा० कुंडिया>अप० कुंडी>कूँडी।

कूँडी[1]—स्त्री० (एण्डुरी जिसे सिर पर रखकर स्त्रियाँ घड़ा उठाती हैं)– सं० कुण्डली>प्रा० कुंडली>कूँडी।

कूकना— क्रि० (कोयल या मोर का बोलना)–सं० कूजन>प्रा० कुक्कई> हिं० कूकना।

कूकर, कूकुरा—पुं० (कुत्ता)–सं० पा० प्रा० कुक्कुर>अवधी कूकुर, कुकर।

कूच—पुं० (पतझड़ के बाद महुए के पेड़ की टहनियों से निकलने वाला कलियों का गुच्छा)–सं० कूर्च, कुर्चक, कूर्चिका >प्रा० कुच्च, कुच्चय>हिं० कूच।

कूची—स्त्री० (कूँची, कूचिका)– सं० कुर्चिका>प्रा० कुच्चिआ>कूची।

कूटक—पुं० (उपहास, झूठा, छलिया)– सं० पा० कूट>प्रा० कूड>हिं कूटक।

कूटना— क्रि० (चूर्ण बनाना, टुकड़े करना, पीटना, कुचलना)– सं० कुट्टन (कुट्ट–काटना) >प्रा० कुट्टण>अप० कुट्ट>हिं० कूट+ना। तुल० पं० कुटणा, सिं० कुटणु, म० कुटणें। गु० कुटवुं।

कूद— स्त्री० (कूदने की क्रिया या भाव)–सं० कुर्द>कूद।

कूदना—क्रि० (किसी ऊँचे स्थान से नीचे स्थान की ओर एकबारगी तथा बिना किसी सहारे के उतरना)–सं० कूर्दन> भो० कूदल। तुल० पं० कूदणा, राज० कूदणो, गु० कूदवुं।

कूला—पुं० (छोटी नहर, नाला)– सं० कुल्या>प्रा० कुल्ला>हिं० कूला, स्त्री० कुलिया।

कैंच—स्त्री० (कैंच की बेल, इसकी फली को स्पर्श करने से खुजली मचती है)– सं० कपिकच्छु।

कें-कें—स्त्री०(कें कें ध्वनि करना)–सं० कै (भ्वा० पर०, कायति) >प्रा० केंकाय। त० कोकरि।

केंचुवा— पुं० (पृथ्वी पर रेंगने वाला कीट, भूनाग, गेंडुआ)–सं० किंचुलुक। तुल० बं० केँचो, अस० केँचु, ओ० केंचुअ।

केँचुल—स्त्री० (केँचुली, सर्प आदि के शरीर पर की खोल जो प्रतिवर्ष आपसे आप पृथक् होकर गिर जाती है)– सं० कञ्चुक>प्रा० कंचुअ>केँचुल।

के[1]—कारक का चिह्न (सम्बन्ध सूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप)– सं० कृते>प्रा० केर (संबन्धी वस्तु)> हिं० के।

के[2]—प्रा० प्र०, सर्व० (कौन)–सं० कः >भो० के।

केकड़ा— पुं० (पानी का एक कीड़ा जिसे आठ टाँगे और दो पंजे होते हैं)– सं० कर्कट>पा० ककट>प्रा० कक्कड >केकड़ा, केकरा।

केता— वि० (कितना)–सं० कियत्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भो० केतेक, केतना।

केला— पुं० (एक पेड़, कदली)–सं० कदलकः>पा० कंदलि>प्रा० कयल> भो० छ० केरा, हिं० केला। तुल० पं० उर्दू केला, कश्मी० केलूँ, सिं० केलो।

केली— स्त्री० (केरी, एक वृक्ष)–सं० कदलिका>प्रा० कयलिया>कइली> हिं० केली।

केवट—पुं० (मछियारा)–सं० कैवर्त> पा० प्रा० केवट्ट > कइवट्ट > हिं० केवट। भो० खेवट, सिं० केवुळा।

केवड़ा—पुं० (एक फूल का नाम)–सं० केतक। तुल० राज० केवड़ो।

केवाँच, केवाँछ—स्त्री० (एक लता का फल जिसके स्पर्श करने पर देह में खुजली हो जाती है, कैंच की फली)–सं० कपिकच्छु> पा० कइअच्छ> केआँछ, केवाँछ।

केवाड़, किवाड़—पुं० (दरवाजा)–सं० कपाट>प्रा० कवाड>केवाड़।

केवाड़ा—पुं० (किवाड़)–सं० कपाटक >प्रा० कवाडअ>केवाड़ा।

केस, केसू—पुं० (ढाक, टेसू, पलाश)– सं० किंशुक।

केहरि, केहरी—पुं० (सिंह)–सं० केसरिन्>केसरी>केहरी, केहरि।

कैंची— (कतरनी, कतरने का एक औजार)– तु० क़ैंची। तुल० सिं० ओ० पं० कैंची।

कैथ[1]—पुं० (एक कँटीला पेड़ जो बेल के वृक्ष के समान होता है)– सं० पा० कपित्थ>प्रा० कइत्थ, केथ, कैथ, कैथा >हिं० कैथ। भो० कइँत, सिं० कविंदु।

कैथ[2]—क्रि० (पीड़ित करना)– सं० कदर्थ>प्रा० कयत्थ>हिं० कैथ।

कैद— स्त्री० (बंधन, अवरोध, कारावास)–अ० क़ैद। तुल० राज० कैद।

कैसा—वि० (किस प्रकार का)– सं० कीदृश> प्रा० कीइस > हिं० कैसो, कैसा। तुल० पं० किव्वें, कश्मी० किथुँ, सिं० कीअँ।

कैसे—क्रि० वि० (किस प्रकार से)–सं० कस्मात्>प्रा० कीस>कैसे।

कोंपल— स्त्री० (कोंप, अंकुर, छोटी और मुलायम पत्ती)–सं० कुड्मल>पा० कुंपल, हिं० कोंपल। गु० कोंपल, म० कोंभ, कोंब।

को[1]— विभ० (कर्म और सम्प्रदान कारकों की विभक्ति का चिह्न)– सं० कक्षं>प्रा० कक्ख>काखं>काहं>कहुँ कौं, को।

को[2]—सर्व० (कौन)–सं० कः>पा० को (का–स्त्री०)।

कोई— सर्व० (दो या दो से अधिक वस्तुओं, व्यक्तिओं में से ऐसी वस्तु या व्यक्ति, जिसका निश्चित परिज्ञान न हो)– सं० कोऽपि>पा० कोपि>प्रा० कोवि>अप० कोइ>हिं० कोई।

कोउ—स्था० प्र०, सर्व० (कोई)–सं० कोऽपि>प्रा० कोवि>कोव>कोउ।

कोख—पुं० (उदर, पेट)–सं० कुक्षि> प्रा० कुक्खि>अप० कुक्ख, कोक्खि> हिं० कोख। गु० पं० कुक्ख, म० कूस, सिं० कुक्कि।

कोठरी— स्त्री० (तंग कोठा, छोटा कमरा)–सं० कोष्ठिका>प्रा० कोट्ठिया

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>हिं० कोठरी।

कोठा— पुं० (ऊपरी मंजिल पर बना हुआ बड़ा कमरा)–सं० कोष्ठक>पा० कोठो, कोट्ठ > प्रा० कोट्ठअ> हिं० कोठा। ओ० म० कोठा, पं० कोठ्ठा, सिंह० कोटुव, कोठ।

कोठार—पुं० (अन्न, धन आदि रखने का स्थान)– सं० कोष्ठागार >प्रा० कोट्ठार, हिं० कोठार, अवधी कोठार्।

कोठारी—पुं० (कोठार या भंडार का अधिकारी, भंडारी)– सं० कोष्ठागारिक >पा० कोट्ठागारिक>प्रा० कोट्ठाआरिअ >हिं० कोठारी।

कोठी— स्त्री० (अनाज रखने का कुठला)–सं० कोष्ठी>पा० प्रा० कोट्ठी (पुं० कोट्ठ)। पं० कोठ्ठी, ओ० गु०, म० सिं० कोठी।

कोड़ि—वि० (करोड़, संख्या विशेष)– सं० कोटि>प्रा० कोडि>हिं० कोड़ि।

कोडी—वि० (बीस के समुदाय के लिए प्रयुक्त)– कोल भाषा से गृहीत। तुल० ते०-तुलु कोड़ी (संकेत, समाप्ति) (द्र० ए० डि०)।

कोढ़—पुं० (एक प्रकार का रक्त और त्वचा सम्बन्धी संक्रामक रोग)– सं० कुष्ठि>प्रा० कोड्ढ>हिं० कोढ़। तुल० पं० कोढ़, सिं० कोढु, गु० कोढ, बं० कुष्ठ।

कोढ़ी—पुं०(वह जो कोढ़ रोग से पीड़ित हो)– सं० कुष्ठित>प्रा० कोढिय> कोढ़ी।

कोतवाल— पुं० (नगर रक्षक)– सं० कोष्ठपाल > प्रा० कोट्टवाल>हिं० कोतवाल। फ़ा० कोत्वाल्।

कोदों— पुं० (एक तरह का धान, कोदरा, कोदई)–सं० कोद्रव>कुद्रव।

कोयण—पुं० (आँख का कोना, कोया)– सं० कोण>पा० कोण (कोना)>हिं० कोयण।

कोयल—स्त्री० (कोकिला)–सं० कोकिल >प्रा० अप० कोइल, हिं० कोयल, भो० कोइलर, सिंह० कोवुला।

कोराँ—पुं० (कोना)–सं० कोटि>हिं० कोर।

कोरा—पुं० (गोद)–सं० क्रोड़>प्रा० कोड>भो० कोरा।

कोरि—क्रि० (कोर को ठीक करना, नग के कोने आदि घिसना)– सं० कोटि (नोक, सिरा)>हिं० कोर>पूर्वकालिक क्रिया कोरि।

कोस— पुं० (दूरी की एक नाप जो आजकल दो मील की होती है, चौथाई योजन)–सं० क्रोश>प्रा० कोस।

कोसना—क्रि० (सरापना, सताये जाने पर किसी की अशुभ कामना करना)–सं० क्रोशन।

कोहँडा— पुं० (कुष्माण्डी फल, एक फल विशेष)–सं० कूष्माण्ड>प्रा० कोहंड >हिं० कोहँडा। गु० कोहलुं, सिंह० कोमडु।

कोहबर— पुं० (वह घर या कमरा जिसमें विवाह के समय कुल-देवता की स्थापना और कुछ रस्में अदा की जाती है)–सं० कौतुक-अपवरक> कोहबर।

कोहा[1]— पुं० (पेट)– सं० कुक्ष, हिं० कोख, कोखा।

Satya Vrat Shastri Collection

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोहा[२]—प्रा० प्र०, पुं० (ईख का रस, काँजी आदि रखने का बड़ा पात्र)–सं० कोश>भो० कोहा (मिट्टी का बड़ा कटोरा)।

कोही[१]—वि० (पहाड़ी)–फ़ा० कोह।

कोही[२]—वि० (क्रोधी)–सं० क्रोधिन्> पा० कोधन (kodhana)(४) प्रा० कोहि >कोही।

कौंडर—पुं० (लोहे का मोटा, गोल और बड़ा छल्ला)– सं० कुण्डल>प्रा० कुंडल>कौंडर।

कौआ—पुं० (काले रंग का एक पक्षी)– सं० काक> प्रा० काक, काग>काव> काउअ>कौअ>हिं० कौआ।

कौड़ी—स्त्री० (समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह एक अस्थिकोश के अन्दर रहता है, उक्त कीड़े का अस्थिकोश)– सं० कर्पादिका>कपड्डिका> प्रा० कवड्डिया> अप० कवड्डिय>कौड़ी। म० कवडा, भो० कउडी, सिंह० कवडिय।

कौन—सर्व० (एक प्रश्न वाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है)–सं० कः पुनः>प्रा० कवण>अप० कवन, अव० कमण (की०)>हिं० कौन। तुल० भो० कवनो कावना, गु० कोण, पं० कौण, म० कोण, अस० कोन, छ० कउन।

कौर—पुं० (ग्रास, गस्सा, जितना भोजन एक बार मुँह में डाला जाए)–सं० कवल >कउल>कउर>कौर।

कौरा— स्था० प्र०, पुं० (दरवाजे के इधर-उधर के वे भाग जिनसे खुले हुए किवाड़ों का पिछला भाग सटा रहता है)–सं० कोल, क्रोड।

कौवा—पुं० (काकलक, कागला, काग)– सं० काकलक>कउअ>कौआ।

कौसीस—(कंगूरा)–सं० कपिशीर्ष>प्रा० कविसीस>अव० कौसिस, कौसीस।

क्या— सर्व० (किसी बात या वस्तु को जानने, पूछने के लिए प्रयुक्त प्रश्नवाचक सर्वनाम)– सं० किम्>प्रा० कीअस। बं०, म० काय।

क्यारा— पुं० (मेड़ों से बनाये हुए विभाग जिनमें बीज बोये या पौधे लगाये जाते हैं)–सं० केदार+क>पा० केदार (kedāra)(४) > प्रा० केआरअ> क्यारा।

क्यारी—स्त्री० (कियारी)–सं० केदारिका > प्रा० केआरिआ > भो० कियारी।

क्यों—अव्य० (किस अभिप्राय, उद्देश्य या प्रयोजन से)–सं० किं पुनः>किंपुनो किंवुओं। तुल० बं० केनों, कश्मी० कवुं।

क्लेसु— पुं० (मानसिक दुःख)– सं० क्लेशः>अवधी क्लेसु।

क्वारी— स्त्री० (अविवाहित कन्या)– सं० प्रा० कुमारी>हिं० क्वारी। ओ० कुआँरी।

क्षोणी— स्त्री० (पृथ्वी, धरणी)–सं० क्षोणि, क्षोणी> प्रा० अप० खोणि, खोणि (की०)।

ख

खंगर(५)—पुं० (अधिक पकने के कारण परस्पर सटी हुई ईंटों का चक, एक साथ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिपकी और पकी हुई ईंटें या उनके टुकड़े, शुष्क; दुबला, खुरदरा)–सं० कक्खट < पा० कक्खळ < (वि०, खुरदरा) प्रा० कक्खड > हिं० खाँकड़, खंगर। (टर्नर' शब्द संख्या २५८७) तुल० सिं० खछरु, म० खेचर, गु० बं० अस० खच्चर।

खंडहर—पुं० (किसी टूटे-फूटे या गिरे हुए भवन का बचा हुआ भाग)–सं० खंडगृह > पा० खण्डघर > प्रा० खंडघर < हिं० खंडहर।

खंडवा[1]—पुं० (वर्षादि से बचने के लिए सिर पर जाने वाला कम्बल या कोई कपड़ा, धोती, पगड़ी)–तें० कण्डुआ > हिं० खंडवा, ह० खंडुआ। सं० स्कन्धवस्त्र।

खंता—(कुदाल, फावड़ा)–सं० खनित्र > प्रा० खणित्त > हिं० खंता।

खंभा—पुं० (ईंट, पत्थर, लोहे आदि को बनी हुई गोल या चौकोर रचना जिस पर छत आदि टिकी रहती है; स्तम्भ)–सं० स्कम्भ > प्रा० खंभ > अप० खम्भो (हे०) > अप० खम्भ > हिं० खंभा, खाँभ, छ० खाम, खँम्हा; प्रा० हिं० खम्हाँ। तुल० पं० थम्ह, कश्मी० थम; सिं० थंभो, गु० म० खांब, गु० थांभलो, बं० थाम, ओ० खम्ब।

खँगालना— क्रि० (हलका या थोड़ा धोना)–सं० क्षालनम् (√क्षल्) > प्रा० खालण > हिं० खँगालना।

खँड़साल—स्त्री० (खाँड या शक्कर बनाने का कारखाना)—सं० खंड + शाला, प्रा० खंडसाला, खँडसाल > हिं० खँड़साल।

खँडोई—स्त्री० (चासनी)–सं० खण्डवती > खण्डउइ > खँडोई।

खँधार—पुं० (सेना का निवास स्थान)–सं स्कन्धावार > पा० खन्धावार > प्रा० खंधावार, खंधाआर > खँधार, खँधारु।

खँभार—स्था० प्र०, पुं० (आशंका, चिन्ता, शोक)–सं क्षोभ > प्रा० खोभ > खँभार।

खई— स्था० प्र०, स्त्री० (क्षयकारिणी क्रिया– सं० क्षयी > पा० खय > प्रा० खइअ > हिं० खई।

खए[1]—पुं० (विनाश)–सं० क्षय > पा० प्रा० अप० खय।

खए[2]— पुं० (व्योम)–सं० खः > प्रा० खे > खए।

खगहा—पुं० (गैंडा)–सं० खड्गहा > प्रा० खग्गहा > अवधी खगहा।

खचना—क्रि० (जड़ा जाना, बाँधना, अटकना, फँसना)–सं० खच् > प्रा० खच > हिं० खच + ना।

खच्चर—पुं० (गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु)–तु० खच्चर। तुल० गु० उर्दू अस० पं० खच्चर, सिं० खचरु (खच्चरु), म० खेचर।

खजहजा—पुं० (खाने योग्य उत्तम फल या मेवा)–सं० खाद्याद्य > पा० प्रा० खज्जज्ज > अप खजहज्ज > खजहजा।

खजाना — पुं० (धनागार) – अ० खजानः।

खजूर—पुं० (एक प्रकार का पेड़ जो गरम देशों, समुद्र के किनारों या रेतीले मैदानों में होता है)–सं० खर्जूर > पा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खज्जूरी (स्त्री०) >प्रा० खज्जूर>हिं० खजूर। तुल० सिं० खजूरी, ओ० खजुरी, बं०, खाजूर, गु० म० खजूर।

खटतार—पुं० (लकड़ी का एक बाजा)–सं० काष्ठताल>प्रा० कट्ठताल >हिं० खटतार।

खटपाटी—स्त्री० (खाट की पाटी)–सं० खट्वापट्टिका>प्रा० खट्टापट्टिया, खटपाटी, खटवाटी, खटबाट् (अंसलपाटी)।

खटीक—पुं० (शूद्र वर्ग की जाति)–सं० खट्टिक> प्रा० खट्टिक्क>खटिक, खटीक।

खटोला—पुं० (छोटी खाट)–सं० खट्वा >प्रा० खट्टा > हिं० खाट + ओला (प्र), खटोला।

खट्टा—वि० (कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का)–सं० कटु>प्रा० खट्ट> हिं० खट्टा।

खड़कना—क्रि० (खटकना, खड़खड़ाना, खड़खड़ की ध्वनि उत्पन्न करना)–सं० खटखटायते>पा० खटखट, प्रा० खडखड >हिं० खड़खड़, खड़खड़ाना।

खड़का—पुं० (खटका, डर, आशंका, 'खट खट' शब्द)–सं० खटत्कार>प्रा० खडक्कार>हिं० खड़का, ह० खड्का।

खड़ाऊँ—स्त्री० (पादुका)>–सं० काष्ठ पादुका>प्रा० कट्ठ पाउआ>कठाउआ >खडाउआ>खड़ाऊ>खड़ाऊँ।

खड़िया—स्त्री० (एक प्रकार की सफेद मिट्टी या पत्थर की जाति का एक बहुत मुलायम सफेद पदार्थ)–सं खटिका> प्रा० खडिआ>खडिया>खड़िया। तुल० उर्दू खडिया; म० खडू, दे० खड़ि (खोड़ि) ओ० खड़ि (खाँड़ि)।

खड्ढा, खड्डा—पुं० (गड्ढा, बहुत बड़ी रगड़ के कारण पड़ा हुआ चिह्न)–सं० खात>पा० खात (खोदा हुआ)>प्रा० खाअ, खड्डा>अप० खड्डा (दे० ना० मा०)>हिं० खड्ढ़ा, खड्डा। सिं० खडा, गु० खाड, पं० खड्ड, म० खड्डा।

खता[1]—स्त्री० (अपराध)–अ० खता।

खता[2]—पुं० (घाव)–सं० क्षत>प्रा० खय।

खत्ता—पुं० (गड्ढ़ा, अनाज रखने का स्थान)–सं० खात>प्रा० खाअ, हिं० खत्ता।

खन—स्था० प्र०, पुं० (समय का बहुत छोटा भाग)–सं० क्षण>पा० खणेन> प्रा० अप० खणे>अव० खने>खन, छ० खनी।

खनखना—क्रि० (खनखनाना, खनखन का शब्द होना)–सं० खणखणाय, खण-खणायते>प्रा० खणखणखण, खणक्खण >हिं० खनकना।

खनना—क्रि० (खोदना)–सं० खननम्> पा० खणन>प्रा० खणन>हिं० खनना, छ० खन।

खपना—क्रि० (क्षय होना, नष्ट होना)–सं० क्षपण, प्रा० खपण>हिं० खपना।

खपरिया—पुं० (हाथ में खप्पर रखने वाले भिक्षुओं का एक वर्ग जिसे 'खेवरा' भी कहते हैं)–सं० कार्पटिक> प्रा० कप्पडिअ (पाइअ०)>खप्पडिअ> खपडिआ>खपरिया।

खप्पर[1]— पुं० (तसले के आकार का मिट्टी का पात्र, काली देवी का वह पात्र जिसमें वह रुधिर पान करती है)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खर्पर > प्रा० खप्पर > हिं० खप्पर । गु० खापड़ू, ओ० खपरा, बं० खाप्रा ।

खप्पर[2]—पुं० (खोपड़ी)–सं० कर्पर > प्रा० कप्पर > खप्पर ।

खबर—स्त्री० (समाचार)–अ० खबर ।

खबीस—पुं० (वह जो दुष्ट और भयंकर हो)–अ० खबीस ।

खमाल—पुं० (जंगली खजूर के हरे फल जो चौपायों को खिलाये जाते हैं)–फ़ा० खमालियून ।

खर[1]—स्त्री० (सरसों में से तेल पेरने के बाद शेष वस्तु)–सं० खलि > हिं० खरी, खर, छ० खरी ।

खर[2]—वि० (करारा, कुरकुरा)–सं० खर (तेज) > प्रा० खर (कठोर)

खर-खर—स्त्री० (खड़कने या खरखराने की आवाज)–सं० खरखराय् > प्रा० खर-हर > हिं० खर-खर ।

खरखराना—क्रि० (खर-खर की ध्वनि उत्पन्न करना)–सं० खरटखरटा > हिं० खरखर, खरखराना ।

खरब—पुं० (सौ अरब की संख्या)–सं० खर्व ।

खरहरा—पुं० (झँखरा, रहठे या अरहर की डंठलों से बना हुआ झाड़ू, एक चौकोर छोटी पटरी जिसमें धातु-निर्मित छोटे दाँतों की कंघिया जड़ी रहती हैं)–अ० खराखरा ।

खराऊँ—स्त्री० (खड़ाऊँ, पादुका)–सं० काष्ठपादुका > पा० कट्ठपादुका > प्रा० कट्ठपाउआ (पाइअ०) > खडाउआ > हिं० खराऊँ । ओ० खराउ, म० खडावा ।

खर्राटा—पुं० (सोते समय मुंह से जोर-जोर से सांस लेने पर होने वाला खर-खर का शब्द)–सं० खरखराय > प्रा० खरहर ।

खरोष्ठी—स्त्री० (एक प्रकार की लिपि जो दायें से बायें लिखी जाती है)–सं० अक्षरपृष्ठिका > प्रा० अक्खरपुट्ठिआ > अखरोष्ठिआ > खरोष्ठिआ > खरोष्ठी ।

खलखलाना—क्रि० (खलखल की ध्वनि करना या होना)–सं० खलखलायते > प्रा० खलक्खल् > हिं० खलखल, खल-खलाना ।

खलिहान—पुं० (खलियान)–सं० खल-धान्य > प्रा० खलधन्न खरिहान > हिं० खलिहान, छ० खरिहार ।

खसखस—स्त्री० (पोस्ते का दाना या बीज)–सं० खस्खस > प्रा० खसखस, हिं० खसखस ।

खसखसा—वि० (भुरभुरा, करारा, जरा से आघात से टूट जाने वाला)–फ़ा० खशखश ।

खस्सी—वि० (जिसके अंडकोश कुचल दिये गये हों, वधिया किया हुआ पशु)–अ० खशी > खस्सी ।

खांडइ—स्त्री० (खड्ग)–सं० खड्ग > खड्ग > खण्ड + अ > खांडा । तुल० ते० खड्गमु, क० खड्ग ।

खांस–क्रि० (खाँसन)–सं० कास् > प्रा० खास > हिं० खांस, खांसना ।

खांसी—स्त्री० (रोग-विशेष)–सं० कासित > प्रा० खासिअ > हिं० खाँसी ।

खाँगा क्रि० (खाँगना, कम होना, घटना)–सं० क्षयंगत > खअंगत < खंगना, खाँगना ।

खाँगें—(कमी, पैर में घाव हो जाने के कारण चलने में असमर्थ होना)–सं क्षतांग (अंग में कमी होना) > खआँगे > अवधी खाँगे ।

खाँचना—क्रि० (खींचना, अंकित करना)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० कर्षण (√कृष्) >प्रा० कड्ढण> अप० कड्ढइ>हिं० खाँचना।

खाँड — स्त्री० (बिना साफ की हुई चीनी)–सं० खण्ड >खाँड।

खाँडसारी—स्त्री० (खाँड़ की बनी हुई शर्करा)– सं० खण्डशर्करिका > खाँड-सारी।

खाँड़ा—पुं० (खड्ग, तलवार)–सं० खड्ग >प्रा० खण्डइ, खाँडा। तुल० बं० खाँरा, पं० खण्डा, म० खांडा, गु० खांडु।

खाँवा—पुं० (मिट्टी की चहार दीवारी, अधिक चौड़ी खाई)–सं० स्कन्ध+क> प्रा० खन्धअ>खाँधा>खाँहा>खाँआ> >हिं० खाँवा।

खाँसना—क्रि० (खाँसी आना)–सं० कास् >प्रा० खास>हिं० खाँस+ना।

खाई—स्त्री० (परिखा, युद्ध क्षेत्र में खोदे जाने वाले लम्बे गड्ढे)–सं० खाति>पा० खाअ, प्रा० खाइआ, अप० खाइआ (दे० ना० मा०)>अप० खाइ (प्र० चि०)> हिं० खाई। तुल० बं० ओ० खाइ, सिं० खाही, गु० म० खाई।

खाऊ—वि० (बहुत खाने वाला, पेटू)– सं० खादितृक>खाइउओ>खाऊ।

खाज[1]—स्त्री० (खुजली)–सं० खर्जू> पा० प्रा० खज्जू>खाजु, खाज। तुल० पं० खुरक, खुजली; उर्दू खाज, सिं० खारिसि, म० खरूज, अस० खजुबति (खोजुवोति)।

खाज[1]—पुं० (खाद्य, चुग्गा)–सं० खाद्य >प्रा० खज्ज>हिं० खाज।

खाजा—पुं० (खाद्य पदार्थ)–सं० खाद्यक >पा० खज्ज>प्रा० खज्जय> हिं० खाजा। ओ० खजा, बं० खाजा।

खाझ—पुं० (वृक्ष विशेष)–सं० खर्जुर> प्रा० खज्ज>खाज, खाझ।

खाट — स्त्री० (चारपाई, खटिया) – सं० खट्वा > प्रा० खट्टा>अप० खट्ट (प० च०)>हिं० खाट। तुल० उ० खाट, सिं० खट (खट्ट), गु० खाटलो(खाट्लो), ओ० खट (खाँटाँ)।

खाडा—पुं० (एक प्रकार की तलवार)– सं० खड्ग>प्रा०खग्ग>पु० हिं० खाडा।

खाद—स्त्री० (पाँस, वह पदार्थ जो खेत में उपजाऊ-शक्ति बढ़ाने के लिए डाला जाता है)–सं० पा० खात>प्रा० खाअ। हिं० खाद। बं० खात, ओ० खात।

खादर—स्त्री० (नदी के किनारों के पास की भूमि, जहाँ बाढ़ का पानी भर जाता है)–सं० खातवर>खात्तर > खाद्दर> खादर।

खाधुक—पुं० (बहुत खाने वाला)–सं० खादुक>खाधुक।

खान[1]—स्त्री० (खनि, आकार, खदान)– सं० खानि(खन्=खोदना)>प्रा० खाणि >हिं० खान। गु० म० खाण।

खान[2] — पुं० (सरदार, पठानों की उपाधि)–तु० खान।

खान, खाना — स्त्री० (घर, 'खाना' स्थानवाची प्र०) फ़ा० खानः।

खाना — क्रि० (भक्षण करना) – सं० खादन>पा० खाअन>प्रा० खाण, खाअ, खाअइ, खा, हिं० खाना। छ० खा०।

खार[1]—पुं० (रेह,कल्लर)–सं० क्षार> पा० प्रा० खार। सिं० खार, गु० खार।

खार[2]—पुं० (काँटा, द्वेष)–फ़ा खार।

खाल — स्त्री० (चमड़ा, त्वचा)–सं० खल्ल>पा० खल्ल>प्रा० खल्ला>हिं० खाल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खासा — वि० (अच्छा, स्वस्थ)–अ० खासा।

खिचना — क्रि० (आकृष्ट होना)–सं० कर्षण (√कृष्)>प्रा० कड्ढण>हिं० खिचना।

खिचड़ी—स्त्री० (खिचड़ी)–सं० कृशर >प्रा० किसर, प्रा० खिच्च (पाइअ०) >हिं० खिचड़ी। बं० खिचरी, पं० खिचर, गु० खिच, म० खिचडी।

खिजना—क्रि० (नाराज़ होना, खीझना)–सं० खिद्यते > प्रा० खिज्जअ > हिं० खिजना, खिझना। गु० खिजवूँ, सिं० खिजनु।

खिजखिज—क्रि० (खीझना)–सं० खिद्य >प्रा० खिज्ज> छ० खिजखिज।

खिड़की— स्त्री० (छोटा द्वारा)– सं० खटक्किका> प्रा० खडक्किआ>अप० खडक्की(दे० ना० मा०) >हिं० खिड़की खिरकी। ते० किटिकी, ओ० खिरिकी, बं० खिरकी।

खिरनी—स्त्री० (एक फल और उसके पेड़ का नाम)–सं० क्षीरणी > प्रा० खीरिणी>हिं० खिरनी।

खिरिसा — स्त्री० (एक प्रकार की मिठाई) — सं० क्षीर शर्करा > प्रा० खीरसक्करा>हिं० खिरसा, खिरिसा।

खिरौरा—पुं० (कत्थे की टिकिया)–सं० खदिरवटक>खइरवडअ>खइरउरअ >खिरौरा, स्त्री० खिरौरी।

खिलौना—पुं० (काठ, मिट्टी, कपड़े आदि की बनी हुई कोई वस्तु जिससे बालक खेलते हैं)–सं० खेलनक>प्रा० खेडणअ, खेलणय, खिल्लण > खिलौन, खेलोना।

खिल्ली — स्त्री० (उपहास, ठट्ठा, मजाक)–प्रा० खेल्लिअ>हिं० खिल्ली।

खीझ—स्त्री० (अप्रसन्नता, नाराज़गी)–सं० खिद्यते >प्रा०खिज्जइ > खीजइ >खीझइ।

खीर—स्त्री० (दूध में पकाया हुआ चावल, दूध)–सं० क्षीर>पा० प्रा० खीर>हिं० खीर। सिं० खीरु, ॰ खीरी।

१-खीस[१]—स्त्री० (दाँत जिन्हें कील कहते हैं)–फ़ा० खीस (हल में लगने वाली फाली, कील या नुकीली शंकु)> खीस।

२-खीस — वि० (बरबाद, नष्ट)–सं० कृशयति>किस्सइ > खिस्सइ>खीस। अथवा सं० किष्क।

खीसा[१] — पुं० (जेब, थैला)–फ़ा० कीसह्।

खुआरू—वि०(दुर्दशाग्रस्त, बदहाल) फ़ा० ख्वार>खुआर>अवधी खुआरू।

खुजली—स्त्री० (एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है)–सं० खर्जू>प्रा० खज्जू > खज्जुइ> खज्जुडी>खजुली >खुजली।

खुदा—पुं० (ईश्वर)–फ़ा० खुदा।

खुनस — स्त्री० (क्रोध, अप्रसन्नता)–सं० खिन्नमनस्>पा० खित्तमन>प्रा० खिण्णमण > प्रा० खणुसा (पाइअ०), अप० खणुसा (दे० ना० मा०)>खणुस >खुणस, हिं० खुनस, खुन्नस, अवधी खुनिस।

खुर—पुं० (सींग वाले चौपायों के पैर का निचला छोर, टाप)–सं० क्षुर>पा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० हिं० खुर।

खुरपा—पुं० (लोहे का बना छोटा सा औजार)–सं० क्षुरप्र>प्रा० अप० खुरप्प हिं० खुरपा।

खुरहरी (पद०)–पुं० (एक प्रकार का फलदार वृक्ष जिसे खेनन घूईं आदि भी कहते हैं)–सं० क्षुद्रफली>खुद्दफली> खुरहरी।

खुराक—स्त्री० (भोजन)–फ़ा० ख़ुराक।

खुस-फुस — स्त्री० (खुस - फुस की आवाज़)–प्रा० घुग्घुस्सुसय>हिं० खुस-फुस। तुल० त० कुचुकुचुप, मल० कुसुकुसुक्क, क० कुस, कुसु; ते० गुसगुस।

खूँटा—पुं० (बड़ी मेख जिसको भूमि में गाड़कर उसमें किसी पशु को बाँधते हैं)–सं० क्षोड>प्रा० खोड (पाइअ०) अप० हिं० खूँटा (प्र० को०) गु०, खुँटो, म० खुंटा।

खूँदा—क्रि० (खूँदना, उछलना, कूदना)–सं० स्कुन्दति>खुंदइ।

खूझा[1]—वि० (छोटा)–सं० कुब्जक> प्रा० खुज्जय>खुज्ज>खूजा, खूझा।

खूझा[2]—पुं० (किसी फल आदि के अन्दर का वह रेशेदार भाग जो बेकार समझ कर फेंक दिया जाता है)–सं० गुह्य> प्रा० गुज्झ<खूझ।

खूद[1]—पुं० (गेहूँ के छोटे पौधे, गोधूम)–सं० क्षुद्र>प्रा० खुद्द>हिं० खूद।

खूद[2]—पुं० (तलछट, मैल)–सं० क्षुद्र> प्रा० खुद्द<हिं० खूद।

खेड़ा — पुं० (छोटा गाँव)– सं० खेटक>प्रा० खेडय>खेडअ>हिं० खेड़ा

खेत—पुं० (जोतने बोने की जमीन)–सं० क्षेत्र>पा० प्रा० खेत्त>खेत। तुल० खोत, कश्मी० खाह, गु० खेतर (खेतर्) बं० खेत (खेत्), म० खेत।

खेतिहर — पुं० (खेती करने वाला, किसान)–सं० क्षेत्रधर>प्रा० खेत्तहर >खेतिहर।

खेती—स्त्री० (कृषि)–सं० क्षेत्र>पा० खेत>हिं० खेत+ई (प्र०)।

खेना—क्रि० (नाव चलाना, गुजारना)–सं० क्षेपण>प्रा० खेवण>खेअन>हिं० खेना।

खेप—स्त्री० (उतनी वस्तु जितनी एक बार में ले जाई जाय)–सं० क्षेप्यः> क्खेप>हिं० खेप। ओ० खेप०, गु० म० खेप।

खेमकरी—स्त्री० (खैरी चील, यह शकुन-सूचक पक्षी माना जाता है)–सं० क्षेमकरी >प्रा० खेमकरी।

खेलना—क्रि० (क्रीड़ा करना)–सं० खेल् >प्रा० खेल्ल, खेल>अप० खेल्लण> अव० खेल्लइ<हिं० खेलना। पं० खेलणा बं० खेला।

खेवटिया—पुं० (मल्लाह, माँझी)–सं० कैवर्त + क> कइवट्टअ>खइवट्टअ> खेवट्टिय>खेवटिया।

खेवरा — (पद०) पुं० (क्षपणक, जैन साधू, बौद्ध भिक्षु)–सं० क्षपणक>प्रा० खवणय, खवणअ<खवड़ा>खइवड़ा> खेवड़ा, खेवरा।

खेवा — पुं० (मल्लाह)–सं० क्षेपक> प्रा० खेवय>खेवा।

खेवणी—स्त्री० (नाव की डाँउ) सं० क्षेपणी>प्रा० खेवणी।

खेविनहारा[1]—पुं० (नाव को खेने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाला)– सं० क्षेपणीधारक (नौकादण्डः क्षेपणी स्यात्, हेमचन्द्र ३/५४१) >प्रा० खेवणीधारग>हिं० खेविनारा ।

खेस—पुं० (करघे पर बना एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो ओढ़ने तथा बिछाने के काम आता है)– फ़ा० ख़ेश>हिं० खेस ।

खैड़ा— पुं० (नई उम्र का हिलावर बैल)–सं० उक्षतर>उक्खयर, उखइर, खइरअ>खैरा, खैड़ा (जनपदीय प्रयोग)।

खैर—पुं० (एक प्रकार का बबूल, सोनकीकर)– सं० खदिर>पा० खदिरो> प्रा० खईर, खइर, खाइरा>अप० खयर >हिं० खैर । गु० खेर, ओ० खाइर ।

खैरात—स्त्री०(दान, पुण्य)–अ० ख़ैरात।

खों-खों—पुं० (खाँसने का शब्द, बन्दरों के घुड़कने का शब्द)– प्रा० खोक्खा, खोखा (पाइअ०)>हिं० खों-खों ।

खोंड़ा—प्रा० प्र०, वि० (जिसका कोई अंग भंग हो, सदोष, अपूर्ण)–सं० खुण्ड ।

खोपा—पुं० (जूड़ा, बँधी हुई वेणी)– तमिल कोप्पु, कन्नड कोप्पु, कुइ भाषा कोप, कुर्कु भाषा खोपा । (द्र०ए०डि)

खोआ—पुं० (मावा, खोवा)–सं० क्षोद >प्रा० खोद>खोअ>खोआ ।

खोज—क्रि० (तलाश, शोध, पहचान)– सं० क्षोद्य>प्रा० खोज्ज>हिं० खोज ।

खोदना—क्रि० (किसी स्थान को गहरा करने के लिए वहाँ की मिट्टी आदि उखाड़ कर फेंकना)–सं० क्षोदन (√क्षुद्)> प्रा० खोदण> हिं० खोदना । तुल० कश्मी० खनुन्, सिं० खोटणु, म० खणणें, खोदणे, गु० कोदवुं ।

खोना—क्रि० (नष्ट करना, भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ आना)– सं० क्षेपण >प्रा० खेवण>हिं० खोना ।

खोपड़ा—(कपाल, सिर)–सं० कर्पर> प्रा० कप्पर, खप्पर, हिं० खोपड़ा ।

खोपड़ी—स्त्री० (सिर की हड्डी, कपाल, सिर)–सं० कर्परिका> प्रा० कप्परिआ, खवपरिआ>खउपरिआ> खोपरिआ> खोपरी>खोपड़ी ।

खोरि—स्त्री० (ऐब, दोष, नुक्स)–सं० खोर (पंगु, लगड़ा)>अप० खोडि (हे०) >हिं० खोरि ।

खोल—पुं० (ऊपर ले चढ़ा हुआ ढकना, गिलाफ, आवरण)–फ़ा० ख़ोल ।

ख्याल—पुं० (ध्यान)–अ० ख़याल ।

ग

गंग— स्त्री० (गंगा नदी)–सं० पा० गङ्गा>प्रा० गंग> अप० गङ्ग>हिं० गंग ।

गंज—स्त्री० (खान, खजाना, अनाज की मण्डी, ढेर)–सं० गञ्ज>हिं० गंज ।

गंजना—क्रि० (१- अवज्ञा करना, निरादर करना । २- पूरी तरह से परास्त करना)–सं० गञ्जन>प्रा० गंजण> हिं० गंजना ।

गंड—पुं० (कपोल, गाल, कनपटी)–सं० गण्ड>प्रा० गंड ।

गंडा[1]—पुं० (चीजें गिनने में चार का समूह)–सं० गण्डक>प्रा० गंडअ>अव० गण्डअ>हिं० गंडा ।

गंडा[2]—पुं० (गाँठ)–सं० गण्डक ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गंद—स्त्री० (मलिनता, दुर्गंध, गँदलापन)–फ़ा० गंद।

गंदगी—स्त्री० (मैलापन, अपवित्रता)–फ़ा० गंदगी।

गंदुमी—वि० (गेहूँ या उसके आटे का बना हुआ, २- गेहुँआ, गेहूँ के रंग का)–फ़ा० गंदुम।

गंदोलन—क्रि० (किसी चीज विशेषतः पानी को गन्दा करना)–फ़ा० आलुदहे (करदन) > गंदह्।

गंध—स्त्री० (महक, वास)–सं० गन्ध > प्रा० गंध > हिं० गंध। गु० गंधावूँ।

गँठजोरा—पुं० (गाँठ का बाँधना)–सं० ग्रन्थियोग > पा० गण्ठियोग > प्रा० गण्ठिजोड > हिं० गँठजोरा।

गँडेरी—स्त्री० (ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा)–सं० गण्डिका > प्रा० गंडिया > गंडीरी (पाइअ०) > अप० गंडीरी, गंडेरी (दे० ना० मा०) > हिं० गँडेरी।

गँवई[1]—वि० (गाँव का मनुष्य, गँवार)–सं० ग्रामेयिक > पा० गामिक > प्रा० गांवेइय > गँवेई > गँवई।

गँवई[2]—स्त्री० (छोटा गाँव)–सं० ग्रामक > पा० गामक > प्रा० गामड > हिं० गँवई।

गँवार—वि० (ग्रामीण, असभ्य, मूर्ख, अनाड़ी)–सं० ग्राम्य > गराम्म > गराम > प्रा० गमार, गवार > हिं० गँवार।

गअ—पुं० हिं०, पुं० (हाथी)–सं० पा० गज > प्रा० गय, गअ।

गआ—वि० (गया हुआ, गुजरा हुआ, मरा हुआ)–सं० पा० गत > प्रा० अप० गअ, गय। अव० गआ।

गई[1]— (की०) स्त्री० (लोकान्तर में गमन या स्वर्ग-प्राप्ति)– सं० गति > प्रा० गइ > अव० गई।

गई करना—क्रि० (जाने देना, ध्यान न देना, छोड़ देना)–सं० गति, प्रा० गइ।

गउअ (पद०)—स्त्री० (गाय)–सं० गो, वै० सं० गवय (नील गाय) > पा० गव > प्रा० गउअ > गउव।

गग-गग—वि० (गग-गग की आवाज वाला)–सं० गद्गद ∧ प्रा० गग्गर > हिं० गग-गग।

गगरा—पुं० (कलसा, बड़ा घड़ा)–सं० गर्गर > पा० गग्गरो > प्रा० गग्गरी > हिं० गगरा। ओ० गागरा, गु० गागर।

गगरी—स्त्री० (मटकी, छोटा घड़ा)–सं० गर्गरी > प्रा० गग्गरी > हिं० गगरी।

गच—पुं० (चूने आदि से बनाया हुआ पक्का फर्श)–फ़ा० गच > अवधी गच।

गछना—क्रि० (चलना, जाना)–सं० गम > प्रा० गच्छ > हिं० गछना।

गजंद—पु० हिं०, पुं० (गजेंद्र, ऐरावत, बड़ा हाथी)–सं० गजेन्द्र > प्रा० गयंद, गइंद।

गजर—पुं० (पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द)–सं० गर्ज > पा० प्रा० गज्ज > हिं० गजर।

गजरभत—पुं० (गजरभत्ता, गाजर के टुकड़ों को मिलाकर उबाला हुआ चावल)– सं० गर्जर + भक्त > प्रा० गज्जरभत्त > हिं० गजरभत।

गज्जूह★—पुं० (हाथियों का झुण्ड)–सं० गज + व्यूह > प्रा० गय + वूह (पाइअ०) > गज्जूह।

गटना, गठना— क्रि० (गँठना, बंधन)–सं० ग्रन्थन > प्रा० गंठण।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गटी—(जा०) स्त्री० (गाँठ)–सं० ग्रन्थि >पा० गण्ठि>गंठि>गटी।

गट्ठा— पुं० (बड़ी गठरी, गट्ठर)–सं० ग्रन्थ >प्रा० गट्ठ>हिं० गट्ठा। पं० गट्ठा।

गठरी—स्त्री० (कपड़े में गाँठ लगाकर बाँधा हुआ सामान)–सं० ग्रन्थि >प्रा० गंठ > गण्ठडी>हिं० गठडी, गठड्डी, गठरी।

गठीला—वि० (गाँठ वाला, जिसमें बहुत सी गाँठें हों)– सं० ग्रन्थिमत्>प्रा० गंठिल्ल > गँठीला>गठीला।

गठुला—पुं० (अँगूठे का गहना)– सं० अंगुस्थल+क (पृथ्वीचंद्रचरित्त अथवा वाग्विलास, पृ० १४०)>अंगुट्ठलअ> अंगुठला>गुठला।

गड़क[1]—पुं० (एक प्रकार की मछली)– सं० गड+क (प्र०)।

गड़क[2]—पुं० (डूबने या गर्क होने का भाव)–अ० ग़र्क़।

गड़गड़ाहट— स्त्री० (गड़गड़ाने का शब्द)– प्रा० गडगड>गड़गड़ाना। पं० गड़गड़, म० गड़गडाट, सिं०, उर्दू गड़-गड़ाहट, गु० गहगडार, कश्मी० गगराय, अस० गाजनि।

गडबड—स्त्री० (अव्यवस्था, गोलमाल)– प्रा० गडबड। तुल० क० गलबलि, मल-बिलि; ते० गलिबिलि, गलब।

गड़रिया—पुं० (एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है)–सं० गड्डरिक>प्रा० गड्डरिअ> अप० गड्डुरी (दे० ना० मा०) > हिं० गड़रिया।

गड़से— पुं० (कुट्टी काटने का एक औजार)–सं० गंडासि।

गड़ेली—स्त्री० (एक पोई में से किये गये छोटे-छोटे कई टुकड़े, मक्का की भुटिया में रेशों के नीचे के भाग में हरे पर्त में बनी हुई सफेद गड़ेली)– सं० गण्डेरिका > गण्डेरिआ > गंडेली > गड़ेली।

गड़ौना—पुं० (गाड़ा पान, पान की एक जाति)–सं० गर्त्तपर्ण>प्रा० गड्डपण्ण> हिं० गड़ौना।

गड्ढा—पुं० (गड़हा, खड्ड)–सं० गर्त> प्रा० गड>अप० गड्डो (हे०) > हिं० गड्ढा।

गढ़[1]—पुं० (खाई)–सं० प्रा० गड> हिं० गढ़।

गढ़[2]—पुं० (किला, दुर्ग)–प्रा० गढ> अप० गढो (दे० ना० मा०)>हिं० गढ़।

गढ़ना—क्रि० (किसी सामग्री को काट छाँट कर या ठोंक ठाँक कर कोई काम की वस्तु बनाना)– सं० घटन> प्रा० घडण>हिं० गढ़ना।

गणता—स्त्री० (गिनती, प्रतिष्ठा)–सं० पा० गणना > प्रा० गणणा > अव० गणन्ता>हिं० गणता।

गथ(1)—पुं० (पूँजी, गाँठ का धन)– वैदिक सं० ग्रथ>गथ।

गदहा—पु० (गधा, गर्दभ, खर)–सं० गर्दभ>पा० गद्रभ>प्रा० गद्दह>अव० गद्दह>हिं० गदहा, गधा।

गदही—स्त्री० (गधी)– सं० गर्दभी> पा० गद्रभी>प्रा० गज्ही>हिं० गदही।

गनीमत—स्त्री० (विकट अवस्था में होने वाली सन्तोष की बात, लूट का माल)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ० ग़नीमत ।

गन्ना[1]—पुं० (ईख, ऊख)–सं० काण्ड ।

गन्ना[2]—स्त्री० (विवाह के लिए वर वधू की पत्नी की देख-रेख)– सं० गणना > अवधी गन्ना ।

गप— स्त्री० (इधर उधर की बात, जिसका सत्यता का निश्चय न हो)–सं० जल्प > गल्प > हिं० गप ।

गपतालीस— वि० (चवालीस)–सं० एकोपचत्वारिंशत् > एगोवचालीस > गवतालीस > घवतालीस, गपतालीस ।

गफलत— स्त्री० (असावधानी, असतर्कता, संज्ञाहीनता)–अ० ग़फ़लत ।

गमक—पुं० (संगीत में स्वर को अधिक श्रुति-मधुर बनाने के लिए उसमें किया जाने वाला विशेष प्रकार का कंपन, तबले की गंभीर किन्तु मधुर आवाज)– सं० गमक > हिं० गमक ।

गमजदा—वि० (संतप्त, दुःखी)– अ० फ़ा० ग़मज़दः ।

गमी—स्त्री० (शोक की अवस्था,–अ० ग़म ।

गयण—(न)★—पुं० (आकाश)–सं० गगन > प्रा० गयण ।

गया, गओ— क्रि० (जाना क्रिया का भूतकालिक रूप)–सं० गतः > पा० गत > प्रा० गय > हिं० गया, ब्र० गया, गओ । पूरब में 'गवा' भी प्रचलित ।

गरई, गिरई— स्त्री० (एक प्रकार की छोटी मछली)–सं० गरघ्नी > हिं० गरई ।

गरक— वि० (डूबा हुआ, नष्ट)–अ० ग़र्क़ ।

गरगज[1]—पुं० (शत्रु का पता लगाने के लिए बनाया गया ऊंचा टीला, क़िले का बुर्ज)–फ़ा० गरगज ।

गरगज[2]— वि० (विशाल)– फ़ा० गरगज ।

गरजना—क्रि० (गंभीर और घोर शब्द करना)–सं० गर्जन > प्रा० गज्जण (सं० गर्ज् > प्रा० गज्ज) > हिं० गरजना ।

गरब गहीलि(ई)—(पद०) वि० (गर्वीली, घमंडी)– सं० गर्वगृहीता > प्रा० गब्ब गहिल्ल > गरब गहीली ।

गरवी—वि० (विशाल, भारी)–सं० गुर्वी > प्रा० गरुई > हिं० गरवी ।

गरानि—स्त्री० (ग्लानि)–सं० ग्लानि ।

गरारा— पुं० (कंठ में पानी डालकर गरगर शब्द करके कुल्ली करना)–फ़ा० ग़रारः ।

गरीबनिवाज—वि० गरीबों पर दया करने वाला)– अ० ग़रीब + फ़ा० निवाज ।

गरुअ—वि० (भारी, गंभीर)–सं० गुरुक > गरुक > प्रा० गुरुअ > अप० गरुव > हिं० गरुअ, गरु ।

गरुर—पुं० (अभियान)–अ० ग़रूर ।

गरूरी—वि० (घमंडी)– अ० ग़रूर + फ़ाई (प्र०) ।

गरुव— पु० हिं०, वि० (भारी बोझ वाला)– सं० गुरुक > प्रा० गुरुव, हिं० गरुव ।

गरुवा—पु० हिं०, वि० (श्रेष्ठ)– सं० गुरुक > प्रा० गुरुव > हिं० गरुवा ।

गरुवि—वि० (बड़ी, श्रेष्ठ)– सं० गुर्वी > प्रा० गरुवी, अव० गरुवि, पुं० गरुवा ।

गल[1]—पुं० (गला, ग्रीवा, कण्ठ)–सं० प्रा० गल > हिं० गल ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गल[२]—पुं० (मछली फँसाने का काँटा)—प्रा० गल>छ० गल।

गलगंड—पुं० (गले का रोग)—सं० गलगण्ड।

गलगल—पुं० (एक प्रकार का नीबू)—फ़ा० गलगल।

गलगाज[१]—(पद०) स्त्री० (गले की गर्जन, दहाड़)—सं० गलगिज > प्रा० अप० संज्ञा शब्द गलगज्जि>गलगाज।

गलना—क्रि० (गल जाना, सड़ जाना, पिघलना)—सं० गल्>प्रा० गल>अप० गलइ> हिं० गल+ना (प्र०)। छ० गल।

गला— पुं० (सिर को धड़ से जोड़ने वाला अंग)—सं० पा० प्रा० गल>हिं० गला। पं० गल, सिं० गरू, गिरू।

गलिया— वि० (मट्ठर, सुस्त)—सं० गडि, गलि>प्रा० गलिअ (पाइअ०)> हिं० गलिया।

गलीचा—पुं० (कालीन, एक प्रकार का खूब मोटा बुना हुआ बिछौना)— फ़ा० गालीचः, कालीचः।

गल्ला—पुं० (उपज, अन्न, फसल, पैदावार)—अ० ग़ल्लः।

गवन—पुं० (प्रस्थान, चाल)—सं० गमन >अव० गवण>अवधी गवन।

गवाख—पुं० (छोटी खिड़की, वातायन, झरोखा)—सं० गवाक्ष>प्रा० गवक्ख> हिं० गवाख। म० गवखें।

गवास—पुं० (कसाई, गोनाशक)—सं० गवाशन, अवधी गवासा।

गवेसा—वि० (गवेषणा करने वाला)—सं० गवेषक>पा० गवेसक>प्रा० गवेसि >अप० गवेसिय>गवेसा।

गवेसी—वि० (गवेषणा करने वाला)—सं० गवेषिन्>पा० गवेसी>प्रा० गवेसि >हिं० गवेसी, गवेषी।

गश—पुं० (बेहोशी)— अ० ग़शी, फ़ा० ग़श।

गश्त—पुं० (१- टहलना, २- पहरा देने के लिए चक्कर लगाना)—फ़ा० गश्त।

गश्ती— वि० (घूमने वाला)— फ़ा० गश्ती।

गसना— क्रि० (निगलना, जकड़ना, गाँठना, बुनावट में बाने को कसना)—सं० ग्रसन>प्रा० गसण>हिं० गसना।

गस्सा—पुं० (ग्रास, कौर)—सं० ग्रास> प्रा० गास>अप० गस्स>हिं० गस्सा।

गहगहा—वि० (प्रफुल्लित)—सं० गद्गद >प्रा० गहगह>हिं० गहगहा।

गहगहे[१] (पद०)—वि० (बंधन में पकड़े हुए)—सं० गृह+गृहीत>प्रा० गहगहिअ >गहगहे।

गहना[१]—क्रि० (पकड़ना, थामना)—सं० ग्रहण>पा० गहण>प्रा० गहणय>हिं० गहना। बु० गहन।

गहना[२]—पुं० (आभूषण)—सं० ग्रहणं> प्रा० गहणय>हिं० गहना। पं० गहणे, ओ० गहण्ण।

गहना[३]—पुं० (गिरवी, न्यास, बन्धक)—सं० ग्रहणक > प्रा० गहणअ > हिं० गहना।

गहबर—वि० (दुर्गम, भीतर, निकुञ्ज, गुफा, अप्रवेश्य)—सं० गह्वर>प्रा० गहर >हिं० गहबर।

गहरा—वि० (गंभीर, जिसकी थाह बहुत नीचे हो)—सं० गम्भीर>पा० गहीर> प्रा० गहिर>हिं० गहरा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गहिय—भू० कृ० (लिया हुआ, पकड़ा हुआ)–सं० गृहीत>पा० गहित>प्रा० गहिअ>अप० गहिय, हिं० गहिय।

गहिर—प्रा० प्र०, वि० (गहरा)– सं० पा० गभीर>प्रा० गहिर।

गहिला गहेला—प्रा० प्र०, वि० (पागल, उन्मत्त)–प्रा० गहिल्लं; गहिल, गहिलिय >हिं० गहिला, गहेला।

गहोई[1]—स्त्री० (उपजाति का नाम)– सं० गृहपति>पा० गहपति>प्रा० गह-वइ>हिं० गहोई।

ग्वाला—पुं० (अहीर)–सं० गोपाल+ क>प्रा० गोवाल>हिं० ग्वाला, ह० गुआला।

गाँ—पुं० (गाँव)–सं० ग्राम>पा० प्रा० गु० ग्राम>अप० गाँअ। बं० उ० छ० गाँ, ने० सिंह० गाँउँ, म० गाँव, गाव।

गाँजा—पुं० (भाँग की जाति का एक पौधा)–सं० गंजिका>हिं० गाँज़ा।

गाँठ—स्त्री० (जोड़, बंध, गिरह)–सं० ग्रन्थि>पा० गण्ठि>प्रा० अप० गंठि, अप० गण्ठि>हिं० गाँठ, ह० गांठ।

गाँठना—क्रि०(गाँठ लगाना)–सं० ग्रन्थन >पा० गण्ठन>प्रा० गंठण (√ग्रंथ> गंठ-पाइअ०)>हिं० गाँठना।

गाँडर— स्त्री० (मूँजी की तरह की एक घास)–सं० गण्डालिका (मो०वि०)।

गडा— पुं० (ईख का गन्ना)–सं० गण्डिका>प्रा० गांडिआ> गाण्डअ > गाँडा।

गाँथना— क्रि० (गूंथना, गठना)– सं० ग्रन्थ>प्रा० गंथ>हिं० गाँथना, छ० गाँथ।

गाँव—पुं० (छोटी बस्ती, खेड़ा)–सं० ग्राम>पा० प्रा० गाम>अप० गाँअ> हिं० गाँव। बं० ओ० गाँ, गु० गाम, ने० गाउँ, सिं० गाउँ, गामु।

गाई—स्त्री० (गौ)–सं० पा० प्रा० गावी हिं० गाई।

गागर—स्त्री० (गगरी, घड़ा)–सं० गर्गर >प्रा० गग्गर>हिं० गागर।

गाछ—पुं० (पौधा)–सं० गच्छ (मो० वि०)>अव० गाछ।

गाज—स्त्री० (वज्रपात ध्वनि, बिजली गिरने का शब्द, गूँजने की क्रिया, गर्जन)–सं० गर्ज>पा० प्रा० गज्ज> छ० गाज। पदमावत में प्रयुक्त 'गाजहि' (वज्र से)।

गाजइ—क्रि० (गाजना)– सं० गर्जयति >पा० गज्जति>प्रा० गज्ज > स० गाजड।

गाजना—क्रि० (गाजना, गरजना, गर्व-युक्त वचन कहना)–सं० गर्जन> प्रा० अप० गज्जण > गज्जन > गाजन, गाजना। सिं० गाज (गर्जना), म० गाजणें, गु० गाजवूं।

गाजनी—वि० (लज्जित करने वाली)– सं० गञ्जन>प्रा० गंजण।

गाजर—स्त्री० (एक पौधे का नाम)– सं० गृंजन>प्रा० गज्जर>हिं गाजर। मगही गजरा, बं० ओ० गाजर।

गाड़—स्त्री० (गड्ढा, वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है)–सं० गर्त्त > प्रा० गड>हिं० गाड़।

गाडर—स्था० प्र०, स्त्री० (भेड़)–सं० गड्डर>प्रा० गड्डरिया > गड्डरिअ > गाडर।

गाड़ी—स्त्री० (यान, शकट)–सं० गन्त्री

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>प्रा० गंती, गड्डिआ, ग ड्डी> हिं० गाड़ी। पं० गड्ड, गड्डी; कश्मी० गोडइ, ओ० बं० गारी।

गाड़ीवान—पुं० (गाड़ी हाँकने वाला, कोचवान)–सं० गन्त्रीमान्>गड्डीवान >(प्रा० अप० गड्डी) गाड़ीवान।

गाडू[1] (की०)–पुं० (छोटा लोटा)–वै० सं० कद्रुक > कद्दुअ > गड्डुअ > गाडुअ>हिं० गाडू।

गाढ़[1]—पुं० (गड्ढा, चिकनी मिट्टी का खेत)–सं० गर्त>प्रा० गड्ढ>गाढ़।

गाढ़[2]—पुं० (कठिनाई)– सं० गाढ>गाढ़।

गाढ़ा—वि० (गाढ़ा, बहुत गहरा, कठिन, घना, मोटा (कपड़ा), जिसमें जल के साथ कोई चूर्ण मिला हो)– सं० प्रा० गाढ>हि० गाढ़ा। म० गाढ, सिं० गहरु, गाध।

गात—पुं० (देह, शरीर)–सं० गात्र> प्रा० गत्त>हिं० गात।

गाती— स्त्री० (छोटी आयु की तथा क्वारी लड़की का अंचल पट, वह चद्दर जिसे शरीर पर लपेटा जाता है)– सं० गात्रिका।

गाना—पुं० (गीत)–सं० गान>पा० गायन>प्रा० गाण>हिं० गाना।

गाभ—पुं० (पशुओं का गर्भ)– सं० गर्भ >प्रा० गब्भ>हिं० गाभ। पं० गब्भ, सिं० गभु, कश्मी० गबिन।

गाभा—पुं० (केले आदि के डंठल के अन्दर का भाग)–सं० गर्भ>पा०. प्रा० गब्भ। पं० गब्भ, बं० गाब, भो० गोभा।

गाभिन—स्त्री० (जिसके पेट में बच्चा हो)–सं० गर्भिणी>पा० गब्भिनी>प्रा० अप० गब्भिणी> अप० गब्भिणि > गाभिनी, गाभिन।

गाय— स्त्री० (सींग वाला एक मादा चौपाया जिसके नर को साँड या बैल कहते हैं)–सं० गो>पा० प्रा० गावी> अप० गाई (हे०)>हिं० गाय। फ़ा० गाव। बं० ओ० गाइ, गु० म० गाय।

गारना— क्रि० (गलाना)– सं० गालन (√गल्) > प्रा० गालण, गालणा (पाइअ०) >हिं० गारना।

गारा—पुं० (मिट्टी, चूने आदि का वह लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है)– सं० ग्रावन्> प्रा० गार (पाइअ०)> हिं० प० गारा। सिं० गारो।

गारी[1] (की०)— क्रि० (गारना, गिराना, छानना, पीना)– सं० गालय्> प्रा० गाल, गालयइ>अव० गारी।

गारी[2]— स्त्री० (गाली)–सं० गालि> प्रा० गालि>हिं० गारी, गाली। सिं० गारी, बं० गारि।

गारुड़—पुं० (साँप के विष उतारने का मंत्र)–सं० प्रा० गारुड, प्रा० गारुल्ल> हिं० गारुड़।

गारे[1] (पद०)—क्रि० (गारना, निचोड़ना, छानना)–सं० गालन>प्रा० गालण >हिं० गालन।

गारो—पुं० (अहंकार)–सं० गर्व>प्रा० अव० गव्व।

गारौ[1] (पद०)—पुं० (गुरुता, भारीपन, गौरव)– सं० गौरव>पा० प्रा० गारव>हिं० गारौ।

गाल—पुं० (कपोल)–सं० प्रा० गल्ल >हिं० गाल, ह० गाल्ह। तुल० पं० गल्ह, गा० गु० बं० अस० गाल (गाल्)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ० गाल (गालाँ)।

गाला—पुं० (धुनी हुई रुई का गोला)—फ़ा० गालः, गाल।

गालिबन—क्रि० वि० (संभवतः)—अ० ग़ालिबन्।

गावण—पुं० (गाना)—सं० गायन > प्रा० गावण (सं० √गै > प्रा० गा, गाव)।

गाहक—पुं० (लेने वाला, खरीदने वाला)—सं० ग्राहक > पा० प्रा० गाहग > हिं० गाहक।

गाहना—क्रि० (ढूँढ़ना, टोह लगाना)—सं० गाह् > प्रा० गाह > हिं० गाहना।

गिद्ध— पुं० (गिद्ध, एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी)— सं० गृध्र > प्रा० गिद्धो > हिं० गिद्ध।

गिनना— क्रि० (गणना करना)—सं० गणय् > प्रा० गण > हिं० गिनना।

गियान—पुं० (ज्ञान)—सं० ज्ञान > छ० गियान।

गिरगिट—पुं० (छिपकली की जाति का एक जंतु)—सं० गलगति। तुल० बं० गिरगिटो, उर्दू गिरगिट (गिर्गिट्)।

गिरवी— स्त्री० (बंधक, रहन)—फ़ा० गिरवी।

गिरह—स्त्री० (गाँठ)—फ़ा० गिरिह।

गिरहन— पुं० (सूर्य, चन्द्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के मध्य में दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने के कारण उसकी छाया पड़ने से होता है)— सं० ग्रहण > प्रा० गहण > गिरहन (बो०), छ० गरहन।

गिरिंदा—पुं० (बड़ा पर्वत, श्रेष्ठ पर्वत, मेरु पर्वत)—सं० गिरीन्द्र > प्रा० गिरिंद।

गिरि[1]—कृदन्त (कहकर)—सं० गृ > प्रा० अप० गिर > अव० गिरि।

गिरि[2]—पुं० (पर्वत)—सं० पा० गिरि।

गिरि[3]— स्त्री० (निगलने की क्रिया, मूषिका)—सं० गिरि।

गिल—(की०) क्रि० (निगलना, सटकना, भक्षण करना)—सं० गृ > पा० प्रा० अव० गिल।

गिलानी—स्त्री० (ग्लानि, घृणा)—सं० ग्लानि > प्रा० गिलाणि > गिलानी (बो०) ह० गिलाण।

गिलोय—स्त्री० (गुरुच, गुड़ूची)—फ़ा० गिलोय। सं० गुडूची > गलोइ > गिलोय।

गीध—पुं० (गृध्र, गिद्ध)—सं० गृध्रः > पा० गिद्धो > प्रा० गिद्ध > हिं० गीध। ह० गीध्, पं० घिद्ध, सिं० गिभ्भ।

गीधराज—पुं० (गिद्धों का राजा)—सं० गृध्रराज > प्रा० गिधराज > हिं० गीधराज।

गुग्गुरावर्त—(की०) स्त्री० (हाथी की हर्ष से गर्जना करना, गड़गड़ाहट)—सं० गुलगुलायित > प्रा० गुलगुलाइअ > गुलगुलिय > अव० गुग्गुरावत।

गुच्छा—पुं० (एक में लगे या बँधे कई पत्तों या फलों का समूह)—सं० गुच्छक > प्रा० गुच्छय > अप० गोच्छा (दे० ना० मा०) > गुच्छअ > हिं० गुच्छा।

गुजर— पुं० (निकास, गति)—फ़ा० गुज़र।

गुजारा—पुं० (निर्वाह, गुज़र-बसर)—फ़ा० गुजारः।

गुजारिश—स्त्री० (निवेदन, प्रार्थना)—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फ़ा० ग़ज़ारिश ।

गुझिया— स्त्री० (एक प्रकार का पकवान)–सं० गुह्य+क>प्रा० गुज्झअ> गुज्झा ।

गुड़—पुं० (ऊख के रस का वह रूप जो उसे पकाकर खूब गाढा करने पर प्राप्त होता है)– सं० गुड>पा० गुलो>प्रा० गुड>अप० गुल (प्र० को०) >हिं० गुड़, भो० गुर । गु० गोड, म० गुड़, ने० गुलियो, ओ० गुर, सिं० गुरु ।

गुड़गुड़ाना— क्रि० (गुड़गुड़ करना, पेट की गुड़गुड़ाहट)–सं० गुडगुडायन ।

गुण्डा— पुं० (अधम, नीच, बदमाश आदमी)–सं० गुण्डक>गुन्दा (दे० ना० मा० २-११०) >हिं० गुण्डा ।

गुदगुदी—स्त्री० किसी के गुदगुदाये जाने से शरीर में होने वाली हलकी खुजली या सुरसुरी)–फ़ा० गुदगुदी ।

गुदड़ी—स्त्री० (फटे पुराने कपड़ों की तहों को एक में गाँथ या सीकर बनाया हुआ ओढ़ना)–सं० गुध्>हिं० गुदड़ी ।

गुदनाटा—पुं० (गोबर से बनाया हुआ कंडा)–सं० गोधनवट्टक>गुदनाटा ।

गुदरत—क्रि० (छोड़ता है)–फ़ा० गुज़रद >अवधी गुदरत ।

गुदारा— क्रि० (नाव से नदी पार करना)–फ़ा० गुज़ारः>अवधी गुदारा ।

गुदुर-गुदुर करना— क्रि० (कानाफूसी करना, एक ओर ले जाकर बात कहना)– फ़ा० गुरगुर ।

गुनना— क्रि० (विचार करना, मनन करना)–सं० गुण्य (आवृत्ति करना, याद करना)>प्रा० गुण, गुणइ>अप० गुणइ >अव० गुन्नइ>हिं० गुन+ना ।

गुनरखा—पुं० (मस्तूल, पाल बाँधने के लिए नाव में लगाया जाने वाला बाँस)– सं० गुण+वै० सं० रुक्ष>प्रा० गुणरुक्ख >अप० गुनरुखा, गुनरखा । अथवा सं० गुणवृक्षक>प्रा० गुणरुक्खक>गुनरखा ।

गुना— पुं० (एक प्रत्यय जो केवल संख्यावाचक शब्दों के अन्त में लगता है, यह जिस संख्या के अन्त में लगता है, उतनी बार कोई मात्रा, संख्या या परिमाण सूचित करता है)–सं० गुण+क> प्रा० गुणअ>हिं० गुना ।

गुनाह— पुं० (पाप, कसूर)– फ़ा० गुनाह ।

गुफा—स्त्री० (कंदरा, गुहा)–सं० प्रा० गुहा>हिं० गुफा । सिं० गु० गुफा, अस० गुहा; ओ० गुंफा; मल०, ते० गुह, त० गुहै, क० गुहें ।

गुम्मट— पुं० (गुंबद, गुंबज)– फ़ा० गुंबद ।

गुलगुल— क्रि० (गुलगुल आवाज करना)–सं० गुलगुलाय्>प्रा० गुलगुल (पाइअ०) ।

गुलचीन— पुं० (एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो बारहों महीने फूलता है, उक्त वृक्ष का फल)–फ़ा० गुलचिगान>हिं० गुलचीन ।

गुलथ्थी—स्त्री० (खाने की पथ्यवस्तु)– सं० कुलत्थिका> प्रा० कुलत्थ> छ० गुलथ्थी ।

गुलबन्द— (गले को ठण्ड से बचाने के लिए प्रयुक्त वस्त्र)–सं० गलबन्ध>पा० गलबन्ध>गलाबन्द>गुलबन्द ।

गुलाल— पुं० (एक प्रकार की बुकनी, अबीर)–फ़ा० गुललालः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुसाँई—पुं० (गोसाईं, गोस्वामी, गौओं का स्वामी या अधिकारी, ईश्वर, विरक्त साधु, स्वामी)– सं० गोस्वामी>प्रा० गोसामि>गुसामि>गुसाईं।

गुसैंया[११]—पुं० (अल्लाह)–सं० गोस्वामिन्।

गुस्ताख—वि० (धृष्ट, ढीठ)– फ़ा० गुस्ताख।

गुस्ताखी— स्त्री० (अशिष्टता)–फ़ा० गुस्ताखी।

गुहार—स्त्री० (रक्षा के लिए पुकार)– सं० पूत्कार>प्रा० पुक्कार>बुक्कार> बुगार > गुआर > गुहार। अवधी गोहारी।

गुहारना[१]—(पद०) क्रि० (सहायता के लिए पुकारना, टिप्पणी–जंगल में चरती हुई गायों को शत्रु के द्वारा हर लिये जाने पर उनकी रक्षा के लिए उनके रखने वाले गायों के स्वामी के यहाँ पुकारते थे)–सं० गाः आकारयति>गोह कारइ>गोहारई>हिं० गुहारना।

गुहेरा[१] पुं०—(गोह नाम का कीड़ा)– सं० गौधेरक>(गोधा+एरक प्र०)।

गुहेरी[१]—स्त्री० (अंजनिआरी, आँख में निकलने वाली बिलनी)– सं० गौधेरिका >गुहेरिआ>गुहेरी।

गूँज— स्त्री० (गुँजार)– सं० गुञ्ज (अव्यक्त शब्द करना)—(धातु गुजि)> हिं० गूँज। छ० गूंज।

गूँगा—वि० (जो बोल न सके)– फ़ा० गुंग।

गूँथ—क्रि० (ग्रथित करना, गूँथना)– सं० √गुफ्>प्रा० गुभ>हिं० गूँथ।

गूँथना—क्रि० (गूँधना, पिरोना)–सं० ग्रन्थन>हिं० गूँथना।

गू—पुं० (विष्ठा, मल)–सं० गु>पा० गूथो, गूथक>प्रा० गूह>हिं० गू। बं० गू, सिं० गूँहू, गु० गूं।

गूजर—पुं० (अहीरों की एक जाति)– सं० गुर्जर>प्रा० गुज्जर>हिं० गूजर।

गून— स्त्री० (वह पतली लंबी रस्सी जिससे नाव को बहाव के प्रतिकूल खींचते हैं)–सं० प्रा० गुण>गून।

गूला—पुं० (गूलर, फूल के पश्चात् बन पर सख्त और नोकदार फल)– सं० गोलक>प्रा० गुल्लअ>गूला।

गूह— पुं० (विष्ठा, टट्टी, मल)–सं० पा० गूथ>प्रा० गूह>हिं० गू। चर्च स्लैविक, सर्बोक्रोशियन और रशन भाषाओं में govno, पोलिश gowno, अवेस्तन guoa।

गेंठि— स्त्री० (गाँठ)–सं० ग्रन्थि> पा० गण्ठि>प्रा० गिट्ठि>अप०, अव० गेंठि।

गेंद—पुं० (खेलने का गेंद)–सं० गेन्दुक >पा० गेण्डुक>प्रा० गेंदुअ >अव० गन्दा>हिं० गेन्द।

गेरु—स्त्री० (एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है)– सं० गवेरुक, गैरिक>पा० गेरुकम् > प्रा० गेरुय>हिं० गेरु। गु० ने० सिं० गेरू।

गेला—वि० (नासमझ, पागल)– प्रा० गहिलिय, गहिल्ल, गहिल >गइल्ल> गेल्ल>हिं० गेला।

गेह—पुं० (घर, मकान, निवास-स्थान)– सं० गृह>पा० प्रा० गेह>हिं० गेह। गु० म० बं० गेह।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गेहूँ— पुं० (एक अनाज)–सं० पा० गोधूम > प्रा० गोहूम > अप० गोहूँ > भो० गोंहुँ, गोहूवँ, गोहूँ, गेहूँ। अवधी गोहूँ, म० गहूं, गु० घऊं, बं० गोभ। फ़ा० गन्दुम।

गैन[1]— पुं० (मार्ग, गैल)–सं० पा० गमन।

गैन[2]—पुं० (गगन)–सं० पा० गगन > प्रा० गयण।

गैना—स्त्री० (एक प्रकार की रस्सी)–सं० ग्रहणक।

गैया— स्त्री० (गाय)–सं० गविका > प्रा० गाइया > गैया।

गोई— स्त्री० (बैलों की जोड़ी)–सं० गोती।

गोखरू— पुं० (एक ओषधि का नाम, एक प्रकार का क्षुप)– सं० गोक्षुरक > प्रा० गोक्खुरय > गोखुरअ > गोखुर > गोखरू।

गोग—वि० (कायर)–सं० गोग्ल > प्रा० गोग्ग > हिं० गोग।

गोचना—स्था० प्र०, पुं० (गोचनी, गेहूँ और चना, ऐसा गेहूँ जिसमें आधे के लगभग चना मिलाया गया हो)– सं० गोधूम + चणक > प्रा० > गोहूम + चणअ > गोहूँ + चना > गोचना।

गोझा— पुं० (मैदा की बड़ी गुझियाँ जिनके भीतर खोवा, कसार, मेवा आदि भरे जाते हैं)–सं० गुह्यक > प्रा० गुज्झअ > अप० गुज्झ (प० च०) > गूझा > गोझअ > गोझा, स्त्री० गोझिया।

गोट—स्त्री० (समूह, मंडली, गोष्ठी)–सं० गोष्ठी > प्रा० गोट्ठि > अव० गोट्ठ, गुट्ट, गोट्टओ > हिं० गोट।

गोटी[1]— स्त्री० (कंकड़, गेरु, पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं)–सं० गुटिका।

गोटी[2]—स्त्री० (चेचक का दाग)–सं० गुटिका।

गोटी[3]— (पद०) स्त्री० (बंधन)–सं० गुप्ति > गुत्ति > गुट्टि > गोटि, गोटी।

गोठ—स्त्री० (गोशाला)–सं० गोष्ठ > पा० प्रा० गोट्ठ > हिं० गोठ, छ० गोठ। सिं० गोठु, म० गोठा, गु० गोठो, ने० गोठ्।

गोत—पुं० (कुल, समूह)–सं० गोत्र > पा० प्रा० गोत्त > हिं० गोत। बं० गोता, सिं० गोटू, ने० गु० गोत।

गोता—पुं० (डुबकी)–अ० ग़ोत:।

गोथना—स्त्री० (गाय की थन की तरह की एक छोटी खूँटी, जो जुए में भीतर की ओर ठुकी रहती है)–सं० गोस्तन > गोथना।

गोद—पुं० (उत्संग, वह स्थान जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है)– सं० क्रोड।

गोदाम, गोदंग, गद्दोन, गोदोन—पुं० (वह बड़ा स्थान जहाँ बिक्री का माल रखा जाता है)–मलय गोदोङ्ग (भण्डार) > गौदाम। ते० गिडंगी-गिड्डंगी, त० किडगु, म० गोदी-गुदाम, बं० गुद्दाम। अं० गोडाउन, हिं० मालगोदाम।

गोधूली—स्त्री० (संध्या का समय)–सं० गोधूलिका > गोधूली।

गोन—स्त्री० (मूँज आदि की बनी हुई

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रस्सी जिसे नाव खींचने में मस्तूल में बाँधते हैं)–सं० गुण ।

गोनिया—स्त्री० (टाट)–सं० गोणी> छ० गोनिया । म० गोण, गौणतें; सिं० गूणी ।

गोफा—पुं० (नया निकला हुआ मुँह-बँधा पत्ता)–सं० गुम्फ ।

गोबर—पुं० (गाय का मल)–सं० गोमल >प्रा० गोव्वर>हिं० गोबर ।

गोमठ— पुं० (गूमट, मकबरा)–फ़ा० गुम्बद, गुम्बज़ । कश्मी०, अस०, उर्दू-गुम्बज । क० गुम्मट । ते० गुम्मटमु । सिं० गुंबजु ।

गोयँड—स्त्री० (गाँव के आस पास की भूमि)–सं० गोष्ठ (जहाँ गाय, पशु आदि बैठते हैं, अमरकोश) >गोयँड ।

गोरा—वि० (सफेद और स्वच्छ वर्णवाला मनुष्य)–सं० गौर>पा० प्रा० गोर> हिं० गोरा । ने० सिं० गोरो, म० बं० पं० गोरा ।

गोरी—स्त्री० (शुक्ल-वर्णा स्त्री०)–सं० गौरी>प्रा० गउरी, अप० गोरि>हिं० गोरी ।

गोरू— पुं० (सींग वाला पशु, गाय, बैल, भैंस, इत्यादि चौपाया)–सं० गोरू-पम्>प्रा० गोरुव>अव०, अवधी गोरु ।

गोला—पुं० (किसी पदार्थ का कुछ बड़ा गोल पिंड)– सं० गोलक>प्रा० गोलय >हिं० गोला ।

गोलाबारी—स्त्री० (तोप से गोलों की वर्षा)–फ़ा० गोलःबारी ।

गोली—स्त्री० (किसी चीज का छोटा गोलाकार पिंड)– सं० गुटिका>प्रा० गोलिया>हिं० गोली ।

गोवना—क्रि० (छिपाना)–सं० गोपन> प्रा० गोवण ।

गोश्त—पुं० (मांस)–फ़ा० गोश्त ।

गोसा[1]— पुं० (धनुषाकार आभूषण)–फ़ा० गोशः ।

गोसा[2]—पुं० (कमान का सिरा, गोशा)–फ़ा० गोशः ।

गोसा[3]—पुं० (उपला, कंडा)– सं० गो +उत्सर्ग>प्रा० गो+उस्सग्ग>अप० गोस्सअ>हिं० गोसा ।

गोसाईं— पुं० (गौओं का स्वामी, ईश्वर)–सं० गोस्वामिन्>प्रा० गोसामिअ गोस्सामी>गोस्सावीं> गोसावी>हिं० गोसाईं ।

गोह—स्त्री० (गोधा, जल-जन्तु-विशेष, साँप की एक जाति)–सं० गोधिका> प्रा० गोहिया ।

गौंतरिया—पुं० (अतिथि)– सं० ग्रामान्तरीय ।

गौंना— पुं० (द्विरागमन, मुकलावा, विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वर अपने ससुराल जाता है और कुछ रस्म पूरी करके वधू को अपने साथ ले आता है)– सं० गमन>प्रा० गमण>अप० गवँण>गउन, गौन>हिं० गौना, गौंना । पं० मुकलावा । म०, बं० द्विरागमन । ओ० गौरब । ते० गौरवमु । त० गौरवम् ।

गौन[1]— पुं० (खेत में वह छायादार स्थान जहाँ बैल बांधे जाते हैं)–सं० गमन >पा० गमन>प्रा० गमण, गमणा> हिं० गौन ।

गौन[2]—पुं० (गमन)–सं० गमन>प्रा० गमण>गौन ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौर—पुं० (चिन्तन, विचार, ध्यान)–अ० ग़ौर।

ग्राही—वि० (जिसको ग्रहण कराया गया हो, ग्रहण करने वाला)–सं० ग्राहित> प्रा० गाहिय>हिं० ग्राही।

ग्यारह— वि० (दस और एक)–सं० एकादश>प्रा० एगारस।

ग्वाल—पुं० (अहीर)–सं० गोपाल> गोवाल>ग्वाल।

ग्वाला—पुं० (अहीर)–सं० गोपालक> प्रा० गोवालअ>अप० गोअला (दे० ना० मा०)>हिं० ग्वाला।

घ

घंटा—पुं० (१- घड़ियाल, २- घड़ियाल बजाकर दी जाने वाली सूचना)– सं० घण्टा>प्रा० घंट>हिं० घंटा।

घंटिया— स्त्री० (छोटी घण्टी)–सं० घण्टिका>प्रा० घंटिया।

घंटी—स्त्री० (कोई ऐसा छोटा उपकरण जिस पर आघात करने से शब्द उत्पन्न होता हो)–सं० घण्टिका>प्रा० घंटिया >घंटिआ>हिं० घंटी। तुल० पं० उर्दू घंटी, सिं० घिंडिणी, गु० घांटी, म० घांटी।

घग्घर— पुं० (शब्द-विशेष)–सं० घर्घर >प्रा० घग्घर।

घघरा—पुं० (घाघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र)–प्रा० घग्घर> हिं० घघरा।

घटना[1]—स्त्री० (घड़ना, कृति, निर्माण, वारदात, हादसा)– सं० घटन>प्रा० घडण>हिं० घटना।

घटना[2]— क्रि० (बनाना, रचना, पूरा करना)– सं० घटय्>प्रा० घड>हिं० घट+ना (प्र०)।

घटना[3]—क्रि० (कम होना)–सं० घृष्ट (घृष्)>प्रा० घट्ट, घट्टइ>हिं० घटना। पं० घटना, सिं० घटणू, ने० घटनु।

घटित—वि० (जटित, जड़ाऊ, रचित)– सं० घटित>प्रा० घडिअ।

घड़ना—(गढ़ना, बनाना)–सं० घटन> >प्रा० घडण> अप० घडेइ > हिं० घड़ना।

घड़ा—पुं० (मिट्टी का बना हुआ गगरा, जलपात्र)– सं० घट+क>पा० घटी> प्रा० घडग>हिं० घड़ा। बं० घरा, सिं० घरो, गु० घडो।

घडिया— स्त्री० (छोटा घड़ा)–सं० घटिका>प्रा० घडिआ>हिं० घड़िया।

घड़ी[1]— स्त्री० (साठ पल का समय, काल का एक मान, २४ मिनट का समय)– सं० घटिका>प्रा० घडिआ> हिं० घड़ी।

घड़ी[2]—स्त्री० (छोटा घड़ा)–सं० घटिका >पा० घटी > प्रा० घडिआ > हिं० घड़ी।

घड़ौंची— स्त्री० (लकड़ी की बनी हुई वह चौकी या चौखटा जिस पर पानी से भरे हुए घड़े रखे जाते हैं)–सं० घटचतुष्की>प्रा० घडचउक्की> घडोचई> घड़ौंची।

घनघनाना—क्रि० ('घनघन' की अथवा घण्टे की जैसी ध्वनि उत्पन्न होना)–सं० घनघनायित>प्रा० घणघणाइय> हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घनघनाना ।

घना— वि० (बहुत)–सं० घन>प्रा० घण>अप० घणाउँ>घना ।

घमघमाना—क्रि० (घमघमाख, घमघम शब्द करना)–सं० घमघम (घमघमाख) । म० घामघूम ।

घमसा— पुं० (धूप की गरमी)–सं० घर्मोष्मा ।

घमोई—स्त्री० (बांस का एक प्रकार का रोग जिससे बांस की जड़ों में बहुत से पतले और घने अंकुर निकलकर उसकी बाढ़ और नये कल्लों का निकलना रोक देते हैं)– सं० गर्मुत>प्रा० घम्मोडी, घम्मोई>हिं० घमोई ।

घर— पुं० (निवास स्थान, आवास, मकान)–सं० गृह>पा० प्रा० घर, प्रा० हर>हिं० घर । तुल० ओ० गु० ने० पं० बं० म० घर, सिंह० घरु, क० सिंह० गर ।

घरघर— स्त्री० (घरघराना, घर्र घर्र शब्द निकलने का भाव)– सं० घर्घर> प्रा० घग्घर>हिं० घरघर ।

घरनई— स्त्री० (मिट्टी के घड़ों और लकड़ी के लट्ठों को जोड़कर बनाया हुआ बेड़ा जिससे छोटी नदी पार करते हैं)– सं० घटनौका>घन्नइ, घरनैली ।

घरनी—स्त्री० (घरवाली, भार्या)–सं० गृहिणी>पा० घरणी >प्रा० अप० घरिणी>हिं० घरनी ।

घरबार—पुं० (रहने का स्थान, गृहस्थी, घर का जंजाल)– सं० गृहद्वार>प्रा० अप० घरवार (प० च०) >हिं० घरबार ।

घरहिं— पुं० (घर ही)–सं० गृह+स्मिन्>अवधी घरहिं ।

घलघल—पुं० (घल-घल की आवाज़)–सं० प्रा० घलघल ।

घस—क्रि० (घिसना, रगड़ना)–सं० घृष्>प्रा० घस>हिं० घस>छ० घँस, ह० घस् ।

घसियारा— पुं० (घास बेचने वाला, घास छीलकर लाने वाला)–सं० घासकर्त्तन>प्रा० घासकत्तण>घासकाटा > घसकटा>घसियारा ।

घाँटी—स्त्री० (गले के अन्दर की घंटी, कौआ, ललरी, टेंटुआ)– सं० घण्टिका (अभिधान चिन्तामणि ३/२४९)>प्रा० घंटिया>घाँटी ।

घाइ[1](पद०) —स्त्री० (चोट, प्रहार)–सं० पा० घात>प्रा० घाय>घाइ ।

घाऊ—पुं० (घाव, प्रहार)–सं० घात> प्रा० घाय, घाव, अप० घाउ, घाऊ ।

घाट[1]—पुं० (नदी पर बनी हुई सीढ़ियाँ और चबूतरा जहाँ लोग पानी भरते या नहाते धोते हैं)–सं० घट्ट>प्रा० घट्ट> हिं० घाट । ओ० बं० घाट ।

घाट[2]—स्त्री० (धोखा)–सं० घात>प्रा० घाय ।

घानि—स्त्री० (सुगंध)–सं० घ्राणिका >प्रा० घाणिआ>हिं० घानि ।

घानी— स्त्री० (एक बार में जितनी सरसों कोल्हू में पिलने के लिए डाली जाती है)–सं० ग्रहणिका>घण्णिआ> घन्निआ>घानी ।

घाम—पुं० (धूप, सूर्यातप)–सं० घर्म> पा० प्रा० घम्म>हिं० घाम । अवधी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घामु, । बं० ने० घाम ।

घाला(ं— (पद०) क्रि० (फेंका हुआ, मारा हुआ)–सं० क्षिप का धात्वादेश > प्रा० घल्ले । प्रा० घल्लिय, प्रा० अप० घल्ल > घाला । गु० हिं० घाल । पं० घल्ल ।

घाव—पुं० (जखम, आघात)–सं० पा० घात > प्रा० घाअ > अप० घाउ > हिं० घाव । पं० घा, घाउ, सिं० घाउ ।

घिन—स्त्री० (अरुचि, अफरता, घृणा)–सं० घृणा > प्रा० घिणा > स० अप० घिण, घिन्, घिना, छ० घिन ।

घिरनी—स्त्री० (चरखी, चक्कर)–सं० घूर्णितृ > प्रा० घुम्मिर > अप० घुर्नी > हिं० घिरनी ।

घिसटना—(खिसकना, खसकना, घिसरना)–सं० घृष + सृ > प्रा० घस्सर, म० घसर (णें), पं० घसरना ।

घिसना—क्रि० (रगड़ना, एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर शीघ्रता से चलाना)–सं० घर्षण (√घृष्) > प्रा० घसण > हिं० घसना, घिसना । पं० घसणा, बं० घसा ।

घी—पुं० (घृत, तपाया हुआ मक्खन)–सं० घृत > पा० घत > प्रा० घिअ > हिं० घी, अवधी घीउ । पं० घ्यौ, बं० घि, ओ० घिअ, भो० घीव, घीउ, सिं० गिय ।

घुंघची— स्त्री० (रत्ती, गुंजा)–सं० गुंजाचिंचिका > गुंज चिंचिआ > गुंजचिंची, गुंगची, घुंगची, घुंघची ।

घुघु— पुं० (घुघु की आवाज) –सं० घुघुघुघाय > प्रा० घुघुघुघुघ > हिं० घुघु ।

घुटकना— क्रि० (घूंट-घूंट करके पीना)– प्रा० घोट्ट, घोट्टय, घोट्टइ, घोट्टिउं > अप० घुण्टइ > हिं० घुटकना । सिं० घुटकणु ।

घुटना—पुं० (टखना, पाँव के मध्य का भाग या जोड़)–सं० घुण्टकः । तुल० पं० गोडा, उर्दू घुटना (घुट्ना), गु० घूंटण ।

घुटुरुआँ—पुं० (घुटनों के बल चलने की क्रिया)–सं० घुट + उरु > घुटरु > घुटरुअन > घुटुरुआँ ।

घुड़कना—क्रि० (डांटना)– सं० घुर् > > प्रा० घुडुक्कइ, घुरुक्कइ > अप० घुडुक्कइ > हिं० घुरुकना, घुड़कना ।

घुड़की— स्त्री० (घुड़कने की क्रिया, डाँट, डपट, फटकार)– सं० घुर्घुरी > प्रा० घुरुक्की > अप० घुग्घिउ > हिं० घुड़की ।

घुन—पुं० (एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो अनाज, पौधे और लकड़ी आदि में लगता है)–सं० प्रा० घुण > छ० घुना, । अस० ओ० पं० घुण; सिं० घुणो ।

घुमघुम—पुं० (घुम घुम की होने वाली ध्वनि)– सं० घुमघुमा, घुमघुमित > प्रा० घुमघुमिय > हिं० घुमघुम ।

घुरकना—क्रि० (घुड़कना)–प्रा० घुरक्क > हिं० घुरक + ना ।

घुरघुर— पुं० (सांस लेते समय कफ अटक जाने के कारण मनुष्य के गले से निकलने वाला शब्द)– सं० घुर् > प्रा० घोर > हिं० घुर-घुर ।

घुरघुराना—क्रि० (घुरघुर की ध्वनि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करना, घुरघुराना)– सं० घुरुघुराय्, घुरघुरायते >पा० घुरघुरायति> प्रा० घुरघुर।

घुलघुल—पुं० ('घुल-घुल' की आवाज़)– सं० घुलघुलाय्>प्रा० घुलघुल।

घुलना—क्रि० (किसी द्रव वस्तु में अच्छी तरह मिल जाना)– सं० घूर्णन>प्रा० घुम्मण>हिं० घुलना।

घूँघट— पुं० (स्त्रियों की साड़ी या चादर के किनारे का वह भाग जिसे वे लज्जावश या परदे के लिए सिर पर से नीचे बढ़ाकर मुँह पर डाले रहती हैं)– सं० गुंठनम् > प्रा० अगुट्ठ, घुअटो, घुनाटो, घुन्घट > हिं० घूँघट। पं० घुङ्गट, सिं० घुंघुटु।

घूँट—पुं० (पानी या किसी द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले के नीचे उतारा जाए)–सं० गृष्ट>प्रा० घुंट>अप० घुण्ट>घुँट>घूँट।

घूमना—क्रि० (१- चारों ओर फिरना, चक्कर खाना, २- किसी ओर मुड़ना)– सं० घूर्णन>प्रा० घुम्मण>हिं० घूमना। पं० घुम्मणा, गु० घुमवूँ।

घृणी—वि० (घृणा करने वाला)–सं० घृणिन्>प्रा० घिणिल्ल>हिं० घृणी।

घेवर—पुं० (एक प्रकार की मिठाई जो पतले घुले हुए मैदे, घी और चीनी से बनायी जाती है)– सं० घृतपूर>प्रा० घिपुउर>घयऊर>घेउर (पाइअ०)> हिं० घेवर। पं० घेउर, गु० घेबर, म० घीवर।

घोंसला—पुं० (नीड़, चिड़ियों के रहने और अण्डे देने का स्थान)– सं० वासकु-लाय>घासउलअ>घाउसलअ>घोंसला >घोंसला।

घोटना—क्रि० (गला इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाए)–सं० घुट्।

घोड़ा—पुं० (अश्व)–सं० पा० घोटक >प्रा० घोडय>अप० घोड > अव० घोर, घोल>हिं० घोड़ा।

घोड़ी—स्त्री०(घोरी, घोड़े की मादा)– सं० घोटी>प्रा० घोडी>हिं० घोड़ी।

घोल—पुं० (घोल बनाकर बनाई हुई वस्तु)–सं० घूर्णित>प्रा० घोलिअ> हिं० घोल।

घोलना—क्रि० (पानी या अन्य द्रव्य में चूर्ण अच्छी तरह मिलाना)–सं० घोलय् >प्रा० घोल, घोलेइ>हिं० घोलना। पं० घोलणा, सिं० घोरणु।

घोषणा— स्त्री० (१- उच्च स्वर से दी गई सूचना २- मुनादी)– सं० प्रा० घोषणा।

घोसी—पुंगे (अहीर, ग्वाल)–सं० घोष।

च

चंगा— वि० (स्वस्थ, सुन्दर, अच्छा)– सं० चङ्ग>देश्य प्रा० चंग>अप० चंगं (हे०)>अव० चाँगुरे>हिं० चंगा> स्त्री०। चंगी सिं० चंचो।

चंगेरी—स्त्री० (चङ्गेरी, छोटी टोकरी, डलिया)–सं० चङ्गेरिक>पा० चङ्गो-टक>प्रा० चंगेरी>हिं० चंगेरी।

चंचरी—पुं० (भौंरा, भ्रमर)–सं चञ्च-रिन्>प्रा० चंचरीअ>हिं० चंचरी।

चंचल—वि० (अस्थिर, नटखट, उद्-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विग्न)–सं० पा० चञ्चल>प्रा० चंचल >अप० चञ्चलु>हिं० चंचल। बं० अस० ओ० उर्दू क० कश्मी० गु० पं० म० चंचल, सिं० चंचलु।

चंडी—स्त्री० (क्रोध युक्त स्त्री, कर्कशा स्त्री)–सं० चण्डी>प्रा० हिं० चंडी।

चंडौसा(१)—स्त्री० (उत्तर पश्चिम दिशा से चलनी वायु)– सं० चण्डवर्षक> चंडौसा।

चंपा—पुं० (मझोले कद का एक वृक्ष, चम्पा का पेड़, चम्पा का फूल)–सं० पा० चम्पक>प्रा० चंपय>हिं० चंपा।

चँदवा—पुं० (गोल आकार की चकती, चँदोवा, चँदरछत, वितान, मोरपंख की चन्द्रिका)– सं० चन्द्रक (अमरकोश की 'प्रभा' नामक टीका, टीकाकार : सदाशिव शास्त्री)>प्रा० चंदायय, चंदाअव >चँदाव>चँदोवा।

चँवर—पुं० (छात्र, सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो डंडी में बाँधकर राजाओं या देव-मूर्त्तियों के ऊपर डुलाया जाता है)– सं० प्रा० चामर>हिं० चँवर।

चउपार—पुं० (चौपाल)–सं० चतुष्पाल >चउपार, स्त्री० चउपारि।

चउरा—पुं० (चबुतरा)– सं० चत्वरक >चउरा।

चक—पुं० (चक्रवाक, चकवा पक्षी)– सं० चक्र>प्रा० चक्क>हिं० चक।

चकई—स्त्री० (मादा चकवा)–सं० चक्रवाकी>प्रा० चक्कवाई>(पाइअ०) > हिं० चकई।

चकचकी— स्त्री० (करताल नाम का बाजा, काठ का बना एक वाद्य यंत्र)– फा० चक़चक़ी।

चकरेटी— पुं० (कुम्हार के चाक का डण्डा)–सं० चक्र+यष्टिका।

चकल्लस—स्त्री० (ज़ोर की चर्चा)–तु० चपक़ुलश।

चकवँड—पुं० (पवाड़, पनवाड़, पमार, एक पौधा जिसकी पत्ती, जड़, छाल, बीज सब औषध के काम आते हैं)–सं० चक्रमर्दक>प्रा० चक्कमड्ड>चकवंड।

चकहा— पुं० (पक्षी विशेष, चकवा)– सं० चक्रवाक>पा० चक्कवाको>प्रा० चक्कवाय>छ० चकहा। तुल० कश्मी० चकोर, म० सिं० गु० बं० अस० ओ० चातक, ते० चकोरमु।

चका—स्था० प्र०, पुं० (पहिया)–सं० चक्र>प्रा० चक्क>हिं० चका।

चकाचक— स्त्री० (शरीर पर तलवार आदि के निरन्तर आघात का शब्द)– फ़ा० चक़चाक़।

चकाचक—क्रि० वि० (खूब, भरपूर, पेट भरके)–सं० चक (तृप्त होना)।

चकिआ, चकिया—स्त्री० (किसी चीज का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा)–सं० चक्रिका > प्रा० चक्किआ > हिं० चकिया।

चकैंडी(१)— स्त्री० (वह हाँडी जिसमें कुम्हार चाक के पास पानी भर कर रखता है)– सं० चक्र भांडिआ>प्रा० चक्क हंडिआ> चकइंडिआ > चकैंडी (ऐंडी प्रत्यय)।

चक्कर— पुं० (पहिये की तरह कोई गोल वस्तु)– सं० चक्र>प्रा० चक्क,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चक्कल > हिं० चक्कर।

चक्कवै—पुं० (चक्रवर्ती)–सं० चक्रवर्ती > पा० चक्कवत्ती > अप० चक्कवइ > हिं० चक्कवै।

चक्कह—पुं० (समूह)–सं० चक्र > प्रा० अप० चक्क > अव० चक्कह।

चक्का=पुं० (पहिया, चाका, पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु)–सं० चक्र प्रा० चक्क > हिं० चक्का।

चक्की— स्त्री० (आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र)– सं० चक्रिका > प्रा० चक्की।

चक्री—पुं० (वह जो चक्र धारणा करे)– सं० चक्रिन् > प्रा० चक्कि > हिं० चक्री।

चक्षु—पुं० (नेत्र)–सं० चक्षुस् > प्रा० चक्खु > हिं० चक्षु।

चख[1]—पुं० (आँख)–सं० चक्षुस् > पा० चखुक > हिं० चख।

चख[2]—क्रि० (चखना)–सं० चष् > प्रा० चक्ख > अप० चक्खइ (महा०) > हिं० छ० चखना। तुल० पं० चखणा (चख्णा), सिं० चखणु, म० चाखणें।

चख-चख— स्त्री० (झगड़ा, तकरार, कहासुनी)–फ़ा० चख।

चचींड़ा—पुं० (एक प्रकार की लता)– सं० चिंचिडा।

चचेंडा— पुं० (शाक विशेष)– सं० चिचिण्ड > छ० चचेंड़ा।

चट—क्रि० वि० (चट की ध्वनि के साथ, शीघ्रतापूर्वक)–सं० चट।

चटक[1]—पुं० ('चट' की ध्वनि, चटका)– सं० चट, चटत्कार > प्रा० चडक्क > हिं० चटक, चटका।

चटक[2]— स्था० प्र०, वि० (चटकीला, फुर्तीला)–सं० चटुल > प्रा० चडुल।

चटकना—क्रि० (चिटकना, 'चिट' शब्द करके टूटना)–सं० चट् > चटकना।

चड़चड़—पुं० (सूखी लकड़ी के टूटने या जलने का शब्द)–सं० प्रा० चडचड।

चढ़ना—क्रि० (नीचे से ऊपर को जाना)– सं० आरूढ़ > प्रा० चडिअ > अप० चडइ (महा०) > चढ > हिं० चढ़ना। तुल० पं० चढणा (चढ्णा), उर्दू चढ़ना, सिं० चढ़णु म० चढणें, गु० चढवुं।

चतुरंगिणी— स्त्री० (चार अंगों वाली सेना)– सं० चतुरङ्गिणी > प्रा० चउरंगिणी, चउरंगि।

चतुराई—स्त्री० (निपुणता, होशियारी)– सं० चातुर्य > चतुरइअ > चतुरइ > चतुरई > चतुराई।

चना— पुं० (एक प्रसिद्ध अन्न, बूट, छोला)–सं० चणक > प्रा० चणअ > हिं० चना। म० पं० ह० गु० चणा, ने० चना।

चनिया—स्त्री० (पेटीकोट की तरह का एक पहनावा, साध्वियों का पहनने का कटि वस्त्र)–सं० चलनिका > प्रा० चलणिआ, हिं० चनिआ।

चपटा—वि० (समतल)– सं० चर्पटः (स्फारविपुले, विश्वमेदिनी कोश) > हिं० चपटा। गु० चापट, सिं० चापारो।

चपरि—क्रि० वि० (शीघ्रता में, फुरती से, चपलता से)– सं० चपल > अवधी चपरि।

चपाती—स्त्री० (रोटी)– सं० चर्पटी > प्रा० चप्पटी > हिं० चपाती। बं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चापाती, गु० चपाती।

चपेड़—पुं० (थप्पड़)–सं० चपेट>प्रा० चपेटा (पाइअ०)>अप० चवेड>हिं० चपेड़।

चप्परि[1]—क्रि० (आक्रमण करना)–सं० आ+क्रम का धात्वादेश चप्प, अव० चप्परि।

चप्परि[2]— पुं० हिं०, क्रि० वि० (बलपूर्वक)–प्रा० चंपण।

चप्पा— पुं० (१-छोटा भूमि-खंड, २-थोड़ा या छोटा भाग)–सं० चतुष्पाद> प्रा० चउपाय>हिं० चप्पा।

चप्पू— पुं० (एक प्रकार की डाँड जो पतवार का भी काम देती है)– फा० चपः।

चबाना—क्रि० (दाँतों से कुचलना)–सं० चर्वण>प्रा० चब्बण> हिं० चबाना। तुल० सिं० चबाइणु, बं० चिबानो, अस० चोबा (सोबा), ओ० चोबेइबा।

चबूतरा—पुं० (चौतरा, बैठने के लिए चौरस बनाई हुई ऊँची जगह)– सं० चत्वर>चउत्थर>चौथर, चबुत्थर> हिं० चबूतरा।

चमक—स्त्री० (प्रकाश, रोशनी)– सं० चमत्कृत>चमक्किअ>चमक्कअ>प्रा० चमक्क>हिं० चमक।

चमकना—क्रि० (प्रकाशित होना)–सं० चमत्करणं, (सं० चमक=राजत्, मो० वि०) प्रा० चमक्केइ>हिं० चमकना। सिं० चमक।

चमचा— पुं० (एक प्रकार की छोटी हल्की कल्छी, खाने का पात्र विशेष)–तु० चम्चः।

चमड़ा—पुं० (चर्म, त्वचा)–सं० चर्मन् प्रा० चम्म>अप० चम+डा (प्र०) >हिं० चमड़ा। तुल० सिं० चमड़ो, म० चामडें, गु० चामडुं (चाम्डुँ), बं० चामड़ा, अस० चामरा।

चमार—पुं० (एक जाति जो चमड़े का सामान बनाती है)–सं० चर्मकार>पा० चम्मकारो > प्रा० चम्मआर > हिं० चमार।

चमेली— स्त्री० (झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिए प्रसिद्ध है)– सं० चम्पकवल्लि> प्रा० चंपावल्लि> हिं० चमेली।

चरक[1]—स्त्री० (एक प्रकार की मछली)– सं० चरकी।

चरक[2]— पुं० (कुष्ठ का दाग)–सं० चक्र।

चरक्का—पुं० (घाव, चोट)–फ़ा० चरकह्।

चरख— पुं० (चाक, पहिए के आकार का)–फ़ा० चर्खः।

चरखी[1]— स्त्री० (पहिए की तरह घूमने वाली वस्तु)–सं० चक्री>ह० चरखी।

चरखी[2]— स्त्री० (कपास ओटने की चरखी)–फ़ा० चर्खी।

चरन—पुं० (पग, पैर)–सं० प्रा० चरण >अप० चलण>हिं० चरन।

चरना— क्रि० (पशुओं का खेतों या मैदानों में घूमघूम कर घास चारा आदि खाना)–सं० पा० चरति>प्रा० चरिअ, चरई>हिं० चरना। बं० चरा, ओ० चरिबा।

चरम—पुं० (चर्म, चमड़ा)– सं० चर्मन् >प्रा० चम्म>हिं० चरम।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरस— पुं० (गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चेप जो नशीला होता है)–फ़ा० चर्स। पं० चरस, सिं० चरसु, गु० म० चरस।

चरी— स्त्री० (पशुओं का चारा)–सं० चारि (चर्+णिच् प्र०) (चरिः= जीव जन्तु)>प्रा० चारि>हिं० चरी।

चलता— क्रि० (प्रस्थान करता)–सं० चलन>प्रा० चलन्ते > हिं० चलता, चलतो। (सं० चलति>प्रा० चल्लइ, चलइ)। तुल० पं० चलणा, म० चालणें गु० चालवुं।

चलनी—स्त्री० (छलनी)–सं० चालनी> >प्रा० चालणी>हिं० चलनी।

चला— क्रि० (प्रस्थान किया)– सं० चलितः> प्रा० चलिओ>अप० चलन्त, चलन्ता>हिं० चलता, चला।

चलिहौं[१२]— क्रि० (निश्चयार्थ क्रिया चलना)–सं० चलिष्यामि>प्रा० चलिस्सामि>अप० चलिस्सउं, चलिहिउं> ब्र० चलिहौं।

चलूँ—क्रि० (चलना, गमन करना)– सं० चलामि>प्रा० चलमु>चलाम> चलावँ>चलाउँ>अप० चलउ, चलउं >चलूँ।

चलें[११]—क्रि० (चलना क्रि० का आज्ञा रूप)–सं० चलामः>प्रा० चालामो> अप० चलहुं>चलें।

चलो, चलौ—क्रि० (एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना)– सं०√चल्+क्त= चलित>प्रा० चलितो, चलिदो, चलियो >अप० चल्यो>हिं० चलौ।

चवचव— पुं० (चव-चव की आवाज, ध्वनि-विशेष)–सं० प्रा० चवचव।

चश्मा—पुं० (ऐनक)–फ़ा० चश्मक।

चहकना—क्रि० (चहचहाना)– फ़ा० चहचहः। तुल० पं० चहकणा, उर्दू चहचहाना।

चहुँ—वि० (चार, चारो)–सं० चतुस्> प्रा० चउ>अप० चहु>हिं०'चहुँ।

चाँक[९]—पुं० (गोल ढेर, खलियान की अन्न की राशि पर डाला हुआ चिह्न)– सं० चक्र>प्रा० चक्क>चाँक।

चाँचरि—स्त्री० (एक लोक गीत)–सं० चर्चरी>प्रा० चच्चरी > चाचरी > चाँचरि।

चाँटा—पुं० (तमाचा, कराघात, थप्पड़, झापड़)– सं० प्रा० चपेटा>चएटा> चाटा>चाँटा।

चाँड, चाड़— स्त्री० (प्रचंडता, उग्रता, बलवत्ता, तीक्ष्णता)–सं० चण्ड>अवधी चाँड।

चाँद—पुं० (चंद्रमा)–सं० चन्द्र>प्रा० चंद>हिं० चाँद।

चाँदनी[१]— स्त्री० (बिछाने की बड़ी चादर)–फर्श-ए-चंदनी (चंदन के रंग का फर्श जिसे पहली बार नूरजहाँ ने चलाया था)>चाँदनी।

चाँदनी[२]— स्त्री० (चंद्रमा का प्रकाश)– सं० चन्द्रिका>प्रा० चंदिआ, चंदिण> चन्दिणी>चाँदणी>हिं० चाँदनी। गु० चांदरणुं, म० चांदणें, बं० चांदनी।

चाक— पुं० (पहिए की तरह का वह गोल पत्थर जो एक कील पर घूमता है और जिस पर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं)– सं० चक्र>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पा० प्रा० चक्क>हिं० चाक।

चाकर—पुं० (सेवक)–फ़ा० चाकर।

चाखना—क्रि० (चखना)– सं० चषति (√चष्)>प्रा० चक्ख, चक्खण>हिं० चाखना।

चाटा—पुं० (वह बर्तन जिसमें कोल्हू का पेरा हुआ रस इकट्ठा होता है)–पा० चाटि>हिं० चाटि, चाटा।

चाटी—स्त्री० (मिट्टी की मटकी जिसका दल खूब मोटा हो)–सं० √चटे (आवरण के अर्थ में, सिद्धान्त कौमुदी) प्रा० चट्टु, चट्टुअ>हिं० चाटी। पं० चाट्टी।

चाड़ू (पद०)— वि० (चाटुकार, प्रियभाषी)–सं० चाटुक> प्रा० चाडुअ> चाडू>चाड़ू।

चाडू—वि० (तेज, प्रखर, अधिक)–सं० चण्ड>प्रा० चंड>हिं० चाडू।

चाब—स्त्री० (चावना)–सं० चर्व>प्रा० चब्ब>हिं० चाव।

चाबना— क्रि० (दाँतों से कोई कड़ी चीज खाते समय दबाना)–सं० चर्वण> प्रा० चब्बण>चाबना। तुल० चिथणा, कश्मी० चापुन, सिं० चबाइणु, गु० चाववुं, बं० चिबानो।

चाम—पुं० (चमड़ा, खाल)–सं० चर्म >प्रा० चम्म>हिं० चाम।

चार— वि० (तीन और एक)–सं० चत्वारः>प्रा० चत्तारो, प्रा० चत्तारि >चतुआरि>चउआरि> अप० चारि >हिं० चार।

चारी— वि० (चलने वाला)– सं० चारिन्>प्रा० चारी, चारि।

चारीआ— क्रि० (गमन करते थे)–सं० चारिन्> प्रा० चारी +आ > अव० चारीआ।

चालसूं[१५]— क्रि० (भविष्य काल में चलना)–सं० चलिष्यामि>प्रा० चलिस्सामि, चलिस्सम>चालसूं (वो०)।

चालीस— वि० (बीस और बीस की संख्या)–सं० चत्वारिंशत्>पा० चत्तालीसं>प्रा० चत्तालीसा, चत्तालीस> अप० हिं० चालीस। तुल० पं० चाली, गु० चाळीस।

चावल— पुं० (एक प्रसिद्ध अन्न, तंडुल)– प्रा० चाउल>अप० चाउला (दे० ना० मा०)>हिं० चावल।

चाष—पुं० (नेत्र)–सं० चक्षुस्>पा० चखुक>प्रा० चक्खु>हिं० चाष।

चाषु— पुं० (नीलकण्ठ पक्षी)–सं० चाषः>प्रा० चास>अवधी चाषु।

चास—स्त्री० (चाशनी)–फ़ा० चास।

चाह— स्त्री० (चाहना, इच्छा)–सं० उत्साह>प्रा० उच्छाह>अप० उछाह, छाह, चाह।

चाहे—समुच्चय बोधक अव्य० (यदि जी चाहे, यदि मन में आये)–सं० चक्षते> प्रा० चाहई>हिं० चाहे।

चिआँ — पुं० (इमली का बीज)–सं० चिञ्चा>प्रा० चिंचा>हिं० चिआँ।

चिघाड़—स्त्री० (किसी के सहसा उत्तेजित होकर बहुत जोर से चिल्लाने की ध्वनि, हाथी का बहुत जोर से चिल्लाना, चीख)–सं० चीत्कार>प्रा० चीहाडी> हिं० चिघाड़, ह० चिघाड़्।

चिंडाल—वि० (बहुत ही निकृष्ट तथा नृशंस काम करने वाला)–सं० चण्डाल>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा०चंडाल>हिं० चिंडाल, ह० चिंडाल्।

चितना — क्रि० (चिन्ता करना)–सं० चिन्तय्>प्रा० चित>अप० अव० चित चितइ>हिं० चित+ना> (प्र०)।

चिउरा, चिवडा— पुं० (चौले, एक प्रकार का चबेना जो उबाले हुए धान को कूटने से बनता है)–सं० चिपिटकः (अमरकोश)।

चिकना—वि० (जो छूने में खुरदरा न हो)–सं० प्रा० चिक्कण>चिकना। तुल० ओ० चिक्कण (चिक्कॉणॉ)।

चिखुर—पुं० (गिलहरी, चिखुरा)–सं० चिक्कर।

चिचियाना—क्रि० (चीत्कार करना, बार-बार जोर-जोर से चिल्लाना)–सं० प्रा० चिच्चि>हिं० चिचियाना।

चिड़िया—स्त्री० (मादा गौरैया)–सं० चटिका > प्रा० चडिआ, चिडिआ> चिड़िआ>हिं० चिड़िया। गु० चिडियुँ, पं० चिरी।

चितउर — पुं० (चित्तौर, चित्तौड़)–सं० चित्रकूट>चितउड़ > चितउर > चित्तौड़।

चितकबरा—वि० (रंग बिरंगा या धब्बों वाला)–सं० चित्रकर्बुर > प्रा० चित्त-कब्बुर>चित्तकब्बर>हिं० चितकबरा।

चितला—वि० (विभिन्न रंगों अथवा धब्बों वाला, चितकबरा)–सं० चित्रल >प्रा० चित्तल>हिं० चितला।

चितेरा—पुं० (वह जो चित्र अंकित करने या बनाने का काम करता हो)–सं० चित्रकार>प्रा० चित्तयर>हिं० चितेरा। तुल० गु० चितारो पं० चितेरा, सिंह० सितिएर।

चिनिगि[1]—(पद०) स्त्री० (चिंगारी)–सं० चिणाग्नि (चिणी=चिंचा) >प्रा० चिणग्गि>चिनिगी>चिनिगि।

चिन्नामित्त—पुं० (देवताओं के चढ़ाने के काम का एक पेय पदार्थ जो दूध, दही, घी, शहद और तुलसी के पत्तों सहित बनाया जाता है)–सं० चरणामृत>प्रा० चरणामय, हिं० चिन्नामित्त।

चिपटा—वि० (जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो)–सं० चिपिट+क >प्रा० चिविडअ>हिं० चिपटा।

चिमटा—पुं० (एक औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़ कर उठाते हैं)–सं० संदंशः>प्रा० संडास> सँडसा>सणटा>सिमटा> चिमटा। तुल० सिं० चिमटो, अस० चेपेना, ओ० चिमुटा, पं० उर्दू म० बं० क० चिमटा।

चिरौटा—पुं० (चिड़ा, नर चिड़िया, चिड़िया का छोटा बच्चा)–सं० चटक+ पोतलक>प्रा० चडय+ओला>चड़ोला >चरौटा>हिं० चिरौटा।

चिलकना, चिलचिलाना—क्रि० (रह-रह कर चमकना)–प्रा० चिल्लड, चिल्लल> चिल्लिय>हिं० चलचिलाना, चिलकना।

चिलका — पुं० (नवजात शिशु)–प्रा० चिल्ल>हिं० चिलका।

चिल्ला[1]—पुं० (कमान या धनुष की डोरी, प्रत्यंचा)–फ़ा० चिल्लः। तुल० त० चिलइ, मल० चिल।

चिल्ला[2]—पुं० (चालीस दिन का समय, चालीस दिन में होने वाला काम)–फ़ा० चिल्लः।

चिलवाँस—पुं० (चिड़िया पकड़ने का

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फंदा)–प्रा० चिल्ला+पास>चिल्लवास >चिल्हवांस, चिलवाँस।

चिहुर—पुं० (बाल)–सं० चिकुर>प्रा० >चिहुर>हिं० चिहुर।

चीता[1]—पुं० (रेंडी का पेड़)–सं०चित्रक >प्रा० चित्तअ>चीता।

चीता[2]—पुं० (एक हिंसक पशु)–सं० चित्रक>प्रा० चित्तग>चितअ>चीता।

चीता[3]—पुं० (चित्त) – सं० प्रा०चित्त।

चीता[4]—पुं० (संज्ञा, होश)–सं० चेतस् >प्रा० चेयस, चेअ>चीता।

चीरना — क्रि० (फाड़ना, विदीर्ण करना)–सं० चीर्ण।

चुंगी—स्त्री० (वह महसूल जो शहर के भीतर आने वाले बाहरी माल पर लगता हो)–सं० शुल्क, द्रविड़ भाषाओं में सुंक प्रचलित, जिसका बिगड़ा रूप चुंगी।

चुअइ—क्रि० (चूना)—सं० च्योतति।

चुक्क,चुक्कइ — क्रि० (चूकना, भ्रष्ट होना)–सं० भ्रंश का धात्वादेश >प्रा० चुक्क, चुक्कइ।

चुटकी—स्त्री० (अँगूठे और बीच की उँगली की वह स्थिति जो दोनों को मिलाने या एक को अन्य पर रखने से होती है)– सं० चप्पुटिका>प्रा० चप्पुडी >हिं० चुटकी। त० चिटिक्कइ, क० चिटकु, चिटुकु, ते० चिटिक।

चुटिया—स्त्री० (वेणी)–सं० चूडिका> प्रा० चोट्टी>हिं० चुटिया।

चुनना—क्रि० (चुनना, एक-एक करके इकट्ठा करना, बीनना)–सं० चिनोति> प्रा० चिण>अप० चुणइ>हिं० चुन+ ना, छ० चुन।

चुनी[1]—स्त्री० (दालों को दलने पर जो छोट-छोटी कनी छाँट-फटक कर अलग कर ली जाती है)–सं० चूर्णिका>प्रा० चुणिणआ>अप० चुन्निआ>हिं० चुनी।

चुनी[2]—स्त्री० (मानिक या किसी रत्न का बहुत छोटा टुकड़ा)–सं० चूर्णिका> प्रा० चुण्णिआ>हिं० चूनी।

चुनौटी—स्त्री० (डिबिया की तरह का वह बरतन जिसमें पान लगाने या तम्बाकू में मिलाने के लिए गीला चूना रखा जाता है)–सं०चूर्णपात्री>प्रा० चुण्णपत्ती > चुण्णअट्टी>चुणवट्टी> चुण्णउट्टी> हिं० चुनवटी >भो० चुनौटी।

चुपड़ना—क्रि० (किसी वस्तु के तल पर किसी चिकने पदार्थ का लेप करना)–प्रा० चोप्पड (पाइअ०) >हिं० चुपड़ना।

चुलबुलाना—क्रि० (उमंग, यौवन आदि के कारण बार-बार अंग हिलाना, चंचलता या चपलता दिखाना, किसी भाव या विचारादि का मन से बाहर निकलने के लिए मचलना)–प्रा० चुलचुल>हिं० चुलचुलाना, चुलबुलाना, चुलमुलाना।

चुलुंपा—स्त्री० (बकरी)–सं० चुलुम्पा।

चुल्लू—पुं० (गहरी की हुई हथेली जिसमें भर कर पानी पी सकें)–सं० चुलुक>प्रा० चुलुअ>हिं० चुल्लू।

चुहना—क्रि० (दाँतों में दबाकर किसी वस्तु के रस को चूसना)–सं० चूषण।

चूक—स्त्री० (चूकने की क्रिया या भाव, भूल) सं०–च्युत+क>प्रा० चुक्क> हिं० चूक, चूके, छ० चूके।

चूची—स्त्री० (स्त्री के स्तन, चूची के ऊपर की घुँडी)–सं० चूचुक, चूचूक>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० चुंचूय>हिं० चूची।

चूड़ा—स्त्री० (चोटी, शिखा)–सं० चूडा >प्रा० चूला, चूडा, हिं० चूड़ा।

चूड़ामनि—पुं० (एक विशेष शिरोभूषण, शिरोरत्न, सीसफूल, टीका)–सं० चूडामणि >प्रा० चूलामणि>हिं० चूड़ामनि।

चून—पुं० (चून, आटा, पिसान, चूर्ण)–सं० चूर्ण>प्रा० चुण्ण>अप० चुण्णो> हिं० चून।

चूना[1]—क्रि० (टपकना, रसना) – सं० च्यवन।

चूना[2]—पुं० (एक प्रकार का तीक्ष्ण क्षार भस्म जो पत्थर, कंकड़ आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूँक कर बनाया जाता है)–सं० चूर्ण>प्रा० चुण्ण>हिं० चूना। तुल० गु० चूनो, बं० अस० चून।

चूम—क्रि० (चूमना)–सं० चुम्ब्>पा० प्रा० चुंब>अप० चुम्व>हिं० छ० चूम। गु० चुमवूँ, म० चुंब (णें)।

चूमना—क्रि० (चुंमा लेना)–सं० चुम्बन >प्रा० चुंबण>(सं० चुम्बति>प्रा० चुबंइ) >हिं० चूमना।

चूर—पुं० (किसी पदार्थ के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े जो उस पदार्थ को खूब तोड़ने कूटने आदि से बनते हैं)–सं० चूर्ण>प्रा० चूर।

चूल्हा—पुं० (मिट्टी या लोहे आदि का बना हुआ पात्र, जिस पर नीचे आग जलाकर भोजन पकाया जाता है)–सं० चुल्लि(अमरकोश)>प्रा० चुल्लि>अप० उल्ली (दे० ना० मा०)>हिं० चुल्ही, चुल्हा। पं० चुल्ह म० चूल, गु० चूलो, ने० चुलि।

चेला—पुं० (शिष्य, वह जिसने कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो)–सं० चेट+क > प्रा० चेडअ, चेडा>अप० चेल्लु>हिं० चेला।

चैत—पुं० (एक महीने का नाम)–सं० चैत्र>प्रा० चइत्त>हिं० चैत।

चोंच—स्त्री० (पक्षियों के मुँह का अग्र भाग जो हड्डी का होता है)–सं० चञ्चु >प्रा० चंचु>चोंचु>चोंच। गु० बं० म० चोंच।

चोआ—पुं०(जमीन के नीचे से निकलने वाले पानी का स्रोत)–सं० चूतक (कुएँ का स्रोत)(दे०, मो० वि०–छोटा कुआँ)।

चोखा—वि० (अच्छा, सबमें चतुर और श्रेष्ठ, शुद्ध, उत्तम, सच्चा और ईमानदार)–सं० चोक्ष+क>प्रा० चोक्खअ> अप० चोक्खा>चोखा। बं० चोख्, सिं० चोखो।

चोट—स्त्री० (आघात, प्रहार, मार, एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का वेग के साथ टक्कर)–सं० चुट>प्रा० चोत्त> हिं० चोट।

चोटी — स्त्री० (शिखा)–सं० चूड़ा> प्रा० चोट्टी>अप० चोट्टी (दे० ना० मा०)>हिं० चोटी।

चोट्टा — पुं० (चोर)–सं० चोरक> प्रा० चोरग>चोरट>हिं० चोट्टा।

चोत्था—वि० (क्रम या गिनने में चार की जगह पड़ने वाला)–सं० चतुर्थ>प्रा० चउत्थ>हिं० चोत्था, चौथा।

चोथी—वि० (चार की जगह पड़ने वाली)–सं० चतुर्थी>प्रा० चउत्थी> चोत्थी>हिं० चोथी।

चोरी—स्त्री० (चोरी करने की क्रिया या भाव)–सं० चौर्य>प्रा० चोरिअ> (चौर्य>चोरिअं)>हिं० चोरी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चोली—स्त्री० (स्त्रियों का एक पहनावा जो अँगिआ से मिलता-जुलता होता है)—सं० चेलिका > प्रा० चोल्लिआ, चेल्लअ > चोल्लिआ > हिं० चोली।

चौंक—स्त्री० (वह चंचलता जो भय, आश्चर्य या पीड़ा के अचानक उपस्थित हो जाने पर हो जाती है)—सं० चमत्कृत > प्रा० चमक्किअ > चवक्कि, चवँकि > चौंका।

चौंतरा—पुं० (चबूतरा)—सं० चत्वर + क > चउत्तरअ > चौतरअ > हिं० चौंतरा।

चौंतीस— वि० (तीस और चार)—सं० चतुस्त्रिंशत् > चतुत्तिस > चउत्तीस > चौंतीस।

चौंसठ— वि० (साठ और चार)—सं० चतुष्षष्टि > पा० चतुसट्ठि > प्रा० चउसट्ठि > अप० चउसट्ठि, चउसठि > हिं० चौंसठ।

चौंरी—स्त्री० (काठ की डाँड़ी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आता है)—सं० चामर > चँवरी > चौंरी।

चौक[1]— पुं० (नगर का चौराहा, चौहट्टा)—सं० चतुष्क > प्रा० चउक्क > अप० चउक्क (दे० ना० मा०) > हिं० चौक। ह० चोंक्।

चौंक[2]—पुं० (आँगन, छोटा चौक)—सं० चतुष्किका > प्रा० चउक्किआ > हिं० चौक। पं० बं० म० चौक।

चौकड़ी—स्त्री० (चार चीजों का वर्ग या समूह)—सं० चतुः + कृतिका।

चौकन्ना— वि० (जो काम लगाकर चारों ओर की आहट लेता रहे, चौकस, सावधान, आशंकित)—सं० चतुष्कर्ण > प्रा० चउकण्ण > चौकन्नअ > चौकन्ना।

चौकी— स्त्री० (काठ या पत्थर का चौकोर आसन, जिसमें चार पाए लगे हों, चौकोर मँचिया)—सं० चतुष्किका > प्रा० चौक्किआ > चउक्किआ > चउक्की > चौकी।

चौकोर—वि० (जिसके चारों कोने या पार्श्व बराबर हों)—सं० चतुष्कोण > प्रा० चउकोण > हिं० चौकोर।

चौखट—स्त्री० (द्वार पर लगा हुआ चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं)— सं० चतुर्काष्ठ > प्रा० चउकट्ठ > चउक्खट्ट > चोक्खट, चौकट, चौखट, ह० चोक्खट्। तुल० पं० चौखटा, गु० चोकडुं, ओ० चउकाठ, अस० चौकाठ।

चौघड़ा—पुं० (वह डिब्बा या बरतन जिसमें अलग-अलग कामों के लिए चार अलग-अलग खाने या घर बने हों)—सं० चतुर्घट > चौघड़ा।

चौतीस—वि० (तीस और चार)—सं० चतुस्त्रिंशत् > प्रा० चोत्तीसम् > हिं० चौतीस। पं० चौत्ती, बं० ओ० चौत्रीस।

चौथ— स्त्री० (प्रतिपक्ष की चौथी तिथि)—सं० चतुर्थी > प्रा० चउत्थि > हिं० चौथ।

चौथा—वि० (क्रम में चार के स्थान पर पड़ने वाला, तीसरे के उपरान्त का)—सं० चतुर्थकः > प्रा० > चउत्थओ > चउत्थअ > चउत्था > चउत्थ > चोत्थअ > चौथा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० सिं० चोथों, म० चौथा, गु० चोथो।

चौथाई—पुं० (चौथा भाग)–सं० चतुर्थिक>प्रा० चउत्थिअ>हिं० चौथाई।

चौदस— स्त्री० (वह तिथि जो किसी पक्ष के चौदहवें दिन होती है)–सं० चतुर्दशी>प्रा० चउद्दसि>हिं० चौदस।

चौदह—वि० (दस और चार)– सं० चतुर्दश>पा० चतुद्दस>प्रा० चउद्दह> हिं० चौदह। सिं० चोदाहा, म० गु० चौदा।

चौपड़—स्त्री० (चौसर नामक खेल)– सं० चतुष्पट>प्रा० चउप्पट> चउप्पड >चोपड़>हिं० चौपड़।

चौपाया—पुं० (चार पैरों वाला पशु)– सं० चतुष्पद>प्रा० चउप्पाव, चउपय> हिं० चौपाया।

चौपार—स्त्री० (चौपाल, दीवान खाना, बैठने का स्थान)–सं० चतुष्पाल>प्रा० चोप्पाल>चउपाल> चउपार > हिं० चौपार, चौपाल।

चौपारी—स्त्री० (चौपाल)–सं० चतुःपालि>प्रा० चोप्पालि> चौपारि > चौपारी।

चौबारा—पुं० (कोठे के ऊपर की वह कोठरी जिसके चारों ओर दरवाजे हों)– सं० चतुर्द्वार>प्रा० चोवालय> अप० चोव्वारो>हिं० चोवारा, चौबारा।

चौबीस— वि० (बीस और चार की संख्या)–सं० चतुर्विंशति>प्रा० चउवीस चव्वीस, चौव्वीस> चउब्बीस > हिं० चौबीस। गु० म० चोवीस, बं० चब्बीस।

चौबे—पुं० (ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा)– सं० चतुर्वेदी>चउव्वेदी > चउव्वे>चउवे>हिं० चौबे।

चौमासा— पुं० (वर्षा ऋतु के चार महीने आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन)–सं० चातुर्मासिक>प्रा० चाउम्मासिअ, चउमासिअ >चोमासा> हिं० चौमासा। ह० चुमास्सा।

चौमासी—स्त्री० (चार मास, चौमासा, आसाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीनों से संबन्ध रखने वाला)– सं० चातुर्मासी> प्रा० चाउम्मासी>हिं० चौमासी।

चौमुखा—वि० (चार मुँहों वाला)–सं० चतुर्मुख>प्रा० चउम्मुह>अप० चउमुह>चोमुह>हिं० चौमुखा।

चौरंगी—स्त्री० (चौराहा)–सं० चतुरङ्गिन्>प्रा० चउरंगि>हिं० चौरंगी।

चौरा—पुं० (चबूतरा, चौतरा)– सं० चत्वरक>प्रा० चउरअ>हिं० चौरा।

चौरानवे—वि० (नब्बे और चार)–सं० चतुर्नवति>पा० चतुनवुति>प्रा० चउण्णवइ > अप० चउराणवइ > हिं० चौरानवे।

चौरासी—वि० (अस्सी और चार)– सं० चतुःशीति >पा० चतुरासीति > प्रा० चउरासी>प्रा० अप० चउरासी >चोरासी>हिं० चौरासी।

चौरासीवाँ—वि० (८४ वाँ)–सं० चतुरशीतितम>प्रा० चउरासीइम> हिं० चौरासीवाँ।

चौवन—वि० (पचास से चार अधिक की संख्या)– सं० चतुःपञ्चाशत्>पा० चतुपण्णास>प्रा० चउप्पण, चउवण्ण>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अप० चउवण > हिं० चौवन।

चौवाई[५]—स्त्री० (पूस और माह मास में चारों ओर से लपेटा सा मारती हुई ठंडी हवा, चारों ओर से बहने वाली हवा)–सं चतुर्वात > चउवाय > चउवाई > चौवाई, चौबाई।

चौवालीस— वि० (चालीस मे चार अधिक)– सं० चतुःचत्वारिंशत् > पा० चोत्तालीसति, प्रा० चतुचत्तालीसति, चउव्वालीस > हिं० चौवालिस, चौवालीस।

चौसठ— वि० (साठ और चार)–सं० चतुःषष्टि > प्रा० चाउसट्ठि > हिं० चौसठ। म० चौसष्ट, गु० चोसठ।

चौसर[१]— पुं० (चार लड़ों का हार, चौलड़ी)– सं० चतुस्सारि > प्रा० चउसार, चउसर > हिं० चौसर।

चौसर[२]— स्त्री० (चौपड़)–सं० चतुस्सारि > प्रा० चउसर > हिं० चौसर।

चौसल्ला—पुं० (आँगन के चारों ओर चार दालान)– सं० चतुःशाला > प्रा० चोसाला > हिं० चौसल्ला।

चौहट्टा—पुं० (चौहट, चौहट्टा, चोहटा, मुख्य बाजार, चौराहा)–सं० चतुर्हट्ट > प्रा० अव० चौहट्ट > चौहट्टा > चौहट > चौहटा। टिप्पणी—कबीर ने 'चौहटै' का प्रयोग किया है।

चौहता—वि० (जिसका नपना (व्यास) चार हाथ का होता है)–सं० चतुःहस्तक > चउहत्थअ > चौहत्था > हिं० चौहता।

चौहत्तर—वि० (सत्तर और चार)–सं० चतुःसप्तति > पा० चतुसतति > प्रा० चोवत्तरि > चउहत्तरि > हिं० चौहत्तर।

चौहद्दी— स्त्री० (एक अवलेह जो जायफल, पिप्पली, काकड़ासिंगी और पुष्करमूल को पीस कर शहद में मिलाने से बनता है)– सं० चातुर्भद्र > प्रा० चाउहद्द + ई (प्र०) > हिं० चौहद्दी।

च्यावना—क्रि० (चुआना)–सं० च्यवन।

छ

छ—वि० (पाँच और एक)–सं० षट् > प्रा० छ > हिं० छः। पं० छे, उर्दू छै, सिं० गु० ओ० छ, बं० छॉय (छय्), अस० छयः, छ।

छइला — पुं० (सुन्दर युवक, रसिक छैला)–सं० छविमत् > प्रा० छविल्ल छयल्ल > अप० छल्ल, छइल्लो, छरल, छलिओ (दे० ना० मा०), छइल, छइला।

छकड़ा—पुं० (बैलगाड़ी)–सं० शकट > प्रा० सगड, छकड > छकड़अ > हिं० छकड़ा।

छकड़ी — वि० (छः का समूह)–सं० षट्क > प्रा० छक्क > हिं० छकड़ी।

छकना—क्रि० (तृप्त होना)–सं० चकन (चक् + कृदन्त प्र०) > ल्युट् का अन्)।

छक्का—पुं० (१- छः का समूह, २-छः अंगों या अवयवों वाली वस्तु)–सं० षट्क > प्रा० छक्क > हिं० छक्का।

छगड़ा—पुं० (बकरा)–सं० छागल + क > पा० छकल > अवधी छगड़ा (स्त्री० छगड़ी), छगरा।

छगड़ी —स्त्री० (बैलगाड़ी, लढ़ी)–सं० शकटिका > प्रा० सगडिया < हिं० छगड़ी।

छज्जा—पुं० (दीवार से बाहर निकली या बढ़ी हुई छत का भाग)–सं० छाद्यः > हिं० छाजन।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छटपटाना—क्रि० (तीव्र पीड़ा के कारण हाथ पैर पटकना, अत्यन्त विह्वल, व्यग्र या बेचैन होना)–प्रा० चडपड (पाइअ०) >हिं० चटपटाना, छटपटाना।

छठ—स्त्री० (पखवारे का छठा दिन)–सं० षष्ठ>प्रा० सट्ठ, छट्ठ>छठ।

छठा—वि० (गिनती में छः के स्थान पर पड़ने वाला)–सं० षष्ठः, सं० षष्ठकः, पा० छट्ठ>प्रा० छट्ठओ> अप० छट्ठम, छट्ठय>हिं० छठा। तुल० पं० छेवाँ, सिं० छहोँ, गु० छट्ठो।

छठी—स्त्री० (जन्म से छठे दिन की पूजा)– सं० षष्ठी >प्रा० अप० छट्ठि, प्रा० छट्ठी>हिं० छठी।

छत[1]—स्त्री० (एक घर की दीवारों के ऊपर का पटिया, चूना, कंकड़ आदि डालकर बनाया हुआ फर्श)–सं० छदि (√छद्), पा० छदन, प्रा० छत्त,>हिं० छत।

छत[2]—पुं० (घाव)–सं० क्षत।

छतिवन—पुं० (सतौना या छतिवन का पेड़, सप्तपर्णी, सप्तच्छद)–सं० सप्तपर्ण >प्रा० सत्तपण्ण, सत्तवण्ण, सत्तिवण्ण, सत्तिवन्न>अप० छत्तिवण्ण, छत्तवण्ण> हिं० छतिवन।

छत्ता—पुं० (छाता, छतरी)–सं० छत्र +क>प्रा० छत्तअ>छत्ता, छाता।

छत्तीस—वि० (तीस और छह)–सं० षट्त्रिंशत्>प्रा० सत्तिश, छत्तीसती> हिं० छत्तीस। गु० ओ० छत्रीस, पं० छत्ती ने० छत्तिस् म० छत्तीस।

छदाम—पुं० (एक पैसा का चौथा हिस्सा)–सं० षट्+द्राम>हिं० छ+ दाम।

छद्मी—वि० (बनावटी वेश धारणा करने वाला)–सं० छद्मिन्।

छन—पुं० (निमेष (पलक मारने के समय का नाम) का चौथाई भाग]–सं० क्षण>प्रा० छण>छन।

छनछेप—पुं० (सारांश)–सं० संक्षेप।

छनना—क्रि० (छोटे-छोटे छेदों से होकर आना)–सं० क्षरण।

छप्पन—वि० (पचास और छः)–सं० षट्पञ्चाशत् > प्रा० छप्पण > हिं० छप्पन। बं० छापान्न, गु० छप्पन्, म० छप्पन।

छप्पर—पुं० (कच्चे मकानों, झोंपड़ियों आदि की वह छाजन जो बाँसों, लकड़ियों तथा फूस की बनी होती है)–सं० छत्वर >प्रा० हिं० छप्पर। बं० छापर, ओ० छपर, ने० छाप्रो, म० छप्पर।

छबि—स्त्री० (शोभा)–सं० छवि>प्रा० छबि।

छबीली—वि० (शोभायुक्त)–सं० छवि-वत् > प्रा० छविल्ल, छबिल्ल, पुं० छबीला, पं० छबीला, म० छबिला। स्त्री० छबीली गु० छबिलो।

छब्बीस—वि० (बीस और छः)–सं० षड्विंशति > पा० छव्वीसति > प्रा० अप० छब्बीस>हिं० छब्बीस।

छमा—स्त्री० (क्षमा)–सं० क्षमा>प्रा० हिं० छमा।

छमाही—स्त्री० (छः महीनों का समय)–सं० षष, षट्+माह > ससमाह > छमाही। तुल० फा० शशमाही।

छयालीस—वि० (चालीस और छः)–सं० षट्चत्वारिंशत् > सच्चक्तारिंस > छत्तालिस>हिं० छयालीस।

छरहट—(पद०) पुं० (इन्द्रजाल, ऐसा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थान जहाँ लोग ठगे जाते हैं)–सं० छल + हट्ट > छरहट > छरहटा।

छलणी—स्त्री० (चलनी, आटा आदि छानने का छेदों वाला छोटा उपकरण)–सं० चालनी > प्रा० चालणी > ह० छाल्णी।

छाँद—स्त्री० (छोटी रस्सी जिससे पशुओं के दो पैरों को सटा कर बाँध देते हैं)–सं० सन्दानं (दूहते समय पशु के पैर बाँधने की रस्सी, अमरकोश, वैश्य वर्ग ९, श्लोक ७३)।

छाँदना—क्रि० (रस्सी आदि से बाँधना)–सं० सम् + √दाण्।

छाँह—स्था० प्र०, स्त्री० (छाया)–सं० छाया > पा० छाय > प्रा० छाआ, छाहा > अप० छाहि > छाँह (बो०)। फ़ा० सायः, ओ० छाइ, पं० छाँ, सिं० छाव, गु० छाँइ।

छाछ — स्त्री० (मट्ठा)–सं० छच्छिका (भा०)।

छाज[1]—पुं० (सूप, अनाज फटकने का सींक का बरतन)–सं० छाद।

छाज[2]— क्रि० (सुशोभित होना)–सं० सस्ज > प्रा० सज्ज > साज > अप० छज्जइ (महा०) > छाज।

छाजा—क्रि० (सुशोभित हुआ)–सं० सस्ज > प्रा० छज्ज > छज्जइ > छाजै > छाजना।

छात[1] (पद०)—पुं० (छत्र)–सं० छत्र > छत्त > छात।

छात[2]—स्त्री० (छत)–सं० छत्र > प्रा० छत्त, हिं० छत।

छाता—पुं० (बड़ी छतरी)–सं० छत्र + क > पा० छत्त > प्रा० छत्तऊ > छत्ता > हिं० छाता। पं० उर्दू बं० छाता, ओ० छता, पं० म० गु० छत्री।

छान — स्त्री० (छप्पर)–सं० छादन, छाजन > प्रा० छायण > छान।

छानना—क्रि० (किसी चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या किसी छेददार वस्तु के पार निकालना)–सं० चालन > प्रा० छाणण > हिं० छानना।

छानवे—वि० (नब्बे और छः)–सं० षण्णवति > पा० छन्नवुति > प्रा० अप० छण्णउइ, छण्णवइ > हिं० छानवे।

छाना—क्रि० (छाया के लिए किसी स्थान पर आवरण डालकर उसे ढकना)–सं० छादन + कृ > पा० छाद > प्रा० छायण > हिं० छाना।

छान्हि (पद०)—स्त्री० (छावनी, पड़ाव)–सं० छादन > प्रा० छयणि या छायणी > छाइनि > छानि > छान्हि। सिं० छाविणी।

छार—स्था० प्र० (जली हुई वस्तु का वह अंश जो भस्म या राख हो गया हो)–सं० क्षार, पा० छारिका > प्रा० हिं० छार। (सं० क्षारम् > प्रा० छारं)।

छाल—स्त्री० (वृक्षों आदि के तने पर का कड़ा, खुरदरा और मोटा छिलका)–सं० पा० प्रा० छल्लि > अप० छल्ली (दे० ना० मा०) > छाल। पं० छिल, गु० उर्दू छाल (छाल्), अस० छाल।

छावनी—स्त्री० (सेना का पड़ाव, सेना के ठहरने का स्थान)–सं० छादनी > पा० छायणी > प्रा० छायणिआ, छायणिया, छायणी > हिं० छावनी। ओ० छाअणी, गु० छावणी, पं० छाउणी।

छावा—पुं० (बच्चा)– सं० शावक >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० छावअ (शावकः>छावओ)>हिं० छावा।

छाहर[1]—(की०) वि० (सुन्दर)–सं० छाया (कान्ति, शोभा) > प्रा० छाया > छाहा, अप० छाह+ड (प्रत्यय), छाहड, अव० छाहर।

छाहर—पुं० (छाया)–सं० छाया>प्रा० छाहा, छाहिया, छाही>छाहर।

छिटकना—क्रि० (चारों ओर बिखरना, छितराना)–सं० क्षिप्ति >प्रा० खित्त> छित+करण>छिटकना।

छिनाल — स्त्री० (व्यभिचारी) – सं० छिन्ना (वेश्या)+आल>प्रा० छिण्णाल >हिं० छिनाल, छिनार। पं० ब० छिनाल, छिनार।

छितराना—क्रि० (बिखरना, तितरबितर होना)–सं० क्षिप्त+करण>प्रा० छित्त-करण, छित्तरण >हिं० छितराना।

छिति★—स्त्री० (भूमि)–सं० क्षिति> हिं० छिति।

छिद्रदर्शी—वि० (पराया दोष देखने वाला)–सं० छिद्रदर्शिन्>पा० छिद्द+ दस्सावी>प्रा० छिद्दंसी।

छिनरा—पुं० (व्यभिचारी पुरुष)–सं० छिन्नः+नरः (सं० छिद्) > छिनार, छिनाल, छिनरा।

छिनार—(स्त्री० छिनार, व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा स्त्री) सं०छिन्ना+नारी (सं० छिद्-छिदिर द्वैधी करणे=जो किसी चीज के दो टुकड़े करदे)>प्रा० छिण्णा +णारी>अप० छिण्णालिआ, छिण्णाली, छिण्णालो (दे० ना० मा०) छिनाल, छिनार, पू० हिं० छिनारि।

छियोलिस—वि० (चालीस और छह)– सं० षट्चत्वारिंशत>प्रा० छायालीसम् >हिं० छियालीस।

छियासी—वि० (जो संख्या में अस्सी से छः अधिक हो)–सं० षडशीति>पा० छासीति, प्रा० छडसीईअँ, छयासीइ> अप० छयासी>हिं० छियासी।

छींक— स्त्री० (नाक और मुँह से वेग के साथ सहसा निकलने वाला वायु का झोंका)–सं० क्षुत् (क्षु=छींकना, क्षौति=छींकता है)>प्रा० छिक्क> अप० छिक (महा०)>हिं० छींक।

छींट—स्त्री० (पानी या किसी द्रव पदार्थ की महीन बूँद, जल-कण)–सं० क्षिप्त>प्रा० छित्त>हिं० छींट।

छीका—पुं० (गोल पात्र के आकार का रस्सियों का बुना हुआ जाल, सीका)– सं० शिक्य + क (अमरकोश) > प्रा० सिक्कअ>छिक्कअ>हिं० छीका, छींका।

छीजा—क्रि० (छीजना, क्षीण होना, घटना, कम होना, ह्रास होना, अवनत होना)–सं० छिद्यते>प्रा० छिज्जइ> हिं० छीजना।

छीमी—स्त्री० (फली)–सं० शिम्बा।

छीर[1] — स्त्री० (छोर, किनारा)–प्रा० छिरा, हिं० छोर।

छीर[2]—पुं० (१- जल, पानी, २- दुग्ध, दूध)–सं० क्षीर>प्रा० हिं० छीर।

छीलर—पुं० (तलैया, पानी से भरा हुआ छोटा गड्ढा) – प्रा० छिल्लर (पाइअ०)>हिं० छीलर।

छुआना—क्रि० (छूना)–सं० स्पृश>प्रा० छुव, छुअ>अप०छिवइ (महा०)>हिं०

Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छुआना।

छुरा—पुं० (वह हथियार जिसमें एक बेंट में लोहे का एक धारदार लम्बा टुकड़ा लगा रहता है)–सं० क्षुर+क> प्रा० छुरअ (सं० क्षुरम्>प्रा० छुरं) >हिं० छुरा।

छुरी—स्त्री० (काटने या चीरने फाड़ने का छोटा हथियार)–सं० क्षुरी>पा० छुरिका>प्रा० छुरी>हिं० छुरी।

छूँद—वि० (खाली, रीता, रिक्त)–सं० तुच्छय>प्रा० चुच्छ (हेम० १/२०४) >चूछ> अप० छुच्छं>छूँछ, छूँछा, स्त्री० छूँछी, छूँछि=रिक्त (पद०)।

छूँछा—वि० (जिसके भीतर कोई वस्तु न हो, खाली, रीता)–सं० तुच्छ+क> प्रा० छुच्छअ>हिं० छूछा, छूँछा।

छेंकना—क्रि० (आच्छादित करना, घेरना रोकना, लकीरों से घेरना)–सं० छेदक> छेअक>हिं० छेंक+ना० (प्र०)।

छेद[1]—पुं०(सूराख, छिद्र)–सं० छिद्र> पा० छिद्द>प्रा० छेद>हिं० छेद।

छेद[2]—क्रि० (छेदना)–सं० छेदय्>प्रा० छेद>हिं० छेद।

छेना[1]—पुं० (कंडा)–सं० शकृत (गोबर) >प्रा० छगणिया>छ० छेना।

छेना[2]—पुं० (फटे या फाड़े हुए दूध का वह गाढ़ा अंश जो उसका पानी निकाल देने पर बचा रहता है)–सं० छिन्न>प्रा० छिण्ण>हिं० छेना।

छेनी—स्त्री० (टाँकी, धातु, पत्थर आदि काटने का चौड़े फलवाला एक प्रसिद्ध उपकरण)–सं० छेदनी>प्रा० छेअणी> हिं० छेनी।

छेरी—स्त्री० (बकरी)–सं० छेलिका> छेरी (बो०)।

छैन[1]—पुं० (वह डोरा जिससे कुम्हार चाक पर से बर्तन को अलग करते हैं)– सं० छेन>प्रा० छेदअण>छैन (ज०प०)।

छैना—क्रि० (छीजना, क्षीण होना, कम होना, नष्ट होना)–सं० क्षयण>हिं० छय+ना (प्र०)।

छैनी—स्त्री० (लोहे का एक औजार)– सं० छेदनिका>छेअणिआ > छेअणी> हिं० छैनी।

छोँड़ा—पुं० (जमीन में खोदा हुआ वह गड्ढा जिसमें अनाज रखते हैं, खत्ता)– सं० चुण्डा (छोटा कुआँ, छोटा तालाब)।

छोकरा—पुं० (लड़का, बालक)– प्रा० छोक्करु, अप० छोक्कर (जसहर चरिउ) >हिं० छोकरा।

छोकरी — स्त्री० (लड़की) — प्रा० छोक्करी>हिं० छोकरी।

छोटा[1]—वि० (छोटा, तुच्छ, प्रतिष्ठा, मान आदि में औरों से घटकर होने वाला)–सं० क्षुद्र+क>प्रा० छुट्ट+अ, प्रा० छोट्ट>हिं० छोटा। पं० छोट्टा, ने० छोटो।

छोटा[2]—वि० (कनिष्ठ, सबसे छोटा)– सं० यविष्ठ>जोट्ठ>छोट्ट>छोटा। पं० उर्दू छोटा, बं० छोट(छोटो), ओ० छोट।

छोड़ना—क्रि० (त्यागना, छोड़ देना)–सं० छोरणम्>प्रा० छड्ड, छड्डण, अप० छड्डइ >हिं० छोड़ना।

छोनिप—पुं० (राजा)–सं० क्षोणिप।

छोनी—स्त्री० (पृथ्वी)–सं० क्षोणी।

छोप—पुं० (किसी गाढ़ी या गीली वस्तु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की मोटी तह)–सं०क्षेप>हिं० खेप।

छोरा—पुं० (लड़का, बालक) – सं० शोभाकर > छोहअर > छोअर>छोरा (बो०)। अथवा प्रा० छोयर > हिं० छोरा।

छोलना—क्रि० (गन्नों से पताई अलग करने की क्रिया) सं० तक्षण (√तक्ष्) >प्रा० छोल्लण>हिं० छोलना।

छोह—पुं० (ममता, प्रगाढ़ प्रेम)–सं० क्षोभ (चित्त की चंचलता, अर्थादेश की स्थिति में मूल शब्द से विकास)>प्रा० छोभ >अवधी छोह।

छौना—पुं० (पशु का बच्चा, जैसे मृग-छौना)–सं० शावक>पा० छाप >प्रा० छाव>अप० छावो>हिं० छौना।

ज

जंगल— पुं० (वन, अरण्य)– सं० पा० जङ्गल>प्रा० जंगल > हिं० जंगल। तुल० पं० उर्दू ओ० गु० जंगल, कश्मी० जंगुल्, सिं० झंगलु।

जंजाल— पुं० (प्रपंच, झंझट)–सं० जगत्+जाल> प्रा० जगजाल> हिं० जंजाल।–(पानी का भँवर)–सं० जल +जाल।

जँगला—पुं० (जंगला)–पुर्त० janela।

जँभाई—स्त्री० (मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया जो निद्रा या आलस्य आदि के कारण होती है)–सं० जम्भिका >प्रा० जंभिया >जंभाईआ, जम्हिआ >हिं० जँभाई।

जँभाना—क्रि०(जँभाई लेना)–सं० जृम्भ् >प्रा० जंभा, जंभाअ>हिं० जँभा+ना।

जइस— वि० (जैसा)–सं० यादृश> यैसण, जैसण>हिं० जइस, छ० जइ-सन।

जउ—सर्व० (जो)–सं० यत्>प्रा० जं >जओ>हिं० जउ।

जउन—सर्व० (जिन)–सं० यः+पुनः >जपुण>जउण>छ० जउन।

जकड़ना—क्रि० (कसकर बाँधना)–सं० युक्त+करण> प्रा० जुत्तकरण>हिं० जकड़ना।

जक्ष— पुं० (यक्ष)– सं० यक्ष>प्रा० जक्ख>प्रा० अप० जक्खो>हिं० जक्ष।

जग[1]— पुं० (यज्ञ)– सं० यज्ञ>प्रा० जग्ग, जग्ग>जग।

जग[2]— (जगत्, संसार)–सं० जगत्> प्रा० हिं० जग।

जगजगाना—क्रि० (चमकना, जगमगाना, जगमगाता हुआ)– प्रा० जगजग>हिं० जगजगाना। तुल० ते० जग्गु।

जगमगाना—क्रि० (जगमगाता, रह-रह कर चमकना, किसी वस्तु पर उसका प्रकाश पड़ने से उसका चमकने लगना)– प्रा० जगजग>हिं० जगजग, जगमग, हिं० जगमगर।

जगाना—क्रि० (सोये हुए को उठने में प्रवृत्त करना)– सं० जाग्रय > प्रा० जग्गावेइ>हिं० जगाना। पं० जगाउणा, गु० जगावव्वूँ।

जठर— पुं० (१- पेट, २- पेट का भीतरी भाग)–सं० जठरम्>पा० जठर >प्रा जढरं>हिं० जठर।

जड़—वि० (अचेतन, महामूर्ख, असत्य)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० प्रा० जड>जड़ ।

जड़ूला—पुं० (जड़ अर्थात् गर्भ के पैदायशी बाल, झंडूले बाल, गभुआरे बाल)—सं० जट+उल्ल>जड़उल्ल >जड़ूल+क>जड़ूला ।

जत्था— पुं० (गिरोह, एक ही वर्ग, विचार या संप्रदाय के लोगों का समूह)—सं० यूथ+क ।

जत्रा—स्त्री० (यात्रा)—सं० यात्रा>प्रा० जत्ता>जात्रा, द० हिं० जत्रा ।

जनकौरा— पुं० (जनकपुरवासी)—सं० जनकपौर>जनकौर, अवधी जनकौरा ।

जनवासा— पुं० (बरातियों के ठहरने का स्थान)—सं० जन्यवास>प्रा० जण्णवास>हिं० जनवास । म० जनिवासा, जानवासा; गु० जानवास, सिं० जनवास ।

जनेऊ—पुं० (यज्ञोपवीत)—सं० यज्ञोपवीत>प्रा० जण्णोवईय>अप० जञ्ञोइ >अव० जणेव>हिं० जनेऊ । तुल०उर्दू ज़ुननार, कश्मी० ग्योपवीत, मल० यज्ञोपवीतं, सिं० जण्यो, क० जनिवार ।

जनेत—स्त्री० (वरयात्रा, बरात)—सं० जन्ययात्रा>प्रा० जण्णजत्ता, जन्नत्ता> जन्नात>जन्नेत>जनेत ।

जनेता—पुं० (पिता)—सं० जनयितृ> पा० ज़नेतु>हिं० जनेता ।

जब— क्रि० वि० (जिस समय)—सं० यदा+एव अथवा सं० यावत् ।

जबड़ा— पुं० (मुँह में की उन दो हड्डियों में से हर एक जिसमें दाँत जमे या जड़े रहते हैं)— सं० जंभः>हिं० जबड़ा ।

जबान—स्त्री० (जिह्वा)—फ़ा० ज़बान ।

जम—पु० हिं०, पुं० (यम)—सं० यम> प्रा० जम>हिं० जम ।

जमकात—(पद०) स्त्री० (यम की तलवार, यम की कटार)—सं० यमकर्तरिका >प्रा० जमकत्तिआ> जमकातिआ> जमकाती>जमकाति> जमकात ।

जमना— क्रि० (किसी द्रव प्रदार्थ का ठंडक के कारण समय पाकर किसी प्रकार गाढ़ा होना)— सं० यमन>प्रा० जमावण>जमना ।

जमवार—पुं० (यम के द्वार तक, मृत्यु पर्यन्त)—सं० यमद्वार>जमवार ।

जमाई— पुं० (दामाद, जँवाई)—सं० जामातृ>पा० जामातु, अप० जमाई> हिं० जमाई ।

जमीन—स्त्री० (पृथ्वी)—फ़ा० ज़मीन । अवेस्ता जेमइनि । सिं० उर्दू ज़मीन, गु० जमीन ।

जमुन, जयुन★—स्त्री० (यमुना नदी)—सं० यमुना>प्रा० जउणा ।

जलना—क्रि० (अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना, दग्ध होना)—सं० ज्वलन>प्रा० जलण>हिं० जलना । पं० जलणा, सडणा; सिं० जरणु, बं० ज्वला ।

जवनिका—स्त्री० (परदा)—सं० यवनिका >पा० जवनिका>प्रा० जवणिआ> हिं० जवनिका ।

जवान—वि० (युवक)—फ़ा० जवान ।

जवार— स्त्री० (एक अन्न)— सं० यव प्रकार > प्रा० जोवारि >हिं० जुआर, जवार ।

जंवारा(१)— पुं० (जौ का घड़ा)—सं० यववारक > प्रा० जववारग > हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जवारा ।

जस—स्था० प्र०, पुं० (यश)–सं० यशस >प्रा० जसो>हिं० जस ।

जसोवै[1](पद०)—स्त्री०(यशोवती)–सं० यशोवती>प्रा० जसोवइ>जसोवै ।

जस्त—पुं० (जस्ता)–सं० प्रा० जसद> ह० जस्त् ।

जहँ—क्रि० वि० (जहाँ)–सं० यत्र> प्रा० जत्थ>अप० जहँ ।

जहाँ—क्रि० वि० (स्थान वाचक)–सं० यत्र>प्रा० जत्थ> जट्ठा> जहा> जहाँ ।

जहीं— क्रि० वि० (जहाँ ही)–सं० यस्मिन्>जस्सिन्>जहिन्>अप० स० जहिं>हिं० जहीं ।

जाँघ—स्त्री० (मनुष्यों और चौपायों के घुटने और कमर के बीच का अंग)–सं० पा० जङ्घा>प्रा० जंघा> हिं० जाँघ, जांघ, जंघा । उर्दू जाँघ, ओ० जंघ ।

जाई—स्त्री० (कन्या, पुत्री)–सं० जाति >प्रा० जाइ>अव० जाइ>हिं० जाई ।

जाएँ—वि० (व्यर्थ, जाय होना)–अ० ज़ाय>जाय, अवधी जाएँ ।

जाखरी— स्त्री० (नट्टिनी, नाचने वाली)–सं० यक्ष>प्रा० जक्ख>अव० जाख+ डी, जाखड़ी, अव० जाषरी (की०)>जाखरी ।

जाग[1]—क्रि० (जागना)– सं० जागृ> पा० जाग्ग>प्रा० जग्ग>हिं० जाग, गु० जागवूँ, छ० जाग ।

जाग[2]—पुं० (यज्ञ)–सं० यज्ञ ।

जागना— क्रि० (सोकर उठना)–सं० पा० जागरण > प्रा० जग्गण > हिं० जागना ।

जागे— क्रि० (जागना)–सं० जागृ> पा० जग्गति>प्रा० अप० जग्ग, अव० जग्गइ>हिं० जागे ।

जाचक—पुं० (भिक्षुक, मांगने वाला)– सं० याचक > प्रा० जायग > अव० जाइआ (की०) ।

जाजम— स्त्री० (फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर)– तु० जाजम । फ़ा० जाजिम ।

जाट— पुं० (भारत की एक प्रसिद्ध जाति)–सं० जर्त>प्रा० जट्ट (पाइअ०) हिं० जाट ।

जाड़ा—पुं० (सरदी का मौसम, सरदी, शीत)–सं० जाड्य>जाड्ड> जड्ड> हिं० जाड़ा । पं० उर्दू जाडा ।

जात—स्त्री० (यात्रा)– सं० यात्रा> प्रा० जत्ता>जात । गढ़वाली जात और जातरा ।

जादू—पुं० (अद्भुत और आश्चर्यजनक कृत्य)–फ़ा० जादू । पहलवी यातू ।

जान[1]—स्था० प्र०, स्त्री० (जानकारी, परिचय)– सं० ज्ञान>पा० ज़ानन> प्रा० जाण>हिं० जान ।

जान[2]—क्रि० (जानना)–सं० ज्ञा>प्रा० अप० अव० जाण>जान ।

जानना—क्रि० (ज्ञान प्राप्त करना)–सं० ज्ञान>प्रा० जाण>हिं० जान+ना । पं० जानणा, कश्मी० ज़ानुन्, म० जाणणें, गु० जाणवुं, ओ० जाणिबा ।

जाना— क्रि० (गमन या प्रस्थान करना)– सं० याति>जाति> जाइ> हिं० जाना । पं० जाणा, म० जाणें> गु० जावुं, बं० जावा ।

जानो—अव्य० (मानो, ऐसा जान पड़ता

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है कि)–सं० ज्ञातुम् ।

जाम—पुं० (जन्म)– सं० जन्म>अप० जम्म>जाम ।

जामात, जामाता— पुं० (जमाई, दामाद)–सं० जामातृ> (सं० जामातृकः>प्रा० जामाउओ) प्रा० जामाउ, जामाउय, जामाता । कश्मी० ज़ामतुर्, म० जावई, गु० जमाई, बं० जामाइ, ओ० ज्वाइँ ।

जामिक—पुं० (पहरेदार)–सं० यामिक >प्रा० जामिग>अवधी जामिक ।

जामुन— पुं० (एक वृक्ष)–सं० जम्बु, जम्बू>जामुन । पं० जामनु, उर्दू जामन, कश्मी० जामुन्, गु० जांबू, ओ० जामु ।

जायदाद—स्त्री० (भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो, सम्पत्ति) –फ़ा० जायदाद ।

जायफल— पुं० (एक ओषधि)–सं० जातीफलं > पा० जाति-फल > हिं० जायफल । गु० जायफल, पं० जेफल, कश्मी० ज़ाफल्, सिं० जाइफलु ।

जाली—स्त्री० (छिद्र वाला वस्त्र, किसी चीज विशेषतः लकड़ी या धातु आदि में बना हुआ बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह)–सं० जालम्>पा० प्रा० जाल> हिं० जाली ।

जावित्री— स्त्री० (एक ओषधि)–सं० जातिपत्री, (कपूरादिवर्ग, भा० प्र० निघण्टु)>हिं० जावित्री । पं० जवित्री, सिं० जाउत्री, म० जायपत्री, गु० जावंत्री, बं० जैत्री, अस० जाइपत्री, ते० जापत्रि ।

जिउ— स्था० प्र०, पुं० (जानवर, जीव)–सं० जीव>पा० जीव (आत्मा) >प्रा० जिअ>अप० अव० जिउ ।

जिठानी—स्त्री० (बड़े भाई की पत्नी)– सं० ज्येष्ठा> प्रा० जिट्ठाणी > हिं० जिठानी ।

जिठौत—पुं० (ज्येष्ठ पुत्र)–सं० ज्येष्ठ-पुत्र >प्रा० जेठपुत्त> जेठउत > जिठौत ।

जितना—वि० (जिस मात्रा का)–सं० यावत्>प्रा० जेत्तिल>जेवलो>जेवडो >जेवडु>अप० जेत्तुलौ> जितउ+ ना>हिं० जितना ।

जिन[1]—सर्व० (जिस का बहुवचन)–सं० येषां>पा० येसानं>अप० जाण, जिण >हिं० जिन्ह, जिन ।

जिन[2]—पुं० (भूत) अ० जिन ।

जिन[3]—पुं० (एक प्रकार की शराब)– अं० जिन ।

जिन[4]—पुं० (गौतम बुद्ध)–पा० जिन >हिं० जिन ।

जिन्ह, जिन्हें— सर्व० (जिस का बहुव०)–सं० येषाम्>जेहां>जिहान्> जिण्ह>जिन्ह>जिन्हें ।

जिस— सर्व०, वि० (जो का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त होने पर प्राप्त होता है)– सं० यस्य>प्रा० जस्स> जिस्स>जिस ।

जी[1]—अव्य० (आदरार्थक शब्द)–सं० आर्य>प्रा० अज्ज>अजी>हिं० जी ।

जी[2] (की०)— पुं० (प्राण, जीवात्मा, मन)–सं० जीव> प्रा० अप० जीअ> जिअ, अव० जी ।

जी[3]—क्रि० (जीना)–सं० जीव्>प्रा० जीव>छ० जी ।

जीत(1)—पुं (बड़ा हल)–सं० जित्य> जीत । बुन्देलखण्ड और रुहेलखण्ड की बोली में जीतरा (हलवाहा-मेहनती) ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीत[1]—स्त्री० (युद्ध में जीतने की अवस्था या भाव)–सं० जितम् ।

जीता— वि० (जीवित)–सं० प्रा० जीवन्त > हिं० जीता । गु० जीवतु, ओ० जिअन्ता ।

जीना—(क्रि० जीवित रहना)–सं० पा० जीवन > प्रा० जीवण, जीअण > हिं० जीना ।पं० जीणा, उर्दू जीना, सिं० जीअणु, म० जीवुवं ।

जीभ—स्त्री० (जबान, जिह्वा, रसना)–सं० जिह्वा > प्रा० जिब्भा, जिब्भया, हिं० जीभ । (सं० जिह्वा > जीहा) पं०, बं० जीभ, ओ० जिभ, गु० जीभ (जीभ्) ।

जीरा—पुं० (एक पौधा)–सं० जीरक > प्रा० जीरय > हिं० जीरा । तुल० फ़ा० जीरः ।

जुंधरी, जोंधरी— स्त्री० (मक्का, एक अनाज, बड़ी, जोन्हरी)– सं० युगन्धर ('योगरत्नाकर' आयुर्वेदिक ग्रन्थ में प्रयुक्त) > अप० जोण्णलिआ > अवधी जोंधरी, जुंधरी, हिं० जोन्हरी ।

जुअल—वि० (जोड़ा, दो)–सं० युगल > प्रा० जअल > अव० जुअल (की०) ।

जुआ[1]— पुं० (द्यूत, किसी घटना की संभावना पर हार जीत का खेल)–सं० द्यूत > पा० जूत > प्रा० जूअ > हिं० जुआ ।

जुआ[2]—पुं० (गाड़ी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धे पर डाला जाता है)–सं० यूप > प्रा० जूअ > हिं० जुआ । उर्दू जुआ, बं० जोआल्, अस० ज़ुँवलि ।

जुआड़ी— पुं० (जुआरी, जुआ खेलने वाला)–सं० द्यूतकारिन्, द्यूतकारी, पा० जुतकार, प्रा० जुआरि, जुआरिअ > जूआरी > हिं० जुआड़ी ।

जुकाम— पुं० (एक रोग जिसमें नाक या मुँह से कफ या पानी निकलता है)–अ० ज़ुकाम । कश्मी० पं० ज़ुकाम, उर्दू ज़ुकाम, सिं० ज़ुकामु ।

जुगवत— क्रि० (किसी वस्तु की रक्षा करना)–√गुयु रक्षणे से व्युत्पन्न । लिट् लकार का भूतकालिक रूप 'जुगोप' > जुगवत ।

जुगाड़—पुं० (१- कोई आवश्यक वस्तु कहीं-से लाकर उपस्थित करना, २- कोई कठिन कार्य करने की युक्ति)–सं० युक्ति > प्रा० जुत्ति > जुगत > जुगतड > जुगअड > जुगाड > जुगाड़ ।

जुगुप्सा— स्त्री० (दूसरों की की जाने वाली निंदा)–सं० जुगुप्सा > प्रा० जुगुच्छा ।

जुग्ग[1]—स्त्री० (वाहन, गाड़ी)–सं० युग्य > प्रा० जुग्ग

जुग्ग[2]— पुं० (युग)–सं० युग > प्रा० जुग ।

जुझवा(१)— (की०) पुं० (युद्ध)–सं० युद्धवत् > प्रा० जुज्झवय > अव० जुझवा ।

जुझारा(१)(पद०) (वि०)—(विशेष रूप से युद्ध करने वाला, सूरमा)–सं० युद्धकार > जुज्झआर > जुझार ।

जुझारू(१)(पद०)—वि० (लड़ने वाला)–सं० युद्धकारक > प्रा० जुज्झआरअ > जुज्झार > जूझारा, जुझार, जुझारु ।

जुतना— क्रि० (बैल, घोड़े आदि का गाड़ी में लगना)–सं० युक्तय् > प्रा० जुत्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>जुतना, जोतना।

जुन्धैया, जुन्हैया—स्त्री० (चाँदनी)–सं० ज्योत्स्ना> प्रा० जुण्हा, जुन्हा, जोन्हा, छ० जुन्धैया, हिं० जुन्हैया।

जुन्हाई— स्त्री० (चाँदनी)–सं० ज्योत्स्निका>प्रा० जोण्हा> जोण्हिआ > जुण्हिआ>हिं० जुन्हाई।

जुलाब— पुं० (दस्त)–अ० जुल्लाब, फ़ा० जुलाब।

जुलाहा—पुं० (बुनने वाला, तन्तुवाय)–फ़ा० जौलाह।

जुवइ—स्त्री० (तरुणी)–सं० युवति> प्रा० स० जुवइ।

जुवारी— पुं० (जुआरी, जुआ खेलने वाला)–सं० द्यूतकारिक>प्रा० जुआरिअ>हिं० जुआरी, जुआडी, जुवारी। तुल० अस० जुवारी, बं० जुयारि, उड़ि० जुआरि, भो० पु० जुआरी, पं० जुआरी, सिं० जुआरी।

जुहार—स्त्री० (मुख्यतः स्त्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन)–सं० जयकार>प्रा० जेक्कार (पाइअ०) > अप० जोक्कार (प० च०)>जोआर> जोहार>जुहार।

जूँ—स्त्री० (मनुष्य के सिर या कपड़ों में होने वाला एक जन्तु)–सं० यूका> पा० ऊका>प्रा० ऊआ (पाइअ०)> जुअ>जूँ। म० ऊ० ऊंट, गु० जु०, सिं० जुंआ, जूँ (स्त्री०), ह० जूम, पं० उर्दू जूँ।

जूआ—पुं० (रथ या गाड़ी के आगे हरस में बाँधी या जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कन्धे पर रहती है)–सं० युगम् >प्रा० जुअ>जूआ।

जूझ, जूझि—स्त्री० (युद्ध)–सं० युद्ध >प्रा० अप० जुज्झ>जूझ।

जूझना—(युद्ध करना, संघर्ष करना)–सं० युध्>प्रा० जुज्झ, अव० जुज्झइ>हिं० जुज्झ+ना। पुं० सं० योधन>प्रा० जुज्झण>हिं० जूझना

जूट[1]—पुं० (समूह) सं० यूथ> छ० जूट।

जूट[2]—पुं० (सिर के उलझे हुए और बड़े बालों की लट या उन्हें लपेट कर बाँधा हुआ जूड़ा)–सं०√जूट् (मिलना) >हिं० जूट।

जूठ—(खाने के बाद बचा हुआ जूठा भोजन)–सं० जुष्ट>प्रा० जुट्ठ>हिं० जूठ।

जुठार[16]—स्त्री०(जूठा, उच्छिष्ट)–सं० जुष्ट>प्रा० जुट्ठ+आ + ड> हिं० जुठार।

जूड़ा—पुं० (चुट्टा, सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ अपने बालों को एक साथ लपेटकर अपने सिर के ऊपर बाँधती हैं)–सं० जूट+क>प्रा० जूडअ>हिं० जूड़ा।

जूड़ी—स्त्री० (जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, विषम ज्वर, शीत ज्वर)–सं० जूर्ति >जुट्टि>जुडि>जूड़ी।

जूथ—पुं० (समूह)–सं० यूथ>जूथ।

जून—पुं० (समय)–सं० द्युवन्।

जूना[1]—पुं० (घास फूस का लच्छा या पूला जिससे बर्तन मांजते हैं)–वै० सं० यून+क>हिं० जूना, जोइना। गु० जूनी।

जूस—पुं० (पकी हुई दाल या उबाली

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुई चीज का रस/रसा)–सं० यूष>प्रा० हिं० जूस।

जूही—स्त्री० (चमेली की तरह का एक पौधा और उसका फूल)–सं० यूथी>प्रा० जूही अथवा यूथिका > प्रा०जूहिया > जूही।

जेंवना—क्रि० (भोजन करना, भक्षण करना, जीमना)– सं० जेमन > प्रा० जेमावण, जेमण>अप० जेंवइ (महा०) >हिं० जेंवना, जेमना। पं०जेऊणा, गु० जमवूं।

जेठ — (बड़ा, मुख्य, पति का बड़ा भाई)–सं० ज्जेष्ठ>प्रा० जिट्ठ>हिं० जेठ। तुल० गु० पं० जेठ, सिं० जेठु, बं० म० जेठ।

जेठा—(अवस्था या वय में औरों से बड़ा)–सं० ज्येष्ठ>पा० प्रा० जेट्ठ > हिं० जेठा।

जेब[1] — स्त्री० (शोभा, सौन्दर्य)–फ़ा० जेब।

जेब[2]—पुं० (खीसा, पाकेट)–अ० जेब।

जेवनार—स्त्री० (बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना)–सं० जेमन+ आहार>प्रा० जेमणाहार > जेवनाआरो>जेवनारु>जेवनार।

जैसा — वि० (जिस प्रकार का)–सं० यादृश>पा० जादिसो>जाइसो>अप० जइस, जइसअ>अव० जइसउ > हिं० जैसा।

जोंक—स्त्री० (पानी में रहने वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो अन्य जीवों के शरीर में चिपक कर उनका रक्त चूसता है)–सं० जलौका >जओक> जउक > जोंक। पं० जोक, उर्दू जोंक, बं० जोंक, ओ० अस० जोक।

जो[1]—सर्व० (एक संबंधवाचक सर्व०)– सं० यः>प्रा० यो>अप० हिं० जो। अथवा सं० यत्>प्रा० जद, जो। गु० सिं० पं० बं० जे; म० जो।

जो[2]—अव्य० समु० (यदि, मगर)–सं० यद्। अथवा सं० यदि[11] प्रा० >जद> हिं० जो।

जोइ[1]—पुं० (योगी)–सं० योगिन्> प्रा० जोइ>स० जोइ।

जोइ[2]—वि० (योग्य)–सं० योग्य>प्रा० जोग्ग>हिं० जोइ।

जोइन—स्त्री० (जोगी की स्त्री)–सं० योगिनी>प्रा० जोइणी>जोइणि>हिं० जोइन।

जोई[1] (पद०)—स्त्री० (स्त्री)सं० युवति >प्रा० जुवइ>जुअइ>जोइ, जोय।

जोखना—क्रि० (तौलना, वजन करना, जाँचना)–सं०√जुष् > अप० जोक्खइ (महा०)>हिं० जोख+ना।

जोग[1]—वि० (उपयुक्त)–सं० योग्य> प्रा० जोग्ग>हिं० जोग। पं० गु० जोग, सिं० जोगु।

जोग[2]—अव्य० (के लिए, वास्ते)–सं० योग्य>प्रा० जोग्ग>हिं० जोग।

जोगिन — स्त्री० (योग साधन करने वाली)–सं० योगिनी > प्रा० जोइणी, जोगि>जोगिन।

जोगिनी— पुं० (जुगनूं, खद्योत)–सं० ज्योतिरिङ्गण>प्रा० जोइंगण > हिं० जोगिनी, छ० जोगनी।

जोगी—पुं० (योगी)–सं० योगिन्> प्रा० जोगि>हिं० जोगी।

जोगौटा[1](पद०) —पुं० (योगी का वस्त्र, कौपीन)–सं० योगपट्ट>प्रा० जोग-पट्ट>अप० जोगवट्टु>जोगौटा।

जोड़—पुं० (गणित में कई संख्याओं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का योग)–सं० योग>प्रा०जोड>हिं० जोड़।

जोड़ना—क्रि० (गाड़ी, हल आदि के सम्बन्ध में घोड़े या बैल को लाकर आगे बाँधना, जोतना)–सं० योजय् > प्रा० जोड>हिं० जोड़ना। गु० पं० सिं० जोड।

जोड़ा—पुं० (दो समान पदार्थ)–सं० युक्त>प्रा० जुत्त>जुट>जोड > हिं० जोड़ा।

जोण—सर्व० (जो)–सं० यः पुनः>प्रा० जपुण>अप० जउण>जोण।

जोत[1]—स्त्री० (जोति, ज्योति) – सं० ज्योति>पा० जोति>प्रा० जोअ, जोअंत >हिं० जोत।

जोत[2]—स्त्री० (वह चमड़े का तस्मा या रस्सी जिसका एक सिरा जोते जाने वाले जानवरों के गले में और दूसरा सिरा उस चीज में बँधा रहता है जिसमें जानवर जोते जाते हैं)–सं० योक्त्र>प्रा० अप० जोत्त (प० च०)>हिं० जोत।

जोन्हइया—स्त्री० (चाँदनी, चंद्रिका)–सं० ज्योत्स्ना > प्रा० जोण्हा > अप० जोन्हा, जुन्ह>पूर्वी अवधी जोन्हइया।

जोबन—पुं० (युवा होने का भाव)–सं० यौवन>प्रा० जोव्वण>अप० जुव्वण> हिं० जोबन। म० जोबन।

जोवना—क्रि० (देखना)–सं० दृश् > प्रा० जो, जोअ, जोव, अप० जोइ, जोअइ। हिं० जोवना।

जोषी—पुं० (ज्योतिषी, ब्राह्मणों की एक जाति)–सं० ज्यौतिषिक (वै० सं० द्योतिष्>ज्योतिष्)>प्रा० जोइसिअ > हिं० जोषी। सिं० पं० जोसी।

जोहर—पुं० (जोहड़, छोटा तालाब, पोखर, जुहोड़)–सं० होत्रा, जंद झओथ्र, पहलवी जोहर (the consecrated water)।

जोहारना[1]—(पद०) क्रि० (प्रणाम करना)–सं० ज्योक् आकारयति> प्रा० जोहक्कारइ > जोहारइ> जोहारना। हर्षचरित की टीका में शंकर ने ज्योक क्रियामाण (विदा लेना) का प्रयोग किया किया है। उसी से इस शब्द की व्युत्पत्ति हुई।[1]

जौ—पुं० (एक विशेष अनाज)–सं० यव >प्रा० जव, जो,>हिं० जौ। पं० उ० जौ, गु० म० जव, ओ० जउ, ते० यवलु, अवेस्तन yava, फ़ा० jav, लिआथुनियन javai।

जौन[16]—पुं० हिं०, सर्व० (जो)–सं० यः पुनः>प्रा० जपुण> जउण> जवन> जौन।

जौनि—स्त्री० (मूत्र-स्थान)–सं० योनि >प्रा० जोणि>हिं० जौनि।

जौहर[1]—पुं० (युद्ध में शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर राजपूत स्त्रियों का दहकती हुई विशाल चिता में एक साथ प्रवेश कर जल मरने की प्रथा)–सं० जतुगृह (लाक्षागृह)> प्रा० जउहर> जोहर>जौहर।

जौहर[2]—पुं० (रत्न, बहुमूल्य पत्थर)–फ़ा० गौहर का अरबी रूप।

ज्यादा — वि० (मान या मात्रा में आवश्यकता से अधिक)– अ० ज़ियादः।

ज्यौनार—पुं० (बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना)–सं० जेमन+आद> प्रा० जेमणाद>जेमनार >जेवनार>ज्यौनार।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्वार—स्त्री० (एक प्रकार की घास जिसकी बाल के दाने मोटे अनाजों में गिने जाते हैं)–सं० यवनाल > प्रा० जोवारि > अप० जोवारी (दे० ना० मा०)। पं० जुआर, म० ज्वारी, कश्मी० जवार, गु० जुवार, सिं० जूआरि, अस० जोवार।

झ

झंकार—पुं० (झनकार, नूपुर वगैरह की आवाज)–सं० झङ्कार>प्रा० झंकार >हिं० झंकार। पं० झणकार, गु० उर्दू म० झंकार, क० झंकार, ते० झंकारमु।

झंखर, झांखर, झंखाड़—पुं० (पत्र-पुष्प-विहीन वृक्ष, कांटेदार अथवा अन्य प्रकार के जंगली पौदे)–प्रा० झंखर, झंखरो> हिं० झंखर, झांखर, झंखार, झंखाड़।

झंडा—पुं० (पताका, ध्वज)–सं० ध्वज +दण्ड>पा० धजोदण्ड>प्रा० धय> झयअण्ड>हिं० झंडा। पं० ने० झण्डा, गु० सिं० झंडो, म० झेंडा।

झँखना—क्रि० (संतप्त होना, संताप करना, झुंझलाना)–प्रा० झंख >अप० झङ्खइ >झँखना। अवधी झँखब, भो० झँखल।

झँखाड़—पुं० (घनी और कांटेदार झाड़ी का पौधा)–सं० झष (वन)>हिं० झँख +आड (प्र०), अवधी भो० झँखाड़।

झँझरी—स्त्री० (जाली)–सं० जर्जर> प्रा० जज्जर>झाँझर>झँझरी।

झँझोड़ना—क्रि० (किसी जानवर का अपने से छोटे जाकवर को मार डालने के लिए दाँतों से पकड़कर खूब झटका देना, यथा बिल्ली का चूहे को जँझोड़ना)–सं० झर्झन (√झर्झ=मारना, पीटना)।

झइँ—स्त्री० (झाइँ)–सं० ध्याम्य (कालिमा)>प्रा० झाम>झाइँ, झाईं, झइँ।

झख—पुं० (मत्स्य)– सं०झषक>प्रा० झस>प्रा० झसय>हिं० झख।

झगड़ा—पुं० (विवाद, लड़ाई, कहा-सुनी)–प्रा० झगड>हिं० झगड़ा।

झट—क्रि० वि० (तुरन्त, तत्क्षण)–सं० झटिति>प्रा० झडि>अप० झत्ति> हिं० झट।

झटपट—स्त्री० (शीघ्रता)–प्रा० झडप्पड >हिं० झटपट। तुल० कश्मी० चटपठ्।

झड़—क्रि० (पके फल आदि का गिरना, झड़ना)–सं० शद्>प्रा० झड > हिं० झड़, झड़ना।

झड़पना—क्रि० (आवेश व क्रोधपूर्वक किसी पर आक्रमण करना)–प्रा० झडप्प >अप० झडप्पण (महा०), झडप्पहि> हिं० झड़पना।

झड़ी—स्त्री० (वर्षा ऋतु में लगने वाली पानी की झड़ी)–सं० क्षर (बूँद-बूँद करके गिरना)>झर > झड > प्रा० अप० झडी>हिं० झड़ी। सिं० पं० गु० झडी।

झनकार—स्त्री० (झंकार)–सं० झणत्कार > प्रा० झणवकार > हिं० झनकार, झंकार।

झनझनाना—क्रि० (झनझन करना, टन-टन करना)–सं० झणझणायते > प्रा० झणझणइ, झणज्झणंत, > हिं० झन-झनाना।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झपट—स्त्री० (झटपने की क्रिया)–सं० झम्प>प्रा० झप्पट > अप० झडप्पइ (महा०) > हिं० झपट, झपटना।

झपताल—पुं० (संगीत में पाँच मात्राओं का एक ताल)–सं० झम्पाताल > हिं० झपताल।

झमेला — पुं० (झंझट, बखेड़ा)–प्रा० झमाल (इन्द्रजाल, मायाजाल) > हिं० झमेला।

झर—क्रि० (झरना)–सं० क्षर > प्रा० झर > छ० झर।

झलक—स्त्री० (चमक)–सं० झल्लिका > अप० झलक्किअ > हिं० झलक।

झलझल — स्त्री० (चमक-दमक)– सं० जाज्वल् > प्रा० हिं० झलझल।

झाँझ — स्त्री० (मँजीरे की तरह के गोलाकार पीतल के टुकड़ोंका जोड़ा जो पूजन आदि के समय बनाया जाता है)–सं० झर्झर (अमरकोश) > प्रा० झज्झर > हिं० झाँझ।

झाँझर—पुं० हिं०, वि० (पुराना, जर्जर, फूटा टूटा)–सं० जर्जर > प्रा० जज्जर > झाँझर, झाँझरा।

झाँपना—क्रि० (ढाँकना, ओट में करना, आड़ में करना)–सं० आच्छादय का धात्वादेश > प्रा० झंपिअ, झंपण > अप० झंपइ > अव० झंपन, झंपिआ > हिं० झाँपै, झाँपना। गु० झांपो, म० झांप (णे)।

झाँवा—पुं० (जली हुई ईंट)–सं० पा० झामक > हिं० झाँवा, अवधी झावाँ।

झाँसा—(मिथ्या ज्ञान)–सं० अध्यास > प्रा० अज्झास > हिं० अवधी झाँसा।

झा—पुं० (ओझा, औझा, मैथिली या गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि)–सं० उपाध्याय > पा० उपज्झाय > प्रा० उपझिआ > उआज्झाय > ओज्झाय > ओझा > झा।

झाऊ—पुं० (एक प्रकार का छोटा झाड़ जो दक्षिणी एशिया में नदियों के किनारे रेतीले मैदानों में अधिकता से होता है)–सं० झावु > हिं० झाऊ।

झागल[१]—पुं० (पैर का आभूषण)–पश्तो झागल।

झाझ—पुं० (जहाज)–अ० जहाज़।

झाझी—वि० (जलाने वाली, दग्ध करने वाली)–सं० दग्ध > प्रा० दज्झ, दाझ, राज० झाझ।

झाड़—पुं० (कटीला पौधा)–सं० झाट > प्रा० झाड > अप० झाडं (दे० ना० मा०), स्त्री० झाडि (प्रबन्ध कोश) > हिं० झाड़।

झाड़न—स्त्री० (वह जो कुछ झाड़ने पर निकले, झाड़ने का कपड़ा)-सं० झाटन (सं० √झट) (सं० जट झट संघाते, सिद्धान्त कौमुदी, धातु पाठ) > प्रा० झाडण > हिं० झाड़न।

झारा[१] (पद०)—स्त्री० (दाह, जलन, ईर्ष्या)–सं० ज्वाला > झाला > झारा, झार।

झाल—पुं० (काँसे का बना हुआ ताल देने का वाद्य)–सं० झल्लकम्।

झालर[१]— स्त्री० (काँसे की बनी हुई बिना किनारे की थाली के आकार के समान बजाने के लिए)– सं० झल्लिका।

Siddhanta Vrat Shastra Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झालर[२]—स्त्री० (किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिए लटकाया हुआ हाशिया जो लटका रहता है)–सं० झल्लरी>प्रा० झल्लरी, हिं० झालरी, झालर ।

झिलमिल—क्रि० (रह रहकर चमकना, जुगजुगाना)–सं० जाज्वल्>प्रा० झलझल >हिं० झिलमिल । बं० झिलीमिलि ।

झिल्लि—स्त्री० (कीट विशेष)–सं० प्रा० झिल्ली>हिं० झिल्लि ।

झींगुर—पुं० (एक कीड़ा, झिल्ली, जंजीरा)–सं० झिरिका > पा० झल्लिका >प्रा० झिंगिर>हिं० झींगुर, झींगूर । म० झिंगरूं । उर्दू पं० झींगर ।

झींमर—पुं० (मल्लाह, मच्छुवा)–सं० धीवर>हिं० झींमर, ह० झीम्मर ।

झीन—(ग्रा० प्र०) वि० (दुर्बल)–सं० क्षीण>प्रा० झीण>हिं० झीन, झीना ।

झीनी—वि० (कपड़ा जिसके ताने तथा बाने के सूतों की बुनावट ठस न होकर विरल हो, बारीक)–सं० क्षीण>प्रा० झीण, अप० झीण, झींण>अवधी झीन, हिं० झीना, झीनी । गु० झीणो, म० झिणा ।

झील—स्त्री० (लंबा चौड़ा प्राकृतिक जलाशय या ताबाब)–सं० क्षीर>अवधी झीलि, हिं० झील ।

झुटलाना—क्रि० (जूठा करना, जुठारना)–सं० अध्यस्त>अज्झट > अज्झुट्ठ >झूठ>झुट+लाना ।

झुन—पुं० (झुनझुन की ध्वनि)–सं० झुणि (मो० वि०) ।

झुनझुना—पुं० (एक खिलौना)–सं० झणझण>प्रा० झणझण>हिं० झनझन, झुनझुन, झुनझुना ।

झुनर-झुनर—(घुंघरुओं की ध्वनि)–सं० झणझण>प्रा० झणज्झण>हिं० झनझन, झुनझुन>झुनर-झुनर ।

झुरना—क्रि० (बहुत अधिक दुःखी होना या शोक करना, अत्यधिक चिंता के कारण दुर्बल होना, सूखना)–सं० जूर्ण (√जुर्)>प्रा० झूर>हिं० झुर+ना ।

झुरमुट—पुं० (वृक्षों या पत्तियों का जमघट)–सं० झुंटमुष्ट (झुंट=झाड़ी, मुष्ट=species of grass, मो० वि०)।

झूठा—वि० (झूठ बोलने वाला)–सं० जुष्ट>जुट्ठ>प्रा० झुट्ठ>झूठा । पं० झूटा, उर्दू झूठा, गु० झुट्टो ।

झूलना—क्रि० (लटक कर बार-बार इधर-उधर हिलना)–सं० दोलन, अन्दोल >प्रा० झुल्ल>अप० झुल्लइ (महा०) >हिं० झूलना ।

झूला—पुं०(किसी ऊँचे स्थान में बाँधकर लटकाई हुई रस्सियाँ, जंजीर आदि से बँधी पटरी जिस पर बैठकर झूलते हैं)–सं० दोला>प्रा० झुल्ल>हिं० झूला । पं० झोला, उर्दू झूला, म० झोपाळा ।

झेरा—पुं० (गिरा या ढहा हुआ कूआँ, गड्ढा)–प्रा० झिरिड (पाइअ०) ।

झोंटी—स्त्री० (भैंस)–प्रा० झोट्टी>हिं० झोंटी ।

झोंपड़ा—पुं० (कुटी, पर्णशाला)–प्रा० झुंपडा>अप० झुम्पडा>हिं० झोंपड़ा । गु० झोंपडूं, बं० झोपडा ।

झोल—पुं० (१- राख, २- दाह, जलन, ३- आग 'दाझै जल बल झोल'-कबीर)–सं० ज्वाला>झाउल>झोल ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झोला—पुं० (थैला, कपड़ का सिला हुआ आवरण)–सं० झौलिक > प्रा० झोल्लिऊ > हिं० झोला, अवधी झोरा।

झोली—स्त्री० (थैली)—सं० झौलिका > प्रा० झोलिआ, झोल्लिआ > हिं० झोली।

झौंकारना (पद०) —क्रि० (झुलसना, काले हो जाना)–सं० ध्मात+कृ > प्रा० झावकर > हिं० झौंकारना।

झौंर—पुं० (झुंड, समूह)–सं० युग्म > प्रा० जुम्म, हिं० झूमर।

ट

टंकार—स्त्री० (झनकार, वह शब्द जो धनुष की कसी हुई डोरी पर बाण रखकर खींचने से होता है)–सं० टङ्कार—प्रा० टंकार > अव० टाङ्कारे (की०) > हिं० टंकार।

टंकारी—वि० (टंकार करने वाला)–सं० टङ्कारिन्।

टंग[1]—पुं० (लात, टांग)–सं० टङ्गा > हिं० टांग, टंग।

टंग[2]—पुं० (कुदाल, फरसा)–सं० टंग।

टँकना—क्रि० (१- टांका जाना, कील आदि जड़कर जोड़ा जाना, २- सिलाई के द्वारा जुड़ना, सिलना)–सं० टङ्कण।

टकटकी[1]—स्त्री० (टक लगाकर, मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से किसी ओर देखते रहने की क्रिया)–पश्तो टकटकी।

टकसाल—स्त्री० (वह स्थान जहाँ सिक्के डाले जाते हैं)–सं० टङ्कशाला > टंकसाला > टकसाल।

टका—पुं० (दो पैसा, रुपया, धन)–सं० टङ्क > प्रा० टंक > हिं० टका।

टकुआ—पुं० (एक प्रकार का सुआ जो चरखे में लगा रहता है)–सं० तर्कु+क > प्रा० तक्कुअ > अवधी हिं० टकुआ।

टकोर—स्त्री० (टंकार, धनुष की डोरी खींचने से होने वाला शब्द)–सं० टङ्कार > प्रा० टंकार > हिं० टकोर।

टगर — पुं० (टंकण, सोहागा, भोग-विलास के समय की जाने वाली क्रीड़ा)–सं० टगर > हिं० टगर।

टणक्क—स्त्री० (टन या टण की ध्वनि)–सं० टणत्कार > हिं० टणक्क।

टप्पर—[1]—प्रा० प्र० पुं०, (१-झोंपड़ा, २- छप्पर, ३- बिछाने का टाट)–पश्तो टप्पर।

टल्-टल — १- क्रि०, २- क्रि० वि० (१- टलटल आवाज करना, कल-कल ध्वनि के साथ)–सं० टलटलाय् > प्रा० हिं० टलटल।

टलना—क्रि० (१- अपने स्थान से अलग होना, हटना, खिसककना, सरकना २- दूर होना, जैसे आपत्ति टलना)–सं० टल् (Tobe disturbed, मो० वि०) > हिं० टल+ना।

टला—वि० (टला हुआ, हटा हुआ)–प्रा० टलिय > हिं० टला।

टवाई—स्त्री० (आवारगी, व्यर्थ घूमना)–सं० अट् > प्रा० अट, अट्ट > अटइ > टवइ > टवाई।

टसर—पुं० (रेशम-विशेष)–सं० त्रसर > टसर, तसर। तुल० चीनी तइ-स्सेर।

टहना—पुं० (वृक्ष की पतली शाखा, पतली डाल)–सं० तनु > हिं० टहना,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टहनी (स्त्री०)।

टाँकना—क्रि० (एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि जड़कर जोड़ना)–टंकनं > (सं० टक् > टंक् = बंधने)।

टाँकी[1]—स्त्री० (टाँकी, छेनी, पत्थर काटने का औजार)–सं० टङ्किका, पा० टण्क > प्रा० टंकिआ, हिं० टाँकी।

टाँग—स्त्री० (मनुष्य के शरीर का चूतड़ और एड़ी के बीच का अंग जिसमें रान, घुटना, पिंडली, टखना आदि अवयव सम्मिलित हैं)–सं० टङ्गा > टंग > हिं० टांग।

टाँगी—स्त्री० (कुल्हाड़ी)–सं० टंगः।

टाँडा—(एक प्रकार का हरा कीड़ा जो गन्ने आदि की जड़ों में लगकर फसल को हानि पहुँचाता है)–सं० तुण्ड > हिं० टूँड।

टाट—पुं० (पटसन आदि का बना मोटा कपड़ा जो जमीन पर बिछाने आदि के काम में आता है)–पा० तट्टिका, तट्टक > प्रा० तट्टी, टट्टी, टट्टिआ > हिं० टाटी, टट्टी, टाट।

टाल—स्त्री० (अटाला, ऊँचा ढेर, भारी राशि, बिक्री के लिए लकड़ियों का ढेर)–सं० अट्टाल > हिं० टाल।

टालना—क्रि० (अपने स्थान से अलग करना, हटाना, दूर करना, भगा देना)–सं० त्वरयति > टालयति > अप० टालउं, टालर > हिं० टालना।

टिकठी—स्त्री० (तिहाई, तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर कोड़े या बेंत लगाये जाते हैं)–सं० त्रिकाष्ठिका।

टिकली—स्त्री० (टीका नामक आभूषण, काँच, पन्नी आदि का छोटा टुकड़ा जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं)–सं० तिलकिका > टिकलिआ > टिकली।

टिटिहरी—स्त्री० (पानी के पास रहने वाली एक चिड़िया)– सं० प्रा० टिट्टिभ > टिटिह > हिं० टिटिहा, टिटिहरी।

टिड्डी—स्त्री० (एक जाति का टिड्डा जो भारी दल बाँधकर चलता है और फसल को हानि पहुँचाता है)–सं० टिट्टिभ > प्रा० टिड्डिह > हिं० टिड्डी। अवधी टाडी।

टीका—पुं० (तिलक)–सं० तिलक > प्रा० तिलय > प्रा० अप० टिक्क > टिक्को > टीकौ > हिं० टीका। सिं० टिको, पं० टिक्का।

टीपणा—पुं० (टीपना)–सं० टिप्पणी > प्रा० टिप्पणय > हिं० टीपणा। अवधी टिपना।

टीला—पुं० (मिट्टी-पत्थर का कुछ उभरा हुआ भाग)–सं० अष्ठीला > अप० टीला (प्रबन्ध चिन्तामणि) > हिं० टीला।

टुंडी — स्त्री० (नाभि, ढोंढ़ी) – सं० तुण्डिः।

टुक—वि० (थोड़ा, जरा-सा)–सं० स्तोक > तोक > टोक > टुक।

टुकड़ा—पुं० (किसी वस्तु का वह छोटा अंश जो मूल वस्तु से कट, फट या टूट कर अलग हो गया हो)–सं० त्रुटक (सं √त्रुट् = टुकड़े-टुकड़े करना) > प्रा० टुट्टअ, टुक्कड > टुक्कड़ > टुकड़ा।

टुच्चा—वि० (तुच्छ)–सं० तुच्छ + क >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टुच्चअ>अवधी हिं० टुच्चा।

टूंडा—वि० (जिसका हाथ कटा हुआ हो)–प्रा० टुंट>हिं० टूंडा।

टूँगा (पद०) वि० (ऊँचा)–सं० तुङ्ग >अप० टुंग।

टूअर—(वह असहाय बालक जिसकी माँ मर गई हो)–मु० टूअर।

टूट—स्त्री० (खंड, टूटन, वह अंश जो टूटकर अलग हो गया हो)–सं० त्रुट्> >प्रा० टुट्ट>अप० तुट्ट, छ० टुट, अवधी हिं० टूट।

टूटना—क्रि० (खंडित होना, टुकड़े-टुकड़े होना)–सं० त्रुट्यते>प्रा० टुट्टइ>हिं० टूटना।

टूटा—वि० (भग्न, खंडित)–सं० त्रुटित >प्रा० टुट्टअ>हिं० टूटा।

टेंटु—पुं० (सोनापाठा, एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी छाल, बीज और फल औषध के काम आते हैं)–सं० टण्टुक।

टेकुआ—पुं० (टिकाने या अड़ाने की वस्तु, अदुकन)–सं० तर्कुक>प्रा० टक्कुआ >हिं० टेकुआ।

टेटका—पुं० (कर्णभूषण)–सं० तटङ्क।

टेढ़—(टेढ़ापन, वक्रता, ऐंठ)–सं० तिर्यक+अर्द्ध>प्रा० टेट्ढ>अवधी हिं० टेढ़।

टेरना—क्रि० (तै करना, चलता करना, निबाहना, पूरा करना)–सं० तीरण।

टेवा—पुं० (लग्न पत्र, जिसमें विवाह की मिति, दिन, घड़ी आदि लिखी रहती है और जिसे लड़की के यहाँ से शकुन के साथ नाई ले जाकर लड़के के पिता को विवाह से कुछ दिन पूर्व देता है)–सं० टिप्पन>प्रा० टिप्पण > टेवां > हिं० टेवा।

टोंट—स्त्री० (चोंच)–सं० तुंड।

टोड़ी—स्त्री० (एक रागिनी)–सं० त्रोटकी>प्रा० टोटइ>हिं० टोड़ी।

टोना (पद०)—पुं० (जादू मन्त्र)–सं० स्तवन (सूक्त)>टउन+क=टोना।

ठ

ठंठ—वि० (वह पेड़ जिसकी डालें तथा पत्तियाँ सूख और झड़ गई हों)–सं० स्थाणु>प्रा० ठाणु>हिं० ठंठ।

ठग[1]—(गुंडा, बेइमान)–सं० स्थग > प्रा० ठग।

ठग[2]—क्रि० (ठगना)–सं० स्थग्>प्रा० ठग<हिं० छ० ठग। तुल० पं० ठगणा, अस० ठग (ठॉग्), ओ० ठकिबा।

ठगिया=पुं० (ठग)–सं० स्थग+क> थगिअ>ठगिअ>हिं० ठगिया।

ठट—पुं० (एक स्थान पर बहुत सी वस्तुओं का समूह, झुण्ड, ढेर, जमघट)–प्रा० थट्ट (पाइअ०)>ठट।

ठट्ठा—पुं० (हँसी, उपहास)–सं० अट्टहास>प्रा० अट्टट्टहास>हिं० ठट्ठा।

ठठकना—क्रि० (ठिठकना, एकबारगी रुक या ठहर जाना)–सं० स्थेय+करण >प्रा० ठयण।

ठठेरा—पुं० (धातु को पीट-पीटकर बरतन बनाने वाला)–प्रा० ठट्ठार> ठट्यारअ>ठठेरा। अवधी ठठेर।

ठढ़ा—वि० (खड़ा)–सं० स्थातृ>प्रा० ठाड्ढ>ठड्ढ>हिं० ठाढ़ा, ठढ़ा। भो०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवधी ठड़ा।

ठनठन—स्त्री० (ठन-ठन की ध्वनि)–सं० ठठं>हिं० ठनठन।

ठप—वि० (जो पूरी तरह से बन्द हो गया हो)–सं० स्थाप्य>प्रा० ठप्प>हिं० ठप।

ठपाक—पुं० (जोश, आवेश, तेजी)–फ़ा० तपाक।

ठप्पा—पुं० (धातु, लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जिस पर चित्र, चिह्न आदि खुदे रहते हैं और जिससे कपड़ों आदि पर रंग या स्याही की सहायता से छाप लगाई जाती है)–सं० स्थाप्य+क>ठप्पअ>हिं० ठप्पा।

ठयना—क्रि० (ठानना, दृढ़ संकल्प के साथ आरम्भ करना)–सं० अनुष्ठान।

ठलुआ—वि० (खाली, निठल्ला)–सं० स्थूलक>थूलअ>प्रा० ठल्ल > अप० ठलिय>हिं० ठलुआ।

ठल्ल — वि० (निर्धन, दरिद्र)–अप० ठलिय, ठल्लो>ठल्ल।

ठवन—स्त्री० (बैठक, बैठने या खड़े होने का ढंग)–सं० स्थापण>प्रा० ठावण>अप० ठवनि, ठवन।

ठवना — क्रि० (स्थापना करना)–सं० स्थापय>प्रा० ठव, ठावइ, ठावेइ, ठवई, ठवेइ। कृदन्त रूप अव० ठवन्ते, ठवेन्ते (बहु वचन)।

ठव्या—वि० (स्थापित, रखा हुआ)–सं० स्थापित>प्रा० ठाविअ>ठव्या।

ठस—वि० (जिसके कण परस्पर इतने मिले हों कि उसमें उंगली आदि न धंस सके)–सं० स्थास्नु।

ठहर — स्था० प्र०, पुं० (जगह)–सं० स्थल>प्रा० थल>अवधी हिं० ठहर।

ठहरना[1]—क्रि० (१- निश्चित या पक्का होना, स्थिर होना, जैसे किसी बात पर ठहरना)–सं० स्थैर्य > ठहरइ > हिं० ठहरना।

ठहरना[2]—क्रि० (ठहरना, रुकना)–सं० स्था>प्रा० ठा>ठाअइ>अप० ठाहरइ (अप० प्र०)>हिं० ठहरना।

ठहाका— प्रा० प्र०, पुं० (जोर की हँसी)–सं० अट्टहास +क>ट्ठहासक >ठहाअक>ठहाका।

ठाकुर—पुं० (देवमूर्ति, देवता) – सं० ठक्कुर > प्रा० ठकुर, ठक्कुर > हिं० ठाकुर।

ठाठ—पुं० (१- किसी वस्तु के मूल अंगों और पार्श्वों का वह समूह जिसके आधार पर शेष रचना होती है, २- शृंगार, सजावट, ३- लकड़ी या बाँस की पट्टियों का बना ढाँचा)–सं० स्थातृ>अप० थट्ट (सौभाग्य), म० थाट, हिं० ठाठ।

ठाड़—वि० (चुप खड़ा हुआ, गतिहीन, अवरुद्ध)–सं० स्तब्ध>प्रा० ठड्ढ>हिं० ठाड़, ठाढ़।

ठाण—पुं० (स्थान)–सं० स्थान>पा० ठान>प्रा० स० ठाण>अप० ठाणु>हिं० ठाण। अवधी ठाउँ।

ठार—पुं० (१- अत्यन्त शीत, गहरी सरदी, २- पाला, हिम)–सं० स्तब्ध>प्रा० ठड्ढ>अप० थड्ढ>हिं० ठार।

ठाली—पु० हिं०, वि० (खाली, जिसे कुछ काम न हो)–प्रा० ठलिय>ठाली।

ठाव—पुं० (जगह)–सं० स्थान>प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ठाण > अव० ठाम, ठाउ > हिं० ठाव > ठाँव, ठाँय, ठाँ।

ठिकाना—पुं० (टिकने अर्थात् ठहरने का उपयुक्त या निश्चित स्थान)–सं० स्थान + क > ठाणक > ठानक > ठाकन > ठिकान > ठिकाना।

ठिठकना—क्रि० (चलते-चलते एकबारगी रुक जाना)–सं० स्थित + करण > प्रा० ठिइकरण > हिं० ठिठकना।

ठीकरा—पुं० (मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा, घड़ा का टुकड़ा)–प्रा० ठिक्करिआ > ठीकरा, स्त्री० ठीकरी।

ठीहा—पुं० (वह कुछ ऊँचा स्थान जिस पर बैठकर छोटे दूकानदार सौदा बेचते हैं)–सं० स्थिति + क > ठिइअ > ठियअ > ठिया > ठीहा।

ठुंठ, ठूँट—पुं० (सूखा पेड़, ऐसे पेड़ की खड़ी लकड़ी जिसकी डाल, पत्तियाँ आदि कट गई हों)–सं० स्थाणु > प्रा० ठाणु > ठूणा > प्रा० ठुंठ > ठूँठ।

ठेंगा—पुं० (किसी को उसकी सफलता पर चिढ़ाने अथवा लज्जित करने के लिए दिखाया जाने वाला दाहिनी हाथ का अँगूठा)–सं० अंगुष्ठ > अंगुट्ठ > ठंगुअ > ठेंगअ > ठेंगा।

ठेंगुर—पुं० (वह डंडा या लकड़ी का टुकड़ा जो उच्छृंखल पशुओं के गले में इसलिए बाँधा जाता है कि वे भाग कर दूर न जाने पावें)–सं० यष्टिकार्गला (यष्टिका + अर्गल) > इट्ठि आग्गल > ठेंग्गल > ठेंगल > ठेंगर > ठेंगुर।

ठेठ—वि० (जो अपने विशुद्ध या मूल रूप में हो)–सं० स्थेष्ठ > प्रा० हिं० ठेठ।

ठेली—स्त्री० (सामान ढोने की एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी हाथों से ढकेलते हैं, ट्राली)–प्रा० थिल्लि (पाइअ०) > हिं० ठेली।

ठोंग—स्त्री० (चोंच, चोच की मार)–सं० तुण्ड > अवधी ठोंड़ > हिं० ठोंग।

ठोंड़ी (ढ़ी)— स्त्री० (ठुड्डी, ओठों के नीचे का गोलाई लिए हुए उभरा हुआ भाग)–सं० तुण्ड।

ठोवड़ी—पुं० (जगह)–सं० स्थान > पा० ठान > प्रा० ठाण > अप० ठाव; राज० ठावड़, ठोवड़ी।

ठौंठियाँ[1]—पुं० (रसीद का काउन्टर फायल)–सं० स्थविष्ठक > ठौंठिया।

ठौर—पुं० (जगह, ठिकाना)–सं० स्थान > पा० ठान > प्रा० ठान > हिं० ठाँव + र (प्र०)।

ड

डंक—पुं० (भिड़, बिच्छू आदि कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा जिसे वे क्रोध में या अपने बचाव के लिए जीवों के शरीर में धँसाते हैं)–सं० दंश > प्रा० डंस, डंक > हिं० डंक। तुल० ओ० डंकिवा, गु० म० डंख, पं० डंक।

डंगर[1]—(पशु)–सं० कडङ्करीय > हिं० डंगर। टिप्पणी– कडङ्कर (कुट्टी) खाने वाले पशु कडङ्करीय कहलाते थे।

डंड—(भुजा, डंडा)–सं० दंड > प्रा० डंड।

डंडना—क्रि० (दंड देना, जुरमाना

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लगाना)–सं० दण्डना>प्रा० डंडण> डंडना।

डंडवत—पुं० (पृथ्वी पर लेट कर किया हुआ नमस्कार)–सं० दण्डवत् > हिं० डंडवत।

डंडवै[१] (पद०)—पुं० (सेनापति)–सं० दण्डपति>डंडवइ>डंडवै।

डंडा—पुं० (पेड़ की शाखा, बाँस आदि का टुकड़ा)–सं० दण्डक>डण्डअ>हिं० डंडा। भो० डँडवा।

डंस[१]—क्रि० (डंसना काटना)–सं० दंश >प्रा० डस, डसइ>छ० डंस।

डंस[२]—पुं० (गहरा और तेज डंक मारने वाला एक प्रकार का बड़ा मच्छर)–सं० दंश> प्रा० डंस>हिं० डंस।

डग-डिग-डिडिग — स्त्री० (ढोल आदि बजने की ध्वनि)–सं० सढिण्डमम्।

डगमग—वि० (लड़खड़ाता हुआ, बहुत अधिक हिलता-डुलता, कांपना) – प्रा० डगमग>हिं० डगमग।

डगरा —स्था० प्र०, पुं० (बाँस की पतली पट्टियों का बना हुआ छिछला पात्र)–सं० डलक>प्रा० डल्लग>अवधी हिं० डगरा।

डड्ढ—वि० (दग्ध, जला हुआ, संतप्त)–सं० दग्ध>प्रा० अप० डड्ढ > अव० डड्ढिअ।

डढैल — वि० (जल कर बचा हुआ तेल)–सं० दग्ध तैल>प्रा० दड्ढ तेल्ल >डढ्ढैल>हिं० छ० डढैल।

डपट—स्त्री० (डाँट, झिड़की)–सं० दर्प +वृत्त>भो० डपटल, हिं० डपट।

डफ—पुं० (डफला, चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा)–फ़ा० दफ़।

डफाण—पुं० (पाखंड, आडंबर, दंभ)–सं० दम्भन > प्रा० डंभण>डंभणा> डफाण।

डबकना — क्रि० (तरलित होना)–सं० द्रवक।

डब्ब—पुं० (डाभ, डाभुस, एक प्रकार का कुश)–सं० दर्भ>पं० डब्ब।

डमरुआ — पुं० (एक रोग विशेष, गठिया)–सं० डमरु+क>प्रा० डमरूअ हिं० डमरुआ।

डर—पुं० (भय)–सं० दर>प्रा० हिं० डर। तुल० पं० उर्दू गु० डर।

डल—स्त्री० (झील)–सं० तल्ल।

डला[१], डले—पुं (कागज़ कूट कर बनाई हुई एक टोकरी)–सं० डलकम्>अप० डल्लं (दे० ना० मा०)>हिं० डला।

डला[२]—पुं० (मिट्टी का ढेला)–प्रा० डल>डला।

डसना—क्रि० (साँप का काटना, डंक मारना)सं० दंशन>पा० डसन>प्रा० डंसण>हिं० डसना।

डसा—पुं० (डाढ़)–सं० दंश > प्रा० डंस>हिं० डसा।

डहइ — क्रि० (जलाना, दग्ध करना, दहला देना)–सं० दह्>प्रा० डह, अप० डहइ।

डहना—क्रि० (जलना)–सं० दहन्> प्रा० डहण>हिं० डहना।

डहर[१]—पुं० (नीचा धरातल वाला खेत जिसमें पानी भरा रहता है)–सं० ह्रद>दहर>हिं० डहर।

डाँगर—वि० (दुबला पतला, जिसकी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हड्डी-हड्डी निकली हों)–प्रा० ढंखर> अवधी हिं० डाँगर।

डाँट—स्त्री० (वश, दाब, दबाव)–सं० दान्तिः>हिं०, डाँट' भो० डाँटल, अवधी डाँट।

डाँड़[1]—पुं० (सीधी लकड़ी, डंडा)–सं० दण्डकः>प्रा० दंडअ>हिं० डाँड़।

डाँड़[2]—पुं० (क्षति पूर्ति के रूप में दिया जाने वाला धन या वस्तु)–सं० दण्ड्>प्रा० डंड>डाँड>डाँड़।

डाँड़ी[1]—स्त्री० (लंबी पतली लकड़ी, ढिरनी)–सं० दण्डिका>डंडिआ>डंडी>हिं० डाँड़ी।

डाँभ—पुं० (जलने का दाग, जलने से उत्पन्न पीड़ा)–सं० दाह>प्रा० डाह>हिं० डाँभ।

डाँस—पुं० (बड़ी मक्खी, बड़ा मच्छड़)–सं० दंश>प्रा० डंस>हिं० डाँस।

डाइन—स्त्री० (चुड़ैल, भूत-प्रेत योनि की स्त्री, कुरूपा और डरावनी स्त्री)–सं० डाकिनी>प्रा० डाइणि>हिं० डाइन।

डाढ़—स्त्री० (चबाने के चौड़े दाँत)–सं० दंष्ट्रा (दंस=काटना)>प्रा० डड्ढ>हिं० डाढ़।

डाढ़ी[1] (पद०)— वि० (दग्ध, जलाई हुई)– सं० दग्ध>प्रा० डड्ढ>अप० डाढ़ा>ओ० हिं० डाढ़ा>स्त्री० डाढ़ी।

डाब—स्त्री० (डाभ नाम की घास)–सं० दर्भ>प्रा० डब्भ>हिं० डाब, ह० डाभ।

डाबर—पुं० (वह नीची जमीन या छोटा गड्ढा जिसमें बरसाती पानी ठहरा रहे)–सं० दभ्र।

डाभ[1] (पद०)— पुं० (आम में मंजरि आने से नुकीली डाभ या टोंसे निकलते हैं)–सं० दर्भ>प्रा० दम्भ>डम्भ>डाभ। तुल० उर्दू ड़ाभ, बं० अस० डाब।

डार — स्त्री० (डलिया, डाली)–सं० डलक>प्रा० डल्ल>हिं०डार। तुल० बं० अस० डाल, ओ० डाळ।

डाला—पुं० (बाँस का बना हुआ फल-फूल रखने का पात्र)–सं० डलक>प्रा० डल्ल>हिं० डाला।

डासन — पुं० (बिछौना, शय्या)–सं० दर्भासन>डासन।

डाह—स्त्री० (जलन, ईर्ष्या, द्वेष, द्रोह)–सं० दाह>पा० प्रा० हिं० डाह।

डिंगर—पुं० (१- मोटा आदमी, २- दुष्ट, ३- दास, ४- नीच मनुष्य)–सं० डिङ्गरः।

डिंडस—पुं० (टिंडसी नाम की तरकारी)–सं० टिण्डिश।

डिंडिक—पुं० (हँसोड़ भिखारी)–सं० डिण्डिक।

डिंडिभ — पुं० (जल-सर्प) – सं० डिण्डिभ।

डिंभिया—वि० (घमंडी, पाखंडी)–सं० दंभ>प्रा० डंभ>डंभिअ>डिंभिया।

डिंगरा—पुं० (दुष्ट नौकर, बैल)–सं० डिङ्गर>छ० डिंगरा।

डिठि—स्त्री० (दृष्टि)–सं० दृष्टि>प्रा० डिट्ठी > अव० डीठि (की०)>डिठि, डीठ, दीठ।

डिड—वि० (दृढ़)–सं० दृढ़।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डिबिया—स्त्री० (एक छोटी डिबिया जिसमें मिट्टी का तेल डालकर प्रकाश किया जाता है)–सं० दीपिका > प्रा० डिप्पिआ > हिं० डिबिया।

डील[१]—पुं० (प्राणियों के शरीर की ऊँचाई, शरीर का विस्तार) – पश्तो डील।

डीवट—स्त्री० (दीवट)–सं० दीपवर्तिका > प्रा० डिप्पवट्टिआ > दीवट।

डुगडुगी—स्त्री० (डुग्गी, चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा)–सं० डिण्डिम > > प्रा० डिंडिम। तुल० म० पं० कश्मी० डग्गा, उर्दू डुगी, गु० डग्गो, बं० अस० डुगी।

डुबडुभी—स्त्री० (दुँदुभि)–सं० दुन्दुभि > डुबडुभी।

डूबना—क्रि० (बूड़ना, पानी या और किसी द्रव के भीतर समाना) –सं० बुड् > हिं० डूब + ना। तुल० पं० डूबणा।

डूंगर—पुं० (टीला, ढूह, भीटा, छोटी पहाड़ी)–प्रा० डुंगर > अप० डुंगरो > हिं० डूंगर, डूँगर।

डेंडू—पुं० (एक कीट)–सं० डुडभ।

डेढ़—वि० (एक और आधा) – सं० अर्द्धोनद्वि > पा० दियड्ढो, दिवड्ढो > प्रा० दिवड्ढ, दिअड्ढ > अप० डिवड्ढ > डेढ़। तुल० कश्मी० ढोड्, सिं० देढु, म० दीड, अस० देड़, गु० दोढ, बं० अस० देड़, ओ० देढ़।

डेंगुर[१]—पुं० (वह डंडा जो पशुओं को रोकने के लिए उनके गले में लटका दिया जाता है)–सं० दंडार्गल > डेंगुर।

डैन—पुं० (पाँख, पंख)–सं० डयन, डैन, डैना।

डोंगी—स्त्री० (बिना पाल की छोटी नाव, वह बरतन जिसमें लोहार लोहा लाल करके बुझाते हैं)–सं० द्रोणी। तुल० पं० डूंगा, उर्दू डोंगा, डोंगी; कश्मी० डुंगुँ, ते० बं० डिंगि।

डोड़हा—पुं० (जल-सर्प, पनियर)–सं० डुण्डुभः।

डोरा—पुं० (सूत, धागा, धारी)–सं० दोर + क > प्रा० डोरअ > अप० दोरा (प्रबन्ध कोश) > हिं० डोरा।

डोल—पुं० (कुएं से पानी निकालने का लोहे का बरतन)–सं० दोलक (सं० √ दुल्) > डोल। फ़ा० दुल (डोलना)।

डोलना—क्रि० (हिलना, चलायमान होना)–सं० दोलन > प्रा० डोलण, डोल > हिं० डोलना।

डोला—पुं० (एक वाहन-विशेष, वह सवारी जो दो आदमियों के कन्धे पर झूलती चलती है)–सं० दोला > प्रा० डोला (झूला) > अप० डोला (दे० ना० मा०) > हिं० डोला।

डोली—स्त्री० (पालकी, स्त्रियों की बैठने की एक सवारी जिसे कहार कंधों पर उठाकर ले चलते हैं)–सं० दोलिका > प्रा० डोलिआ > हिं० डोली। तुल० पं० ओ० डोली, बं० डुली, ओ० ते० त० मल० क० डोलि।

डौंड़ी—स्त्री० (एक प्रकार का ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है)–सं० डिण्डिमः।

ड्योढ़ा—पुं० (एक और आधा अधिक)–सं० अध्यर्द्ध > प्रा० डिअड्ढ > हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ड्योढ़ा ।

ड्योढ़ी—स्त्री० (किसी भवन के मुख्य प्रवेश-द्वार के आस-पास की भूमि या स्थान)–सं० देहलिः ।

ढंकना—पुं० हिं०, क्रि० (ढकना)–सं० छादय् >प्रा० ढक्क, ढक्कइ > हिं० ढकना, ढंकना ।

ढक्कन—पुं० (ढाँकने की वस्तु, ढक्कन)–सं० ढक्कन>हिं० ढक्कन ।

ढक्का[1]★—पुं० (धक्का, टक्कर)–सं० √धक्क् (ध्वस्त करना)>हिं० ढक्का, ढका । तुल० पं० धक्का, बं० ढंक, ओ० धका ।

ढक्का[2]—प्रा० प्र०, पुं० (बड़ा ढोल)–सं० ढक्का>अप० ढक्क>हिं० ढका ।

ढग-ढग—स्त्री० (ढग-ढग की आवाज)–प्रा० ढग्गढग्गा>हिं० ढगढग ।

ढब—पुं० (ढंग, रीति, तोर-तरीका)–सं० धव (गति)>हिं० ढब । पं० ढब, सिं० ढबु ।

ढमाढम—स्त्री० (ढम ढम की आवाज)–प्रा० दमदमाअइ ।

ढलना—क्रि० (द्रव पदार्थ का नीचे की ओर आना)–प्रा० ढल, ढलंत>हिं० ढल+ना ।

ढहना—क्रि० (ध्वस्त होना, दीवार, मकान आदि का गिर पड़ना) – सं० ध्वंसन ।

ढांढा(?) — पुं० (छोटा कुआं)–पश्तो ढांढ़ा ।

ढाई—वि० (दो और आधा)–सं अर्द्धोन-तृतीय>प्रा० अड्ढतीय>अढ़ा ई> ढाई (बलाघात के फलस्वरूप अ का लोप) । तुल० पं० ढाई, उर्दू ढ़ाई, कश्मी० ढाइ, मि० गु० अढाई, म० अडीच, बं० अड़ाइ, अस० आढ़ै, ओ० अढेइ ।

ढाढ़स—पुं० (धैर्य, धीरज, शांति)–सं० दृढ़>प्रा० डिढ>अप० ढड्ढस (प० च०)>हिं० ढाढ़स ।

ढार, ढाल — स्त्री० (ढाल, उतार, ढालुआं होने का भाव)–सं० धार ।

ढालना—क्रि० (पानी या कोई तरल पदार्थ नीचे गिरना)–प्रा० ढाल>हिं० ढाल+ना ।

ढिग—अव्य० (पास, ढिग)–सं० दिक्> ढिग, ढिंग ।

ढिंढोरा—पुं० (मुनादी, डुग्गी बजाकर की गई घोषणा, डुगडुगिया) – सं० डिंडिम पटह>डिंडिवँवडअ>डिंडिउरा >डिंडउरा>डिंडोरा>ढिंढोरा ।

ढींगर—पुं० (बड़े डीलडाल का आदमी, पति या उपपति)–सं० डिङ्गर ।

ढीठ—वि० (बेअदब, बड़ों का संकोच या डर न रखने वाला)–सं० धृष्ट>प्रा० ढिट्ठ>अप० हिं० ढीठ ।

ढील— स्त्री० (कार्य में उत्साह का अभाव, शिथिलता)–सं० शिथिल>हिं० ढील ।

ढीला— वि० (ढीला, शिथिल)–सं० शिथिल>प्रा० ढिल्ल>ढील्ला (बो०) >हिं० ढीला । तुल० पं० ढिल्ला, गु० ढिलू, सिं० ढिलो ।

ढुंढ़न—पुं० (तलाश, खोज)–सं० ढुण्ढ-नम् (ढुण्ढ्)> प्रा० ढुंढुल्लण > हिं० ढुंढन, ढूंढ़ना । तुल० पं० ढूंढणा, उर्दू ढूंढना ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ढुकना—क्रि० (उपस्थित होना, पहुँचना, घुसना)–सं० ढौक>प्रा० अप० ढुक्क, ढुका (पद०)>हिं० ढुकना।

ढूडी[१]—स्त्री० (तिरक रीढ़ और कुल्हे के बीच का जोड़)–पश्तो ढूडी।

ढूह—पुं० (ढेर, अटाला, चट्टा, टीला)–सं० स्तूपः।

ढेंक— स्त्री० (पानी के किनारे रहने वाली एक चिड़िया जिसकी चोंच और गरदन लम्बी होती है)–सं० ढेङ्क>प्रा० हिं० ढेंक।

ढेंकली—स्त्री० (ढेंकुली, सिंचाई के लिए कुँए से पानी निकालने का एक यन्त्र)–प्रा० ढेंका>अप० ढेंका (दे० ना० मा०)>हिं० ढेंकुली, ढेंकली।

ढेला—पुं० (ईंट, मिट्टी, कंकड़, पत्थर आदि का टुकड़ा)–सं० अष्ठीला।

ढोटा[१]—पुं० (लड़का)–सं० डित्थ या डवित्थ>ढोटा।

ढोल— पुं० (एक प्रकार का लंबोतरा बाजा जिसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा रहता है)–सं० ढोल>प्रा० ढोल्ल>प्रा० ढोल्ला>हिं० ढोल। तुल० बं० ढोल, ओ० ढोल, पं० गु० ढोल।

ढोलक—स्त्री० (छोटा ढोल)–सं० ढोल+क>प्रा० ढोल्लअ।

ढोवइ—क्रि० (निकट लाना, पहुँचाना)–सं० ढौकते (ढौक्)>अवधी ढोवइ।

ढौंचा—पुं० (साढ़े चार का पहाड़ा)–सं० अर्धचतुर्>प्रा० अड्ढचउ>अढ्ढउच>अढोच>ढौंच>ढौंचा।

त

तंग—वि० (१- संकरा, संकीर्ण, २- परेशान, जिसमें कष्टदायक कसावट या संकीर्णता हो)–फ़ा० तंग।

तंगहाल—वि० (आर्थिक कष्ट या संकट में पड़ा हुआ, रोग-ग्रस्त)–फ़ा० तंग+अ० हाल।

तंत[१]—पुं० (तत्व)–सं० तत्त्व>प्रा० तत्त>हिं० तंत।

तंत[२]—पुं० (वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों)–सं० तन्त्र>प्रा० हिं० तंत।

तंत[३]—प्रा० प्र०, पुं० (तंतु, तांत)>सं० तन्तु>प्रा० तंतु>हिं० तंत।

तंतु—पुं० (सूत, तागा, तार, रेशा)–सं० तन्तु>प्रा० हिं० तंतु। कश्मीरी-तूंत, तूंथ।

तंदुरस्त—वि० (स्वस्थ)–फ़ा० तन+फ़ा० दुरुस्त।

तंमोलु— पुं० (तांबूल, तमोल)–सं० ताम्बूल>प्रा० तंबोल>हिं० तंमोलु।

तइसन—वि० (तैसा)–सं० तादृश>तेसण>छ० तइसन।

तकड़ी—प्रा० प्र० स्त्री० (तराजू, तुला)–त० तक्कटि, तकक्टइ, मल० तकिक्टि, क० तक्डि, ते० तकेक्ड। ह० ताखड़ी, मा० तागड़ी, पं० तकड़ी।

तकब्बुर— पुं० (घमंड, अकड़)–अ० तकब्बुर।

तकाबा— पुं० (ऐसी चीज मांगना जिसके पाने का अधिकार हो)– फ़ा० तक़ाज़ा।

तखीत— स्त्री० (तलाशी)–अ० तह-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क़ीक़ ।

तख्त—पुं० (लकड़ी की बनी हुई बड़ी चौकी)–फ़ा० तख्त ।

तगार—पुं० (वह बरतन जिसमें चूना या गारा आदि रखा जाता है)– फ़ा० तगार । पहलवी तगार (पीपेनुमा बरतन (tajara–a kind of measure) ।

तज[1]— पुं० (तेजपत्ते का वृक्ष अथवा उसकी छाल, एक सुगन्धित ओषधि)–सं० त्वच्>प्रा० तजा>हिं० तज ।

तजना—क्रि० (त्यागना, छोड़ना)–सं० √त्यज्>हिं० तज+ना ।

तजरबा—पुं० (अनुभव)–अ० तज्रबह, तज्रिबः ।

तजवीज—स्त्री० (राय, फैसला, प्रबन्ध)–अ० तज्वीज़ ।

तड़—पुं० (किसी चीज के टूटने, फटने, फूटने या उस पर आघात लगने से होने वाला शब्द)–प्रा० तड>हिं० तड़ ।

तड़का—पुं० (सवेरा)–सं० तडाका>हिं० तड़का । √तड (चमकना), (मो० वि०) । तुल० पं० उर्दू तड़का ।

तड़तड़ाना—क्रि० ('तड़तड़' ध्वनि उत्पन्न होना या करना)–सं० तडततडाय>पा० तटतटायति>प्रा० तडतडा>हिं० तड़तड़ाना ।

तड़ाक—स्त्री० (१- किसी सख्त चीज के टूटने की आवाज, २- फौरन, जल्दी)–फ़ा० तड़ाक़ ।

तत[1]— वि० (तपा हुआ, गरम)–सं० तप्त>प्रा० तत्त>हिं० तत ।

तत[2]— पुं० (तत्व)–सं० तत्त्व>प्रा० तत्त्व>हिं० तत, ह० तत् ।

तत[1]—सर्व० (उस)–सं० तत् ।

तत्ता★— वि० (अधिक तपा हुआ, गरम)– सं० तप्त>प्रा० तत्त>हिं० तत्ता ।

तन[1]— पुं० (शरीर)–सं० तनु>प्रा० तणु>हिं० तन । तुल० फ़ा० तन ।

तन[2]— क्रि० वि० (ओर, तरफ)–सं० तन>अप० तणि>हिं० तन ।

तपत—स्त्री० (तपन)–सं० तप्त>प्रा० तत्त>हिं० तपत ।

तपना— क्रि० (अधिक ताप से युक्त होना, तप्त होना)–सं० तपन (√तप्)>प्रा० तप्पण>हिं० तपना ।

तपसी—पुं० (तपस्या करने वाला)–सं० तपस्वी>हिं० तपसी ।

तफक्कुर— पुं० (चिन्ता)–अ० तफ़क्कुर ।

तफज्जुल—पुं० (बड़ाई, बड़प्पन)–अ० तफ़ज्जुल ।

तफतीश—स्त्री० (छानबीन, गवेषणा)–अ० तफ़्तीश ।

तफसील—स्त्री० (विस्तृत वर्णन, विवरण)–अ० तफ़सील ।

तब— क्रि० वि० (उस समय, उस वक्त)–सं० तदा+एव>प्रा० तआ एव्व>हिं० तब ।

तबाही— स्त्री० (बरबादी, विनाश)–फ़ा० तबाही ।

तम—प्रा० प्र०, सर्व०–(तुम)–पा० तुम्हे>प्रा० तुम्ह>अप० तुम्ह>ह० तम ।

तमक—पुं० (घमंड, शेखी, क्रोध, जोश)–सं० तमस्>प्रा० तमस>हि० तमक ।

तमकना— क्रि० (तमतमाना, क्रुद्ध

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होना)–प्रा० तुमंतुम>हिं० तमतमाना, तमकना, तमक।

तम्बारा—पुं० (ताँबे का बर्तन)–सं० ताम्रवारक>तम्ब वारय>तम्ब आरय >अव० तम्बारा।

तमाकू, तमाखू— पुं० (तंबाकू)–रुसी तबाख, स्पे० ताबाको (tabaco), पुर्त० tabaco, अं० टोबैक्को>हिं० तमाखू। तुल० फ्रे० तबा (tabac), पं० तम्बाकू, कश्मी० तमोक्, सिं० तमाकु, म० तंबाकू, गु० तमाकु, बं० ताभाक।

तमाम—वि० (पूर्ण, सब)–अ० तमाम।

तमाशा—पुं० (वह दृश्य जिसे देखने से मनोरंजन हो)–अ० तमाशा।

तमोरि— पुं० (सूर्य)– सं० तमस्+अरि>प्रा० तम+अरि>हिं० तमोरि।

तमोल— पुं० (पान का बीड़ा)–सं० ताम्बूल>प्रा० तंबोल>हिं० तमोल।

तमोली— पुं० (तंबोली, पान बेचने वाला)–सं० ताम्बूलिक>प्रा० तंबोलिअ > तम्मोलिअ > तमोलिअ > हिं० तमोली।

तर[1]— (की०) वि० (वेगयुक्त)–सं० त्वरा>प्रा० अप० तरा>भव० तर।

तर[2]—वि० (भीगा हुआ)–फ़ा० तर।

तर[3]— क्रि० वि० (तले, नीचे)– सं० तल।

तर[4]— क्रि० (तरना)–सं० तृ>छ० तर।

तरई—स्त्री० (नक्षत्र, तारागण)– सं० तारागण>तारायण>तरायन, तराइन, तरइन>तरई।

तरस—(दया, रहम)–सं० त्रस>प्रा० तस>अप० तरास>हिं० तरस। फ़ा० तर्स।

तरसों—क्रि० वि० (एक दिन के बाद के उपरान्त का अथवा आने वाले दिन के उपरान्त का दिन)–सं० त्रि+श्वस[11], त्रिःश्वः>तरिस्सो>तरसों।

तराजू—पुं० (चीज तौलने का एक उपकरण)– फ़ा० तराज़ू। तुल० म० तराजू।

तरिय— क्रि० (तरा जाता है)–सं० तीर्यते>प्रा० तरिउ>हिं० तरिअ।

तरिए—क्रि० (पार हो गये)–सं० तीर्यते >तरिअइ>तरिए।

तरिवन[1]—(तरौना या कर्णफूल)–सं० तालपर्ण>प्रा० तालवण्ण>हिं० तरिवन या तरवन।

तरौना—पुं० (तालपर्ण या ताड़ के पत्ते की तरह का गोल फाँकदार कान में पहनने का गहना)– सं० तालपर्ण+क> प्रा० तालवण्ण>तालउन्न> तरौना।

तलब—स्त्री० (पाने की इच्छा, चाह)– अ० तलब।

तलबेली—स्त्री० (आतुरता, बेचैनी)– प्रा० तल्लोविल्लि>हिं० तलबेली, तुलबुली।

तलाई—स्त्री० (छोटा ताल, तलैया)– सं० तडागिका>प्रा० तलाइआ, तलाई।

तलाब—पुं० (तालाब, पोखरा, ताल)– सं० तडाग>प्रा० तलाय>हिं० तलाव. तलाओ। तुलनीय फ़ा० तालाब, गु० तलाव, सिं० पं० तलाउ।

तलि— स्त्री० (नीचे की सतह, पेंदी, तलछट, तलौंछ)– सं० तले> अप०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तलि।

तवा—पुं० (लोहे का एक गोल बरतन जिस पर रोटी सेंकते हैं)–सं० तापक> प्रा० ताविया, तवय>तव। तुल० पं० उर्दू म० ओ० तवा, गु० तवो, अस० तेवा।

तसबीर—स्त्री० (चित्र)–अ० तस्वीर।

तसर—स्त्री० (एक प्रकार का रेशमी कपड़ा)–सं० त्रसर>प्रा० हिं० तसर।

तसु—सर्व० (उसका)–सं० तस्य>प्रा० तस्स>अप० अव० तसु।

तह— स्त्री० (परत, किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो)–फ़ा० तह।

तहसील— स्त्री० (१- लोगों से रुपये वसूल करने की क्रिया, वसूली, २- तहसीलदार की कचहरी)–अ० तहसील।

तहँ—क्रि० वि० (तहाँ)–सं० तत्र>प्रा० अप० तहिँ>तहँ।

तहाँ[११]—क्रि० वि० (वहाँ)–सं० तत्र> प्रा० तत्थ>हिं० तहाँ।

तहीं, ताहीं—परसर्ग (तक, के लिए)–सं० तस्मै>तहिं>तहीं>ताहीं।

तांबूल— पुं० (१- पान, २- पान का बीड़ा)–सं० तांबूलम्>पा० तम्बूलम्> प्रा० तंबोल>हिं० ताँबूल। तुल० ओ० बं० तांबूल, गु० तमोल, म० तांबूल।

ताँत—स्त्री० (भेड़, बकरी की अँतड़ी या चौपायों के पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ सूत। चमड़े या नसों की बनी हुई डोरी)–सं० तन्तु>प्रा० तंतु >अप० ताँति>हिं० ताँत।

ताँबा—पुं० (एक धातु का नाम)–सं० ताम्र>प्रा० तंब>हिं० ताँबा। तुल० पं० उर्दू तांबा, म० तांबें, गु० तांबु, बं० तामा, अस० ताम>ओ० तम्बा।

ताँसना—क्रि० (डाँटना, त्रास देना, धमकाना, सताना)– सं० त्रासन>प्रा० तासण>हिं० ताँसना।

ताइत— पुं० (गंडा, टोटका, तंत्री, ताँत)–अ० तावीज़।

ताऊ—(बाप का बड़ा भाई)–सं० तात >ताओ>ताउ>ताऊ।

ताकना— क्रि० (विचार करना, समझ जाना, देखना)–सं० तर्कण>प्रा० तक्कण, तक्कणा>हिं० ताकना।

ताकि[१]—अव्य० (इसलिए कि, जिससे, जिसमें)–फ़ा० ताकि।

तागा—पुं० (डोरा, धागा)–पह० ताक, फ़ा० ताग>तागा।

ताटंक— पुं० (कान का बाला, कर्णकुंडल)–सं० ताटङ्क>प्रा० ताडंक> हिं० ताटंक।

ताड़—पुं० (वृक्ष-विशेष)–सं० ताल> पा० प्रा० ताल>हिं० ताड़। तुल० पं० म० गु० बं० ताड।

तात— पुं० (१- पिता, २- पूज्य या मान्य व्यक्ति, ३- भाई या मित्र और विशेषतः छोटों के लिए प्रेमपूर्ण सम्बोधन)– सं० तात>प्रा० ताअ>हिं० तात।

ताता— वि० (तपा हुआ, गरम)–सं० तप्त>प्रा० तत्त>अव० तात> हिं० ताता, ह० ताँता, मैथिली तातल।

ताम— पुं० (खेद युक्त क्रोध)–सं० ताम्र>प्रा० अप० तम्म>अव० ताम>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिं० ताम।

तारईं— पुं० (तारों का समूह)–सं० तारागण>प्रा० तारायण> ताराइन> तारईं।

तारना— क्रि० (पार करना, उद्धार करना)–सं० प्रा० तारण>हिं० तारना।

तारा—पुं०(नक्षत्र)–सं० पा० तारका> प्रा० तारगा>बं० ओ० पं० हिं० तारा।

तारीख़—स्त्री० (तिथि, दिनांक)–अ० तारीख़। तुल० पं० तरीक, सिं० उर्दू तारिख, म० गु० तारीख, बं० अस० ओ० तारिख।

तारीफ—स्त्री० (प्रशंसा)–फ़ा० तारीफ़।

तारौ—पुं० (ताला)–सं० तालक>प्रा० तालग, तारय>तालअ> ताला, तारा, तारौ।

ताल— पुं० (जलाशय, तालाब)–सं० तल्ल>ताल।

ताल[2]—पुं० (क्षण)–सं० ताल।

ताल[3]—वि० (ऊँची)–सं० उत्ताल।

ताला—पुं० (कुंडी को अवरुद्ध रखने का यन्त्र)– सं० तालक>प्रा० तालय> तालअ>हिं० ताला। तुल० पं० उर्दू बं० ओ० ताला।

तालाब—पुं० (जलाशय, पोखर)–सं० तडाग>प्रा० तलाग, तलाय>तलाव> तालाब।

ताव—पुं० (गर्मी, क्रोध)–सं० ताप> प्रा० ताव।

तावना—क्रि० (तपाना, गरम करना)– सं० तापन>प्रा० तावण>हिं० तावना।

तावला—वि० (जल्दी करने वाला)– प्रा० उत्ताविल>उतावल>तावला।

तासु—सर्व० (उसका)– सं० तस्य> तस्सु>तासु।

तासों—सर्व० (उससे)–सं० तस्मात्।

ताहि— सर्व० (उसको, उसका)–सं० तस्य>तस्स>ताह, ताहि।

तिउरी—स्त्री० (त्योरी, कुपित दृष्टि, क्रोधभरी चितवन)–सं० त्रिकुटी (भौंहों के बीच का स्थान)>तिउरी।

तिकोन—वि० (तिकोना)–सं० त्रिकोण >हिं० तिकोन, ह० तिकूण।

तिगुना—वि० (तीन गुना)–सं० त्रिगुण >अप० तिगुण>हिं० तिगुना।

तिजारी—पुं० (तीसरे दिन आने वाला ज्वर)–सं० तृतीयक+ज्वर, त्रि+ज्वर >हिं० तिजारी।

तिजोरी—स्त्री० (लोहे का वह सन्दूक या छोटी अलमारी जिसमें रुपये आदि रखे जाते हैं)–अं० ट्रेजरी> तिजोरी। तुल० फ्रेंच Tresor (भंडार), लैटिन thesaurus, ग्रीक thesauros।

तिन[1]—पुं० (तिनका)–सं० तृण>अप० तण>स० हिं० तिन।

तिन[2]—सर्व० (उनसे)–सं० तेन।

तिनका— पुं० (तृण का टुकड़ा)–सं० तृण>अप० तण>तिन+ का (प्र०), तिनका।

तिनुवर[1] (पद०)—पुं० (फूस का ढेर)– सं० तृणपूर, तृणकूट> तिनऊर> तिन-वर।

तिनुवर[2]—पुं० (तिनका)–सं० तृणकुल >तिनउल>तिनउर>हिं० तिनुवर।

तिन्ना— पुं० (एक प्रकार का चावल जो तालाब में होता है)–सं० तृणान्नम् (भा०)>हिं० तिन्नी, अवधी तिन्ना।

CC-0. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिमाही—वि० (तीन महीने का)–सं० त्रिमासीय > तिमाही ।

तिरक[1]—पुं० (हाथी के अीछे का वह स्थान जहाँ से पूँछ निकलती है, रीगड और दोनों पिछली टाँगों का जोड़)–सं० त्रिक (रीढ़ के नीचे का भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं । तीन हड्डियों के मिलने की जगह होने के कारण वह स्थान त्रिक कहलाता है) ।

तिरछा— वि० (जो अपने आधार पर समकोण बनाता हुआ न हो)– सं० तिर्यच् > पा० तिरच्छो > प्रा० तिरच्छ > हिं० तिरछा । तुल० गु० तिर्चु, म० तिरका, पं० तिर्चा ।

तिरछी—वि० (टेढ़ी)–सं० > तिर्यच् > प्रा० तिरिच्छ, प्रा० तिरिच्छि > अप० तिरिच्छी > हिं० तिरछी ।

तिरना—क्रि० (पानी के ऊपर आना या ठहरना)– सं० प्रा० तरण > तरिउं > तिरना ।

तिरानवे—वि० (नब्बे से तीन अधिक की संख्या)–सं० त्रिनवति > अर्ध मागधी तेणउइ > अप० तिणवइ > हिं० तिरानवे ।

तिल—पुं० (काले रंग का छोटा दाग जो शरीर पर होता है)–सं० तिलक > प्रा० तिलय, तिलअ > हिं० तिल ।

तिलस्म—पुं० (जादू, चमत्कार)–अ० तिलिस्म ।

तिवारी—पुं० (ऋक्, यजुः और साम इन तीन वेदों का ज्ञाता, ब्राह्मणों का एक भेद)–सं० त्रिवेदी > तिवारी ।

तिश्ना—स्त्री० (तृष्णा, तिश्नाह)–सं० तृष्णा > प्रा० तिसणा > हिं० तिश्ना ।

तिस[1]—सर्व० (उस, उसे)–सं० तस्य > पा० तिस्स > प्रा० तिस्स > अप० तिस्स, तिस्सु > हिं० तिस, तिसु ।

तिस[2]—स्त्री० (तृषा, प्यास)–सं० तृषा > प्रा० तिषा > हिं० ह० तिस ।

तिसिग्रो—वि० (प्यासा)–सं० तृषित > > प्रा० तिसिय > अप० तिसिओ ।

तिहाई— वि० (तीसरा अंश, तीसरा भाग)– सं० त्रिभागिक > तिहाइअ > तिहाई ।

तिहुण—पुं० (त्रिलोक)–त्रिभुवन > प्रा० तिहुवण > स० तिहुअण > हिं० तिहुण, तिहुयन ।

तीखा—वि० (तीक्ष्ण)–सं० तीक्ष्ण > प्रा० तिण्ह, तिक्ख > हिं० तीखा । ह० तीक्खा ।

तीज—स्त्री० (स्त्रियों का पर्व, प्रत्येक पक्ष की तीसरी तारीख)–सं० तृतीया > पा० ततिया > प्रा० तइया > तइज्जा, तिज्जा > अप० तइज्जी, तिइज्ज > तीज । पंजाबी तीआँ, तीजा, त्रीजा, ने० तिज, सिं० टीजो ।

तीजा—पुं० (मुसलमानों में किसी के मरने पर तीसरे दिन के कृत्य)– सं० तृतीयक > प्रा० तीअअ > तअीजअ > तीजा ।

तीतर—पुं० (पक्षी-विशेष)–सं० तित्तिर > पा० तित्तिरो > तितर । तुल० बं० तितिर, ओ० तित्तिरा, पं० तित्तर, सिं० तितिरु, गु० तीतर, म० तित्तर ।

तीता[1]— वि० (भीगा हुआ, तर)–पा० तित्त > हिं० तीता ।

CC0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीता[२]—वि० (जिसका स्वाद तीखा या चरपरा हो)–सं० तिक्त>प्रा० तित्त >हिं० तीता।

तीन—वि० (दो और एक का जोड़)–सं० त्रीणि>प्रा० तीणि>स० तिण्ण> अप० तिण्णि, तिन्न, अव० तिन्नि> तीन। तुल० बल्गा० त्रि, स्पे० तरेस।

तीन-पनिया—पुं० (एक साग का नाम)–सं० त्रिपर्ण>प्रा० तिण्ण पणय>छ० तीन-पनिया।

तीमन— पुं० (बनी हुई तरकारी या उसका रसा)–सं० तेमन>प्रा० तीमण >हिं० तीमन।

तीस—वि० (उनतीस और एक)–सं० त्रिंशत्>प्रा० तीसा>अर्ध मागधी तीस >अप० तीसंति, (प्रा० पैं०) >हिं० तीस। तुल० पं० तीह, उर्दू म० तीस, गु० त्रीस, ओ० बं० तिरिश।

तीसरा—वि० (गिनती में तीन के स्थान पर पड़ने वाला)–सं० तृतीय>तिज्जा, तइजो>तइअ (प० च०, प्रा० पैं०)> हिं० तीसरा (सर प्रत्यान्त)। तुल० पं० तीजा, उर्दू तीसरा, कश्मी० त्रेयुम्, सिं० टियोँ, म० तिसरा।

तीसी—स्त्री० (अतसी नामक तेलहन)–सं० अतसी>तीसी।

तुक्का—पुं० (बिना फ़र का तीर)–फ़ा० तुकह्।

तुझ, तुझे[११]—सर्व० (तुम)–सं० तुभ्यम् >प्रा० तुज्झं >तुज्झ > हिं० तुझ। तुल० म० तुझें, बं० तुमरा।

तुम—सर्व० ('तू' शब्द का बहुव०)–सं० त्वम्>पा० तुम्हे>प्रा० तुम्ह> अप० तुम्हे, तुम्ह>हिं० तुम। तुल० अ० अन्तुम।

तुम्हार—सर्व० (तुम्हारा)–सं० त्वदीय >प्रा० तुम्हकेर>अप० तुम्हार, छ० तुम्हार, तुम्हरा; तुहांर (बो०)।

तुम्हारा[१०]—सर्व० ('तुम' का सम्बन्ध कारक का रूप)– (१) सं० युष्मे+ कार्यकः>तुम्ह कारको> तुम्हारउ> तुम्हारो>तुम्हारा। (२) सं० युष्मदीय >प्रा० तुम्हकेर>तुम्हारा।

तुम्हें— सर्व० (तुमको बहुव०)–सं० युष्माभिः> युष्मेभिः > तुष्मेभिः> तुम्हेहिं>तुम्हें।

तुरंत— क्रि० वि० (झटपट, शीघ्र, तुरत)–सं० त्वरितम्>प्रा० तुवरंत> प्रा० तुरंत>हिं० तुरंत, तुरत।

तुरय—पुं० (घोड़ा)–सं० तुरग>प्रा० तुरय>तुरै।

तुराई— स्त्री० (रुइ का गद्दा)–सं० तूलिका> प्रा० तूलिआ > तूलाई > तूराई>तुराई।

तुरिय—पुं० (घोड़ा)–सं० तुरग>तुरय >तुरिय, तुरिअ।

तुरी (पद०)—स्त्री० (घोड़ी)– सं० तुरगी>तुरइ>तुरी।

तुर्क—पुं० (१- तुर्किस्तान का निवासी; २- मुसलमान)–सं० तुरुष्क>प्रा० तुरूक्क>हिं० तुर्क।

तुर्रा[१]—पुं० (मटर का तने पर निकला हुआ सूत-सा)– सं० तूणक> तूड़अ> तूड़ा>तुर्रा।

तुर्रा[२]—पुं० (घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो)–अ० तुर्रा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल, तूल—वि० (बराबर)–सं० तुल्य।

तुष, तुस— पुं० (अन्न का छिलका, भूसी)–सं० तुष>प्रा० तुस>हिं० तुष, तुस।

तू— सर्व० (मध्यम पुरुष एक व० सर्व०)–सं० त्वम्>पा० तुवं>प्रा० तुं, तुमम् (पिशेल)> अप० तुहुं> तुहु> हिं० तूँ, तू। बंगा० ति, स्पे० तु।

तूरा—पुं० (तुरही नाम का बाजा)–सं० तूर्यं>प्रा० अप० तूर>हिं० तूरा।

तें[1] (की०)— क्रि० वि० (इसलिए)–सं० तत्>प्रा० तं० (इस कारण)> अव० तें।

तें[2]—प्र० (से, द्वारा)–सं० तस् (प्र०)।

तेंतालीस—वि० (चालीस और तीन)–सं० त्रयश्चत्वारिंशत् > अर्ध मागधी तेयालीस>अप० तियालीस>हिं० तेंतालीस।

तेंतीस— वि० (तीस और तीन)–सं० त्रयस्त्रिंशत्>अर्धमागधी अप० तेत्तीस> हिं० तेंतीस।

तेईस—वि० (बीस से तीन अधिक)–सं० त्रिंविंशति>पा० तेवीसति>प्रा० तेवीस अप० तेइस>हिं० तेईस। म० तेवीस, बं० तेइस्, ओ० तेइस, पं० तरेइ, गु० त्रेवीस।

तेजमान—वि० (प्रतापी, ऐश्वर्यमान)–सं० तेजस्विन्>प्रा० तेजस्सि, तेजंसि> तेज+वान>तेजमान।

तेढ़ा— वि० (तिरछा)–सं० तिर्यक्> पं० हिं० तेढ़ा। सिं० तेडो।

तेता—वि० (उतना)–सं० तावत्>प्रा० तेत्तिअ>हिं० तेता।

तेरस—स्त्री० (त्रयोदशी, किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि)– सं० त्रयोदशी>प्रा० तेरस।

तेरसि—स्त्री० (त्रयोदशी)–सं० त्रयोदशी>प्रा० तेरसी>हिं० तेरसि।

तेरह—वि० (तीन और दस)–सं० त्रयोदश>प्रा० तेद्दह, अर्धमागधी तेरस> अप० हिं० तेरह। अवेस्ता तेर। तुल० पं० तेराँ, उर्दू तेरह, सिं० तेरहाँ, बं० गु० ओ० तेर।

तेरा—सर्व० (तू का संबंध-कारक रूप है)– सं० तव+कृतक> तव केरक> तवेरअ>तउर, तोर, तेरा (बोलीगत भेद)। तुल० स्पे० तु।

तेल—पुं० (चिकना तरल पदार्थ)–सं० तैलम्>प्रा० तेल्ल>हिं० तेल।

तेली— पुं० (तेल पेरने वाला)-सं० तैलिक>प्रा० तेल्लिअ>हिं० तेली।

तेवर—पुं० (कुपित दृष्टि)–सं० त्रिकुटी >तिउरि>तेवर।

तेहत्तर—वि० (सत्तर और तीन)–सं० त्रिसप्तति>अर्ध मागधी तेवत्तरि>अप० तेहत्तरि>हिं० तिहत्तर, तेहत्तर। पं० तिहत्तर, गु० तोतेर, म० त्र्याहत्तर।

तेहरा—वि० (१- तीन तहों या परतों वाला, २- जो एक साथ तीन हो, ३- तिगुना)–सं० त्रिधा>पा० तिधा>प्रा० तिहा>हिं० तेहरा। तुल० पं० तेहरा, बं० तेहारा, म० तिहिरी।

तैं—पुं० हिं०, सर्व०(तू)–सं० त्वया> प्रा० तइ, तुइ>अप० तइ, तुइं>तइँ >ब्रज अव० तैं।

तैसा—वि० (उस प्रकार, आकार, रूप आदि का)–सं० तादृश्>प्रा० ताइस>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अप० तइस>तइसअ>अव० तइसउ, तइसओ>हिं० तैसो, तैसा। म० तसा, तइसा।

तोंद—स्त्री० (पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग)–सं० प्रा० तुन्द> तउँद> हिं० तोंद।

तोंदल—वि० (तोंद वाला, जिसका पेट आगे को निकला हुआ हो)–सं० तुन्दिल >प्रा० तुन्दिल्ल>हिं० तोंदल। म० तोंदेल।

तो[1]—अव्य० (तब)–सं० ततः>प्रा० तओ>अव० तो। गु० तांव।

तो[2]—सर्व० (तुझ, तेरा)–सं० तव।

तोखार—पुं० (तुषार, हिम, तुखार)–सं० तुषार>प्रा० अप० तुसार>अव० तोखार, तुखार।

तोड़—पुं० (तोड़ने की क्रिया या भाव)–सं० त्रोट्> प्रा० तोड, तोडइ> हिं० तोड़।

तोड़ना— क्रि० (भग्न, विभक्त या खंडित करना)– सं० √त्रुट्>प्रा० तोडइ>हिं० तोड़+ना।

तोड़ी—पुं० (एक रागिनी)–सं० त्रोटिका >प्रा० तोडिआ>हिं० तोड़ी।

तोरई—क्रि० (तोड़ता है)–सं० तोडति (√तुड्)>हिं० तोरई।

तोरन—पुं० (द्वार, द्वार के ऊपर अर्ध-चन्द्राकार सजावट जो पत्तों आदि से की जाती है, बंदनवार, प्रवेश द्वार)– सं० प्रा० तोरण>हिं० तोरन। तुल० अस० क० गु० बं० मल० म० तोरण। ते० तोरणमु।

तोवा— स्त्री० (भविष्य में कोई बुरा काम न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा)– अ० तौबः।

तोला[1]—पुं० (रास तोलने वाला)–सं० तोलक>तोलअ>तोला।

तोला[2]—पुं० (बारह माशे की तोल)–सं० तोलक (√तुल्)= हिं० तोला। पं० बं० तोला, गु० तोलो, ने० तोला।

तोहफ़ा—पुं० (सौगात, भेंट, उपहार)–अ० तोहफ़ह्।

तौंबा—पुं० (खोखला किया हुआ सूखा तितलौका=गोल कद्दू)–सं० तुम्ब+क >तुंबअ>तुम्बा>हिं० तौंबा।

तौ (की०)—क्रि० वि० (उसके बाद)–सं० ततः>तउ>अव० तौ।

तौर[1]—सर्व० (तुम्हारा)–सं० तव+क >तौर।

तौर[2]—पुं० (चालढाल, चालचलन)–अ० तौर।

तौलना—क्रि० (१- तराजू, काँटे आदि पर रखकर किसी वस्तु के भारीपन का परिमाण जानना, २- साधना)– सं० तोलन>प्रा० तोलण>हिं० तौलना।

त्यों— क्रि० वि० (उस प्रकार, उस भाँति)–सं० तदा एवम्>तअएउँ>हिं० त्यों।

त्यौरी—स्त्री० (चितवन, दृष्टि)–सं० त्रिकुटी>तिउरी>हिं० त्यौरी।

त्यौहार—पुं० (पर्व-दिन)– सं० तिथि-वार>तिहिवार> तिउहार>हिं० त्यौ-हार।

त्रपन—पुं० (तर्पण)–सं० तर्पण>प्रा० तप्पण>हिं० त्रपन।

त्वचा—स्त्री० (चमड़ा)– सं० त्वचा। असमिया त्वच्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थ

थंब— पुं० (खंभा, स्तंभ, थूनी, थाम, मस्तूल)–सं० स्तम्भ>पा० थब, थम> प्रा० थंभ, थंब, हिं० थम्भ, खंभ, थाम।

थंभना—क्रि० (ठहरना)– सं० स्तम्भन >प्रा० थंभण>हिं० थंभना।

थड़ा—पुं० (बैठने की जगह)–सं० स्थ-पुट>प्रा० थउड>हिं० थड़ा।

थड़ी— स्त्री० (बैठने की जगह)–सं० स्थली>अप० थडि>हिं० थड़ी।

थन— पुं० (चौपायों का स्तन)–सं० स्तन>प्रा० अप० थण>हिं० थन। तुल० पं० थण, कश्मी० थन्, सिं० थणु, गु० थान।

थनवार— (की०) पुं० (स्तबल का अध्यक्ष)–सं० स्थानपाल>प्रा० थाणपाल अव० थनवार।

थपना— क्रि० (स्थापित करना)–सं० स्थापन>प्रा० थप्पण>हिं० थपना, छ० थप।

थबिर—वि० (दृढ़, मज़बूत, बूढ़ा)–सं० स्थविर>प्रा० थविर>हिं० थबिर।

थमना— क्रि० (रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना)–सं० स्तम्भ् >प्रा० थंभ>हिं० थमना।

थमा—वि० (रुका हुआ, गतिहीन, निश्-चल)–सं० स्तिमित, स्तम्भित> प्रा० थंभिय>हिं० थमा।

थरथराना—क्रि० (कांपना; शीत, भय आदि से शरीर में कंपन होना)– सं० थरथराय्>प्रा० थर थर>हिं० थर-थराना, थर्राना।

थरि— स्त्री० (आवास-स्थान)– सं० स्थली>प्रा० थली>हिं० थरि।

थरिया—स्त्री० (थारी, थाली)– सं० स्थालिका > प्रा० थल्लिआ > हिं० थलिया, थरिया।

थरी— स्त्री० (१- जंगली पशुओं की मांद, २- जल शून्य भू-भाग, ३- जिस स्थान पर कोल्हू गाड़ा जाता है, वह सतह थरिया या थरी कहलाती है)–सं० स्थली>प्रा० थली>हिं० थरी।

थलचर—पुं० (पृथ्वी पर रहने वाले जीव)–सं० स्थलचर>हिं० थलचर।

थल— पुं० (१- स्थान, २- जल से रहित भूमि, ३- स्थल का मार्ग)– सं० स्थल>पा० प्रा० हिं० थल। तुल० कु० गु० म० थल।

थलचारी—वि० (भूमि पर चलने वाले)– सं० स्थलचारिन्।

थली—स्त्री० (स्थान, जल के नीचे का तल, ठहरने या बैठने की जगह)–सं० स्थली>प्रा० थली> हिं० थली, ह० थली।

थवई, थबई[१]—पुं० (बढ़ई, घर बनाने वाला राज)–सं० स्थपति>पा० थपति >प्रा० थवइ>हिं० थबई।

थाँवला— पुं० (वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो)–सं० स्थ-ण्डिल>प्रा० थाउँल> हिं० थाँवला, थमला।

था—क्रि० ('है' शब्द का भूतकाल)– (१) सं० स्था>पा० प्रा० अव० ठा >हिं० था। (२) हता>था (वर्ण-विपर्य्यय)[१८]। (३) सं० भूतः>हूता> हुता>ता>था।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थाउ—पुं० (स्थान)–सं० स्थान>प्रा० थाण, ठाण>ठाँउ>हिं० थाउ।

थाका[1] (पद०)—क्रि० (रहा हुआ)–सं० स्थित>प्रा० थक्क>थाका।

थाका[2]—पुं० (गुच्छा)–सं० स्तवक।

थानक— पुं० (जैन मुनियों के ठहरने का स्थान)–सं० स्थानक>थानक।

थाना—पुं० (टिकने या बैठने का स्थान जैसे पुलिस-थाना)– सं० स्थान+क> थाणअ>थानअ>हिं० थाना।

थानी—पुं० (स्थान का स्वामी)– सं० स्थानिन्>थाणी>थानी।

थानुसुत— पुं० (शिव जी के पुत्र गणेश)–सं० स्थाणु+सुत>थाणुसुत> हिं० थानुसुत।

थाप—क्रि० (थापना, गोबर थापना)– सं० स्थापयति>थप्पि>अप० थापे> हिं० छ० थाप।

थापना—(थोपना, थपथपाना, स्थापित करना, ठहरा देना)–सं० स्थापन>प्रा० थापण>हिं० थापना। पुं०–सं० स्थापन।

थामना—क्रि० (हाथ में लेना या हाथ से पकड़ना)–सं० स्तंभन>प्रा० थंभण> थभाँना>हिं० थामना।

थार, थाल—पुं० (बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र)–सं० स्थाल>पा० प्रा० अप० हिं० थाल, स्त्री० थाली, थारी।

थारा—सर्व० (तुम्हारा)–सं० युष्मदीय> प्रा० तुम्हकेर>अप० तोम्हार>तुम्हार >थार, थारा, थारो। पं० थ्वाडा।

थाली—स्त्री० (भोजन करने का पात्र)– सं० स्थाली>पा० प्रा० थाली, थलिआ >अप० थाली>हिं० थाली। तुल० सिं० थारु, म० थाळी, गु० थाळ।

थावर—पुं० (अचल, अक्रियाशील, कोई निर्जीव वस्तु)–सं० स्थावर>प्रा० हिं० थावर। तुल० गु० थावर, म० थार (णें), सिं० थार (शांत)।

थाह—स्त्री० (गहराई का अन्त, तला, सीमा)– सं० स्थाघ > प्रा० थाह (पाइअ०)>हिं० पं० थाह। तुल० सिं० थाहु, बं० था।

थिगली, थेगली— स्त्री० (वह टुकड़ा जो किसी फटे हुए कपड़े या किसी वस्तु का छेद बंद करने के लिए टाँका या लगाया जाए, चकती, पैबंद)– प्रा० थिग्गल>थिगली, थेगली।

थिर— वि० (जो चलता या हिलता डोलता न हो)–सं० स्थिर>पा० प्रा० थिर>अप० थीर>हिं० थिर। तुल० म० थीर, गु० थिर, सिं० थिरि, ओ० थिर।

थुर-हथा— वि० (जो अपने छोटे-छोटे हाथों के कारण चंगुल, मुट्ठी या हथेली में अधिक चीज न ले सकता हो)–सं० स्थूलहस्तः>थुल हत्था>थुरहथा।

थुलथुल—वि० (अधिक चरबी के कारण शिथिल व्यक्ति, मांसल किन्तु अशक्त)– सं० स्थूल>प्रा० थुल्ल>हिं० थुलथुल।

थू—अव्य० (थूकने का शब्द, एक निन्दा या घृणासूचक अव्यय)–सं० थूत्>प्रा० थू>हिं० थू। तुल० पं० थू, सिं० थू०, गु० थुथु, म० थुः थुः।

थूक—स्त्री० (वह गाढ़ा लसीला सफेद रस जो मुँह से निकलता है, थूक,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खखार)–सं० थूत्+कृत्>प्रा० थुक्क> अव० थुक (की०)>हिं० थूक।

थूकना—क्रि० (मुँह से थूक निकालना या फेंकना)–सं० थूत्+कृ>प्रा० थुक्क >थुक्केइ>हिं० थूक+ना। तुल० बं० ओ० थुक, पं० थुक्क' सिं० थुक, गु० थूंक, म० थुक (णें)।

थूना— पुं० (लकड़ी की बल्ली, टेक, किसी बोझ को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाया जाने वाला खंभा)–सं० स्थूणा>पा० थूण>प्रा० थूणा> हिं० थूना, स्त्री० थूनी।

थूरना—प्रा० प्र०, क्रि० (कूटना, मारना, कसकर भरना)– सं० थुर्वण> हिं० थुरना, थूरना।

थूल—वि० (मोटा, भारी)–सं० स्थूल >पा० थूल>पा० प्रा० थुल्ल>अप० थोल, अव० थोल (की०)>हिं० थूल।

थूवा—पुं० (१- मिट्टी आदि के ढेर का बना हुआ टीला, ढूह। २- गीली मिट्टी का पिंडा। ३- सीमासूचक स्तूप। ४- मिट्टी का लोंदा जो बोझ के लिए ढेंकली की आड़ी लकड़ी के छोर पर थोपा जाता है)–सं० स्तूप>पा० थूप>प्रा० थूवा, अप० थवा>हिं० थूवा, थूआ, थुवा।

थूहा—पुं० (ढूह, टीला)–सं० स्तूप> प्रा० थूभ>हिं० थूहा।

थैला— पुं० (कपड़े, टाट आदि को सीकर बनाया हुआ, जिसमें कोई वस्तु भर सकें, बड़ा कोश, बड़ा बटुआ)–टर्नर के अनुसार—सं० स्थाविह (sthavih(?) >पा० थाविका (स्त्री०), प्रा० थाइआ। (स्त्री०) तुल० कश्मी० थेला, ना० चीला, ने० कु० थैलो, बं० थैला, म० थैला।

थोक—पुं० (१- ढेर, राशि, २- समूह, झुंड, जत्था)–सं० स्तोम (राशि, ढेर) +क>प्रा० थोक्क>हिं० थोक। तुल० गु० पं० म० थोक।

थोड़ा—वि० (जरा सा, जो मात्रा में अधिक न हो, न्यून)–सं० स्तोक>पा० थोक>प्रा० थोव>अप० थोडय (प० च०)>थोडअ>हिं० थोड़ा।

थोथा— पुं० (नीला थोथा, दवाई विशेष)–सं० तुत्थ+क>हिं० थोथा।

थोपना—क्रि० (किसी गीली चीज की मोटी तह ऊपर से जमाना या रखना)– सं० स्थापन > प्रा० थावण > हिं० थोपना।

थोबड़ा— पुं० (थूथन, जानवरों का निकला हुआ लंबा मुँह)–फ़ा० तोबरः।

द

दंग—वि० (अप्रत्याशित बात देखकर जो बहुत अधिक चकित हो गया हो)– फ़ा० दंग।

दंगल—पुं० (१- कुश्ती करने का स्थान, अखाड़ा, २- कुश्ती की प्रतियोगिता)– फ़ा० दंगल।

दंगा—पुं० (उपद्रव)–फ़ा० दंगा। तुल० ओ० पं० दंगा, गु० दंगो, ने० दङ्गा, कुं० दंगो।

दंड[1]—पुं० (डंडा, सोंटा, लाठी)–सं०पा० दण्ड>प्रा० दंड >हिं० दंड। तुल० गु० दंड, दांडो; म० दंड, दांड, सिं० डंड।

दंड[2]—पुं० (हरजाने के रूप में दिया जाने वाला धन)–सं० दण्ड>प्रा० दंड

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>हिं० दंड।

दंत—पुं० (दाँत)–सं० पा० दन्त>प्रा० हिं० दंत। तुल० गु० म०दंत, सिं० डंदु; पं० डंद, दंद, कश्मी० दंद।

दउना — पुं० (दौना, एक सुगन्धित पौधा)–सं० द्रमनक>प्रा० दमणय > दमणअ>दँवना > हिं० दउना। तुल० बं० दोना, ओ० दयणा, पं० दोना, म० दवना, गु० दमण।

दख्खन—पुं० (दक्षिण)–सं० दक्षिण> पा० प्रा० दक्खिण>हिं० दख्खन, द० हिं० दखन। तुल० फ़ा० दकन।

दगवै — (पद०)–पुं० (द्रुगंपति)–सं० द्रुगपति >प्रा० दुग्गवइ>दंगवइ > दंगवै।

दचका(१)—पुं० (दचकने की क्रिया या भाव)–पश्तो दचका।

दतौन(१)—स्त्री० (दतुवन, दाँतन, दाँत साफ करने की लकड़ी)–(१) दंतपर्ण> प्रा० दंतवण, दंतवण्ण>दंतवन, दंतौन, दातौन।

दतुवन, दातुन(२) —सं० दन्तपवन (जो दाँतों को साफ करे)–चरक, सूत्रस्थानम् में उल्लिखित, पृ० ३९। 'भक्षयेद्दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन्, अर्थात् दाँत के मसूड़ों को पीड़ा न पहुँचाते हुए दातुन को चबायें।

दफा—स्त्री० (कानून की धारा, क्रम, संख्या आदि के विचार से किसी परम्परा में वह अवसर या काल जिसमें कोई ऐसा काम या बात हुई हो, जिसकी फिर भी आवृत्ति हो या होने को हो)–अ० दफ़ा।

दमड़ी—स्त्री० (एक प्रकार का पुराना सिक्का)–सं० द्रम>प्रा० दम्म>अप० द्रम्मु>हिं० दमड़ी।

दमदमाना—क्रि० (१- चमकना, २- 'दमदम' की ध्वनि करना)–सं० दमदमायते>दमदमाय > प्रा० दमदमा> हिं० दमदमाना।

दर[1]—पुं० (द्वार)–फ़ा० दर>हिं० दर, ह० दर्।

दर[2]—पुं० (जगह)–फ़ा० दर।

दरकार —स्त्री० (आवश्यकता)– फ़ा० दरकार।

दरज—स्त्री० (दरार)–फ़ा० दर्ज़।

दरजी—पुं० (वह व्यक्ति जो दूसरों के कपड़े सीकर जीविका उपार्जित करता हो)–फ़ा० दर्ज़ी।

दरद—पुं० (पीड़ा, व्यथा)–फ़ा० दर्द।

दरबर—स्त्री० (उतावली, जल्दबाजी, शीघ्रता)–प्रा० अप० दडबड > हिं० दडवड़>दरबर।

दरबान — पुं० (द्वारपाल) – फ़ा० दरबान।

दरबार—पुं० (राज-सभा, कचहरी, वह स्थान जहाँ राजा-महाराजा अपने सरदारों या मुसाहबों के साथ बैठते हैं)–फ़ा० दरबार।

दरमियान — पुं० (मध्य, बीच)–फ़ा० दरमियानः।

दरयाफ़्त—स्त्री० (जाँच, अनुसंधान)–फ़ा० दरयाफ़्त।

दरवाजा — पुं० (द्वार, दर)–फा० दरवाजः।

दराँत, दराँती—स्त्री० (हँसिया, घास काटने का औजार)–सं० दात्र>पछाँही हिन्दी दराती। पंजाबी दातरा, पूरबी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दाई, दाव, दाति ।

दराज[1]—स्त्री० (मेजमें लगा हुआ वह खाना जो बाहर खींचा या खोला जा सकता है)–अ० दुरज ।

दराज[2]—वि० (१- बहुत बड़ा या लंबा, दीर्घ, २- दूर तक फैला हुआ)–फ़ा० दराज़ ।

दरीचा—पुं० (झरोखा, छोटा दरवाजा, खिड़की)–फ़ा० दरीचः ।

दर्जा—पुं० (१- श्रेणी, वर्ग, २- पद, ओहदा)–अ० दरजा ।

दर्रा—पुं० (दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता, घाटी)–फ़ा० दरः ।

दलिद्दर—वि० (दरिद्र, परम निकृष्ट)–सं० दरिद्र>पा० दलिद्द>प्रा० दरिद्द >हिं० दलिद्दर ।

दवा — स्त्री० (ओषधि, औषध)–अ० दवाअ ।

दवात — स्त्री० (सियाही रखने का पात्र)–अ० दवा, दवात । तुल० पं० उर्दू दवात, कश्मी० दवाथ्, म० दौत, बं० दोयात, क० दौति ।

दवारि—स्त्री० (वन की आग)–सं० दावाग्नि>हिं० दवागि, दवारि ।

दशा — स्त्री० (अवस्था, स्थिति)–सं० दशा>प्रा० दसा>हिं० दशा ।

दस[1]—वि० (पाँच का दूना)–सं० दशन् >प्रा० दस । तुल० पं० उर्दू गु० दस, ओ० दश । बल्गा० दसैत ।

दस[2]—(की०) क्रि० (दिखाता है)–सं० दर्शय>प्रा० दस्स>अव० दस ।

दसौंधी—(पद०) पुं० (भाटों की एक संज्ञा, चारणों की एक जाति जो अपने आप को ब्राह्मण कहती है)–सं० दशबुद्धि >दसउद्धि>दसौधी>दसौंधी ।

दस्तक—स्त्री० (१- हाथ से किया हुआ हलका आघात)–फ़ा० दस्तक ।

दस्तखत—पुं० (किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर)–फ़ा० दस्तखत ।

दस्ता—पुं (१- बेंट, मूठ, २- कागज के २४ या २५ तावों की गड्डी) – फ़ा० दस्तः ।

दस्ताना—पुं० (हाथ का मोजा)–फ़ा० दस्तानः ।

दस्ती—वि० (जो किसी व्यक्ति के हाथ दिया या भेजा गया हो)–फ़ा० दस्त= हाथ, दस्ती ।

दस्तूर — पुं० (१- रीति, नियम, क़ायदा)—फ़ा० दस्तूर ।

दह—पुं० (१- कुंड, हौज, २- नदी में वह स्थान जहाँ आस-पास की अपेक्षा पानी बहुत अधिक गहरा हो)–सं० हृद >हद>हिं० दह ।

दहाई—स्त्री० (दस का मान या भाव)–सं० दशकः>हिं० दस, दहाई । तुल० फ़ा० दह+आई (प्र०)

दहिना—वि० (दाहना, बायाँ का उलटा दाहिना)–सं० दक्षिण>प्रा० दक्खिण> हिं० दहिना ।

दही — पुं० (दूध में जामन लगाकर जमाये जाने पर उसका तैयार होने वाला रूप)–सं० पा० दधि>प्रा० दहि >हिं० दही । तुल० पं० उर्दू दहीं, गु० म० दहीं, बं० दइ, ओ० दहि ।

दही-बड़ा—पुं० (उर्द की पिसी दाल की घी या तेल में भुनी हुई और दही में भीगी टिकिया)–सं० दधिवटक>प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दहिवडअ>हिं० दही बड़ा।

दहेंड़ी—स्त्री० (बिलोमनी, जिस मिट्टी के पात्र में दही बिलोया जाता है)–सं० दधि+भाण्डिका>प्रा० दहि हांडिआ> दअ हांडिआ>दहाँडिआ>दहेडिआ > हिं० दहेंड़ी, दहैंड़ी। अवधी दुधहंड़ी।

दहेज—पुं० (वह धन जो विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाता है)–सं० दातव्य>अप० दाइज्ज>दाहिज्ज>हिं० दहेज।

दाँत—पुं० (दंत, दाढ़)–सं० पा० दन्त >प्रा० दंत>हिं० दाँत। तुल० म० दांत, पं० दन्द, सिं० डन्दी।

दाइज— पुं० (दहेज)–सं० दातव्य> दायज्ज>दाइज्ज>दाइज।

दाई — स्त्री० (धाय, दाया) – सं० धात्रिका>धाइआ>धाई>हिं० दाई। तुल० पं० सिं० दाई, गु० दायण, कश्मी० दाय्। फ़ा० दाया।

दाऊ—पुं० (बड़ा भाई)–सं० तात> ताऊ>दाऊ।

दाख—स्त्री० (अंगूर नामक लता और ऊसका फल)–सं० द्राक्षा>प्रा० दक्खा >दक्ख>हिं० दाख।

दाग[1]—पुं० (चिह्न, धब्बा, कलंक)–फ़ा० दाग़। पं० उर्दू बं० अस० ओ० दाग, सिं० दागु, कश्मी० दाग्।

दाग[2]—पुं० (हिन्दुओं में मृतक का शव जलने की क्रिया)–सं० प्रा० दाह।

दागे—क्रि० (जलाये गए)–सं० दग्ध> प्रा० दड्ढ>दाग>अवधी दागे।

दाढ़—स्त्री० (जबड़े के भीतर के मोटे पिछले चौखूंटे दाँत)–सं० दंष्ट्रा>पा० प्रा० दाढा>अप० दाढ (प० च०)> हिं० दाढ़।

दाढ़ी—स्त्री० (ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल)–सं० दाढिका>पा० दाथिका> प्रा० दाढिआ>हिं० दाढ़ी। तुल० कुं० दाडी, बं० ओ० दाडी, सिं० डाढी, ने० दारि।

दाद—स्त्री० (एक चर्म-रोग, जिसमें शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड़ जाते हैं जिनमें बहुत खुजली होती है)– सं० दद्रु>पा० प्रा० दद्दु>हिं० दाद। तुल० सिं० दद्धु, गु० दादर, उर्दू बं० दाद।

दादा—पुं० (पिता का पिता)–सं० तात +क>दादअ>हिं० दादा। तुल० पं० उर्दू गु० दादा। टिप्पणी–जनसाधारण में 'दादा' शब्द 'धूर्त एवं हेकड़' मनुष्य के लिए भी प्रयोग होता है।

दाना—पुं० (१- अन्न का कण या बीज, २- अनाज)–फ़ा० दानह।

दाप—पुं० (अभिमान, घमंड)–सं० दर्प >प्रा० दप्प>हिं० दाप।

दापे (की०)—पुं० (बल, पराक्रम)– सं० दर्प्प>प्रा० दप्प > अव० दापे (की०)।

दाभ—पुं० (एक प्रकार का कुश)–सं० दर्भ>प्रा० दब्भ>हिं० दाभ। तुल० गु० डाभ, दाभ; पं० दब्भ।

दाम[1]—पुं० (पैसा-टका, रुपया-पैसा, एक दमड़ी का तीसरा भाग, पैसे का चौबीसवाँ या पचीसवाँ भाग)–सं० द्रम्म >प्रा० दम्म > दाम। तुल० ग्रीक द्रख्मे।

दाम[2]—पुं० (रस्सी, रज्जु)–सं० दामन्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>प्रा० दावण>दावन>दाम।

दाम[3]—पुं० (एक पुराना सिक्का जो रुपये का चालीसवाँ हिस्सा होता था)–फ़ा० दाम।

दामण—स्था० प्र०, स्त्री० (रस्सी)–सं० दामन् (√दा)> प्रा० दावण>हिं० दामण।

दामन—पुं० (लहंगा, गले में या वक्षःस्थल पर पहने हुए अंगरखे, कुरते आदि का कमर से नीचे का वह भाग जो झूलता या लटकता रहता है)–फ़ा० दामन।

दामाद—पुं० (पुत्री का पति, जमाई)–सं० जामातृ, जामता (प्रथमा विभक्ति, एक व०)>फ़ा० दामाद। तुल० उर्दू दामाद।

दामिनी—स्त्री० (विद्युत्)–सं० दामिनी (दामन्+अण्—ङीप्)।

दायाँ— वि० (दाहिना, बायाँ का उलटा)–सं० दक्षिण>प्रा० दक्खिण, दाहिण>दाइन>दायन>दायँअ> हिं० दायाँ। तुल० स्पे० देरेचो।

दारा—स्त्री० (पत्नी, भार्या)–सं० प्रा० दार>हिं० दारा ('आ' स्त्री० प्र०)।

दारिद्द (की०)—संज्ञा (दरिद्रता)–सं० दारिद्र्य>प्रा० अव० दारिद्द।

दारोगा—पुं० (निगरानी रखने वाला अफसर)–फ़ा० दारोग़ह्>दारोगा।

दाव, दावँ[1]—पुं० (वह द्रव्य जो खिलाड़ी जुए में लगाते हैं)–सं० द्रव्य> प्रा० दविअ>अप० दव्व>दाव>दावँ।

दावा—पुं० (सम्पत्ति या अधिकार की रक्षा या प्राप्ति के लिए चलाया हुआ मुकदमा)–अ० दावा।

दास्तान—स्त्री० (१- वृत्तान्त, हाल, २- किस्सा)–फ़ा० दास्तान।

दाहिना—वि० (बायाँ का उलटा)–सं० दक्षिण>प्रा० दक्खिण>अप० दाहिण> हिं० दाहिना। तुल० म० दाहीण।

दिउठन—पुं० (देवों का उठना एवं विष्णु का शेष की शैया पर से उठना जो कार्तिक शुक्ला एकादशी को होता है)–सं० देवोत्थानिका>प्रा० देव उट्ठाणिआ >देव उठ्ठानिआ>देवट्ठानि> देवट्ठन>दिवठन>दिउठन।

दिखावा — पुं० (आडंबर, झूठा ठाठ, ऊपरी तड़क भड़क)–सं० दर्शापकः> हिं० दिखावा।

दिछणा—स्त्री० (वह धन जो ब्राह्मणों या पुरोहितों को यज्ञादि कर्म कराने के पीछे दिया जाता है)–सं० दक्षिणा> दिछणा (बो०), ह० दिछ़णा।

दिनअर—पुं० (सूर्य)–सं० दिनकरः> अप० दिनयरु>हिं० दिनअर।

दिन-दहाड़े—पुं० (दिन में)–सं० दिवस >प्रा० दिवह>दिअह+ड़ा > दिहाड़ा >दहाड़ा>दहाड़े। तुल० स्पे० दिया, बल्गा० दैन।

दिपै (पद०) —क्रि० (चमकना)–सं० √दीप्>प्रा० दिप्प, दिप्पई, दिपै।

दियरा, दियारा — पुं० (दीपक)–सं० दीपालक>दियाला, दियाली।

दिया सलाई—स्त्री० (लकड़ी की वह तीली जो रगड़ने से जल उठती है)–सं० दीपशलाका>दियासलाई।

दिल—पुं० (हृदय, अंतःकरण)–फ़ा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिल।

दिलद्दर—वि० (दरिद्र)–सं० दरिद्र > हिं० दरिद्दर, दिलद्दर।

दिहाड़ा — पुं० (दिन, दिवस)–सं० दिवस > अप० दिवसड़ा, दिअहडा > दिअहड़ा > हिं० दिहाड़ा। तुल० स्पे० दिया।

दीजिए, दीजै—क्रि० (देना)–सं० दधते (√दध्=देना)–प्रा० दिज्ज > हिं० दीजिए, दीजै।

दीठ—स्त्री० (दृष्टि, नजर)–सं० दृष्टि, दिट्ठि, दीठि, दीठ।

दीया—पुं०, (दीवा, दीपक)–सं० दीपक > प्रा० दीवअ > हिं० दीया। तुल० म० दिवा, गु० दीवो, पं० दीवा।

दीवट—स्त्री० (दीवाल में बनी हुई एक जगह जहाँ दीपक रक्खा जाता है, दीपाधार, चिरागदान)–सं० दीपस्थ > दीवट्ठ दीवट; या सं० दीपपट्ट > प्रा० दीवट्ट > दीवठ्ठ। तुल० बं० दीउटी, ओ० दिहुटी, गु० ने० दिवेट।

दीवटी—स्त्री० (दीपाधार, चिरागदान)–सं० दीप+स्थ + ई > प्रा० दीवट्ठ, दीवट्ट > हिं० दीवटी।

दीवा—पुं० (दीपक)–सं० दीपकः > प्रा० दीवओ > दीवा।

दीवाली—स्त्री० (कार्तिक की अमावस्या को होने वाला एक उत्सव–सं० दीपावली > हिं० दीवाली।

दीसना — क्रि० (दिखाई देना, दिखाई पड़ना)–सं० दृश्यते > प्रा० दीसणा > सं० दीस्सइ > हिं० दीस+ना।

दुकान—स्त्री० (वह स्थान जहाँ बिक्री की चीजें रहती हैं और बिकती हैं)–फ़ा० दुकान, अ० दुक्कानुन।

दुकाल — पुं० (अकाल, दुर्भिक्ष)–सं० दुष्काल > प्रा० दुक्काल > हिं० दुकाल।

दुःख — पुं० (तकलीफ, क्लेश)–सं० दुःखम् > पा० प्रा० अप० दुक्ख > अव० दुख्ख > हिं० दुःख। तुल० पं० दुक्ख्, गु० दुख, म० दुःख।

दुखड़ा—पुं० (दुःख का वृतान्त) > प्रा० दुक्खड > हिं० दुःख+ड़ा (प्र०)।

दुगना — वि० (किसी चीज का दूना भाग)–सं० द्विगुण > प्रा० दुगुण > हिं० दुगना।

दुजा—वि० (दूसरा)– सं० द्वितीय > अप० दुइज्ज > हिं० दुजा। तुल० पं० दूज्जा।

दुति—स्त्री० (चमक)–सं० द्युति।

दुद्धी — स्त्री० (एक छत्तेदार घास जिसकी पत्तियाँ लाल रंग की होती है)–सं० दुग्धी > दुद्धी।

दुधमुँहा—वि० (दूधमुँहा, छोटा बच्चा, जो अभी तक माता का दूध पीता हो)–सं० दुग्धमुख > प्रा० दुद्धमुह > हिं० दुधमुँहा।

दुधहँडी — स्त्री० (दूध का वह पात्र जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है)–सं० दुग्धभाण्डिका > प्रा० दुद्धहांडिआ, अप० दुढ्ढिणिया (दे० ना० मा० ५-५४) > अवधी दुधहंड़ी।

दुपट्टा—पुं० (ओढ़ने का कपड़ा, कन्धे पर रखने का कपड़ा)–सं० द्विपट्ट+क > पा० दुपट्ट > प्रा० दुपट्टअ > हिं० दुपट्टा।

दुपहर—पुं० (मध्याह्न)–सं० द्विप्रहर > हिं० दुपहर। धुपेरी (मेरठ जनपद में प्रचलित), धौपर (ब्र० की बो०)।

दु-भाषिया—पुं० (दो भाषाएँ जानते वाला वह मनुष्य जो उन भाषाओं में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बातचीत करने वाले दो मनुष्यों को एक दूसरे की बात समझाता है)–सं० द्वि-भाषिन् > प्रा० दुभाषि > हिं० दु-भाषिया।

दुबला—वि० (कमजोर, कृश)–सं० दुर्बल > प्रा० दुब्बल > हिं० दुबला, दुबरा। तुल० पं० दुबला (दुब्ला), सिं० दुंबळ, डोबलो।

दुमुहाँ—वि० (दो मुँह वाला)–सं० द्विमुख + क > प्रा० दुमुहअ > हिं० दुमुहाँ।

दुरंदेश—वि० (दूरदर्शी)–फ़ा० दूर-अंदेश।

दुवार—पुं० (दरवाज़ा)–सं० द्वारम् > पा० दारम् > प्रा० अप० दुवार > हिं० दुवार। तुल० बं० दुयार, ओ० दुआर।

दुहाँत्थड़—स्त्री० (दोनों हाथों से की गई मार, दुहत्थी मार)–सं० द्विहस्तताडन > प्रा० दुहत्थताडण > हिं० दुहाँत्थड़।

दुहना—क्रि० (गौ, भैंस आदि के स्तन से दूध निकालना)–वै० सं० दुध् > प्रा० दुह > हिं० दुह + ना।

दुहाई[1]—स्त्री० (अपनी रक्षा के लिए किसी को चिल्लाकर बुलाना) – सं० द्वि + आह्वान > प्रा० दुआहवण > दुआहुअ > दुआहविअ > हिं० दुहाई।

दुहाई[2]—स्त्री० (दीर्घ आयु के लिए शुभकामना करना)–सं० दीर्घायु > प्रा० दीहाऊ > दुहाई।

दुहिता—स्त्री० (पुत्री, कन्या)–सं० दुहितृ (सं० √दुह्) > दुहिता। दूरेहिता (दूरे + हिता) यास्क–निरुक्त। तुल० अवेस्ता दुघ्दर, फ़ा० दुख्तर, अं० डॉटर।

दुहेला (पद०)—वि० (कठिन खेल, कष्ट-प्रद)–सं० दुःखकेलि > दुहेल्लि > दुहेला।

दूज—स्त्री० (किसी पक्ष की दूसरी तिथि, दुइज)–सं० द्वितीय > प्रा० दुइय, दुइज्ज > हिं० दूज, ह० दुज्।

दूजवर—पुं० (वह मनुष्य जो दूसरा ब्याह करता है)–सं० द्विजायावर > प्रा० दुइज्जवर > हिं० दूजवर।

दूजा—वि० (दूसरा)– सं० द्वितीयक > प्रा० दुइज्जअ > अप० दुअज्जअ > दूज्जअ > दुज्जअ > दूजा।

दूध—पुं० (दुग्ध, पय)–सं० दुग्ध > पा० प्रा० दुद्ध > हिं० दूध। तुल० ओ० बं० दुध, पं० दुद्ध, ने० दुद्।

दून[1]—वि० (दूना)–सं० द्विगुण > प्रा० दुगुण > अप० दूण > हिं० दून। तुल० म० दूण।

दून[2]—पुं० (दो पहाड़ों के बीच का स्थान, तराई की भूमि)–सं० द्रोणी > द्रोणि (घाटी) हिं० दून।

दूना—वि० (दुगुना)–सं० द्विगुण > प्रा० दुगुण, प्रा० दुउण > अप० दूणा > हिं० दूना।

दूब—स्त्री० (एक बेलदार हरी घास, हरियाली)–सं० दूर्वा > दुव्वा > प्रा० दुब्बा, दुब्ब > दूब।

दूरबीन—पुं० (दूरबीन नामक यंत्र जिससे बहुत दूर तक की चीजें साफ-साफ दिखलाई पड़ती हैं)–फ़ा० दूरबीन।

दूल्हा—पुं० (दुलहा, वर, नौशा, पति)–सं० दुर्लभ > पा० दल्लभ > प्रा० दुल्लह > अप० ढोल्ला (हे० अप०) > हिं० दुल्हा, दूल्हा। बु० दूला। स्त्री०, दुल हिन–सं० दुर्लभा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूसर—वि० (दूसरा)- सं० द्विसृत।

दूसरा — वि० (पहले के बाद का, द्वितीय)–सं० द्वितीयकः > दुइजरो > दूसरो > हिं० दूसरा। अथवा द्विसृत > दुसरित > दुसरिअ > दूसरा। अथवा सं० द्विस्सृतः[११] > प्रा० दूसलिए > हिं० दूसरा।

दूहना — क्रि० (दुहना, स्तन से दूध निचोड़कर निकालना)–सं० दुह् > प्रा० दुह > हिं० दूह + ना।

देउर, देउल — पुं० (देवल, मंदिर, देहुरा)–सं० देवकुल > प्रा० अप० देउल > अव० देउर > हिं० देउल।

देखना—क्रि० (अवलोकन करना)–सं० दृश्, द्रक्ष्यति > पा० दक्खति > प्रा० देक्ख > अप० दिक्खि > अव० देक्खओ, देक्ख > हिं० देख + ना। तुल० पं० देखणा, गु० देखवुं, कुं० देखणो।

देव[1]—पुं० (देवता)–सं० देव। तुल० स्पे० दियोस, बं० दे या देव, अस० दिअ, पं० देउ, कश्मी० देव् या दिव्, कु० द्यो, प० गु० म० देव।

देव[2]—पुं० (दैत्य, दानव)–फ़ा० देव।

देवनागरी—स्त्री० (देवनागरी लिपि)–सं० दक्षिणाक्षरी (जो दायें को लिखी जाए) > प्रा० दक्खिणाक्खरी > दहिणक्करी > दइनग्गरी > देअनागरी > देवनागरी।

देवर—पुं० (पति का छोटा भाई)–सं० देवर, सं० द्वितीयवर (यास्क) या द्विवर > दिवर > देवर। देवरः कस्मात् द्वितीयो वर उच्यते, यास्क, निरुक्त। तुल० ग्रीक deer (पति का भाई)।

देवल—पुं० (देवालय)–सं० देवालय > देवाल > देवल। अथवा सं० देवकुल > प्रा० देवउल, देऊल > हिं० देवल। तुल० सिं० देवली, पं० देवाला, बं० देउल।

देवहा—स्त्री० (सरयू नदी)–सं० देव-वहा।

देना—क्रि० (दान करना, अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में पहुँचाना)–सं० प्रा० √दा, प्रा० दाइ > अप० देइ > अव० दीअ > हिं० देना। तुल० फ्रे० दोने (donner), स्पे० दान (दार)।

दिवस—पुं० (दिन)–सं० दिवस > प्रा० दिवह > अव० देवहा। तुल० स्पे० दिया।

देहुर—पुं० (देवावास, देवालय)–सं० देवगृह > प्रा० देवघर > देहुर।

देहुरी—स्त्री० (छोटा देव-मन्दिर)–सं० देवगृह > प्रा० देहुर > देहर, देहुरी।

दैय—(पद०) पुं० (देव, भाग्य)–सं० दैव > दइअ > दैय।

दैयारे, दैया—वि० अव्य० (विस्मयादि बोधक)–सं० दैव।

दो—वि० (एक और एक)–सं० द्वि > प्रा० दु > अप० हिं० दो। तुल० बल्गा० द्वे।

दोज—स्त्री० (पक्ष की द्वितीया तिथि, दूज)–सं० द्वितीया > प्रा० दुइज्ज > दउज्ज > दोज्ज > हिं० दोज।

दोना—पुं० (पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का छोटा गहरा पात्र)–सं० द्रोणक > प्रा० दोणअ > हिं० दोना।

दोहता — पुं० (बेटी का बेटा)–सं० दौहित्र > प्रा० दोहित्त > अप० दोहित >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिं० दोहता।

दोहरा—वि० (दो परत या तह का)—सं० द्विधा+हर>प्रा० दुहाहर>हिं० दोहरा।

दोही—पुं० (दूध दोहने वाला)—सं० दोग्धृ>प्रा० दोहय>हिं० दोही।

दौड़—स्त्री० (दौड़ने की क्रिया या भाव)—सं० धावन>प्रा० धावण>धाउण>दाउड>हिं० दौड़।

दौना—पुं० (एक पौधा)—सं० दमनक>प्रा० दमणअ>हिं० दौना।

दौलत — पुं० (धन, संपत्ति) — फ़ा० दउलत, अ० दौलत।

दौवटी—(ड़ी) प्रा० प्र०, स्त्री० (साधारण देशी मोटा कपड़ा, गाढ़ा, खद्दड़)—सं० द्विपट्ट>प्रा० दुवट्ट>हिं० दौवटी।

द्रव्य—पुं० (१- वस्तु, पदार्थ, २- धन, ३- लेन-लेन के लिए रुपये-पैसे)—सं० द्रव्य>प्रा० दव्व (पाइअ०) > अव० दव्व (की०)।

द्वै★—वि० (१- दो, २- दोनों)—सं० द्वय, द्वि>प्रा० दु, दुइ।

द्वैक★—वि० (एक या दो, कुछ)—सं० द्वौ+एक>दुअउ (प्रा० पैं०)+एक्क>दो+एक>द्वैक।

ध

धंधा—पुं० (धन या जीविका के लिए उद्योग)—मु० धांधा (मु० इं० डि०)>अप० dhandha (H. G. O. A., p. 410), अव० धंध (की०)>हिं० धंधा।

धकधकाना — क्रि० (धकधक करना, धड़कना, भयभीत होना)—प्रा० धक्क>हिं० धकधक, धकधकाना, धुकधुकाना।

धकपक—स्त्री० (कलेजे की धड़कन, आशंका, खटका)—प्रा० धवक्क > हिं० धक+पक।

धक्का—पुं० (एक वस्तु का दूसरी के साथ वेगपूर्ण स्पर्श)—मु० धाका (to push) दे०, मु० इं० डि०, पृ० ४२।

धगधगाना—क्रि० (धग-धग की आवाज करना)—सं० धगाधगाय्>प्रा० धगधग>हिं० धगधग, धगधगाना।

धज—स्त्री० (१- सजावट या बुनावट का सुन्दर ढंग, जैसे सज-धज=सजावट)—सं० ध्वज>हिं० धज।

धजा—स्त्री० (ध्वजा, पताका, झंडा)—सं० ध्वज>अप० धज (प० च०)>धजा।

धज्जी—स्त्री० (कपड़े, कागज़, चादर, धातु, पत्थर, लकड़ी आदि का वह पतला लंबा टुकड़ा या पट्टी जो उन्हें काटने, चीरने, फाड़ने आदि पर निकलती है)—सं० घटी।

धड़—पुं० (सिर और हाथों को छोड़ कटि के ऊपर का भाग, गले से नीचे का शरीर)—प्रा० धड>हिं० धड़। तुल० ओ० कु० बं० धड, पं० धर्, सिं० धरु, गु० धड्, म० धड।

धड़धड़ाना — क्रि० (धड़-धड़ करना)—सं० धडधडायते।

धड़ा—पुं० (पत्थर लोहे आदि का बोझ जो बँधी हुई तौल का होता है और जिसे तराजू के एक पलड़े पर रखकर दूसरे पलड़े पर उसी के बराबर चीज रखकर तौलते हैं, बाट)—सं० घट>हिं० धड़ा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धतूरा—पुं० (एक पौधा)–सं० धत्तूर> हिं० धतूरा। तुल० गु० धतरो, म० धत्तुरा, धत्तूरा।

धन—पुं० (संपत्ति, द्रव्य, दौलत)–सं० धनम्>प्रा० धण>हिं० धन। तुल० गु० पं० धण, सिं० धणु, ने० धन्।

धनकुट—स्था० प्र०, पुं० (मूसल)–सं० धान्यकुट्ट+क>प्रा० धन्नकुट्टअ>धनकुट्ट हिं० धनकुट।

धनि—स्त्री० (१- युवती स्त्री, २- पत्नी)–सं० धन्या>प्रा० धन्ना, प्रा० धणी>अप० धणि, अप० धण, अप० धण्ण (प्र० को०)>अव० धनि (की०) >हिं० धनि, धन।

धनिया[1] — स्त्री० (युवती, वधू)–सं० धनिका>प्रा० धणिआ>हिं० धनिया।

धनिया[2]—(एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसके सुगंधित बीज मसाले के काम आते हैं)–सं० धन्या > हिं० धनिया। तुल० पं० उर्दू धनियाँ, अस० धनिया।

धनी — वि० (धनवान्, मालदार)–सं० धनिन्, धनिकः, पा० धनिको > प्रा० धणिअ>हिं० धनी। तुल० अस० धनी, बं० धनी, पं० सिं० गु० धणी।

धनुष—पुं० (धनुआ, धनुवाँ)–सं० धनुस्, धनुष्>प्रा० धणुह>हिं० धनुष। तुल० म० गु० धनुष्य, बं० धनुक, अस० धेनु, ओ० धनु। अनुधारी–वि०, सं० धनुर्धर।

धन्य—वि० (कृतार्थ, भाग्यशाली)–सं० धग्य>प्रा० धण्ण>अप० धन्न>अव० धण्णो (की०) >हिं० धन्य।

धन्वा — पुं० (धनुस्, कमान)– सं० धन्वन् (धन्+वन्)।

धमकना — क्रि० ('धम्' की ध्वनि करना)–सं० धमधमाय्>प्रा० धमधम> हिं० धम, धमक, धमकना।

धमका—पुं० (गरमी, ऊमस)–सं० धम (पिघलाने वाला)।

धमकाना—क्रि० (१- डराना, २-डाँटना, घुड़कना) – मु० धमकाओ (धमकाना), दे० मु० इं० डि०।

धमनी—स्त्री० (नाड़ी)–सं० धमनि, धमनी>प्रा० धमणि, धमणी > हिं० धमनी। टिप्पणी– ध्मानात् धमन्यः (जिसमें रक्त बहे, सुश्रुत, शारीरस्थान)।

धमार—(पद०) पुं० (धमार खेल का नाम)–सं० धमकार>धमआर>धमार (प्रा० धा० धम=शब्द करना, धम-धम करना)। पुं० (एक राग का नाम)–सं० धमार।

धर[1]—वि० (धारण करने या अपने ऊपर लेने वाला)–सं० धर।

धर[2]—क्रि० (धरना, धारण करना)–सं० धृ>प्रा० धर>छ० धर।

धरती—स्त्री० (पृथ्वी)–सं० धरित्री> प्रा० धरित्ती>हिं० धरती। तुल० सिं० बं० म० धरती, गु० धर्ती।

धरना[1]—पुं० (कोई बात पूरी कराने के लिए किसी के पास या द्वार पर अड़ कर बैठना और जब तक वह बात पूरी न हो जाये तब तक अन्न न ग्रहण करना)– मु० धारना (दे०, मु० इं० डि०)।

धरना[2]—क्रि० (पकड़ना, थामना, ग्रहण करना, रखना)–सं० प्रा० धरण>अव० धरिअइ (की०)>हिं० धरना। तुल० कु० धरणो, अस० धरिब्रा, बं० धरा, सिं० धरणु, गु० धरवूं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरहरा, धौरहर—पुं० (धौरहर, मीनार, खंभे की तरह ऊपर बहुत दूर तक गया हुआ मकान का भाग जिस पर चढ़ने के लिए भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों)—सं० धवलग्रह > प्रा० धवलघर > धवलहर > धउलहर > धौरहर > धरहरा।

धव—पुं० (स्त्री का पति या स्वामी)—सं० प्रा० धव > अव० धअ (की०) > हिं० धव।

धसना—क्रि० (नीचे जाना, धँसना, प्रवेश करना)—सं० धस् > प्रा० अप० अव० धस्, अव० धसँ (की०) > हिं० धस + ना। तुल० गु० धसनू, म० धस (णें)। मु० धसाओ।

धसा—वि० (धसा हुआ)—सं० धसित > प्रा० धसिअ > हिं० धसा।

धस्स—पुं० ('धस्स' की आवाज)—सं० धस् > प्रा० धस > हिं० धस्स।

ध्वज—पुं० (झंडा, ध्वजा, पताका)—सं० ध्वज > प्रा० धय > अव० धअ (की०)। तुल० म० ध्वज, ते० ध्वजमु, क० ध्वज।

धाइ—पुं० (एक प्रकार का वृक्ष)—मु० धाइ (मु० इं० डि०, पृ० ४२)।

धाई—स्त्री० (दाई)—सं० धात्री > प्रा० धाई > अप० धाइ > हिं० धाई, धाय। तुल० ओ० धाई, अस० धात्री।

धाड़—स्त्री० (डाकुओं का आक्रमण)—सं० धाटी > प्रा० धाडी > अप० धाड़ी > अव० धाड़ें (की०) > हिं० धाड़।

धाड़ा—पुं० (किसी टीन आदि बरतन के वजन के बराबर बाट)—सं० धट (सन्तुलन), धटक > हिं० धाड़ा (स्था० प्र०)।

धाता—पुं० (१- ब्रह्मा, २- विष्णु, ३- महादेव, ४- विधाता)—सं० धातृ > हिं० धाता।

धान—पुं० (१- तृण जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजों का चावल होता है, २- चावल का वह रूप जिसमें उसके चारों ओर छिलका लगा रहता है)—सं० धान्य > प्रा० धण्ण > हिं० धान। तुल० अस० ओ० बं० उर्दू धान, म० धान्यें, ते० धान्यमुलु, पं० झोना, मुंजी।

धाम — पुं० (गृह, देव-स्थान)—सं० धामन् (धा + मनिन्) > हिं० धाम।

धार[1]—स्त्री० (किसी काटने वाले हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे कोई चीज काटते हैं)—सं० पा० प्रा० धारा > हिं० धार। तुल० बं० धार्, सिं० धारा, गु० धार्, म० धार, मु० धार (किनारा)।

धार[2]—स्त्री० (१- किसी द्रव पदार्थ की गति परंपरा, अखंड प्रवाह, २- पानी का सोता चश्मा)—सं० पा० प्रा० धारा > हिं० धार। तुल० ओ० सिं० गु० म० धार, मु० धारा।

धारना—क्रि० (१-धारणा करना, २- मन में निश्चय करना)—सं० प्रा० धारण > हिं० धारना।

धारि—स्त्री० (सेना का अग्र भाग, सेना की टुकड़ी सेना)—सं० धारी, अवधी धारि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धावना—क्रि० (दौड़ना)–सं० धाव्> पा० प्रा० धाव>हिं० धावना। तुल० पं० धाउणा, गु० धावूँ, ने० धाउनु।

धावा—पुं० (आक्रमण)–सं० धावन> हिं० धावा।

धिक्कि[1]—(पद०)क्रि० (धा० धिकना= गरम होना, आग की गरमी से लाल हो जाना, तप्त हो जाना)–सं० दह से इच्छार्थक धा० दिधक्ष्>दिहक्ख> धिक्ख>धिक्क>धिकना।

धिक्कार — पुं० (तिरस्कार) – सं० धिक्कार, पा० धिक्किरो>प्रा० धिक्कार >हिं० धिक्कार। तुल० बं० धिक्कार, ओ० धिक्कार, सिं० धिकारु।

धिय—स्त्री० (पुत्री, कन्या)–सं० दुहितृ >प्रा० धीआ, धिता, धित्था > हिं० धिय।

धींग[1]—वि० (धींगड़ा, हट्टा-कट्टा, दुष्ट, पाजी)–पश्तो धींग।

धी, धीअ, धीआ—स्त्री० (पुत्री)–सं० दुहिता>पा० धीता > प्रा० धीआ, धीया >अप० धीय>छ० धिया, हिं० धी, धीअ, धीआ।

धीमा—वि० (धीरे चलने वाला)–मु० ढीमा (मु० इं० डि०, पृ० ३४)।

धीर—पुं० (धीरज, धैर्य)–सं० धैर्य> प्रा० धीर>हिं० धीर। तुल० गु० सिं० म० धीर, सिंह० दिरि।

धीरज—पुं० (धैर्य)–सं० धैर्य > प्रा० धेज्ज>हिं० धीरज।

धुंध—स्त्री० (वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल के कारण हो)–सं० धूमांध> हिं० धुंध।

धुँधका—पुं० (कुहरा, धुंध)–सं० धूम्र +अन्ध>प्रा० धुमधो>धुंधक, हिं० धुँधका।

धुँवाँ—पुं० (धुँआँ)–सं० धूम्र> प्रा० धुम्म>धुवां>हिं० धुआँ, धुँआँ, धूआँ। तुल० पं० धूँ, धुआँ; ओ० उर्दू धुआँ, बं० धोँया, अस० धोँवा।

धुअ[1]—(की०) वि० (अतिशय, पूरा, भलीभाँति)–सं० ध्रुव>प्रा० धुअ > अव० धुअ।

धुआँ (करना)—क्रि० (धुआँ करना)– सं०√धू, सं० धुमाय्>प्रा० धुमाय्।

धुआँ—पुं० (धूम)–सं० धूम (√धू+ मक)।

धुकधुक—स्त्री० (काँपना, धुक-धुक का शब्द होना, धड़कना)–प्रा० धुक्का।धुक्क> हिं० धुकधुक।

धुजा—पुं० हिं०, स्त्री० (ध्वजा)–सं० ध्वजा>हिं० छ० धुजा।

धुत्तह[1]—(की०) पुं० (विट)–सं० धूर्त >प्रा० धुत्त>अव० धुत्तह।

धुन[1]—स्त्री० (गीत को गाने की तर्ज)– सं० ध्वनि>हिं० धुन।

धुन[2]—पुं० (काँपने की क्रिया या भाव, कंपन)–सं० धून (धातु रूप धुनोति)> धुन।

धुनना—क्रि० (धुनकी से रूई साफ करना, खूब मारना पीटना)–सं० धुनोति, (सं० धुनय्) > पा० धुनाति > प्रा० धुणाइ > अव० धुन्नइ (की०) हिं० धुनना। तुल० सिं० धूणणू, गु० धूणवुं, म० धुणक (णें)।

धुनी—स्त्री० (ध्वनि)–सं० ध्वनि>प्रा० धुणी > हिं० धुनी। तुल० पं० धुण्,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धुन; सिं० धुनि, गु० धून्।

धुरंधर—वि० (१- श्रेष्ठ, प्रधान; २- जो सबमें बहुत बड़ा भारी या बली हो)–सं० धुरन्धर>प्रा० हिं० धुरंधर।

धुरा—पुं० (लकड़ी का वह डंडा जो पहिए की गराड़ी के बीचो-बीच रहता है, अक्ष)–सं० धुर्>प्रा० हिं० धुरा।

धुव — वि० (स्थिर, निश्चित, दृढ़, पक्का)–सं० ध्रुव>पा० प्रा० धुव> हिं० धुव।

धुस्सा—पुं० (ठुस्सा, ऊन का भारी कम्बल, घटिया किस्म के ऊन की बुनी हुई मोटी लोई)–सं० दूर्श (मो० वि०) > पा० दुस्स, दूस्स > प्रा० दुस्स (कपड़ा)>धुस्स>हिं० धुस्सा। तुल० म० धुसा, गु० धूँसो, धोसो।

धूँबिय[1] (पद०)—क्रि० (दौड़कर)–सं० धाव>प्रा० धुब्ब>धूँवना>धूँबना।

धूजना—क्रि० (१- हिलना, काँपना)–सं० धूनोति>धूजना।

धूत—पुं० हिं०, पुं० (जुआ)–सं० द्यूत >प्रा० धुत्त (जुआ खेलने वाला)>हिं० धूत।

धूतना — पुं० हिं०, क्रि० (ठगना, धूर्तता करना, धोखा देना)–सं० धूर्त्य् >प्रा० धुत्त>हिं० धूत+ना।

धूताई—स्त्री० (छल, कपट) – सं० धूर्तता, सं० धूर्त्तत्व>प्रा० धुत्तिम>हिं० धूताई।

धूनी—स्त्री० (१- साधुओं के तापने की आग, २- गुग्गुल आदि गंध-द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ)–सं० पा० धूपन > प्रा० धूवण, हिं० धूनी। तुल० ओ० धुनी, पं० धूणी, गु० म० धुणी।

धूप—पुं० (देव पूजन में या सुगंध के लिए कपूर, आग, गुग्गुल आदि गंध द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ)–सं० धूप>प्रा० धुव>हिं० धूप। तुल० बं० धुप्, सिं० धुप, गु० म० धूप।

धूपना—क्रि० (धूप देना, सुगन्धित धुएँ से बासना)–सं० धूपन>प्रा० धूवण> हिं० धूपना।

धूपबत्ती—स्त्री० (मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है)–सं० धूपवर्तिका > प्रा० धुववट्टिया, धुववट्टि>हिं०धूपबत्ती।

धूम—पुं० (धुआँ, धूआँ)–सं० प्रा० धूम >अप० धूवँ>अव० धूम (की०) > हिं० धूम।

धूर्तक—पुं० (जुआरी)–सं० धूर्त्तक> प्रा० धुत्तअ>हिं० धूर्तक।

धूल—स्त्री० (रज, गर्द, सूखी मिट्टी के वे सूक्ष्म कण जो हवा या आँधी के समय वातावरण में उड़ते रहते हैं)–सं० धूलि, धूली>प्रा० अव० धूलि > हिं० धूल। तुल० बं० धूलो, अस० धूलि, ओ० धूळि।

धूसर—वि० (१- धूल के रंग का, खाकी, मटमैला, मटीला, २- धूल लगा हुआ)– सं० प्रा० हिं० धूसर।

धोआ — स्त्री० (वह दाल जिसका छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो)–सं० धौत>प्रा० धोअ (पाइअ०) >अव० धोआ (की०)>हिं० धोआ।

धोती[1]—स्त्री० (१- योग की एक क्रिया,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२- एक अंगुल चौड़ी और चौवन अंगुल लंबी कपड़े की धज्जी जिसे हठयोग की 'धौती' क्रिया में मुँह से निगलते हैं)–सं० धौति>प्रा० धोइअ>हिं० धोती।

धोती[1]—स्त्री० (नौ दस हाथ लंबा चौड़ा कपड़ा जो पुरुष की कटि से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर और स्त्रियों का प्रायः सर्वांग ढकने के लिए कमर में लपेट कर ओढ़ा जाता है)–मु० धोती (दे०, मु० इं० डि०)। **टिप्पणी**–शब्द-कोशों में 'धोती' की व्युत्पत्ति सं० धौत-वि० (√धाव+क्त) से दी गई है, जबकि 'धौत' शब्द का अर्थ है—'धोया हुआ, साफ किया हुआ। चिकनाया हुआ, चमकाया हुआ। चमकीला, सफेद। (न०) चाँदी, प्रक्षालन।' 'धौत' शब्द का अर्थ—'धोती (कपड़ा)' संस्कृत के शब्द-कोशों में नहीं मिलता है।

धोना—क्रि० (पानी में रगड़ और डुबा-कर साफ करना)–सं० धावन (√धाव्) प्रा० धावण>धोवइ > हिं० धोना। तुल० पं० धोणा, सिं० धुअणु, म० धुणें, गु० धोवुं, बं० धोवा, अस० धो, ओ० धोइबा।

धोबी—पुं० (१- एक जाति जो मैले कपड़े धोकर साफ करने का काम करती है, २- उक्त जाति का व्यक्ति)–सं० धावक (√धाव् — धावु गतिशुद्धयोः, सिद्धान्त-कौमुदी) >प्रा० धोअग>हिं० धोबी। तुल० पं० उर्दू म० गु० धोबी, बं० अस० ओ० धोबा।

धोरी—पुं० (१- वृषभ, बैल, २- धुरे को उठाने वाला, भार उठाने वाला)–सं० धौरेय>प्रा० धोरेय>धोरिअ > हिं० धोरी।

धौंकना — क्रि० (अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए उस पर वायु का आघात पहुँचाना)–सं० धमन (स० √ध्मा-आग फूँकना) >प्रा० धमण>हिं० धौंकना।

धौंकनी—स्त्री० (फुँकनी, बाँस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूंकते हैं)–सं० ध्मापनी।

धौ—पुं० (एक ऊँचा झाड़ या सदाबहार पेड़, इसकी जड़, पत्ती, फूल आदि दवा के काम में आते हैं)–सं० पा० प्रा० धव >हिं० धौ। तुल० म० धावडा, गु० धावडी, ने० धडेरो।

धौन—पुं० (चावल आदि का धावन-जल)–सं० धावन>प्रा० धवण, धोवण, धोअण>हिं० धौन।

धौरा, धौला—वि० (श्वेत)–सं० प्रा० धवल > अप० धवलु > हिं० धौरा, धौला।

धौराहर (पद०)—पुं० (ऊँची अटारी, धवलगृह राजमहल के उस भाग की संज्ञा थी जिसमें राजा-रानी निवास करते थे)–सं० धवलगृह>धउलहर>धौरहर >धौराहर।

ध्रुपद—पुं० (राग-रागिनियाँ गाने की एक विशिष्ट शैली)–सं० ध्रुवपद>प्रा० धुवपद>अप० ध्रुवुपद>हिं० ध्रुपद।

ध्यानी—वि० (ध्यान में लगा हुआ)–सं० ध्यानिन्>हिं० ध्यानी।

ध्वजा—पुं० (झण्डे का डंडा)–सं० ध्वज >हिं० ध्वजा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न

नंगा—वि० (वस्त्रहीन, जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो, निर्लज्ज)–सं० नग्न+क>पा० नग्ग>प्रा० णग्गअ> नंगअ>हिं० नंगा। तुल० उर्दू पं० नंगा, कश्मी० नंग, गु० नागो, नग्न, म० नागडा, नग्न।

नंदोई—पुं० (ननद का पति)–सं० ननांदृपति>ननांदपति>ननंदवइ> हिं० नंदोई।

नँदोला—स्था० प्र०, पुं० (मिट्टी की छोटी और हलकी नाँद)–सं० नंदा+ पोतलक > नन्दाओलअ > नंदोला > नँदोरा।

न—अव्य० (निषेध-बोधक)–सं० नास्ति >प्रा० णत्थि>अप० नहिं>अप० हिं० न। तुल० अं० स्पे० नो।

नई[1]—(की०) स्त्री० (नदी)–सं० नदी >प्रा० णदी, णई>अप० नइ>अव० नई। तुल० पं० नह, सिं० नाई।

नकटा—वि० (१- जिसकी नाक कटी हो, २- निर्लज्ज, ३- अप्रतिष्ठित)–सं० नक्र +कृत्>प्रा० णक्क+कट्ट > हिं० नकटा। तुल० गु० नकटु, नाक्कटु; म० नकटा।

नकत[1]—(की०)पुं० (उत्सव, नक्षत्र के अनुसार मनाया जाने वाला जिसे क्षण ही कहते हैं, रात्रिकाल में किया जाने वाला व्रत)–सं० नक्षत्र>प्रा० णक्खत्त>अव० नकत।

नकल—स्त्री० (अनुकरण, किसी को कुछ करते हुए देखकर उसी के अनुसार कुछ करने की क्रिया या भाव)–अ० नक़ल।

नकशा—पुं० (रेखाओं आदि के द्वारा किसी वस्तु की अंकित की हुई वह आकृति जो उस वस्तु के स्वरूप का सामान्य परिचय कराती है) – अ० नक़शा।

नकाब — स्त्री० (मुखावरण) – अ० निक़ाब।

नख—पुं० (नाखून)–सं० पा० नख> प्रा० णक्ख>अप० नहेण>हिं० नख। तुल० म० गु० बं० अस० ओ० नख, सिंह० नहूं, मल० नखम्।

नखत—पुं० (नक्षत्र)–सं० नक्षत्र>पा० नक्खत>प्रा० णक्खत>नखत्त> हिं० नखत।

नखरा—पुं० (१- खुशामद कराने की भावना, चोचला, घमंड, जैसे–नखरे में आ जाना)–फ़ा० नखरः।

नगारा—पुं० (नगाड़ा, डंका, धौंसा, एक बाजा) – सं० नादकारः > हिं० नगारा। तुल० अ० नक़्क़ारा। पं० म० त० नगारा, क० नगारु, सिं० नगारो, गु० नगारुं, ब० नाकाड़ा, अस० नागारा, ते० नगारा, क० नगारि, ओ० नागरा।

नगौला—स्था० प्र०, पुं० (नाग का बच्चा)–सं० नाग+पोतक>प्रा० णाग-पोआल>हिं० नगौला।

नजारा—पुं० (अद्भुत और सुन्दर दृश्य)–अ० नज़्ज़ारा।

नजारे—पुं० (पेंदीदार घेरा जिसमें अनाज भर दिया जाता है)–सं० अन्ना-द्यागार >अनाज़ार>नाजार>नजारा (स्था० प्र०)।

नटना—क्रि० (अभिनय करना, नटना,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न देने का भाव)–सं० नटन > हिं० नटना, छ० नट।

नटनि, नटिन—स्त्री० (नट जाति की स्त्री)–सं० नटी > प्रा० णट्टी > हिं० नटिन। तुल० ते० म० क० नटि, पं० नटणी। म० गु० वं० नटी।

नटसाल—स्त्री० (शरीर में गड़े हुए काँटे या तीर की गाँसी का वह भाग जो टूटकर शरीर में रह गया हो)–(१) सं० नस्तशल्य।[३१] (२) सं० नष्टशल्य (अदृष्ट शल्य)। टिप्पणी–श्री रामचन्द्र वर्म्मा ने 'नस्तशल्य' से व्युत्पत्ति दी है, जो सीमित अर्थ वाली है। उनके मूल शब्द का भाव है—'नाक में जो शल्य लगा हो'।

नटुआ—पुं० (नट)–सं० नर्त्तक > प्रा० णट्टअ > हिं० नटुआ।

नठना—पु० हिं०, क्रि० (नष्ट होना)–सं० नष्ट > पा० नट्ठ > प्रा० णट्ठ > हिं० नठ + ना। तुल० पं० नट्ठणा, गु० नाठूं।

नतीजा — पुं० (परिणाम, फल)–अ० नतीजः।

नदना—क्रि० (शब्द करना, घोर शब्द करना, गरजना)–सं० नर्दित > प्रा० अप० नर्दिय > अव० नद्द, णद्द (की०) > हिं० नद + ना।

ननद—स्त्री० (पति की बहिन)–सं० ननन्द > पा० ननन्दा > प्रा० णणंदा > हिं० ननद, ह० नणंद्। तुल० पं० ननाण, सिं० निणान, म० गु० नणंद, बं० ननद, अस० ननन्द, ओ० नणंद, नणद।

ननदोई—पुं० (नंदोई, ननद का पति)–सं० ननान्दृपति > प्रा० णणंदवइ > ननद्दवइ > हिं० ननदोई। तुल० उर्दू ननदोइ, गु० नणदोइ, बं० ननदाइ, ओ० नणन्देइ।

ननिहाल — पुं० (नाना का घर या घराना)–सं० ज्ञातिशाला > प्रा० णाइ-साल > हिं० ननिहाल, ननहाल। तुल० पं० नानके, उर्दू ननिहाल, सिं० नानाणो।

नफरत—स्त्री० (घृणा)–अ० नफ़रत।

नफा — पुं० (१- लाभ, २- आर्थिक लाभ)–अ० नफ़ा।

नफ़ासत — स्त्री० (उत्तमता) – अ० नफ़ासत।

नफ़ीरी—स्त्री० (अलग़ोज़ा, एक बाजे का नाम)–अ० नफ़ीरी।

नब्ज—स्त्री० (नाड़ी, धमनी)– अ० नब्ज़।

नब्बे—वि० (जो गिनती में पचास और चालीस हों)–सं० नवति > पा० नवति, नवुति > प्रा० णवदि, णवइ, णउइ > अप० णवदि, णवइ, नव्वए > हिं० नब्बे, नव्वे तुल० गु० नेवूं, म० नव्वद, ने० नब्बे।

नमक — पुं० (लवण, लोन) – फ़ा० नमक।

नमाज — स्त्री० (मुसलमानों की एक विशिष्ट प्रकार और रूप की ईश्वर-प्रार्थना जो दिन में पाँच बार करने का विधान है)–अ० नमाज़ > अव० नीमाज, हिं० नमाज। तुल० सं० नमस्या, पं० उर्दू सिं० नमाज़, कश्मी० न्यमाज़, ओ० नमाज, ते० नमाज़ु, मल० नमाज़, क० नमाजु।

नया — वि० (नवीन, नूतन, ताजा)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० नव>प्रा० णव>हिं० नया।

नरई, नरवाई—स्त्री० (वनस्पति का ऐसा डठल जो भीतर से खोखला हो, गाजर, मूली आदि का डंठल)–सं० नलक (नल+√कै+क)।

नरक—पुं० (वह स्थान जहाँ मृत्यु के उपरान्त जीवों की आत्माओं को रहना तथा यातनाएँ सहनी पड़ती हैं)–सं० >नृ (क्लेश देना)+अच्। यास्क के अनुसार सं० नि+अरक (नीचे जाना) अथवा न+र+कम् (इसमें आनन्द-दायक स्थान थोड़ा सा भी नहीं है)। (निरुक्त, प्रथम अध्याय, तृतीय पाद)। सं० नरक>पा० निरय>प्रा० णरग, णरय>हिं० नरक। तुल० पं० गु० म० बं० अस० ओ० क० नरक, सिं० नरकु।

नरकट, नरकल—पुं० (सरकंडा, एक प्रकार का बाँस, नरकुल, बेंत की जाति का एक पौधा जिसके डंठल मजबूत किन्तु खोखले होते हैं)–सं० नलकांड।

नरम—वि० (कोमल, मृदु)–फ़ा० नर्म। तुल० गु० म० नरम।

नरसल, नरकुल, नरकुट[1]—पुं० (एक पौधा)–सं० नल+सल>नरसल (नल-कट>नरकट)। अथर्व० (६/१६/४) में कुछ अज्ञात ओषधियों के नाम नीलागल साला, अलसाला, सिलांजाला— इनमें 'साला' पद पौधे या जल की घास हैं।

नरसों—पुं० (बीते हुए परसों के पहले का दिन)–सं० अन्यपरश्व > अन्न परसव>अन्नवरसो>नरसों।

नरी[2]—स्त्री० (बकरी का चमड़ा जो कमाया जाकर जूते बनाने के काम आता है)–फ़ा० नरी।

नलकी—स्त्री० (नली)–सं० नलिका> हिं० नलकी। तुल० पं० नलकी, बं० अस० नलि।

नवइ—क्रि० (नमन करना)–सं० नभ >प्रा० णभ, णव> अप० नवहिं> अव० नव, नवइ (की०)।

नवल—वि० (१- नवीन, २- सुंदर, ३- युवा, ४- शुद्ध, स्वच्छ)–सं० नव> प्रा० णव, प्रा० णवल्ल>अप० नवल्लो >हिं० नवल। तुल० म० नवल।

नवा—वि० (नवीन)–सं० नव>प्रा० णव>हिं० नवा, नया। तुल० नवुं, सिं० नइउं, पं० नवो, बं० नई, सिंह० नव, कश्मी० नोव (वु)।

नवारी, निवाड, निवार, नेवारी—स्त्री० (बहुत मोटे सूत की बुनी हुई प्रायः तीन चार अंगुल चौड़ी पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं)–फ़ा० नवार।

नवासी—वि० (अस्सी और नौ)– सं० एकोननवति>अर्धमागधी एगूणणउइ> अप० एक्कूणासी>हिं० नवासी।

नवीसी—स्त्री० (लिखने का काम या पेशा)–फ़ा० नवीसी।

नवेला—वि० (नवीन और सुन्दर)–सं० नव+क>नवइल्ल > नवेल्ल > हिं० नवेला।

नव्वाब— पुं० (बादशाह का नायब, किसी रियासत का मुसलमान शासक)– अ० नव्वाब।

नशा—पुं० (मादक द्रव्य)–अ० नशा।

नस—स्त्री० (नाड़ी, शरीर के भीतर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने के लिए होता है, रक्तवाहिनी नली)–सं० स्नायु, स्नाव > प्रा० णसा > हिं० नस ।

नसीब— पुं० (तक़दीर, भाग्य)–अ० नसीब ।

नसैनी—स्त्री० (सीढ़ी)–सं० निःश्रेणी > प्रा० णिस्सेणि, णिसेणि > निस्सेनी > नस्सेनी > हिं० नसेनी, नसैनी ।

नहछू—पुं० (एक रस्म, जिसमें वर तथा लड़की के विवाह से पूर्व नाखून काटे जाते हैं और रंगे जाते हैं)– (१) सं० नखसुधित > प्रा० ण्हछुहिअ > नहछुअ > नहछू । (२) सं० नखक्षुरित ।

नहना—पुं० (हज्जामों का एक औजार जिससे नाखून काटे जाते हैं)–सं० नखहरण > प्रा० ण्हहरण > हिं० नहना ।

नहर—स्त्री० (कुल्या, प्रणाली, किसी नदी से निकाला गया जलमार्ग)–अक्कदी भाषा नारु, अ० नहरुन > हिं० नहर > नेहरुआ, नाहरु, नहरु । तुल० पं० उर्दू नहर, कश्मी० नेहर, सिं० नहिर, गु० नहेर ।

नहरनी—स्त्री० (नख काटने का एक औजार)–सं० नखहरणी > प्रा० णहरणी > हिं० नहरनी ।

नहला—पुं० (राज का औजार जिसकी आकृति नख के समान होती है)–सं० नख > प्रा० णह > हिं० नह + ला ।

नहान—पुं० (स्नान)–सं० स्नान > पा० नहान, न्हान > प्रा० अप० ण्हान > नहान ।

नहाना— क्रि० (नहाना)–सं० स्ना > पा० न्हाय > प्रा० ण्हा, ण्हावे > हिं० नहा + ना । ब्र० नहाहीं, छ० नहा । तुल० पं० नहाणा, उर्दू नहाना, गु० नाहवूं, ने० नुवाउनु ।

नहीं—अव्य० (एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध प्रकट करने के लिए होता है)–सं० नास्ति > प्रा० णत्थि > अप० नाहिं० > ब्र० नहिं > हिं० नहीं । तुल० पं० नहीं, गु० नही, म० नाहीं । चैक ने, स्पे० अं० नो ।

नाँठि (पद०)—वि० (नष्ट)–सं० नष्ट > प्रा० णट्ठ > नट्ठि > नाँठि ।

नाँदना— क्रि० (आनन्दित या प्रसन्न होना)–सं० √नन्द् > प्रा० णंद > हिं० नाँद + ना ।

नाइत[1] (पद०)—पुं० (नाव से यात्रा करने वाला)–सं० नौयात्री > ना अत्ति नावत्ति > नायत्त > नाइत ।

नाइत[2] (पद०)—(नौका से जाने वाला, समुद्र-मार्ग से व्यापार करने वाला[1])–सं० नौयायिन् > प्रा० णाइत्त > नाइत ।

नाईं—स्त्री० (समान दशा, एक सी गति)–सं० न्यायेन > हिं० नाईं ।

नाई— पुं० (हज्जाम, नापित)–सं० नापित > पा० नहापित > प्रा० णाविअ > हिं० नाई । तुल० पं० उर्दू नाई, बं० अस० नापित ।

नाक— स्त्री० (नासा, नासिका)–सं० नक्र > पा० नक्क > प्रा० णक्क > हिं० नाक । तुल० पं० नक, सिं० नकु, म० गु० बं० अस० ओ० नाक ।

नाग—पुं० (एक जाति, साँप, हाथी)–सं० नाग > प्रा० णाग > हिं० नाग ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नागफाँस— पुं० (फंदा, फाँसी, पाश, वरुण का अस्त्र)– सं० नागपाश>प्रा० णाग पास>हिं० ब्र० नाग-फाँस ।

नागबेल—स्त्री० (पान, पान की बेल, बेलबूटे)–सं० नागवल्ली> प्रा० णाग-वल्ली>हिं० नागबेल, ब्र० नागबेलि ।

नागा[1]— . पुं० (१- एक प्रसिद्ध शैव संप्रदाय, २- इस संप्रदाय के लोग प्रायः नंगे रहते हैं)–सं० नग्न>प्रा० णग्ग> हिं० नागा ।

नागा[2]—पुं० (नियत समय पर होते रहने वाले काम का किसी बार न होना)–अ० नाग़ः ।

नाच—पुं० (नृत्य)– सं० नृत्य>प्रा० णच्च>अव० हिं० नाच । तुल० पं० उर्दू बं० गु० अस० नाच, कश्मी० नचुन, सिं० नाचु ।

नाचना—क्रि० (नाचना)– सं० नृत्यति >प्रा० णच्चइ > हिं० नाच+ना । तुल० पं० नचणा, सिं० नचणु, म० नाचणें, गु० नाचवुं, बं० नाचा, अस० नाच ।

नाज—पुं० (अनाज)–सं० अन्नाद्य> अनाज>नाज, ब्र० अनाजु ।

नाज़ुक—वि० (कोमल, सुकुमार)–फ़ा० नाज़ुक ।

नाड़ा—पुं० (इजारबंद, सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा या धोती बाँधती है)–सं० स्नायु । अवेस्ता स्नावरे ।

नाड़ी—स्त्री० (धमनी)– सं० नाडी> प्रा० णाडी>हिं० नाड़ी । तुल० कु०सिं० म० पं० बं० गु० नाडी, अ० नब्दुन ।

नाती—पुं० (नातिन, बेटी या बेटे का बेटा)–सं० नप्तृ+क>प्रा० णत्तिअ> नत्तिअ>ब्र० हिं० नाती । तुल० म० नातू, बं० अस० ओ० नाति, पं० नत्ता ।

नातिन—स्त्री० (बेटी की बेटी)–सं० नप्त्री>प्रा० णत्ती, नत्ति>हिं० नातिन, नातिनी । तुल० पं० नतिनी, म० नात, बं० नातनि, अस० नातिनी, ओ० नातुणि ।

नाथ[1]— स्त्री० (नथ)–सं० नस्त+क (नाक का छेद)>प्रा० णत्था> हिं० नाथ । सिं० ओ० नथ, पं० नत्थ, म० नाथ, कु० नाथ्यूणो ।

नाथ[2]—पुं० (प्रभु, पति)–सं० नाथ> अप० नाहु, स० णत्थु>अव० नाह, ब्र० हिं० नाथ ।

नाना—वि० (अनेक प्रकार का)–सं० नाना ।

नापा—क्रि० (नापना, मापना)–सं० ज्ञा >प्रा० णप्पइ, णप्प>हिं० नापा ।

नाभी—स्त्री० (तुंदी)–सं० पा० नाभि >प्रा० णाभि>हिं० ब्र० नाभि । तुल० बं० नाभि, अस० नाइ ।

नायक— पुं० (मुखिया)–सं० पा० नायक>प्रा० णायग>अप० णाइक्क, नायगु>अव० नाअक (की०)>ब्र० हिं० नायक ।

नार[1]— स्त्री० (नारी)–सं० नारी> प्रा० णारी, णायरी> अप० णारि> हिं० नारि, ब्र० नार । तुल० गु० पं० नार, नारी; सिं० नारि, बं० नारी ।

नार[2]— स्त्री० (कमल की डंडी)–सं० नालिका>प्रा० णालिआ>हिं० नाल, नार ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नार[1]—पुं० (अनार)–फ़ा० अनार।

नार[2]—स्त्री० (आग)–अ० नार।

नार[3]—पुं० (जल)–सं० नारः।

नारङ्गी—स्त्री० (लाल गोल फल का पौधा)–अ० नारंज।

नारियल—पुं० (एक फल का नाम)–सं० नारिकेल > प्रा० णारिअल > नारिअेल > हिं० नारियल। ब्र० नारिकेल। तुल० पं० नरेल, सिं० नारेलु, गु० नारियेल।

नाला— पुं० (छोटी नदी, पनाला, मोरी)–सं० नाल + क (नाल = नहर) हिं० नाला।

नाली— स्त्री० (जल बहने का छोटा नाला, गन्दा पानी बहने की मोरी)–सं० नाली > पा० नालिका > प्रा० णाली हिं० > नाली।

नाँवँ—पुं० (नाम)–सं० नामन् > पा० नाम > प्रा० णाम > हिं० नाँवँ। तुल० पं० नाँ, नाऊ, सिं० नाँउँ, ओ० ना, बं० नाम्।

नाव—स्त्री० (लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर तैरने या चलने वाली सवारी)–सं० नौ > पा० नावा (जहाज) > प्रा० णावा > अप० हिं० नाव। तुल० कश्मी० नाव्, कु० नाऊ, ओ० ना, पं० नाउ, सिं० नाउक।

नावन—पुं० (नाक में डाला जाने वाला तेल या नस्य औषध)–सं० नावन (चरक ग्रन्थ में प्रयुक्त)।

नासूर— पुं० (एक प्रकार का घाव जिसमें से निरन्तर मवाद निकलता रहता है)–अ० नासूर।

नाह— पुं० (नाथ, स्वामी, स्त्री का पति)– सं० नाथ > प्रा० णाह > हिं० नाह, ब्र० नाहु।

निंदना— क्रि० (निंदा करना)–सं० निंदन।

निंबोली— स्त्री० (नीम का फल, निबौरी)–सं० निम्बगुलिका (गुलिका = गोली) > प्रा० णिंबोलिया > हिं० निंबोली, निबौरी।

निआउ—पुं० हिं०, पुं० (न्याय)–सं० न्याय > हिं० निआउ। तुल० गु० म० बं० कश्मी० न्याय, सिं० नियाव।

निआन★—पुं० (अंत)–सं० निदान > प्रा० णिआण > अव० निआन (की०) हिं० निआन।

निकम्मा—वि० (कार्य-रहित, जो किसी काम न आ सके)–सं० निष्कर्मन् > प्रा० णिक्कम्म > निकम्म > निकम्मा।

निकाई[1]— स्त्री० (शोभा, अच्छाई, भलाई)–फ़ा० नेक।

निकाई—पुं० (घर, निकाय, समूह)–सं० निकाय > प्रा० णिकाय > णिकाइय > हिं० निकाई।

निकाम— वि० व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फजूल)–सं० निष्कर्मन् > प्रा० णिक्कम्म > हिं० निकाय। तुल० सिं० निकामो, म० निकामी।

निकाल—पुं० (निकास)–सं० निष्कालन > प्रा० णिक्कालण > अप० निक्कलिउं > हिं० निकाल। तुल० म० निकाल, गु० निकलवूँ, सिं० निकिरणु, पं० निक्कलणा।

निकालना—क्रि० (बाहर करना, भीतर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से बाहर लाना, बाहर निकालना)–सं० निर्+कासय्> प्रा० णिक्काल>हिं० निकाल+ना।

निकास—पुं० (निकलने की क्रिया या भाव, निकालने की क्रिया या भाव)–सं० निष्कास>प्रा० णिक्कास>हिं० निकास।

निकासना—क्रि० (बाहर, निकालना)–सं० निष्कासन>प्रा० णिक्कासण>हिं० निकासना।

निखारना—क्रि० (१-स्वच्छ करना, साफ करना, २- पवित्र करना, पाप-रहित करना)–सं० निस्+क्षालय्>प्रा० णिस+खाल, णिस खालणिज्ज>हिं० निखारना। तुल० पं० निखारणा, म० निखार (णें)।

निखालिस—वि० (खालिस, शुद्ध, स्पष्ट, साफ)– अ० खालिस > हिं० नि+खालिस।

निगड़[1] (पद०)—वि० (निःसीम, अमर्यादित, अत्यधिक)– सं० निर्ग्रंथित> निगड्डिअ>निगड़।

निगलना— क्रि० (गले के नीचे उतार देना, खा जाना, रुपया या धन पचा जाना)–सं० निगरण>प्रा० णिग्गलन> हिं० निगलना। तुल० पं० निगलणा, उर्दू निगलना।

निग्रही— वि० (१- रोकने या दबाने वाला, २- दमन करने वाला, ३- दण्ड देने वाला)–सं० निग्रहिन्।

निचला—वि० (१- अचल, २- स्थिर, शान्त)–सं० निश्चल>पा० निच्चल> >प्रा० णिच्चल>अप० निच्चल>हिं० निचला। तुल० पं० निचल्ल, म० निचळ।

निचिंत—वि० (चिंता-रहित, बेफिक्र)–सं० निश्चिन्त>प्रा० णिच्चिंत>अप० णिचिन्तइ>हिं० निचिंत। तुल० म० गु० पं० निचिन्त।

निचुड़ना[1]— क्रि० (रस से भरी या गीली चीज को इस प्रकार दबाना कि रस या पानी टपकर निकल जाए)– सं० निचुलित (भृंग-सन्देश, श्लोक २५, काव्यमाला, संस्कृत सिरीज, वॉल्युम, पृ० ६३)>निचुड़ना, निचोड़ना। तु० पं० उर्दू निचोडना।

निज—वि० (स्वकीय, अपना)–सं० पा० हिं० निज।

निठुर—वि० (क्रूर, निष्ठुर)–सं० निष्ठुर >पा० निट्ठुर>प्रा० णिठ्ठुर>हिं० निठुर। तुल० सिं० निठरु, बं० ओ० निठुर, कु० निरुठो।

नितंब—पुं० (कटि का पश्चाद् भाग, चूतड़)–सं० नितम्ब> प्रा० णिअंब> स० णिअम्ब>हिं० नितंब।

नितांत—वि० (अतिशय, बहुत अधिक)–सं० नितान्त (नि+√तम्+क्त, दीर्घः)।

निति—क्रि० वि० (नित्य)–सं० नित्य> अप० निच्चु>स० निति>ब्र० नित।

नित्त (की०)—पुं० (नृत्य)–सं० नृत्य >अव० नित्त।

निदरना—क्रि० (निरादर करना)–सं० निरादार।

निदानू—पुं०(आदि कारण, रोग-निर्णय, आखिर में, अन्त)–सं० निदानं (नि+√दा+ल्युट्) >निदानु>निदानू।

निद्रालु—पुं० (जिसे नींद आ रही हो)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० निद्रालु > पा० निद्दालु > प्रा० णिद्दालु > हिं० निद्रालु ।

निनारा— वि० (अलग, न्यारा, जुदा, भिन्न) सं० निर्नगर > प्रा० णिण्णार (पाइअ) > निनार > हिं० निनारा, ब्र० निनारे ।

निन्नानवे—वि० (नब्बे और नौ)–सं० नवनवति > पा० नव-नुवति > प्रा० णव-णउइ > अर्धमागधी णवणवइ > हिं० निन्नानवे ।

निपजना— पु० हिं०, क्रि० (उपजना, उत्पन्न होना, उगलना, जमना)– सं० निष्पद्यते > प्रा० णिप्पज्जइ > हिं० निपज +ना ।

निपटना—क्रि० (१- निवृत्त होना, छुट्टी पाना, २- समाप्त या पूरा होना)–सं० निर्+वर्त्तय् > प्रा० णिव्वट्ट > हिं० निपटना ।

निपातना—क्रि० (१- काट कर या यों ही नीचे गिराना, २- नष्ट करना, ३- मार डालना)– सं० निपातन > प्रा० णिपाडण > अप० निवडण > हिं० निपातना ।

निपाती—वि० (१- गिराने वाला, २- मार डालने वाला)– सं० निपातिन् > प्रा० णिपाइ > हिं० निपाती ।

निपूता—वि० (जिसे पुत्र न हो, पुत्र-हीन)–सं० निष्पुत्रक > निप्पुत्तअ > निपूतअ > निपूता ।

निबटना— क्रि० (१- निवृत्त होना, फारिग होना, २- समाप्त होना, पूरा होना, ३- निर्णीत होना)– सं० निर्वृत् > पा० निब्बत्त > प्रा० णिव्वट्ट > हिं० निबटना ।

निबड़—वि० (घना)– सं० निविड > प्रा० णिविड > हिं० निबड़ ।

निबरना— क्रि० (समाप्त होना)–सं० निवृत्त > प्रा० णिवट्ट > निवड़ना > निबरना ।

निबहना, निबाहना—क्रि० (वचन पूरा करना, पूरा करना)–सं० निर्वहण (निर् =निश्चय, वह=सहना, ले जाना) > प्रा० णिव्वहण > हिं० निबहना, निबाहना । तुल० पं० निबाहुणा, सिं० निबाहणु ।

निबाह—पुं० (१- गुजारा, २- आज्ञा, कार्य आदि पूरा करना, पालन, ३- प्रथा, परम्परा आदि के अनुसार व्यवहार करके उसकी रक्षा या पालन करना)– सं० निर्वाह > प्रा० णिव्वाह > हिं० निबाह ।

निबुकना—क्रि० (छुटकारा पाना, बंधन से निकलना, मुक्त होना, उद्धार पाना)– सं० निर्मुच > प्रा० णिम्मुअ > णिव्वुक > > निवुक > निवुक+ना ।

निबुकि—कृ० (बन्धन-मुक्त होकर, छूट-कर, निकलकर)–सं० निर्मुक्त > प्रा० णिवुक्क > निवुक+इ=निबुकि ।

निबेड़ना—क्रि० (उन्मुक्त करना, निबटाना, चुकाना, पूरा करना, तै करना)– सं० निर्वर्तन (निर√वृत् + णिच्+ ल्युट्), नि+√वृत् > प्रा० णिवट्ट > हिं० निबेड़ +ना (प्र०) ।

निभना—क्रि० (पार लगना, [होना, पूरा होना, बन आना)– सं० निर्+√वह् (सं० निर्वहण > प्रा० णिव्वहण) > प्रा० णिव्वह > हिं० निभना ।

निमज्जना—क्रि० (गोता लगाना, लीन

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होना, डूबना, निमज्जन करना)– सं० निमज्ज>पा० निम्मुजति>प्रा० णिमज्ज>अप० निमिज्जअ> अव० निमज्झिअ (की०)>हिं० निमज्ज+ना।

निमटना—क्रि० (१- निपटना, निवृत्त होना, छुट्टी पाना, २-समाप्त या पूरा होना, ३- निर्णीत या तै होना)–सं० नि+√वृत् (सं० निवृत्त>प्रा० णिवट्ट)>प्रा० णिवट्ट>हिं० निमट+ना।

नियंता—पुं० (नियम बनाने वाला)–सं० नियन्तृ (नि√यम्+तृच्)।

नियत—वि० (१-निश्चित, २- आज्ञा, विधान आदि के द्वारा स्थिर किया हुआ)–सं० पा० नियत।

नियति—स्त्री० (भाग्य, किस्मत, नियत होने की क्रिया या भाव)– सं० पा० नियति।

नियर—अव्य० (समीप, पास)– सं० निकट >प्रा० णिअड>हिं० नियर। तुल० अं० नियर।

नियाज—स्त्री० (१- इच्छा, २- दीनता, ३- प्रार्थना, ४- भेंट)–फ़ा० नियाज़।

निरखना—क्रि० (देखना, ताकना)–सं० निरीक्षण>निरक्खण>निरखना।

निरति—स्त्री० (१- शब्द या ध्वनि का अभाव, २-शून्य स्थान, आकाश, ३-खबर, समाचार) सं० निर्ऋति (नि्+ऋ+क्तिन्)।

निरसिअउ— (पद०)– क्रि० (परास्त करना)–सं० निर्+अस्>प्रा० णिरस (पाइअ०)।

निरा—वि० (१-विशुद्ध, बिना मेल का, २- एकमात्र, ३. निपट, नितांत)–सं० नितराम्>हिं० निरा।

निर्झर—पुं० (झरना)– सं० निर्झर> प्रा० णिज्झर।

निर्धारना—क्रि० (निश्चित या निर्धारित करना)–सं० निर्धारण >पा० निद्धारण >हिं० निर्धारना।

निवाये— स्था० प्र०, वि० (जाड़े के अन्तिम दिनों में जब ठंड कम हो जाती है)–सं० निवात> प्रा० णिवाय>हिं० निवाये।

निवार—स्त्री० (एक प्रकार की चौड़ी पट्टी या कोर जिससे पलंग बुने जाते हैं)–फ़ा० नेवार।

निश्चय—पुं० (ऐसी धारणा या ज्ञान जिसमें कोई भ्रम न हो)–सं० निश्चय> प्रा० णिच्छय>अव० निच्चइ, णिच्चइ (की०)>निश्चय।

निसँस (पद०) **निसाँस**, (पु० हिं०,प्रा० प्र०)–पुं० (ठंठी साँस, लंबी साँस)–सं० निःश्वास (निस्√श्वस्+घञ्)> प्रा० णिस्सास>निसाँस, निसँस।

निसँसि (पद०)— क्रि० (निःश्वास लेकर)–सं० निःश्वसिति>प्रा० णिस्ससइ>निसँसि।

निसज्जो— (की०) क्रि० (उपवेशन, बैठाना)–सं० निषद्य>प्रा० अप० णिसज्जा >अव० निसज्जो।

निसरना—क्रि० (निकलना)–सं० निःसरण>प्रा० णिस्सरण>नीसरइ>निसर+ना।

निसान— पुं० (१- चिह्न, २- किसी पदार्थ से अंकित किया हुआ अथवा और किसी प्रकार बना हुआ चिह्न)–फ़ा० निशान।

निसेनी—स्त्री० (सीढ़ी)–सं० निःश्रेणी>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० णिस्सेणी > हिं० निसेनी, नसेनी; ह० निसेणी।

निसोत—वि० (शुद्ध, जिसमें किसी चीज का मेल न हो)–सं० निःस्रोतस् (स्रोत से निकला हुआ) > प्रा० णिसोत > हिं० निसोत।

निहकामी— वि० (निष्कामी)– सं० निष्कामी > प्रा० णिहकामी > हिं० निहकामी।

निहत्ता—वि० (शस्त्रहीन)– सं० नि + हस्त > प्रा० णिहत्थ > निहत्था > हिं० निहत्ता।

निहाई—स्त्री० (लुहार के काम आने वाला औजार)– सं० निघाति > प्रा० णिहायइ > निहाअइ > निहाई।

नींद—स्त्री० (सोने की अवस्था)–सं० निद्रा > पा० निद्दा > प्रा० णिद्दा > अप० निद्द > अव० निन्द > हिं० नींद। तुल० म० नीद; पं० निंद्, निंदर्, सिं० निण्द्र, गु० नीद्। अ० नौमुन।

नीका—वि० (अच्छा, उत्तम, निर्मल, बढ़िया)–प्रा० णिक्क > हिं० नीका।

नीच— वि० (नीच मनुष्य, ओछा आदमी)–सं० पा० नीच > प्रा० णिच्च > निच्च > हिं० नीच। तुल० बं० ओ० निच, सिं० नीचु, म० गु० नीच।

नीचट—प्रा० प्र०, वि० (दृढ़, पक्का)– सं० निश्चय > अप० णिचट्ट > नीचट।

नीचे—क्रि० वि० (नीचे की ओर, अधो भाग में)–सं० नीचैस् > हिं० नीचे।

नीड़—पुं० (१- चिड़ियों का घोंसला, २-ठहरने या रहने का स्थान)–सं० नीड > निड्ड > प्रा० णिड्ड > हिं० नीड़।

नीम—स्त्री० (छोटी-छोटी पत्तियों वाला एक पेड़ जिसकी पतली शाखाओं की दतुअन बनती है)–सं० पा० निम्ब > अप० निम्म > हिं० नीम। तुल० पं० निम, कश्मी० नीम्, सिं० निमु, बं० अस० उर्दू नीम।

नीयत—स्त्री० (भावना, मनशा)–अ० नीयत।

नुकता चीनी—स्त्री० (दूसरे के दोष या बुराइयाँ ढूँढना)– अ० नुक्तः + फ़ा० चीनी।

नुमाइश—स्त्री० (प्रदर्शन, प्रदर्शनी)– फ़ा० नुमाइश।

नू—स्त्री० (पंजाब में पुत्र वधु को 'नू' कहते हैं)–सं० स्नुषा > प्रा० णुसा > पं० नू[१८]।

नून—पुं० (नमक)–सं० लवण > प्रा० लोण > लोन > लून > हिं० नून।

नूपुर—पुं० (पैंजनी, पायजेब, पाँव का आभूषण)–सं० पा० नूपुर > प्रा० णूपुर > णूउर > अप० नेउर।

नूर—पुं० (ज्योति, प्रकाश)–अ० नूर।

नेंवता, नेवता— पुं० (न्योता)–सं० निमन्त्रण > प्रा० णिमंत्रण > निवँत > हिं० नेंवता, नेवता, नेउता।

ने—प्र० (कर्त्ता की विभक्ति)– सं० अनेन > एन > हिं० ने।[१८]

नेउर—पुं० (नूपुर)–सं० नूपुर > प्रा० णूपुर, णूउर > णेउर > हिं० नेउर।

नेउला— पुं० (नेवला, एक जन्तु का नाम)–सं० नकुल > प्रा० णउल > नउल > नेउला, नेवल।

नेक—वि० (अच्छा, भला, उत्तम)–फ़ा० नेक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नेकुड़ा—स्था० प्र०, पुं० (नाक का नथुना)–सं० नकपुट+क>पा० णक्क-उड>हिं० नेकुडा।

नेज्जू—स्था० प्र०, स्त्री० (रस्सी)–सं० प्रा० रज्जु>हिं० ह० नेज्जू।

नेत्रों (की०)—पुं० (नेता, नायक)–सं० नेतृ>प्रा० णेउ>अव० नेत्रों।

नेड़े— प्रा० प्र०, क्रि० वि० (निकट, पास)–सं० निकट>प्रा० णिअड>अप० णिअल>स० निअड़ि>हिं० नेड़, नेड़े। तुल० पं० निआरु, कु० नेडो, गु० नेडे।

नेत[1]—पुं० (आँख)– सं० नेत्रम्>प्रा० णेत्त>हिं० नेत।

नेत[2]—पुं० (मथानी की रस्सी, धुँआ निकलने काछिद्र, रेशमी वस्त्र)– सं० नेत्र (√नी+ष्ट्रन्)।

नेत[3]—स्त्री० (नीयत)–अ० नीयत।

नेता—पुं० (१- पीछे ले चलने वाला, अगुआ, नायक)–सं० नेतृ>प्रा० णेआ-उय>हिं० नेता।

नेती—स्त्री० (मथानी में लपेटी जाने वाली रस्सी)– सं० नेत्रिका > प्रा० णेत्तिआ>हिं० नेती।

नेम— पुं० (नियम, कायदा)– सं० नियम>प्रा० णेम (कार्य, काज)>हिं० नेम, ह० नेम्।

नेमि— स्त्री० (१- पहिए का चक्कर, पहिए का हाल)–सं० नेमि, नेमी>पा० नेमि>प्रा० णेमि>हिं० नेमि।

नेरता—स्त्री० (नैर्ऋत्य दिशा, पश्चिम-दक्षिण का कोना)–सं० नैर्ऋतिक>प्रा० णेरइअ>हिं० नेरता।

नेरती—स्त्री० (दक्षिण-पश्चिम की दिशा में चलने वाली वायु)–सं० नैर्ऋतिका> प्रा० णेरइआ>हिं० नेरती।

नेवज—पुं० (देवता के नाम पर चढ़ाया जाने वाला पकवान, अन्न आदि)–सं० नैवेद्य>प्रा० णेवेज्ज>हिं० नेवज।

नेवरी (पद०)— क्रि० (निवृत्त होना, हटना)–सं० निवृत्त>प्रा० णिवट्ट>हिं० नेवरी।

नेवला—पुं० (एक प्रसिद्ध जंतु जो साँप को मार देता है)– सं० नकुल>प्रा० णउल>हिं० नेवला, न्योला। तुल० पं० उर्दू नेवला, सिं० नोरु, बं० नेउल।

नेह—पुं० (प्रेम)–सं० स्नेह>प्रा० णेह >अप० अव० हिं० नेह।

नैं—स्त्री० (नदी)–सं० नदी>प्रा० णई >हिं० नैं।

नैंचकि, नैंचकी[1]— स्त्री० (अच्छी गाय)–सं० नैत्यिकी>प्रा० णैंचिकी> नैंचिकी>नैंचकी।

नैं,नू—पुं० (नवनीत)–सं० नवनीत> नउनीअ> नोनीअ>नोनी > नेनू > नैंनू।

नैंचा—पुं० (नरकट की नलियों का वह ढाँचा जो हुक्के में लगा होता है और जिसके द्वारा तमाखू का धूआँ खींचा जाता है)–फ़ा० नैंचा।

नैंन—प्रा० प्र०, पु०(आँख, नयन)–सं० पा० नयन>प्रा० णयण>अप० नयण >हिं० नैंन।

नैंहर—पुं० (पिता का घर)–सं० ज्ञाति-गृह>प्रा० णातिहर, णइहर>नइहर> नैंहर।

नौ—वि० (जो गिनती में आठ और एक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो)–सं० नव>प्रा० णव (प्रा० पैं०)> हिं० नौ। तुल० स्पे० नुएवे, ज० निउन, गु० नउ, म० नऊ, पं० नउं, सिं० नउं, बं० नय, कश्मी० नव्, नउ; सिंह० नव, नम।

नौकर—पुं० (सेवक)–फ़ा० नौकर।

नौति (पद०)—वि० (नये पत्तों वाला वृक्ष)–सं० नवपत्रक> नौपत्तिअ>नउ-वत्तिय>नौति।

नौदरी— स्था० प्र०, वि० (नौ दाँत वाला)–सं० नवदन्त>प्रा० णवदंत> नौदरी (बो०)।

नौन—स्था० प्र०, पुं० (नमक)–सं० लवण>लउन>नउन>नौन।

नौनी—स्त्री० (लौनी, नयनू, मक्खन)–सं० नवनीत>पा० नोनीत>प्रा० णव-णीअ>नवनीअ>नउनी>हिं० नौनी।

नौबत—स्त्री० (१- हालत, दशा, २-बारी, किसी काम का वक्त)– फ़ा० नौबत।

नौमी—स्त्री० (चान्द्रमास की नवमी, पक्ष की नवीं तिथि)– सं० पा० नवमी> नउमी>हिं० नौमी।

नौली[१]— स्था० प्र०, स्त्री० (रुपया रखने की थैली)–सं० नकुली > प्रा० णउली>हिं० नौली (मेरठ जिले में प्रयुक्त)।

नौसिखिया—वि० (जिसने अभी हाल में कोई काम सीखा हो और उस काम में निपुण न हुआ हो)–सं० नवशिक्षित> प्रा० णव सिक्खिअ> नौसिखिया।

न्योता—पुं० (घर में होने वाले किसी मांगलिक उत्सव में सम्मिलित होने के लिए किसी से कहना)–सं० निमन्त्रण> पा० निमन्तन>प्रा० णिमंत्रण, णिमंति-ऊण, हिं० न्योता।

न्यौली[१]— स्त्री० (रुपया रखने की थैली)–सं० नकुली> प्रा० णउली > नौली, नेउली, न्यौली।

प

पंक—पुं० (कीचड़, कीच)–सं० पा० पङ्क>प्रा० पंक>हिं० पंक।

पंक्ति—स्त्री० (श्रेणी, कतार, २- खींची हुई सीधी रेखा)–सं० पंक्ति।

पंख, पख—पुं० (पर, डैना)–सं० पक्ष> प्रा० >पक्ख>अव०>पष>हिं० पख, पंख,ह० पांख। तुल० सिं० पख, म० पख, पंख; पं० पंछ, कश्मी० पख, उर्दू पंख।

पंखि (पद०)— स्त्री० (पक्षी)–सं० पक्षिन्>प्रा० पंखि>हिं० पंखि।

पंखुड़ी—स्त्री० (पंख, पर, डैना)–सं० पक्ष>प्रा० पक्ख, पंखुडी>अप० पंखुडी (दे० ना० मा०)>हिं० पंखुड़ी, पंखड़ी, ब्र० पांखुड़ी। तुल० त० पुङ्कु।

पंगत— स्त्री० (दावत खाने के लिए एक बार में जितने व्यक्ति बैठते हैं, पंगत कहलाती है, पाँती)– सं० पंक्ति>पा० पंति>पंगति>पंगत।

पंगु—वि० (लँगड़ा, जो पैरों से चल न सकता हो)–सं० पङ्गु> पा० पङ्गु> प्रा० पंगु, >हिं० पंगु।

पंचानन—पुं० (सिंह, अपने चारों पाँवों का मुख की तरह शिकार करने में उप-योग करता है। एक मुख और चार पाँवों को मिलाकर उसे पंचानन का नाम दिया

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया)–सं० पंचानन ।

पंछी— पुं० (चिड़िया, पक्षी)–सं० पक्षिन्>प्रा० पंछि > हिं० ह० पं० पंछी । तुल० बं० पाखी, म० पंची, पंछी; सिं० पखी ।

पंजा— पुं० (हाथ या पैर की पाँच उँगलियों का समूह, पाँच का समूह)–सं० पञ्चक>प्रा० पंचग>हिं० पंजा । तुल० फ़ा० पंजह, पं० पंजा, कश्मी० पंजि, म० पंजा ।

पंडित—वि० (१- विद्वान्, २- कुशल, प्रवीण)–सं० पा० पण्डित>प्रा० पंडिअ >अप० पंडीअ>अव० पण्डीआ ।

पंडिताई—स्त्री० (पांडित्य, विद्वत्ता)–सं० पाण्डित्य>पाण्डित्इअ>पंडितइ> पंडितई>पंडिताई ।

पंदरह— वि० (दस और पाँच)–सं० पञ्चदश>पा० पण्णरस>प्रा० पणरह >अप० पण्णारह (प्रा० पैं, प० च०), पन्नरह>हिं० पंदरह ।

पँखेरू(१)— पुं० (पखेरू, पंखवाला, पक्षी)–सं० पक्षिरूप>प्रा० पक्खिरूव >पखइरूअ>पखेरू, पँखेरू ।

पँचागुरा(१)—स्था० प्र०, पुं० (बाँही में लाक खींचने के लिए एक लकड़ी)–सं० पंचाङ्गुलक>पंचाङ्गुलअ > पंचागुरअ >पँचागुरा ।

पँवरि, पँवरी(१)—(प्रवेश-द्वार, नगर के भीतर का रास्ता)– सं० प्रतोली>प्रा० पओली>पउली>पउरि > पवरी > पँवरी ।

पइ—पु० हिं०, प्रा० प्र०, अव्य० (पास, समीप)–सं० प्रति>प्रा० पडि, पइ>हिं० पं ।

पइठना—क्रि० (पैठना, प्रवेश करना)–सं० प्रविष्ट>प्रा० पइट्ठ>अप० पइट्ठे >हिं० पइठना ।

पउआ—प्रा० प्र०, पुं० (पौवा)– सं० पादक>प्रा० पाअक>पाउअ > पाउआ >हिं० पउआ ।

पकवान—पुं० (तेल तथा घी में तला या घी से पकाया हुआ कोई खाद्य पदार्थ)–सं० पक्व+अन्न, पक्वान्न ।

पकौड़ी—स्त्री० (एक पकवान जो बेसन आदि को छोटे टुकड़ों के रूप में घी या तेल में तलकर बनाया जाता है)–सं० पक्वपुटिका>प्रा० पक्कपुडिआ>पक्क-उडिआ>पकौड़ी ।

पक्का—वि० (जो अच्छी तरह से और पूरा पक चुका हो या पकाया जा चुका हो)–सं० पक्व>प्रा० अप० पक्क > हिं० पक्का ।

पख— पुं० (पखवारा, पंद्रह दिन का समय)–सं० पक्ष>पा० प्रा० पक्ख> स० पखा>हिं० पख ।

पखाउज, पखावज—पुं० (एक प्रकार का बाजा)–सं० पक्षातोद्य>प्रा० पक्खा-उज्ज>हिं० पखाउज, पखावज ।

पखारना—क्रि० (धोना, शुद्ध करना)–सं० प्रक्षालय्> प्रा० पक्खाल>पक्खर, >अव० पष्खर, पखारिआ (की०)> हिं० पखार+ना । पुं०–सं०–प्रक्षालनम् ।

पखाल—स्त्री० (१- बैल के चमड़े की बनी हुई पानी भरने की मशक, २- धौंकनी)–सं० प्र+खल्ल (चमड़ा) ।

पखेरू—पुं० (पक्षी, चिड़िया)– १- सं०

CC-0, Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पक्षीकुल > प्रा० पक्खिउल > पक्खेलउ > पक्खेलु > पक्खेरु > पखेरू। २- सं० पक्षीरूप > पक्खीरूव > पखइरूअ > पखेरु।(१) ३- सं० पक्षधर (पंखों को धारणा करने वाला)। (२२)

पख्तून(१)— पुं० (पठान)–वै० सं० पक्थन > पख्तून।

पग—पुं० (पैर, पाँव)– सं० पदक > प्रा० पअक, पगय > हिं० पग।

पगड़ी—स्त्री० (सिर पर लपेट कर बाँधा जाने वाला प्रसिद्ध लंबा कपड़ा, पाग, साफा, उष्णीष)–सं० पटक > प्रा० पडग > पग्गड > हिं० पगड़ी। तुल० कश्मी० पागरु, बं० पागडी, म० ओ० पगडी, सिं० पगिडी, गु० पाघडी, पागडी।

पगहा—पुं० (बड़ी रस्सी, वह रस्सी जिससे पशु बाँधा जाता है)–सं० प्रग्रह +क > प्रा० पग्गाह > पग्गह > पगाह > अवधी पगहा।

पगार(१) (पद०)—पुं० (परकोटा, चहारदीवारी)–सं० प्राकार > प्रा० पाआर > अप० पागार, पगार।

पगार२—पुं० (वेतन)–पुर्त० पगार, स्पेनिश पागार (pagar) = देना।

पघा—पुं० (वह रस्सी जिससे पशु खूँटे पर बाँधे जाते हैं)– सं० प्रग्राह > प्रा० पग्गह > हिं० पघा, अवधी पगहा।

पचखा (अवधी)—पुं० (एक ही प्रकार या वर्ग की पाँच चीजों का समूह)–स्त्री०–धनिष्ठा से रेवती तक के पाँच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते है)–सं० पंचक।

पचत—वि० (पकाया हुआ, पका हुआ)– सं० पचत।

पचपन—वि० (पचास और पाँच)–सं० पञ्चपञ्चाशत् > पा० पंचपण्णास > पञ्च पञ्चासति > अर्ध मागधी पणपण्ण > अप० पंचवण्णास, पणपण्णास > हिं० पचपन। तुल० म० पंचावन्न, बं० पंञ्चान्न, ओ० पञ्चावन।

पचहत्तर—वि० (चौहत्तर और एक)–सं० पंचसप्तति > अर्धमागधी पंचहत्तरि, पण्णत्तरि > अप० पंचहत्तरि > हिं० पचहत्तर, पिछत्तर (बो०)।

पचानवे—वि० (नब्बे और पाँच)–सं० पंचनवति > पा० पञ्चनवुति > अर्धमागधी पंचाणउइ > अप पंचणवइ > हिं० पंचानवे, पचानवे। तुल० वं० पँचानब्बइ > ओ० पञ्चानवे, म० पंचाण्णव, गु० पंचाणूँ।

पचाना, पाचना— क्रि० (१- पकाना, आग पर रखकर गलाना या तैयार करना, २- हजम करना, ३-पराया माल लेकर हजम करना)– सं० पच् > पा० प्रा० पच्च > हिं० पाचना। तुल० ओ० पाचिबा, सिं० पचणु, गु० पचवूँ, ने० पच्नु।

पचास—वि० (जो गिनती या संख्या में चालीस से दस अधिक हो)–सं० पंचाशत् > प्रा० पञ्चास > अर्धमागधी, अप० पण्णास > पंचास > पँचास > पचास।

पचासी—वि० (चौरासी और एक)–सं० पञ्चाशीति > पा० पञ्चासीति > प्रा० पंचासीइँ > अर्धमागधी पंचासीइ > अप० पंचासी > हिं० पचासी। तुल० बं० पँचासी, ओ० पञ्चासी, सिं० पञ्जासी, ने० पचासि, म० पंचाऐंशी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पचीस—वि० (क्रम या गिनती में बीस से पाँच अधिक)–सं० पंचविंशति>पा० पंचवीसति>प्रा० पंचवीस>अर्धमागधी पणवीस > अप० पच्चीस > हिं० पचीस। तुल० ओ० पचीस, पं० पँजी, सिं० पञ्जवीह, गु० पचीस्, ने० पचिस् म० पंचवीस।

पच्ची— स्त्री० (पचाने की क्रिया या भाव)–सं० पचि।

पच्छिम—पुं० (पश्चिम)–सं० पश्चिम >प्रा० पच्चच्छिम> हिं० पच्छिम।

पछँही—वि० पश्चिम में होने या रहने वाला)–सं० पाश्चात्य>प्रा० पच्चत्थि-मिल्ल, पच्चत्थिम> हिं० पछँही।

पछड, पिछड़—क्रि० (पीछे रह जाना)–सं० पश्च>प्रा० पच्छ+ ड > पछड, पिछड।

पछतावा—पुं० (पछताने की क्रिया या भाव)–सं० पश्चात्ताप> पा० पच्छाताप >प्रा० पच्छादाव> पछताव > पछ-तावा। तुल० पं० पच्छोतावा, सिं० पछताउ, ने० पछिताउ, गु० पस्तावुं।

पछवाँ—वि० (पश्चिम दिशा की)–सं० पश्चिम > प्रा० पच्चित्थिम > हिं० पछवाँ।

पछांव— पुं० (पश्चिम दिशा)–सं० पश्चिम > प्रा० पच्चत्थिम > पछांव (बो०)।

पछाड़ना[1]— क्रि० (किसी प्रकार की प्रतियोगिता में किसी को बुरी तरह नीचा दिखाना, परास्त करना)–सं० पश्चावर्त्तन >प्रा० पच्छआवट्टण>हिं० पछाड़ना।

पछाड़ना[2]—क्रि० (धोकर साफ करने के लिए कपड़ों को जोर-जोर से जमीन या पत्थर पर पटकना)–सं० प्रक्षालन>प्रा० पक्खालण>हिं० पछाड़ना।

पजाना[1]—स्था० प्र०, क्रि० (पुत्रोत्पन्न करना)–सं० प्रजायते।

पजावा— पुं० (आँवा, ईंट पकाने की जगह)–फ़ा० पज़ावा।

पजोखा—पुं० (किसी के मरने पर उसके संबंधियों द्वारा किया गया शोक-प्रकाश, मातमपुरसी)–सं० पंचक+क>पंजअक >पंजउक>पंजोक>पजोख>पजोखा।

पटकना[1]—क्रि० (जोर के साथ ऊँचाई से भूमि की ओर फेंकना)–सं० पट्+कृ >पटक+ना (प्र०)।

पटका—पुं० (कमर में बाँधने का दुपट्टा या बड़ा रूमाल)–सं० पट्ट+क> प्रा० पट्ट>हिं० पटका। तुल० पं० पटुका, सिं० पट्को, ने० पटुका।

पटपटाना—क्रि० (पट-पट की ध्वनि होना या करना, बुरा हाल होना)–सं० पटपटाकरोति>हिं० पटपटाना।

पटल—पुं० (१- आवरण, २- छप्पर)–सं० पटल>प्रा० पडल>हिं० पटल।

पटसार—प्रा० प्र०, स्त्री० (खेमा, तंबू)–सं० पटशाला।

पटाका— पुं० (पटका या पटाक शब्द)–सं० पट+कृ>पटाका, पटाखा।

पटिया—स्त्री० (पत्थर का आयताकार चौरस या लंबा टुकड़ा जो साधारणतः डेढ़-दो इंच से मोटा नहीं होता)–सं० पट्टिका>प्रा० पट्टिया>हिं० पटिया।

पटेल—पुं० (गुजरात, मध्य प्रदेश आदि में गाँव का मुखिया)– प्रा० पट्टइल्ल> पट्टइल>हिं० पटेल। तुल० गु० पटेल,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिं० पटेलु, म० पाटील।

पटेसा—पुं० (तलवार की आकृति के समान एक हथियार)–सं० पट्टिश > प्रा० पट्टिस (पाइअ०) > पट्टेस > पटेसा।

पट्टी—स्त्री० (लकड़ी की वह लंबोत्तरी, चौरस और चिपटी पटरी जिस पर बच्चों को अक्षर लिखने का अभ्यास कराया जाता है)–सं० पट्टिका > प्रा० पट्टिया > हिं० पट्टी, ह० पाट्टी।

पट्ठा— पुं० (१- जवान, पाठा, २- कुश्तीबाज)– सं० पुष्ट > प्रा० पुट्ठ > पट्ठअ > हिं० पट्ठा।

पठान— पुं० (अफगानिस्तान और पश्चिमी सीमान्त प्रदेश आदि में बसने वाली एक योद्धा मुसलमान जाति)– पश्तो पख्तून।

पठाना—क्रि० (भेजना, प्रस्थान करना)– सं० प्रस्थान > प्रा० पट्ठाण > हिं० पठाना।

पठार—पुं० (वह ऊँचा विस्तृत मैदान जिसका ऊपरी भाग अधिक चौड़ा तथा चपटा और उबड़-खाबड़ होता है)–सं० प्रस्तार > प्रा० पट्ठार > हिं० पठार।

पठैया— कर्तृवाचक कृदन्त (पढ़ने वाला)–सं० पाठक (√पठ्+ण्वुल्)।

पठौनी—स्त्री० (किसी को कोई चीज़ या संदेशा पहुँचाने के लिए कहीं भेजने की क्रिया या भाव)–सं० प्रस्थापनिका > प्रा० पट्ठवणिआ > पट्ठउनिया > पठौनिया > हिं० पठौनी।

पड—वि० (गौण, जैसे पडदासी)–सं० प्रति > प्रा० पडि > हिं० पड।

पड़छावा— पुं० (किसी की छाया पड़ना)–सं० प्रतिछाया > प्रा० पडछाया, ह० पड़छावा।

पड़ताल—स्त्री० (अच्छी तरह की जाने वाली छानबीन या देखभाल)–सं० परि-तोलन।

पड़ना—क्रि० (किसी चीज का किसी पात्र में छोड़ा, डाला या पहुँचाया जाना)–सं० पतन > प्रा० पडन > हिं० पड़न।

पड़रा— स्था० प्र०, पुं० (भैंस का बच्चा)–अप० पेड्डा (दे० ना० मा०), अप० पडरु (प्र० चि०) > पड़रा, पड़ा, स्त्री० पड़ी (स्था० प्र०), पड़िया।

पड़वा—स्त्री० (प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि, पड़वा, प्रतिपत्)–सं० प्रतिपदा > प्रा० पडिवआ > हिं० पड़िवा, पड़वा।

पड़ाव—पुं० (पैदल यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय या दिनों के लिए ठहरना)–प्रा० पडवा > हिं० पड़ाव।

पड़ोस—पुं० (वह स्थान जो किसी के निवास-स्थान के समीप में हो)–सं० प्रतिवेश > प्रा० पडिवेश, पडिवास > हिं० पड़ोस।

पड़ोसी—पुं० (वह जिसका घर पड़ोस में हो)–सं० प्रातिवेश्मिक > प्रा० पडिवे-सिअ > पडिएसी > पडओसी > हिं० पड़ोसी, पड़ौसी। तुल० गु० सिं० पं० पडोसी; ओ० पडिसा, पडोसी।

पढ़, पढ़े—क्रि० (पढ़ने की क्रिया)–सं० पठति > प्रा० अप० पढइ, अप० पढ > हिं० पढ़े।

पढ़ना—क्रि० (किसी लिपि के अक्षरों के उच्चारण, रूप आदि का ज्ञान प्राप्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करना; शब्दों, पदों, वाक्यों आदि का उच्चारण करना)– (१) सं० पठ्>प्रा० पढ>पढइ>अव० पढ़>हिं० पढ़ना। पुं० (२) पठनम् (न०)>पढ़ना।

पढ़ा—भूतकालिक कृदन्त ('पढ़ना' क्रि० का भूतकालिक रूप)– सं० पठितः> प्रा० पढिओ>पठ्यो>पढ़ा।

पणवी—पुं० (शिव)–सं० पणव+इनि =पणविन्। प्रणवः (ओंकार अस्यास्ति इति प्रणवी)।

पत[१] (पद०)(१)—स्त्री० (कानि, विश्वास, प्रतिष्ठा)–सं० प्रत्यय>प्रा० पत्तिअ> पत्त>पत।

पत[२] (पद०)(१)— पुं० (लाभ)– सं० प्राप्ति>प्रा० पत्ति>पत।

पत[३]—पु० हिं०, पुं० (पति)–सं० पति >पत।

पत[४]—पुं० (पत्ता, पत्र)– सं० पत्र> प्रा० अप० पत्त, पत।

पतझड़—स्त्री० (वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पुरानी पत्तियाँ झड़ जाती हैं और नई निकलती हैं)– (१) सं० पत्र+ क्षर्>प्रा० पत्त-झर>हिं० पतझड़। (२) सं० पत्र + झरणम् (√झृ) + ल्युट्।

पति—पुं० (किसी वस्तु का मालिक)– (१) सं० पति (पाति रक्षति√पा+ इति)>प्रा० अप० पइ> अव० पए (की०)। (२) पाति इति पतिः (√पा)।

पतिआन— पुं० (किसी की कही हुई बात पर विश्वास करना, सच समझना)– सं० प्रत्यायन>प्रा० पत्तिआण, पत्तिआव >पतिआन।

पतिया— स्त्री० (पत्री, चिट्ठी)– सं० पत्रिका>हिं० पतिया।

पतोखा— पुं० (दोना, द्रोण)–सं० पत्रोखा (पत्र+उखा)>हिं० पतोखा।

पतोहरी(१) (की०)—स्त्री० (क्षीण कटि वाली स्त्री, पतले पेट वाली जिसका मध्य भाग कृश हो)– सं० पत्रोदरी> पतोअरी>अव० पतोहरी।

पतोहू—स्त्री० (पुत्र की पत्नी)– १- सं० पुत्रवधू>प्रा० पुत्तवहू>पुत्तउहू> पत्तोहू>हिं० पतोहू, अवधी पतोह। २- सं० पुत्रेण + ऊढा (विवाहिता) = पुत्रोढा।

पत्तल, पत्तर—स्त्री० (कमल का पत्ता, पत्तों को सींक से जोड़कर बनाया हुआ)– (१) सं० पत्र>पत्तल>पत्तर। (२) सं० पत्र+तल>पत्तल।

पत्तवाई—स्था० प्र०, क्रि० (छबड़े में पैरी भरकर बरसाना)–सं० पटवात> पतवाइ> पत्तवाइ, (पटेन पटस्य वा वातः इति पटवातः= हवा न होने पर कपड़े से हवा चलाना)।

पत्ता—पुं० (पेड़-पौधों आदि के तनों, शाखाओं पर लगने वाले पर्ण)–सं० पत्र +क>प्रा० पत्तअ>अव० पत्त> हिं० पत्ता।

पत्थर—पुं० (पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड)–सं० प्रस्तर>पा० प्रा० पत्थर> हिं० पत्थर। तुल० सिं० पथरु, गु० म० पथारी।

पत्नी— स्त्री० (विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री)–सं० पत्नी। पत्नी कस्मात् पाति

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इति पत्नी: ।

पत्र— पुं० (१- वृक्ष का पत्ता, २- चिट्ठी)–सं० पत्र ।

पथ[१]—पुं० (१- मार्ग, रास्ता, २- आचरण)–सं० पथ ।

पथ[२]—पुं० (रोगी का उपयुक्त आहार)–सं० पथ्य>प्रा० पत्थ>हिं० पथ । तुल० बं० ओ० पथ्य, ते० पथ्यमु ।

पथिया—स्त्री० (टोकरी)–प्रा० पत्थिअ, पत्थिआ>हिं० पथिया ।

पद[१]—पुं० (किसी श्लोक या छंद का चतुर्थांश)– सं० पद (चरण, श्लोक के चार चरणों में से एक चरण, पद) ।

पद[२]—पुं० (पैर, पाँव)–सं० प्रा० पद> अप० पय>हिं० पद ।

पदम—पुं० (पद्म, कमल का फूल)–सं० पद्म>पा० पदुम>प्रा० पउम> अप० पउँव>हिं० पदम ।

पनच, पनिच[१]— पुं० (धनुष की डोरी)– सं० प्रत्यंचा>अप० पडिंच, पणिछ (पृथ्वीचंद्र-चरित्र, सं० १४२१, पृ० १४८)>पणछ, पनच ।

पनव—पुं० (छोटा ढोल, नगाड़ा)–सं० पा० प्रा० पणव>हिं० पनव ।

पनवार—स्त्री० (पत्तल)–सं० पर्णवार >पण्णवार>पानवार>पनवार ।

पनवारी—स्त्री० (पान की बाड़ी)–सं० पर्णवाटी>हिं० पनवारी ।

पनसारी—पुं० (पंसारी)–सं० पण्यशालिक>पण्णशालिअ > पण्णसारिअ > पनसारी । तुल० ने० पन्सारी, बं० ओ० पं० पसारी ।

पनह—स्त्री० (शरण)–फ़ा० पनाह ।

पनहारा—पुं० (पानी भरने वाला, पनभरा)–सं० पानीयधारकः>प्रा० पाणिअहारओ >पनिहारो>पनहारा ।

पनहारी—स्त्री०, सं० पानीयधारिका> पनिहारी, पनहारी ।

पनहिआ[१]—स्त्री० (जूता)–सं० प्रनद्धिका>हिं० पनहिआ ।

पनही—स्त्री० (उपानह, जूता)–१- सं० प्रनद्धा>पनहा, पनही । (२) सं० उपानह ।

पनाली— स्त्री० (नाली, मोरी)–सं० प्रणाली>हिं० पनाली, पनारि ।

पनिग[१] (पद०)— पुं० (उड़ने वाला छोटा कीट)–सं० प्रतंग>प्रा० पयंग> पइंग पइँग>पनिग ।

पनौटी— स्त्री० (पान रखने की पिटारी)–सं० पर्णपात्री>प्रा० पण्णपत्ती >पण्णउट्टी>पन्नउट्टी>हिं० पनौटी ।

पन्नग—पुं० (सर्प)–सं० पन्नगम् (पन्न =गिरता हुआ वा मुँह नीचे किया हुआ, गम्=चलना; या पद=पैर, न= नहीं, गम्=चलना, जो पैरों से न चले) >पा० पन्नग> प्रा० पण्णग > हिं० पन्नग ।

पन्नगारि—पुं० (गरुड़)–सं० पन्नग+ अरि>प्रा० पण्णग+अरि>हिं० पन्नगारि ।

पन्ना—पुं० (पृष्ठ)– सं० पर्णक>प्रा० पण्णअ>हिं० पन्ना ।

पन्हा— पुं० (जूता)–सं० प्रनद्धा> पनहा>पन्हा ।

पपड़ी—स्त्री० (किसी वस्तु की ऊपरी परत)–सं० पर्पटिका>प्रा० पप्पडिआ >पपड़ी ।

पपीता—पुं० (पपैया, अंडखरबूजा)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त० पप्पाळि । तुल० सिं० पपयो । म० पोपया, गु० पपैयुं, क० परंगिहण्णु, बं० पेंपे ।

पबे—प्रा० प्र०, पुं० (पर्वत)– सं० पर्वत >पा० पब्बत> प्रा० पब्बय >पब्बअ >अव० पव्वअ (की०) >हिं० पबे ।

पबेड़ना—क्रि० (छींटकार बीज बोना)– १- सं० प्रवेरय । (२)- सं० प्र + विकिरणय् ।

पब्बै[1] (पद०)— पुं० (पर्वत)–सं० पर्वत>पब्बय>प्रा० पब्बय>पब्बै ।

पय[1]—पुं० (दूध) –सं० पयस् ।

पय[2]—पुं० (पैर, चरण)–सं० पद> प्रा० पय ।

पयादा, प्यादा—पुं० (१- पैदल, २- सेना का पैदल सिपाही, २- दूत, ३- शतरंज के खेल में एक गोटी)–फ़ा० पयादः ।

पयाल[1]— पुं० (धान का रूखा डंठल, पयाल, पुआल, तिनका)–सं० पलाल> हिं० पयाल, पुआल, पयार ।

पयाल[2]—पुं० (पाताल)–सं० पाताल> प्रा० पयाल ।

परंपरा—स्त्री० (अविच्छिन्न क्रम, सिल-सिला जो टूटे नहीं, क्रम, विधि)–सं० परम्परा ।

पर[1]— प्र० (अधिकरण परसर्ग, ऊपर, जैसे नाक पर)–सं० प्रा० उपरि > उप्परि>अप० परि>हिं० पर ।

पर[2]—वि० (दूसरा)–सं० पा० प्रा० अव० हिं० पर ।

पर[3]—अव्य० (लेकिन)–सं० परम्> हिं० पर ।

परकटी[1]—वि० (जिसके पर या पंख कटे हों)–पश्तो परकटी ।

परख—स्त्री० (जाँच)–सं० परीक्षा > पा० प्रा० परिक्खा > परक्ख > हिं० परख । तुल० बं० परख, गु० ओ० परख, म० पारख, सिं० पर्ख ।

परछाइँ—स्त्री० (प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर पड़ी हुई किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया)–सं० प्रति-च्छाया>परिछाया>परछाया>परछाई >परछाइँ ।

परजरना—पु० हिं०, क्रि० (जलना, दहकना)–सं० प्रज्वलन ।

परजरा—(पद०) क्रि० (जला)–सं० प्रज्वल>प्रा० पज्जल, पर्जल, पर्जर> परजना ।

परजापत—स्था० प्र०, पुं० (१- राजा, २- कुंभकार)–सं० प्रजापति ।

परदा—पुं० (यवनिका, आवरण)– फ़ा० परदह् । तु० उर्दू पर्दा, सिं० परदो, म० पड़दा, बं० परदो ।

परन[1]—पुं० (पत्ता)–सं० पर्ण>अवधी परन ।

परन[2]—पुं० (प्रतिज्ञा)–सं० प्रण ।

परनाना — क्रि० (विवाह करना, ब्याहना)–सं० परिणयन>प्रा० परिण-यण>हिं० परनाना । तुल० गु० परणवूं, सिं० परणणु, पं० पर्नाहु ।

परपोती—स्त्री० (पोते की बेटी)–सं० प्रपौत्री—परपोती । पं० पडपोतरी, गु० म० प्रपौत्री, सिं० पड़पोटी ।

परब — पुं० (त्यौहार) – सं० पर्वन् (√पर्व + कनिन्) ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परलउ—पुं० (पत्थर)–द्रविड़ भाषाओं से गृहीत। मल० त० क० परल। (शब्द संख्या ३२६५, द्र० ए० डि०)।

परसाद[1] — पुं०(१)(मन्दिरों में कथाओं में बाँटा जाने वाला पदार्थ)–सं० प्रसाद > हिं० परसाद।

परसाद[2]—पु० हिं०, प्रा० प्र०, पुं० (प्रसन्नता, कृपा)– सं० प्रसाद > पा० पसाद > प्रा० पसाय > अव० हिं० परसाद।

परसों — क्रि० वि० (आने वाली परसों)–सं० परश्वस् (११), परश्वः > परस्स > परस्सो > हिं० परसों। तुल० पं० परसो, म० परवां, सिं० परिहं।

पराई—वि० (अन्य की, विपक्ष की)– सं० परकीया > प्रा० पारकेर, पारक्क, पारक्किअ > अव० पारारी (की०), परारि (की०) > अप०, हिं० पराई।

पराक्रम—पुं० (१- बल, शक्ति, २- पुरुषार्थ)–सं० पराक्रम (परा + क्रम् + घञ्) > पा० परक्कम > प्रा० पराकम, परक्कम > अव० परक्कम (की०)।

परात[1]—स्त्री० (थाली के आकार का बड़ा बरतन)–पुर्त्त० प्राट (prata = silver ware)।

परात[2]—(पद०) क्रि० (धा० पराना = भागना)–सं० परा + अय् > पलायते > प्रा० पलायइ > पराना।

पराना, पलाना—क्रि० (भाग जाना)– सं० पलायते > पलाय। सं० पलायन (परा √ अय् + ल्युट्)।

पराया, पराए—वि० (दूसरे का, अन्य का, अपना नहीं)–सं० परकीय > प्रा० पारकेर, पारक्क > अव० पारक (की०) अप०, हिं० पराया, पराए।

परास—पुं० हिं०, पुं० (पलास, ढाक, टेसू, एक प्रसिद्ध वृक्ष)–सं० पलाश > पा० प्रा० पलास हिं० > परास। तुल० सिं० पलासु, नें० पलाँस।

परिकम्मा — स्त्री० (परिक्रमा) –सं० परिक्रमा > पा० परिक्कमन > प्रा० परिक्कम > हिं० परिकम्मा। तुल० पं० परकरमा, बं० म० सिं० गु० परिक्रमा।

परिगहना—क्रि० (ग्रहण या स्वीकार करना)–सं० परिग्रहण।

परिगहा(१)—पुं० (स्वीकार, ग्रहण)– सं० प्रतिग्रह > परिगहा।

परिछनि—स्त्री० (परीक्षण)–सं० परीक्षण > परिछनि।

परित्यागना—पुं० हिं० क्रि० (त्याग देना, छोड़ देना)–सं० परित्यज्, परित्यजन > अव० परिच्चअ (की०)।

परिपक्व — वि० (अच्छी तरह पका हुआ)–सं० परिपक्व (परि + पच् + क्त)। तुल० पं० प्रपक्क।

परिवा—स्त्री० (किसी पक्ष की पहली तिथि, पड़िवा)–सं० प्रतिपदा > प्रा० पडिवआ > हिं० पडिवा, परिवा।

परिवारु—पुं० (परिजन, समूह)–सं० परिवार।

परिश्रम — पुं० (१- श्रम, उद्यम, मेहनत)–सं० परिश्रम (परि + श्रम् + घञ्) > पा० प्रा० परिस्सम, परिसम > अव० परिस्सम (की०)।

परिहरना—पुं० हिं०, क्रि० (त्यागना, छोड़ना, तज देना)–सं० परि + हृ > प्रा० परिहर > अव० परिहरिअ (की०)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>अप० परिहरइ > हिं० परिहर+ना।

परीखना — क्रि० (परखना, जाँचना, परीक्षा लेना)–सं० परि+ईक्ष् >प्रा० परिक्ख (सं० परीक्षण>प्रा० परिक्खण) >हिं० परीखना।

परीखे—क्रि० (परखना)–सं० परीक्ष् > प्रा० अप० परिक्ख>परिक्खइ > हिं० परीखे।

परेइ—स्त्री० (कबूतरी)–सं० पारापती >प्रा० पारेवई>हिं० परेइ।

परेत—पुं० (एक भूत योनि का नाम)–सं० प्रेत>अव० परेतो (की०)>हिं० परेत।

परेवा—पुं० (कबूतर, पंडुक पक्षी)–सं० पारावत>पा० पारापत, पारावत > प्रा० पारेवय (पाइअ०)>हिं० परेवा। तुल० म० पारवा, गु० परेवो ने० परेवा। सिं० परेलो, सिंह० परिवय।

परोसना — क्रि० (खाना पत्तलों में रखना, परसना)–सं० परिवेषण (परि+ √विष्) > पा० परिवेसना > प्रा० परिवेषण (क्रि० परिवेस) > हिं० परोसना।

परोहन—पुं० (वर-यात्रा में आने वाले वाहनों के पशु, सवारी का साधन)–सं० प्ररोहणम् (अमरकोश) > पर्‌वाहन (ग्राम्य प्रयोग), अवधी परोहन, पोन।

परौसी—पुं० (पड़ौसी)–सं० परिपार्श्व >परिवास, परौस, परौसी।

पर्चाना—क्रि० (भेंट करना, मिलाना, बातों में लगना)–सं० परिचयन।

पर्यंत—अव्य० (तक)– सं० पर्यन्त> प्रा० पज्जंत, परिअंत>पइरिअन्त>पइरंत>अप० पेरन्त>हिं० पर्यंत।

पर्वत—पुं० (पहाड़)–सं० पर्वन् (गाँठ, जोड), पर्वतगिरि (गाँठ-गठीला या जोड़ वाला)।

पलंका[1]—(पद०) पुं० (लंका से भी आगे हिन्देशिया के द्वीपों में किसी द्वीप का नाम)–सं० पाताललंका>पायाललंका>पायालंका>पालंका>पलंका।

पलंका[2]—पुं० (पलंग)–सं० पर्यङ्क> पा० प्रा० पल्लंक, प्रा० पलिअंक > पलंका।

पलंग—पुं० (बड़ी एवं अच्छी चारपाई)–सं० पर्यङ्क>पा० पल्लङ्क>प्रा० पल्लंक>पलिअंक>अप० पल्लंघ>हिं० पलंग।

पलँगिया—स्त्री० (पलंग, खाट)–सं० पर्य्यङ्किका>पलिअंया>हिं० पलँगिया।

पलटना—क्रि० (१- उलट जाना, २- अवस्था या दशा बदल जाना, ३- स्वरूप बिलकुल बदल जाना)–सं० परि+अस् >प्रा० पल्लट, पलट्ट, पलठ्ठइ>अव० पलट्ट>हिं० पलटना।

पलटा—पुं० (पलटने की क्रिया या भाव)–सं० पर्यस्त>प्रा० पल्लट, पल्लत्थ>अव० पलट्ट (की०)>हिं० पलटा। तुल० म० पालथ (णें), पं० पलटा।

पलत्थी—स्त्री० (पलथी, पालती)–सं० पर्यस्ति>प्रा० पल्लत्थी>पलत्थी।

पलान—पुं० (लादने या चढ़ने के लिए घोड़े आदि की पीठ पर कसी जाने वाली गद्दी)–सं० पर्याण>प्रा० अप० पल्लाण >अव० पल्लानिअउँ (की०) >हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलान। तुल० फ़ा० पालान, सिं० पलाणु, पं० पलाण, बं० पालाण।

पलानि[1] — (पद०) स्त्री० (पलान, जीन, गद्दी या चारजामा जो जानवरों की पीठ पर लादने या चढ़ाने के लिए कसा जाता है)– सं० पर्याण >प्रा० पल्लाण>पलानि।

पलाल—पुं० (१- धान का रूखा डंठल, पयाल, पुआल, २- अन्य किसी धान्य या पौधे का सूखा डंठल)–सं० प्रा० हिं० पलाल, पराल। तु० गु० पराल, म० पराळ।

पलुही[1] — (पद०) क्रि० (पल्लवित हुई)–सं० पल्लवलभ > पल्लवलह > पालोलह, पलुह।

पलेथन—पुं० (बेलने के समय आटे के पेड़े या लोई में लगाया जाने वाला सूखा आटा, परथन)–सं० परिस्तरण (चारों ओर फैलाना या बिछाना। आवरण, आच्छादन)।

पलेना — क्रि० (बोने के पूर्व खेत सींचना)–सं० प्लावयति (√प्लावय्> प्रा० पव्वाल)>प्रा० पव्वालइ, पलाविय >हिं० पलेव, पलेना। अवधी पलेवा।

पल्ला[1]—पुं० (आँचल, दामन)–सं० पटल>प्रा० पडल (भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्रखण्ड)>अप० पल्लो०>हिं० पल्ला।

पल्ला[2]—पुं० (तराजू में एक ओर का टोकरा। पलड़ा)–फ़ा० पल्लः।

पल्हाया[1]—पुं० (मल्हार का दूसरा नाम 'पल्हाया', एक राग)–सं० प्रवल्हिका>प्रा० पल्हाया (प्रा० पल्हाय= आनन्दित करना)।

पवन — (पद०) क्रि० (पाना)–सं० प्रापण>प्रा० पावण>पवन।

पवाँरना—क्रि० (फेंकना, गिराना, खेत में छितराकर बीज बोना)–सं० प्रवारण।

पवारे—क्रि० (फिँकने पर, कर्मवाच्य में भूतकालीन क्रिया पद 'फेँके गये')–सं० प्रवार>पवार+ए।

पवेड़ना—क्रि० (छींटकार बीज बोना)–सं० प्रवेरय>पवेड़ना।

पसंसना—ग्रा० प्र०, क्रि० (प्रशंसा करना)–सं० प्रशंस्>प्रा० पसंस>अव० पसंसइ (की०)>हिं० पसंसना।

पसर[1] — पुं० (विस्तार, प्रसार)–सं० प्रसर > प्रा० पसर > अव० पसार (की०)>हिं० पसर।

पसर[2]—पुं० (१- आधी अंजली, २- किसी चीज से भरी हुई मुट्ठी)–सं० प्रसर, सं० प्रसृत=कुडव (अंजुली, पाव) 'परिभाषा-प्रबन्ध', श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल द्वारा लिखित, पृ० ७।

पसली—स्त्री० (मनुष्यों और पशुओं आदि के शरीर में छाती के पंजर की आड़ी और गोलाकार हड्डियों में से कोई हड्डी)–सं० पशुँका।

पसाई—स्त्री० (मटमैला चावल, पसताल नाम की घास जो तालों में होती है)–सं० प्रसातिका>पसाइआ > हिं० पसाई।

पसाउ, पसाऊ—(पद०) पुं० (कृपा, प्रसन्नता)–सं० प्रसाद>प्रा० पसाय> अव० पसाउ>पु० हिं० पसाउ, पसाऊ।

पसाना—क्रि० (किसी पदार्थ में मिला

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुआ जल का अंश चुआ या बहा देना, पसेव निकालना)–सं० प्रस्रावण।

पसारना—क्रि० (पसारने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना)–सं० प्र+सारय् > पा० पसारेति, पसार प्रा० पसार > हिं० पसार+ना। तुल० कु० पसरणो, बं० पसारा, सिं० पसारणु, पं० पसारणी।

पसीजना—क्रि० (चित्त में दया उत्पन्न होना, रसना)–(१) सं० प्रस्विद्, सं० प्रस्विद्यति+प्रा० पसिज्जइ, पसिज्जै > हिं० पसीजना। (२) सं० प्रस्रवण।

पसीना—पुं० (प्रस्वेद, शरीर में मिला हुआ जल जो अधिक परिश्रम करने पर शरीर से निकल जाता है)–सं० प्रस्वेदन > पसीना।

पसुरी—स्त्री० (पसली)–सं० पर्शुका, पा० फासुका, फासुलिका हिं० पसुली, पसुरी। तुल० पं० पस्सली, गु० पॉसली, सिं० पासिरी, पासू।

पसेऊ, पसेव — पुं० (पसीना) – सं० प्रस्वेद > प्रा० पसेय, पसेउ > पसेऊ, पसेव।

पह—स्त्री० (सवेरा, भोर, पौ)–सं० पाद > पौ, पौह > अप० पहा (हे०) > पु० हिं० पह।

पहचान — स्त्री० (पहचानने की क्रिया)–सं० प्रत्यभिज्ञान > प्रा० पच्चभिआन > पचहिआन > हिं० पहिचान > हिं० पहचान। तुल० सिं० पं० पछाण, पं० पचाणना।

पहनावा—पुं० (पोशाक)–सं० परिधान > प्रा० परिहण > पहनावा। पहना (हुआ) सं० पिनद्ध > प्रा० पिणद्ध > अव० पिन्धन्ते (की०)।

पहर[1]—पुं० (दिन-रात का आठवाँ भाग)–सं० प्रहर > हिं० पहर, ह० पह्र। तुल० बं० पहर, म० पहार।

पहर[2]—क्रि० (पहनना)–सं० प्र+धा > प्रा० पहिर > हिं० पहर।

पहरना—क्रि० (पहनना)–सं० परि+धा > प्रा० परिहा > हिं० पहिर+ना। तुल० सिं० पहरणूं, म० पेहर (णें), गु० पहेरवूं।

पहरिया — पुं० (चौकीदार) – सं० प्रहरी।

पहल—पुं० (बाजू, बगल, तरफ, तह या परत)–सं० पटल।

पहलवान—पुं० (१- कुश्ती लड़ने वाला पुरुष, मल्ल २- बलवान् और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति) – पल्लवी पल्लवान, फ़ा० पह्लवान।

पहला—वि० (जो क्रम विचार आदि में हो)–सं० प्रथम > प्रा० पहिलो > पहिल्ल पढ़िल्ल > (प्रा० अप० पढम+इल्ल प्रत्य०) > अप० पहिल > अव० पढ़महि (की०) > हिं० पहला। तुल० गु० पहेलूं, म० पं० पहिला। बल्गा० प्रदि।

पहाड़—पुं० (पर्वत)–सं० पाषाण > प्रा० पासाण > हिं० पहाड़।

पहाड़ा—(किसी अंक के गुणनफलों की क्रमागत सूची)–सं० प्रस्तारक।

पहिचानइ — क्रि० (पहिचानना)–सं० प्रत्यभिजानाति > अवधी पहिचानइ।

पहुँचना—क्रि० (एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत होना)–सं० प्र+भू

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>प्रा० पहुच्च, पहुच्चइ > हिं० पहुँचना।

तुल० पं० पहूचणा, सिं० पहुचणु, गु० पहोचवूँ।

पहुमी—स्त्री० सं० (पृथ्वी, पुहमी)–सं० पृथ्वी>प्रा० पुहई, पुहइ >अप० पुहवि, पुहवी>अव० पुहवी > हिं० पुहुमि, पुहुमी, पुहमी, पहुमी, पहुमि।

पांडुर—वि० (१- पीला, २- सफेद)–सं० पाण्डुर।

पाँच — वि० (चार और एक)–सं० पञ्चन्>पा० पञ्च>प्रा० पंच>अप० पंच (प० च०)>हिं० पाँच। तुल० पं० पञ्ज, बं० पाँच्, सिं० पञ्ज। बल्गा० पैथ।

पाँचवाँ—वि० (जो क्रम में पाँच के स्थान पर पड़े)–सं० पञ्चमकः>प्रा० पंचमओ, पंचवँओ>अव० पंचम>हिं० पाँचवाँ।

पाँडे—पुं० (पंडित, विद्वान्, सरयूपारी, कान्यकुब्ज और गुजराती आदि ब्राह्मणों की एक शाखा)–सं० पण्डित > पंडइ >हिं० पांडे, पाँडे, पंडा, पांडा।

पाँति—स्त्री० (१- कतार, पंगत, २- अवली, समूह)–सं० पंक्ति>प्रा० पंति >हिं० पाँति, अवधी पाँत। तुल० गु० पान्त, म० पांती, सिंह० पेत।

पाँयँता—पुं० (सिराहने का उलटा, पलंग या खाट का पैर की ओर वाला भाग)–सं० पादस्थान > पाअथान > पाअतान>पायतान>पायतों>पाँयँता।

पाँव—पुं० (पैर, पाद)–सं० पाद> प्रा० पाय, पाव >अप० पाउनो (हे०) >हिं० पाँव।

पाँवड़ा[१]—पुं० (पैर रखने के लिए फैलाया हुआ कपड़ा, पायंदाज)–सं० पादपीठ>पाउअड, पावडा, पाँवडा।

पाँवरि[१]—(पद०) स्त्री० (वह बिछौना जो किसी पूज्य आगंतुक के मार्ग में बिछाया जाता है)–सं० पादपट्ट>पायवट्ट>पाँवड़>पाँवड़ा>पाँवरि।

पाँवरी—स्त्री० (पादुका)–सं० पादुका >पाउडिया>पावडिआ>पावरिआ> पाँवरी।

पाँस—पुं० (जाल, फाँसा)–सं० पाश >प्रा० पास>पाँस।

पाइँ—पुं० (पावँ)–सं० पादानि > अवधी पाइँ।

पाइँता[१]—स्था० प्र०, पुं० (पलंग का वह भाग जहाँ सोने वाले के पैर रहते हैं, पैंताना)–सं० पादान्त>पायंत>पाइंत >पाइँत।

पाइआ—वि० (एक चौथाई)–सं० पाद >पाव > पाउ+उका > पाउआ > पाइआ।

पाक—वि० (१- पवित्र, शुद्ध, २- पापरहित, ३- निर्दोष)–फ़ा० पाक।

पाखाना—पुं० (मल त्याग करने के लिए बना हुआ निश्चित स्थान)–फ़ा० पाखानः।

पागल — वि० (बावला, सनकी, विक्षिप्त)–सं० मत्तक>मातल>मादल >हिं० पागल।

पाछी—पुं० हिं०, क्रि० वि० (पीछे की ओर, पीछे)–सं० पश्चात् > पा० प्रा० पच्छा>अव० पाछा, पाछे>हिं० पाछ, पाछा, पाछी, ब्र० पाछइ। तुल० कु०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पछा, पाछीं; बं० पाछे, ओ० पछे, सिं० पछोडु ।

पाजामा—पुं० (पैरों में पहना जाने वाला एक पहनावा जिससे कमर से एड़ी तक का भाग ढका रहता है)–फ़ा० पाजामः ।

पाजी—पुं० (पैदल सेना का सिपाही)–सं० पदाजि>पआजि>पाजि>पाजी ।

पाट[1]—पुं० (वस्त्र, कपड़ा)–सं० पट> पा० प्रा० पट्ट>हिं० पाट । तुल० बं० पाट्, ओ० पाट, पं० पट्ट, सिं० पट्टू, गु० पाटो, म० पाट ।

पाट[2]—पुं० (तख्ता, चक्की का पाट)–सं० पट्ट>प्रा० पट्ट>हिं० पाट ।

पाटी—स्त्री० (पलंग या खाट के चौखटे की लम्बाई के बल की लकड़ी)–सं० पट्टिका>प्रा० पट्टिया>हिं० पाटी ।

पाड़ना—क्रि० (उन्मूलन करना, उखाड़ना, उपाटना)–सं० उत्+पाटय्>प्रा० उप्पाड>हिं० पाड़ना ।

पाड़ा—पुं० महल्ला, मुहल्ले का नाम, जैसे चौबिया पाड़ा)– सं० पाटक> पाडय>हिं० पाड़ा ।

पाढ़र—पुं० (एक वृक्ष जिस पर लाल रँग के फूल आते हैं)– सं० पाटल> पाटल>हिं० पाढ़र ।

पात—पुं० (पत्ता)–सं० पत्र>प्रा० पत्त >हिं० पात ।

पातकी—पुं० (पापी, अपराध करने वाला)–सं० पातकी ।

पाताल—पुं० (पृथ्वी से नीचे का कोई लोक)–सं० पाताल ।

पाती—स्त्री० (पत्री, चिट्ठी)–सं० पत्री, सं० पत्रिका> प्रा० पत्तिआ, पत्तिअ, >अप० पत्तिय>हिं० छ० पाती ।

पाथर—पुं० (पाषाण)–सं० प्रस्तर> स० पाथर (बो०) ।

पाथा[1]— स्था० प्र०, पुं० (हल की खोंपी जिसमें फाल ठोंका जाता है)–सं० प्रस्थ ।

पाद—पुं० (अपान वायु, वह वायु जो गुदा के मार्ग से निकले)– सं० पर्द> प्रा० पद्द>हिं० पाद ।

पान[1]—पुं० (पत्ता)– सं० पर्ण>प्रा० पण्ण>हिं० पान ।

पान[2]— पु० हिं०, पुं० (प्राण)–सं० प्राण ।

पानदान—पुं० (वह डिब्बा जिसमें पान और उसके लगाने की सामग्री रखी जाती है)–सं० पर्णधान>हिं० पानदान ।

पान-बीड़ा—पुं० (पत्ते में रखकर उसे मोड़ देना)–सं० पर्णवीटक>पण्णवीडअ >पानवीडअ>हिं० पानबीड़ा ।

पाना—क्रि० (उपलब्ध करना, प्राप्त करना)– सं० प्रापण > प्रा० पावण (पाइअ०)>अव० पावइ>हिं० पाना । तुल० गु० पावूँ, म० पाव (णें), बं० पाइते, ओ० पाइबा, कश्मी० पावुन् ।

पानी—पुं० (जल)–सं० पानीय>प्रा० पाणिअ>हिं० पानी । तुल० म० गु० पाणी, बं० पानी ।

पाप—पुं० (धर्म या पुण्य का उलटा, अनाचार, गुनाह)–सं० पाप (सं० अप+ अप(बुरा)=अपाप>पाप)>अव० हिं० पाप । वि०–(अनिष्टकर, पापमय) ।

विशेष—पाप शब्द अकेला विशेषण के रूप में केवल संस्कृत में प्रयुक्त होता है । हिन्दी में वह समास के साथ ही प्रयुक्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है।

पापड़— पुं० (दाल, आलू, साबूदाना आदि की बनी हुई नमकीन वस्तु)–सं० पर्पट > प्रा० पप्पड > हिं० पापड़। तुल० बं० कु० पापडी, सिं० पापडु, गु० म० पापड।

पाबू[१]—पुं० (व्यक्ति-विशेष का नाम जो पर्व के दिन जन्मा हो)– सं० पर्व > प्रा० पव्व > पाबू।

पामर—वि० (१- खल, दुष्ट, २- पापी, ३- नीच)–सं० पामर।

पायक— पुं० (पैदल सिपाही)–सं० पायिक > प्रा० पाइक्क > अप० पाइक्क (हे०) > पायक।

पायदान—पुं० (पावदान)–सं० पाद-धान > पायदान।

पायल[१]—स्त्री० (पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक गहना)–सं० पादपाल > पायवाल > पायल।

पाया—पुं० (पलंग, चौकी आदि में नीचे के वे छोटे खंभे जिनके सहारे उनका ढाँचा खड़ा रहता है)–सं० पाद।

पारक[१]—पुं० (पार पहुँचाने वाला)–सं० पारय > प्रा० पार > अप० पारक, अव० पारक (की०)।

पारखी— पुं० (परखने वाला)– सं० परीक्षिन् > प्रा० परिक्खि > अप० पर-क्खइ > परक्खी > हिं० पारखी।

पारधी—पुं० (शिकारी, बहेलिया)–सं० पार्द्धिक > पारद्धिअ > पारधी।

पारा—पुं० (चाँदी की तरह सफेद और चमकीली धातु)–सं० पा० पारद > प्रा० पारय > पारअ > पारा।

पालक—वि० (पालन करने वाला)–सं० पालक > प्रा० पालय।

पालकी—स्त्री० (बड़े संदूक की तरह की एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधे पर लेकर चलते हैं)–सं० पर्यङ्किका > प्रा० पल्लंकिआ > पल्लंकिअ > हिं० पालकी। तुल० ते० पल्लकी।

पालना[१]— क्रि० (भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवित रखना)–सं० पालय् > प्रा० पाल > हिं० पालना।

पालना[२]—पुं० (छोटे बच्चों के लिए एक प्रकार का झूला या हिंडोला)–सं० पल्यंक (पलंग, शय्या)। तुल० सिं० पाल्णो, गु० पाळणा।

पाला[१]—पुं० (तुषार)–सं० प्रालेय।

पाला[२]—पुं० (झड़बेरी की पत्तियाँ जो राजपूताने आदि में चारे के काम आती हैं)–सं० पल्लव।

पालागन (गी)— स्त्री० (प्रणाम, दंडवत्, नमस्कार, पाँव का छूना)– सं० पाद-लग्न।

पालि, पाली—स्त्री० (एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्म-ग्रन्थ लिखे हुए हैं)– पा धातु + णिच् प्रत्यय, लि का योग। (पालिअ–र्थों की रक्षा करने वाली)।

पावँ—पुं० (पैर)–सं० पा० पाद > प्रा० पाय, पाअ > पउआ > हिं० पावँ।

पावँड़ा—पुं० (वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिए किसी के मार्ग में बिछाया जाता है)– सं० पाद + पट > प्रा० पायपड > पावअड > हिं० पावड़ा, पावँड़ा।

पावँर★—वि० (१- तुच्छ, क्षुद्र, २-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीच, दुष्ट)–सं० पामर।

पाव'—वि० (एक चौथाई)–सं० पादः >प्रा० पाओ > अप० पाउ > हिं० पाव। तुल० गु० पाव, म० पाय, सिं० पाओ, पाय।

पाव— पुं० (एक वाद्य, वंशी)–सं० पावः>प्रा० पावय (पाइअ०) > हिं० पाव। तुल० गु० पावो।

पावस★— पुं० (वर्षा ऋतु)–सं० प्रावृष>पा० पावुस > प्रा० पाउस> हिं० पावस। तुल० म० पाऊस, गु० पावसू।

पाश—पुं० (रस्सी, तार आदि का वह फंदा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और बंधन कसने से प्राय मर भी जाता है)–सं० पाश>प्रा० पास।

पासंग—पुं० (तराजू की डंडी या तौल बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ, पसंघा)–फ़ा० पा (पद) +संग (पत्थर)।

पास—पुं० (बगल, निकटता, समीपता)–सं० पार्श्व>प्रा० पास>पस्स> पास। तुल० गु० पांसु, सिं० पासु, पं० बं० पास।

पाहन—पुं० (पत्थर)–सं० पाषाण > प्रा० पाहाण > अव० पासान > हिं० पाहन।

पाहुन—पुं० (अतिथि)–सं० प्राघुण> पा० प्रा० पाहुण>अप० पाहुणअ>हिं० पाहुना। तुल० पं० पाहुणा, गु० पोणो, म० पाहुणा।

पिंजरा—पुं० (लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं)–सं० पञ्जर+क>पंजरअ>पिंजडअ>हिं० पिंजड़ा, पिंजरा। तुल० बं० कश्मी० पंजर, गु० पाँजरूँ, म० पांजरा।

पिंड—पुं० (१- गोल पदार्थ, ठोस गोला, २- पके हुए अन्न या उसके चूर्ण आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों के नाम पर दिया जाता है, ३- शरीर)–सं० पा० पिण्ड>प्रा० हिं० पिंड। तुल० गु० पिंडलो, म० पिंड।

पिंडली—स्त्री० (पिण्डी, जानू के नीचे का मांसल अवयव)–सं० पिण्डिका> प्रा० पिंडिआ>हिं० पिंडली। तुल० म० पिंडरी, पिंढरी, गु० पिंडी।

पिअ—पुं० (प्रिय)–सं० प्रिय > प्रा० पिय>अप० पिअ, अव० पिअ (की०), हिं० पिअ।

पिआरा—वि० (प्यारा)–सं० प्रियक> पिरअअ>पिअरअ>पिअरा >पिआरा, ह० पिआ।

पिआरी, प्यारी—वि० (जिसे प्यार करें, जो प्रिय हो)–सं० प्रियतरा > प्रा० पिआरी > अप० पिआरिओ > अव० पिअरिओ (की०) > हिं० पिआरी, प्यारी।

पिउआ—(की०) पुं० (यम सम्बन्धी)–पितृपतिक > प्रा० अप० पिउवइअ> अव० पिउआ।

पिघलना—क्रि० (१- पदार्थ का गरमी से गलकर तरल होना, द्रवीभूत होना, २- चित्त में दया उत्पन्न होना)–सं० प्र+गलन > पा० पग्गलितो > प्रा० पगलइ>हिं० पिघलना।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिछड़ना—क्रि० (साथ से छूट कर पीछे रह जाना)–सं० पश्चात्+गम् > प्रा० पच्छंद, पच्छंदइ > हिं० पिछड़ना।

पिछला—वि० (पीछे की ओर का)–सं० पश्चिमः > पिच्छलो > पिछला।

पिछाड़ी—स्त्री० (पीछे का भाग)–सं० पश्चार्ध > प्रा० पच्छद्ध > हिं० पिछाड़ी। तुल० पं० पछवाड़ा, गु० पछवाड़ूं, म० पिछाडी।

पिछौरा—स्था० प्र०, पुं० (ओढ़ने का दुपट्टा या चादर)–सं० पश्चात्+पट+क > प्रा० पच्छ+पडअ > पिच्छवडअ > > पिच्छोडा > हिं० पिछौरा। अथवा सं० प्रच्छद > प्रा० पच्छय > हिं० पिछौरा, स्त्री० पिछौरी।

पिटना—क्रि० (पीटा जाना)–सं० पिट्टय् > प्रा० पिट्ट > हिं० पिटना। तुल० सिं० पिटणु, गु० पिटवूं, म० पिट (णें)।

पिटारा—पुं० (टोकरा, मंजूषा)–सं० पिटक > प्रा० पिडय > पिडाड़ा > पिटारा।

पिट्ठी(१)—स्त्री० (कच्ची पिसी दाल)–सं० पिष्टिका > पेट्ठिआ > पेट्ठि > पिट्ठी > पिठी।

पिट्ठू—पुं० (पीछे से छिपकर सहायता या हिमायत करने वाला)–सं० पृष्ठचर (पृष्ठगामी, अनुयायी) > प्रा० पिट्ठचर > पिट्ठअ > हिं० पिट्ठू।

पितर—पुं० (पूर्वज)–सं० पितृ।

पिता—पुं० (बाप, जनक)–सं० पितृ > पा० पितु > हिं० पिता। तुल० ज० फाटर (vater), ग्री० लै० पतेर, अं० फादर।

पिन्नी—स्त्री० (चावल या गेहूँ के आटे का एक प्रकार का लड्डू)–सं० पिण्डी > प्रा० पिंडि, पिंडी > हिं० पिन्नी।

पियास, प्यास—स्त्री० (पीने की इच्छा, तृषा)–सं० पिपासा > प्रा० पिवासा > अप० पिआस > हिं० पियास, प्यास।

पियासा, प्यासा— वि० (प्यासा, जिसे प्यास लगी हो)–सं० पिपासिन्, पिपासक > प्रा० पिवासय > हिं० पियासा, प्यासा।

पिरभू—पुं० (प्रभु)–सं० प्रभु > पिरभु।

पिरिया— स्त्री० (वाद्य विशेष)–सं० प्रा० पिरिली > हिं० पिरिया।

पिरोजा—पुं० (एक प्रसिद्ध रत्न, हरित मणि)–फ़ा० फ़ीरोजः।

पिलद्दी(१)—स्त्री० (मल, अशुचि पदार्थ, गंदगी)–पह० पलीदीह > पिलद्दी।

पिल्ला—पुं० (कुत्ते का पिल्ला)–पा० पिल्लक > प्रा० पीलुअ (बच्चा) > हिं० पिल्ला। तुल० ते० कुक्कपिल्ल, म० कुत्र्याचें पिल्लू, उर्दू पिल्ला।

पिसना— क्रि० (चूर्ण होना, दाब या रगड़ खाकर सूक्ष्म खंडों में विभक्त होना)–सं० पिष् > प्रा० पिस > हिं० पिसना।

पिसान— पुं० (अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण)–सं० पिष्टान्न।

पिहान(१)— पुं० (ढाकने की वस्तु, 'कुठला' के मुँह का ढक्कन)–सं० अपिधान, पिधान > प्रा० पिहाण > हिं० ब्र० पिहान।

पीछा—पुं० (किसी वस्तु या व्यक्ति के पीछे की ओर का भाग)–सं० पश्चात् > प्रा० पच्छा > पाछा > पीछा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीछे— अव्य०, (पृष्ठ भाग, पीछे की ओर)–सं० पश्चात् > प्रा० पच्छ, पिच्छ, पिच्छे > अव० हिं० पीछे।

पीठ[1]—स्त्री० (प्राणियों के शरीर में पेट के दूसरी ओग का भाग)– सं० पृष्ठ > पा० प्रा० पिट्ठ > अप० पिट्ठि > हिं० पीठ। तुल० कु० पीठ, बं० पिठ, पं० पिट्ठ, सिं० पूथि, गु० पूठ; ने० पिठ, म० पाठ।

पीठ[2]—पुं० (विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान, अधिष्ठान, कोई विशिष्ट पवित्र स्थान, राज-सिंहासन)–सं० पीठ।

१- पीठा[1]—पुं० (सत्तू पानी में घोल-कर नमक डालकर आग पर पका कर तैयार किया गया भोज्य पदार्थ)–सं० पिष्टक > प्रा० पिट्ठअ > पिट्ठा > पीठा।

२- पीठा—पुं० (बैठने का काष्ठ का पीढ़ा या आसन)– सं० पीठक > पा० पीठिका > प्रा० पीढग, पीढय > हिं० पीढ़ा, पीठा।

पीढ़ी— स्त्री० (छोटा पीढ़ा, आसन-विशेष)–सं० पीठिका > प्रा० पीढिआ > हिं० पीढ़ी।

पीत[1]—पु० हिं०, स्त्री० (प्यार)–सं० प्रीति।

पीत[2]—वि० (पीला रंग)–सं० पीत।

पीतल—पुं० (पीतल नामक धातु)–सं० प्रा० अप० पित्तल > हिं० पीतल। तुल० पं० पित्तल्, गु० पीतळ, म० पितळ।

पीना—क्रि० (तरल वस्तु मुँह में रखकर गले के नीचे उतारना, पान करना)– सं० पिब् > प्रा० पिब, पिअ, पी > अप० पिअइ > हिं० पी + ना। तुल० सिं० पिअणु, गु० पिवूँ, म० पी० (णें), पि (णें)। बलगा० पीया।

पीप[1]—स्त्री० (फूटे फोड़े या घाव के भीतर से निकलने वाला सफेद लसदार पदार्थ जो दूषित रक्त का रूपांतर होता है)–सं० पा० पूय > प्रा० पूअ > हिं० पीप, पीब।

पीप[2]— पु० हिं०, पुं० (पीपल)–सं० प्रा० पिप्पल > हिं० पीप।

पीपर—पुं० (बरगद की जाति का एक वृक्ष)–सं० प्रा० पिप्पल > हिं० पीपल, छ० पीपर।

पीपली—स्त्री० (ओषधी-विशेष, पीपर, एक लता जिसकी चरपरी कलियाँ पाचक होती हैं)– सं० प्रा० पिप्पली > हिं० पीपली। तुल० कु० पिप्ला, ओ० पिप्पली, पं० पिप्पला, सिं० पिपिरी।

पीपा—पुं० (काठ या लोहे का वह बड़ा गोल पात्र जिसमें घी, तेल, शराब शीरा आदि रखे जाते हैं)–पुर्त० पीपा।

पीला—वि० (पीत वर्ण, जर्द)–सं० पीत > पा० पीत > प्रा० पीअ > पीअल > अव० पित > पीअ + ल > हिं० पीला। तुल० बं० पिला, सिं० पिअरो, पीलो, गु० पीळूं, म० पिवळा।

पीसना—क्रि० (चूर्ण करना, चूर-चूर करना, दलना)– सं० √पिष् > प्रा० पिस, पिसइ > हिं० पीस + ना।

पीहर— पुं० (स्त्री० के बाप का घर, नैहर)–सं० पितृगृह > प्रा० पिइहर > अप० पिउहर > हिं० पीहर।

पुंगीफल—पुं० (सुपारी)– सं० पूगफल > प्रा० पुअफल > हिं० पुंगीफल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुआ, पुवा—पुं० (मीठे रस में सने हुए आँटे की मोटी पूरी या टिकिया, मालपुआ)–सं० पूप+क>प्रा० पूवअ, पूवल, पूअल>हिं० पुवा, पुआ।

पुआल, पुवाल—पुं० (तिनका, पयाल, पुवार)–सं० पलाल।

पुकार—स्त्री० (पुकारना, आह्वान)–सं० पूत्कार>प्रा० पुक्कार>हिं० पुकार, ह० पुकार।

पुकारना—क्रि० (आह्वान करना)–सं० पूत+कृ>प्रा० पुक्कर>पुक्करेइ, पुक्करंत>हिं० पुकार+ना। तुल० सिं० पुकारणु, गु० पुकारवूँ, म० पुकार (णें)।

पुखराज—पुं० (एक प्रकार का पीला रत्न)–सं० पुष्पराग (भा०)।

पुछल्ला—पुं० (पूँछ की तरह पीछे लगी हुई और प्रायः अनावश्यक वस्तु)–सं० पुच्छक>पुच्छअड>पुच्छड्ड>पुच्छल्ल>पुछल्ला।

पुछारि(१)पद०)—स्त्री० (पूछने वाली)–सं० पृच्छाकारिका > पुच्छआरिआ > पुछारिआ>पुछारि।

पुजापा—पुं० (देवी-देवता की पूजा की सामग्री)–सं० पूजा>प्रा० पूआ>हिं० पूजा+आपा (प्र०)=पुजापा।

पुजारी—पुं० (पूजा करने वाला)–सं० पूजाकारिक> प्रा० पूजआलिय> हिं० पुजारी।

पुठ्ठे(१)—पुं० (पूँछ के उद्गम स्थान के दोनों ओर तथा रीढ़ के पिछले सिरे के दायें-बायें भाग)– सं० पृष्ठ+क> प्रा० पुट्ठअ>अप० पुट्ठि (प० च०)> हिं० पुट्ठा।

पुड़ा—पुं० (बड़ी पुड़िया)– सं० पुट, पुटक>प्रा० पुड, पुडअ>हिं० पुड़ा। तुल० पं० पुडा, सिं० पुडो, गु० पुडो, पडो; ने० पुरा, म० पुडा।

पुड़िया—स्त्री० (कागज़ मोड़ या लपेट कर बनाया हुआ वह संपुट जिसमें कोई वस्तु रखी हो)– सं० पुटिका > प्रा० पुडिया, पुडिआ>हिं० पुड़िया।

पुतला—पुं० (काठ की बनी हुई प्रतिमूर्ति)–सं० पुत्तलक> प्रा० पुत्तलय> हिं० पुतला।

पुतली— स्त्री० (लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति)–सं० पुत्तलिका>प्रा० पुत्तलिआ>हिं० पुतली। तुल० बं० पुत्‌ला, कु० पुतलो, म० पुतळी।

पुतसतिया(१)—स्था० प्र०, स्त्री० (पैर के पंजे पर गुदवाना)–सं० पुत्र स्वस्तिक >पुत्तसत्थिय>पुतसतिया।

पुतोहू—स्त्री० (पुत्र की वधू)–सं० पुत्रवधू>प्रा० पुत्तवहू>हिं० पुतोहू।

पुत्त—पु० हिं० (पुत्र)–स० पुत्र>पा० प्रा० पुत्त। तुल० अवेस्ता पुथ्रो, प्राचीन फ़ा० पुथ्र।

पुत्तरी★—स्त्री० (पुत्री)–सं० पुत्री।

पुन★— पुं० (पुण्य, शुभ कर्म)–सं० पुण्य>प्रा० अप० अव० पुण्ण, अव० पुन्न>हिं० पुन।

पुनि★—क्रि० वि० (फिर, पुनः)–सं० पुनर्>पा० पुन>प्रा० पुणो, पुण> हिं० पुनि। तुल० सिं० पुणि, म० पण, गु० पण्, सिंह० पुन, ने० पनि।

पुन्यों, पूनों—स्त्री० (तिथि-विशेष, पूर्णमासी, पूर्णिमा)– सं० पूर्णिमा>पा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुण्णमी>प्रा० पुण्णिमा> हिं० पुन्यों, पूनों। तुल० पं० पुन्निओं, सिं० पुनाइँ, पुनाऊँ, कु० पुन्यूँ।

पुरइनि—पु० (कमल का पत्ता, कमल)—सं० पुटकिनी>प्रा० पुडइणी>हिं० पुरइनी, पुरइनि।

पुरखा—पुं० (पूर्वज)—सं० पुरुषाः।

पुरट—पुं० (सोना)—सं० पुरट।

पुरबिया—वि० (पूरब का)—सं० पूर्वीय >प्रा० पुव्विल्ल> पुरवीय> पुरविया >पुरबिया।

पुरवाई—स्त्री० (पूरब से चलने या आने वाली वायु)—सं० पूर्ववायु>प्रा० पुव्ववाउ, पुरुववाउ>हिं० पुरवाई।

पुरा[1]—पुं० (छोटा गाँव)—सं० प्रा० पुर >हिं० पुरा।

पुरा[2]—वि० (प्राचीन)—सं० पुरा।

पुराना—वि० (प्राचीन)—सं० पा० प्रा० पुराण > हिं० पुराना। तुल० सिं० पुराणो, गु० पुराणूँ, ने० पुरानु।

पुरबिला[1] (पद०)—वि० (पहले का, पुरातन, पूर्व जन्म का)—सं० पूर्वीय> प्रा० पुरमिल्ल>पुरविल्ल>पुरबिला।

पुरुष—पु० (व्यक्ति, मर्द, पूर्वज, पति, जीव, विष्णु)—सं० पुरुष, पूरुष>हिं० पुरुष।

पुरोडास—पुं० (यज्ञ का हवि, वह द्रव्य जिसकी यज्ञ में आहुति दी जाती है)—सं० पुरोडाश, पुरोडाश्य, पुरोडाश् > पुरोडास।

पुल—पुं० (सेतु)—फ़ा० पुल।

पुलाव— पुं० (एक प्रसिद्ध खाद्य जो चावल और गोश्त से बनता है)—फ़ा० पुलाव।

पुवा, पूआ—पुं० (मालपूआ)—सं० अपूप, पूप>पा० पूप>प्रा० पूअल > हिं०, पूआ, पुवा। तुल० गु० पुवो, ने० कु० पुवा।

पुश्त— स्त्री० (पीढ़ी, वंश-परंपरा में कोई स्थान)—फ़ा० पुश्त।

पुश्ता—पुं० (बाँध, ऊँची मेंड़)—फ़ा० पुश्तः।

पुस्तक[1]—स्त्री० (पोथी)—पहलवी पुस्त (खाल)। ईरान में चमड़े पर ग्रन्थ लिखे जाते थे, इसी कारण पुस्तक का अर्थ ग्रन्थ हुआ। अ० किताबुन।

पूँछ—स्त्री० (दुम, लांगूल)—सं० पुच्छ >प्रा० पुंछ>हिं० पूँछ, ह० पूंछ।

पूछ—स्त्री० (पूछने या पूछे जाने की क्रिया या भाव)— सं० पृच्छा>प्रा० पुच्छ>हिं० पूछ।

पूछना— क्रि० (जानने के लिए प्रश्न करना)—सं० √ पृच्छ > प्रा० अप० पुच्छ>अव० पुच्छहि>हिं० पूछ+ना। तुल० बल्गा० पीतम्।

पूछे—क्रि० (पूछना)— सं० पृच्छति> प्रा० अव० पुच्छइ>हिं० पूछे।

पूजा—स्त्री० (अर्चना, आराधना)—सं० पूजा>प्रा० पूआ>हिं० पूजा।

पूठा[1]—स्था० प्र०, पुं० (टीले का खेत)—सं० पृष्ठक>पुट्ठअ>हिं० पूठा।

पूत—पुं०(पुत्र)—सं०'पुत्र>प्रा० पुत्त> अप० पुत्तु>पु० हिं० पूतु, पूत। तुल० पं० पुत्तर, गु० मरा० पूतू, अस० बं० पूत, सिं० पुटरु, ओ० पूत।

पूनी—स्त्री० (सूत कातने के लिए तैयार

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की हुई धुनी रूई की बत्ती)– सं० पिञ्जिका > अप० पिउली, पिउनी, पूणी (दे० ना० मा०) हिं० पूनी।

पूर[1]—क्रि० (पूरता है)–सं० पूरयति > पूरइ > पूर।

पूर[2]—वि० (पूर्ण, मुहावरा–पूर देना = समाप्त करना, बस करना)–सं० पूर्ण > पूर।

पूरनहि (की०)— क्रि० (काम पूरा करना)–सं० पूरय् > प्रा० अव० पूर > अव० पूरनहि।

पूरना—क्रि० (१- पूरा करना, पूर्ति करना, २- भरना, पूर्ण करना, ३- सफल या सिद्ध करना)–सं० पूरय्, पूरयति > पा० पूरेति > प्रा० अव० पूर, पूरइ > हिं० पूर + ना। तुल० सिं० पूरणू, गु० पूरवूँ, म० पुर (णें)।

१- पूरा[1] —ज०प्र० (गेहूँ-जौ आदि की मूठे मिलाकर पूरा बनाया जाता है)–सं० पूलक > पूलअ > पूला > पूरा।

२- पूरा[2] — वि० (परिपूर्ण, समूचा)– पूरक > पूरअ > पूरा।

पूरी—स्त्री० (घी से बनी रोटी, पूड़ी)– सं० पूलिका, पूरिका, पौलिका > प्रा० पोलिआ > पोली > पौली > पूली > हिं० पूरी। तुल० ओ० म० गु० पुरी, सिं० पूरी।

पूला—पुं० (घास की अँटिया, तृण आदि का ढेर)–सं० पूलक > प्रा० पूलअ (पाइअ०) > हिं० पूला। तुल० पं० पूला, म० गु० पुला।

पूस—पुं० (पौष, मास का नाम)–सं० पुष्य > पा० फुस्स > प्रा० पुस्स > हिं० पूस।

पेंग—स्त्री० (झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर जाना)–सं० प्रेङ्ख > प्रा० पिंखा > हिं० पेंग।

पेंडि[1] (पद०)—स्त्री० (मंजूषा, राज-भंडार की मंजूषा)–सं० पेटिका > पेडिआ > पेंडि।

पेंडि[2] (पद०)—स्त्री० (पेड़ का तना, धड़, काण्ड)–सं० पिण्ड > प्रा० पेंड > हिं० पेंडि।

पेउस—पुं० (गाय या भैंस के व्याने के १० दिन के भीतर का दूध)–सं० पीयूष (अभिनवं पयः, अमरकोश, वैश्य वर्ग ९, श्लोक ५४) > प्रा० पेऊस > अवधी पेउस।

पेखना[1]—पुं० (देखने की वस्तु)–सं० प्रेक्षण > प्रा० पेक्खण > पेंक्खन > पेखना।

पेखना[2]—क्रि० (देखना)–सं० प्र + ईक्ष् > प्रा० पेक्ख, अव० पेक्खइ > हिं० पेख + ना।

पेचकश—पुं० (ढिबरी आदि खोलने और कसने का यंत्र)–फ़ा० पेचकश।

पेचीदा—वि० (जटिल, कठिन)–फ़ा० पेचीदः।

पेट—पुं० (उदर)– प्रा० पोट्ट > प्रा० पिट्ट (पाइअ०) > हिं० पेट।

पेटी—स्त्री० (सन्दूकची, पिटारी)–सं० पेटिका > प्रा० पेडिआ > पेटी।

पेड़ा—पुं० (१- खोये की एक प्रसिद्ध मिठाई, २- गुंधे हुए आटे की लोई जिसे बेलकर रोटी पूरी आदि बनाते हैं)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिण्ड > प्रा० पेंड > पेड़ा ।

पेलना[1]—क्रि० (दबाना, ढकेलना, कुचलना, दबाकर भीतर घुसाना) – सं० पीडय् > प्रा० पीड, पीडइ, पीडण > हिं० पेलना ।

पेलना[2]—क्रि० (आगे बढ़ाना, आक्रमण करने के लिए सामने छोड़ना, भेजना)– सं० प्रेरणम् > प्रा० पेरण, पेल्लण > हिं० पेलना ।

पेशा — पुं० (व्यवसाय, धंधा)–फ़ा० पेशः ।

पेशाब—पुं० (मूत्र)–सं० प्रस्राव > पा० पस्साव > हिं० पेशाव ।

पेंच, पेंची—स्त्री० (कमान के दोनों कोरों को बाँधने वाली डोरी)–सं० प्रत्यंचा, प्रतञ्ची ।

पेंठ—स्त्री० (१- हाट, बाजार । २- दुकान)–सं० पण्य-स्थान > प्रा० पणिठाण > हिं० पैंठ ।

पेंत[1](पद०) —स्त्री० (पैरों की ओर)– सं० पादान्त > पयंत > पइंत > पैंत ।

पेंत[2] — स्त्री० (दाँव, बाजी) – सं० पणकृत > प्रा० पणइत > हिं० पैंत ।

पेंतरा—पुं० (वार करने या लड़ने के समय पैर जमाकर खड़े होने की मुद्रा या ढंग)–सं० पदान्तर > पआन्तर > पान्तर > पैंतर > पैंतरा ।

पेंतालिस—वि० (चालीस और पाँच)– सं० पंचचत्वारिंशत् > प्रा० पंचचत्तालीसति > अर्धमागधी पणचालीस > अप० पंचतालिसह, पंचतालीसह (प्रा० पैं०), पंचचालीस (प० च०), पंचतालीस > हिं० पैतालीस । तुल० पं० पैताली, ने० पैंतालिस्, बं० पायँताल्लीस, सिं० पञ्जतालीह ।

पेंतीस—वि० (तीस और पाँच)–सं० पंचत्रिंशत् > पा० पञ्चतिसति > प्रा० पणतीसं > अर्धमागधी पणतीस > अप० पंचतीस, पइंतीस > हिं० पैंतीस । तुल० ओ० पाँइत्रिस, पं० पाइती, गु० पाँत्रीस्, सिं० पञ्चत्रींह ।

पेंसठ—वि० (साठ और पाँच)–सं० पंटषष्टि > पा० पंचसट्ठि > अर्ध मागधी पणसट्ठि, पण्णट्ठि > अप० पणसट्ठि > पंचसट्ठि > हिं० पैंसठ । तुल० ओ० पञ्चसट्ठी, म० पासष्ट, गु० पाँसठ, ने० पैंसट्ठी ।

पै (की०)— अव्य० (इतने पर भी, तब भी)–सं० प्रति > अव० पइ, पै ।

पै[2]—अव्य० (पर, परंतु)–सं० परम् ।

पैकर[1] (पद०)—पुं० (तस्वीर)–सं० प्रतिकृति > पडिकर > पइकर > पैकर ।

पैकर[2]—पुं० (देह)–फ़ा० पैकर ।

पैकर[3]—पुं० (कपास से रुई इकठ्ठी करने वाला)–फ़ा० पैकार ।

पैग[1] (पद०)—(पैर, डग, कदम)– सं० पद + एक > प्रा० पयएग > हिं० पैग ।

पैगम्बर[1]—पुं० (ईश्वरदूत, अवतार)– पहलवी के माध्यम से फारसी में आया । पहलवी पेतखम, पईतखम; जंद पइतिगम, प्राचीन ईरानी पतिय् गम्, फ़ा० पैग़ंबर, सं० प्रतिगम । पैगंबर (पेतखम बर अर्थात् पैगाम ले जाने वाला)–में 'वर' भृ धातु (ले जाना) से है ।

पैगाम—पुं० (किसी के द्वारा विशेषतः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबानी कहलाया सन्देश)–पह्लवी पेतखम, फ़ा० पैग़ाम।

पैज[1] ★ — स्त्री० (प्रण, प्रतिज्ञा, टेक)–सं० प्रतिज्ञा>प्रा० पइज्जा > अप० पइज्जाँ>पेज्ज>हिं० पैज।

पैठ—स्त्री० (१- पैठने या घुसने की क्रिया या भाव, प्रवेश, २- गति)–सं० प्रविष्ट>प्रा० अप० पइट्ठ>हिं० पैठ।

पैड़ — स्त्री० (कदम) – सं०√पण्ड् (जाना)>हिं० पैड़।

पैड—पुं० (सोख्ता या स्याही सोख कागज की गद्दी, २- कोई छोटी मुलायम गद्दी, जैसे–इंक पैड)–अं० पैड।

पैदल—वि० (पैरों से चलने वाला, सिपाही, पयादा)–सं० पदाति+क> पदाइल्ल > पाइदल्ल>पैदल्ल > हिं० पैदल।

पैन— पुं० (नाली, पनाला) – सं० प्रयाण>पयान>पैन।

पैर[1]—पुं० (पाँव, पग)–सं० पदतल> पयअल, पयल, पइल > अव० पएर (की०)>हिं० पैर।

पैर[2]—स्था० प्र०, पुं० (खेत में एकत्रित पैर)–सं० प्रकर (ढेर)>प्रा० पयर (पाइअ०)>पइर>पैर।

पैसरना—क्रि० (घुसना, प्रवेश करना, पैठना)–सं० प्रविशति>अप० पइसरइ, पैसरई, पैसरना।

पैसे[1] (पद०)—क्रि०(घुसना, प्रवेश करना)–सं० प्रविशति>प्रा अप० पइसइ >हिं० पैसे।

पोंकना — क्रि० (पतला मल त्याग करना)–प्रा० पमुक्क>हिं० पोंकना।

पोंगा — प्रा० प्र०, वि० (नासमझ, मूर्ख)–सं० पोगंड > पोंगअ > हिं० पोंगा।

पोंछन—स्त्री० (किसी पात्र से लगी हुई वस्तु का बचा हुआ अंश जो पोंछने से ही निकले)–सं० प्रोञ्छनम्>प्रा० पुंछण >अप० पुंछन>हिं० पोंछन।

पोंछना—क्रि० (१- लगी हुई वस्तु हाथ की रगड़ से हटाते हुए निकालना, २- रगड़ कर धूल या मैल साफ करना)–सं० प्र+उञ्छ्>प्रा० पुंछ > अप० पुंछिय (सं० रा०)>हिं० पोंछ+ना।

पोई[1]—स्था० प्र०, स्त्री०(पँगोली, दो गाँठों के बीच का भाग)–सं० पोतिका >पोइआ>पोई।

पोई[2]—स्त्री० (एक लता जिसकी पत्तियों का लोग साग खाते हैं)–सं० पोतकी उपोदिका नि०।

पोए[1]—स्था० प्र०, पुं० (गन्ने का छोटा पौधा)–सं० पोतक>पोए।

पोखर—पुं० (जलाशय)–सं० पुष्कर> पा० पोक्खरणी (तालाब)>प्रा० स० पोक्खर>अव० पोषरि>हिं० पोखर, पोखरा। तुल० कश्मी० पुखर, बं० पुकुर, अस० पुखुरी, ओ० पोखरी।

पोखरि—स्त्री० (जलाशय)–सं० पुष्करिणी>(कमलों से भरा हुआ जलाशय) –पोक्खरिणी>पोखरि।

पोच—पुं० (नीच, अधम, बुरा, व्यर्थ, ओछा)–फ़ा० पूच>पोच, स्त्री० पोची।

पोटरी, पोटली—स्त्री० (छोटी गठरी)–सं० पोट्टलिका, सं० पोट्टली>प्रा० पोट्टरिआ>अप० पोट्टल (महा०)> हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पोटरी, पोटली।

पोढ़ाई—स्त्री० (दृढ़ता, साहस, बल)–सं० प्रौढ़ता।

पोता—पुं० (बेटे का बेटा)–सं० पौत्र +क>पा० पपुत्त>प्रा० पोत्तअ > अप० पोत्त>हिं० पोता। तुल० पं० पोतरा, ओ० पोता, सिं० पोटो, म० नातू, गु० पौत्र।

पोथा—पुं० (बड़ी पुस्तक)–सं० पुस्तक >प्रा० पुत्थय>पोत्थअ>हिं० पोथा।

पोथी—स्त्री० (पुस्तक)–सं० पुस्तिका >पा० पोत्थक>प्रा० पोत्थिया > पोथिया, हिं० पोथी। तुल० गु० म० पोथी, पं० पोथा, बं० पुथी।

पोया—पुं० (छोटा नरम पौधा)–सं० पोत+क>प्रा० पोअय, पोअ > हिं० पोया।

पोर—स्त्री० (१- उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुकती या मुड़ती है, २- उँगली में दो गाँठों के बीच का अंश)–सं० पर्वकम्>पउरउ>पोरउ> हिं० पोर।

पोरी[1]—स्त्री० (गन्ने की एक गाँठ तक का भाग)–सं० पर्वन्>पोर > स्त्री० पोरी।

पोरी[2]—स्त्री० (पकवान विशेष)–सं० पोलिक>प्रा० पोलिआ>पोरी।

पोली—वि० (खाली)–प्रा० पोल्ल > हिं० पोल, पोली। तुल० पं० पोल, पोला; ओ० पोला, म० गु० पोल।

पोशाक—स्त्री० (पहनने के कपड़े)–फ़ा० पोशाक।

पोस—प्र० (बिछावन, चादर, जैसे मेज-पोस)–फ़ा० पोश।

पोसना, पोषना—क्रि० (पालना)–सं० पोषय् > प्रा० पोस > हिं० पोसना, पोषना।

पौ[1]—पुं० (पैर)–सं० पाद>प्रा० पाय >पाव>पाउ>पौ।

पौ[2]—स्त्री० (किरण, प्रकाश की रेखा, ज्योति)–सं० प्रभा>पव>पउ> हिं० पौ।

पौ[3]—स्त्री० (पाँसे की एक चाल या दावँ)–सं० पद>प्रा० पव>हिं० पौ।

पौ[4]—स्त्री० (प्याऊ, पौसाला) – सं० प्रपा > प्रा० पव (पाइअ०) > हिं० पौ।

पौदा[1]—पुं० (नई बोई हुई ईख)–सं० प्रवृद्ध।

पौदा[2]—पुं० (छोटा पेड़, नया निकला हुआ पेड़)–सं० पादप+क > पादअअ >पाउदअ>पौदा।

पौन—वि० (तीन चौथाई)–सं० पादोन >प्रा० पाओण>पाउण>पौन, पोन। तुल० पं०पौणा, सिं० पोणो, बं० ओ० पौने।

पौनार—स्त्री० (कमल के फूल की नाल या डंठल)–सं० पद्म+नाल > प्रा० पउमनाल>पउनार>हिं० पौनार।

पौनारि, पौनारी(१) (पद०)—स्त्री० (कमल की नाल)–सं० पद्मनाल>प्रा० पउमनाल > पउमनार > पउअनार> हिं० पौनार, पौनारि, पौनारी।

पौर(१)—पुं० (बड़ा द्वार)–सं० प्रतोली पओलि>पोल>पौर।

पौरा—प्रा० प्र०, पुं० (शुभ, अशुभ के

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विचार से किसी का आगमन, पड़े हुए चरण, जैसे—बहू का पौरा शुभ है)–सं० पादुकः।

पौरि, पौरी—स्त्री० (नगर का मुख्य द्वार)–सं० प्रतोली > प्रा० पओली > पौलि > हिं० पौरी। ह० पौली।

प्या(१)— प्रा० प्र०, स्त्री० (मान या नाप)–सं० पाय्य > अप० प्या।

प्याऊ— पुं० (वह स्थान जहाँ सर्व-साधारण को पानी पिलाया जाता है)–सं० प्रपा + क > पा० पपा > पआउअ > पयाउअ > प्याऊ।

प्यार—पुं० (प्रेम)– सं० प्रियकार > पिअआर > हिं० प्यार।

प्यारा— पुं० (प्रेम-पात्र, प्रिय)–सं० प्रियकर > पिअअर > पिआर > प्यार > प्यारा।

प्यास—स्त्री० (तृष्णा, पिपासा)– सं० पा० पिपासा > प्रा० पिवासा > पिआसा > अप० पिआस (हेम०) > पियास > हिं० प्यास। तुल० बं० पियास्, सिं० पिआस, गु० म० प्यास।

प्रकार—पु० (ढंग, प्रकार)–सं० प्रकार > प्रा० पयार > अव० पआर > अप० पआरें।

प्रगट—वि० (१- प्रकट, जो सबके सामने हो, २- स्पष्ट, साफ)– सं० प्रकट > प्रगट।

प्रचंड— वि० (बहुत तीव्र या तेज, प्रखर, अत्युग्र, भयंकर, कठोर)– सं० प्रचण्ड > प्रा० पयंड > अव० पएंड, पञेड (की०)।

प्रजनन(२)—क्रि० (जन्म देना)–सं० प्र-जन (भारतीय जन)।

प्रतिग्रह—पुं० (स्वीकार, ग्रहण, दी हुई वस्तु का स्वीकार करना)–सं० प्रतिग्रह > प्रा० पडिग्गह > पटिग्गह > अव० पतिग्गह (की०)।

प्रतिपक्ष—पुं० (वैरी, शत्रु)–सं० प्रति-पक्ष > पा० पतिपक्ख > प्रा० पडिपक्ख, पतिपक्ख > अव० प्रतिपक्ख (की०)।

प्रतिष्ठापना— क्रि० (१- प्रतिष्ठित करना, स्थापित करना, २- देवता आदि की मूर्ति स्थापित करने का काम)–सं० प्रतिष्ठापन > प्रा० परिवट्ठण > अप० परिठवन > अव० परिठव (की०)।

प्रत्यूष— पुं० (प्रभात, तड़का)–सं० प्रत्यूष > प्रा० पच्चूस > अप० अव० पच्छूस।

प्रभु—पुं० (परमेश्वर, परमात्मा)–सं० प्रभु > प्रा० अव० पहु।

प्रयाण— पुं० (प्रस्थान, कूच करना, यात्रा)–सं० प्रयाण > प्रा० पयाण > अव० पआन (की०)।

प्रलय—पुं० (१-लय को प्राप्त होना, न रह जाना, २-संसार का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना)–सं० प्रलय > प्रा० पलय > अव० पलअ, पलए (की०)।

प्रवान—पुं० (प्रमाण)–सं० प्रमाण > प्रवाण > प्रवान।

प्रवृत्ति— स्त्री० (१- झुकाव, मन का किसी ओर लगाव, लगन, २- वृत्तांत, समाचार, हाल)–सं० प्रवृत्ति > पा० पवत्ति > प्रा० पउत्ति > अप० पउति, पइत्ति > अव० पवित्ति (की०)।

प्रस्ताव—पुं० (१- प्रसंग, छिड़ी हुई बात, २- प्रकरण, विषय, ३- चर्चा)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० प्रस्ताव > प्रा० पत्थाव > अव० पत्थावे (की०)।

प्रस्थापित—वि० (अच्छी तरह से स्थापित)–सं० प्रस्थापित > प्रा० पट्ठाइअ > पट्ठविअ > अप० पट्ठाइअ, अव० पट्ठाअइ (की०)।

प्रेम—पुं० (प्यार, अनुराग)–सं० प्रेमन् > प्रा० पेम > अप० पेम्म > हिं० प्रेम।

प्रेय—पुं० (आध्यात्मिक क्षेत्र में, शरीर एवं इन्द्रियों के सुख-भोग अथवा लौकिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाली बातें या तत्त्व)–सं० प्रेयस्।

प्रेयसी—स्त्री० (१- वह स्त्री जिसके साथ प्रेम किया जाय, २- पत्नी)–सं० प्रेयसी > अव० पेअसी।

फ

फंद—पुं० (छल, धोखा)–अ० फ़ंद।

फँदावर—पुं० (ताँत या बालों के फन्दे)–सं० बन्धावलि > फंदावलि > हिं० फँदावर।

फँसना—क्रि० (फंदे में पड़ना, पकड़ा जाना)–सं० पश् (बन्धने) > अप० फंसणं (दे० ना० मा०) > हिं० फँसना।

फकीर—पुं० (भिक्षुक)–अ० फ़क़ीर।

फकीराना—वि० (फकीर जैसा, साधुओं के समान)–अ० फा० फ़क़ीरानः।

फक्कड़—पुं० (१- सदा दरिद्र परन्तु मस्त रहने वाला व्यक्ति, २- वाहियात ओर उद्दंड व्यक्ति)–सं० फक्क (phakka)–lame, crippled (Buddhist Hybrid Sanskrit Grammar and Dictionary)। तुल० कु० फकर, पं० बं० फक्कर।

फक्त—वि० (केवल, सिर्फ़)–अ० फ़क़त।

फखीर—वि० (अभिमानी)–फ़ा० फ़खीर।

फख्र—पुं० (गर्व)–फ़ा० फ़ख्र।

फजल—पुं० (अनुग्रह)–अ० फ़ज़्ल।

फजीहत—स्त्री० (दुर्दशा, अपमान)–अ० फ़जीहत।

फट—स्त्री० (किसी चीज के फटने से या आघात आदि से होने वाला शब्द, इन्जन आदि के चलने से 'फट' ध्वनि, जल्दी, तुरन्त)–सं० स्फट् > प्रा० फट्ट > हिं० फट। तुल० गु० म० पं० फट, सिं० फड।

फटकना—क्रि० (सूप में अन्न आदि को उछालते हुए साफ करना)–सं० स्फट् > प्रा० फड (शोधना), फट्टक्क > हिं० फटकना। तुल० सिं० पटाको, बं० फट्का, कु० पटकणो।

फटन—स्त्री० (फटने की क्रिया या भाव)–सं० स्फटन > प्रा० फडण > हिं० फटन।

फटना—क्रि० (आघात लगने के कारण किसी चीज़ का बीच में से इस प्रकार खंडित होना या उसमें दरार पड़ जाना कि अन्दर की चीज़ें बाहर निकल पड़ें)–सं० स्फट् > प्रा० फट्ट > हिं० फटना।

फतवा—पुं० (मुसलमानों के धर्म-शास्त्रानुसार व्यवस्था जो उस धर्म के आचार्य किसी कर्म के अनुकूल अथवा प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं)–अ० फ़त्वा।

फतेह—स्त्री० (विजय)–अ० फ़त्ह।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फन[1]—पुं० (फण, साँप का सिर उस समय जब वह अपनी गर्दन के दोनों ओर की नालियों में वायुभर कर उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है)–सं० पा० फण>प्रा० फण>हिं० फन।

फन[2]—पुं० (गुण, विद्या, दस्तकारी)–अ० फ़न, फन्नुन।

फनगा—पुं० (फतिंगा, टिड्डा, अँख-फोड़ा)–सं० पतङ्ग।

फनस—पुं० (कटहल, कटहर का पेड़)–सं० पनस>प्रा० फणस>हिं० पनस। तुल० गु० फणस>बं० पणस, म० फणस।

फनि—पुं० (फनवाला सर्प, मणिधर सर्प)–सं० फणिन्>पा० फणी>प्रा० फणि>हिं० फनि।

फफोला—पुं० (आग में जलने से खाल पर पड़ा हुआ छाला)–सं० प्रस्फोट > प्रा० पप्फोड > पफोड > फफोड > फफोडा>फफोला।

फबना—क्रि० (शोभा देना, उपयुक्त स्थान पर रखे जाने पर किसी चीज़ का सुन्दर लगना)–सं० प्रभवन>प्रा० पभवन > हिं० फबना। तुल० पं० फब्बणा, सिं० फबणु, गु० फाववूं, म० फाव (णें)।

फरई—पुं० (एक आयताकार लकड़ी का छोटा सा तख्ता जिस पर रखकर चमड़े को काटते हैं)–सं० फलहिका>फलहिआ >फरही>फरई।

फरक—पुं० (अंतर, भेद)–अ० फ़र्क़ुन।

फरकना—क्रि० (फड़कना)–सं० स्फुर> प्रा० फुर>हिं० फरकना।

फरकौंहाँ★—वि० (फड़कने वाला या फड़कता हुआ)–सं० प्रस्फुरित > प्रा० अव० पप्फुरिअ>हिं० फड़कना+औंहा (प्र०)।

फरजंद—पुं० (पुत्र, बेटा, लड़का)–फ़ा० फ़रजंद।

फरद—स्त्री० (१- स्मरण रखने के लिए लिखा हुआ लेखा या सूची आदि, २- कागज का तख्ता)–फ़ा० फ़र्द।

फरफर—क्रि० (फर या फर् की ध्वनि होना)–सं० फर्फरायते, फरफराय् प्रा० फरहर>हिं० फरफर।

फरमान—पुं० (राजकीय आज्ञापत्र)–पह० फरमान, फ़ा० फ़रमान, प्राचीन ईरानी फ्रमान। सं० प्रमाण > अव० फरमाण (की०)।

फरसा—पुं० (पैनी और चौड़ी धार की एक प्रकार की कुल्हाड़ी)–सं० परशु> पा० प्रा० परसु>फरसु>हिं० फरसा। तुल० गु० फरसी, म० फरशी, बं० फरसा, फलसा।

फरहर—पुं० (फलाहार)–सं० फलाहार >अवधी फरहर।

फरहरी[1](पद०)—स्त्री० (फल-फूल)–सं० फल-पुष्प>फलहुल्ल>फरहुरि।

फराक—पुं० (मैदान, आयात स्थान)–फ़ा० फ़राख़।

फ़रिश्ता—पुं० (१-ईश्वर का दूत २-देवता)–फ़ा० फ़िरिश्तः।

फरूआ—पुं० (कुल्हाड़ा)–सं० परशु> प्रा० फरसु>फरहु>फरूआ।

फरेब—पुं० (छल, धोखा)–फ़ा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फरेब।

फर्जी[1]—वि० (१- कल्पित, २- नाम मात्र का)–अ० फ़र्ज़ी।

फर्जी[2]—पुं० (वज़ीर, २- शतरंज का एक मोहरा)–फ़ा० फ़र्ज़ीं।

फर्द—स्त्री० (चद्दर, पल्ला, रजाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता और बिकता है)–अ० फ़र्द।

फर्राना—क्रि० (हिलना, उड़ना, फहराना)–सं० √स्फर्, स्फरण।

फल—पुं० (१- वृक्षादि का फल, २- परिणाम, ३- प्रतिफल)–सं० पा० प्रा० अप० हिं० फल। तुल० बं० फल्, सिं० फरू, गु० म० फळ, ओ० फळ।

फलक—पुं० (१- तख्ता, पट्टी, २- परत)–सं० पा० फलक>प्रा० फलग, फलअ>हिं० फलक। तुल० सिं० फरहो, पं० फल्हा, कश्मी० फल।

फलना—क्रि० (वृक्षों का फलों से युक्त होना, इच्छा या कामना का पूर्ण होना)–सं० फल्>प्रा० फल>अप० फुल्ल (सं० रा०), फलइँ>हिं० फलना।

फलाँग — स्त्री० (कुदान, चौकड़ी, छलांग) – सं० प्रलङ्घ नम् > प्रा० पलंघेज्जा>प्रा० पलंघण, पल्लंघण>हिं० फलांग।

फलाना—पुं०(अमुक, कोई अनिश्चित)–अ० फुलाँ।

फलार—पुं० (फलाहार)–सं० फलाहार >फलाआर>हिं० फलार। तुल० बं० फलार>गु० म० फराळ, फळार।

फहराना—क्रि० (फरफ़राना, फहराना)–सं० फर्फराय् > प्रा० फरहर > हिं० फरहर, फरहरना।

फाँक—स्त्री० (किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा)–सं० फलक।

फाँदना — क्रि० (१- उछलना, २- उछलकर किसी चीज को लाँघते हुए उसके उस पार जाना)–सं० स्पन्द्>पा० फन्द>प्रा० फंद (पाइअ०)>हिं० फाँदना। तुल० कु० फाँदणो, बं० फांदा।

फाँदा—प्रा० प्र०, पुं० (१-फंदा, रस्सी, तागे आदि का घेरा जो किसी को फँसाने के लिए बनाया गया हो)–सं० बन्धः।

फाँस—स्त्री० (पाश, बंधन)–सं० पाश >हिं० फाँस। तुल० बं० फाँसा, ओ० फास, गु० फासो, म० फांस।

फाँसा—पुं० [रस्सी (लेजू) का सरकने वाला फँदा]–सं० पाश+क > प्रा० पासअ>पासा>हिं० फाँसा।

फाँसी—स्त्री० (फँसाने का फंदा)–सं० पाशिका>प्रा० पासिया > पासिआ> हिं० फाँसी।

फाका—पुं० (उपवास)–अ० फ़ाक़ः।

फागुन—पुं० (शिशिर ऋतु का दूसरा महीना) – सं० फाल्गुन > पा० प्रा० फल्गुण >हिं० फागुन। तुल० गु० म० फाग, सिं० फागु, ओ० फगु।

१- फाटक[1]—(महाराष्ट्र के ब्राह्मण-वर्ग में प्रचलित उप नाम, यथा-शिव चन्द्र पाठक)–सं० पाठक>फाटक।

२- फाटक—पुं० (बड़ा किवाड़)–सं० कपाट। तुल० बं० फाँटक, म० पं० ओ० फाटक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फाटना—पु० हिं०, प्रा० प्र०, क्रि० (फटना)–सं० स्फट्>प्रा० अप० फट्ट >फट्टइ>हिं० फटना, फाटना । तुल० कु० फाट्णो, बं० फाटा, ओ० फाटिबा, म० फाट (णें), गु० फाटवूं ।

फाड़ना — क्रि० (चीरना, विदीर्ण करना)–सं० पाटय्>प्रा० फाड>अव० फाल (की०)>हिं० फाड़ना । तुल० पं० फाडणा, बं० फाडा, ओ० फाडिबा, गु० फाडवूं, म० फाड (णें) ।

फानूस—पुं० (छत में टाँगने के लिए एक डंडे के चारों ओर लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें मोम-बत्तियाँ जलती हैं)–फ़ा० फ़ानूस ।

फाल—पुं० (लोहे का वह फल जो हल के नीचे लगा रहता है और जिससे जमीन खुदती या जुतती है)–सं० पा० प्रा० फाल>अव० फालहीं (की०)> हिं० फाल । तुल० कु० फालो, पं० फाल >म० फाळ, बं० फाली ।

फिक्र—स्त्री० (१- चिंता, सोच, २- ध्यान, विचार)–अ० फ़िक्र ।

फिटकरी—स्त्री० (सफेद रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्रायः औषध के काम में आता है)–सं० स्फटिकारिका, स्फटिकारिः > हिं० फिटकरी। तुल० बं० फटिकारि, पं० फटूकरी, गु० फट्कडी, म० फटकीं ।

फिसलन—स्त्री० (ऐसी चिकनाहट जिस पर पैर फिसले)–प्रा० फेल्लुसण>हिं० फिसलन ।

फिसलना—क्रि० (गीली चिकनाहट के कारण पैर आदि रखने पर अपने स्थान से आगे बढ़ना या पीछे हट जाना)–प्रा० फेल्लुस, फेल्लुसइ, फिल्लुस > हिं० फिसलना ।

फीका—वि० (स्वाद, रस आदि के विचार से हीन या निकृष्ट) – सं० अपक्व ।

फुँकार—पुं० (फुफकार, फूत्कार)–सं० फुङ्कार>प्रा० फुंकार (पाइअ०)>हिं० फुँकार ।

फुआ—स्त्री० (पिता की बहन)–सं० पितृ+स्वसा>प्रा० पिउस्सा>पुइसा> फुइया>फुआ ।

फुकना—क्रि० (फुँकना, फूँक मारना)– सं० फूत्कृ>प्रा० फुक्किय, फूकिय>हिं० फुकना ।

फुट[1]—वि० (१- अलग, २- एकाकी, अकेला, ३- जोड़े में से एक)–सं० स्फुटित>प्रा० फुट्टिअ>हिं० फुट ।

फुट[2]—पुं० (लंबाई आदि नापने की १२ इंच की एक नाप)–अं० फुट ।

फुटना—प्रा० प्र०, क्रि० (फूटना, भग्न होना)–सं० स्फुट्>प्रा० फुट्ट, फुट> हिं० फुटना, फूटना । तुल० फुट्णो, ओ० फुटिबा, पं० फुट्टणा, सिं० फुटणुं ।

फुफकार—पुं० (फू-फू या फु-फु की ध्वनि, फुँकार)–सं० स्फुत्कार>फूत्कार >फुफ्फकार>हिं० फुफकार ।

फुफकारना—क्रि० (फूत्कार करना)– सं० फूत् + कृ>प्रा० फुफ्क > हिं० फुफकारना ।

फुर—वि० (सच्चा)–सं० स्फुट>प्रा० फुड>फुट्ट>अप० फुर, फुल (स्पष्ट) >अव० फुर (सत्य)>हिं० फुर ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फुर्ती—स्त्री० (फुरती)–सं० स्फूर्ति ।

फुलवाड़ी, फुलवारी—स्त्री० (फूलों के पौधों का छोटा बाग)–सं० पुष्पवाटिका >प्रा० फुल्लवाडिआ>फुल्लवाडिअ> फुल्लवाडी>हिं० फुलवाड़ी, फुलवारी ।

फुलहारी (पद०)—स्त्री० (मालिन)–(१) सं० पुष्पधारिका > फुल्लधारिका >फुल्लहारिआ > फुलहारी ।[१] (२) सं० पुष्प+आहारिका (आ+√हृ+ण्वुल्=आहारक+टाप् = आहारिका) =पुष्पाहारिका=पुष्प को एकत्र कर लाने वाली ।

फुलिंग—पुं० (चिनगारी)–सं० स्फुलिङ्ग >प्रा० फुलिंग>अव० फुलुग (की०) >हिं० फुलिंग ।

फुलेल — पुं० (सुगन्धित तेल)–सं० पुष्प तेल>फुल्लएल>फुलएल>फुला-एल>हिं० फुलेल ।

फुहड़—वि० (बहुत बुरे शऊर वाला)–फ़ा० फुहश ।

फूँक—स्त्री० (मुँह में बटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा)–सं० स्फूत+कृ> प्रा० फुंका>हिं० फूँक ।

फूँकना—क्रि० (१- मुँह को बटोरकर वेग के हाथ हवा छोड़ना, ओठों को चारों ओर से दबाकर झोंक से हवा निकालना, जलाना)–सं० फूत् + कृ, फूत्करोति>प्रा० फुक्क, फुक्कइ>अप० फुक्क, फुंक्क>हिं० फूँकना । तुल० पं० फूकणा, सिं० फँकणु, गु० फुंकवूँ ।

फूआ—स्त्री० (बूआ)–सं० पितृष्वसा> प्रा० पुप्फा>हिं० फूआ ।

फूट — स्त्री० (फूटने की क्रिया या भाव)–सं० स्फुट्>प्रा० फुट > हिं० फूट ।

फूटना—क्रि० (फटना)–सं० स्फुट् > प्रा० अप० फुट्ट>अव० फुट्टइ > हिं० फूट+ना ।

फूफी — स्त्री० (बूआ)–प्रा० पुप्फा, पुप्फिआ>हिं० फूफी ।

फूल[१]—पुं० (पुष्प, कुसुम)–सं० फुल्ल> पा० प्रा० अप० फुल्ल>हिं० फूल । तुल० स्पे० फलोर, ओ० फुल, पं० फुल्ल, सिं० फुलु, गु० फूल, म० फुल, फूल ।

फूल[२]—पुं० (स्त्रियों का मासिक रज)–सं० पुष्पम् (रजःस्राव, रजोधर्म–यथा 'पुष्पवती' में)>हिं० फूल । तुल० पं० फूल्ल, गु० म० फूल ।

फूलना—क्रि० (फूलों से युक्त होना, पुष्पित होना, फूल जाना)–सं० फुल्ल्> पा० फुल्लति > प्रा० फुल्ल > हिं० फूलना । तुल० ओ० फुलिबा, पं० फुल्लणा, सिं० फुलणु, गु० फुलवूँ ।

फूलवाड़ी — स्त्री० (फूलवाटिका)–सं० पुष्पवाटिका > प्रा० फुल्लवाडिआ > हिं० फूलवाड़ी ।

फेंकना—क्रि० (१- झोंके से दूर हटाना या डालना, २- तिरस्कार पूर्वक छोड़ना)–सं० क्षिप्>प्रा० फेल>फेलदि फेलअि>हिं० फेंकना ।

फेंट—स्त्री० (१- धोती का वह भाग जो कमर में लपेटा जाता है, २- कमर का घेरा या मंडल)–सं० पटः ।

फेक्कार[१] (की०)— स्त्री० (शृगाल की आवाज, आवाज, चिल्लाहट)–सं० फेत्कार>प्रा० अप० फेक्कार ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फेन—पुं० (झाग)–सं० फेन>पा० प्रा० फेण>हिं० फेन। तुल० गु० ओ० म० फेण, सिं० फीणु।

फेफड़ा—पुं० (शरीर के भीतर थैली के आकार का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव सांस लेते हैं)–सं० फुप्फुस>प्रा० फेप्फस, फेफस>हिं० फेफ+ड़ा (प्र)।

फेरना—क्रि० (किसी ओर घुमाना, मोड़ना)–प्रा० फेरण>हिं० फेरना। तुल० पं० फेरणा, सिं० फेरणुं, गु० फेरवूँ, म० फेर (णें)।

फैलना—क्रि० (पसरना, चौड़ा होना)–सं० प्रसृ>प्रा० पयल्ल, पयल्लइ>हिं० फैलना।

फैसला—पुं० (निर्णय, निपटारा)–अ० फ़ैसल:।

फोड़ना—क्रि० (१- तोड़ना, २- किसी को दूसरे पक्ष से अपनी ओर मिलाना)–सं० स्फोट्य>पा० फोटेति>प्रा० फोड>हिं० फोड़ना। तुल० म० फोड (णें), गु० फोड।

फोड़ा—(घाव)–सं० स्फोट+क>पा० फोटक>प्रा० फोडअ > हिं० फोड़ा। तुल० बं० फोडा, ओ० फोडी, म० फोड।

फोज—स्त्री० (१- सेना, २- झुण्ड)–अ० फ़ौज।

फौजदारी — स्त्री० (१- ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें मार-पीट भी हो और लोगों को चोट आवे, २- वह न्यायालय जिसमें लड़ाई-झगड़े और क़त्ल, खून के केस हों)–अ० फ़ा० फ़ौजदारी [अ० फ़ौज+फ़ा दारी (प्र०)]।

फौजी—वि० (सैनिक)–अ० फ़ौजी।

फौरन—क्रि० वि० (तुरंत, तत्काल)–अ० फ़ौरन।

फौलाद—पुं० (एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा जिसके हथियार बनाये जाते हैं)–अ० फौलाद।

फौलादी—वि० (फौलाद का बना हुआ)–अ० फौलादी।

ब

बंक—वि० (टेढ़ा)–सं० वक्र>वक्क, वक>अव० बक>हिं० बंक।

बंद—पुं० (१- वह चीज जिससे कुछ बाँधा जाय, २- कैद, ३- शरीर के अंगों का जोड़)–सं० बंध, फ़ा० बंद, पह० बंद (band)।

बंदगी—स्त्री० (ईश्वर की बंदना)–फ़ा० बंदगी।

बंदन—पुं० (प्रणाम)–सं० वंदन>प्रा० वंदण>हिं० बंदन।

बंदनवार (पद०)—स्त्री० (तोरण)–सं० वंदनमाला।

बंदर—पुं० (वानर)–सं० वानर>प्रा० वाणर>हिं० बंदर। तुल० पं० बांदर, म० वांदर, गु० वांदरो, बं० बाँदर, अस० बांदर।

बंदिश—स्त्री० (१- बाँधने की क्रिया या भाव, २- पहले से किया हुआ प्रबंध, ३- रोक, रुकावट)–फ़ा० बंदिश।

बंदूक—स्त्री० (एक प्रसिद्ध अस्त्र जिससे शत्रु पर गोली चलाई जाती है)–अ० बंदूक़, बुन्दकियतुन।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बंदूकची—पुं० (बंदूक चलाने वाला)–अ० फ़ा० बंदूक़ची।

बंदोबस्त—पुं० (व्यवस्था)–फ़ा० बंदोबस्त।

बंध—पुं० (१- बाँधने वाला तत्त्व या बात, बंधन, २- गाँठ)–सं० बन्ध>प्रा० हिं० बंध।

बंधन— पुं० (बाँधने की क्रिया या भाव)–सं० बन्धन>प्रा० बंधण>हिं० बंधन।

बंधी (पद०)–पुं० (बंदी, कैदी)– सं० बन्दी>प्रा० बंदी (पाइअ०)>बंधी।

बँधेज—पुं० (१- किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति, २- प्रतिबंध, ३- नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जाने वाला पदार्थ)–सं० बन्ध्य (बाँधने योग्य)> हिं० बंधेज। तुल० म० बन्देज, सिं० बन्धेगु।

बंबा—पुं० (पानी की कल का वह अगला भाग जिसमें से पानी निकलता है)–पुर्त० पाँपा (pampa) (S. L. D., p. 495), सं० पम्पा (दक्षिण भारत की एक नदी का नाम)।

बंशी— स्त्री० (मुरली, बाँसुरी)–सं० वंशी (वंश, वंशिका)>प्रा० वंसी>हिं० बंसी।

बँगुरा—पुं० (चिड़ियों के फांसने का एक प्रकार का जाल)– सं० वागुरा> प्रा० वागुर>हिं० बँगुरा।

बँडेरी— स्त्री० (छप्पर या खपरल की छत में सबसे ऊपर की आधारभूत लंबमान बल्ली)–सं० वरदण्ड।

बँवरि[1] (पद०)—स्त्री० (बेल, लता)–सं० मुकुलिता>मउलिया>बउरिया> बँवरिया>बँवरि।

बउरा—वि० (बावला)–सं० वातुल> अवधी बउरा।

बउहार—स्था० प्र०, पुं० (व्यवहार)–सं० व्यवहार> प्रा० विवहार>अवधी बउहार।

बक—पुं० (बगला)–सं० पा० बक> प्रा० बय>हिं० बक।

बकतर—पुं० (युद्ध के समय पहनने का एक प्रकार का अँगरखा)–फ़ा० बकतर।

बकना—क्रि० (प्रलाप करना, व्यर्थ बहुत बोलना)–सं० वद्>प्रा० वय, वद, वदित्तए, बक्कर (परिहास)>हिं० बकना। तुल० ओ० बकिबा, पं० बकणा, सिं० बकणु, म० बक (णें)।

बकर—पुं० (गाय, बैल)–अ० बक़र:।

बकरा—पुं० (एक प्रसिद्ध चौपाया)–सं० वर्कर (वृक्+अर)>अप० बोक्कडो (दे० ना० मा०)>हिं० बकरा। तुल० बं० बक्रा, कु० बाक्रो, सिं० बाकिरो, गु० बकरो।

बकरीद—स्त्री० (बकर ईद, मुसलमानों का एक त्यौहार) अ० बक़र ईद।

बकवार (की०)—पुं० (टेढ़ा द्वार)–सं० वक्रद्वार>हिं० बकवार।

बकाया—पुं० (१- बचा हुआ, २- खर्च से बची हुई धनराशि)–अ० बक़ाय:।

बक्कल— पुं० (छाल)–सं० वल्कल> पा० प्रा० वक्कल>हिं० बक्कल, बक्कुल (जनपदीय प्रयोग)।

बक्काल—पुं० (वह जो आटा, दाल,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चावल अथवा अन्य चीजें बेचता हो)–अ० बक्काल।

बखत[1]—पुं० (भाग्य, किस्मत)–पह०, फ़ा० वख़्त।

बखत[2]—प्रा० प्र०, पुं० (समय)–अ० वक़्त।

बखान—पुं० (वर्णन)–सं० व्याख्यान > पा० वक्खान > प्रा० बक्खाण > हिं० बखान, ह० बखाण्।

बखार—पुं० (गोदाम, वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं)–प्रा० वक्खार > बखार।

बख़ूबी—क्रि० वि० (अच्छी तरह से, भली भाँति)–फ़ा० बख़ूबी।

बखेड़ा—पुं० (१-झंझट, २- झगड़ा, ३- अव्यवस्था, ४- कठिनता)– (१) पश्तो बखेड़ा।[1] (२) सं० व्याक्षेप > प्रा० वक्खेव (पाइअ०) > हिं० बखेड़ा। तुल० पं० बं० म० बखेडा।

बखेरना—क्रि० (फैलाना, छितराना)–सं० वि+कृ > विकिरणम् > पा० विकिण्ण > प्रा० विकिर > हिं० बखेरना।

बग—पुं० (बगला, पक्षी-विशेष)–सं० वक, बक > पा० बक > प्रा० बग > हिं० बग। तुल० गु० बक, म० बग, सिं० बगु, बं० बक।

बगल— स्त्री० (१- कंधे के नीचे का गड्ढा, काँख, २- पार्श्व)–फ़ा० बग़ल।

बगड़ी[1]—स्त्री० (रत्न तराशने वाली बगड़ी या मुहल्ला)–सं० वैकटिक।

बगला, बगुला—पुं० (पक्षी)–सं० बक > प्रा० बग > हिं० बगला। तुल० पं० बगला, गु० बगलो। तुल० पं० उर्दू बगला, म० बगळा, गु० बगळो, ओ० बग।

बगा— प्रा० प्र०, वि०, (१- टेढ़ा, लुच्चा)–सं० (वक्र > प्रा० वक्क > हिं० बगा।

बगावत— स्त्री० (१- सैन्य-द्रोह, २- विद्रोह, ३- राज-द्रोह)–अ० बग़ावत।

बग़ैर—अव्य० (बिना, सिवा)–फ़ा० अ० बग़ैर।

बगोला—पुं० (वायु का गोला)– सं० वातगोल।

बघनखा—पुं० (लोहे के काँटों का एक हथियार)–सं० व्याघ्रनख।

बचपन—पुं० (बाल्यावस्था)–सं० वत्सत्वम् अथवा वत्सभावम्।

बचाना—क्रि० (१- आपत्ति, कष्ट आदि से रक्षित रखना, २- कुछ अंश काम में आने या खर्च होने से रोक रखना)–मु० बाचाओ, बाचाओ। (दे०, मु० इं० डि०)। तुल० बं० बाँचाना, कश्मी० बचावुन्, सिं० बचाइणु, पं० बचाणा, गु० बचवुं।

बचूंगड़ा[1]— स्था० प्र०, पुं० (शेष वस्तु)–पश्तो से गृहीत।

बच्चा—पुं० (किसी प्राणी का नवजात और असहाय शिशु)– (१) सं० वत्स+क > प्रा० बच्छअ > बच्चअ > हिं० बच्चा। (२) फ़ा० बच्चः > हिं० बच्चा।

बच्छल— वि० (प्यारा, वत्सल)–सं० वत्सल > प्रा० वच्छल > प्रा० बच्छल।

बच्छा—पुं० (बछड़ा)–सं० वत्स > पा० प्रा० वच्छ > वच्छा > हिं० बच्छा।

बछड़ा— पुं० (गाय का बच्चा)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वत्सतर > वच्छअर > वच्छरअ > बच्छरा > हिं० बछड़ा । तुल० पं० बच्च, वच्च ।

बछरू—पुं० (बछड़ा)– सं० वत्सरूप > पा० वच्छरूप > प्रा० वच्छरूव > वाछरूअ > वाछरू > बछरू ।

बछेड़ा—पुं० (घोड़े का बच्चा)– सं० वत्सतर + क > वच्छयरअ > बच्छइरअ > बछेरा > हिं० बछेड़ा । तुल० पं० वछेरा, उर्दू बछेरा, कश्मी० बछेरुँ, गु० वछेरो ।

बछेड़ू—पुं०(बछड़ा)–सं० वत्सतररूप > पा० वच्छतररूप > बच्चयररूव > वच्छेरउ > वच्छेरु > हिं० बछेरु, बछेड़ू ।

बजा— वि० (उचित, सत्य)– फ़ा० बजा ।

बजाज— पुं० (कपड़े बेचने वाला, कपड़ों का व्यवसायी)–अ० बज़्ज़ाज़ ।

बजाना—क्रि० (आघात करके या और किसी प्रकार शब्द उत्पन्न करना)–सं० वादयति > हिं० बजाना । तुल० कु० बजोणो, ओ० बाजाइबा, पं० बजाउणा, सिं० बजाइणु ।

बटन—पुं० (पहनने के कपड़ों में लगने वाली चिपटी घुंडी)– अं० बटन (button) ।

बटवारी (पद०)—स्त्री० (डकैती, रास्ते में लूटमार)–सं० वर्त्म + मार > बटमार बटपारी ।

बटुआ— पुं० (कई खानों वाली एक प्रकार की छोटी थैली)– सं० वर्तुल > प्रा० वट्टुल > वट्टुअ > हिं० बटुआ ।

बटुराना (की०)—क्रि० (एकत्र होना)– सं० वर्त्य + उत्स्था (मार्ग में खड़े होना) > प्रा० वट्ट + उठ्ठ > वट्टउट्ठण > वट्टोट्ठण > वट्टुट्ठण > बटुराना, वटुरना ।

बटेर—स्त्री० (तीतर या लावा की तरह की छोटी चिड़िया)–सं० वर्तिक, वर्त्तक > पा० वट्टका > प्रा० वट्टक > हिं० बटेर, बटई (पद०) ।

बटोही—पुं० (पथिक, राहगीर)–सं० वर्त्म + आरोहिन् > प्रा० वट्टआरोहि > वट्टरोही > वट्टओही > हिं० बटोही ।

बड़[२८]—पुं० (बरगद का वृक्ष)–सं० वट > प्रा० वड > हिं० बड़ । 'बड़ी'-'बड़' के फल । 'बड़ी' के बराबर की बनी हुई उड़द-पिट्ठी की गोलियों को 'बड़ी' कहते हैं, जिन्हें तेल में तलकर, प्रायः दही में लपेट कर खाया जाता है ।

बड़[१] (की०)— क्रि० (पड़ना, आ गिरना)-सं० पत् > प्रा० पड > अव० बड़ ।

बड़दा (की०)—पुं० (बैल)–सं० बलीवर्द > पा० प्रा० बलिवद्द > बलद्द, बड़द्द > अव० बड़दा ।

बड़प्पन—पुं० (बड़ा होने का भाव)– अ० बड्डप्पणु > (अप० प्पण > पन) > हिं० बड़प्पन ।

बड़बड़—स्त्री० (बकवाद)–सं० वद्वद् > प्रा० वडवड (विलाप करना, पाइअ०) > हिं० बड़बड़ ।

बड़बड़ाना— क्रि० (व्यर्थ का प्रलाप करना, ऊटपटांग बोलना, बक-बक करना)– सं० बुडबुड > प्रा० बुडबुडेइ, बडबडइ > हिं० बड़बड़ाना, बरबराना,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बररानाना, बर्राना।

बड़ा[1]—वि० (लंबा-चौड़ा और विशाल)–सं० वृहत् > प्रा० वहड (पाइअ०) > बअड > हिं० बड़ा।

बड़ा[2]—वि० (१- श्रेष्ठ, महान् २- बढ़कर, अधिक, ३- अधिक अवस्था का)–सं० वृद्ध > प्रा० वड्ढ > हिं० बड़ा।

बड़ा[3]—पुं० (एक पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल चक्राकार टिकियों को घी या तेल में तलकर बनता है)– सं० वटक > प्रा० वडग, वडअ > अप० वड्डो (दे० ना० मा०) > बड़ा। स्त्री० बड़ी–सं० वटी।

बड़ेरी (पद)[1]— वि० (बड़ी)–सं० वृहत्तर > अप० बड्डयर > बडेर + अ = बड़ेरा, बड़ेरी।

बड़ौना (पद०)—पुं० (बड़ा पान या उत्तम पान)–सं० वृहत्पर्ण > बड्डपण्ण > बड्डवाण्ण > हिं० बड़ौना।

बढ़ई— पुं० (लकड़ी का कार्य करने वाली जाति-विशेष)–सं० वर्धकी > पा० वड्ढकी > प्रा० वड्ढई > अप० वड्ढइओ (दे० ना० मा०) > हिं० बढ़ई, बाढ़ी (स्था० प्र०)।

बढ़ती— स्त्री० (तोल या गिनती में अधिकता, मात्रा का आधिक्य)– सं० वर्धति > बढ़ति > वढती।

बढ़ना— क्रि० (बढ़ना)– सं० वर्धयति (√वर्ध) > प्रा० वड्ढइ (वड्ढ) > हिं० बढ़ना। तुल० पं० बढ़णा, उर्दू बढना, कश्मी० वढुन्, सिं० वधणु, म० वाढणें, गु० वधवुं।

बढ़नी—स्त्री० (झाड़ू)–सं० वर्धनी > प्रा० वड्ढनी > हिं० बढ़नी।

बढ़ान—स्त्री० (विस्तार या परिमाण में वृद्धि का भाव)– सं० वर्द्धन > प्रा० वढ्ढण > हिं० बढ़ना।

बढ़ार— पुं० (विवाह से दूसरे दिन बारातियों को विशेष भोजन परोसा जाता था)–सं० वृहदाहार > प्रा० वड्ढाहार > वड्ढार > हिं० बढ़ार।

बढ़ावा—पुं० (किसी काम की ओर मन बढ़ाने वाली बात)–सं० वर्धापक > प्रा० वड्ढावअ > वड्ढवअ > हिं० बढ़ावा।

बढ़िया—वि० (उत्तम, अच्छा)– सं० वर्धित > प्रा० वड्ढिअ > हिं० बढ़िया।

बतास[1] (की०)— स्त्री० (हवा)–सं० व्याप्त (> प्रा० वत्त) + सं० आशा (> प्रा० आसा, आस) > अव० बतास।

बतासा— स्त्री० (वात का रोग, गठिया)–सं० वातसह > बतास, बतासा।

बत्ती— स्त्री० (रूई या सूत का बटा हुआ लंबा लच्छा जो दीपक में रखकर जलाते हैं)–सं० वर्त्ति > प्रा० वत्ति > वत्ति > बत्ती, बाती।

बत्तीस— वि० (तीस और दो)–सं० द्वात्रिंशत् > प्रा० अ० मा० बत्तीस > अप० बत्तिस > हिं० बत्तीस। तुल० ओ० बं० बत्रिस, पं० बत्तरी, म० बत्तीस।

बथुआ—पुं० (एक प्रकार का साग)–सं० वास्तुक + क > प्रा० वत्थुअअ > हिं० बाथू, बथुआ।

बदना—क्रि० (वर्णन करना, बोलना)–सं० वद् > प्रा० वद > हिं० बदना।

बदमाश—वि० (लुच्चा, गुंडा, दुष्ट, दुराचारी)– फ़ा० बद + अ० मआश

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(जीविका)।

बदौलत—क्रि० वि० (कृपा से, अवलंब से)–फ़ा० अ० बदौलत।

बद्दी[१]—स्था० प्र०, स्त्री० (चमड़े का पट्टा)–सं० बद्ध्री।

बधाई—स्त्री० (मुबारकबाद)–सं० वर्धापनिका > प्रा० वद्धावणिया (पाइअ०) > वद्धाअणिआ > वद्धाइया > वद्धाई > हिं० बधाई।

बधावा—पुं० (बधाई)–सं० वर्धापन > प्रा० वद्धावण > बद्धावअ > बद्धावा > हिं० बधावा।

बधिया— पुं० (नपुंसक किया हुआ चौपाया)–सं० वधितः > अप० वद्धिओ (दे० ना० मा०) > हिं० बाधिया, बधिया।

बदख्वाह—वि० (बुरा चाहने वाला)–फ़ा० बदख्वाह।

बन—पुं० (जंगल)–सं० पा० वन > प्रा० वण > हिं० बन। तुल० ओ० वण, ने० वन्, म० बन।

बनज[१]—पुं० (कमल)–सं० वनज (वन में उत्पन्न)।

बनज[२]—पुं० (बाणिज्य, व्यवसाय)–सं० वाणिज्य > प्रा० बणिज > हिं० बनज।

बनजारा— पुं० (बंजारा, वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लादकर बेचने के लिए एक देश से दूसरे देश को जाता है)–सं० वाणिज्यकार > प्रा० वाणिज्जिआर > वण्जार > हिं० बनजारा।

बनरा[१]—पुं० (वर, दुलहा, ब्रह्मचारी)–सं० वर्णी (ब्रह्मचारी) > हिं० बनरा (जनपदीय प्रयोग)।

बनरिन[१]— स्त्री० (दुलहिन, कुमारी ब्रह्मचारिणी)– सं० वर्णिनी (कुमारी ब्रह्मचारिणी) > हिं० बनरिन (जनपदीय प्रयोग)।

बनवारी[१] (पद०)—स्त्री० (कसी जाने वाली बन्नी, जो सोना बारहबांनी किए जाने के लिए शुद्ध किया जाता था, उसके शुद्ध नमूने की पत्री के लिए 'बनवारी' शब्द प्रचलित था)–सं० वर्णमालिका > वण्णमालिआ > वाणमालिआ > बानवारिआ > बनवारी (बनवारी उन शलाकाओं को कहते थे जिनके सिरे पर भिन्न-भिन्न वान या शुद्धि के सोने की छोटी गोलियाँ लगी रहती थीं)।

बनसी— स्त्री० (मछली फँसाने की कँटिया)–सं० वडिश > हिं० बनसी।

बनाउरि—पु० हिं०, प्रा० प्र०, स्त्री० (वाणों की अवली, तीरों की कतार, तीरों की लगातार वर्षा)–सं० वाणावलि > वणाउलि > हिं० बनाउरि।

बनाना— क्रि० (रचना, अस्तित्व में लाना, रचना)– मुण्डारी भाषा बानाइ (Bānāi)– noun form of Bai (दे०, मु० इ० डि०)। तुल० पं० बनाणा, कश्मी० बनावुन्, मं० बांधणें, गु० वधवुं।

बनारस—पुं० (काशी, वाराणसी)–सं० वाराणसी > अप० बाराणसी > हिं० बनारस।

बनिया—पुं० (वैश्य, व्यापारी)– सं० वणिक् > प्रा० वणिअ > अप० बाणिया (प्रबन्ध चिन्तामणि) > हिं० बनिया।

बनौरा—पुं० (वन के बीज)–सं० वन + पोतलक > वन + ओलअ > बनौला >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बनौरा ।

बपुरा—वि० (बेचारा)–प्रा० वप्पुड> देशी वप्पुड>बापुरा । गु० बापडु ।

बफारा—पुं० (ओषधिमिश्रित जल को औटाकर उसकी भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेकने का काम)– सं० बाष्प>प्रा० वप्फ+आरा>हिं० बफ +आरा (प्र०) ।

बबूल—पुं० (एक काँटेदार पेड़)–सं० बर्बुर>प्रा० बब्बूल (पाइअ०)>हिं० बबूल ।

बयर— पुं० (वैर)–सं० वैर>प्रा० वइर, वेर>अवधी बयर ।

बयरी—पुं० (दुश्मन)– सं० वैरिन्> प्रा० वइरि>अवधी बयरी ।

बयान—पुं० (१- वर्णन, २ कथन)–अ० बयान ।

बयाना—पुं० (मूल्य, पारिश्रमिक आदि का वह अंश जो कोई काम कराने या कोई चीज खरीदने की बातचीत पक्की करने के समय पहले लिया या दिया जाता है)– (१) सं० उपायन > प्रा० उवायण (पाइअ०)>बायना>बयाना । (२) अ० फ़ा० बैआनः>बयाना ।

बयारि(१व)—स्त्री० (हवा)–सं० वाता-वली>भो० बयारि ।

बयालीस—वि० (इकतालीस और एक)– सं० द्विचत्वारिंशत् या द्वाचत्वारिंशत्> अ० मा० बायालीस>अप० बाआलीस >हिं० बयालीस ।

बयासी, बियासी— वि० (अस्सी और दो)–सं० द्विअशीति>प्रा० विअसी > अ० मा० बासीइ>अप० बेआसी (प्रा० पैं०)>हिं० बयासी, बियासी । तुल० पं० बिआसी, बं० बिरासी, ओ० बयासी ।

बयेस—स्त्री० (उम्र)–सं० वयस् ।

बरकत— स्त्री० (सौभाग्य, बढोतरी, प्रचुरता)–अ० बरकत ।

बरखना—पुं० हिं०, क्रि० (वर्षा होना)– सं० वृष>प्रा० वरिस>हिं० बरसना, बरखना ।

बरखा—स्त्री० (बारिश)–सं० वर्षा> प्रा० वरिषा>पु० हिं० बरखा । तुल० सिं० वर्खा, गु० बरसाद, अस० बरषुण, ओ० वर्षा, बरषा, ते० वर्षमु, म० वृष्टि ।

बरखास्त—वि० (जो नौकरी से हटा दिया गया हो, विसर्जित)–फ़ा० बरखा-स्त ।

बरखुरदार—वि० (भाग्यवान, फूलता फलता, बेटा)–फ़ा० बरख़ुर्दार ।

बरग(१) (पद०)—पुं० (झण्डा)–तुरकी बैरक>हिं० बैरख, बरग ।

बरगा—प्र० (संज्ञाओं और सर्वनामों के साथ समानता बताने के लिए प्रयुक्त)– सं० वर्गकः>हिं० बरगा, ह० बर्गा ।

बरज (पद०)—स्त्री० (मनाही)– सं० वर्जन>प्रा० वज्जण>बरज ।

बरजना—क्रि० (मना करना)–सं० √ वृज्, सं० वर्जय् >प्रा० वज्ज > हिं० बरजना ।

बरत[1](१)—ज० प्र०, स्त्री० (पुर खींचने वाली मोटी रस्सी)–सं० बरत्रा>बरत ।

बरत[2]—पुं० (उपवास)– सं० व्रत> बरत (बो०) ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बरफ— पुं० (बर्फ)– सं० वप्र, फ़ा० वरफ। ईरानी बफर। तुल० पं० बरफ, उर्दू बर्फ़, ओ० गु० अस० वरफ।

बरस—पुं० (साल, संवत्सर, संवत्)– सं० वर्ष>प्रा० वरिस > हिं० वरस, वरष।

बरसगाँठ—स्त्री० (जन्म दिन)–सं० वर्ष ग्रन्थि>प्रा० वरिसगंठि> हिं० बरसगाँठ।

बरसोले(१)—पुं० (खाँड के गोले जिनमें इलायची, कपूर, केसर आदि डालते थे और जिनका शरवत बनाते थे)–सं० वर्षोपल>वर्षोलक>बरसोले।

बरात—स्त्री० (विवाह के समय वर के साथ कन्या वालों के यहाँ जाने वाले लोगों का दल)– सं० वरयात्रा> प्रा० वरजत्त>वरात्त>बरात, बारात।

बराबर— वि० (समान, तुल्य)–फ़ा० बराबर।

बरामदा—पुं० (मकानों में आगे या कुछ बाहर निकला हुआ छायादार छज्जा)– फ़ा० बरामदः, सं० वरण्ड।

बरिअ(१) (पद०)—वि० (सबल, पराक्रमी)– सं० बलिक>प्रा० बलिअ > अप० बरिअ।

बरिबंडा(१) (पद०)—वि० (बलवान)– सं० बलिवृन्द>अप० बलिवण्ड>बरिबंडा।

बरियार(१) (पद०)—वि० (बलवान)– सं० बलकारी>बरयारी>बरियार।

बरिस—क्रि० (बरसता है)–सं० वर्षति >प्रा० वरिसइ (सं० वृष>प्रा० वरिस) >हिं० बरिस।

बरु-बरु—क्रि० (बड़बड़ाना)– प्रा० बड-बड>हिं० बड़बड़>बरबर>बरु-बरु।

बरुआ(१) (की०)—पुं० (बटु, ब्रह्मचारी, लड़का)–सं० बटुक>प्रा० बडुअ, बडुआ >प्रा० बरुआ>अव० बरुआ।

बरुथ—पुं० (सेना, दल)–सं० बरूथ> बरूथ।

बरेंड़ा—पुं० (१-लकड़ी का वह गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजन की लंबाई के एक पाखे से दूसरे पाखे तक रहता है, २- छाजन या खपरैल के बीचोबीच का सबसे ऊँचा भाग)–सं० वरदण्ड>प्रा० वरंड>हिं० बरेंड़ा, स्त्री० बरेंड़ी, छ० बरेंडी।

बरोठा(१)— पुं० (बाहरी दरवाजे के सामने का चौतरा या छज्जा)–सं० द्वारकोष्ठक>बरोठा (ज० प्र०)।

बर्ध—स्था० प्र०, पुं० (बैल)–सं० वर्द >प्रा० बलद्द>बलध>बरध>बर्ध।

बर्फी—स्त्री० (एक प्रसिद्ध मिठाई)– फ़ा० बर्फ़ी।

बर्बर—पुं० (१- उजड्ड और मूर्ख २- जंगली आदमी)– सं० बर्वर > प्रा० बब्बर।

बलकल—पुं० (पेड़ की छाल का बना हुआ वस्त्र)–सं० वल्कल>बलकल।

बलद—पुं० (बैल)– सं० बलीवर्द> प्रा० बलीवद्द > हिं० बलद (ग्राम्य प्रयोग)।

बलिहारी—स्त्री० (प्रेम, श्रद्धा आदि के कारण अपने आपको किसी के अधीन या किसी पर निछावर कर देना)–सं० बलिहारिन्>हिं० बलिहारी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बल्लहा[1] (की०)— वि० (प्यारा)– अव०– सं० वल्लभ > प्रा० वल्लभ, वल्लह ।

बसंत—पुं० (मधुमास)– सं० वसन्त (वस् =रहना या सुगन्ध आना) > प्रा० वसंत, हिं० बसंत ।

बस—पुं० (बल, जोर, ताकत)–सं० पा० प्रा० वस > हिं० बस । वि०–(यथेष्ट, पर्याप्त, भर-पूर)–फ़ा० बस ।

बसउ—क्रि० (वास करो)–सं० वसतु > अप० वसउ ।

बसन—पुं० (वस्त्र)–सं० वसन > प्रा० वसण > हिं० बसन ।

बसह—पुं० (बैल)– सं० वृषभ > प्रा० वसभ > हिं० बसह, भो० बसहा ।

बसाख—पुं० (बसाख का माह)– सं० वैशाख > हिं० बसाख, ह० बसाख् ।

बसीठ[1]—पुं० (दूत, भेजा हुआ)–सं० अवसृष्ट > प्रा० अवसिट्ठ > वसिट्ठ > वसीठ > बसीठ ।

बसेरा— पुं० (टिकने की जगह)– सं० वासगृह > प्रा० वासघर, वासहर > वसइहर > वसेहर > हिं० बसेरा ।

बस्त[1]—प्रा० प्र०, पुं० (वस्तु)– सं० वस्तु > प्रा० वत्थु > पु० हिं०, द० हिं० वस्त ।

बस्त[2]— प्रा० प्र०, पुं० (वस्त्र)–सं० वस्त्र > प्रा० वत्थ > हिं० बस्त ।

बस्त[3]—पु० हिं०, स्त्री० (अपान, गुदा, वस्ति, वक्षःस्थल)– सं० वस्ति > प्रा० वत्थि > पु० हिं० बस्त ।

बस्ता—पुं० (कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें पुस्तकादि बाँधकर रखते हैं)– फ़ा० बस्तः ।

बहँगी—स्त्री० (तराजू की तरह का एक प्रसिद्ध ढाँचा जिसके दोनों पलड़ों में बोझ रखकर ढोया जाता है,काँवरि)–सं० विहङ्गिका (अमरकोश) > बहँगी ।

बहक—स्त्री० (बहकने की स्थिति, पथ-भ्रष्टता)–सं० बर्ह् + क्त > हिं० बहक ।

बहत्तर—वि० (इकहत्तर और एक)–सं० द्वासप्तति > अ० मा० बावत्तरि > अप० बाहत्तरि > हिं० बहत्तर ।

बहनोई—पुं० (बहिन का पति)–सं० भगिनीपति > प्रा० बहिणीपइ > बहिणीवइ > बहिनउइ > हिं० बहनोई ।

बहनौता—पुं० (बहिन का पुत्र, भांजा)– सं० भगिनीपुत्र + क > प्रा० बहिणीपुत्तअ > बहिन उत्तअ > बहिनोत्तअ > हिं० बहनोता ।

बहरा—वि० (जो कान से न सुने या कम सुने)–सं० पा० बधिर > प्रा० बहिर > हिं० बहरा ।

बहल (पद०)—स्त्री० (रथ जैसी बैलगाड़ी)–सं० वहन > प्रा० वहण ।

बहली—स्त्री० (रथ के आकार की छतरीदार बैलगाड़ी)–सं० वाह्य (सावारी, यान, सं० वाह्याली > प्रा० वाहियाली > बाहली > हिं० बहली ।

बहाना—पुं० (अपने बचाव करने या मतलब निकालने के लिए कही हुई झूठी बात)–फ़ा० बहानः ।

बहारी, बुहारी— स्त्री० (संमार्जनी, झाड़ू)–सं० बहुकरी ।

बहिन— स्त्री० (बहिन, भगिनी)–सं० भगिनी > प्रा० भइणी > अप० बहिणि > बहिनी (बैसवाड़े की बो०) हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहिन, बहन। मेरठी बो० पं० भैण, उ० बहन, कश्मी० बेनि, सिं० भेण, म० बहीण, गु० बहेन। ज० श्वेस्टर (schwester)।

बहिनौत—पुं० (बहिन का पुत्र)– सं० भगिनीपुत्र>प्रा० बहिणीपुत्त> बहिनउत>हिं० बहिनौत।

बहिरा—वि० (बहरा)–सं० बधिर+क >प्रा० बहिरअ>अप० बहिरअ>हिं० बहिरा, बहिर (पद०), बहरा।

बहिला—स्त्री० (वंध्या गाय)– वैदिक सं० वशा (A. P. V. D., p. 581)।

बहीर— स्त्री० (सेना के साथ चलने वाले नौकर-चाकर, दूकानदार आदि, सेना की सामग्री)–फ़ा० बहीर।

बहुत—वि०(एक दो से अधिक, अनेक)– सं० प्रभूत>प्रा० पहुत्त>बहुत्त >हिं० बहुत।

बहुतायत— स्त्री० (अधिकाई)– सं० बहुता>हिं० बहुत+आयत (प्र०)।

बहुतेरा—क्रि० वि० (बहुत प्रकार से)– सं० प्रभूततर > हिं० बहुत + एरा (प्र०)।

बहुरिया—प्रा० प्र०, स्त्री० (नई बहू)– सं० वधूटिका>वहुलिआ (पाइअ०)> बहूरिआ>हिं० बहुरिया।

बहू—स्त्री० (पत्नी, दुलहिन)–सं० वधू >प्रा० वहू>हिं० बहू।

बहेड़ा—पुं० (गोल फल का एक वृक्ष, फल-विशेष)–सं० विभीतक>प्रा० बहेडअ>बहेडय>हिं० बहेड़ा।

बहोरना—क्रि०(लौटना, वापिस होना)– सं० व्याघुट (to turn back, दे०, मो० वि०)>वाहुड+ना>बाहुरना> बहुरना>बहोरना>बहोरा>बहोर।

बांचा[1] (पद०)— क्रि० (जाना, पहुँचना)–सं० व्रज (जाना)>प्रा० वच्च, वच्चइ>बाँचना।

बांट–स्था० प्र०—क्रि० (रस्सी को बल देना)–सं० वृत्तय्> प्रा० वत्त, वट्ट> हिं० बांट।

बांभण, बाह्मण—पुं० (ब्राह्मण)–सं० ब्राह्मण >प्रा० बंभन>अप० बाम्हण।

१- बाँक[1]—पुं० (पहाड़ों में नदी के बर्फीले उद्गम-स्थान, अं० ग्लेशियर)– सं० वक्त्र>बाँक (ज० प्र०)।

२- बाँक—स्त्री० (बाँह या पैरों में पहनने का एक गहना, कमान, एक प्रकार की छुरी)–सं० बंक।

बाँका[1]—वि० (तिरछा, टेढ़ा)–सं० वङ्क >प्रा० वंक>हिं० बाँक, बाँका।

बाँका[2]—पुं० (लोहे का बना हुआ एक प्रकार का हथियार जो टेढ़ा होता है)– सं० वक्र>प्रा० वक्क>बंक, बाँका।

बाँचना—क्रि० (पढ़ना)–सं० वाचयति (वाचय्) > वच परिभाषणे, वचति, प्रा० वाच, हिं० बाँच + ना।–पुं० वाचनम्।

बाँछा— स्त्री० (इच्छा)–सं० वाञ्छा> प्रा० वंछा>पु० हिं० बाँछा।

बाँझ—स्त्री० (वह स्त्री जिसके सन्तान न होती हो)–सं० वन्ध्या>प्रा० वंझा >वंझ>स० वाँझे>हिं० बाँझ।

बाँट—पुं० (बाट)–सं० वटक।

बाँट, बाँटा—पुं० (हिस्सा)–सं० वण्टकः (अमरकोश, द्वितीय काण्ड, श्लोक ८९)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>हिं० बाँट ।

बाँध— पुं० (पानी की रोक, घुस्स, बंद)–सं० बन्ध > प्रा० बंध > हिं० बाँध ।

बाँधना—(रस्सी आदि की सहायता से किसी पदार्थ को बंधन में करना)–सं० बन्ध्>प्रा० बंध>हिं० बाँधना ।

बाँधी[1] (पद०)— स्त्री० (अंगों की जकड़न, ऐंठन)–सं० बन्धिका>बंधिआ >बाँधी ।

बाँबी— स्त्री० (दीमकों के रहने का भीटा, बँबीठा, कीट विशेष-कृत मिट्टी का स्तूप, ढूह)– सं० वल्मीक> प्रा० वम्मिअ>बामी>बाँबी ।

बाँव (पद०)—वि० (बाईं दिशा का)– सं० प्रा० वाम ।

बाँस—पुं० (गाँठों वाला पोला लाठा)– सं० वंश>प्रा० वंस>अप० बंस>हिं० बाँस । तुल० पं० उर्दू, बाँस, सिं० बाँसु, गु० बांस, बं० बाँश ।

बाँसुरी— स्त्री० (बाँस का बना हुआ प्रसिद्ध बाजा)–सं० वंशिका>बाँसुरी । तुल० उर्दू बांसरी, कश्मी० बंसरी, सिं० बाँसुरी, म० बासरी, गु० बांसरी, बं० बाँशी, ओ० बंशी ।

बाँह—स्त्री० (बाजू)–सं० बाहु>पा० प्रा० बाहु>हिं० बाँह ।

बाईस— वि० (बीस और दो)–सं० द्वाविंशति>पा० बावीसति, बावीस> प्रा० बावीस>अप० बावीस, बाईस> हिं० बाईस ।

बाउर— वि० (बावला, मूर्ख)– सं० वातुल>प्रा० बाउल>हिं० बाउर ।

बाऊ (पद०)—पुं० (वायु)–सं० वायु >प्रा० वाउ> बाऊ ।

बाकी—स्त्री० (शेष)–अ० बाक़ी ।

बाखड़ी— स्त्री० (वह गाय या भैंस जिसका दूध गाढ़ा हो गया हो और जिसका प्रसव हुए काफी समय हो गया हो)–सं० वष्कयणी (अमरकोश, द्वितीय काण्डम्) ।

बाग[1]—स्त्री० (घोड़े की लगाम)–सं० वल्गा>प्रा० वग्गा>वग्ग>हिं० बाग ।

बाग[2]—पुं० (उद्यान, वाटिका)– फ़ा० बाग़ (दे० A concise Dictionary of the Persian Language) । तुल० बं० बागिचा, बागान; म० बाग, ओ० बगिचा, गु० बाग, बगीचो; अस० बागिचा ।

बागुर—पुं० (जाल, बंधन, फंदा)–सं० बागुरा (स्त्री०) >प्रा० वागुर>बागुर ।

बाघंबर—पुं० (बाघ की खाल)– सं० व्याघ्राम्बर>बाघंबर ।

बाँघबरी—पु० हिं०, वि०(बाघंबर ओढ़ने वाला)–सं० व्याघ्राम्बर>हिं० बाघंबर +ई (प्र०) ।

बाघ—पुं० (शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जन्तु)–सं० व्याघ्र>प्रा० वग्घ>हिं० बाघ ।

बाचा (पद०)— स्त्री० (वाक् शक्ति, वाक्य)– सं० वाचा> प्रा० वाच> बाचा ।

बाछा— पुं० (गाय का बच्चा)–सं० वत्सक>प्रा० बच्छ>हिं० बाछा ।

बाज[1]—पुं० (बाजा)–सं० वाद्य>प्रा० वज्ज>अप० बाज>अव० बाज ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाज[१]—पुं० (घोड़ा)–सं० वाजिन्> >प्रा० वाजि>हिं० बाज।

बाज[२]— पुं० (एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी)–अ० बाज़।

बाज[४]—क्रि० वि० (बिना)–सं० वर्जं> >प्रा० वज्ज>वाज>बाज।

बाजना(१) (पद०)— क्रि० (आवाज़ निकलना, प्रसिद्ध होना)–वाद्यते>वज्जइ >बाजै, बाजना।

बाजरा—पुं० (एक प्रकार का अनाज)–पह० बाज़ारा (A.O.P.P.G., p. 96)।

१- बाजा(१) (पद०)—क्रि० (पहुँचा)–सं० व्रजति > प्रा० वज्जइ > वाजइ, बाजना।

२- बाजा— पुं० (वाद्य, बजाने का यन्त्र)–सं० वाद्य>प्रा० वज्ज > हिं० बाजा, ह० बॉज्जा।

बाजार—पुं० (वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार की दूकानें हों)– पह० बाज़ार (A. O. P. P. G., p. 97) फ़ा० बाज़ार।

बाजीगर—पुं० (१- जादूगर, २- नट)–फ़ा० बाज़ीगर।

बाट— पुं० (पंथ, वर्त्म, मार्ग)–सं० वर्त्मन्>प्रा० वट्ट>अप० वट्टं (दे०ना० मा०)>हिं० बाट, ह० बाट्।

बाँटा(१) (पद०)— पुं० (मार्ग)–सं० वर्त्मन्>प्रा० वट्ट>हिं० बाट।

बाड़—स्त्री० (अहाता या घेरा जिसे काँटों से बनाते हैं)– सं० बाट>प्रा० वाड (पाइअ०)>हिं० बाढ़।

बाड़ी—स्त्री० (छोटा बाग)–सं० वाटिका >प्रा० वाडिआ>हिं० बाड़ी, बारी।

बाढ़—स्त्री० (नदी के पानी का उभड़ना, बढ़ती)–सं० वृद्धि>प्रा० वड्ढिअ, वड्ढअ>हिं० बाढ़। तुल० ओ० बढ़ि, पं० हड़, अस० बानपानि।

बांढ़ी(१) (पद०)—क्रि० (वृद्धि हुई)–सं० वृद्धि > प्रा० वड्ढि > वाढि > बाढ़ी।

बाणि—स्त्री० (वाणी)–सं० वाणी> हिं० बाणि>पु० हिं० बानि।

बात[१]—स्त्री० (वचन, बोल)–सं० वार्त्ता >प्रा० वत्ता>वत्त>हिं० बात।

बात[२]—स्त्री० (हवा०)–सं० वात > प्रा० वाय, वात>हिं० बात।

बाती—स्त्री०(वत्ती, बटी हुई रूई, दीपक में जलने वाली बाती)–सं० वर्त्ति> प्रा० वट्टि, वत्ति>बत्ती>हिं० बाती।

बातें—(बातचीत)–सं० वार्त्तानि>प्रा० वत्ताणि>वत्तानि>हिं० बातें।

बादर—पुं० (बादल) सं० वार्द (दे०, सं० श० कौ०)>हिं० बादर। तुल० पं० बद्दल, गु०वादळ्ं।

बादल—पुं० (मेघ)–सं० वारिद > वादिर>वादिल>हिं० बादल।

बादाम—पुं० (एक प्रसिद्ध मेवा)–फ़ा० बादाम। तुल० पं० बदाम, कश्मी० बादाम्, म० गु० बदाम, बं० अस० ओ० उर्दू बादाम, ते० बादमु, त० बादाम्, मल० बदाम्।

बादी[१]—स्त्री० (घाटी)–फ़ा० वादी।

बादी[२]—पुं० (बाजीगर)–फ़ा० बाज़ी।

बादी[३]—पुं० (मुद्दई, प्रतिद्वंद्वी)–सं० वादिन>हिं० बादी, वादी।

बान[१]—पुं० (कसौटी पर कसने का रंग

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या रेखा)–सं० वर्ण > प्रा० वण्ण > बान।

बान[2]—पुं० (बाण तीर)–सं० बाण।

बानगी—स्त्री० (नमूना)–सं० वर्णिका >प्रा० वण्णिआ, वन्निआ (पाइअ०)> हिं० बानगी।

बानवे—वि० (नब्बे और दो)–सं० द्विनवति > प्रा० बाणवइ अ० मा० बाणउइ>अप० बाणउइ>हिं० बानवे। तुल० सिं० बिआनवे, म० ब्याण्णव, ओ० बयानवे।

बाना — पुं० (रंगीन वेशभूषा, पहनावा)–सं० वर्ण+क>प्रा० वण्णय> बाणा>हिं० बाना।

बानी[1]—स्त्री० (बोली, वाणी, कथन)–सं० प्रा० वाणी>अवधी बानी, पु० हिं० बानि।

बानी[2] — स्त्री० (वर्ण, रंग, बानगी, नमूना)–सं० वर्णिका>प्रा० वण्णिआ, वन्निआ>हिं० बानी।

बाप—पुं० (पिता, जनक)–सं० वप्तृ, वप्ता, (बोने वाला)>प्रा० बप्प अप० बप्पो (दे० ना० मा०)>अप० बप्प >हिं०बाप। तुल० गु० बापा, ने० म० बाप। बल्गा० वस्ता।

बापुरा—वि० (तुच्छ, दीन, बेचारा)–प्रा० बप्पुड, बप्पुडा>बबुआ > बबुड़ा (ड़ा प्र०)>हिं० बापुरा। तुल० गु० बापडु, म० बापुड़ा। स्त्री० बापुरी अप० बापुड़ी (महा०)>हिं० बापुरी।

बाफ—प्रा० प्र० स्त्री० (कोई तरल पदार्थ खौलाने से उसमें से उठा हुआ धुएँ के आकार का पदार्थ)–सं० वाष्प हिं० बाफ। तुल० उर्दू भाप, सिं० बाफ, अस० भाप, ओ० बांफ।

बाबरची — पुं० (इसोइया) – फ़ा० बावरची।

बाबीहा—पुं० (पपीहा नामक पक्षी)–प्रा० बप्पीह>अप० बप्पीहा, राज० बाबीहा, पपीहा।

बाबुल—पुं० (१- पिता, २- बाबू)–सं० वप्तृकुल>प्रा० बप्पकुल>बावउल >हिं० बाबुल।

बामा—स्त्री० (सुन्दर स्त्री)–सं० वामा (वामाङ्ग में बैठने वाली)>प्रा० वाम (सुन्दर, मनोहर)>हिं० बामा।

बायाँ—वि० (दहिना का उलटा)–सं० पा० प्रा० वाम>अप० बाँव > बाम्रँ बायँ>हिं० बायाँ। तुल० गु० वाम्, म० वाव।

बार[1]—पुं० (दरवाज़ा)–सं० प्रा० वार >अप० हिं० बार।

बार[2]—स्त्री० (काल, समय)–सं० पा० प्रा० वार>हिं० बार। तुल० पं० बार, वार; सिं० वार, गु० वार।

बारम्बार—क्रि० वि० (प्रायः, बहुधा, बारबार)–सं० प्रा० वारंवार > हिं० बारम्बार।

बारह—वि० (दस और दो)–सं० द्वादश >अप० दुवारह>हिं० बारह।

बारहखड़ी—स्त्री० (व्यंजनों में बारह स्वरों का मिलान)–सं० द्वादशाक्षरी> अप० दुबारह अक्खरी>बारहखरी > हिं० बारहखड़ी।

बारहसिंगा—पुं० (हिरन की जाति का एक पशु)–सं० द्वादशशृङ्गिन्>बारस-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिंगि > हिं० बारहसिंगा ।

बारा—(पद०) पुं० (द्वार)–सं० द्वार > प्रा० वार > बारा ।

बारात—स्त्री० (वह समाज जो वर के साथ उसे ब्याहने के लिए वधू के घर जाता है)–सं० वरयात्रा > प्रा० वरयत्ता हिं० बारात ।

बारी[1]—स्त्री० (वाटिका)–सं० वाटिका > प्रा० वाडिआ > बाडी > हिं० बारी, बारि (पद०) ।

बारी[2]—स्त्री० (कान में पहनने का आभूषण, बाली)–सं० वल्ली (काशिका ६/२/४३) > बाली > हिं० बारी ।

बारी—स्त्री० (अवसर)–सं० प्रा० वार > तुल० पं० वारी, सिं० गु० वारो ।

१- **बारू**—प्रा० प्र०, पुं० (बालू, रेती, रेत)–सं० बालुका > प्रा० वालुआ > हिं० छ० बालू, पु० हिं० बारू (स्था० प्र०) ।

२- **बारू**[1] — (पद०)पुं० (द्वार)–सं० द्वार > प्रा० वार > बार, बारू ।

बारूद—स्त्री० (गंधक और शोरे की मिश्रण)–फ़ा० बारूद ।

बारोठा—पुं० (नव वधू द्वारा देहली की पूजा)–सं० द्वार काष्ठ > प्रा० वार-कट्ठ > बारअट्ठ > बारउट्ठ > बारोठ > हिं० बारोठा ।

बाल[1]—पुं० ('बाल भर का भी फर्क नहीं' में 'बाल' शब्द का प्रयोग)–सं० वल्ल । टिप्पणी — "श्रीधराचार्य कृत गणितसार ग्रन्थ की टीका के अनुसार ३ रत्ती की तोल 'वालु' या 'वल्ल' कहलाती थी। वल्ल का दूसरा नाम 'निष्पाव' भी था।....तीन रत्ती की तोल वाले वल्ल से अप० 'बालु' और उससे हिं० 'बाल' सिद्ध होता है" — डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ना० प्र० प० भाग ५४, अंक २-३) ।

बाल[2]—पुं० (केश)–सं० वाल (मो० वि०) > हिं० बाल ।

बालम—पुं० (प्रियतम, पति)–सं० प्रा० वल्लभ > हिं० बालम ।

बाली—स्त्री० (कान का गहना)–(१)सं० वलय (छल्ला, कुंडल) > हिं० बाली । (२) सं० वल्ली > हिं० बाली ।[1] "पाणिनि के 'चतुर्थी तदर्थे' (६/२/४३) सूत्र पर कुंडल-हिरण्यं, वल्ली-हिरण्यं (कुंडल के लिए सुनार को दिया हुआ सोना, बाली बनवाने के लिए दिया हुआ सोना), ये दो उदाहरण काशिका में दिए हैं।"—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ना० प्र० प०, भाग ५४, अंक २-३) । तुल० पं० वाली०, बं० वालि ।

बाल्टी—स्त्री० (बालटी)–पुर्त० बाल्दे (balde=buehet, S. L. D., p. 458) ।

बावड़ी—स्त्री० (छोटा गहरा तालाब, बावली)–सं० वापिका > हिं० बावड़ी । तुल० पं० बाउ, गु० बाव, कश्मी० बावी ।

बावन—वि० (पचास और दो)–सं० द्विपञ्चाशत् > पा० द्विपण्णासा > अ० मा० बावण्ण > अप० दुवण्णास > हिं० बावन ।

बावना—वि० (बौना)–सं० वामन + क > प्रा० वावणअ > हिं० बावना ।

बावला—पुं० (पागला, दीवाना)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वातुल+क > प्रा० वाउलअ> अप० वाउल्लो, (दे० ना० मा०) बाउल्ल> बावल्ल > हिं० बावला। तुल० गु० बावरूँ, म० बावळा।

बावशूल—पुं० (पेट की पीड़ा)–संवात-शूल।

बासठ—वि० (इकसठ और एक)–सं० द्वाषष्टि>अ० मा० वासट्ठि, वावट्ठि> अप० बासट्ठि, बासट्ठी (प्रा० पैं)>हिं० बासठ।

बासन[1]—पुं० (पात्र)–सं० वासन> प्रा० वासण (पाइअ०)>हिं० बासन।

बासना[1]—स्त्री० (निम्नकोटि की इच्छा, गंध)–सं० वासना > प्रा० वासणा> हिं० बासना।

बासना[2]—वि० (सुगन्धित करना)–सं० वासय्>प्रा० वास>हिं० बासना।

बासहिं[(1)]—(पद०) क्रि० (पक्षियों का बोलना)–सं० वाश्>प्रा० वास।

बासा[1]—(पद०) वि० (अधीन, वशी-भूत)–सं० वश्य>प्रा० वस्स>(पाइअ०) हिं० बासा।

बासा[2]—पुं० (वह स्थान जहाँ मूल्य देकर भोजन का प्रवन्ध हो)–सं० प्रा० वास>बासा।

बासी—वि० (निवासी)–सं० वासिन् (√वस्=रहना)>प्रा० वासि>हिं० बासी।

बासी[2]—(पद०) क्रि० (बश में पाना)–सं० वश्य>प्रा० वस्स>वासि>बासी।

बासी[1]—वि० (जो ताजा न हो, बदबू-दार, देर का बना हुआ)–सं० प्रा० वास हिं० बासी।

बाहर—क्रि० वि० (भीतर का उलटा)–सं० वहि>पा० बाहिरो>प्रा० वाहि-रअ>हिं० बाहर। तुल० ओ० वाहार, सिं० बाहरी, गु० बाहर, ने० बाहर।

बिंदी — स्त्री० (१- शून्य का सूचक चिह्न, जो यह है—०, सिफर, २- माथे पर लगाया जाने वाला छोटा गोल टीका)–सं० विन्दुकित>प्रा० बिंदुइअ> बिंदइ>हिं० बिंदी। तुल० गु० बिंदु, म० बिन्दी।

बिंब—पुं० (प्रतिबिंब, छाया) – सं० बिम्ब>प्रा० हिं० बिंब।

बिआना—क्रि० (बच्चा देना, जनना)–सं० विजनन (वि०√जन्+ल्युट्)> प्रा० विआयण>तुल० गु० वियावुं।

बिआनी—क्रि० (मादा पशु का बच्चा पैदा होना, बीज लायी)–सं० बीज-आनयति > बीजानी > बीआना > बिआनी।

बिखर—क्रि० (खंडों या कणों आदि का इधर-उधर गिरना या फैल जाना)–सं० वि + कृ > प्रा० विक्किर > हिं० बिखर।

बिखरना — क्रि० (छितराना, तितर बितर होना)–सं० वि + कृ > प्रा० विक्किर>हिं० बिखर+ना।

बिगंध—(आ० क०) स्त्री० (बदबू, बुरी गंध या महक)–सं० दुर्गन्ध > प्रा० दुग्गंध।

बिग—(पद०) पुं०(भेड़िया)–सं० वृक प्रा० विग>हिं० बिग।

बिगसैली[(1)]—(पद०) वि० (विकास-शील)–सं० विकासिन् > प्रा० विआ-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिल्ल, बिगसिल्ल > बिगसील, बिगसीली, बिगसैली।

बिगाड़—पुं० (बिगाड़ने की क्रिया या भाव)–सं० विकार>प्रा० विगार > हिं० बिगाड़।

बिगाड़ना—क्रि० (१- किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण में विकार उत्पन्न करना, २- बुरी दशा में पहुँचाना, ३-अनीति या बुरे मार्ग में लगाना)–सं० विघट्टय् > पा० विघाटेति>प्रा० विघट्ट>विघड> हिं० बिगाड़ना। तुल० पं० बिगाडणा, सिं० विगारणु।

बिग्यान—पुं० (विज्ञान)–सं० विज्ञान >प्रा० विआण>बिग्यान>विज्ञान।

बिच्छू—पुं० (एक ज़हरीले कीड़े का नाम जिसके डंक में विष भरा रहता है)–सं० वृश्चिक>विच्छिक>विच्छिअ महाराष्ट्री विच्छुव>विच्छुअ> बिच्छू। तुल० कश्मी० ब्युंछ, गु० वींछी, सिं० विछूं, बं० बिछा, म० विंचू, अस० ओ० बिछा।

बिछोवा(१)—(पद०) पुं० (विरह)–सं० विक्षोभ>प्रा० विच्छोह > अप० विच्छोय>हिं० बिछोवा।

बिजना—पुं० (पंखा)–सं० व्यजन> प्रा० विअण>हिं० बिजना (बो०)।

बिजनी — स्त्री० (छोटा पंखा)–सं० व्यजनिका > प्रा० विअणिआ > हिं० बिजनी।

बिजली — स्त्री० (दामिनी, चपला, बिज्जु)–सं० विद्युत्>प्रा० विज्जुआ, विज्जुला, विज्जलिया विज्जुलिआ, विज्जुली >हिं० बिजली। तुल० पं० ओ० सिं० बिजली, अस० बिजुली, म० वीज बं० विद्युत।

बिजौरा—पुं० (एक प्रकार का नींबू)–सं० वीजपूर+क>प्रा० बिज्जऊरअ> बीजोर>हिं० बिजौरा।

बिड़ी—स्त्री० (रस्सी को पिंडे की भाँति लपेटना)–सं० वीटिका>प्रा० वीडिआ >वीड़ी>बिड़ी।

बितीत—वि० (व्यतीत)–सं० व्यतीत> प्रा० वितीत>हिं० बितीत।

बित्ता—पुं० (बालिश्त)–सं० वितस्ति (अमरकोश) >प्रा० विवत्थि > हिं० बित्ता।

बिथरना— क्रि० (बिखरना, फैलना)–सं० वि+स्तृ > प्रा० वित्थर > हिं० बिथरना।

बिथा—पुं० हिं० स्त्री० (दुःख, पीड़ा)–सं० व्यथा>प्रा० विथा>हिं० बिथा।

बिथुरा(१८)—वि० (अलग-अलग, छिटका हुआ, जैसे बिथुरे केश=छिटके हुए केश, बिखरा हुआ) – सं० विधुर > हिं० बिथुर।

बिदा—स्त्री० (रुखसत, गमन, विदा, प्रस्थान)–फ़ा० विदाअ।

बिधंसै (पद०)—क्रि० (विध्वंस करता है)–सं० विध्वंसति (सं० वि+ध्वंस्)> प्रा० विद्धंसइ>बिधंसै।

बिनउब(१) (पद०)—स्त्री० (विनती)–सं० विज्ञप्ति>विञ्ञति>विन्नति > विनती, विनति।

बिनती—स्त्री० (प्रार्थना)–सं० विज्ञप्ति > विञ्ञति > बिणत्ति>बिनत्ति > बिनति (पद०), बिनती।

बिनवै(१) (पद०)— क्रि० (प्रार्थना करना) – सं० विज्ञापयति > प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विण्णवइ > बिनवै ।

विपत — स्त्री० (विपत्ति)–सं० प्रा० विपत्ति > हिं० विपत, बिपत्त (बो०) ।

बिबरन—पु० हिं०, पुं० (अलग-अलग होना, ब्यौरना)–सं० विवरण > बिबरन । सं० प्रा० विवरण > बिबरन ।

बियाध — (पद०) पुं० (बहेलिया, व्याध)–सं० व्याध ।

बिरंचि—पुं० (ब्रह्मा)–सं० विरञ्चि > प्रा० विरंचि > पु० हिं० बिरंची ।

बिरछ✱ — पुं० (वृक्ष)–सं० वृक्ष > विरच्छ > हिं० बिरछ, बिरिछ (पद०) ।

बिरछा—स्था० प्र०, पुं० (वृक्ष)–सं० वृक्ष + क > विरच्छअ > विरच्छा > बिरछा ।

बिरमी — स्त्री० (ब्रह्मी लता)–सं० ब्राह्मी ।

बिरवा(१)—पुं० (वृक्ष)–सं० विटपक > विरवअ > बिरवा ।

बिरहा—पुं० (विरह का वर्णन करने वाला गीत)–सं० विरह ।

बिरादरी—स्त्री० (जातीय समाज)–फ़ा० बरादरी ।

बिरिध—वि० (बूढ़ा)—सं० वृद्ध > प्रा० विद्ध, वद्ध > पु० हिं० बिरिध (प्रा० प्र०) ।

बिरयाँ—स्त्री० (समय, वक्त, बेला)–सं० बेला > हिं० बिरियाँ, बिरिया (बो०) ।

बिल—पुं० (पृथ्वी के अंदर खोदकर बनाई हुई जीव जन्तुओं के रहने की तंग छोटी जगह, विवर)–सं० बिल (√बिल + क) > पा० प्रा० बिलु > हिं० बिल । तुल० सिं० बिरू ।

बिलख—स्त्री० (दुखी होने का भाव)–सं० विलप् प्रा० विलव > हिं० बिलख ।

बिलसहु (पद०)—क्रि० (विलास करो, भोग करो)–सं० विलस् > प्रा० विलस ।

बिला—अव्य० (बिना)–अ० बिला ।

बिलाना — क्रि० (मिट जाना, नाश होना)–सं० विलयन ।

बिलाव — पुं० (मार्जार, बिलार, बिल्ला)–सं० प्रा० विडाल > बिलाउ > हिं० बिलाव (व श्रुति का आगम) ।

बिलोचन—पुं० (लोचन, आँख)–सं० विलोचन > प्रा० विलोअण > हिं० बिलोच ।

बिलोना—क्रि० (मथना)–सं० वि + लोडय् > प्रा० विलोड > हिं० बिलोना ।

बिलौटा—पुं० (बिल्ली का बच्चा)–विडालपोत > बिलाडओता > बिलौटा ।

बिल्ली — स्त्री० (मार्जारी, बिलारी, बिलैया)–सं० बिडालिका > प्रा० बिडालिआ, बिडाली > बिल्लिआ > हिं० बिल्ली ।

बिल्लौर—पुं० (एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर)–सं० वैदूर्य्यम् > वैल्लूर > हिं० बिल्लोर ।

बिस—पुं० (विष)–सं० विष > प्रा० विस > हिं० विष, पु० हिं०, द० हिं० बिस ।

बिसमय—(अखरा०)–पुं० (अचरज)–सं० विस्मय ।

बिसरना—क्रि० (भूल जाना)–सं० वि० + स्मृ > प्रा० विसर > हिं० विसर + ना ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिसहर (पद०)— पुं० (सर्प) सं० विषधर।

बिसारे[1] (पद०)—वि० (विषधर)–सं० विषधारक > बिसहारअ > बिसहारा > बिसारा।

बिसँधा[1] (पद०)— वि० (बिस या कमल की गंध वाला)–सं० बिसगंध > बिसयंध > बिसँध।

२-बिसँधा[1]— (पद०) वि० (मछली की चरबी जैसी गंध वाला)–सं० वसा-गंध > प्रा० वसायँध > बिसाँयँध > बिसँध।

बिस्तरबन्द — पुं० (बिछावन बाँधने वाला)–सं० विष्टर+बन्ध (विष्टर= कुशा का बना हुआ आसन) > बिस्तरबंध > हिं० बिस्तरबन्द।

बिहफै[1]—पुं० (गुरुवार)–सं० बृहस्पति > बिहप्पइ, बिहफई, बिहफै।

बिहराना[1] (पद०)— क्रि० (वियुक्त होना, अलग होना, टूट जाना)–सं० विप्पट > प्रा० विहड, विहडइ।

१- बिहरै[1]—(पद०) क्रि० (बिहरना, फटना)–सं० विघटयति > प्रा० विहडइ।

२- बिहरैं—क्रि० (विहार करें)–सं० विहरन्ताम्। (लोट लकार)।

बिहरना—पुं०, सं० विहार, विहरणम्।

बिहाई[1]—स्त्री० (देवी का नाम)–सं० वृद्धाआर्यिका > बिद्धाइया > बीधाइआ > बीहाई > बिहाई।

बींध—क्रि० (बीधना)–सं० व्यध् > प्रा० विद्ध > विंध > बींध।

बी, बीमाता[1] — स्त्री० (देवी का नाम)–सं० वृद्धिका > विद्धिआ > बिहिआ > विही > बिई > बी।

बीधा—पुं० (खेत नापने का एक वर्गमान जो बीस बिस्वे का होता है)–सं० विग्रह > प्रा० विग्गह > बीधा।

बीच—पुं० (किसी पदार्थ का मध्य भाग)–सं० विच् (विचिर्-पृथक् भावे, रूधादि गण, सिद्धान्त कौमुदी) > प्रा० विच्च > अप० विच्च (हे०) > हिं० बीच। तुल० पं० बिच्च, म० बीच, गु० वच्चे, वच; सिं० विचु।

बीजा—वि० (दूसरा)–सं० द्वितीया, पा० द्वितियो > प्रा० विइज्ज > अप० विज्जय, विइज्जिआ > हिं० बीजा।

बीजुरी[1] (पद०)—स्त्री० (बिजली)–सं० विद्युल्लता > विज्जुलया > प्रा० विज्जुलिया > विज्जुली > बीजुरी।

बीट—स्त्री० (जानवरों का मल)–सं० विष्ठा > प्रा० विट्ठा > हिं० बीट। तुल० म० विटी, सिंह० बेट्ठ।

बीड़ा—पुं० (पान का बीड़ा; चूना, कत्था, सुपाड़ी आदि सहित लगाया हुआ पान)–सं० बीटक > प्रा० वीडुग, बीडअ हिं० बीड़ा।

बीन—स्त्री० (वीणा)–सं० पा० प्रा० वीणा > हिं० बीन। तुल० पं० बीण, म० बीन।

बीनना—क्रि० (छोटी-छोटी चीजों को उठाना या चुनना, छाँटना)–सं० विन-यन। तु० पं० चुणना, उ० चुगना, म० वेचणें।

बीमा[1] — पुं० (किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि पूरी करने की जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है)–पह० बीम,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फ़ा० बीम (भय), जंद धातु बी (डरना)। सं० भीम, भी=डरना।

बीर—वि० (वीर)–सं० वीर > हिं० वीर, ह० वीर।

बीरान—वि० (जनहीन)–पह० अवीरान (नहीं है आबादी जिसमें), (avīrān= desolate, A. O. P. P. G., p.83)। फ़ा० वीरानः।

बीरो, बीरौ—पुं० (वृक्ष)–सं० विटप >प्रा० विडव>बिरउ>बीरौ।

बीस—वि० (दो दहाई)–सं० विंशति> प्रा० वीसइ>अप० वीस (प० च०)> हिं० बीस।

बीसवाँ—वि० (जो गिनती में उन्नीस के बाद हो)–सं० विंशतितमः (तमः >तवाँ) >हिं० बीसवाँ।

बीहड़—वि० (भयंकर)–सं० भीषण> प्रा० बीहण, बीहणग>बीहणअ>बीह-डअ>बीहड>बीहड़।

बीहन, बेहन—पुं० (अनाज आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है)–सं० बीज धान्यम्>प्रा० बीअधन्न>बिअहाणँ > हिं० बीहन, बेहन। तुल० म० वियाणें, सिं० बीहणु।

बुंदिया—स्त्री० (बेसन से बनी हुई खाद्य वस्तु)–सं० बिंदु। तुल० पं० बुन्द, म० बुंदी।

बुआ—स्त्री० (बूआ)–सं० पितृश्वसा> प्रा० विउहा >भुआ, फुआ, बुआ।

बुखार—पुं० (ज्वर)–फ़ा० बुखार।

बुजुर्ग—वि० (बड़ा, वृद्ध)–पह० वजुर्ग (vajorg=great, grand, A. O. P. P. G., p. 224)।

बुज्झइ[1] (की०)—क्रि० (जानना)–सं० बुध>प्रा० बुज्झ>अप० बुज्झइ।

बुज्झना—क्रि० (बूझना, समझना)–सं० बुध्यते>पा० बुज्झति>प्रा० बुज्झइ> अप० बुज्झ>स० बुझअ>हिं० बुझ+ ना (प्र०)। तुल० म० बुझ (णें), सिं० बुज्झणु।

बुझावै[1] (पद०)—क्रि० (समझाना)– सं० बुद्ध>बुज्झ>बूझना, बुझाना।

बुटी — स्त्री० (वनस्पति, वनौषधि, जड़ी)–सं० वृन्तिका।

बुड़ूकी (अखरा०)—स्त्री० (डुबकी)– सं० ब्रुडन>प्रा० बुड्डण, बुड्ड।

बुड़ै—(जा०) क्रि० (डूबता है)–सं० ब्रुड्>प्रा० बुड्ड>बुड़ै।

बुड्ढा ठेरा[1]—प्रा० प्र०, वि० (वृद्ध, बूढ़ा)– सं० वृद्ध अप० बुड्ढा। सं० स्थविर>पा० थेरा (देश भेद के कारण) >ठेरा।

बुड्ढ, बुड्ढा—वि० (वृद्ध)–सं० वृद्ध> प्रा० बुड्ढ>हिं० बुड्ढा, बूढ़।

बुढ़ापा—पुं० (वृद्धावस्था)–सं० वृद्धत्व (वार्धक्य) > प्रा० बुड्ढप्प > हिं० बुढ़ापा।

बुढ़ौती—प्रा० प्र०, स्त्री० (बुढ़ापा, वृद्धावस्था)–सं० वृद्धता>प्रा० बुड्ढत्ती >हिं० बुढ़ौती।

बुत—वि० (मूर्ख)–फ़ा० बुत।

बुताई—क्रि० (बूझती है)–फ़ा० बुत (मूर्ति) से बनी क्रिया। 'बुता' से बुताना, बुताइब (अवधी)।

बुदबुदाना—क्रि० (किसी तरल पदार्थ में बुलबुले आना, धीरे-धीरे इस तरह बोलना कि दूसरे सुन न सकें) – सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुद्बुद>प्रा० बुब्बुअ>हिं० बुदबुदाना।

बुनियाद(१) —स्त्री० (आधार, नींव, मूल)–फ़ा० बुन्याद, पहलवी बून, सं० बुध्न (पेंदी)।

बुरज—पुं० (मन्दिर की छतरी और कलस के बीच का भाग)–अ० बुर्ज।

बुरा—वि० (खराब, दोषयुक्त)–सं० विरूप>बिरूअ>बुरुअ>बुरा। तुल० पं० बुरा, गु० बुरुं, कश्मी० नाकारु, सिं० बुरो।

बुर्र-बुर्र—(किसी वस्तु के पानी में डूबने की ध्वनि)–सं० बुडबुड।

बुलंद(१)—वि० (ऊँचा)–फ़ा० बुलंद; पह० बुलंद, बूलंद; ज़ंद वेरैज़ंद, सं० बृहंत।

बुलबुल— स्त्री० (एक प्रसिद्ध गाने वाली छोटी चिड़िया)–फ़ा० अ० बुल्-बुल।

बुलबुला—पुं० (बुद्बुदा)–सं० बुद्बुदः प्रा० बुलंबुला>अप० बुलंबुला (दे० ना० मा०)>हिं० बुलबुला।

बुहारी(१)—स्त्री० (झाड़ू)–सं० बहुकरी >प्रा० बहुआरी>अप० बोहारी (दे० ना० मा०)>हिं० बुहारी, बहारी।

बूँद— स्त्री० (जल या किसी तरल पदार्थ का अंश, कतरा)– सं० बिन्दु (स्वर विपर्यय)>बुँदि>हिं० बूँद।

बूझ—क्रि० (बूझना; समझना)– सं० बुध>बुज्झइ>बूझ।

बूझना—क्रि० (समझना, जानना)–सं० बुध्>प्रा० बुज्झ> हिं० बूझना।

बूट—पुं० (१- चने का हरा पौधा या दाना, २- पौधा या पेड़)–सं० वृन्त। तुल० सिं० बूटो, म० बूट, गु० बुट्ट।

बूढ़ा—वि० (वृद्ध)– सं० वृद्ध>प्रा० बुड्ढ>हिं बूढ़ा। स्त्री० बूढ़+इया (स्त्री० प्र०)।

बूढ़ापन—पुं० (वृद्धावस्था)–सं० वृद्ध+ त्व>वृद्धत्वम्>बुडढत्तम्> बुडप्पन > बूढ़ापन।

बूत(१)(पद०)—पुं० (शक्ति)–सं० वृत्त >वुत्त>बुत्त>बूत।

बूरना— पु० हिं०, प्रा० प्र०, क्रि० (डूबना)–सं० ब्रुड्> प्रा० बुड्ड>हिं० बूरना। तुल० कु० बुरणो, पं० बुड्डणा, सिं० बुडणु।

बेंग—पुं० (मेढ़क)–सं० भेकः>हिं० बेंग। तुल० म० भेक, ओ० बेङ्गा।

बेंच—क्रि० (विक्रय करना)–सं० विक्र >प्रा० वेच्चइ>भो० बेंच।

बेंत— पुं० (एक तरह की लचकदार लकड़ी, एक प्रसिद्ध लता जो ताड़ या खजूर आदि की जाति की मानी जाती है)–सं० वेतस्>प्रा० वेत्त>बेंत।

बेंग—पुं० (मेढ़क)–सं० भेक।

बेकाम—वि० (व्यर्थ)– सं० विकर्म> बिकम्म>बेकाम।

बेगड़ी(१)— पुं० (हीरा काटने वाला, रत्न-परीक्षक)–सं० वैकटिक (जौहरी) >अप० बेगडिअ>हिं० बेगड़ी।

बेगार—स्त्री० (बिना मजदूरी दिये जब-रदस्ती लिया जाने वाला काम)– फ़ा० बेगार।

बेचना— क्रि० (मूल्य लेकर किसी को

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुछ देना)–सं० विक्रय>प्रा० विक्कअ, विक्कणण >हिं० बेचना।

बेचारा—वि०(दीन, निःसहाय, गरीब)–फ़ा० बेचारः। तुल० पं० विचारा, सिं० वेचारो, ओ० बेचारा, म० बिचारा, कश्मी० बिचोर, गु० बिचारुं।

बेटा—पुं० (पुत्र)–सं० बटु, प्रा० बिट्ट >हिं० बेटा। तुल० गु० बेटो, म० बेटा, नें० बेटो।

बेटी—स्त्री० (पुत्री)–प्रा० बिट्टी>अप० बिट्टिए, हिं० बेटी।

बेठन—पुं० (वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहिया, थान आदि बाँधे जाते हैं, बस्ता)–सं० वेष्ठन > प्रा० वेट्ठण> वेठन>हिं० वेठन।

बेधना—क्रि० (छेदना, भेदना, बींधना)–सं० व्यध्>प्रा० विद्ध > हिं० बेध+ ना।

बेनी (पद०)—स्त्री० (चोटी)–सं० वेणी >प्रा० वेणि>बेनी।

बेर—पुं० (एक फल)–सं० पा० बदर >प्रा० बयर>बइर>बेर। म० भेर, भो० बइर।

बेल[1]— पुं० (एक कँटीला वृक्ष और उसका फल)– सं० बिल्व> पा० प्रा० बिल्ल>बेल्ल>हिं० बेल। तुल० पं० बिल्ल, म० बेल।

बेल[2]—स्त्री० (लता)– सं० वल्ली> बेल्ल>बेल्ली>बेल।

बेला(1)—पुं० (चमेली आदि की जाति का छोटा पौधा, जिसमें सफेद रंग के सुगंधित फूल लगते हैं)–सं० विचकिल >प्रा० विअइल्ल (सरस्वती कंठाभरण ५/४१०)>वइल्ल+क>वेला।

बेली (पद०)— स्त्री० (वल्लरी)– सं० प्रा० बल्लरी> सं० प्रा० वल्ली, सं० प्रा० वाल्लि>वेली।

बेवहारिया— पुं० (बोहरा, लेन-देन करने वाला)–सं० व्यावहारिक> प्रा० ववहारिअ>बेवहरिआ।

बेवहार—पुं० (व्यवहार, लेन-देन)–सं० व्यवहार।

बेसन—पुं० (चने की दाल का महीन चूर्ण या आटा)–सं० वेसन>प्रा० वेसण (पाइअ०)>हिं० बेसन। तुल० पं० बेसण, गु० वेसण, म० बेसन।

बेसरा— पुं० (खच्चर)– सं० वेसर, वेसराः (बहुव०)।

१-बेसरि(1) (पद०)—स्त्री० (नाक का लटकन)–सं० द्वयस्र>बेसर।

२-बेसरि(1)(पद०)—स्त्री० (मन्दिर का भूतल जो वृत्ताकार न होकर एक ओर से गोल और एक ओर से दो कोने वाला होता था)– (१) सं० द्वयस्र (द्वि+ अस्र) > बेसर। (२) सं० द्वि+ स्रगिका।(33)

बेसा (पद०)— स्त्री० (वेश्या)–सं० वेश्या>प्रा० वेस्सा, बेसा।

बेहर(1) (पद०)—वि० (अलग)– सं० विघटित>विहडिय>बिहरा, बेहर।

बेहरी—स्त्री० (वह किस्त जो आसामी शिकमीदार को देता है)–सं० व्याहृति (किसी से जबरदस्ती कुछ छीन लेना)।

बैंडा(1)—वि० (आड़ा, तिरछा, टेढ़ा, कठिन)– विकांड>वियंड>वइंड+ क >बंडा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बदी—स्त्री० (बिंदी)–सं० बिन्दु>प्रा० बिंदु>हिं० बैंदी।

बैठ—भूतकालिक कृदन्त (बैठा हुआ, बैठा)–सं० उपविष्ट> उपविट्ठ > प्रा० उवविट्ठ>अप० वइट्ठ>बैठ। तुल० पं० बैठणा, सिं० विहणु, म० बसणें। कश्मी० बिहुन।

बैठना— क्रि० (शरीर का नीचे वाला आधा भाग किसी आधार पर टिका या रखकर पुट्ठों के बल आसीन या स्थित होना)– सं० उपविष्ट> प्रा० उवविट्ठ, उवइट्ठ>अप० वइट्ठ, अव० बइठ, बिट्ठ >बैठ+ना। अवधी वइठ, म० बैठ (णें)।

बैन[1] (पद०)— पुं० (मुँह)– सं० वदन>प्रा० वअण>वयन>बैन।

बैन[2]—पुं० (वचन, बात)– सं० वचन >प्रा० वयण>बइन>हिं० बैन।

बैनी[1]—पु० हिं०, स्त्री० (बेनी)–सं० वेणी।

बैनी[2]—स्त्री० (वदन) प्रयोग—विधु बैनी समेत सुभाय सिधाये)– सं० वदन—(विधुवदनी) (वदन के व>ब, द>य, य>इ)।(१८)

बैपार—पुं० (सौदागरी)–सं० व्यापार।

बैर—पुं० (शत्रुता, दुश्मनी)– सं० वैर >प्रा० वइर>हिं० बैर। तुल० म० पं० वैरु, सिं० वेर, कश्मी० वोर, गु० वेर।

बैराग—पुं० (विरक्ति)–सं० वैराग्य> प्रा० वेरग्ग>हिं० बैराग।

बैरि(1) (पद०)—पुं० (बेर का पेड़)– सं० बदर>प्रा० बयर>बइर>बैरि।

बैल—पुं० (वृषभ, बर्द, गौ जाति का बदिया किया हुआ वह नर चौपाया जो हलों और गाड़ियों में जोता जाता है)– सं० बलिवर्द, बलीवर्द>प्रा० बलिवद्द> बइलि>अप० बइल्ल>हिं० बैल, बलद, वरध, वरधा (ग्राम्य प्रयोग)।

बैसंदर (पद०)— पुं० (अग्नि)– सं० वैश्वानर>प्रा० वइस्साणर, वइसाणर >बैसाँदर।

बैस (पद०)— पुं० (अवस्था)– सं० वयस्>प्रा० वयस>बैस।

बैसना—क्रि० (बैठना)– सं० उपविश् >प्रा० अप० वइस > हिं० बैसना। तुल० म० बैस (णें), गु० बेसवूँ।

बैसाखी—स्त्री० (वह लाठी जिसके सिर को कंधे के नीचे बगल में रखकर लँगड़े लोग टेकते हुए चलते हैं, इसके सिरे पर जो अर्द्धचंद्राकार आड़ी लकड़ी लगी होती हैं, वही बगल में होती हैं)–सं० द्विशाखिका।

बोकला — प्रा० प्र०, पुं० (छाल, बकला)–सं० वल्कल>प्रा० वक्कल> छ० बोकला।

बोका—प्रा० प्र०, पुं० (बकरा)–सं० बुक्क>प्रा० बोकड, बोक्कड (पाइअ०) >बोक्कडो>हिं० बोका। तुल० बं० बोका, पं० बोक, म० बोकड।

बोझ— पुं० (१- भार, वस्तुओं का भारी ढेर, २- वजन, ३- किसी काम का उत्तरदायित्व)– प्रा० वोज्झ> अप० वोज्झओ (दे०ना०मा०)>हिं० बोझ।

बोदा—वि० (कमजोर, जिसकी बुद्धि तीव्र न हो)–सं० अबोद्धृ>प्रा० अबुज्झिर >हिं० बोदा।

बोना—क्रि० (बीज डालना, बीज़ को जमने के लिए छितराना)– सं० वप्>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० वव, (सं० वपन>वपण) > हिं० बोना।

बोलना—क्रि० (मुँह से शब्द उच्चारण करना)–सं० ब्रूयते>प्रा० बुल्लइ, बुल्ल, बोल्ल>अप० बोल्लणउ>हिं० बोलना।

बोलसिरी— प्रा० प्र०, स्त्री० (मौलसिरी)– सं० बकुलश्री>बउलसिरी > बोलसिरी>मौलसिरी।

बोल्लाह(१) (पद०)— पुं० (घोड़े की एक जाति)–सं० बोल्लाह>प्रा० बुल्लाह >हिं० बुलाह, बोल्लाह।

बोहित—पुं० (जहाज, नाव)–सं० वोहित्थ>प्रा० बोहित्थ > अप० बोहित्थो (दे० ना० मा०)>हिं० बोहित।

बौंहड़(१)—प्रा० प्र०, पुं० (छोटा खेत)–सं० भूमि>भूम्मि+ड>अप० भुंहडि, भुँइड़ा।

बौन—पुं० (बुवाई, बामनी, बौना)–सं० वपन>प्रा० ववण> बउन> बौन (ज० प्र०)।

बौना— पुं० (बहुत छोटे डील का मनुष्य)– सं० वामन+क> बावनअ >बाउनअ>हिं० बौना।

बौर— पुं० (आम की मंजरी)– सं० मुकुल>प्रा० मउर>बउर > बोर > बौर। तुल० भो० मउर, गु० मोहोर, बं० बोल।

बौरी(१)(पद०)—स्त्री० (बावली स्त्री)–सं० वातुल>वाउल>वाउर>बौरा> स्त्री० बौरी।

ब्याज—पुं० (सूद)–सं० व्याज। तुल० पं० बिआज, सिं० ब्याजु, ओ० बं० ब्याज।

ब्याना—क्रि० (मादा पशु जब बच्चा देता है तो उस क्रिया को बयना कहा जाता है)–सं० बीज+अनिथन=बीजा-नयन>वीआणयण>वीआण> बीआन >ब्यान, ब्याना।

ब्यारी—स्त्री० (रात का भोजन)–सं० विकालाहार>प्रा० विआरिआ> हिं० बियारी, ब्यारी।

ब्यालू(१)—पुं० (सन्ध्या समय किया किया जाने वाला भोजन)–सं० विकाल >पा० विकाल>प्रा० विआल>हिं० ब्याल+उक>उक>ब्यालू।

ब्योंतना—क्रि० (कपड़ा मापना, नाप से कतरना)–प्रा० विउंत>हिं० ब्योंतना।

ब्यौंत(१)—पुं० (व्यवस्था, काम करने का ढंग, युक्ति, आयोजन, संयोग, प्राप्त सामग्री से कार्य के साधन की व्यवस्था)–सं० व्याममात्रा>व्यामत्त>व्यांववत्त> व्यांउत>ब्यौंत।

टिप्पणी—'अर्थशास्त्र में लिखा है कि ८४ अंगुल का एक व्याम था। मनुष्य की ऊँचाई नापने का पौरुषमान व्याम ९६ अंगुल का था और वेदी नापने का व्याम १०८ अंगुल का था। इस प्रकार भिन्न-भिन्न कार्यों में तीन तरह की व्याममात्राएँ थीं। हर एक की व्याममात्रा या ब्यौंत अलग-अलग था। बौधायान श्रौतसूत्र में पुरुष और व्याम को पर्याय माना है और उसकी नाप ५ अरत्नि=१२० अंगुल=७॥ फुट दी है (पंचारत्निः पुरुषो व्याश्च-बौ० श्रौ० सू० ३०/१)।"—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ना० प्र० प०, भाग ५४, अंक २-३, पृ० १४५।

ब्रह्मचर्य—पुं०(ब्रह्मचर्य)–सं० ब्रह्मचर्य> बंभचरिय>बंभचइर>अप० बंभचेर।

व्रात—वि० (नीच आदमी)– सं० व्रात्य >व्रात

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भ

भंगना— प्रा० प्र०, क्रि० (१- टूटना, २- दबना, हार मानना, तोड़ना)–सं० भङ्ग>पा० प्रा० भंग> हिं० भंगना। तुल० ओ० भगिबा, पं० भग, गु० भंगवूं।

भंगी—वि० (नष्ट होने वाला, भंग करने या तोड़ने वाला)–सं० भंगिन् (सं० भंग +इनि)। —पुं० (जाति-विशेष)–सं० भङ्गि>प्रा० भंगि (देश-विशेष)>हिं० भंगी (देश-विशेष के रहने वाला)।

भंडा—पुं० (पात्र)– सं० भाण्ड, पा० भण्डक (सामान, चीजें)– प्रा० भंड> हिं० भंडा, भाँडा, भाँडा (स्था० प्र०)।

भंडा-फोड़—पुं० (भेद प्रकट होना)– सं० भाण्ड+स्फोटय्>प्रा० भंड+फोड >हिं० भंडा-फोड़।

भंडार— पुं० (कोष, खजाना)–सं० भाण्डार>प्रा० भंडार>हिं० भंडार। तुल० म० भांण्डार, पं० भाँडार। मु० भंडार।

भंडारा—पुं० (साधुओं का भोज)–सं० भण्डागार, भाण्डारम्>प्रा० भंडाआर> भंडार>हिं० भंडारा (ला०)।

भंडारी—पुं० (कोषाध्यक्ष, खजानची)– सं० भाण्डागारिक> पा० भण्डागारिक भण्डारिअ>हिं० भंडारी।

भँगरा—पुं० (पौधा-विशेष)–सं० भृङ्ग-राज>प्रा० भंगरय>हिं० भँगरा।

भँजाना— प्रा० प्र० (भाँजने, तोड़ने आदि का काम दूसरे से कराना)– सं० भञ्ज्, भञ्जन > प्रा० भंज, भंजण, भंजणा>हिं० भँजाना।

भँड़िया—स्था० प्र०, स्त्री० (हँडिया)– सं० भण्डिका>भँड़िया।

भँडेर—स्था० प्र०, स्त्री० (कोठी)– (१) सं० भाण्डावलि।[१]। सं० भाण्डा-गार>प्रा० भंडाआर>हिं० भँडेर।

भँभीरी—स्त्री० (एक प्रसिद्ध पतंगा)– सं० बम्भराली (मक्खी)>भम्भराली> हिं० भंभीरी, भंवीरी।

भँवति[१] (पद०)— स्त्री० (चक्कर)– सं० भ्रमन्>प्रा० अप० भवँत>भँवति।

भँवना—क्रि० (१- घूमना, २- चक्कर या फेरा लगाना)– सं० भ्रमण>प्रा० भमण (सं० भ्रम्>प्रा० भम)>भँवना।

भँवर—पुं० (भौंरा, आवर्त्त, पानी का चक्कर)–सं० भ्रमर> पा० प्रा० भमर >अव० भमर (की०) > हिं० भँवर, भवाँ (पद०)। तुल० म० भोंवरा, गु० भमर, ओ० भऊँरी।

भँवरजाल—पुं० (भ्रमजाल, भवजाल, सांसारिक झगड़े-बखेड़े)– सं० भ्रमजाल >प्रा० भमजाल>भँवरजाल।

भँवरी—स्त्री० (भौंरी)–सं० भ्रमरी> प्रा० भमरी>हिं० भँवरी।

भँवै[१] (पद०)—क्रि० चक्कर लगाना, घूमना-फिरना)–सं० भ्रमति>प्रा० भमइ >भँवइ>भँवै।

भइया—पुं० (भाई)– सं० भ्रातृक> प्रा० भाइअ>हिं० भइया।

भइँस—स्त्री० (भैंस, एक पालतू मादा चौपाया जिसका दूध दूहा जाता है)– वै० सं० महिष (पुं०), सं० महिषी (स्त्री०)>प्रा० महिसी> हिं० भइँस, भैंस।

भए (की०)—पुं० (भय)–सं० भय> प्रा० भय>अव० भए।

भकुआ, भकुवा—प्रा० प्र०, वि०(मूर्ख)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१) मु० भकुआ (मु० इं० डि०, पृ० २१)। (२) सं० भग्न > प्रा० भग्ग (पलायनवादी) हिं० भगुआ, भकुआ।

भकोसना—क्रि० (जल्दी-जल्दी या बुरी तरह से खाना, निगलना)–सं० भक्षणाशन (सं० भक्षण + अशन) > प्रा० भक्खणासण > हिं० भकोसना।

भक्षना★—क्रि० (खाना)–सं० भक्षण (सं० √भक्षय् > प्रा० भक्ख) > प्रा० भक्खण > हिं० भक्षना।

भक्षाभक्ष— पुं० (खाद्य-अखाद्य)– सं० भक्ष्याभक्ष्य > प्रा० भक्खाभक्ख > भक्षाभक्ष।

भक्षी—वि० (भक्षक)– सं० भक्षिन् > प्रा० भक्खि > हिं० भक्षी।

भख (पद०)—पुं० (भोजन)–सं० भक्ष > पा० भक्ख (खाने योग्य) > प्रा० भक्ख > भख।

भखअ (स०)—क्रि० (भोजन करना)– सं० भक्षयति > पा० भक्खति > प्रा० भक्ख, स० भखअ।

भगंदर—पुं० (गुदा के भीतर होने वाला एक प्रकार का फोड़ा)– सं० भगन्दर > प्रा० हिं० भगंदर।

भगत—पुं० (उपासक)–सं० भक्त।

भगतवछल★—वि० (भक्त पर दयालु)– सं० भक्तवत्सल।

भगति. भगती★— स्त्री० (भक्ति, श्रद्धा)–सं० भक्ति > अप० भत्ति (bhatti H. G. O. A. p. 426) > हिं० भगति, भगती।

भगन—वि० (खण्डित)– सं० भग्न > प्रा० भग्ग > अव० भाँग (की०) > हिं० भगन।

भगवान्—वि० (१- पूज्य और आदरणीय व्यक्ति, २- ऐश्वर्य वाला)–सं० भगवत् (भग + मतुप्), वै० सं० भगवन्तः (ऋग्वेद, मन्त्र ७/सूक्त ४१)। प्रश्नोपनिषद् में 'भगवान्' प्रयुक्त, 'श्रीमद्भागवतमहापुराणम्' में 'भगवते' शब्द का प्रयोग।

भगौना—पुं० (चौड़े मुँह और खड़े किनारे का एक बरतन)– सं० भागद्रोण + क > भगौना, भिगौना (वह बरतन जिसमें कोई वस्तु भिगोई जाय)। टिप्पणी— "अन्न का राजग्राह्य अंश 'भाग' कहलाता था। महावास्तु (१।३४७-४८) में इसका प्रयोग हुआ है–'शालिक्षेत्रेषु षष्ठं शालिभागं ददाम'। द्रोण एक प्रकार की लकड़ी का बरतन था। महाभारत और जातकों के युग में द्रोण से राजग्राह्य भाग को नापते थे। कुरुधम्म जातक में द्रोणमापक नामक विशेष राज्याधिकारी का नाम आया है ...। महाभारत में पैपीलक स्वर्ण (रेजा सोना, जो बालू धोने से प्राप्त होता था) को द्रोणमय (द्रोण से नापा जाने वाला) लिखा है।"—(डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, दस हिन्दी शब्दों की निरुक्ति, ना० प्र० प० भाग ५४-अंक-२-३)।

भचकना— क्रि० (आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना)–सं० भयचकित।

भच्छ★, प्रा० प्र०, वि० (जो खाया जा सके)–सं० भक्ष्य > प्रा० भक्ख > भच्छ। पुं० (आहार, भोजन)।

भच्छना—प्रा० प्र०, क्रि० (खाना)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भक्षय्>प्रा० भक्ष, भक्ख>हिं० भच्छ +ना।

भजना—क्रि० (देवता आदि का नाम जपना, भजन करना)– सं० भज्>प्रा० भज्ज>हिं० भज+ना।

भट— पुं० (१- युद्ध करने या लड़ने वाला योद्धा, २- पहलवान)– सं० भट्ट (सं० भट् (बोलना)+अच्)>पा० भट >प्रा० भट्ट>हिं० भट।

भटकना—क्रि० (१- भ्रम में पड़ना, २- रास्ता भूलकर इधर-उधर चला जाना)– (१) सं० √भ्रंश>प्रा० भंस, भट्ठ> हिं० भटक+ना। (२) सं० भ्रंश+ अटन।

भटभट— स्त्री० (भट-भट की ध्वनि, ट्रैक्टर आदि के चलने की ध्वनि)–सं० भटभटाय (भटभटायते)>हिं० भटभट, भटभटाना।

भट्ट—पुं० (१- भाट, ब्राह्मणों की एक उपाधि)–सं० भट, भट्ट > अव० भट्टा (की०)>प्रा० हिं० भट्ट।

भट्टारिका— स्त्री० (युवराज्ञी)– सं० भर्तृदारिका> प्रा० भट्टारिया > हिं० भट्टारिका।

भट्ठा— पुं० (ईंटे या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा)– सं० भ्राष्ट्र>पा० भट्ठ (भुना हुआ)>प्रा० भट्ठ (भुनने का बर्तन)>हिं० ह० भट्ठा।

भट्ठी—स्त्री० (विशेष आकार और प्रकार का ईंटों आदि का बना हुआ चूल्हा, भाड़)–सं० भ्राष्ट्रिका>प्रा० भट्ठिआ> भट्ठि>हिं० भट्ठी।

भठियार—पुं० (भठियार, सराय का प्रबन्ध करने वाला रक्षक)–सं० भ्राष्ट्र-कार>भट्ठिआर>हिं० भठियार, भटियार, भटियारा।

भड़क—स्त्री० (तीव्र चमक-दमक)–प्रा० भडक्क (आडम्बर, तड़क-भड़क)>हिं० भड़क।

भड़भाँड़—पुं० (एक प्रकार का कँटीला पौधा, जिसके बीजों का तेल जहरीला होता है)–सं० भाण्डीरः।

भड़भूँजा—पुं० (भुरजी, भाड़ झोंकने वाला)–भ्राष्ट्रभर्जक> प्रा० भट्ठभज्जअ >हिं० भड़भूँजा।

भड़ुवा—पुं० (वेश्याओं का दलाल)– १-प्रा० भडिल (संबोधन सूचक शब्द)> हिं० भड़ुआ। २- सं० भाटक> प्रा० भाडय>भाड़ा, भाड़, भड़ुवा।तुल० म० भडवा।

भड़सार—पुं० (वह स्थान जहाँ भड़भूजा भाड़ बनाता है)–सं० भ्राष्ट्रशाला>प्रा० भट्ठसाल>हिं० भड़सार।

भणना—क्रि० (बोलना)– सं० भण्> प्रा० भण>अव० भणइ (की०)>हिं० भणना।

भण्डारी— पुं० (भण्डार के रखने वाला)–सं० भाण्डागारिक>प्रा० भंडारिय>भण्डारी।

भतार— पुं० (पति, खाविंद)– सं० भर्त्तृ, भर्ता>हिं० भतार।

भतीजा—पुं० (भतीजा, भाई का पुत्र)– सं० भ्रातृज्ज>प्रा० भत्तिज्ज>भतिज्ज >हिं० भतीजा। तुल० पं० भतीजा, गु० भत्रीजो, अस० भतिजा।

भत्ता—पुं० (दैनिक व्यय जो किसी-किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाता है, वेतन के अतिरिक्त वह धन जो किसी को दिया जाता है)–सं० भृत्या (अमरकोश)। तुल० लै० Bastum।

भद्दा—वि० (कुरूप, असभ्य, अश्लील)–सं० भद्र>पा० भद्द, भद्दक>प्रा० अप० भद्द, भद्दअ>हिं० भद्दा। टिप्पणी—सं० भाद्रपद>प्रा० भद्दव। सं० भद्रपदा (नक्षत्र-विशेष)> प्रा० भद्दअ से भी 'भद्दा' का विकास हो सकता है। 'भद्र' नक्षत्र बुरा प्रभाव डालने वाला माना जा सकता है। 'भद्र नक्षत्र' में जन्म लेना अशुभ माना जाता है। इसी कारण सं० भद्र, पा० प्रा० भद्द (भला, सज्जन) के अर्थ का विकास हिन्दी भाषा में विपरीत दिशा में हुआ।

भनक—(भ्रमर या मक्खी द्वारा उत्पन्न भन-भन ध्वनि, अस्पष्ट आवाज)– सं० भङ्कार (भम् ध्वनि उच्चरित करना, गोमक्खी)>प्रा० भंकार, हिं० भनक।

भन-भन—स्त्री० (गुंजारने की ध्वनि, भन-भन की ध्वनि)–सं० भण्, भणति >प्रा० भण>हिं० भन-भन।

भनिति—स्त्री० (कथन, कविता)–सं० भणिति, प्रा० भणिइ>भनिति।

भबूती—स्त्री० (भस्म, राख जिसको योगी सन्यासी अपने शरीर पर मलते हैं)–सं० विभूति>अव० भूति (की०) >हिं० भभूत, भबूती, भभूती।

भभकी(१) (की०)—क्रि० (भभकना, अत्यन्त क्रोधित होना)–सं० बाष्प > प्रा० बप्फ + कृ > अव० भभक्क > भभकी।

भभना—ज० प्र०, क्रि० (इधर-इधर घूमना)–सं० भ्रमति>सं० भ्रम्, प्रा० >अव० भमइ>अव० भमइ (की०)> हिं० भम+ना।

भमि (की०)—(क्रि० भ्रमण करना)–सं० भ्रमि>प्रा० भमि।

भय—पुं० (डर, ख़ौफ़)–सं० पा० प्रा० हिं० भय। तुल० सिं० भौ, म० भीति, भय, गु० बं० अस०, ओ० भय, ते० भयमु।

भयरों—पुं० (शंकर, महादेव, शिव के एक प्रकार के गण)–सं० भैरव।

भयहारी—वि० (भय दूर करने वाला)–सं० भयहारिन्।

भयो—प्रा० प्र०, स्त्री० (छोटे भाई की स्त्री)–सं० भ्रातृ-जाया।

भय्या—पुं० (भाई)–सं० भ्रातृ>अप० भय्या (H. G. O. A., p. 425) हिं० भय्या।

भर—पुं० (बोझ, भार) सं० भार> प्रा० भर, हिं० भर।

भरतार— (भर्त्ता, पति, स्वामी)–सं० भर्त्ता, सं० भतृ>हिं० भरतार, भरता, भर्त्ता, ह० भर्तार।

भरथरी—पुं० (एक राजा का नाम)–सं० भर्तृहरि।

भरना—क्रि० (खाली जगह को भरने के लिए उसमें कोई चीज डालना, पूर्ण करना)–सं० भृ>पा० भरति>प्रा० भर, भरइ, भरण,>हिं० भरना। तुल० ओ० भरिबा, सिं० भरणु, ग० भरवूँ, म० भर (णें)।

भरनी—पुं० (एक नक्षत्र)–सं० प्रा० भरणी>हिं० भरनी।

भरम—प्रा० प्र०, पुं० (संदेह)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भ्रम>प्रा० भम>हिं० भरम।

भरमना★—प्रा० प्र० (घूमना, फिरना, भटकना, भ्रम या धोखे में पड़ना)–सं० भ्रमण (सं० भ्रम्>प्रा० भम)>हिं० भरमना।

भरमाना — क्रि० (धोखा देना)–सं० भ्रम्>प्रा० भम, भमड > भमडिअ> हिं० भरमाना।

भरमौंहाँ★—वि० (भ्रम उत्पन्न करने वाला)–सं० भ्रम>सं० भ्रम+आवह> प्रा० भम+आवह>हिं०भरम+औंहाँ।

भरुजा—स्त्री० (यव जो भुना हुआ हो)–सं० भर्जित+यव >प्रा० भज्जि-अजव>भरुजा, पुं० भरुज।

भरोसा–पुं० (विश्वास)–सं० भद्राशा >प्रा० भद्दासा>हिं० म० भरोसा। तुल० मु० भरोसा।

भर्ग—पुं० (चमक, दीप्ति, सूर्य का तेज)–सं० भृज्।

भला—वि० (भद्र, उत्तम, बढ़िया)–सं० भद्र+क>पा० भद्द>प्रा० भल्लअ> अप० भल्ला (हे०)>हिं० भला। तुल० म० पं० भला, बं० भाल, सिं० भलो, गु० भलूं।

भवन—पुं० (संसार)–सं० भुवन>प्रा० अप० भुवण > अव० भुअण > हिं० भवन।

भव्य—वि० (श्रेष्ठ, सुन्दर)–सं० भव्य > प्रा० भविअ>भउ > अव० भउँ (की०)।

भस—स्त्री० (पत्थर को छेतने से टूटी हुई रेत के समान कण)–सं० भस्म> भस्स>भस।

भसमंत—(पद०) पुं० (भस्मावशेष)–सं० भस्मान्त।

भसींड[1]—स्त्री० (कमल ककड़ी, कमल-नाल)–सं० बिसअंड (कमल का कंद रूपी फूला हुआ भाग) > भिसअंड > भसिअंड>भसि (अ) ड>हिं० भसींड।

भसुर—पुं० (जेठ, विवाहिता के रिश्ते से पति का बड़ा भाई)–सं० भ्रातृश्वसुर >हिं० भसुर। तुल० बं० भासुर।

भ्रष्ट—वि० (१- पतित, २- बदचलन, ३- नीति-पथ से गिरा हुआ)–सं० भ्रष्ट >प्रा० भट्ठ>अव० भइट्ठ (की०)।

१- भाँग — स्त्री० (भंग, एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ लोग नशे के लिए पीस कर पीते हैं)–सं० भङ्गा>प्रा० >भंगा>हिं० भांग। तुल० कु० बं० भाङ्, ओ० भांग, म० भाङ्ग।

२- भाँग[1]—(पद०)क्रि० (टूटना)–सं० भंग (भञ्ज् धातु)>पा० भङ्ग>प्रा० भंग>भाँग।

भाँजना—क्रि० (१- तह करना, मोड़ना, २- दो या कई लड़ों को एक में मिलाकर बटना, ३- तोड़ना)–सं० भंजति>पा० भञ्जति>प्रा० भञ्जइ>हिं० भाँजना, भाँजै (पद०)।

भाँजी—स्त्री० (वैवाहिक सम्बन्ध तय होते समय द्वेषी लोगों द्वारा ऐसी बात कहना जिससे रिश्ता निश्चित न हो सके)–सं० भञ्जिका>प्रा० भञ्जिआ भाँजी।

भाँड़—पुं० (विदूषक, मसखरा)–सं० भण्ड>प्रा० भंड>हिं० भाँड। तुल० म० भाँड, पं० भण्ड।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाँडना—प्रा० प्र०, क्रि० (चारों ओर किसी की निंदा या बदनामी करते फिरना)–सं० भण्डना (भण्ड्)>पा० भण्डति>प्रा० भंडइ>हिं० भाँडना। तुल० सिं० भंडणु गु० भाण्डवूँ, म० भाण्डं (णें)।

भाँडा—पुं० (बरतन, पात्र)–सं० भाण्डम्>पा० भण्ड>प्रा० भंड, भंडग >हिं० भाँडा। तुल० पं० भांडा, सिं० भांडो, म० भांडें।

भाँत, भात(१)—पुं० (डिजाइन, विशेष प्रकार की छपाई)–सं० भक्ति > पा० प्रा० भत्ति>हिं० भात। तुल० गु० भात, म० भांत, पं० भांत्, कु० भाँति।

भाँवर—स्त्री० (फेरे, जब वर और दुलहिन अग्नि-प्रदक्षिणा मंडप के नीचे करते हैं)–सं० भ्रमर>भँवर > हिं० भाँवर, भाँवरि (पद०)।

भाई—पुं० (किसी के माता-पिता का दूसरा पुत्र, सहोदर, भैया)–सं० भ्रातृ> पा० भाता>अप० भाई, अप० bhattara (H. G. O. A., p. 425)। तुल० पं० भाई, सिं० म० भाऊ, बं० ओ० भाइ, कु० भई, जंद ब्राता (brata), फ़ा० सं० bhratar, ले० frater, ज० ब्रुडर bruder।

भाउ—(अखरा०) पुं० (भाव, विचार)–सं० प्रा० भाव>भाउ, भाउ>(पद०)। –पुं० (उत्पत्ति) सं० भव।

भाएँ—प्रा० प्र०, क्रि० वि० (बुद्धि के अनुसार)–सं० भाव > अव० भाए (अच्छा लगता है, की०)।

भाखना★—प्रा० प्र०, क्रि० (कथन करना)–सं० भाषण, सं० भाष्>प्रा० भास>हिं० भाख+ना।

भाखा (पद०)—स्त्री० (बोली, वाणी)–सं० भाषा > प्रा० भासा > भाखा।

भाग—पुं० (भाग्य)–सं० पा० भाग्य >प्रा० भग्ग>हिं० भाग।

भागए (की०)—क्रि० (टूटना)–सं० भग्न >प्रा० भग्ग>अप० भाग > अव० भागए।

भागना—क्रि० (पलायन करना)–भग्न >पा० प्रा० भग्ग>अप० भग्गिअ> अव० भाँगि (की०)>हिं० भाग+ना। तुल० गु० भागवूँ, सिं० भगो, बं० भागा।

भाजी—स्त्री० (तली हुई भाजी)–सं० भर्जित>प्रा० भज्जिअ (पाइअ०) > हिं० भाजी। तुल० सिं० गु० ने० भाजी।

भाड़—पुं० (भड़भूजों की अनाज भूनने की भट्ठी)–सं० भ्राष्ट्र >प्रा० भाड> हिं० भाड़।

भाड़ा—पुं० (किराया)–सं० भाटक> प्रा० भाडअ>हिं० भाड़ा। तुल० सिं० भाडो, गु० भाडूँ, बं० भाडा। मु० भाड़ा (मु० इं० डि०, पृ० २२)।

भाण (की०)—क्रि० (कहना)–सं० भण>प्रा० भण>अव० भाण।

भात—पुं० (पकाया हुआ चावल)–सं० भक्त>पा० भक्त>प्रा० भत्त>हिं० भात। तुल० सिं० भत्तु, पं० भत्त, म० गु० भात।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाथ[१] (की०) पुं० — (तरकश)–सं० >भस्त्रा>प्रा० भत्था>अप० भत्थ> अव० भाथ>हिं० भाथा।

भाथी—स्त्री० (चमड़े की धौकनी जिसे लगाकर लोहार भट्ठी की आग सुलगाते हैं)–सं० भस्त्रका, भस्त्रिः>पा० भत्थि प्रा० भत्थी>हिं० भाथी। तुल० सिं० बथी, गु० भाथो।

भादौं—पुं० (भादों)–सं० भाद्रपद> प्रा० भद्दवय > भद्दव > हिं० भादव, भादौं।

भानजा—पुं० (बहिन का लड़का)–सं० भागिनेय > पा० भागिनेय्यो > प्रा० भाइणेज्ज > भानेज्ज>भानज्ज> हिं० भानजा, भांजा। तुल० पं० भाणजा, उर्दू भानजा, सिं० भाणेजो, गु० भाणेज, ओ० भणंजा।

भानमती—स्त्री० (कल्पित जादूगरनी)–सं० भानुमती। टिप्पणी—भट्टनारायण द्वारा लिखित 'वेणीसंहार' नाटक में दुर्योधन की पटरानी का नाम भानुमती।

भानस—ज० प्र०, स्त्री० (रसोई)–सं० महानस>प्रा० महाणस>छ० भानस।

भाना—क्रि० (१- मालूम होना, जान पड़ना; २- अच्छा लगना, पसन्द आना)–सं० भाव, सं० भास् > प्रा० भाव>भावेइ > अव० भावइ (अच्छा लगना, की०) हिं० भाना>क्रि०–शोभा देना–सं० भास्>प्रा० भास।

भाप—स्त्री० (वाष्प)–सं० बाष्प>प्रा० बप्फ>बाफ>हिं० भाप।

भाभी—स्त्री० (भौजाई, भाभाज)–सं० भातृजाया>प्रा० भाउज्जा>भाउज्जा-इया>अप० भाज्ज (H. G. O. A., p. 425)/तुल० पं० भरजाई, भाभी; उर्दू भाबी, सिं० भाजाई, भाभी, गु० भाभी, ओ० भाउज।

भारू—(पद०) पुं० (भाड़, भड़भूजे की भट्ठी)–सं० भ्राष्ट्र>प्रा० भट्ठ।

भारोपीय—वि० (भारत और युरोप दोनों में समान रूप से पाये जाने वाले या दोनों के समान मूल से उत्पन्न)–सं० भारत+युरोपीय।

भाल—पुं० (ललाट, माथा)–सं० प्रा० भाल।

भालू — पुं० (रीछ) – सं० भल्लूक, भल्लुक>प्रा० भल्लुअ > हिं० भालू। तुल० बं० भल्लुक, भालुक; ओ० भालु।

भाव—पुं० (कीमत, मूल्य)–फ़ा० बहा। तुल० कु० भउ, बं० ओ० भाउ, गु० म० भाव, पं० सिं० भाउ।

भावज—स्त्री० (भौजी, भौजाई)–सं० भ्रातृजाया>प्रा० भाउज्जा>भाउजा> अप० भउज्जा>(दे० ना० मा०)> हिं० भावज। तुल० कु० भउज, सिं० भाजाई, गु० भोजाई।

भावी—स्त्री० (भविष्यत्काल), वि० (भविष्य में होने वाला)–सं० भवितृ> प्रा० भाविर>हिं० भावी।

भाषा—स्त्री० (मुँह से निकलने वाली व्यक्त ध्वनियों अथवा सार्थक शब्दों और वाक्यों का वह समूह, जिसके द्वारा विचार व्यक्त किये जाते हैं)–सं० भाषा >प्रा० भासा>अव० भासा (की०) भाषा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भास्कर—पुं० (सूर्य)–सं० भास्+कृ >हिं० भास्कर।

भाहू—(की०) स्त्री० (छोटे भाई की स्त्री)–सं० भ्रातृवधू।

भिंग★—पुं० (भौंरा)–सं० भृंग> >प्रा० भिंग>अव० भिंग (की०)।

भिंगराज—पुं० (पक्षी, भुजंगा)–सं० भृंगराज>प्रा० भिंगराज।

भिंसार, भिनसार, भिनुसार, भुनसार—पुं० (प्रातःकाल, सुबह)–सं० भानुशाला >प्रा० भाणुसाला>भानुसार > भुनसार (वर्ण व्यत्यय)>पूर्वी हिं० भिनुसार, भिनसार (जायसी द्वारा प्रयुक्त)।

भिक्षु—पुं० (संन्यासी, बौद्ध साधुओं को भिक्षु कहा जाता है)–सं० भिक्षु> पा० प्रा० भिक्खु।

भिखारी—पुं० (भीख की याचना करने वाला)–सं० भिक्षाकारिक, पा० भिक्खक >अप० भिक्खारि>अव० भिख्खारि> भिखारि>हिं० भिखारी। तुल० पं० गु० बं० अस० ओ० भिखारी, म० भिकारी।

भिड़ना—क्रि० (मुठभेड़ करना)–प्रा० भिड>हिं० भिड़+ना।

भित्त[१] (की०)—पुं० (नौकर-चाकर)–सं० भृत्य>प्रा० अप० अव० भित्त।

भिदना—क्रि० (घुसना, घायल होना)–सं० भिद्>प्रा० भिद>हिं० भिदना।

भिलावाँ—पुं० (एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष)–सं० भल्लातक>पा० भल्लाटको >प्रा० भल्लाअय (पाइअ०) > हिं० भिलावाँ। तुल० पं० भिलावा, सिं० भेलावो, म० भिलावा।

भिस[१]—स्त्री० (कमल की जड़, कमल ककड़ी)–सं० विस>पा० प्रा० भिस> हिं० भिस। तुल० म० भिसें।

भिसटा — पुं० (मल, गलीज)–सं० विष्ठा>प्रा० विट्ठा>भिसटा।

भी[११] — अव्य० समु० (निश्चय करके, जरूर)–सं० अपि + ही>प्रा० अवि+ही>वि + ही>हिं० भी।

भीक—स्त्री० (भीख)–सं० भैक्ष>प्रा० भिक्ख>हिं० भीक।

भीख—स्त्री० (भिक्षा)–सं० भिक्षा> पा० भिक्खा>प्रा० अप० भिक्ख>अव० भिख्ख (की०)>हिं० भीख।

भीजा[१]—(पद०) क्रि० (भीजना, रस से भिद जाना)–सं० भिद्यते > प्रा० भिज्जइ।

भीत—स्त्री० (दीवार)–सं० प्रा० भित्ति >अप० भित>अव० भीति (की०) हिं० भीत। तुल० सिं० भिति, म० भित, गु० भीत।

भीतर — क्रि० वि० (अन्दर)–सं० अभ्यंतर>प्रा० भित्तर>अप० भितर> > अव० हिं० भीतर। तुल० म० भीतर, गु० भितर।

भील—पुं० (एक प्रजाति के लोग, जिन्हें म्लेच्छ भी कहा गया)–सं० भिल्ल (सं० भिल्ल धातु=भेदन करना)>हिं० भील। त० बील (बाण)।

भीलवाड़ा— भिल्लवाटक >भीलवाडअ >भीलवाड़ा (स्थान का नाम)।

भुंगा—पुं० (एक कीट)–सं० भृंग> भुंगअ>हिं० भुंगा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भुअंग (पद०)— पुं० (सर्प)– सं० भुजंग।

भुवंग[1] (की०)–पुं० (गुंडे)–सं० भुजंग >अव० भुवंग (की०)।

भुइँ—पु० हिं०, स्त्री० (भूमि, पृथ्वी)– सं० पा० प्रा० भूमि>हिं० भुइँ। तुल० म० भुई, बं० भू, सिं० भुंई।

–कंप (पद०)— पुं० (भूडोल)– सं० भूकंप।

भुइँहरा[1]—पुं० (तहखाना, वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो)–सं० भूमिगृह, भुइंहर + क > भुइँहरा, भौंहरा।

भुइँहार—पुं० (एक ब्राह्मण जाति का उपवर्ग) सं० भूमिहारः>भुइँहार।

भुक्खड़—पुं० (१-जिसे सदा भूख लगी रहती हो, २-कंगाल)–सं० बुभुक्षितः> प्रा० भुक्खड>हिं० भुक्खड़।

भुगुति (पद०)— स्त्री० भोजन का सुख)–सं० भुक्तिः (√भु+क्तिन्)।

भुजा—स्त्री० (बाँह, हाथ)–सं० भुज (√भुज्+क)।

भुट्टा—पुं० (मक्के की बाल, जूआर या बाजरे की बाल)–सं० भृष्ट (उबाल कर भूना हुआ दाना)।

भुनाना—क्रि० (बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना)– सं० भञ्जन (ला०)। तुल० मु० भानजाओ (मु० इं० डि०, पृ० २२)।

भुरकना—क्रि० (सूख कर भुरभुरा हो जाना)–सं० भुरण्यति, (सं० भुरण= धारण करना)।

भुवइ (की०)— पुं० (राजा)– सं० भूपति>प्रा० अव० भुवई।

भुवारा (पद०)— पुं० (राजा)–सं० भूपाल > अव० भूपाला (की०) > भुवारा।

भूँजना—क्रि० (भूनना, तलना, पकाना) –सं० भ्रस्ज् > प्रा० भज्ज > हिं० भूँजना।

भूई[1] (पद०)— स्त्री० (राख)–सं० भूति>प्रा० भूइ (शिव के अंग की भस्म)।

भूकप— पुं० (भूडोल, भूचाल)–सं० भूकम्प। तुल० पं० भुचाल, उर्दू जल-जला, गु० धरती कंप, बं० भूमिकम्प, अस० भूँइकँप, ओ० भूमि कम्प, ते० म० भूकंपम, क० भूकम्प।

भूख—स्त्री० (क्षुधा, खाने की इच्छा)– सं० बुभुक्षा > प्रा० बुभुक्खा > अप० बुहुक्खा>अव० बुहुष्खा (की०)>भुक्खा >हिं० भूख। तुल० पं० भुख, उर्दू म० भूक, सिं० बुख, अस० ओ० भोक।

भूखा—वि० (क्षुधातुर)–सं बुभुक्षित> प्रा० भुक्खिअ>अप० भुक्खा (bhakka, H. G. O. A., p. 427) > हिं० भूखा। तुल० पं० भुखा, उर्दू भूखा, म० भुकेला, गु० भुख्यो।

भूतात्मा — पुं० (१- पार्थिव शरीर, २-मृत शरीर अथवा उसकी आत्मा, ३- शरीर)–सं० भूतात्मन्।

भूनना—क्रि० (आग या और किसी प्रकार के ताप से कोई चीज इतनी गरम करना कि उसकी आर्द्रता निकल जाए)– सं० भर्जन (√भृज्)>प्रा० भज्जण> हिं० भूनना।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूमिया—पुं० (ग्राम देवता)–सं० भूमि >हिं०भूमि+इया (प्र०)।

भूल—स्त्री० (भूलने का भाव, गलती)–सं० भ्रष्ट+च्युत>प्रा० भुल्ल>हिं० भूल। तुल० पं० भुल, गु० भूल, बं० अस० ओ० भुल।

भूलना—क्रि० (विस्मृत करना)–प्रा० भुल्लइ>हिं० भूल+ना।

भूलल[1] (की०)—क्रि० (भूलना)–सं० भ्रंश का धात्वादेश>प्रा० अप० भुल्ल। सं० भ्रष्ट>प्रा० भुल्ल>अव० भूलल।

भूशायी—वि० (पृथ्वी पर सोने वाला)–सं० भूशायिन्।

भूसा—पुं० (गेहूँ, जौ आदि के पौधों के डंठलों के सूखे छोटे महीन टुकड़े जो गाय-भैंस आदि को खिलाये जाते हैं)–१-सं० बुस+क > प्रा० बुस, भुस> भुस्स अ>हिं० भुस, भूसा। २-सं० तुषः (अनाज की भूसी)>हिं० भुस। तुल० गु० भुसो, भुस; पं० भुस।

भेंट[1]—स्त्री० (उपहार)–प्रा० भिट्टण> अप० भेट्ट (प० च०) अव० भेट (की०) >हिं० भेंट। तुल० गु० भेटणुं।

भेंट[2]—स्त्री० (मुलाकात)–अव० भेट, भेट्ट>हिं० भेंट।

भेंटना—क्रि० (मुलाकात करना)–प्रा० भिट्ट>भेंट+ना।

भेड़—स्त्री० (बकरी के आकार-प्रकार का एक प्रसिद्ध चौपाया)–सं० मेष > प्रा० मेस।

भेड़िया—पुं० (एक प्रसिद्ध हिंसक जन्तु) –सं० वृक+ तुल० उर्दू भेड़िया, पं० भघिआड।

भेद—पुं० (रहस्य, अन्तर)–सं० पा० भेद>प्रा० अव० भेअ।

भेदना— क्रि० (वेधना, छेदना)–सं० √भिद्>प्रा० भिद>हिं० भेद+ना।

भेरी—स्त्री० (लड़ाई में बजाया जाने वाला एक प्रकार का ढोल)–सं० भेरी> प्रा० भेरि, भेरी (पाइअ०)>अव० भेरि (की०)>भेर।

भेला[1]—पुं० (नाव, बेड़ा)–सं० भेलक >प्रा० भेली, अप० भेली (हे०)।

भेला[1] (की०)—क्रि० (भिड़ना)–सं० भेलय्>प्रा० भेल>अव० भेला।

भेष—पुं० (वेष)–सं० वेष।

भैंस—स्त्री० (एक चौपाये का नाम)–सं० महिषी>प्रा० महिसी>हिं० भैंस। तुल० उर्दू भैंस, गु० भेंस।

भैंसा—पुं० (भैंस का नर)–सं० महिष >प्रा० महिस>हिं० भैंसा। तुल० उर्दू भैंसा।

भैयापा— पुं० (भाईचारा)– सं० भ्रातृता।

भैरा—प्रा० प्र०, वि० (बहरा, जिसे कानों से सुनाइ न पड़ता हो)–सं० वधिर >प्रा० बहिर>छ० भैरा।

भैरों—पुं० (देवता, भैरव)–सं० भैरव >भैरउ>भैरों।

भोंस—क्रि० (भोंकना, अनर्गल वर्तालाप करना, झिड़कना, डाटना) सं० भष्> भस>भोंस (बो०)।

भोंकना—क्रि० (भोंकना)–सं० बुक्क >प्रा० भुक्क>अप० भुक्कइ (महा०) >हिं० भोंकना। पुं० (भौं-भौं करना)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

–सं० बुक्कनम् ।

भोकस (पद०) पुं०—(दानव)–सं० पुल्कस > पुक्कस > पोकस > भोकस ।

भोज—पुं० (खाद्य पदार्थ)–सं० भोज्य ।

भोजन—पुं० (खाद्य-सामग्री)–सं० पा० भोजन > प्रा० अव० भोअण ।

भोजपत्र—पुं० (एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष)–सं० भूर्जपत्र > भोज-पत्तर > हिं० भोजपत्र ।

भोर[1]—पुं० (भूल, भ्रम)–सं० भ्रम > भरम > भमर > भवँर > भउँर > भउर > भोर ।

भोर[2]—पुं (तड़का)–सं० भा + गृह > प्रा० भा + हर > अप० भाहर (अपभ्रंश के कवि पुष्पदन्त द्वारा प्रयुक्त–'भाहरं सुदूसहं तमीहरं हंसयं, अर्थात् भा का घर दुःसह अंधकार का नाश करने वाला हंस (सूर्य) ।[२६]

भोला—वि० (सीधा)–सं० भ्रम > प्रा० भोल > अप० भोल > (महा०) > अव० भोर (की०) > हिं० भोला । तुल० पं० भोला, म० भोळा, गु० भोळो ।

भौं—स्त्री० (भौंह)–सं० भ्रू, पा० भुभक > प्रा० भुभ, भुमगा, भुमआ > अप० भउँह, भमुहा > भमुह > अव० भौ, भौंह (की०) > हिं० भौं । तुल० म० भुवई, गु० भवाँ, बं० ओ० भुरु ।

भौंकना—क्रि० (कुत्तों के द्वारा भों-भों ध्वनि उत्पन्न करना)–सं० बुक्कभषण (भषणं श्वरवः) या सं० बुक्कति > प्रा० बुक्कइ > अप० भुक्कइ (महा०); अप० √भुक्क (H. G. O. A, P. 427) > हिं० भौंकना ।

भौंना—क्रि० (घूमना)–सं० भ्रमण > प्रा० भमाड, भभाडिअ > भौंना ।

भौंरा—पु० (लट्टू के आकार का खिलौना, फिराने का लट्टू, मधुप)–सं० भ्रमर + क, प्रा० भभर > प्रा० भंवर > > भंउरअ > भौंरा, भँवरा, भँवर ।

भौंरी—स्त्री० (बालों का गोल चक्कर)–सं० भ्रभरिका > भँउरिअ > भौंरी ।

भौंह—स्त्री० (भृकुटी, भौं)–सं० भ्रू > प्रा० अप० भउँह, प्रा० भमुहा, भउम्हा, भउहा > भौंह ।

भौंहरा—पुं० (भुँइघरा, तहखाना, भूमि के नीचे खोदकर बनाया हुआ घर)–सं० भूमिगृह > पा० भूमिघर > प्रा० भुम्मिहर > भुइँहर > भँउहर > भौंहर > हिं० भौंहरा ।

भौ[1]—पुं० (डर)–सं० पा० प्रा० भय > हिं० भौ ।

भौ[2]—पु० (संसार, जगत)–सं० पा० भव > हिं० भौ ।

भौजाई—स्त्री० (भाई की पत्नी, भौजाई)–सं० भातृजाया > प्रा० भाउज्जा > अप० भउज्जा (हे०) > भाउज्जाइ > हिं० भौजाई । भौजी—सं० भातृजाया > प्रा० भाउज्जा > भाउज्जई > भाउजी > भौजी ।

भ्रांति—स्त्री० (भ्रम, धोखा)–सं भ्रान्ति > अप० भ्रन्ति ।

भ्राजना—क्रि० (शोभा पाना)– सं० भ्राज् > प्रा० भाज > हिं० भ्राजना ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म

मंगल—पुं० (१- सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह, २- कल्याण, भलाई)–सं० पा० मङ्गल>प्रा० मंगल, मगल्ल > हिं० मंगल। तुल० सिं० मंगलु, पं० मंगल, ओ० गु० म० मंगळ, अस० बं० मङ्गल।

मंगलना[२१]—क्रि० (प्रज्वलित करना, जलाना, जैसे—दीया मंगलना) – सं० मंगल (सं०√मङ्ग्+अलच्) > हिं० मंगल+ना।

मंगली—वि० (जिसकी जन्मकुंडली के लग्न चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगलग्रह पड़ा हो)–सं० माङ्गलिकः> प्रा० मंगलिअ>हिं० मंगली, मंगलीक, ह० मंगली।

मंघसर—पुं० (मार्गशिर, अगहन का महीना)–सं० मार्गशीर्ष > पा० मगसिर>हिं० मंगसर, मंघसर (बो०), ह० मंघ्सर्।

मंजन[१] (पद०)—पुं० (शुद्धि, स्नान)–सं० मार्जन > (√मृजू चु० शुद्धौ) प्रा० मज्जण>मंजन।

मंजन[२] — पुं० (वह चूर्ण जिसकी सहायता से मलकर दाँत साफ किए जाते हैं)–सं० मञ्जन>प्रा० मज्जण >हिं० मंजन। तुल० बं० माजन्, पं० मञ्जण, म० मंजन।

मंजर[१]—पुं० (दृश्य, मुखाकृति, क्रीड़ा-स्थल)–अ० मंजर।

मंजर[२]—पुं० (फूलों का झप्पा, मोती, तिलक वृक्ष, मंजरी) – सं० मञ्जर (√मञ्ज+अर)।

मंजरित—वि० (जिसमें मंजरी लगी हो) सं० मञ्जरित (मञ्ज+इतच्)।

मंजरी—स्त्री० (१- कोंपल, २- कुछ विशिष्ट पौधों के सीके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह, ३- लता) – सं० मञ्जरि>प्रा० हिं० मंजरी। तुल० गु० मंजरी, म० मंजिरी।

मंजारी—स्त्री० (मार्जारी, बिल्ली)–सं० मार्जारी > प्रा० मज्जरी > प्रा० मंजरी>ब्र० मंजारी (सूरदास के द्वारा प्रयुक्त शब्द)।

मंजीर— पुं० (नूपुर, घुँघरू) – सं० मञ्जीर>प्रा० हिं० मंजीर। तुल० म० मंजिरी, बं० मंजीर।

मंजीरा—पुं० (एक जोड़ा धातु का बाजा)–सं० मञ्जीर+क>प्रा० मंजीरअ>हिं० मंजीरा। तुल० बं० मन्दिरा, पं० मंजीरा, अस० ओ० मंजीरा।

मंजूर—वि० (स्वीकृत)–अ० मंज़ूर।

मंझन—पुं० (जिसका जन्म दोपहर को हुआ हो) – सं० माध्याह्निक > प्रा० मज्झण्हिय>हिं० मंझन।

मंझा[१(१)]—पुं० (तकली और फरई को जोड़ने वाला डंडा)–सं० मध्यक>प्रा० मज्झअ>मंझअ>हिं० मंझा।

मंझा[२]—वि० (मध्य का)सं० मध्य+क पा० मंझ>पा० मज्झअ>मंझा।

मंझा[३]—पुं० (चौकी, पलंग, खाट)–सं० मञ्चक>पा० मञ्च।

मंडना—क्रि० (१- मंडित या सुसज्जित करना, शृंगार करना, अच्छी तरह सजाना)–सं० मण्डयति>पा० मण्डेति >प्रा० मंडेइ>हिं० मण्डना। तुल०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म० मांड (णें), गु० माण्डवूँ। पुं०–सं० पा० मण्डन>प्रा० मंडण।

मंडल—पुं० (१- परिधि, चक्कर, २- गोल विस्तार, ३- सूर्य या चंद्रमा के चारो ओर दिखाई पड़ने वाला घेरा)–सं० मण्डल (समूह) > पा० मण्डल> प्रा० हिं० मंडल।

मंडली—स्त्री० (१-समूह, २- किसी विशेष कार्य के लिए बना हुआ कुछ लोगों का संघठित दल)–सं० मण्डली> पा० मण्डली (वि०, मण्डल वाला)> प्रा० मंडली। **टिप्पणी**—'मण्डलिकानां रत्नविदां सभां मण्डलीमाहुः'– श्री सुरेश्वर, रसपद्धति, पृ० ७१)। पुं० (सूर्य)–सं० मण्डलिन्(अष्टाङ्गहृदयम्)।

मंडुआ—पुं० (मंडप)–सं० मण्डप+क >प्रा० मंडवअ, मंडव>अव० मंडप> हिं० मडुवा, मंडुआ।

मंडौ(१) (पद०)—क्रि० (मांडना, मर्दित करना)–सं० मर्द>अप० मड्ड>माडना, मांडना।

मंत्र—पुं० (वह शब्द या शब्द-समूह जिससे किसी देवता की सिद्धि या अलौकिक शक्ति की प्राप्ति हो)–सं० मन्त्र>पा० मन्त>प्रा० मंत।

मंत्री—पुं० (१- परामर्श या सलाह देने वाला, २- सचिव) – सं० मन्त्रिन् (मन्त्र+इनि वा√मन्त्र्+णिनि) पा० मन्ती>प्रा० मंति।

मंद—वि० (धीमा)–सं० पा० मन्द> प्रा० हिं० मंद।

मंदा—वि० (धीमा, सस्ता)–सं० मन्द +क>प्रा० मंदअ>हिं० मंदा।

मंदिर, मंदिल✱—पुं० (पूजा का स्थान, देवालय, वास-स्थान)–सं० पा० मन्दिर > प्रा० अव० हिं० मंदिर, पु० हिं० मंदर। **टिप्पणी**—भूषण ने 'मन्दर' शब्द का प्रयोग किया है।

मंशा—स्त्री० (१- इच्छा, चाह, २- आशय, मतलब)–अ० मंशा।

मंसब—पुं० (पद, बड़ी पदवी)–अ० मंसब।

मंह—परसर्ग (में)–सं० मध्ये>मांहि> मांह, मंह।

मँजार—प्रा० प्र०, पुं० (बिल्ली का नर)–सं० मार्जार>प्रा० मंजर, मज्जार >हिं० मँजार। तुल० गु० म० मांजर।

मँजीठा—पु० हिं०, पुं० (मजीठ, एक प्रकार की लता जो लाल रंग बनाने और औषध के काम में प्रयुक्त होती है)–सं० मञ्जिष्ठा > प्रा० मंजिट्ठा > हिं० मँजीठा।

मँझधार—पुं० (धारा के बीच में)–सं० मध्यधार>प्रा० मज्झधार>हिं० मँझधार।

मँझला—वि० (बीच का, मध्य का)–सं० मध्यमः>मज्झलो>हिं० मँझला।

मँडुवा—पुं० (मँडप)–सं० मण्डप+क> प्रा० मंडवअ>हिं० मँडुवा, छ० मँडवा।

मअंगा(१) (की०)—पुं० (हाथी)–सं० मातंग>प्रा० मायंग>अव० मअंगा।

मआल — पुं० (नतीजा, अंत)–अ० मआल।

मकड़ा—पुं० (एक प्रसिद्ध कीड़ा जो अपने शरीर से निकले हुए एक प्रकार के तन्तुओं से जाला तानकर उसमें मक्खियाँ आदि फँसाता है)–सं० मर्कटक>प्रा० मक्कटक (मकड़ा) > प्रा० मक्कड>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अप० मक्कोडा (दे० ना० मा०) > हिं० मकड़ा । छ० मेकरा । स्त्री०—सं० मर्कट + इका > प्रा० मक्कडिआ ।

मकतब—पुं० (१- पाठशाला, मदरसा, २- छोटे बच्चों को कराया जाने वाला शिक्षा का प्रारम्भ)–अ० मक्तब ।

मकतबखाना — पुं० (मकतब) – अ० मक्तब + फ़ा० खान ।

मकबूल—वि० (जो कबूल कर लिया गया हो, स्वीकृत)–अ० मक़बूल ।

मकरेड़ा—प्रा० प्र०, पुं० (ज्वार या मक्के का डंठल)–सं० मर्कटक + इल + क (स्वार्थे प्र०) प्रा० मक्कडअइल्लअ > हिं० मकरेड़ा ।

मकुना—पुं० (छोटा हाथी, वह नर हाथी जिसके दाँत न हो)–सं० मत्कुण > प्रा० मक्कुण > हिं० छ० मकुना ।

मक्का[1]—पुं० (अनाज-विशेष, मकई)–सं० मर्कटक (अनाज-विशेष), सं० महाकाय (आचार्य प्रियव्रत, द्रव्यगुण-विज्ञान, पृ० १६८) । तुल० ते० जोन्नालु, त० चोलम्, क० मेक्केजोल, मल० चोलम्, अं० मेज (maize), बं० मकइ, ओ० मका, पं० मक ।

मक्का[2]—पुं० (मुसलमानों का अरब-स्थित प्रसिद्ध तीर्थ स्थान)–अ० मक्का ।

मक्खन — पुं० (नवनीत)–सं० मंथज (√मन्थ्, विलोडने), सं० म्रक्षण > पा० मक्खण (तेल, माखना) > प्रा० मक्खण > हिं० मक्खन । तुल० बल्गा० मस्लो ।

मक्खा—पुं० (बड़ी जाति की मक्खी)–सं० मक्ष + क > प्रा० मक्खअ > हिं० मक्खा ।

मक्खी—स्त्री० (एक तरह का उड़ने वाला कीड़ा) – सं० मक्षिका > पा० मक्खिका > प्रा० मक्खिआ > हिं० मक्खी ।

मखना—पुं० (वह नर हाथी जिसके दाँत न हों, अथवा छोटे-छोटे दाँत हों, मकुना)–सं० मत्कुण + क ।

मखमल—स्त्री० (एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा)–अ० मख़्मल ।

मखमली — वि० (मखमल का बना हुआ)–फ़ा० मख़्मली ।

मखलूक—पुं० (१- ईश्वर की सृष्टि, २- मनुष्य)–अ० मख़्लूक़ ।

मखाना— पुं० (मखाना)–सं० मखान्न + क (सं० मख + अन्न + क) ।

मखौल— पुं० (मजाक, परिहास)–देशज ।

मग—पुं० (रास्ता, राह)–सं० मार्ग > प्रा० मग्ग > हिं० मग ।

मगज—पुं० (मस्तिष्क)–फ़ा० मग़ज़ ।

मगन—वि० (१- डूबा हुआ, २- बहुत अधिक आनन्द या प्रसन्नता में लीन)–सं० मग्न ।

मगर[1]—पुं० (घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलतन्तु)–सं० मकर > प्रा० हिं० मगर, ह० मग्र (मच्छ) ।

मगर[2] — अव्य० (लेकिन, पर)–फ़ा० मगर ।

मगरा[1]—वि० (अभिमानी)–अ० मग़रूर ।

मगरा[2]—प्रा० प्र०, पुं० (बाट, मार्ग)–सं० मार्ग > प्रा० मग्ग > हिं० मग + रा (प्र०) ।

मगरिब—पुं० (पश्चिम दिशा)–अ०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मग्रिव ।

मगरी[1]—स्त्री० (मकड़ी)–सं० मर्कटी ।

मगरी[2] — प्रा० प्र०, स्त्री० (ढालुए छप्पर का बीच का या सबसे ऊँचा भाग) – सं० मार्ग+र+इका > प्रा० मग्गडिआ > हिं० मगरी ।

मगरो—प्रा० प्र०, पुं० (नदी का ऐसा किनारा जिसमें बालू के साथ मिट्टी मिली हो और जो जोतने बोने योग्य हो गया हो)–देशज ।

मगहर—प्रा० प्र०, पुं० (मगध देश)–सं० मगध > प्रा० मगह, मगहग > हिं० मगह, मगहर (स्थान-विशेष)।

मगहैया—वि० (१- मगध देश का)–सं० मागधीय+क ।

मघा—स्त्री० (अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र)–सं० मघा (√मह्+ घ, ह्रस्य घत्वम्, टाप्) > पा० प्रा० हिं० मघा ।

मचना—क्रि० [१- आरम्भ होना (शोर इत्यादि), २- छा जाना, फैलना (धूम, कीर्ति आदि)]–सं० √मच् > प्रा० मच्च > हिं० मचना ।

मच्छ—पुं० (बड़ी मछली)-सं० मत्स्य > पा० प्रा० हिं० मच्छ ।

मच्छर—पुं० (मच्छड़)–सं० मत्सर > पा० मच्छरो > प्रा० मच्छर > हिं० मच्छर । तुल० सिं० मच्छरु ।

मच्छी—स्त्री० (मछली)–सं० मत्स्यिका > पा० मच्छी > प्रा० मच्छिआ > हिं० मच्छी ।

मछली—स्त्री० (सदा जल में रहने और अंडों से उत्पन्न होने वाले जीवों का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा वर्ग)–सं० मत्स्य > पा० प्रा० मच्छ > मच्छली > हिं० मछली । (मच्छ का स्त्री० अल्पा० रूप) । तुल० कु० माछो, बं० माछ, ओ० माछ, पं० मच्छू, सिं० मछु, गु० माछली ।

मजलिस — स्त्री० (जलसा, सभा, सम्मेलन)–अ० मज्लिस ।

मजदूर — पुं० (श्रमिक)– अ० फ़ा० मज़्दूर ।

मजबूत—वि० (१- दृढ़, २- बलवान्)–अ० मज़्बूत ।

मजबूर—वि० (विवश तथा निःसहाय)–अ० मज़्बूर ।

मजमून—पुं० (वृत्तांत, विषय, आशय)–अ० मज़्मून ।

मजा — पुं० (आनंद)–अ० मज़ा (mazah) ।

मजाक—पुं० (हँसी-ठट्ठा, परिहास)–अ० मज़ाक़ ।

मजाकिया—वि० (मजाक या परिहास से संबन्ध रखने वाला)–अ० मज़ाक़िया । तुल० उर्दू मज़ाहिया ।

मजार—पुं० (१- कोई दर्शनीय स्थल, २- विशेषतः किसी पीर, फकीर या महापुरुष की कब्र)–अ० मज़ार ।

मजीठ—स्त्री० (एक लता जिसके छोटे गोल फलों से लाल रंग तैयार किया जाता है)–सं० मञ्जिष्ठ > प्रा० मंजिट्ठ मजीठ ।

मजूर—प्रा० प्र०, पुं० (श्रमिक)–अ० फ़ा० मज़्दूर ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मजेदार—वि० (जिसमें विशेष आनन्द, सुख या स्वाद हो)–फ़ा० मज़ःदार।

मज्जा[२३]—स्त्री० (शरीर के अन्तर्गत नली की हड्डी के अन्दर का गूदा जो कोमल और चिकना होता है)–सं० मज्जा >पा० मिज्ज >अ० मा०, जै० महा० मिंजा, मिंजिया।

मझार—प्रा० प्र०, क्रि० वि० (मध्य का अंश)–(१) सं० मध्य>प्रा० मज्झ> हिं० मझ+आर (प्र०) (२) सं० मध्य-कार>प्रा० मज्झआर (पाइअ०)>हिं० मझार। तुल०सिं० मंझारो, म० माज (माझारीं)।

मझोटवा, मझोटा—पुं० (घर का मध्य भाग)–सं० मध्यकोष्ठ अथवा सं० मध्य +उटज=मध्योटज (कुटिया का मध्य भाग)।

मटका—पुं० (कलश, घड़ा) – प्रा० मडक्क>हिं० मटका।

मटिया—स्त्री० (मिट्टी)–सं० मृत्तिका >प्रा० मट्टिआ, मट्टी>हिं० मटिआ।

मट्टी—स्त्री० (मिट्टी)–सं० मृत्तिका> प्रा० मट्टिआ<प्रा० हिं० मट्टी।

मट्ठा—पुं० (मथकर मक्खन निकाल लेने पर बचा हुआ दही का पानी, छाछ)–सं० मथितं (भा० प्र० निघंटु, तक्रवर्ग, पृ० ३०४)।

मडमडाना—क्रि० (मरमराना) – सं० मडमडाय्>प्रा० मडमड>हिं० मड-मडाना।

मडुआ—प्रा० प्र०, पु० (बाजरे की जाति का एक प्रकार का मोटा अनाज)–देशज शब्द (पर्वतीय प्रदेश में प्रयुक्त अनाज)।

मढ़ना—क्रि० (१) चारों ओर लगाना या लपेटना, (२) चित्र, दर्पण आदि चौखट में जड़ना>सं० मण्ड् (to deck, to adorn मो० वि०, पृ० ७७५)> प्रा० मढिअ>हिं० मढना। —पुं०–सं० मण्डन>प्रा० मंडण। टि०–√सं० मठ् से विकास दिखाना अशुद्ध होगा।

मढ़ा—प्रा० प्र०, पुं० (मिट्टी का बना हुआ छोटा घर)–सं० मठ+क>प्रा० मढअ>हिं० मढ़ा।

मढ़ीं—स्त्री० (छोटा मठ)–सं मठिका >प्रा० मढिआ, मढी>हिं० मढ़िया, मढ़ैया, मढी।

मणनी[१]—स्त्री० (खलिहान में एकत्र लाँक या फसल को दाँय चलाकर अन्न अलग करने की प्रक्रिया)–तुदादिगण में मृण हिंसायाम् धातु से मृणति, मृणन्तः बनते हैं। इसी धातु से मणना, मणनी शब्द बने हैं।

मण्डित—वि० (भूषित)–सं० मण्डित> प्रा० मंडिअ>अव० मंडिअ, मंडिआ (की०)

मत[१(१०)]—क्रि० वि० (निषेधवाचक शब्द)–सं० प्रा० मा+अति।

मत[२]—स्त्री० (मति)–सं० मति।

मत[३]—वि० (मतवाला)–सं० मत्त।

मतलब—पुं० (आशय)–अ० मत्लब।

मता[१]—पुं० ('मालमता' शब्द में मता का अर्थ—गाँव, जिला या देश)– खलदी भाषा मता।

मति—स्त्री० (बुद्धि, समझदारी)–सं० मति (√मन्+क्तिन्)>पा० मति।

मथना—क्रि० (मथानी या लकड़ी आदि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से तरल पदार्थ तेजी से चलाना, बिलोना)–सं० √मन्थ् > पा० मथति > प्रा० मथइ, मथ (सं० मथ् > प्रा० मह) > हिं० मथना । —पुं०–सं० मन्थन > > पा० मथन > प्रा० मंथण । तुल० सिं० मथणु, गु० मथवूं ।

मथानी—स्त्री० (बिलौनी, रई)–सं० मन्थनिका (सं० मन्थान, अमरकोश) > प्रा० मंथणिआ > मत्थणिआ > मंथणी > हिं० मथानी ।

मदमाता—वि० (मतवाला)–सं० मद-मत्त ।

मदहोश—वि० (निश्चेष्ट, बेसुध)–फ़ा० मद्होश ।

मदार—पुं० (एक पौधा, अर्क)–सं० मन्दार > प्रा० मंदार > हिं० मदार ।

मदारी—पुं० (जो बन्दर, भालू आदि नचाकर तमाशे दिखाते हैं)–सं० मंत्र-कारी, पा० मंता, मंत्तकारी > मंतआरी > मदारी ।

मद्दे नजर — वि० (जो दृष्टि के सामने हो)–अ० मद्दे नज़र ।

मधुप—पुं० (भौंरा)–सं० पा० मधुर ।

मधुर—वि० मीठा)–सं० पा० मधुप > प्रा० महुर ।

मध्य—पुं० (बीच का भाग)–सं० मध्य > प्रा० मज्झ, अव० मध्य (की०) । तुल० बल्गा० मेज्झदु (बीच) ।

मन[1]—पुं० (प्राणियों में अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि करने वाली शक्ति)–सं० मनस्, पा० मनो > प्रा० मणो, मणे, मण > हिं० मन ।

मन[2]—पुं० (एक माप, ४० सेर का वजन)–फ़ा० मन ।

मनसब—पुं० (१- पद, ओहदा । २- अधिकार)–अ० मनसब ।

मनस्वी—वि० (१- श्रेष्ठ मन से सम्पन्न, बुद्धिमान्, उच्च विचार वाला)– सं० मनस्विन् > प्रा० मणंसि (पाइअ०), महा० मांणासि (६३) > हिं० मनस्वी ।

मनाक★—वि० (बहुत ही थोड़ा या कम, नाम मात्र का)–सं० मनाक् > प्रा० मणयं (पाइअ०), मणा (हे०), महा-राष्ट्री, शौरसेनी मणम्, जै० महा० मण-यम्, मणियम(६३), उत्तर भारत की पहाड़ी बोलियों में मिणि, मिणी(८) । वल्गा० माल्को ।

मनाबउं (की०) क्रि० (मनाना)–सं० √ मन् > प्रा० मण, मणइ, प्रेरणार्थक रूप मणावइ > अप० मन्नाय > अव० मना-वउं ।

मनाहँ(१) (पद०)—(मन में)–सं० मन + मध्य > मन + मज्झ > मन + माँझ > मनाहँ ।

मनिहार — पुं० (चूड़ी बेचने वाला चुडिहारा जो स्त्रियों को चूड़ियाँ पह-नाता है)–सं० मणिकार > प्रा० मणि-आर > मन्हियार हिं० मनिआर ।

मनुवाँ (पद०)—पुं० (मनुष्य)–सं० मनुज > प्रा० मणुअ > मनुव > मनुवाँ ।

मनोहर—वि० (मन को अच्छा लगने वाला)– सं० पा० मनोहर > प्रा० मणो-हर ।

मनोहारी—वि० (चित्ताकर्षक) – सं० मनोहारिन् ।

मन्तर—पुं० (मन्त्र)–सं० मन्त्र > प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंत > हिं० मन्तर ।

ममत्व—पुं० (ममता)–सं० ममत्व> >प्रा० ममत्त>अप० ममत्त>अव० ममत्तयइ ।

ममाखी—स्त्री० (शहद की मक्खी)–सं० मधु+मक्षिका>प्रा० महु+मक्खिआ> हिं० ममाखी । तुल० बं० मौमाछी ।

ममोला[१]—पुं० (खञ्जन की जाति का पक्षी)–पश्तो मामूलकः ।

मयंक—पुं० (चंद्रमा)–सं० मृगाङ्क> प्रा० हिं० मयंक ।

मयन—पुं० (कामदेव)—सं० मदन >प्रा० मयण>हिं० मयन ।

मरज—पुं०(रोग, बिमारी)–अ० मरज़ ।

मरजी—स्त्री० (१-इच्छा, २-कृपा, ३-प्रसन्नता, ४-स्वीकृति)–अ० मर्ज़ी ।

मरना—क्रि० (प्राणियों की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अन्त होना, शरीर से प्राण निकलना)- सं० म्रियते (√मृ)>पा० मरति > प्रा० मरइ, मरए>हिं० मरना । –पुं०–सं० मरणम्>पा० प्रा० मरण ।

मरनी—स्त्री० (मृत्यु)–सं० मरणम् ।

मरम—पुं० (रहस्य, भेद)–सं० मर्म ।

मरम्मत—स्त्री० (किसी वस्तु का टूटा-फूटा या बिगड़ा हुआ अंश, ठीक करने का काम)–अ० मरम्मत ।

मरा—वि० (मृत)– सं० मृतक> प्रा० मडय>हिं० मरा ।

मराल—पुं० (हंस, घोड़ा, हाथी)–सं० मराल, प्रा० मराल (हंस-पक्षी) । तुल० बं० मराल, म० गु० मराळ ।

मरुआ— पुं० (एक सुगन्धित पौधा, इसके पत्तों की खाद्य चटनी बनती है और इसका औषध में प्रयोग होता है)–सं० मरुवक > प्रा० मरुअअ > हिं० मरुआ । तुल० म० मरवा, पं० मरुआ ।

मरुम, मोरम[१]—पुं० (पहाड़ का लाल बालू जो सड़कों पर बिछाने के काम आता है)–पा० मरूम्ब (बजरी या दर्रा बालू), त० मुरम्पु (कड़ी ऊबड़-खाबड़ पथरीली धरती, पत्थर या बजरी का टीला), ते० मोरमु (कंकड़, बजरी), तुलु मुर (पत्थर की खान, लाल बजरी) ।

मर्द—पुं० (पुरुष)–फ़ा० मर्दः ।

मर्दुम-शुमारी—स्त्री० (१-कहीं की जन-संख्या, २-किसी स्थान के निवासियों की गणना या गिनती होना)–फ़ा० मर्दुम-शुमारी ।

मर्म—पुं० (रहस्य)–सं० मर्मन्>प्रा० मम्म>अव० मम्म (की०) ।

मर्यादा—स्त्री० (१-सीमा, २-प्रतिज्ञा, ३-नियम)–सं० मर्यादा>प्रा० मेरा> अव० मेरहुँ (की०) ।

मल—पुं० (१-मैल, गंदगी, २-विष्ठा)–सं० पा० प्रा० हिं० मल ।

मलना—क्रि० (मालिश करना, मसलना) –सं० मृद्>प्रा० मद्द>हिं० मल+ना, छ० मल । –पुं०–सं० मर्दन > प्रा० मद्दण ।

मलबा—पुं० (कूड़ा करकट)–सं० मर्दितव्य+क>प्रा० मलेअव्वअ ।

मला—वि० (मर्दन किया हुआ, मसला हुआ, किसी पदार्थ को रगड़ा हुआ)–सं० मृदित+क>प्रा० मलिअ>हिं० मला ।

मलान—वि० (दुःखी, उदास, थकित,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिन्तित)–सं० म्लान।

मलार[1]—पुं० (एक राग का नाम)–सं० मल्हार > अप० √मल्ह > हिं० मलार, मल्लार, स्त्री० मल्लारी।

मलिन—वि० (मलयुक्त)–सं० मलिन (√मल+इनच्), पा० मलिन।

मलिना—स्त्री० (१- रजस्वला स्त्री, लाल खाँड या शक्कर) सं० मलिना (मलिन+टाप्)।

मलीदा—पुं० (चूरमा)–फ़ा० मालिदा (malida = bread made with milk, flour), उर्दू मलीदः।

मल्ल—पुं० (पहलवान)– सं० मल्ल (√मल्ल्+अच्) पा० प्रा० मल्ल।

मल्हना—क्रि० (लीला, विलास, आनन्द करना)–अप० √मल्ह, अप० मल्हणं (दे० ना० मा०) > हिं० मल्हना।

मल्हार—पुं० (लोकराग)–सं० मल्हकार > मल्हआर > मल्हार।

मल्हौना[2]—पुं० (एक सर्प)–सं० मालुधान।

मवास—पुं० (रक्षा का स्थान, आश्रय)–सं० महा+वासः।

मशक—पुं० (१-मच्छड़, २-शरीर पर का मस्सा)–सं० मशक (मश+कन् वा √मश्+वुन्)। स्त्री० (चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भर कर लाते हैं)–फ़ा० मश्क।

मशकूर—वि० (कृतज्ञ)–अ० मश्कूर।

मशक्कत—स्त्री० (१-मेहनत, २-वह परिश्रम जो जेलखाने के कैदियों को करना पड़ता है, ३-कष्ट)–अ० मशक़्क़त।

मश्ग़ूल—वि० (संलग्न, प्रवृत्त)–अ० मश्ग़ूल।

मशाल—स्त्री० (डंडे में चीथड़े लपेट कर बनाई हुई जलाने की बहुत मोटी बत्ती जो हाथ में लेकर चलाते हैं)–अ० मश्अल।

मसलना—क्रि० (मलना)—सं० म्रक्षण (म्रक्ष्=मलना)।

मसान—पुं० (मरघट, शव जलाने का स्थान)– सं० श्मशान > प्रा० मसाण (पाइअ०) > हिं० मसान।

मसाला—पुं० (१-साधारण सामग्री, उपकरण, २-भोजन को स्वादिष्ट बनाने वाले विशिष्ट पदार्थ, जैसे–लौंग, मिर्च आदि)–फ़ा० मसालह।

मसि—स्त्री० (१-लिखने की स्याही)–सं० मसि > पा० मसि (कालिख) > प्रा० मसि (काजल, स्याही) > हिं० मसि। तुल० बं० ओ० मसि पं० मस, म० गु० मसी।

मसूर—पुं० (दाल विशेष) – सं० प्रा० हिं० मसूर। तुल० पं० मसर, उर्दू मसूर, कश्मी० मुसुर्, सिं० मसूरु, म० गु० मसूर।

महंत—पुं० (वह संन्यासी जो अपने समाज अथवा किसी मठ का प्रधान हो)–वै० सं० महन्त, सं० महत् > पा० महन्त > प्रा० हिं० महंत। तुल० अवेस्ता मजन्त, लैटिन मागुस्।

महँगा—वि० बहुमूल्य, अपेक्षाकृत अधिक दाम वाला)–सं० महार्घ्य > पा० प्रा० महग्ग > अप० महग्घ > हिं० महँगा, महँगी। तुल० ने० महँगो, पं० उर्दू महँगा, सिं० महांगो, म० महाग, गु०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोंघु, अस० महङ्गा, ओ० महंगा।

१-मह[1]—पुं० (मेला—वै० सं० महः, (उत्सव)।

मह[1] (पद०)—पुं० (किसी चीज़ का मध्य भाग, बीच)—सं० मध्य>मध>मह।

महकमा—पुं०(विभाग)—अ० महकमः।

महत्त्व—पुं० (महान् का भाव)— सं० महत्त्व>पा० महत्त।

महफिल—स्त्री० (१-सभा, जलसा, २-नाचने गाने का स्थान या जलसा)—अ० महफ़िल।

महर—पुं० (ब्रज में बोला जाने वाला एक आदर सूचक शब्द, मुख्य)— सं० महत्, महत्तर > प्रा० महल्ल > हिं० महर।

महरा[1] (पद०)—पुं० (प्रधान अधिकारी, पूज्य या श्रेष्ठ व्यक्ति)—सं० महाराज>महराय>महराअ>महरा।

महरी[1]—स्त्री०(ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए एक आदर सूचक शब्द, अवध में पानी भरने एवं रसोई में मदद करने वाली नौकरानी के लिए प्रयुक्त)—सं० महार्या>महारिया> महरिया > हिं० महरी।

महरी,[1]महरिया, मेहरी[1]—स्त्री० (स्त्री, औरत, कहारी)—सं० महिला (मह= पूजना)>महल्लिका>महलिआ >महरिआ>महरिया>महरि, महरी>अप० मेहली (प० च०)> महरी, महरारू, महिरारु (बो०)।

महल—पुं० (१-प्रासाद, २-रनिवास)—अ० महल (ल्ल)।

महलात—पुं० (महल का बहु०)—अ० महल्लात।

महसूल—पुं० (वह धन जो राज्य किसी विशेष कार्य के लिये ले, कर, टैक्स; २-भाड़ा, किराया)—अ० महसूल।

महसूस—वि० (अनुभूत) अ० महसूस।

महाजनी—स्त्री० (१-रुपए के लेन-देन का व्यवसाय, हुँडी पुरजे का काम, २-एक प्रकार की लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नहीं लगाई जाती)—सं० महाजनीयः।

महाजान—पुं० (बहुत बुद्धिमान, बौद्धों का एक महायान संप्रदाय)—सं० महाज्ञानी।

महानस—पुं० (रसोई-घर)—सं० पा० महानस>प्रा० महाणस (पाइअ०)।

महापातर★—पुं० (महाब्राह्मण, मृतक कर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण)—सं० महापात्र।

महावत—पुं० (हाथी हाँकने वाला, हाथीवान)—सं० महामात्र>प्रा० महाआत्त, महावत्त>हिं० महावत। तुल० म० माहूत।

महुअर[1] (की०)— पुं० (भौंरा)—सं० मधुकर>प्रा० स० अव० महुअर।

महुआ[2]— पुं० (तूँबी नाम का एक प्रकार का बाजा)—सं० मधुकर।

महुआ—पुं० (एक प्रकार का वृक्ष)—सं० मधूक+क > प्रा० महुअ+अ, हिं० महुआ, महुओ।

महुकम★—वि० (पक्का, दृढ़)— अ० मुहकम (muhkam, A.C.D.P.L., p. 5 48)।

महूरत—पुं० (दो घड़ी का शुभ समय)—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० मुहूर्त ।

महेश्वर—पुं० (१-ईश्वर, २-शिव)–सं० महेश्वर > प्रा० महेसर ।

महेस★—पुं० (महेश, शिव, महादेव)–सं० महेश > प्रा० हिं० महेस ।

महोख[1] (पद०) — पुं० (साँड)–सं० महोक्ष > महोख ।

महोख[2]—पुं० (खैरे या लाल रंग का एक प्रकार का पक्षी)–सं० मधोक > प्रा० महोख ।

महोत्सव—पुं० (बहुत बड़ा उत्सव)–सं० महोत्सव > प्रा० महूसव (पाइअ०), महाराष्ट्री, जै० महा०, शौ० महूसव ।

मांस—पुं० (गोश्त)–सं० मांस (√मन् +स, दीर्घ) > प्रा० मंस (पाइअ०) महा०, अ० मा०, जै० महा०, शौ० मंश । तुल० पं० मास, सिं० मासु, म० मांस, मास, गु० मांस, बं० मांस, क० ओ० मांस ।

मांसल—वि० (१-मांस से भरा हुआ, २-मोटा-ताजा, पुष्ट)– सं० मांसल > प्रा० मंसल (पाइअ०) > हिं० मांसल ।

मांसाहारी—पुं० (१-मांस खाने वाला, २-दूसरे जीव-जन्तुओं का मांस खाकर निर्वाह करने वाला)–सं० मांसाहारिन् ।

माँखना—क्रि० (तेल मांखना)– सं० म्रक्ष > प्रा० मक्ख, मंख > हिं० मांखना, छ० मांख ।

माँग— स्त्री० (माँगने की क्रिया या भाव)–सं० मार्गणम् > प्रा० मग्गण > अप० मग्गणु > हिं० माँग । क्रि० (माँगना)–सं० मार्गय् > प्रा० मग्ग > हिं० माँगना । तुल० पं० कश्मी० मंग, म० मागणी, गु० माग ।

माँचा—पुं० (१-पलंग, खाट, २-बैठने की पीढ़ी, ३-मचान)–सं० पा० मञ्च (√मञ्च+घञ्) = खाट, पलंग; प्रा० मंची > हिं० माँचा । तुल० कु० माँचो, ओ० मोचा, पं० माजा ।

माँजना—क्रि० (मलना, साफ़ करना)–सं० मार्जति > पा० मज्जति > प्रा० मज्जइ > हिं० माँजना । –पुं०, सं० मार्जन > पा० मज्जना > प्रा० मज्जण, मज्जन > माँजना ।

माँझ★—अव्य० (में)– सं० मध्य > पा० प्रा० मज्झ > हिं० माँझ ।

माँटी, माटी— स्त्री० (मिट्टी)–सं० मृत्तिका > प्रा० मट्टिआ > हिं० माटी, माँटी ।

माँड़—पुं० (भात पकाने पर निकलने वाला पानी)–सं० मण्ड+क > पा० मण्ड > प्रा० मंडअ > हिं० माँड । तुल० बं० माड, ओ० मण्ड, पं० मांड ।

माँड़ा—पुं० (एक प्रकार की रोटी, फुलका)–सं० मण्डक > प्रा० मंडअ > हिं० माँड़ा ।

माँड्यौ★—पुं० (मंडप)–सं० मण्डप > माँड़वा । सं० मण्डप > प्रा० मंडव, मंडअ > माँड्यौ, माँडौ ।

माँढ़ौ[1] (पद०)— पुं० (मंडप)–सं० मंडप > मंडव > मंडउ > माँड़ौ > माँढ़ौ ।

माँत (पद०)—वि० (मतवाला, मद-युक्त, बेहोश)–सं० पा० प्रा० मत्त > माँत ।

माँद—वि० (१-फीका, उदास, अपेक्षाकृत बुरा)–सं० मन्द > प्रा० मंद > हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माँद ।

माँहा[१] (पद०)—अव्य० (माँह, मध्य)—सं० मध्य > प्रा० मज्झ > माँझ > माहाँ ।

मा—स्त्री० (लक्ष्मी, माता, माँ)—सं० मातृका > प्रा० माउआ (दुर्गा, पार्वती) > हिं० मा ।

माई—स्त्री० (माता, माँ)—सं० मातृ > प्रा० माइ > हिं० माई ।

माकूल— वि० (१-उचित, २-अच्छा, बढ़िया, ३-तर्क में परास्त)- अ० मा'क़ूल ।

माख★—पुं० (१-अप्रसन्नता, २-क्षोभ, ३-पछतावा, ४-आवेश)-सं० मक्ष > मक्ख > हिं० माख ।

माखन— पुं० (नवनीत, नैनूँ)-सं० म्रक्षण (√मृक्ष संघाते) > पा० प्रा० मक्खण > मक्खन > हिं० माखन । तुल० पं० मक्खण, गु० म० माखण, सिं० माखणु ।

माघ—पुं० (महीना-विशेष)-सं० पा० माघ ।

माछी[१]—प्रा० प्र०, स्त्री० (मक्खी)-सं० मक्षिका > प्रा० मच्छिगा, मच्छिआ, मच्छी > अव० माछी ।

माछी[२]—प्रा० प्र०, स्त्री० (मछली)-सं० मत्स्य > प्रा० मच्छ > हिं० माछी ।

माजून—स्त्री० (औषध के रूप में बनी कोई मीठी चटनी, अवलेह) - अ० मा'जून ।

माटी—स्त्री० (मिट्टी)-सं० मृत्तिका > पा० मत्तिका > प्रा० माट्टिआ > मट्टी > हिं० माटी । तुल० पं० मिट्टी, सिं० मिटी, गु० माटी, म० माती ।

माठना— प्रा० प्र०, क्रि० (पत्थर की सतह को चिकना बनाना)-सं० मृष्ट (√मृश्) > पा० प्रा० मट्ठ > माठ + ना ।

माठा—वि० (सुस्त)-सं० मंद > प्रा० मट्ठ (आलसी), प्रा० मंठ (शठ, लुच्चा, बदमाश, दे०, पाइअ०) > हिं० माठा । तुल० सिं० मठो, गु० माठूँ, म० माठा ।

माडव—पुं० (मंढ़ा, मंडप)-सं० पा० मण्डप ।

माड़ो—पुं० (मण्डप)-सं० मण्डप > अव० माड़ो ।

मातंग—पुं० (हाथी)-सं० पा० मातङ्ग > प्रा० मातंग ।

मातदिल— वि० (शीतोष्ण)- अ० मो'तदिल ।

मातहत—वि० (किसी की आधीनता या देख-रेख में काम करने वाला)- अ० मातहत ।

माता—स्त्री० (जननी)-सं० मातृ > प्रा० माअरा, माइ > अव० माञो (की०) । तुल० ज० मुटर (mutter) लातिन मातेर, रूसी माची, अं० मदर फ़ा० मादर, चैक मात्का, स्पे० मादरे अवेस्ता मातर् > बल्गा० माइका ।

माथा—पुं० (सिर का ऊपरी भाग) सं० मस्तक > पा० मत्थो > प्रा० मत्थ > मत्थअ, मत्थ > हिं० माथा । तुल० पं० मत्था, सिं० मथु, मथो, गु० मा म० माथा ।

मादर—प्रा० प्र०, पुं० (वाद्य-विशेष) सं० मर्दल > पा० प्रा० मद्दल (पाइअ०) > हिं० मादर > माँदल ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माद्दा—पुं० (१- मूल तत्त्व, २- सामर्थ्य, ३- मवाद, पीप)–अ० माद्दः ।

मान—पुं० (आदर)–सं० मान > पा० मानो (Mano represents the intellectual functioning of consciousness) > प्रा० माण > हिं० मान । तुल० सिं० माणु, म० मान ।

मानना—क्रि० (१- कोई बात स्वीकार करना, २- समझना, जैसे — बुरा मानना)–सं० मन्यते, मानय् (सं० √मन् > प्रा० मण=मानना) > पा० मन्नति > प्रा० माण > माणइ, माणेइ, माणति > हिं० मानना । तुल० ओ० मानिबा, पं० मनणा गु० मानवूं, म० मान (णें) ।

मानिक—पुं० (एक मणि का नाम)–सं० माणिक्य > प्रा० माणिक्क > हिं० माणिक, छ० मानिक ।

मानी—वि० (१- मान या अभिमान करने वाला, २- मान या प्रतिष्ठा रखने वाला)–सं० मानिन् ।

मानो—क्रि० वि० (जैसे, गोया)–सं० मान्यतु > प्रा० मण्णउ > हिं० मानो ।

माप—स्त्री० (१-मापने की क्रिया, भाव या नाप, २- वह मान जिससे कोई चीज मापी जाय, मान, ६- किसी मान से मापने या नापने पर निकलने वाला ...)–प्रा० मप्प > हिं० माप ।

मापना—क्रि० (किसी वस्तु के विस्तार, ...त्व आदि का मान या परिमाण ...लना)–सं० मापन (√मा, माने measure) । पुं०–सं० मापन ।

मामला—पुं० (१- व्यापार, काम, २- ...न, व्यवहार, ३- झगड़ा, ४- विवाह की बात या विषय, ५- अभियोग)–अ० मुआमलः ।

मामा—पुं० (माँ का भाई)–सं० मामक > पा० मामको > प्रा० मामअ > हिं० मामा । तुल० पं० म० गु० बं० अस० मामा, उर्दू ओ० मामू, सिं० मामो ।

टिप्पणी–किशोरीदास वाजपेयी 'मामा' शब्द में 'मा' की द्विरुक्ति मानते हैं ।

मामी—स्त्री० (मामा की स्त्री)–सं० मामिका > प्रा० मामिया, मामी (पाइअ०) > अप० मम्मी (हे०) > हिं० मामी । उर्दू मामी, मुमानी, ओ० माईं, माइँ, त० मल० क० मामि । बं० मामिमा, पं० सिं० म० गु० अस० मामी ।

माया[1]—(माँ) स्त्री० (माता)–सं० माता > प्रा० माय > माया । तुल० सिं० माउ, म० आई, त० अम्मा, तें० मल० क० अम्म । स्पे० मादरे, बल्गा० में संबोधन के लिए 'मामो' ।

माया[2]—स्त्री० (१- लक्ष्मी, २- धन, सम्पत्ति, ३- कोई ऐसा कार्य या बात जो वास्तविक या सत्य न रहने पर भी सत्य और ठीक जान पड़े)–सं० पा० प्रा० माया ।

मायूसी—स्त्री० (निराशा)–अ० मायूसी ।

मारक—(की०) पुं० (मारने वाला)–सं० मारक > प्रा० मारग > अव० मारक ।

मारना—क्रि० (प्रहार करना, पीटना, हत्या करना)–सं० मारयति > पा० मारेति > प्रा० मारेइ > अव० मारइ (की०) > हिं० मार + ना । पुं०–सं० मारण (√मृ + णिच् + ल्युट्) । तुल०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कु० मारणो, ओ० मारिबा, सिं० मारणु।

मारे—क्रि० (हत्या की)–सं० मारय्> प्रा० मार, मारइ, मारेइ>हिं० मारे।

मार्ग—पुं० (रास्ता, पथ)–सं० मार्ग> प्रा० मारग, मग्ग। तुल० पं० मग्ग, गु० माग, सिंह० मग।

मार्गी—पुं० (१- मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति, २- यात्री, पथिक) – सं० मार्गिन्।

मार्जार—पुं० (बिल्ला, बिलाव)–सं० मार्जार > पा० प्रा० मज्जार > प्रा० माज्जार।

मार्जारी—स्त्री० (बिल्ली)–सं० मार्जारी >पा० मज्जारी।

१- माल[1]—(पद०) पुं० (पहलवान)– सं० प्रा० मल्ल>माल।

२- माल—स्त्री० (१- माला, हार, २- वह डोरी जिससे चरखे में का तकवा घूमता है, ३- पंक्ति)–सं० प्रा० माला।

३- माल—पुं० (सम्पत्ति, धन)–अ० माल।

माला—स्त्री० (१- पंक्ति, २- सूत में गोलाकार पिरोये हुए फूल या मनके आदि)–सं० पा० प्रा० हिं० माला। (सं० मालिका > प्रा० मालिआ)। तुल० म० माळ।

मालाबार — पुं० (एक देश)–सं० मलय+वाटः।

मालिश—स्त्री० (मलने की क्रिया)– फ़ा० मालिश।

माली[1]—पुं० (बागवान, बाग के पौधे आदि सींचने और उनकी रक्षा, वृद्धि आदि करने वाला व्यक्ति)–सं० मालिन्, पा० माली (मालाधारी), प्रा० मालि (पुष्प व्यवसायी) > हिं० माली। स्त्री०—(मालिनी)–सं० मालिनी>प्रा० मालिणी। तुल० पं० बं० अस० माली, सिं० माल्ही>म० गु० ओ० माळी।

माली[2] — वि० (माल-सम्बन्धी)–अ० माली।

मालूम—वि० (ज्ञात)–अ० मा'लूम।

मालूमात—स्त्री० (जानकारी)– अ० मा'लूमात।

माशूक— पुं० (प्रेम-पात्र, प्रिय)–अ० मा'शूक़।

माशूका—स्त्री० (प्रेमिका, प्रेयसी)– मा'शूकः।

मास—पुं० (वर्ष के बारहवें भाग का काल विभाग)–सं० मास (√मस+ घञ्), पा० प्रा० हिं० मास। तुल० गु० म० मास। स्पे० मेस (mes), बल्गा० मेसेत्स, ज० Monat।

मासकबार—पुं० (महीने का अंत का दिन)– पुर्त० mes (मास)+acabar (पूरा होना)>मासकबार।

मासा[1]—पुं० (माशा, तौल-विशेष)– सं० माष > पा० मासक (सिक्का, मासा)>प्रा० मास (परिमाण-विशेष) >हिं० मासा।

मासा[2]—प्रा० प्र०, पुं० (मच्छड़)–सं० मशक।

मासिक — पुं० (मासिक)–सं०, पा० मासिक>प्रा० मासिअ।

मासी—स्त्री० (माँ की बहिन)–सं० मातृष्वसृ > प्रा० मासिआ > हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मासी।

माह—पुं० (माघ का महीना)–सं० माघ>प्रा० हिं० माह। पुं० (मास, महीना)–फ़ा० माह।

माहवार—क्रि० वि० (मासिक)–फ़ा० माहवार।

माहवारी—स्त्री० (१- हर महीने का, २- स्त्रियों का मासिक धर्म)–फ़ा० माहवारी।

माहिं★—अव्य० (भीतर, अन्दर)–सं० मध्य>प्रा० मज्झ>हिं० माहिं।

माहिर — वि० (दक्ष, कुशल)–अ० माहिर।

माही—स्त्री० (मछली)–फ़ा० माही।

माहुर—प्रा० प्र०, पुं० (शाक-विशेष, तरकारी)–प्रा० माहुर, माहुरय>हिं० माहुर।–पुं० (विष, जहर)–सं० माधुर >प्रा० माहुर (अम्ल रस से भिन्न रस वाला)>अप० माहुरं (दे० ना० मा०) >हिं० माहुर(विष, अर्थ का विपर्य्यय)।

मिंजनी—स्त्री० (मींजने की मिट्टी)–सं० मार्जन>प्रा० मज्जण>मिंजनी।

मिंबर—पुं० (मस्जिद में वह ऊँचा स्थान जहाँ इमाम मुल्ला आदि खुतबा पढ़ते हैं, नमाज पढ़वाते और उपदेश करते हैं)–अ० मिंबर।

मिट्टी—स्त्री० (वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल पर प्रायः सब जगह पाया जाता है, धूल, खाक)–सं० मृत्तिका >प्रा० मित्तिआ>हिं० मिट्टी, मट्टी।

मिटना—क्रि० (अंकित चिह्न आदि नष्ट होना, २- न रह जाना)–सं० मृष्ट> प्रा० मेट, मेटाव, मिटावइ > हिं० मिटना। तुल० सिं० मेटणु, गु० मिटवूँ।

मिठबोला—पुं० (वह जो मीठी-मीठी बातें करता हो)–सं० मिष्टवादिन्>प्रा० मिट्ठवादि, मिट्ठवोल्लणअ > हिं० मिठबोला।

मिठाई—स्त्री० (कोई खाने की मीठी चीज)–सं० मिष्ट>मिट्ठ>हिं० मीठा +आई, मिठाई।

मिती—स्त्री० (चन्द्रमास की तिथि जो प्रत्येक पक्ष में १ से १५ तक होती है)–सं० मिति।

मिनट — पुं० (६० सेकेंड)–लैटिन minuere (कम करना), स्पे० मिनुतो minuto, फ्रें० minute, अं० minute।

मिनती—प्रा० प्र०, स्त्री० (प्रार्थना)–सं० विनति >प्रा० विणय।

मिनमिनाना — क्रि० (मिनमिनाकर बोलना, अव्यक्त शब्द करना)–सं० मुणमुणाय् > प्रा० मुणमुण > हिं० मिनमिनाना।

मिर्च—स्त्री० (मिर्ची, एक मसाले का नाम)–सं० पा० मरिच>हिं० मिर्च, छं० मरीच। तुल० कश्मी० मर्चु, पं० उर्दू मिर्च, म० मिरची, गु० मरची।

मिल—स्त्री० (१- अनाज, गल्ले या दाने आदि पीसने की चक्की जो भाप या बिजली आदि से चलती हो, २- रूई ओटने, सूत कातने और कपड़ा बुनने आदि का कारखाना।)–अं० मिल।

मिलन—पुं० (मिलने की क्रिया या भाव)–सं० मिलन।

मिलना—क्रि० (१- भेंट या मुलाकात

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करना, २- दो सम्मिलित पदार्थों का सम्मिलित या मिश्रित होकर एक करना)–सं० मिलति>प्रा० मिलइ> अव० मिलइ, मिलए>हिं० मिल+ना। पुं०, सं० मिलन>प्रा० मिलण। तुल० पं० मिलणा, सिं० मिरणु, ने० मिल्नु। मिला (हुआ)–वि०, सं० मिलित>प्रा० मिलिअ।

मिलाना — क्रि० (मिश्रण करना, मिलाना) – सं० मेलय्>प्रा० मेलव (पाइअ०), मेलवइ>हिं० मिलाना।

मिल्कियत — स्त्री० (१- मालिक या स्वामी होने का अधिकार या भाव)– अ० मालियत।

मिसकीन—वि० (१- बेचारा, दीन, २- निर्धन)–अ० मिस्कीं।

मिसकीनता—स्त्री० (१- दरिद्रता, २- नम्रता, दीनता)–अ० मिस्कींतब्अ।

मिसाल—स्त्री० (१- उपमा, २- उदाहरण, ३- कहावत)–अ० मिसाल।

मिस्तरी—पुं० (वह जो मकान, काठ, धातु आदि के सामान बनाने अथवा यन्त्रों आदि की मरम्मत करने का अच्छा कारीगर हो)–पुर्त० mestre (master, expert)। तुल० बल्गा० माएस्तोर।

मिस्सा — पुं० (अनेक अनाजों को मिलाकर बनाया हुआ आटा) – सं० मिश्रित>प्रा० मिस्सिया>हिं० मिस्सा, मिस्सी।

मिस्सी—स्त्री० (१- माजूफल, लोहचून, तूतिया आदि के योग से तैयार किया जाने वाला एक तरह का मंजन जिससे स्त्रियाँ अपने दाँत और होंठ रँगती हैं)– फ़ा० मिसी।

मिहाना—(हिमायमान होना, सूखापन खो देना, यथा—बरसात में चने मिहा जाते हैं)–सं० हिम>मिह > मिहाना (नाम-धातु रूप)[१९]

मिहिर—पुं० (१- सूर्य, २- चन्द्रमा)– सं० मिहिर (√मिह्+किरच्)।

मींडना—क्रि० (१- हाथों से मलना, मसलना, २- कुचलना या रौंदना, मर्दन करना)–सं० मृण् (हिंसायाम्) अथवा सं० मृद् (to press, to rub), सं० मर्दन।

मीच—स्त्री० (मृत्यु, मौत)–सं० मृत्यु> >प्रा० मिच्चु > हिं० मीच, मीचु (बो०)। तुल० फ्रे० मोर्त (mort), स्पे० मुएरते (muerte)।

मीचना—क्रि० (मूँदना, बंद करना, ढाँकना)–सं√मिष् (आँख झपकाना)> प्रा० मिंचण (मीचना, निमीलन)>हिं० मीचना। तुल० ते० मीचु, म० मिचक (णें)।

मीठा—पुं० (१- मिठाई, २- गुड़)– वि० (१- मधुर, २- स्वादिष्ट)–सं० मिष्ट > प्रा० मिट्ठ > अव० मिट्ठा (की०)>हिं० मीठ+पुं० विभक्ति= मीठा। तुल० पं० मिट्ठा, उर्दू मीठा, सिं० मिठो, गु० मीठो, ओ० अस० मिठा।

मीत—पुं० (मित्र)–सं० मित्र>पा० प्रा० अप० मित्त>अव० मित्त (की०) >हिं० मीत। तुल० ओ० मित, कश्मी० मेठर।

मीनमेख — पुं० (सोच-विचार)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मीन+मेष>मीणमेख>मीनमेख।

मीयाद—स्त्री० (किसी कार्य के लिए नियत समय, अवधि)–अ० मीआद।

मीयादी—वि० (जिसकी कुछ अवधि निश्चित हो)–अ० मीआदी।

मीसि[1] (की०)—क्रि० (मिलना)–सं० मिश्र>प्रा० मिस्स, मीस>अव० मीसि।

मुंड—पुं० (गरदन के ऊपर का अंग जिसमें केश, मस्तक, आँख, मुँह आदि होते हैं)–सं मुण्ड>प्रा० हिं० मुंड।

मुंडमाला—स्त्री० (कटे हुए सिरों की माला जो शिव या काली देवी के गले में होती है)–सं० मुण्डमाला > प्रा० मुंडमाला।

मुंडन—पुं० (सिर मूंडना, केशों का अपनयन)–सं० मुण्डनम्>प्रा० मुंडण >हिं० मुंडन। तुल० पं० उर्दू मुन्डन, सिं० मुनणु, बं० मुंडन, ओ० मुंडन, म० मुंडण।

मुंडना—क्रि० (१- मूँड़ा जाना, २- लूटा या ठगा जाना)–सं० मुण्डयति> पा० मुण्डेति, मुण्डेइ, मुण्डइ > हिं० मुंडना। तुल० गु० मुंडवूँ, म० मुंड (णें)।

मुंडी—पुं० (जिसका मुंडन हुआ हो, मुँडा हुआ, संन्यासी, शिवजी का नामान्तर)–सं० मुण्डिन्।

मुंतजिम—पुं० (वह जो प्रबंध करता हो, व्यवस्थापक)–अ० मुंतज़िम।

मुंतजिर—वि० (प्रतीक्षा करने वाला)–अ० मुंतज़िर।

मुंदर—प्रा० प्र०, पुं० (मुद्रा)–सं० मुद्रा>प्रा० मुद्दा>हिं० मुंदर, मुँदरा।

मुँगौछी—स्त्री० (मूँग का बना हुआ नमकीन पदार्थ)–सं० मद्गपथ्या>प्रा० मुग्गपच्छा>हिं० मुँगौछी, मुँगौरी।

मुँडेरा—पुं० (दीवार का वह ऊपरी भाग जो सबसे ऊपर की छत के चारों ओर कुछ उठा हुआ होता है)–सं० मुण्ड +इल+क>प्रा० मुंड+इल्लअ > हिं० मुंडेरा।

मुँदरी—स्त्री० (अँगूठी)–सं० मुद्रिका> प्रा० मुद्दिआ, मुद्दअ>मुंदरिअ>हिं० मुँदरी।

मुँह—पुं० (प्राणी का वह अंग जिससे वह बोलता है)–सं० मुख>प्रा० मुह> >हिं० मुँह। तुल० पं० उर्दू मूँह, गु० म्हो।

मुअत्तल—वि० (जो काम से कुछ समय के लिए दण्डस्वरूप अलग कर दिया गया हो)–अ० मुअत्तल।

मुआ—पुं० (मरा हुआ मनुष्य, गाली में 'मुआ' शब्द का प्रयोग)–सं मृतक>प्रा० मुअअ, जै० महा० मुय, महा० मअ, मुअ[२३]>हिं० मुआ।

मुकद्दर — पुं० (भाग्य, प्रारब्ध)–अ० मुक़द्दर।

मुकर्रर[1]—क्रि० वि० (दोबारा, फिर से)–अ० मुकर्रर।

मुकर्रर[2]—वि० (निश्चित, तय किया हुआ)–अ० मुक़र्रर।

मुकलाना—प्रा० प्र० (खोलना, 'खोंपा छोरि केस मुकलाई'–जायसी)–सं० मुक्त >प्रा० मुक्क, मुक्केलय > हिं० मुक लाना।

मुकाना ★ — क्रि० (मुक्त कराना, छुड़ाना)–सं० मूक्>प्रा० अप० मुक्क,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुकाबो (की०) > हिं० मुकाना।

मुकाबला — पुं० (१- आमना-सामना, २- प्रतियोगिता, ३- मिलान, ४- बराबरी)-अ० मुक़ाबल:।

मुकाम—पुं० (देर तक ठहराव)-अ० मुक़ाम।

मुकुलित — वि० (वह पौधा जिसमें कालियाँ निकली हों)-सं० मुकुलित > प्रा० मुक्कलिअ > महा० मउलिअ, अर्धमा० मउलिय, शौ० मउलिद्।

मुक्का—पुं० (घूँसा, हाथ का वह रूप जो उँगलियों और अँगूठे को बंद कर लेने पर होता है)-सं० मुष्टिका।

मुक्ख (पद०) — वि० (प्रधान)-सं० मुख्य > प्रा० मुक्ख (पाइअ०)।

मुक्खी—पुं० (एक प्रकार का कबूतर)-सं० मुष्क + इका > प्रा० मुक्खिआ।

मुक्ताफल — पुं० (मोती)-सं० मुक्ताफल > शौ० मुत्ताहल, महा० मुत्ताहलिल्ल। (२३)

मुक्ति—स्त्री० (बन्धन आदि से छूटने की क्रिया या भाव)-सं० मुक्ति > पा० प्रा० मुत्ति। —धाम-पुं० तीर्थ (जहाँ मुक्ति प्राप्त हो, मुक्ति देने वाला स्थान)-सं० मुक्तिधामन् (मोक्ष का स्थान) > प्रा० मुत्ति + धाम (अहंकार, बल, पराक्रम)।

मुख — पुं० (मुँह)-सं० पा० प्रा० मुख।

मुखड़ा—पुं० (मुख, चेहरा)-सं० पा० प्रा० मुख > हिं० मुख + ड़ा (प्र०)।

मुखिया — पुं० (नेता, प्रधान)-सं० > प्रा० मुक्ख > हिं० मुख + इया (प्र०)।

मुखौटा—वि० (धातु आदि का बना हुआ मुख के आकार का वह खण्ड जो देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के मुख पर लगाया जाता है, चेहरा)-सं० मुखपट्ट > प्रा० मुखवट्ट > मुखउट्ट > मुखोट्ट > हिं० मुखौटा।

मुगरा—पुं० (मोगरा, मुँगरा, मोंगरा)-सं० मुद्गर > प्रा० मोग्गर, मुग्गर > हिं० मुगरा।

मुगदर—पुं० (वह भारी मुँगरी का जोड़ा जिसका उपयोग व्यायाम के लिए होता है)- सं० मुद्गर > पा० प्रा० मुग्गर, मोग्गर (पाइअ०) > शौ० मोँग्गर, मुग्गर > हिं० मुदगर।

मुग्ध—वि० (मोह या भ्रम में पड़ा हुआ) - सं० मुग्ध (√मुह् + क्त)।

मुग्धापन—स्त्री०- सं० मुग्ध + त्वं (वै० त्वनं)।

मुग्धा—स्त्री० (साहित्य में वह नायिका जो यौवन को प्राप्त हो चुकी हो, परन्तु जिसमें काम-चेष्टा न हो)-सं० मुग्धा।

मुछीका(१)—प्रा० प्र०, पुं० (छींका)-सं० मुख + शिक्यक > मुहछिक्कअ > मुहछिक्का > मुछीका।

मुझ—सर्व० (मैं का वह रूप जो उसे कर्त्ता और संबंध कारक को छोड़कर शेष कारणों में विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है)-सं० मह्यम् > प्रा० मज्झं > मज्झु > अप० मज्झ, मज्झु > अव० मझु > हिं० मुझ, मझ। तुल० पं० मुझ, सिं० मूंझों। बलगा० मि (मुझको); स्पे० मि (मेरा)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुट्ठी—स्त्री० (बँधी हुई हथेली)–सं० मुष्टि>पा० प्रा० मुट्ठि>हिं० मुट्ठी। तुल० पं० मुट्ठी, सिं० अस० ओ० मुठि, म० मूठ।

मुठिया—स्त्री० (लकड़ी की एक गट्टक, जिसमें अँगूठी को दबाकर मीने का कार्य किया जाता है)–सं० मुष्टिका > पा० मुट्ठिआ, मुट्ठिअ>हिं० मुठिया।

मुड़ासा[१]—पुं० (सिर पर बाँधा जाने वाला कपड़ा)–सं० मुण्डवासक।

मुतान[१]—प्रा० प्र० पुं० (वह अंग जिसमें से बैल पेशाब करता है)–सं० मूत्रस्थान।

मुद्रा — स्त्री० (रुपया, पैसा आदि सिक्के)–सं० मुद्रा(√मुद्+रक्+टाप्) >प्रा० मुद्दा। तुल० पं० मुदरा, बं० ओ० अस० मुद्रा। स्पे० मोनेदा।

मुद्री—स्त्री० (अँगूठी)–सं० मुद्रिका> पा० मुद्दिका>प्रा० मुद्दग, मुद्दअ>हिं० मुद्री। तुल० म० गुदी, ओ० मुदा, सिं० सिं० मुंदी।

मुनशी—पुं० (१- लेख आदि लिखने वाला, २-पंडित)–फ़ा० मुंशी।

मुन्नी—स्त्री० (छोटी बच्ची को प्यार में 'मुन्नी' कहा जाता है)–सं० मुण्डिन् >प्रा० मुंडि>हिं० मुन्नी, पुं० मुन्ना (जिसके सिर पर केश न हो, उसे सिक्ख 'मुन्ना, मौना, मुंडा' कह कर पुकारते हैं)।

मुफ़्त—वि० (बिना मूल्य का, व्यर्थ, बेकार, बिना परिश्रम)–फ़ा० मुफ़्त। तुल० सिं० मुफ्तु, गु० मुफ्त, म० मफ्त।

मुबारक—वि० (१- शुभ, मंगलकारी; २- जिसके कारण बरकत हो)–अ० मुबारक।

मुमकिन—वि० (संभव)–अ० मुम्किन।

मुरगा—पुं० (कुक्कुट)–फ़ा० मुर्ग़। तुल० उर्दू मुर्ग, गु० मरघो, बं० मोरग।

मुरझाना—क्रि० (उदास हो जाना, कुम्हलाना)–सं० मूर्च्छ् > प्रा० मुच्छ> मुच्छइ > हिं० मुरझाना।–पुं०, सं० मूर्च्छन>प्रा० मुच्छण।

मुरब्बा—पुं० (चीनी आदि की चाशनी में पकाया हुआ फलों आदि का पाक)–अ० मुरब्बा।

मुरल—पुं० (केरल प्रदेश, एक भारतीय दक्षिण प्रदेश)–सं० प्रा० मुरल।

मुरहा, मुराही — वि० (१- नटखट, बेवकूफ, दुष्ट प्रकृति का, शरारती, २- बालक जो मूल नक्षत्र में पैदा हुआ हो)–सं० मूर्ख>प्रा० मुरुक्ख, मुरुह>हिं० मुरहा।

मुलजिम — वि० (अभियुक्त) – अ० मुल्ज़िम।

मुलहठी—प्रा० प्र०, स्त्री० (मुलेठी, मुलट्ठी, घुंघची या गुंजा की लता की जड़ जो औषध के काम में आती है)–सं० मधुयष्टि, मूलयष्टि > पा० मधु-लट्ठिका>प्रा०>मूलयट्ठी>मुलेठी।

मुलाजिम—पुं० (दास, नौकर, सेवक)–अ० मुलाज़िम।

मुवा—वि० (मृत, मरा हुआ)–सं० मृत >मुय>मुव>हिं० मुवा।

मुशायरा — पुं० (कविगोष्ठ, कवि-सम्मेलन)–अ० मुशाअरः।

मुश्किल — वि० (कठिन, दुष्कर,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पेचीदा)–स्त्री० (कठिनता, कठिनाई)–अ० मुश्किल।

मुसाफिर—पुं० (यात्री)–अ० मुसाफ़िर।

मुह—पुं० (मुँह, मुख)–सं० मुख> प्रा० मुह।

मुहबत्त—स्त्री० (आमने-सामने की गई बातचीत)–सं० मुखवार्त्ता>प्रा० मुहवत्ता >हिं० मुहबत्त।

मुहलत—स्त्री० (अवकाश, छुट्टी)–अ० मुहलत।

मुहाँसा—पुं० (चेहरे पर निकलने वाली छोटी फुन्सी)–सं० मुखासः (मुख का सौन्दर्य दूर करने वाला)।

मूँग—स्त्री० (एक प्रकार की दाल)–सं० मुद्ग>प्रा मुग्ग>हिं० मूँग। तुल० उर्दू मूँग, सिं० मुङु, म० मूग, बं० मुग, ओ० मूग।

मूँगफली—स्त्री० (एक प्रकार का पौधा जिसका फल बादाम की तरह का, परन्तु जमीन के अन्दर होता है)–सं० भूमि-फली > भूम-फली > मूम-फली हिं० मूँगफली। तुल० पं० उर्दू मूँगफली, म० भुइमूग, गु० मगफळी।

मूँछ—स्त्री० (ऊपरी ओंठ के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं)–सं० श्मश्रु> प्रा० मस्सु>मच्छु>अप० मंछु>मुच्छ >हिं० मूँछ। तुल० मग० मोंछ, पं० मुछ, सिं० मुछूं, गु० मूंछ।

मूँछ—स्त्री० (एक घास, एक प्रकार का तृण)–सं० मुञ्ज>प्रा० मुंज > हिं० मूँज।

मूँठी—स्त्री० (मुट्ठी)–सं० मुष्टि>प्रा० मुट्ठि>मूँठी, मूठ।

मूँड—प्रा० प्र, पुं० (सिर, माथा)–सं० मुण्ड>प्रा० मुंड>हिं० मूँड।

मूँदरी—स्त्री० (अँगूठी)–सं० मुद्रिका >प्रा० मुद्दिआ, मुद्दिअ>हिं० मूँदरी।

मूकी—सं० (मुक्की, मुट्ठी)–सं० मुष्टि >प्रा० मुट्टि>मूठी>हिं० मूकी।

मूर्च्छा—स्त्री० (बेहोशी, अचेत होना)–सं० मूर्च्छा>प्रा० मुच्छा > द० हिं० मूरछा।

मूठ[1]—स्त्री० (औजार या हथियार का वह भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है)–सं० मुष्टि>पा० प्रा० मुट्ठी> हिं० मूठ। तुल० सिं० मुठी, गु० म० मूठ।

मूठ[2]—स्त्री० (उँगलियों को मोड़ कर बाँधी हुई हथेली)–सं० मुष्टि> प्रा० मुट्ठि, मुठी>हिं० मूठ।

मूढ़—वि० (मूर्ख)–सं० प्रा० मूठ> हिं० मूढ़।

मूढ़ता—स्त्री० (मूर्खता)–सं० मूढता।

मूत—पुं० (मूत्र)–सं० मूत्र>प्रा० मुत्त >हिं० मूत। तुल० बं० मूत, पं० मुताला, म० मुत (णें)।

मूर—पुं० (जड़)–सं० मूल।

मूल—पुं० (१- जड़, २- मूल धन, ३- उत्पत्ति का कारण या स्थान)–सं० पा० मूलम्>प्रा० मूलअ>हिं० मूल। तुल० म० गु० मुळ।

मूल्य—पुं० (१- कीमत, २- वस्तु का वह गुण जिसके कारण किसी वस्तु का महत्त्व या मान होता है)–सं० मूल्य> प्रा० मुल्ल>अर्धमा०, जैन महा० मोल्ल >अव० मूल (की०)।

मूसना—क्रि० (चुराना)–सं० मुष्>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रा० मुस>हिं० मूसना। -पुं०, सं० मोषण>पा० मोसन>प्रा० मुसण।

मूसरी—स्त्री० (खरल में जिससे कूटा जाता है)-सं० मुसलिका > प्रा० मुसलिआ>हिं० मूसरी।

मूसल—पुं० (धान कूटने का लंबा मोटा डंडा)-सं० मुसलम्, मुशलम्, मुषलम् (√मुस्=तोडणें)>पा० मुसल>प्रा० मुसल>हिं० मूसल, छ० मूसर। तुल० बं० ओ० मुसल, म० मुसळ।

मृगछौना — स्त्री० (मृगशावक)-सं० मृगशावक।

मृत—वि० (मरा हुआ)-सं० मृत > प्रा० अव० मअ (की०)।

मृदंग—पुं० (ढोल की तरह का एक बाजा)-सं० मृदङ्ग।

मृषा—अव्य० (झूठ-मूठ, व्यर्थ), वि०-(झूठ)-सं० मृषा > अर्धमा० मुसम्, मुसा।[३३]

में — अव्य० (अधिकरण कारक का चिह्न)-(१) सं० मध्य>मधि>महिं>मइँ>में।[१८] (२) सं० मध्ये>प्रा० मज्झे, मज्झि, मज्झहिं>मइँ>में।

मेंढ़क—पुं० (एक छोटा प्रसिद्ध बरसाती जल-स्थलचारी जन्तु जो प्रायः वर्षा ऋतु में तालाबों, कुओं आदि में दिखाई पड़ता है)-सं० पा० मण्डूक > प्रा० मंडुक, मंडुक्क > हिं० मेंढ़क, ह० मींड्डक्।

मेंढ़की—स्त्री० (स्त्री मेंढ़क, दादुरी)-सं० मण्डूकिका > प्रा० मंडुक्किया, मंडुक्की>हिं० मेंढ़की।

मेंह—पुं० (आकाश से बरसने वाला पानी, वर्षा)-सं० मेघ>प्रा० मेह>हिं० मेंह।

मेँहदी — स्त्री० (मेंहँदी, एक झाड़ी जिसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से लाल रंग आता है, इसी कारण स्त्रियाँ इसे हाथ-पैर में लगाती हैं) - सं० मेन्धिका (मो० वि०, पृ० ८३३)।

मेख—स्त्री० (१- कीला, काँटा २-खूँटा, खूँटी)-फ़ा० मेख।

मेखला — स्त्री० (करधनी)-सं० पा० मेखला>प्रा० मेहला।

मेघ—पुं० (बादल)-सं० पा० मेघ > प्रा० मेह।

मेज—स्त्री० (लिखने-पढ़ने आदि के लिए बनी ऊँची चौकी)-फ़ा० मेज़। तुल० बल्गा० मासा, स्पे० मेसा।

मेढा—पुं० (मेष, सींग वाला एक चौपाया)-सं० मेष, मेढ, मेण्ढ√मिष् >पा० मेण्ड, मेण्डक>प्रा० मिंढ, मिंढय >अप० मिंढी> हिं० मेढा, मेंढा। तुल० म० मेंढा, पं० बं० ओ० मेडा।

मेढ्र[३३] — पुं० (लिङ्ग, पुरुष की जननेन्द्रिय)-सं० मेढ्र > पा० मेंड, मेंडक>अर्ध० मा० मेंढ, मेंढा, मिंढ, मेंढग, मिंढग, मिंढय। स्त्री० प्रा० मेंढी, मिंढिया>अप० मेंढी (दे० ना० मा०)।-मेढ्रज=शिव का एक नाम।

मेथी—स्त्री० (एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है)-सं० मेथिका। तुल० बं० गु० म० मेथी।

मेदिनी—स्त्री० (पृथ्वी)-सं० मेदिनी >प्रा० मेइणी, मेइणि>अप० मेइनि> अव० मेइणि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेरा—सर्व० (मैं के संबंध कारक का रूप) – सं० ममकार्यकः > प्रा० ममकेरिओ > मआरअ > मएरअ > हिं० मेरा ।–वि० (मेरा)–सं० मदीय > अप० मेर > अव० मोर (की०) > हिं० मेरा । तुल० स्पे० मि, अं० माइ, बल्गा० मोइ (पुं०), मोए (न०), मोया (स्त्री०) ।

मेरावा[1]—(पद०) पुं० (मेल)–सं० मेलापक > प्रा० मेलावग > मेरावय > मेरावा ।

मेरु—पुं० (पर्वत)–सं० मेरु > पा० मेरु (उच्चतम पर्वत का नाम)–प्रा० मेरु ।

मेला—पुं० (१- समूह, भीड़, २- उत्सव, त्यौहार आदि के समय होने वाला बहुत से लोगों का जमावड़ा)–सं० मेल + क (√मील्) > प्रा० > मेलय > अप० मेलअ (महा०) > हिं० मेला । तुल० कु० मेलो, बं० मेला, म० मेळा ।

मेहतर[1]— पुं० (बुजुर्ग, सबसे बड़ा)–सं० महत्तर ।

मेहतर[2]—पुं० (भंगी, वह व्यक्ति जो झाड़ू देने, गंदगी गठाने का काम करता है)–सं० महत्तर > फ़ा० मेहतर, हिं० मेहतर । तुल० पं० उर्दू मेहतर, सिं० मेहतरु, ओ० मेहेन्तर ।

मेहनत — स्त्री० (परिश्रम) – अ० मिहनत ।

मेहमान—पुं० (अतिथि, आगन्तुक)–फ़ा० मेहमाँ ।

मैं—सर्व (स्वयं, खुद)–सं० अहम् > प्रा० मे, मए, मई > महाराष्ट्री प्रा० अहम्मि, अम्मि, म्मि > अप० मइ > मइँ > मैं । तुल० बल्गा० अस् ।

मैखाना—पुं० (मदिरालय)–सं० मद्य > फ़ा० मै + फ़ा० खानः = फ़ा० मैखानः । तुल० बल्गा० 'मयखाना ।'

मैका—प्रा० प्र०, पुं० (मायका)–सं० मातृक + क > प्रा० माइकअ > माइका > मइका > मैका ।

मैदा—पुं० (बहुत महीन आटा)–फ़ा० मैद ।

मैदान — पुं० (समतल भूमि)– फ़ा० मैदान । तुल० म० क० उर्दू मैदान, सिं० मैदानु, कश्मी० मोदान, गु० मेदान, मैदान; पं० मदान ।

मैन[1]—पुं० (कामदेव)–सं० मदन > प्रा० मयण > मइण > मइन > मैन ।

मैन[2] (पद०)—पुं० (मोम)–सं० मदन > प्रा० मयण > मैन ।

मैनसिल—पुं० (एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है और जो नैपाल के पहाड़ों में बहुतायत से होती है)–सं० मनःशिला > प्रा० मणसिला ।

मैना—स्त्री० (सारिका, काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया)–तु० मैना ।

मैमंतू[1] (पद०) — वि० (मतवाला, मदयुक्त)–सं० मद > प्रा० मय + मतुप् ।

मैला[1]—वि० (जिस पर मैल जमी हो)–सं० मलिन + क > प्रा० मइलअ > हिं० मैला ।

मैला[2]—पुं० (पाखाना, विष्ठा, गू)–सं० मल > प्रा० > मइल > हिं० मग० मैला ।

मैहर — पुं० (मायका, नैहर)–सं० मातृगृह > प्रा० माइहर > हिं० मैहर ।

मोंगार (पद०)—पुं० (काठ का बना

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुआ एक प्रकार का हथौड़ा जिससे मेख इत्यादि ठोंकी जाती है)–सं० मुद्गर> प्रा० मोग्गर।

मोकला—वि० (अधिक चौड़ा, स्वच्छंद)–प्रा० मोकल्ल, मोक्कल, मुक्कल>हिं० मोकला।

मोच—पुं० (केले का फल, केले का वृक्ष, शोभाञ्जन वृक्ष) – सं० मोच (√मुच्+अच्)>पा० मोच।

मोचक—पुं० (सहिजन का पेड़, केले का वृक्ष)–सं० मोचक (√मुच्+णवुल्)।

मोची[१६]—पुं० (चमड़े का काम बनाने वाला) – फ़ा० मोचक (घुटनों तक काजूता)मोचिका >मोची।

मोच्छ–पुं० हिं०, पुं० (मोक्ष) – सं० मोक्ष।

मोजा[1]—पुं० (पाँव में पहनने का एक बुना हुआ कपड़ा)–फ़ा० मोज़ा। तुल० गु० बं० अस० ओ० मोजा, ते० मेज़ोडु।

मोठ—स्त्री० (मूँग की तरह का एक मोटा अन्न)–सं० मकुष्ठ (अमरकोश)–तुल० पं० मोठ, उर्दू मोँठ, कश्मी० मुठ्, सिं० मोठ, गु० मठ।

मोड़—पुं० (मौर)–सं० मुकुट>प्रा० मउर>हिं० मोड़।

मोड़ना— क्रि० (तोड़ना)–सं० मोटय्, सं० मुट् > मुड>प्रा० मोड > अप० मोड>हिं० मोड़+ना।–पुं०– सं० मोटना>प्रा० मोडणा (पाइअ०) > हिं० मोड़ना।

मोड़ा — पुं० (लड़का, बालक)–सं० माणवक>प्रा० माणवअ>मोणाउ > हिं० मोड़ा।

मोती—पुं० (रत्न विशेष)–सं० मुक्ता, मौक्तिकम् > पा० प्रा० मुत्ता>हिं० मोती। तुल० सिं० पं० गु० मोती।

मोथा (नागर)—पुं० (जल के निकट वाली भूमि में एक प्रकार की उत्पन्न वनस्पति, जो दवा के काम में आती है)–सं० मुस्तक (अमरकोश, श्लोक १५९)। प्रा० मुत्थअ> मुत्था > अप० मोत्था (हे०)>हिं० मोथा। तुल० बं० ओ० मोथा, पं० मुत्था।

मोदक—पुं० (लड्डू)–सं० पा० मोदक।

मोम—पुं० (मधुशिष्ट, माक्षिज)–फ़ा० मोम।

मोर[1]—सर्व० (मेरा)–सं० ममकर> मोअर>छ० मोर।

मोर[2]—पुं० (मयूर, एक पक्षी)–सं० मयूर>पा० मोर>प्रा० मऊर, मऊल, मोर>हिं० मोर। तुल० पं० उर्दू म० गु० मो, सिं० मोरु, अस० मरा (मोरा), ओ० मयूर, त० मल० मयिल्।

मोरवा — पुं० हिं०, प्रा० प्र०, पुं० (मोर)– सं० मयूर>प्रा० मउर>हिं० मोर+वा (प्र०)।

मोरचा—पुं० (१- जंग, २- जमी हुई मैल)–फ़ा० मोरचः।–पुं० (वह गड्ढा जिसमें बैठकर शत्रु पर गोली चलाते हैं)–फ़ा० मोरचाल।

मोरी★—स्त्री० (मोरनी)–सं० मोरी >प्रा० मोरी (पाइअ०)।

मोल—पुं० (दाम, मूल्य)–सं० मूल्य> प्रा० मोल्ल, मल्ल (पाइअ०)>अर्धमा०, जैन महा० मोँल्ल>अप० मोल्ल>अव० मुल्ल (की०)>हिं० मोल। तुल० पं० मुल्ल, म० मोल, गु० मूळ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोह—पुं० (१- अज्ञान, २- भ्रम, भ्रांति, ३- ईश्वर का ध्यान छोड़कर सांसारिक पदार्थों को अपना सर्वस्व समझना)–सं० पा० प्रा० मोह, प्रा० मउह।

मोहना — क्रि० (१- मोहित होना, रीझना, २- भ्रम में डालना, ३- लुभाना)–सं० मोहय्>पा० मोहेति> प्रा० मोह, मोहइ>अव० मोहइ (की०) > हिं० मोह+ना।–पुं०–सं० पा० मोहन>प्रा० मोहण।

मौज — स्त्री० (आनन्द, सुख)–अ० मौज।

मौजा — पुं० (स्थान, गाँव) – अ० मौज़ा।

मौत—स्त्री० (मृत्यु, निधन)–अ० मौत। तुल० पं० गु० म० मोत। बल्गा० स्मर्त (मृत्यु)।

मौन—पुं० (१- मुनियों का व्रत या चर्या, २- चुप रहना, चुप्पी)–सं० मौन >प्रा० मोण।

मौनी—वि० (मौन धारण करने वाला या चुप रहने वाला)–सं० मौनिन्>प्रा० मोणि>हिं० मौनी।

मौर—पुं० (एक तरह का मुकुट)–सं० मुकुट>प्रा० मउड>अप० मउड़ (हे०) >मउर>हिं० मौर, मौड़।

मौल(१)—स्था० प्र०, पुं० (कली)–सं० मुकुल>प्रा० मउल>मौल।

मौलसिरी—स्त्री० (एक प्रकार का बड़ा सदाबहार पेड़)–सं० बकुलश्री>बउल-सिरी>बोलसिरी>मौलसिरी, मौलश्री।

मौलि(२३)—पुं० (१- किसी पदार्थ का सबसे ऊँचा भाग, चोटी, सिरा। २- मस्तक, सिरा)–सं० मौलि>प्रा० मोलि, मउलि (पाइअ०)>महा०, अर्धमा०, जै० महा० मउलि, मोलि (कर्पूर० ६, ९), शौ० मोलि, मउलि।

मौसम—पुं० (उपयुक्त समय, अनुकूल काल, ऋतु)–अ० मौसिम। टि०–फ़ा० में 'मौसम' के लिए 'फ़स्ल' शब्द है।

मौसा—पुं० (मौसी का पति)–सं० मातृष्वसृपति। तुल० मासड, कश्मी० मासुव, सिं० मासड़, म० मावसा, गु० मासा, ओ० मउसा।

मौसी — स्त्री० (माता की बहिन, मासी)–सं० मातृष्वसा>पा० मातुच्छा >प्रा० माउच्छा, माउस्सि, माउस्सी> अप० माउसिया (हे०) > माउस्सिया, मौस्सी>माउसी>मउसी>हिं० मौसी। तुल० पं० मासी, सिं० मासी, म० मावशी, ओ० माउसी, ह० मोस्सी।

मौसेरा—पुं०(भाई) (माता की बहन का पुत्र)–सं० मातृष्वसेय>हिं० मौसी+ एरा (प्र०)। तुल० कश्मी० मासतुँर् बोय्, ओ० मउसा-पुअ-भाइ, पं० मसेरा भ्रा (मसेरा प्राह्), सिं० मासातु, म० मावस भाऊ, गु० मसियाई भाई, बं० मासतुतो भाई।

म्यान—पुं० (वह खाना जिसमें तलवार, कटार आदि के फल रखते हैं)–फ़ा० मियान>अव० मेआणे (क्री०)>हिं० म्यान।

म्लेच्छ—पुं० (हिन्दुओं की दृष्टि से वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम न हो)–सं० (म्लेच्छ√म्लेच्छ+अच्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म्हाँ—प्रा० प्र०, सर्व० (मुझ)–सं० अहम् > प्रा० अम्हे, राज० म्हे, म्हा, म्हाँ।

म्हौर—पुं० (मुकुट)–सं० मुकुट > मउर > मौर > म्हौर।

य

यंत्र—पुं० (किसी विशेष कार्य के लिए बनाई हुई कोई कल या औजार)–सं० यन्त्र (√यन्त्र्+अच् वा √यम्+त्र) > पा० यन्त।

यक—वि० (एक वस्तु)–फ़ा० यक। पह० yek। सं० एक।

यकतन — वि० (एक व्यक्ति)–फ़ा० यकतन।

यकतरफ—वि० (एक ओर का, दाहिना या बाँया)–फ़ा० यक+अ० तरफः।

यकायक—क्रि० वि० (अचानक)–फ़ा० यक ब यक।

यकीन—पुं० (विश्वास)–अ० यक़ीन।

यकृत—पुं० (जिगर)–सं० यकृत्। तुल० म० गु० बं० अस० ओ० यकृत।

यक्ष—पुं० (१- एक प्रकार के देवता, कुबेर की निधियों के रक्षक, २- कुबेर)–सं० यक्ष > पा० यक्ख।

यजंत—पुं० (यज्ञ कराने वाला)–सं० यजन्त।

यजु—पुं० (यजुर्वेद)–सं० यजुस्।

यज्ञ—पुं० (१- प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य, याग, २- कोई शुभ कार्य)–सं० यज्ञ > पा० यञ्ञ।

यज्ञभांड—पुं० (यज्ञपात्र)–सं० यज्ञ-भाण्ड।

यज्ञमंडप—पुं० (यज्ञ कराने के लिए बनाया हुआ मंडप)–सं० यज्ञ मण्डप।

यज्वा — पुं० (यज्ञ कराने वाला)–सं० यज्वन्।

यत्र—क्रि० वि० (जहाँ)–सं० यत्र > पा० यत्थ।

यथा—अव्य० (जिस प्रकार, जैसे)-सं० पा० यथा > अप० जहा, जेहा।

यथा-तथ—वि० (ज्यों का त्यों, जैसा हो)–सं० यथा-तथ्य > पा० यथातथ।

यथाशक्ति — अव्य० (शक्ति के अनुसार)–सं० यथाशक्ति > पा० यथासत्ति।

यदपि★—अव्य० (यदि ऐसा है ही, अगरचे)–सं० यद्यपि > प्रा० यदावि > हिं० यदपि।

यदि—अव्य० (अगर)–सं० यदि (यद्+णिज्+इन्, णिलोप), पा० यदि। तुल० बं० अस० ओ० यदि, कश्मी० योद्।

यम[1]—पुं० (यमराज)–सं० पा० प्रा० यम > प्रा० जम।

यम[2]—पुं० (इंद्रियों को वश में रखना, २- निग्रह)–सं० यम (√यम् + घञ् वा अच्)।

यमन—पुं० (नियम से बाँधना, विराम देना, रोकना)–सं० यमन।

यमनाह—पुं० हिं०, पुं० (यमों के स्वामी धर्मराज)–सं० यमनाथ > प्रा० जमनाह।

यमनी[1]—वि० (यमना का निवासी)–अ० यमनी।

यमनी—(एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर जो अरब के यमन प्रदेश से आता है)–अ० यमनी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यमपुर—पुं० (यम के रहने का स्थान)–सं० यमपुर।

यमुंड—पुं० (एक प्राचीन ऋषि का नाम)–सं० यमुण्ड।

यमुना—स्त्री० (उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी)–सं० यमुना>जमुना> अप० जउणा।

ययी — पुं० (घोड़ा) – सं० ययिः (√या+ई, द्वित्व)।

यव—पुं० (१- जौ, जवा, एक अन्न, २- १२ सरसों या एक जौ की तोल)–सं० यव (√यु+अप् वा अच्)।

यश—पुं० (१- कीर्त्ति, २- बड़ाई)–सं० यशस् (अश्नुते व्याप्नोति, √अश्+असुन, युट्)>अव० यश (की०), हिं० यश। तुल० म० गु० ओ० यश।

यशुमति — स्त्री० (यशोदा) – सं० यशोवती।

यष्टि, यष्टी — स्त्री० (लाठी, छड़ी, डंडा)–सं० यष्टि, यष्टी (√यज्+ति) >पा० यट्ठि।

यह—सर्व० (निकट की वस्तु का निर्देश करने बाला एक सर्वनाम)–सं० एषः> पा० एसो>प्रा० एसो, अप० एहो, एहु >एह>हिं० यह। तुल० पं० एह, उर्दू यह, कश्मी० यि, ओ० एहि।

यहाँ[१९]—क्रि० वि० (स्थानवाचक)–सं० यत्र>प्रा० यत्थ। कुरू जनपद में 'ह्याँ सी', पूरबी बो० हियाँ। उर्दू 'ह्याँ' शायरी में प्रयुक्त, पं० इत्थे, म० इथें, येथें; गु० अहियां।

यांत्रिक — वि० (यंत्र-संबन्धी) –सं० यान्त्रिक>पा० यन्तिक।

याँचा—स्त्री० (माँगने की क्रिया)–सं० याचन (√याच्+णिच्+युच्–टाप्)।

या—अव्य० (अथवा)–फ़ा० या। तुल० पं० उर्दू कश्मी० या, सिं० याँ।

याक[१]—पुं० (हिमालय पर होने वाला जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता हैं)–तिब्बती ग्याक>याक।

याक[२]—प्रा० प्र०, वि० (एक)–फ़ा० यक।

याग—पुं० (यज्ञ)–सं० याग (√यज्+घञ्)।

याचक—पुं० (१- याचना करने वाला, २- भिखमंगा)–सं० याचक (√याच्+ण्वुल्), पा० याचक।

याचना—स्त्री० (माँगना)–सं० याचन (√याच्+ल्युट्), याचना (√याच्+णिच्+युच्–टाप्), पा० याचन।

यातना—स्त्री० (कष्ट, पीड़ा) – सं० यातना (√यत्+णिच्+युच्–टाप्)।

यातायात—पुं० (एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने की क्रिया या साधन)–सं० यात (√या+क्त) = गया हुआ+आयात।

यातुधान—पुं० (राक्षस)–सं० यातुधान।

यात्रा—स्त्री० (एक स्थान से दूसरे स्थान जाने की क्रिया)–सं० यात्रा (√या+त्रन्–टाप्), पा० यात्रा।

यात्री—वि० (यात्रा करने वाला)–सं० यात्रिक>प्रा० यत्तिअ।

याद—स्त्री० (स्मरण-शक्ति)– फ़ा० यादः।—गारी–स्त्री० — (स्मृति-चिह्न, वह पदार्थ जो किसी की स्मृति में हो)–फ़ा० यादगारी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

याददाश्त—स्त्री० (स्मरण-शक्ति)–फ़ा० याददाश्त ।

याददेहानी—स्त्री० (भूली हुई बात को स्मृति में लाना)–फ़ा० याददेहानी ।

यादफरामोश—वि० (जिसे बात याद न रहती हो)–फ़ा० यादफ़रामोश ।

यान—पुं० (१- सवारी, २- विमान)–सं० यान (√या+ल्युट्)>पा० यान >प्रा० याण, जाण ।

यानी — अव्य० (भाव यह है कि, अर्थात्)–अ० या'नी ।

यापन—पुं० (समय का व्यतीत करना, गुजारा)–सं० पा० यापन ।

याम—पुं० (१- तीन घंटे का समय, २- काल, प्रहर)–सं० याम (√या+मन्), पा० याम ।

यामिन—पु० हिं० (यामिनी) – सं० यामिनी ।

यार—पुं० (मित्र)–सं० जार (जॄ+अण प्र०)(उपपति, "जार इव आ भगम्" यास्क की निरुक्ति)>फ़ा० यार। पा० प्रा० जार । तुल० बं० जार, ओ० जार ।

यारबाश—वि० (मित्रों में घुल-मिलकर रहने वाला)–फ़ा० यारबाश ।

यारमंद—वि० (सहायक, दोस्ती निबाहने वाला)–फ़ा० यारमंद ।

यारमंदी—स्त्री० (दोस्ती, मैत्री)–फ़ा० यारमंदी ।

यारी—स्त्री० (मित्रता)–फ़ा० यारी ।

यारे अजीज—पुं० (बहुत ही घनिष्ठ मित्र)–फ़ा० यारे अज़ीज़ ।

यारे जानी—पुं० (बहुत ही प्यारा मित्र)–फ़ा० यारे जानी ।

यावत्—अव्य० (जब तक)–सं० यावत् >पा० यावतक>प्रा० याव, जाव> अप० जामहिं, जाउं, जाम ।

याहू—पुं० (एक कबूतर जो 'याहू-याहू' बोलता है)–फ़ा० याहू ।

युक्त—वि० (जुड़ा हुआ, सहित)–सं० युक्त (√युज+क्त)>प्रा० युत्त, जुत्त ।

युक्ति—स्त्री० (१- उपाय, २- कौशल, ३- तर्क, ४- आधार, ५- योग)–सं० युक्ति (√युज्+क्तिन्)>पा० युत्ति ।

युग[1]—पुं० (१- जोड़ा, २- जूआ- ३- पासे के खेल में एक घर में साथ बैठने वाली दो गोटियाँ)–सं० युग (√युज्+घञ्), पा० युग>हिं० युग । तुल० बल्गा० इगो ।

युग[2]—पुं० (काल)–सं० युग । तुल० पं० म० गु० बं० अस० ओ० क० युग, ते० युगमु, त० मल० युगम् ।

युगल—पुं० (युग्म, जोड़ा)–सं० पा० युगल>अप० जुअल ।

युगांत—पुं० (प्रलय, युग का अन्तिम समय)–सं० युगान्त (युग+अन्त) ।

युगांतक — पुं० (प्रलयकाल) – सं० युगान्तक ।

युद्ध—पुं० (संग्राम, लड़ाई)–सं० युद्ध (√युध्+क्त), पा० युद्ध । तुल० पं० म० गु० बं० अस० ओ० क० युद्ध, ते० युद्धमु ।

युद्ध-बंदी—पु० (लड़ाई का कैदी)–सं० युद्ध+बंदिन् ।

युवक—पुं० (युवा)–सं० युवक (मो० वि०)>पा० युव>(सं० युवन्>अप० जुवण)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

युवती — स्त्री० (जवान स्त्री)–सं० युवति,–ती (युवन्+ति, ङीप् वा), पा० युवती ।

यूथ—पुं० (१- समूह, २- सेना)–सं० यूथम् (यु+थक्)>पा० यूथ (समूह, पशु-समूह) ।

यूथचारी—वि० (झुंड में चलने वाला)–सं० यूथचारिन् ।

यूनियन — पुं० (संघ, मंडल)–अं० union ।

यूप—पुं० (यज्ञ का वह खंभा जिसमें बलि चढ़ाया जाने वाला पशु बाँधा जाता था)–सं० यूपः (यु+पक्) ।

यूपक—पुं० (काष्ठ-विशेष, बाँस जिससे यूप बनता था)–सं० यूपक ।

ये—सर्व० (यह का बहुव०)–सं० एते> प्रा० ए ए>अप० एइ; ए, ए, ये । तुल० पं० एह, उर्दू ये, सिं० यिम्, यिमुँ ।

येन-केन-प्रकारेण—क्रि० वि० (जैसे-तैसे, किसी तरह)–सं० येन-केन-प्रकारेण ।

यों—अव्य० (इस तरह)–सं० एवमेव> प्रा० एमेअ>अप० एमि, एउँ>अअँ> ओं>यों ।

योग[1]—पुं० (१-मिलना, संयोग, २- उपाय, ३- लाभ, ४- कोई शुभ काल, ५- जोड़, ६- ज्योतिष संबन्धी (काल), योग-विशेष)– सं० योग (√युज् + अच्) ।

योगी—पुं० (१- आत्म-ज्ञानी, २- योग का साधन या अभ्यास करने वाला)–सं० योगिन्>हिं० योगी ।

योगेश्वर—पुं० (१- बहुत बड़ा योगी)–सं० योगेश्वर>अप० जोएसर ।

योग्य—वि० (१- किसी कार्य के लिए उपयुक्त, २- जो किसी पद, कार्य, उपयोग आदि के लिए ठीक हो)–सं० योग्य (योगमर्हति यत्, युज्+यत् वा)> पा० योग्ग ।

योजन—पुं० (दूरी की एक नाप जो दो से आठ कोस तक की कही गई है)–सं० योजनम्, पा० योजन ।

योजना—स्त्री० (१- प्रयोग, २- मिलान, ३- बनावट, कोई कार्य या उद्देश्य सिद्ध करने के उपाय आदि की पहले से निश्चित की हुई रूपरेखा)–सं० योजनम् >पा० योजना (निर्माण) ।

योधा—पुं० (वीर)–सं० योद्धृ । तुल० सिं० जोधो, ते० योधुडु, म० बं० योद्धा ।

योनि—स्त्री० (१- उत्पत्ति- स्थान, २- स्त्रियों की जननेंद्रिय)–सं० पा० योनि ।

यौगिक — वि० (योग संबन्धी)–सं० यौगिक (योग+ठक्) ।

यौतक—पुं० (दहेज)–सं० यौतक ।

यौधेय — पुं० (योद्धा) – सं० यौध (लड़ाकू) ।

यौन—वि० (योनि संबन्धी)–सं यौन (योनितः योनि संबन्धात् वा आगतम्–अण्)=वैवाहिक ।

यौवन—पुं० (जवानी)–सं० यौवनम् (यूनो भावः, > युवन् + अण्)>पा० योब्बन । तुल० कश्मी० यावुन, बं० अस० ओ० यौवन, ते० योवनमु ।

यौवराज्य—पुं० ('युवराज' का भाव या पद)–सं० यौवराज्यम् (युवराज+ ष्यञ्) ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यौवराज्याभिषेक—पुं० (वह अभिषेक या उत्सव जो राजा के उत्तराधिकारी पुत्र के 'युवराज' बनाने के समय होता था)–सं० यौवराज्य+अभिषेक।

र

रंक—वि० (दरिद्र, कंजूस)–सं० रङ्क।

रंग—पुं० (शरीर का ऊपरी वर्ण, बदन और चेहरे की रंगत)–सं० रङ्ग>प्रा० हिं० रंग। तुल० फ़ा० रंग।

रंगअंदाजी—स्त्री० (रंग छिड़कना)–फ़ा० रंगअंदाज़ी।

रंगदार—वि० (रंगा हुआ)–फ़ा० रंगदार।

रंगना—क्रि० (किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना)–सं० रंजयति (√रज्ज to be dyed)>पा० रजति>प्रा० रंग (इ) या रंगे (इ)।–पुं०, सं० रङ्गण>पा० रजन>प्रा० रंगण।

रंगपाश—पु० (रंग छिड़कने वाला)–फ़ा० रंगपाश।

रंगफरोश—वि० (रंग बेचने वाला)–फ़ा० रंगफ़रोश।

रंगफरोशी—स्त्री० (रंग बेचने का काम)–फ़ा० रंगफ़रोशी।

रंगमहल—पुं० (भोग-विलास करने का स्थान, आमोद-प्रमोद करने का भवन)–फ़ा० रंग+अ० महल।

रंगरेज—पुं० (कपड़ा रंगने वाला)–फ़ा० रंगरेज़।

रंगलासिनी—स्त्री० (शेफालिका, निर्गुण्डी, 'सम्हालु, संभाल' नामक औषध। (आचार्य यादवशर्मा 'द्रव्य-गुणविज्ञान' पृ० २९८)–सं० रङ्ग-लासिनी।

रंगशाला—स्त्री० (नाटक खेलने का स्थान, रंग-स्थल)–सं० रङ्गशाला।

रंगसाज—पुं० (१- वह जो चीजों पर रंग चढ़ाता हो, २- उपकरणों से रंग तैयार करने वाला)–फ़ा० रंगसाज़।

रंगसाजी—स्त्री० (रंगसाज का काम)–फ़ा० रंगसाज़ी।

रंगागण—पुं० (नाट्यशाला)–सं० रङ्गाङ्गण।

रंगांगा—स्त्री० (फटकरी)–सं० रङ्गाङ्गा।

रंगाई—स्त्री० (रँगाई, रँगने की क्रिया)–सं० रङ्ग>प्रा० रंग > हिं० रंग+आई (प्र०)।

रंगाभरण—पुं० (ताल के साठ भेदों में से एक भेद)–सं० रङ्गभरण।

रंगारंग—वि० (रंग-बरंगी, विचित्र)–फ़ा० रंगारंग।

रंगार—पुं० (१- वैश्यों की एक जाति का नाम, २- राजपूतों की एक जाति, ३- मध्य तथा दक्षिण भारत में रहने वाली एक जाति)–देशज।

रंगीन—वि० (१- जिस पर कोई रंग चढ़ा हो, २- विलास-प्रिय)–फ़ा० रंगीं, रंगीन।

रंगू (पद०)—पुं० (अंगराग, रंग)–सं० रङ्ग>प्रा० रंगु।

रंच—वि० (थोड़ा, अल्प, तनिक,)–सं० न्यञ्च>प्रा० णंच>रंच।

रंचक—पुं० हिं०, वि० (थोड़ा, अल्प)–सं० न्यञ्च+क>प्रा० णंचअ।

रंज—पुं० (दुःख, खेद)–पह० रंज, फ़ा० रंज़ः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रंजन—पुं० (रँगने की क्रिया, चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया)–सं० रञ्जन >प्रा० रंजण>हिं० रंजन।

रंजना—क्रि० (किसी का मनोरंजन करना)–सं० रञ्जय्>प्रा० रंज>हिं० रंज+ना।

रंजित—वि० (रँगा हुआ, आनंदित)–सं० रञ्जित>प्रा० रंजविय, रंजिय।

रंजीदा—वि० (संतप्त, दुःखी)–फा० रंजीदः।

रंडी — स्त्री० (वेश्या) – सं० रण्डा ('रमु क्रीडायाम्'-अमन्ताडुः, उ० १/११४, मेदिनी कोश) = व्यभिचारिणी विधवा, प्रा० रंडा (राँड, विधवा), सं० रण्ड+इका>प्रा० रंडिआ>अप० रंडी (महा०)>हिं० रंडी।

रंडुवा—पुं० (वह जिसकी पत्नी मर गई हो)–सं० रण्ड+क (√रम्+ड)= वह मनुष्य जो पुत्रहीन मरे।

रंदा—पुं० (बढ़इयों का एक औजार जिससे वे लकड़ी की सतह छील कर चिकनी और समतल बनाते हैं)–फ़ा० रंदः।

रंधना—क्रि० (पकना)–सं० राध्नोति (√राध्)>प्रा० रंध>हिं० रंध+ना (प्र०)। पुं०, सं० रन्धनम् > प्रा० रंधण

रंधैन—प्रा० प्र०, स्त्री० (जो चीज रँधती है)–सं० रन्धन>रंधैन।

रंध्र—पुं० (छेद, छिद्र)–सं० रन्ध्र> प्रा० रंध>हिं० रंध्र।

रंभना—क्रि० (१- जोर का शब्द करना, २- (गाय का रंभाना)–सं० रम्भते (रभि, शब्दे to sound)>प्रा० रंभइ > हिं० रंभना। –पुं०–सं० रंभण।

रंभा — स्त्री० (१- एक अप्सरा, -२ केला)–सं० रम्भा>प्रा० हिं० रंभा।

रँगना—क्रि० (किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना)–सं० रंजयति (सं०√रञ्ज्) >प्रा० रंग>हिं० रँग+ना।

रँगीला—वि० (१- रंगीन, २- रसिक, ३- सुन्दर)–सं० रङ्गवत्>प्रा० रंगिल्ल (पाइअ०)>हिं० रँगीला। तुल० पं० उर्दू रंगीला, म० रंगेल, गु० रंगीलो, अस० रङियाल।

रँगैंड़ी—स्त्री० (मिट्टी का एक पात्र जिसमें रंग घोला जाता है)–सं० रङ्ग+ भाण्डिका।

रँचा[1] (पद०)—क्रि० (आसक्त होना, राचना, अनुराग करना)–सं० रञ्ज्> प्रा० रच्च, रच्चइ।

रइनि — स्त्री० (रात, निशा)–सं० रजनी>प्रा० रयणि, रयणी>स० अव० रअणि>हिं० रयनि, रइनि।

रईस—पुं०, वि० (बड़ा आदमी, अमीर, धनी, मालदार)–अ० रईस।

रईसी—स्त्री० (रईस होने की अवस्था या भाव)– अ०रईस+ई (स्त्री प्र०)।

रकत (पद०) — पुं० (रुधिर)–सं० रक्त>प्रा० रत्त।

रफबा—पुं० (क्षेत्रफल)–अ० रक़बः।

रकम—स्त्री० (१- धन, २- धन की राशि)–अ० रक़म।

रकसाइँधि (पद०)—स्त्री० (राक्षसपन की गंध)–सं० राक्षसगंध > रक्कसयंध >रक्कसयंध> रकसाइँध।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रखना — क्रि० (१- रक्षा करना, २- स्थित करना, ठहराना) – सं० रक्षति (सं० रक्ष्) > पा० रक्खति > प्रा० रक्ख > अप० रक्खइ > हिं० रख + ना । सं० रक्षण > प्रा० रक्खण । तुल० पं० रखणा, उर्दू रखना, सिं० रखणु, बं० राखा, ओ० रखिबा ।

रखवारी, रखवाली—स्त्री० (रखवाली)– सं० रक्षा पाल + इका > प्रा० रक्ख-वालिआ > रखवाली > रखवारि, रख-वारी ।

रखवाला—पुं० (रक्षा करने वाला)–सं० रक्षापालक > प्रा० रक्खवालय > रक्ख-वाल > हिं० रखवाल, रखवार, रखवाला । तुल० म० पं० रखवाल, गु० रखवाळ ।

रखैल—स्त्री० (उप पत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री, रक्षिता)–सं० रक्षिता > प्रा० रक्खिआ + इल्ल > रक्खिइल > रखेल > हिं० रखैल ।

रग—स्त्री० (शरीर में की नस या नाड़ी)–पह० फ़ा० रग ।

रगड़ना—क्रि० (१- घर्षण करना, २- पीसना, ३- किसी से बहुत परिश्रम लेना)–सं० रद् (विलेखने = खुरचना) > हिं० रगड़ + ना । तुल० कु० रगडणो, ओ० रगडिबा, पं० रगडणा, गु० रगडवूं ।

रचना—क्रि० (हाथों से बनाकर तैयार करना, निर्माण करना, विधान करना, अनुष्ठान करना)–सं० रच् (प्रतियत्ने), रचयति > पा० रचयति > हिं० रच + ना ।–पुं० (निर्माण)–सं० रचन > पा० रचना ।

रचयिता—पुं० (रचना करने वाला)– सं० रचयितृ ।

रज—पुं० (स्त्रियों की जननेन्द्रिय से प्रति मास तीन-चार दिन तक निकलने वाला रक्त)–सं० रजस > पा० रज > प्रा० रय > हिं० रज ।

रजक—पुं० (धोबी)–सं० प्रा० रजक ।

रजना—पुं० हिं०, क्रि० (रँगा जाना, रंग में डुबाया जाना)-सं० √रञ्जय् > प्रा० रंज > हिं० रज + ना ।

रजवार—पुं० (राजा के महल की ड्योढ़ी)–सं० राज्यद्वार > प्रा० रज्जवार > हिं० रजवार, रजबार (पद०) ।

रजा—स्त्री० (१- मरजी, इच्छा, २- अनुमति, आज्ञा, ३- स्वीकृति) – अ० रजा (आशा) ।

रजाइ — स्त्री० (अनुमति, इच्छा, आदेश)–(१) अ० रज़ा > रजाइ । (२) सं० राजाज्ञाप्ति > प्रा० रायाणात्ति > राजाइ > रजाइ ।

रजाइस—स्त्री० (आज्ञा, आदेश)–सं० राज्यादेश > प्रा० रज्ज + आएस > रजाइस ।

रजाउरि — स्त्री० (राजधानी) – सं० राजपुरी > राजउरि ।

रजामंदी—स्त्री० (सहमति, कबूलियत)– अ० रिज़ा + फा० मंदी ।

रजायसु(१)—पुं० (राजा की आज्ञा)– सं० राजादेश > राजाएस > रजाएस > रजाइस > रजायसु ।

रजु★—स्त्री० (रस्सी)–सं० प्रा० रज्जु > हिं० रजु ।

रज्जली(२)—ज० प्र०, पुं० (एक सर्प)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० राजिल ।

रटना—क्रि० (कोई बात या शब्द बार-बार कहना)–सं० रटति>पा० रटति> प्रा० रडइ > अप० रडन्तउ > हिं० रटना ।–स्त्री० (कोई शब्द या बात बार-बार कहने की क्रिया)-सं० रटन> प्रा० रडण>हिं० रटना ।

रतन (पद०)—पुं० (रत्न)–सं० रत्न >पा० रतन ।

रतनागर (पद०)—पुं० (समुद्र)–सं० रत्नाकर ।

रतौंधी—स्त्री० (आँख का एक प्रसिद्ध रोग जिसके कारण रोगी को रात के समय कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता)–सं० रात्रि+अन्धिका (एक नेत्र रोग), सं० रात्र्यन्ध>प्रा० रत्तिअंधिआ, रत्तिध >हिं० रतौंध, रतौंधी, रतौंधा, रचौंधा (बो०) ।

रत्ती[1]—स्त्री० (आठ जौ की तौल, लाल घुँघची)–सं० रक्तिका, प्रा० रत्तीआ> हिं० रत्ती, रती (पद०) । तुल० कु० सिं० गु० रती, पं० रत्ती ।

रत्ती[2]—स्त्री० (शोभा)–सं० रति ।

रथ—पुं० (दो या चारों पहियों की एक प्रकार की गाड़ी)–सं० रथ>प्रा० अव० रह । तुल० पं० उर्दू कश्मी० म० गु० बं० अस० ओ० क० रथ, सिं० रथु, ते० रथमु, मल० रथम् ।

रथ्या—स्त्री० (सड़क, मार्ग)–सं० रथ्या >प्रा० रच्छा ।

रद्द—वि० (१- बदला हुआ, परिवर्तित)–अ० रद (द्द) ।

रद्दा—पुं० (दीवार पर चुनी हुई ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक तह)–अ० रद्दः (दीवार का रद्दा) ।

रधैंड़ी—स्त्री० (साग राँधने का पात्र)–सं० रंधन+भाण्डिका>रंधन+हंडिया >रधैंड़ी ।

रन—पुं० (युद्ध, लड़ाई)–सं० पा० प्रा० रण>हिं० रन । तुल० म० रण ।

रनजीता—पु० हिं०, वि० (रण जीतने वाला)–सं० रणजित् ।

रन-वास, रनिवास—पुं० (रानियों का महल, अन्तःपुर)–सं० राज्ञी-वास>प्रा० राणीवास, हिं० रनिवास, रनवास ।

रनित—वि० (बजता हुआ)–सं० रणितृ >प्रा० रणिर (पाइअ०) ।

रनी—पु० हिं०, पुं० (योधा, रण करने वाला)–सं० रण > हिं० रन + ई (प्र०) ।

रपट—स्त्री० (अभ्यास, आदत, टेव)–अ० रव्त ।

रमणी—स्त्री० (नारी)–सं० पा० प्रा० रमणी>अव० रमणी (की०) ।

रमणीय—वि० (सुंदर, मनोहर)–सं० रमणीयम् > प्रा० रमणीअं > अव० रमणीय (की०) ।

रमना—क्रि० (१- अनुरक्त या लीन होना, २- आनंद करना, ३- व्याप्त होना)–सं० रम्यति (√रम्) > पा० रम्मो>प्रा० रम्मइ > हिं० रमना । पुं०–सं० प्रा० रमण । तुल० पं० रमणा, सिं० रमणु ।

रमल—पुं० (पासे फेंककर शुभाशुभ फल या भविष्य जानने और बतलाने की विद्या)–अ० रमल ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रमेसरी — स्त्री० (लक्ष्मी) – सं० रामेश्वरी ।

रम्य—वि० (मनोरम)–सं० रम्य > प्रा० रम्म ।

ररि (पद०) — क्र० (रटकर, रो रोकर)–सं० रटति (सं० रट>प्रा० रड)>प्रा० अप० रडइ > ररइ > ररि ।

रव—पुं० (शब्द, आवाज)–सं० प्रा० अव० रव ।

रवना (पद०) — पुं० (रावण)–सं० रावण ।

रवानगी—स्त्री० (प्रस्थान, प्रयाण) – फ़ा० रवानगी ।

रवानी—स्त्री० (१- प्रवाह, बहाव, २- चलते हुए होने की क्रिया या भाव)– फ़ा० रवानी ।

रवैया — पुं० (तरीका, ढंग)–फ़ा० रविश ।

रशना—क्रि० (बांधना)–सं० √ रश् स्त्री०–(रस्सी)–सं० रशना ।

रस—पुं० (वनस्पतियों अथवा उनके फूल-पत्तों आदि में रहने वाला वह तरल पदार्थ जो दबाने, निचोड़ने आदि पर निकल सकता है)–सं० पा० प्रा० अव० हिं० रस । तुल० कु० बं० ओ० रस ।

रसद—स्त्री० (१- कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो, २- खाद्य सामग्री, खाने पीने का सामान)–अ० रसद ।

रसना—स्त्री० (जिह्वा)–सं० रसना> प्रा० रसणा ।–स्त्री० (१- रस्सी, २- लगाम)–सं० रशना ।

रसमूलू (पद०) – पुं० (रस का मूल)– सं० रसमूल ।

रसरा—प्रा० प्र०, पुं० (बहुत मोटी और बड़ी रस्सी, रस्सा)–सं० रशना, रसना>प्रा० रसणा>हिं० रसरा ।

रसरी — स्त्री० (पतली और छोटी रस्सी)–सं० रश्मि>प्रा० रस्सि, रसि> रसि+र=रसरी ।

रसाल—पुं० (आम का वृक्ष)–सं० प्रा० रसाल ।

रसिया—पुं० (१- रसिक, २- एक प्रकार का गाना जो फागुन में व्रज में गाया जाता है)–सं० रसिक > प्रा० रसिअ>रसिय>हिं० रसिया ।

रसीद — स्त्री० (पहुँच-पत्र, प्राप्ति, उपलब्धि)–फ़ा० रसीद । तुल० पं० उर्दू कश्मी० सिं० बं० रसीद, ते० रसीदु, त० रसिदु, मल० रशीति ।

रसूल (पद०) – पुं (अवतार) – अ० रसूल ।

रसोई—स्त्री० (रसोई-घर, पकाई हुई खाने की चीजें)–सं० रसवती (अमर-कोश)>प्रा० रसवई > रसउई>अप० रसोइ>हिं० रसोई । तुल० गु० म० रसोई ।

रसोइया—पुं० (भोजन बनाने वाला, रसोईदार)–सं० रसवती, पा० रासक (रसोइया), प्रा० रसवइ>अप० रसोइ >हिं० रसोई+इया (प्र०) ।

रसोईखाना — पुं० (रसोईघर)–सं० रसवती+फ़ा० खानः (घर) ।

रस्ता, रास्ता — पुं० (मार्ग)– फ़ा० रास्तः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रस्सी—स्त्री० (रूई, सन आदि को बटकर बनाई हुई बाँधने के काम की लंबी चीज, डोरी)–सं० रश्मि (√रश्) प्रा० अप० रस्सि > हिं० रस्सी। तुल० बं० गु० रसी, म० रशी।

रहँट[1] (पद०) — पुं० (रहट)–सं० अरघट्ट > प्रा० अरहट्ट > रहट्ट > रहट > रहँट।

रहँस—पुं० (रहस्य)–सं० रहस्य > छ० रहँस।

रह[1] — पुं० (रथ)–सं० रथ > प्रा० अप० अव० रह।

रह[2]—स्त्री० (मार्ग)–फ़ा० राह।

रहट—पुं० (कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र जिसमें काठ का एक बड़ा चक्कर होता है)–सं० अरघट्ट > प्रा० अरहट्ट > हिं० रहट।

रहड़ू, रहरू[1]—स्त्री० (छोटी गाड़ी)–सं० रथरूप > रहरूव > रहरूअ > रहरू, रहड़ू। रहड़ा > रहड़ी, लढ़ा, लेहड़ू आदि शब्द 'रहड़ू' से संबद्ध हैं।

रहन—पुं० (बंधक, गिरवी)–अ० रहन।

रहना[1]—क्रि० (१- स्थित होना, ठहरना। २- रुकना, थमना)–प्रा० रह, रहइ, रहेइ, रहसु > रहह > हिं० रह + ना। टिप्पणी—'सं० रह > प्रा० रह (त्यागना, छोड़ना)' से 'रहना' का संबन्ध नहीं है। पा० में 'रहति, रहायति' आदि शब्दों का उल्लेख टी० डब्लू० राइस डेविडस् (T. W. Rhys Davids) एवं भदन्त आनन्द कौसाल्यायन ने 'पालि-कोश' में नहीं किया है। तुल० पं० रहिणा, सिं० रहणु, गु० रहेवूँ।

रहना[2]—(छूटना, छोड़ना)–सं० √रह् (त्यागे to quit, to leave) > प्रा० रह > हिं० रह + ना (प्र०)।

रहनुमा—पुं० (१- पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक, २- नेता, अगुवा)–फ़ा० राहनुमा।

रहनुमाई — स्त्री० (पथ-प्रदर्शन)–फ़ा० राहनुमाई।

रहम — पुं० (करुणा, तरस, दया, कृपा)–अ० रहम।

रहमदिल —वि० (जिसका दिल बहुत ही दयामय एवं करुणापूर्ण हो)–अ० रहम + फ़ा० दिल।

रहवाल[1] — स्त्री० (घोड़े की एक चाल)–फ़ा० रहवार।

रहवाल[2]—वि० (रहने वाला, निवास करने वाला)– सं० रह् > प्रा० रह > हिं० रह + वाल (प्र०)।

रहवास—पुं० (निवास का स्थान)–सं० रह् + वास > प्रा० रह + वास > हिं० रहवास।

रहस्—पुं० (गुप्त भेद, गोप्य विषय)–सं० रहस्य > प्रा० रहस्स > अव० रहसें (की०)।

रहसि — स्त्री० (गुप्त स्थान) – सं० रहस्।

रांचा[1] (पद०) — वि० (अनुरक्त)–सं० रक्त > प्रा० रच्च > राचना।

रांवां[1] — स्त्री० (गाँव के पास की जंगली या ऊसर भूमि)–सं० आराम > पा० प्रा० आराम > हिं० रांवां।

राँगा—पुं० (राँगा धातु)–सं० रङ्ग > हिं० राँगा

राँचना—क्रि० (रँगना, रंग चढ़ाना)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० रञ्ज् > प्रा० रच्च > हिं० राँचना। –पुं०–सं० रञ्जन > प्रा० रच्चण।

राँझन—पुं० (प्रियतम)–सं० रंजन।

राँड —स्त्री० (विधवा)–सं० रण्डा (रण्ड—टाप्) > प्रा० रण्डा > हिं० राँड। तुल० पं० रण्ड, गु० राँड, म० रांड।

राँढ़ना — प्रा० प्र०, क्रि० (विलाप करना, रोना, उ०–'दादू पति बिन सुंदरी राँढइ घर घर बार, दादूदयाल (शब्द०)। सं० रोदन (=रुद्) > प्रा० रोवण।

राँधना — क्रि० (पकाना)–सं० राधय् (राध्=to make ready), राध्नोति, सं० रध् (to cook, prepare food, मो० वि० पृ० ८६६) > प्रा० रंध > हिं० राँधना।–पुं० रन्धन। तुल० कश्मी० रनुन्, सिं० रधणु, गु० रांधवुं, बं० राँधा, अस० रांध, ओ० रांधिबा।

राँधा—वि० (राँधा हुआ)–सं० रद्ध+क, राद्ध+क > प्रा० रद्धअ > हिं० राँधा।

राँभना—क्रि० (गाय का रंभाना या शब्द करना) – सं० रम्भते (√रभि, शब्दे) > प्रा० रंभइ > हिं० राँभना।–पुं०, सं० रम्भन्।

रा (की०)—पुं० (राजा)–सं० √रा= दाने, सं० राजा > राअ > रा अथवा सं० राजन् > प्रा० राय, अव० रा।

राअन्हि[1] — (की०) पुं० (राग, गीत)–सं० राग > प्रा० राय, राअ > अव० राअन्हि।

राई[1], राऊ, राय—पुं० (राजा) – सं० राजा।

राई[2]—स्त्री० (एक प्रकार की छोटी सरसों)–सं० राजिका > प्रा० राइआ > राई।

राउर—पुं० (राजमहल)–सं० राजालय > रावाल > रावल > रावर > राउर।

राउल — पुं० (राजकुल में उत्पन्न पुरुष)–सं० राजकुल > प्रा० रायकुल > राअउल > हिं० राउल।

राक्षस — पुं० (दैत्य, असुर) – सं० राक्षस > पा० प्रा० रक्खस। तुल० पं० राखस्, म० राकस।

१-राख[3], राखा(पद०)—स्त्री० (खाक, भस्म)–सं० क्षार > खार > स० छार > हिं० राख।

राख[1]—क्रि० (रक्षा करना)–सं० रक्ष > प्रा० रक्ख > राख।

राखडी — स्त्री० (एक प्रकार का आभूषण)–सं० राखडी (मो० वि०, पृ० ८७२)।

राखना — क्रि० (१- रक्षा करना, बचाना, २- रखवाली करना) – सं० रक्षति > पा० रक्खति > प्रा० रक्खइ > अप० रक्ख > हिं० राखना। तुल० पं० रक्खणा, सिं० रखणु, गु० राखवूँ।

राखी—स्त्री० (रँगे हुए सूत का तार, जिसको पर्व, पूजा आदि उत्सव में हाथ में बाँधते हैं)–सं० रक्षिका > प्रा० रक्खिआ > हिं० राखी। तुल० बं० राखि, सिं० रख, गु० म० राखी, पं० रक्खिआ।

राग[1] — पुं० (वह ध्वनि जो किसी विशिष्ट ताल में बैठाई हुई हो और जो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोरंजन के लिए गाई जाती है)–सं० राग>प्रा० राय । तुल० पं० उर्दू कश्मी० म० गु० बं० अस० ओ० क० राग, सिं० रागु, ते० रागमु, त० म० रागम् ।

राग[1]—पुं० (रंग, विशेषतः लाल रंग, जैसे—लाख आदि का)– सं० रक्त> प्रा० रत्त, रग्ग>अव० राग (की०)= लाल रंग ।

रागिनी — स्त्री० (राग, गीत)–सं० रागिणी>हिं० रागिनी। तुल० पं० रागणी, उर्दू रागनी, म० गु० ओ० सिं० रागिणी, बं० अस० रागिनी ।

राचना—क्रि० (प्रसन्न होना, अनुरक्त होना, लीन होना)–सं० रञ्च्>प्रा० रच्च>हिं० राच+ना ।

राज[1]—पुं० (रहस्य, भेद, गुप्त बात)– पह० फ़ा० राज़ ।

राज[2]—पुं० (शासन)–सं० राज्य > पा० प्रा० अव० रज्ज>हिं० राज ।

राजकुल—पुं० (राजवंश)–सं० राज-कुलम्>प्रा० राअउलं ।

राजना★—क्रि० (१- शोभित होना, २- विद्यमान होना, रहना)–सं० राज्,> प्रा० रेह, रेहइ, रेहए (प्रा० धात्वादेश) । तुल० पं० रज्जणा, सिं० रजणु, गु० राजवूं ।

राजपंखि (पद०)—पुं० (गरुड़)–सं० राजपक्षी ।

राजपुत्र—पुं० (राजा का पुत्र)–सं० राजपुत्र>पा० राजपुत्तो>प्रा० रायपुत्त >रायउत्त>राअउत्त > अव० राउत । तुल० गु० राउत, म० राऊत ।

राजपूत—पुं० (क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंशों की सूचक संज्ञा)–सं० राजपुत्र> प्रा० राजपुत्त>हिं० राजपूत ।

राज-बंदी—पुं० (वह जिसे राजा या राज्य ने बिना मुकदमा चलाये किसी संदेह में कैद कर लिया हो) – सं० राजबंदिन् ।

राजा—पुं० (नृप)–सं० राजन्>पा० राजा>प्रा० राया>अप० रावु>हिं० राजा ।

राजापन—पुं० (राजा होने का भाव)– सं० राजन्+त्वं (वै० त्वनं), प्रा० राय+प्पणं>हिं० राजापन ।

राजि—स्त्री० (१- पंक्ति, २- रेखा)– सं० पा० राजि ।

राजी — वि० (प्रसन्न, संतुष्ट)–अ० राज़ी ।

राजीनामा — पुं० (संधिपत्र, सुलह-नामा)–अ० राज़ी+फ़ा० नामः ।

रात—स्त्री० (रात्रि)–सं० रात्रि>पा० प्रा० रत्ती>रत्ति>राति>हिं० रात, राती (पद०) । तुल० पं० उर्दू गु० रात, सिं० राति, म० रात्र, ओ० अस० राति ।

रातना—पुं० हिं०, क्रि० (१- लाल रंग से रंग जाना, लाल हो जाना, २- रंग जाना, रंगीन होना)–सं० रक्त (√रञ्ज् +क्त) (सं० रञ्ज्, रञ्जय् = रँग लगाना>प्रा० रंज)>प्रा० रत्त, रत्त (इ), रत्ते (इ) ।

रातब—पुं० (रोज की खुराक, किसी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पशु की एक दिन की खुराक)–अ० रातिब।

राता—पुं० हिं० (१- लाल, सुर्ख)–सं० रक्त>प्रा० रत्त>हिं० राता।

राति—पुं० हिं०, स्त्री० (रात)–सं० रात्रि>प्रा० रत्ति>हिं० राति।

रात्रि—स्त्री० (रात, निशा)–सं० रात्रि >प्रा० रत्ति, राई।

राधना—क्रि० (पूजा करना, सिद्ध या पूरा करना)–सं० राध्यति (√राध्)।–पुं०—सं०आराधन(आ√राध्+ल्युट्)।

रान—स्त्री० (जंघा)–पह० फ़ा० रान।

रानी—स्त्री० (राजा की पत्नी)–सं० राज्ञी>प्रा० राणी > राण्णी > हिं० रानी। तुल० म० गु० अस० ओ० सिं० राणी, पं० रानी, ते० राणि, मल० राज्ञि।

राय—पुं० (१- राजा २- सरदार)–सं० राजा>प्रा० राय>अव० राए।

रायता — पुं० (दही में मसाला और बुंदी डालकर बनाया गया खाद्य)–सं० राज्यक्ता (कद्दू, खीरे आदि को महीन काटकर उबाल कर दही, राई, नमक आदि मिलाकर बनाना)–प्रो० पी० वी० शर्मा, द्रव्यगुण-विज्ञान, पृ० २८०)।

रार—पुं० (झगड़ा, टंटा, तकरार)–सं० राटि>प्रा० राडि (पाइअ०) > अप० राड़ी (दे० ना० मा०)।

राल—स्त्री० (वह पतला लसदार थूक जो प्राय: बच्चों और कभी बुड्ढों के मुँह से आपसे आप बहा करता है, लार)–सं० लाला (√लल्+णिच्+अच्-टाप्)।

रावट[1] (पद०)—वि० (लाजवर्द या काला)–सं० राजावर्त्त > रायवट्ट > रावट्ट>रावट।

रावली—स्त्री० (राजाओं का रनिवास या महल, अन्तःपुर)–सं० राजपुर।

राशन—पुं० (वह राजकीय प्रबंध जिसमें लोगों को खाने-पीने या अन्य आवश्यकताओं की वस्तुएँ नियत मात्रा में नियत काल पर दी जाती हैं)–अं० राशन् (Ration)।

राशि—पुं० (ढेर, पुञ्ज, एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का समूह)–सं० राशि (अश्+इण्, रुडागम) > पा० प्रा० रासि। तुल० पं० राशी, सिं० रासि, ओ० बं० राशि।

राष्ट्र—पुं० (१- राज्य, २- देश, ३- प्रजा)–सं० राष्ट्र>पा० प्रा० रट्ठ।

राष्ट्रवादी—पुं० (वह व्यक्ति, संस्था, दल आदि जो राष्ट्र की एकता, संपन्नता आदि हितों को सर्वोपरि माने और उसी को प्रमुखता दे)–सं० राष्ट्रवादिन्।

राष्ट्रीय—वि० (राष्ट्र-विशेष का, राष्ट्र संबन्धी)–सं० राष्ट्रीय>पा० रट्ठिक> प्रा० रट्ठिअ।

रास[1]—स्त्री० (किसी चीज़ का ढेर या समूह, जैसे—खलिहान में पड़ी हुई गेहूँ, चने या जौ की रास)–सं० राशि> पा० प्रा० रासि>हिं० रास। तुल० म० रास, गु० रास्। फ़ा० अ० राश (अन्न का ढेर)।

रास[2] — स्त्री० (घोड़े या बैल की लगाम की रस्सी)–सं० रश्मि>रस्सि, रास।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रास[३]—पुं० (एक प्रकार का नृत्य)–सं० रासः।

रास[४]—स्त्री० (ज्योतिष की राशि)–सं० राशि।

रास[५](१)— स्त्री० (चौपाए की इकाई जैसे गाय एक रास, चौपायों का झुंड)–यह प्राचीन मिस्र और म्लेच्छ परिवार की भाषाओं का शब्द है। अ० रश, हिब्रू राश=सिर।

रासभ—पुं० (गधा, खच्चर)–सं० रासभ>प्रा० रासहो।

रासा—पुं० (एक प्रकार का नृत्य)–सं० रास+क (नृत्य, भागवत पुराण में वर्णित) रास्स>रासा।

राह[१]—स्त्री० (मार्ग, पथ)–फ़ा० राह >अप० हिं० राह।

राह[२] (जा०) — पुं० (राहु) – सं० राहु।

राहखर्च — पुं० (मार्ग-व्यय) – फ़ा० राह+खर्च।

राहत—स्त्री० (सुख, चैन, आराम, शान्ति)–अ० राहत।

राही—पुं० (पथिक, राहगीर, मुसाफिर)–फ़ा० राही।

रिआया — स्त्री० (जनता, प्रजा, आवाम)–फ़ा० रईयत>अव० रैअति (की०)>हिं० रिआया।

रिकवँछ, रिकवछ(१) (पद०) — स्त्री० (हल्का पथ्याहार)–रिकपथ्य>रिकपच्छ > रिकवछ, रिकवँछ। अवधी रिकवच्छ (अरवी के पत्तों को महीन कतर कर उड़द की पीठी में लपेट कर घी में तल लेते हैं, फिर उन्हें छौंक देते हैं)।

रिक्थ—पुं० (धन)– सं० रिक्थ>प्रा० रित्थ।

रिठड़ा—पुं० (रीठे का वृक्ष, इसका फल जो बेर के बराबर होता है) – सं० अरिष्ट+क > प्रा० रिट्ठअ > हिं० रीठा, ह० रिठ्ड़ा।

रिण—पुं० (ऋण)–सं० ऋणम्>पा० इणम्>प्रा० रिण>अव० रिंण (की०) >हिं० रिण। तुल० पं० रिन।

रितुसारी(१) — पुं० (लाल धान)–सं० रक्तशाली > रत्तशालि > रत्तसारि> रितुसारि।

रिदिवशा(१) (च०)—वि० (रईस)–सं० ऋद्धिवशाः, सं० ऋद्धि>रिद्धि, रिधि, रिदि।

रिनिआँ—प्रा० प्र०, वि० (जिसने ऋण लिया हो)–सं० ऋणिन्, ऋणिकः > प्रा० रिणिओ>हिं० रिनिआँ।

रिपु—पुं० (शत्रु)–सं० पा० प्रा० रिपु, प्रा० रिवु, रिउ।

रियायत — स्त्री० (मूल्य आदि में कमी)–अ० रिआयत।

रियासत—स्त्री० (सत्ता, जागीरदारी, शासन, जागीर, इलाका)–अ० रियासत।

रिवाज — पुं० (प्रथा, परंपरा)–अ० रिवाज।

रिश्ता — पुं० (नाता, संबंध)–फ़ा० रिश्तः।

रिश्तेदार — पुं० (संबंधी, नातेदार, स्वजन)–फ़ा० रिश्तःदार।

रिश्तेदारी — स्त्री० (नाता, संबंध)–रिश्तःदारी।

रिश्वत—स्त्री० (घूस, उत्कोच)–अ० रिश्वत।

रिसालु—वि० (क्रोध करने वाला)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रिष्+आलुच्, रिषालु।

रिसी—स्त्री० (ऋषि)–सं० ऋषि > रिसि > रिसी।

रिषय—पुं० (अनेक ऋषि)–सं० ऋषयः > रिषय।

रीछ—पुं० (भालू)–सं० ऋक्ष > पा० प्रा० रिच्छ > हिं० रीछ। तुल० गु० रीछ, सिं० रिछु।

रीछनी—स्त्री० (रीछ की स्त्री)–सं० ऋक्षिणी > रिच्छनी।

रीछिराज—पुं० हिं०, पुं० (जामवंत)–सं० ऋक्षराज्।

रीझ—स्त्री० (किसी के ऊपर रीझने की क्रिया या भाव)–सं० ऋध > प्रा० रिज्झ > रीझ।

रीझना — क्रि० (प्रसन्न होना) – सं० ऋधति > प्रा० रिज्झइ > अव० रिज (की०) > हिं० रीझना।

रीझा—(पद०) क्रि० (प्रसन्न होना, किसी पर आसक्त)–सं० ऋध् > प्रा० रिज्झ > हिं० रीझा।

रीठ★—स्त्री० (तलवार)–सं० रिष्टि (√रिष्+क्तिच्)।

रीठा—पुं० (गोल पत्ते और पीले फल वाला एक पेड़ एवं उसका फल)–सं० अरिष्ट+क > प्रा० रिट्ठअ > हिं० रीठा।

रीढ़—स्त्री० (मेरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी)–सं० रीढक।

रीढ़—स्त्री० (रीति)–सं० रीति (√री+क्तिन् वा क्तिच्) > अव० रीति > हिं० रीत।

रीतना—क्रि० (खाली होना, खाली करना, रिक्त करना) – सं० रिक्त (√रिच्+क्त) > प्रा० रिक्क > अव० रिक्काविए (की०) > हिं० रित+ना = रीतना।

रीता—वि० (खाली)–सं० रिक्तकः > पा० रित्तो, रित्तको > प्रा० रित्त > हिं० रीता। तुल० कु० रितो, म० रिता।

रीस (पद०) — स्त्री० (क्रोध)–सं० रुष।

रीसी(१)—(पद०) वि० (सदृश)–सं० सदृश > प्रा० सरिस > रीस।

रुंड—पुं० (१- बिना सिर का धड़, २- बिना हाथ पैर का शरीर)–सं० रुण्ड।

रुंडिका — स्त्री० (युद्धभूमि) – सं० रुण्डिका।

रुंधना — क्रि० (रुकना, अटकना, रोकना)–सं० रुद्ध, √रुध् > पा० रुन्धति > प्रा० रुंधइ, रुद्ध > हिं० रुंधना। तुल० पं० रुधणा, बं० रोधिते, सिं० रुधणु।

रुंधा—वि० (१- रुका हुआ, मार्ग न मिलने के कारण, अटका हुआ, २- उलझा हुआ)– सं० रुद्ध +क > प्रा० रुद्धअ (रोका हुआ) > हिं० रुंधा।

रुंआँ—प्रा० प्र०, पुं० (रोआँ)–सं० पा० प्रा० रोम, सं० लोमन् > हिं० रुआँ, पु० हिं० रुआ। तुल० पं० रोम, रोऊ; ओ० रोम।

रुआब—प्रा० प्र०, पुं० (१- धाक, रोब, २- भय)–अ० रोअब।

रुई—स्त्री० (कपास के डोडे में का रेशेदार घूआ जिसे कातकर सूत बनाते या जो गद्दे, रजाई आदि में भरते हैं)–सं० रोमन्+इका > प्रा० रोम+इआ > हिं० रुई।

रुईदार—वि० (जिसमें रूई भरी हो)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० रोमन्+फ़ा० दार (प्र०)।

रुकमिनी — स्त्री० (श्रीकृष्ण चंद्र की पटरानी)–सं० रुक्मिणी।

रुक—स्त्री० (रोग)–सं० रुज्।

रुक्का — पुं० (चिट्ठी, पत्र)–अ० रुक़्अ।

रुख[1] — पुं० (१- कपोल, २- मुख, चेहरा, ३- चेहरे का भाव, आकृति), क्रि० वि०—(तरफ, ओर, पार्श्व)–फ़ा० रुख।

रुख[2]—पुं० (वे जङ्गली वृक्ष जो फल-फूल और छाया नहीं देते हैं)–वै० सं० रुक्ष (रुह्)>प्रा० रुक्ख>हिं० रुख।

रुखसत — स्त्री० (बिदा, बिदाई, अवकाश, फ़ुर्सत, दुल्हन का दूल्हा के घर जाना)–अ० रुख़्सत।

रुखा[1] (पद०)—पुं० (वृक्ष)–वै० सं० रुक्ष>प्रा० रुक्ख>रुखा।

रुखा[2]—वि० (जिसमें चिकनाहट न हो)–सं० रूक्ष (रूक्ष्—पारुषये (कठोर अर्थ में)>प्रा० रुक्ख>हिं० रुखा।

रुग्न—वि० (रोग-ग्रस्त)–सं० रुग्ण>हिं० रुग्न।

रुचना — क्रि० (पसन्द आना)–सं० रुच्यते, रोचते (√रुच्)>पा० रुच्चति>प्रा० अप० रुच्चइ>हिं० रुचना। तुल० सिं० रुचणु, गु० रुचवुं, ने० रुच्नु, म० रुच (णें)।

रुचि—स्त्री० (मन की वह अवस्था या वृत्ति जिसके कारण मनुष्य कुछ चीज़ों को अच्छा मानता है और कुछ उनके विपरीत, चाह)–सं० पा० रुचि>प्रा० रुच्चि, रुइ।

रुज—पुं० (वेदना, कष्ट, २- क्षत, घाव, ३- रोग)–सं० रुज।

रुजी—वि० (जिससे कोई रोग हो)–सं० रुज् (√रुज्+क्विप्)=वेदना, कष्ट, रोग>हिं० रुज+इ(प्र०)।

रुठड़ा—वि० (रुष्ट)–सं० रुष्ट>प्रा० रुट्ठ>हिं० रुठ+ड़ा (प्र०)।

रुठना—क्रि० (नाराज होना, रूसना)–रुष्यति>प्रा० रुट्ठ>हिं० रुठ+ना(प्र०)।

रुठा—वि० (अप्रसन्न, नाराज)–सं० रुष्ट>प्रा० रुट्ठ>हिं० रुठा।

रुद्राख— प्रा० प्र०, रुदराछ (पद०)—(१- रुद्राक्ष का वृक्ष, २- इस वृक्ष का गोल बीज, जिसमें छेद करके शैव लोग मालाएँ बनाते हैं और गले अथवा हाथ में पहनते हैं)–सं० रुद्राक्ष।

रुधिर—पुं० (रक्त)–सं० रुधिर>पा० अव० रुहिर।

रुनझुन—स्त्री० (रुनझुन की ध्वनि)–रण्+झण्>प्रा० रणझझण>हिं० रुणझुण>रुनझुन, रुनुकझुनुक।

रुबरू — अव्य० (आमने-सामने)–फ़ा० रूबरू।

रुबाई—स्त्री० (उर्दू या फ़ारसी की एक प्रकार की कविता जिसमें चार मिसरे होते हैं)–अ० रुबाई।

रुमाल—पुं० (हाथ-मुँह पोंछने का जेब में रखने वाला कपड़ा)–फ़ा० रुमाल। तुल० बल्गा० करपा।

रुमाली — स्त्री० (एक प्रकार की लँगोट)–फ़ा० रुमाल+ई (प्र०)।

रुसइ — क्रि० (रुष्ट होना, अप्रसन्न होना)–सं० रुष्यति>अवधी रुसइ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूसना — क्रि० (रोष करना, नाराज होना, रूठना)–सं० रुष् > प्रा० रूस > अप० रूसइ > हिं० रूस + ना। –पुं० –सं० रोषण > प्रा० रोषण > अप० रुसणा। तुल० पं० सिं० गु० बं० रुस्।

रूढ़ि—स्त्री० (परम्परा से चलती आती प्रसिद्धि)–सं० प्रा० रूढि।

रूप—पुं० (किसी पदार्थ का वह गुण जिसका बोध द्रष्टा को चक्षुरिंद्रिय द्वारा होता है, सूरत, आकार)– सं० रूप > प्रा० रूअ > अव० रुअ (की०)।

रूपमनी (पद०)—वि० (सुन्दर स्त्री, रूपमती)–सं० रूपवती।

रूपया—पुं० (द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व भारत में चाँदी का प्रचलित सिक्का) सं० रूप्यक (रूप्य + क) = रूप्य (रजत, चाँदी) से निर्मित सिक्का 'रूप्यक'। टि० — आजकल 'रुपया' शब्द एक रुपए के सिक्के के अर्थ में रूढ़ हो गया है।

रूपहला—वि० (चाँदी के रंग का, चाँदी का सा) – सं० रूप्याभकः > रूप्पाहरो > रूपाहलो > रूपाहला > रूपहला।

रूपा— पुं० (१- चाँदी, २- घटिया चाँदी)– सं० रूप्य।

रूषा (पद०) — वि० (रूखा) – सं० रुक्ष + क।

रूसा[1]—पुं० (क्रोध, रोष)–सं० रुषा।

रूसा[2]—पुं० (एक सुगंधित घास का नाम)–सं० रोहिष।

रूसे (पद०)—क्रि० (रूठे, विरक्त हुए, रुष्ट हुए)–सं० रुष्ट।

रूह—स्त्री० (१- आत्मा, जीव, २- सत्त, सार)–अ० रूह।

रूहअफजा — वि० (जीवन बढाने वाला) – अ० रूह (जान) + फ़ा० अफ़ज़ा।

रेंगना—क्रि० (जमीन के साथ पेट सटा कर हाथ-पैरों के बल आगे बढ़ना या चलना)–सं० √ रिङ्ग् > प्रा० रिग, रिग्गइ > हिं० रेंगना। –पुं०–सं० रिंगण। तुल० गु० रिववूँ, बं० रिंघन, म० रिग (घ) (णें)।

रेंकना—क्रि० (१- गदहे का बोलना, २- बुरे ढंग से गाना) – सं० रेषते (√रेषृ)।

रेंडी—स्त्री० (अरंडी या रेंड़ के बीज जिनसे तेल निकलता है और जो रेचक होने के कारण दवा के काम में आते हैं)–सं० एरण्ड + इका।

रेई[1] —(पद०) कृ० (रीती करके)– सं० रेचित > प्रा० रेइय, रेई।

रेख—स्त्री० (लकीर, रेखा)–सं० रेखा > प्रा० रिक्खा > अव० रेखा > हिं० रेख।

रेजगारी—स्त्री० (१- छोटे सिक्के, २- छोटे टुकड़े या कतरन)–फ़ा० रेज़गारी।

रेढ़ना — क्रि० (ठेलना, लुढ़काना, घसीटते हुए चलने में प्रवृत्त होना)– प्रा० रड्ड > हिं० रेढ़ना, रिढ़ना। तुल० गु० रडेलुं, पं० रिढ़ना, रूढ़ना।

रेत—पुं० (बालू)–सं० रेत्रम् > हिं० रेत। तुल० कु० रेतो, पं० रेत्, रेती।

रेती (पद०)—स्त्री० (रेतने का औजार, बालू का किनारा)–सं० रेतस्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रेला—पुं० (जल का प्रवाह, वहाव, धक्का, समूह)–प्रा० रेल्लि > अप० रिल्ल (सं० रा०)।

रेवड़[1] — पुं० (भेड़-बकरियों का झुण्ड)–अक्कदी भाषा 'रेउ' > रेवड़।

रेशम—पुं० (पाट, एक प्रसिद्ध डोरा जो एक कीड़े से प्राप्त होता है और जिससे रेशमी कपड़ा बनता है)–फ़ा० रेशम।

रेहन—पुं० (गिरवी, बंधक) – अ० रह्न, तुल० पं० रहिन, उर्दू रहन, कश्मी० रेहन।

रेहु, रोहु—पुं० (मछली)–सं० रोहित > पा० रोहितो > प्रा० रोहिअ > हिं० रोहु, रेहु। तुल० म० रोही, पं० रेहूँ।

रैन—स्त्री० (रात्रि)–सं० रजनी > प्रा० अप० रयणी > रअणी > रअनी > रैनि > हिं० रैन।

रैन-बसेरा—पुं० (रात में ठहरने का घर)–सं० रजनी + वसतिगृह > प्रा० रयणि > वसइघर > रइन + वसइअर > हिं० रैन-बसेरा।

रैयत — स्त्री० (प्रजा, रिआया)–अ० रैयत।

रोंगटा—पुं० (सिर को छोड़ कर सारे शरीर के बाल)–सं० रोमक > प्रा० रोअंक > हिं० रोंग + टा (प्र०)।

रोंव, रोआँ — पुं० (रोयाँ) – सं० रोम + क > प्रा० लोमअ > रोआँ, रूआं, रोंव।

रोक—स्त्री० (रुकावट, अटकाव, गति में बाधा, अवरोध)–सं० रोध > प्रा० रोह > अप० रोक्क (प० च०) > हिं० रोक।

रोकड़—स्त्री० (१- नगद रुपया, २- जमा, धन, पूँजी)–सं० रोक (नकद) > हिं० रोक + ड़।–**बिक्री**—स्त्री०–सं० रोक + विक्रयण > (प्रा० विक्कणण) > हिं० रोकड़-बिक्री।–**रोकड़िया** (मुनीम, नकद रुपया रखने वाला)–रोकड़ + इया (प्र०)।

रोकना—क्रि० (कहीं जाने या कोई काम करने से रोकना, किसी को आगे बढ़ने न देना)–सं० रोधति > पा० रोधम् > प्रा० रोह, रोहिऊण > हिं० रोकना। तुल० कु० रोकणो, पं० रोकणा, गु० रोकवूँ।

रोग[1] (पद०)—वि० (सोने का)–सं० रुक्म, रुक्क > रोक > रोग।

रोग[2]—पुं० (बीमारी)–सं रोग (सं० √रुज् + अच्) > अप० रोग्ग (प० च०) > रोग, रोगू, (पद०)। तुल० म० गु० बं० असं० ओ० रोग।

रोज—पुं० (दिवस, दिन)–फ़ा० रोज़।

रोजगार — पुं० (१- व्यापार, २- व्यवसाय)–फ़ा० रोज़गार।

रोजन — पुं० (छिद्र, सूराख)–फ़ा० रोज़न।

रोजा—पुं० (उपवास, व्रत)–फ़ा० रोजः > अव० हिं० रोजा। तुल० पं० उर्दू रोज़ा, कश्मी० रोज़ु, सिं० रोज़ो।

रोजी—स्त्री० (जीविका)–फ़ा० रोज़ी।

रोजू[1] (पद०)—पुं० (रोना, रुदन)–सं० रुद्यते > प्रा० रुज्जइ > रोजइ।

रोटी—स्त्री० (गेहूँ, जौ आदि के आटे की सेंक कर बनायी हुई चपाती)–सं० रोटि > प्रा० रोट्टग, रोट्ट > अप० रोट्टं (दे०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ना० मा०)>हिं० रोटी। तुल० त० मल० रोट्टि, पश्तो डुडइ।

रोठा (पद०) — पुं० (रोड़ा, डला, टुकड़ा)–सं० लोष्ट+क (√लोष्ट्+घञ्)=मिट्टी का ढेला।

रोड़ा—पुं० (ढेला)–सं० लोष्ठ+क> प्रा० लोट्ठअ>लोड्डअ > रोड्डा > हिं० रोड़ा।

रोना — क्रि० (रुदन करना) – सं० रोदिति>पा० रोदति>प्रा० रुअइ > हिं० रोना।–पुं०–सं० रोदन (√रुद्) >प्रा० रोवण>रुअण >हिं० रोना। तुल० पं० रोणा, सिं० रुअणु, म० रडणें, गु० रडवुं।

रोनौ—प्रा० प्र०, पुं० (रोना)–सं० रोदनं>रोअनो>रोनौ।

रोपना—क्रि० (१- जमाना, लगाना, २- स्थित करना ३- बोना)–सं० रोपते, रोपयति>पा० रोपेति, प्रा० रोवेइ> हिं० रोपना।–पुं०–सं० रोपण। तुल० गु० रोपवूँ, कु० रोपणो।

रोब—पुं० (आतंक, धाक, डर)–अ० रो'ब।

रोम—पुं० (बाल, रोंआ, लोम)–सं० रोमन्>पा० प्रा० रोम।

रोमांच—पुं० (१- आनंद से रोयां का उभर आना, पुलक, २- भय से रोंगटे खड़े होना)–सं० पा० रोमाञ्च>प्रा० रोमंच>हिं० रोमांच।

रोमांचित—वि० (१- पुलकित, २- भय से जिसके रोंगटे खड़े हो गए हों)–सं० रोमाञ्चित>प्रा० रोमांचिअ, रोमंचइअ।

रोल—स्त्री० (१- रोर, शोर, २-ध्वनि, शब्द)–सं० रवण (शब्दायमान)>प्रा० रोल (पाइअ०), अव० रोल (की०)> हिं० रोल।

रोवना — पुं० (१- दुःख, खेद, २- कष्ट)–सं० रोवणा>प्रा० रुवणा>हिं० रोवना।

रोवाँ (पद०)—पुं० (रुदन)–सं० रोदन >प्रा० रोवण, रोवंत (प० च०) रोविऊण (पाइअ०)।

रोशन—वि० (१- प्रदीप्त, प्रकाशित, २- प्रकाशमान)–फ़ा० रौशन।

रोशनदान—पुं० (मकान में रोशनी आने का सूराख)–फ़ा० रौशनदान।

रोशनाई—स्त्री० (अक्षर लिखने की स्याही, काली मसि)–फ़ा० रौशनाई।

रोशनी—स्त्री० (प्रकाश)–पह० रोशनी, फ़ा० रौशनी।

रोस—पुं० (क्रोध, विरोध)–सं० रोष >प्रा० अव० रोस।

रोहना—क्रि० (चढ़ाना, ऊपर की ओर जाना या बढ़ना)–सं० रोहति (सं०√रुह्)>प्रा० रोह > हिं० रोह+ना। पुं०–सं० रोहण(√रुह्+ल्युट्)>प्रा० रोहण।

रोहिणि—स्त्री० (१-सत्ताइस नक्षत्रों में से एक, २- गाय)– सं० प्रा० रोहिणी।

रोहू—स्त्री० (एक प्रकार की मछली)– सं० रोहिष।

रौंदना— क्रि० (पैरों से कुचल या दबाकर नष्ट-भ्रष्ट करना)–सं० मृद्> प्रा० मड्ड, मद्द>हिं० रौंद+ना।— पुं०, सं० मर्दन (√मृद्+ल्युट्)>प्रा० मद्दण।

रौनक—स्त्री० (१- सुन्दर वर्ण और आकृति या रूप, २- चमक-दमक, ३-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रसन्न चित्त लोगों की चहल-पहल)–अ० रौनक़ ।

रौसली(१)— स्त्री० (एक प्रकार की चिकनी उपजाऊ मिट्टी, डाकरा)–सं० रजस्वला > प्रा० रजस्सला > अप० रउस्सला > रौसला, रौसली ।

रौहार (ल)—वि० (चलने वाला)–फ़ा० राहरौ, ररौ ।

ल

लंक—स्त्री० (लंका)–सं० लङ्का ।

लंकद्वीप (पद०)—पुं० (लङ्कलाद्वीप)–सं० लङ्काद्वीप ।

लंका—स्त्री० (१- वर्तमान सीलोन टापू, रावण का निवास और उसकी राजधानी, २- व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या, ३- एक प्रकार का अनाज)–सं० लङ्का ।–दाही, पुं० (हनुमान) – सं० लङ्कादाहिन् । –नाथ, पुं० (रावण)–सं० लङ्कानाथ ।

लंकेसुर — पुं० हिं० (रावण)–सं० लङ्केश्वर ।

लंखनी — स्त्री० (लगाम की वल्गा, (लोहे का बना वह भाग जो मुँह में रहता है)–सं० लङ्खनी ।

लंगनी—स्त्री० (वह डोरी या डंडा जिस पर कपड़े टाँगे जाते हैं)–सं० लङ्गनी (a stick or rope on which to hang clothes, मो०वि०, पृ० ८९५) ।

१- लंगर, लंगरा(१) — वि० (नटखट, ढीठ)–सं० लंघट, लंघ धातु > लंगर + क = लंगरा, लंगरी । तुल० म० लंगडा, गु० लंगडो ।

२- लंगर—पुं० (१- वह स्थान जहाँ से निर्धनों को भोजन मिलता है, २- सदाव्रत, ३- लोहे का वह बड़ा काँटा जिसे नदी या समुद्र में गिरा देने पर नावें या जहाज एक ही स्थान पर ठहरते है) – फ़ा० लंगर । तुल० अं० एन्कर । –खाना (अनाथ-भोजनशाला)– फ़ा० लंगरखानः । –गाह (नौकाश्रय)–फ़ा० लंगरगाह ।

लगरई, लंगराई (१) — स्त्री० (नटखट, ढीठ)–सं० लंघट + गति > लंगर + अई = लंगरई, लंगराई ।

लंगूर—पुं० (बड़ी पूँछ वाला एक विशेष बंदर)–सं० लांगूल ।

लंगल—पुं० (हल)–वै० सं० लाङ्गल > प्रा० हिं० लंगल ।

लंगा — ग्रा० प्र०, वि० (नंगा, वस्त्रहीन)–सं० नग्न ।

लंगिमा — पुं० (मेल, समागम)–सं० लङ्गिमन् (union, मो० वि०, पृ० ८९५) ।

लंगूर—पुं० (१- बंदर, २- पूँछ, ३- एक विशेष प्रकार का बंदर)–सं० लाङ्गुलिन् > प्रा० लंगूलि > हिं० लंगूर, लंगूल (पूँछ), पुं० हिं० लंकूर ।

लंगूल — पुं० (लांगूल, पूँछ)–सं० लङ्गूल √ प्रा० णाङ्गुलं (विकल्प से ल को ण का आदेश) > प्रा० हिं० लंगूल ।

लंघना—क्रि० (लाँघना)–सं० लङ्घते (√लघि) > पा० लङ्घति, प्रा० लंघइ हिं० लंघना, लाँघना । पुं०–सं० लङ्घनम् > पा० लङ्घन > प्रा० लंघण ।

लंघनीय—वि० (लाँघने के योग्य)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लङ्घनीय ।

लंघित — वि० (१- लाँघा हुआ, २- उल्लंघित, ३- आक्रमित)–सं० लङ्घित >प्रा० लंघिअ ।

लंघै—क्रि० (पार जाता है, लाँघ जाता है)–सं० लङ्घते>ब्र० लंघै ।

लंछन—पुं० हिं०, पुं० (१- लांछन, चिह्न)–सं० लाञ्छन>प्रा० लंछण> लंछन ।

लंजा—स्त्री० (१- धारा, प्रवाह, २- व्यभिचारिणी स्त्री०)–सं० लञ्जा ।

लंजिका — स्त्री० (वेश्या, रंडी)–सं० लञ्जिका (लञ्ज्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्) >अप० लञ्जिया (दासी, प० च०), हिं० लंजिका ।

लंपट — वि० (व्यभिचारी, विषयी, बदचलन)–सं० लम्पट (√रन्+अटन्, पुक्, रस्य लः) प्रा० लंपड > हिं० लंपट ।

लंबतड़ंग—वि० (अत्युच्च, लंबे आकार वाला)–सं० लम्ब + ताल + अङ्गम् । अथवा सं० लम्ब+ताडः (पहाड़) + अङ्गम् ।

लंबा—वि० (जिसके दोनों छोर एक दूसरे से बहुत अधिक दूर हों)–सं० लम्ब +क>प्रा० लंबअ>हिं० लंबा ।

लंबोतरा—वि० (जो कुछ अपेक्षाकृत लंबा हो)–सं० लम्ब > हिं० लंब+ ओतरा (प्र०) ।

लंबोदर—पुं० (१- गणेश, २- पेटू)– सं० लंबोदर>प्रा० लंबोदर, लंबोयर । –जननी, स्त्री० (पार्वती, गणेश की माता)–सं० लम्बोदर +जननी ।

लंबोष्ठ—पुं० (वह जिसके होठ लंबे हों)–सं० लम्बोष्ठ>प्रा० लंब+ओट्ठ ।

लँगड़ा—वि० (जिसका एक पैर बेकाम हो गया हो)–सं० लङ्ग>हिं० लँग+ ड़ा । फ़ा० लंग । तुल० म० लंगड़ा, गु० लंगडूं ।

लँगोचा—पुं० (जानवर की एक आँत जो मसालेदार कीमे से भरकर और तलकर खाई जाती है)–देशज ।

लँगौटा—पुं० (कोपीन, कछनी)–सं० लिंगपट्ट>लिंगवट्ट > लिंगउट्ट, लंगोट, लंगौटा ।–स्त्री० लँगौटी । तुल० पं० म० गु० लंगोट ।

लँडूरा—वि० (कटी हुई पूँछ वाला)– सं० लञ्ज+वण्ड>लँउड>लँडू+रा ।

लई, लए, लाई, लै, लैउ—क्रि० (लेना)– सं० लाति > लाइ > ब्र० लै, लई, लाई ।

लकड़ा—पुं० (लकड़ी का मोटा कुंदा)– वै० सं० लगुड, सं० लकुट>प्रा० लगुड >अप० लक्कड (प० च०) > हिं० लकड़ा । तुल० गु० लाकडुं ।

लकड़ी—स्त्री० (काष्ठ, काठ) – सं० लकुट>प्रा० लक्कुड > अप० लक्कुडि (प० च०)>लउडि (प० च०)>हिं० लकड़ी । तुल० पं० लक्कड, सिं० लकिडा, गु० लाकडूँ ।–स्त्री० (छड़ी या लाठी)– सं० लगुड (लाठी)>पा० लगुळ (डण्डा) >प्रा० लगुड ।

लकरिया—पु० हिं०, प्रा० प्र०, स्त्री० (लकड़ी)–सं० लकुट>अप० लक्कड़िया >पु० हिं० लकरी+इया (प्र०), छ० लकरिया ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लकलक—पुं० (लंबी गर्दन वाला एक जलपक्षी, ढेंक)–अ० लक़्लक़।

लकलका — पुं० (लकलक पक्षी की आवाज, रटन)–अ० लक़्लाक़।

लकवा — पुं० (एक वात-रोग जिसमें कोई अंग सुन्न और बेकार हो जाता है)–अ० लक़्वः।

लकीर—स्त्री० (१- रेखा, २- वह चिह्न जो दूर तक रेखा के समान बना हो, ३- धारी, ४- पंक्ति, ५- क्रम)–सं० लिख् >प्रा० लिह>अप० लीह (प० च०) >हिं० लीक, लकीर।

लक्ख—वि० (लाख)–सं० लक्ष।

लक्खन—पुं० (लक्षण)–सं० लक्षण> प्रा० अप० लक्खण (प० च०) लख्खण> हिं० लक्खन, ह० लक्खण्।

लक्खना—पुं० हिं०, वि० (लक्षणों से युक्त)–सं० लक्षण+क>प्रा० लक्खणअ >हिं० लक्खना।

लक्षण— (किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जाए, रोग की पहचान, परिभाषा, विशिष्टता) – सं० लक्षण (√लक्ष्+ल्युट्) > पा० प्रा० लक्खण।

लक्षणा—स्त्री० (शब्द की वह शक्ति जिससे मुख्यार्थ का बाध होने पर रुढ़ि या प्रयोजन के आधार पर अन्य अर्थ प्रकट हो)–सं० लक्षणा (लक्षण+अच्–टाप् वा लक्ष् + युच्–टाप्) > प्रा० लक्खणा।

लक्षित—वि० (निरूपित, वर्णित, लक्ष्य किया हुआ)–सं० लक्षित (√लक्ष्+क्त) >प्रा० लक्खिअ>अप० लच्छिय (प० च०)।

लक्ष्मीकांत—पुं० (१- विष्णु, राजा)–सं० लक्ष्मीकान्त>प्रा० लच्छीकंत।

लक्ष्य—पुं० (निशाना, वह जिस पर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाए)–वै० सं० लक्ष्प, सं० लक्ष्य > पा० प्रा० लक्ख।

लक्ष्यार्थ—पुं० (किसी शब्द या वाक्य को उसके साधारण अर्थ से भिन्न,अर्थ में प्रयुक्त करना, वह अर्थ जो उसकी लक्षणा शक्ति से निकलता है, लक्षितार्थ)– सं० लक्ष्य (√लक्ष्+ण्यत्)+अर्थ।

लख (तुलसी) पुं०—(लक्ष्य, निशाना)–सं० लक्ष।

लखना—पु० हिं०, प्रा० प्र०, (लक्षण देखकर अनुमान कर लेना, देखना)–सं० लक्षयति>प्रा० लक्खइ>अप० लक्खिअइ>अव० लखिअइ>हिं० लखना।

लखघर—पुं० (लाख का घर)–सं० लाक्षागृह।

लखिमिनी (पद०)—स्त्री० (लक्ष्मी)–सं० लक्ष्मिणी।

लखिया — पु० हिं०, प्रा० प्र०, पुं० (लखने वाला, जो लखता हो)–सं० लक्षक (पहचानने वाला)>प्रा० लक्खग, लक्ख>हिं० लखना+इया (प्र०)।

लखेरा—पुं० (लाख की चूड़ियाँ आदि बनाने वाला)–सं० लाक्षाकार > प्रा० लक्खार>लक्खेर>हिं० लखेर।

लखै — क्रि० (दिखाई देती है)–सं० लक्षते>लखए>ब्र० लखै।

लखौरी—स्त्री० (१-एक प्रकार की भौंरी (कीड़ा) का घर जो वह मिट्टी से

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घरों के कोनों में बनाती है)–सं० लाक्षा >प्रा० लक्खा (पाइअ०) >हिं० लाखा +औरी (प्र०)।

लख्त—पुं० (टुकड़ा)–फ़ा० लख्त।

लगति, लगाई, लागति—क्रि० (लगता है)–सं० लगति>अव० लग्गइ।

लगदी—स्त्री० (पोतड़ा, एक बिछौना, कथरी)–देशज।

लगन[1]—पुं० (विवाह के लिए स्थिर किया हुआ कोई शुभ मुहूर्त) – सं० लग्नम्।

लगन[2]—पुं० (ताँबे, पीतल आदि की थाली, जिसमें रखकर मोमबत्ती जलायी जाती है, पीतल का दीवट) – फ़ा० लगन।–पत्री, स्त्री० (विवाह-समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है)–सं० लग्न-पत्रिका>प्रा० लग्ग+पत्तिआ।

लगना[1]— क्रि० (संग करना, संबंध करना)–सं० लगयति, (सं०√लग्)> पा० लग्गति>प्रा० लग्गइ>अप० लग्गड >अव० लग्गइ > हिं० लग+ना।–पुं० (संग, संबंध)–सं० लगन > पा० लग्गन>प्रा० लग्गण > हिं० लगना। तुल० कु० लागणो, ओ० लागिबा, म० लाग (णें), पं० लगणा, कश्मी० लगुन, सिं० लगणु।

लगना[2]—क्रि० (दो पदार्थों का तल आपस में मिलना) – सं० लगति (√लगे-सङ्गे)>पा० लग्गति > हिं० लगना।–पुं०–सं० लग्न>लग्ग>हिं० लग+ना।

लगाना—क्रि० (एक वस्तु के तल से दूसरी वस्तु का तल मिलाना)–सं० लागयति>सं० लागय्>प्रा० लाय> हिं०लगाना। तुल० मु० लागाओ (to join, to attach)।

लगाम—स्त्री० (गोड़े के मुँह में लगाया जाने वाला वह ढाँचा जिसके दोनों ओर (घोड़े को चलाने के लिए) रस्से या चमड़े के तस्मे बँधे रहते हैं) – फ़ा० लगाम।

लगुन—पुं० (विवाह के सिलसिले में एक रस्म)–सं० लग्न>प्रा० लग्गूण> हिं० लगुन।

लगूल—स्त्री० (पूछ, दुम)–सं० पा० लङ्गूल (प० च०)>लगूल।

लग्गा—पुं० (लंबा बाँस)–सं० लगण्ड> प्रा० लगंड (वक्र काष्ठ)।

लघु—वि० (छोटा)–सं० लघु > प्रा० लहु > अप० लहु (प० च०), लहुवय (प०च०)।–दंती–स्त्री० (छोटी दंती)–सं० लघुदन्तिन् (दंतिन्=हाथी)।

लचकना—क्रि० (१- मार पड़ने पर बीच से दबना या झुकना, लचना, २- कोमलता आदि के कारण या हाव-भाव के समय स्त्रियों की कमर या दूसरे अंग झुकना)–सं० लज्जते [(ओ) लस्जी व्रीडायाम्]>हिं० लचकना। तुल० पं० लचकणा, गु० लचकवूँ।

लचारी—स्त्री० (१- भेंट, नजर, २- एक प्रकार का देहाती गीत)–देशज।

लच्छ★ — पुं० (१- बहाना, २- निशाना, लक्ष्य) – सं० लक्ष्य > प्रा० लक्ख।

लच्छन (पद०)—पुं० (शुभ-अशुभ की सूचना देने वाले अंग-स्थित चिह्न,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वभाव, आसार)–सं० लक्षण > प्रा० लक्खण।

लजना—क्रि० (लजाना)–सं० लज्, सं० लज़ते, [(ओ) लस्जी व्रीडायाम्] > पा० लज्जति > प्रा० लज्ज > अप० लज्ज, लज्जिज्जइ > हिं० लजना। तुल० सिं० लजणुं, गु० लाजवूं।

लजालु — वि० (लज्जाशील) – सं० लज्जालु, पा० लज्जी, प्रा० लज्जालु > हिं० लजालु।

लजालू — पुं० (एक काँटेदार पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सुकड़ कर बंद हो जाती हैं और फिर थोड़ी देर में धीरे-धीरे फैलती हैं)–सं० लज्जालु।

लजीला — वि० (लज्जालु) – सं० लज्जाशील।

लजै—क्रि० (लज्जित होती है)–सं० लज्जते > लज्जए > अव० लज्जाइअ (की०) > लजै।

लजौहाँ — वि० (लज्जाशील) – सं० लज्जावह (सं० लज्जा + आवह)।

लज्जत—स्त्री० (आनन्द, खाने-पीने की वस्तुओं का स्वाद, जायका) – अ० लज़्ज़त।

लज्जा—स्त्री० (१- लाज, शर्म, २- मान-मर्यादा)–सं० लज्जा (√लज्ज् + अ–टाप्), पा० लज्जन, प्रा० लज्जा > अव० लज्ज, लज्जा (की०)।

लज्जित—वि० (शरमिन्दा हुआ, लजवाया हुआ) – सं० लज्ज़ित > प्रा० लज्जिअ।

लट—स्त्री० (सिर के बाल का समूह जो नीचे तक लटके, केशपाश)–सं० लट्वा।

लटकना—क्रि० (टँगना, किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना)–(√लबि to hang) > पा० लम्बति > लम्मत > लंत > लत्त > लट > हिं० लटकना, ब्र० लटकत, लटकायौ। तुल० पं० लटकणा, सिं० लडिकाइणु, म० लोंबणें, गु० लटकवुं।

लटपट—स्त्री० (कुछ साधारण और प्रारम्भिक, पर अनुचित उद्देश्य से किया जाने वाला सम्बन्ध)–सं० लट् (लड़कों की तरह काम करना) + पतत् (√पत्) = गिरता हुआ। तुल० ओ० लट्पट, म० लटपट।

लटा (पद०) — वि० (लुच्चा, लंपट, बुरा)–सं० लट्ट (दुष्ट, बदमाश)।

लट्ठ—पुं० (बड़ी लाठी)–सं० यष्टि > पा० प्रा० लट्ठि > हिं० लट्ठ।–**बाज**–वि० (लाठी चलाने या उससे लड़ने वाला)–सं० यष्टि + फ़ा० बाज।

लट्ठी—स्त्री० (लाठी)–सं० यष्टिक > प्रा० लट्ठिआ > अप० लट्ठि (प० च०) लट्ठी > हिं० लठी।

लठैत—पुं० (लाठी चलाने वाला)–सं० यष्टि > पा० प्रा० लट्ठि > हिं० लठ + ऐत (प्र०)।

लड़का—पुं० (थोड़ी अवस्था का मनुष्य, पुत्र, बेटा) – (१) सं० लट् (बालक बनना, बालकों की तरह व्यवहार करना) > लड > लड़ + का। (२) ललक > लड़क > लड़का + आ (विभक्ति)।[१८] (३) सं० लाल + क। तुल० रूसी मालचिक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लड़कैयाँ—प्रा० प्र०, स्त्री० (लड़कपन, बाल्यावस्था)–सं० लट्>लड>लड़+का+ऐंया।

लड़ना—क्रि० (१- एक दूसरे को चोट या हानि पहुँचाना, भिड़ना, २- झगड़ा या तकरार करना)–सं० लडयति (तंग करना), सं० लाडयति (सताना), √लड्, >हिं० लड़+ना। तुल० पं० लड़ना, म० लढणें, गु० लढवुं, ओ० लढिवा।

लड़बावला—प्रा० प्र०, वि० (मूर्ख, बेवकूफ)–सं० लट्+वातुल।

लड्ड—पुं० (धूर्त, बदमाश, दुष्ट)–सं० लटकः (लट्+क्वुन्)।

लड्डू—पुं० (गोल बनी हुई मिठाई, मोदक)–सं० लड्डुक>प्रा० लड्डुअ>अप० लड्डु (प०च०), लेडुअ (दे० ना० मा०)>लड्डुय>हिं० लड्डू। तुल० म० पं० लड्डू, सिं० लडू, कश्मी० लोडु।

लत—स्त्री० (बुरी आदत)–सं० लिप्ता >प्रा० लित्ता>हिं० लत।

लता—स्त्री० (बेल)–सं० लता (लत्+अच्+टाप्)>पा० हिं० लता।

लता-पता—पुं० (१- पेड़-पत्ते, २- जड़ी-बूटी)–सं० लतापत्र।

लतीफा — पुं० (चुटकुला) – अ० लतीफ़ः।

लत्ता — पुं० (फटा-पुराना कपड़ा, चीथड़ा)–सं० लक्तकः>प्रा० लत्तओ> हिं० लत्ता।

लदाई, लादत—क्रि० (लादना, किसी पर प्राप्त वस्तुओं को रखना)–सं० लाति >लादि>लाद, लदाई, लादत।

लद्धना★—क्रि० (प्राप्त करना)–सं० लभ्यते (√लभष् प्राप्तौ)।

लपझप — स्त्री० (चंचलता, तीव्रता, सुकुमारता)–वि० (चंचल, अधीर)–सं० लम्फ+झम्पः।

लपन—पुं० (१- मुख, २- भाषण, ३- बोलने या कहने का भाव)–वै० सं० लप्, सं० लपन (वार्तालाप)।

लपलपाना — क्रि० (१- किसी लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर झुकना, २- किसी वस्तु के अंदर से बार-बार निकलना, जैसे—साँप की जीभ लप-लपाती है, ३- चखने की इच्छा करना, ४- छुरी, तलवार का चमकना, ५- लपलप–बिना प्रयोजन बकवाद करना)–सं० लप्, लपति, पा० लपति, अनु० लपलप।

लपसी—स्त्री० (एक खाद्य पदार्थ)–सं० लप्सिका।

लपेटना—क्रि० (घुमाते हुए चारों ओर लगाना)–सं० लिम्पति (सं० लिप्)> लिप्पति>लिप्पत>लिपट, लपट>हिं० लपेट+ना, ब्र० लपटाई, लपटात, लपेटत। तुल० पं० लपेटणा, गु० लपेटवूं, म० लपेटणें।

लफंगा—वि० (१- लंपट, २- लुच्चा, बदमाश)–फ़ा० लफ़ंग।

लफटंट—पुं० (सेना का एक छोटा अफसर)–अं० लेफ्टिनेंट।

लफ्ज—पुं० (शब्द)–अ० लफ़्ज़।

लब—पुं० (ओष्ठ, होंठ)–फ़ा० लब।

लबरेज—वि० (ऊपर तक भरा हुआ)–फ़ा० लबरेज़।

लबादा—पुं० ('चोंगा', एक पहनावा)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फ़ा० लबादः (जाड़ों में पहनने का रुईदार चुग़ा)।

लबार—वि० (झूठ बोलने वाला)–सं० लपितृ>प्रा० लविर (पाइअ०)>हिं० लवार।

लबालब—वि० (१- ऊपर या किनारे तक भरा हुआ, २- छलकता हुआ)–फ़ा० लबालब।

लभना — क्रि० (प्राप्त करना)–सं० लभते>पा० लभति>प्रा० लंभ, लभ >हिं० लभ+ना।

लभनी—स्त्री० (वह हाँड़ी जो ताड़ के पेड़ में उससे ताड़ी निकालने के लिए बाँधी जाती है)–सं० लभनम्।

लमटंगा—वि० (जिसकी टाँग लंबी हों)–सं० लम्ब+टङ्गा।

लम्बा—वि० (जिसके दोनों छोर एक दूसरे से बहुत अधिक दूरी पर हों)–सं० लम्ब+क>हिं० लम्बा>ह० लाम्बा।

लय[1]—स्त्री० (१- गाने का स्वर, २- गीत गाने की तर्ज, धुन)–सं० प्रा० लय।

लय[2]—पुं० (एकाग्रता, लीनता)–सं० लय।

लरकना — क्रि० (१- लटकना, २- झुकना, ३- खिसकना, (३) खिसककर नीचे आना)–सं० लडति>लडत>लरत ब्र० लर+क+ना, लरकत, लरखत (बच्चों की तरह, क्रीड़ा करना में अर्थ 'लड़खडाना' अर्थ का समावेश)।

ललक्—स्त्री० (प्रबल इच्छा या चाह)–सं० लालसा।

ललकना—क्रि० (लालस करना इच्छा या कामना करना)–सं० ललति>हिं० ललक, ललकना।

ललकार—स्त्री० (प्रतियोगिता या युद्ध आदि के लिए किसी को आमन्त्रित करना)–प्रा० लल्लक > अप० लल्लक्क (प० च०)>हिं० ललकार। तुल० पं० ललकारणा, म० ललकार (णें), गु० ललकारवूं।

ललना—स्त्री० (स्त्री, महिला)–सं० ललना>प्रा० ललणा।

ललसा[3]—ज० प्र०, पुं० (एक साँप)–सं० तिलित्स।

ललाट—पुं० (माथा, भाल, मस्तक)–वै० सं० ललाट (√नट् या √लल् = मस्तक, भालपट्ट), सं० ललाट (लल√ अट् + अण्) > प्रा० णिलाउ, राज० निलाउ, हिं० लल्लाट्★। तुल० रुसी लोव।

ललाम — वि० (रमणीय, मनोहर, प्रिय)–सं० ललाम (लड्+क्विप्, डस्य लत्वम्, तम् अमति-अम्+अण्)।

ललामी — स्त्री० (१- सुन्दरता, २- लाली)–सं० ललाम>हिं० ललाम+ई (प्र०)।

ललितई—पुं० हिं०, **ललिताई**★—स्त्री० (१- लावण्य, सौन्दर्य, २- प्रीति विषयक हाव-भाव) – सं० लालित्यम् (ललित+ष्यञ्)> हिं० ललित+ई० (प्र०), ललितइ; ललित+आई (प्र०), ललिताई।

लल्ला—पुं० (१- लड़के या बेटे के लिए प्यार का शब्द, २- दुलारा लड़का)–सं० लल, (सं०√लल्+अच्)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

=अभिलाषी (वि०)।

लल्लो-चप्पो — स्त्री० (चिकनी चुपड़ी बात जो केवल किसी को प्रसन्न करने के लिए कही जाए)–सं० लल् (आमोद प्रमोद करना)+अनु० चप, प्रा० लल्लि (खुशामद)।

लल्लोपत्तो—स्त्री० (चापलूसी)–देशज।

लवंग—पुं० [लौंग (मसाला)]–सं० लवङ्ग>पा० प्रा० लवङ्ग>हिं० लवंग।

लव—पुं० (समय का सूक्ष्म भाग, एक निमेष का छटा भाग) – सं० लवः (ल्+अप्)।

लवना—क्रि० (लुनना, खेत की फसल काटना)–सं० लूञ् (छेदने), सं० लावय् >पा० लवन>प्रा० अप० लाय, लव >अव० लावओ>हिं० लवना।

लवनी—स्त्री० (अनाज की पकी फसल काटने की क्रिया, लुनाई)–सं० लवन (√लूञ्–छेदने)।

लवलीन — वि० (निमग्न, लीन, आसक्त)–सं० लयः+लीन।

लवा[1] (पद०)— पुं० (भुने हुए धान, ज्वार आदि की खील)–सं० लाज (धान का लावा, खील)।

लवा[2]—पुं० (तीतर की जाति का एक पक्षी)–सं० लाव।

लवाई — वि० (हाल की ब्याही हुई गाय)–देशज।

लवाजमा—पुं० (१- आवश्यक सामग्री, २- बड़े आदमियों के साथ रहने वाले लोग और साज-समान)–अ० लवज़िम (किसी कार्य अथवा उद्योग से संबन्धित वस्तुएँ)।

लशकर—पुं० (१- सेना, २- सेना का पड़ाव, ३- जहाज में काम करने वालों का दल)–फ़ा० लश्कर।

लशकरी—वि० (१- सेना संबंधी, २- खलासी, जहाज पर काम करने वाला)–फ़ा० लश्करी।

लसत—क्रि० (शोभित होता है)–सं० लसति>ब्र० लसत।

लसति — क्रि० (विराजती है)–सं० लसति>प्रा० लसइ>ब्र० लसति।

लसना—क्रि० (सुशोभित होना)–सं० लस्>प्रा० लस (चमकना), लसइ> लसना।–पुं० सं० लसनम्।

लहँगा—पुं० (स्त्रियों के पहनने का एक अधो वस्त्र)–देशज।

लहँडा — पुं० (लेहँड़ा, समूह, झुँड विशेषतः पशुओं के लिए)–देशज।

लहकौरि—स्त्री० (विवाह में वर-वधू से सम्बन्धित एक रस्म, जिसमें वर के लिए जनवासे में थोड़ा भोजन (कुछ ग्रास लेने के लिए) भेजा जाता है)–सं० लघुकवलि>लघुकवलिका > लघु-कवलिआ > लहुकवली>लहुकवरी > लहुकउरि>लहकौरि। टि०—ब्रज की लोकोक्ति–'ब्याह के आगम मालुम होइगै लहकौरि मैं आए भटा' (बैंगन)।

लहजा—पुं० (बात करने का ढंग, स्वर)–अ० लह्जः।

लहना—क्रि० (प्राप्त करना, पाना)–सं० लभ्>प्रा० लह>लहइ>अप० लहहि, लहहुँ>अव० लहइ>हिं० लह+ना। पुं०–(किसी को दिया हुआ धन जो वसूल करना हो, उधार दिया हुआ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रुपया-पैसा)–सं० लभन>प्रा० लहन।

लहमा—पुं० (निमेष, पल, अत्यन्त अल्पकाल)–अ० लहमह्।

लहर—स्त्री० (तरङ्ग)–सं० प्रा० लहरि हिं० लहर। तुल० सिं० लहरि, म० लहर, पं० लहीर।

लहरी—प्रा० प्र०, वि० (मनमौजी)–सं० प्रा० लहरि>हिं० लहर + ई (प्र०)।

लहरीला—वि० (लहरदार)–सं० प्रा० लहरि>हिं० लहर+ईला (प्र०)।

लहली—स्त्री० (वह दलदल जो किसी जलाशय के सूख जाने पर हो जाता है)–देशज।

लहसन—पुं० (एक तरह का क़ंद)–सं० लशुनस, लशूनम्>पा० लसुण> प्रा० लसुण, ल्हसुण>अप० ल्हसुन> हिं० लहसुन, लसुन, लहसन। तुल० म० लसूण, गु० लसण, बं० रसुन।

लहिअउ (की०)—क्रि० (प्राप्त करना, पाना)–सं० लभ्>प्रा० लह > अव० लहिअउ।

लहु—वि० (छोटा, अल्प, थोड़ा)–सं० लघु>प्रा० लहु।

लहुरा—प्रा० प्र०, वि० (अवस्था, पद आदि के हिसाब से छोटा)–सं० लघुतर >प्रा० लहुअर>हिं० लहुरा।

लहू—पुं० (रक्त, लोहू, रुधिर)–सं० लोह।

लांछन—पुं० (१- चिह्न, निशान, २- दाग, धब्जा, ३- दोष)–सं० लाञ्छन, पा० लञ्छन (चिह्न, निशान)>प्रा० लंछण>हिं० लांछन।

लाँघ★—स्त्री० (बाधा, रुकावट)–सं० पा० लङ्घन > प्रा० लंघण > हिं० लाँघ।

लाँच—स्त्री० (रिश्वत, घूस)–सं० लञ्चा>पा० लञ्च>प्रा० लंचा > हिं० लाँच।

लाँडा—वि० (पूँछ कटा हुआ)–सं० लण्ड+क>हिं० लाँडा।

लाख[1]—वि० (सौ हजार)–सं० लक्ष >प्रा० लक्ख > अव० लष, लष्ख, लख्ख>हिं० लाख। तुल० पं० उर्दू म० गु० अस० लाख, सिं० लखु, क० ते० बं० ओ० लक्ष।

लाख[2]—स्त्री० (एक प्रकार का प्रसिद्ध पदार्थ जो पलास, पीपल आदि अनेक वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों द्वारा बनता है)–सं० लाक्षा>पा०लाखा (मुहर लगाने की लाख)>प्रा० लक्खा > हिं० लाख। तुल० पं० सिं० गु० म० लाख।

लाखा (पद०)—पुं० (लाख, लाख का बना रंग जिसे स्त्रियाँ अधरों पर लगाती हैं)–सं० लाक्षा।

लाग—स्त्री० (१- संपर्क, लगाव, २- प्रेम, ३- लगन, ४- वह स्वाँग जिसमें कोई ऐन्द्र-जालिक कौशल हो)–सं० लग्न √पा० प्रा० लग्ग>हिं० लाग।

लागना—क्रि० (लगना)–सं० लग् > पा० प्रा० लग्ग>हिं० लाग+ना। तुल० गु० लागवूँ, सिं० लगणु, कु० लागणो।

लागू[1]—वि० (लगने वाला, चिपटू, पूरी लगन के साथ काम करने वाला)–सं० लग्नं>लग्गु>लागु, लागू।

लागू[2]—पुं० (प्रेमी)–सं० लग्नक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाघव—पुं० (लघु होने का भाव)–सं० लाघवम् > प्रा० लाहअं।

लाचार—वि० (जिसका कुछ वश न चले)–फ़ा० लाचार। तुल०मु० लाचार।

लाचारी — स्त्री० (विवशता) – फ़ा० लाचारी।

लाछी (पद०)—स्त्री० (लक्ष्मी)–सं० लक्ष्मी > प्रा० लच्छी > लाछी।

लाज—स्त्री० (शर्म, हया)–सं० लज्जा > पा० प्रा० लज्जा, अप० लज्ज > हिं० लाज। तुल० ओ० म० लाज, सिं० लज, गु० लाज्, कु० लाज।

लाजवंत —वि० (लज्जाशील) – सं० लज्जावत्।

लाजवाब— वि० (१- जो जवाब न दे सके, अद्वितीय, बेमिसाल)–अ० लाजवाब।

लाजिम(ी) — वि० (आवश्यक, २- अनिवार्य, ३- उचित, मुनासिब)–अ० लाज़िमी।

१- लाट—पुं० (एक अंग्रेज़ी उपाधि)–अं० लॉर्ड।

२- लाट(१)—स्त्री० (मोटा ऊँचा खंभा)–सं० यष्टि > पा० प्रा० लट्ठि > हिं० लाट।

३- लाट—पुं० (गुजरात के एक भाग का प्राचीन नाम और उसके निवासी)–सं० लाट।

लाटा—पुं० (१- भुने हुए महुओं और तिलों को कूटकर बनाए हुए लड्डू, २- भुना हुआ महुआ)–देशज।

लाठी—स्त्री० (लाठी, छड़ी) – सं० यष्टि > पा० लट्ठि > प्रा० लट्ठि > हिं० लाठी।

तुल० उर्दू लाठी, कश्मी० ला'ठय, म० लाठी गु० लाकडी, बं० अस० ओ० लाठि।

लाड (ड़)—पुं० (दुलार, बच्चों के साथ किया जाने वाला प्रेमपूर्ण व्यवहार) – सं० लाडनम् (√ लाड् = थपथपाना, थपकी देना) > पा० लालन > प्रा० लड्डिय (पाइअ०) > हिं० लाड (ड़)। तुल० कु० लाड्, पं० लाड।

लाड़ला—वि० (प्यारा, दुलारा)–सं० √ लाड् (थपथपाना, थपकी देना) > हिं० लाड़ + ला (प्र०)।

लाढ़िया—पुं० (वह दलाल जो दूकानदार से मिला रहता है और ग्राहकों को धोखा देकर उसका माल बिकवाता है)–देशज।

लात—स्त्री० (पैर के नीचे का भाग, पाँव, पदाघात)–फ़ा० लत। प्रा० लत्ता, लत्तिआ > हिं० लात, पं० लत्त।

लादना — क्रि० (भार भरना, बोझ डालना)–प्रा० लद्द > हिं० लाद + ना। पुं० (भारक्षेप) – प्रा० लद्दण > हिं० लादना। तुल०मु० लादि (to load)।

लानत—स्त्री० (धिक्कार, फटकार)–ला'नत।

लाना—क्रि० (कोइ चीज उठाकर या अपने साथ लेकर आना)–सं० लाति (√ला आदाने) > अव० लावइ, लावउँ (ले जाऊँ, की०) तुल० पं० लिआणा, गु० लाववुं।

लापरवाह—वि० (असावधान, बेफ़िक्र)–अ० ला + फ़ा० परवाह।

लाभ—पुं० (प्राप्ति, लब्धि)–सं० लाभ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(√लभ्+घञ्), पा० लाभ।

लामय—पुं० (एक प्रकार की घास जो प्रायः उसर भूमि में होती है)–देशज।

लामा—पुं० (तिब्बत के बौद्धों का धर्म्माचार्य) – तिब्बती भाषा ब्लामा (वैरागी या संसार त्यागी साधु) > लामा।

लामी—पुं० (एक प्रकार का फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है)–देशज।

लामे (की०)—पुं० (क्षण भर)–अ० लहमा।

लायक—वि० (१- उचित, २- मुनासिब, ३- सुयोग्य, ४- समर्थ)–अ० लायक।

लार — स्त्री० (मुँह की लार)–सं० लाला > पा० प्रा० लाला > हिं० लार।

लाल[1]—पुं० (पतला थूक जो प्रायः बच्चों और वृद्धों के मुँह से अहा करता है, लाला, लार)–सं० लाला (√लल्+णिच्+अच्–टाप)।

लाल[2]—पुं० (१- बेटा, पुत्र, २- प्यारा लड़का या मनुष्य, ३- किसी प्रिय व्यक्ति के लिए सम्बोधन)–सं० लालक।

लाल[3]—पु० हिं०, प्रा० प्र०, स्त्री० (लालसा, इच्छा, चाह)–सं० लालसा।

लाल[4]—पुं० (मानिका) या माणिक्य नाम का रत्न)–फ़ा० ला'ल।

लाल[5]—वि० (रक्त वर्ण, सुर्ख)–फ़ा० लाल।

लालच—पुं० (लोभ)–सं० लालसः। तुल० मु० लालचा (लालची)।

लालटेन — स्त्री० (प्रकाश का वह आधार जिसमें तेल और बत्ती रहती है और जिसके चारों ओर गोल शीशा लगा रहता है)–अं० लैन्टर्न। तुल० पं० उर्दू लालटेन, कश्मी० लाल्टीन्, सिं० लाल्टीनु, अस० लेण्टेन।

लालन—स्त्री० (चिरोंजी, पियाल)–देशज।

लालना★—क्रि० (दुलार या लाड करना) – सं० लालय् > प्रा० लाल, लालंति > हिं० लालना।

लालसा—स्त्री० (अभिलाषा, उत्सुकता, लिप्सा)–सं० लालसा (√लस्+यङ्+अ–टाप्), पा० लालसा (बलवती इच्छा)।

लाला — पुं० (१- एक प्रकार का आदरसूचक संबोधन, महाशय, २- बच्चों के लिए संबोधन)–सं० लाल+क > लालअ > लाला।

लालित्य—पुं० (सरसतापूर्ण सुन्दरता)–सं० लालित्य (ललित+ष्यञ्)।

लाली—स्त्री० (लाल होने का भाव, अरुणता, लालपन) – फ़ा० ला'ल+ई० (प्र०)।

लाले—वि० (कमी, अभाव) – फ़ा० ला'ले (एक रत्न, पद्म राग, एक बहुमूल्य रत्न जो दुर्लभता से प्राप्त होता हैं।) बदख्शाँ (अफ़गानिस्तान) में पैदा होने वाला रत्न, पदमराग 'ला'ले बदख्शानी' कहा जाता है।

लाव—स्त्री० (रस्सा, रस्सी)–देशज।

लावक—पुं० (१- चावल की जाड़े की फ़सल, २- चरसा, ३- मोट खींचने में बैलों के एक बार आने और जाने का समय)–देशज।

लावण्य — पुं० (अत्यन्त सुंदरता,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोनाई, शरीर-कान्ति)–सं० लावण्य> प्रा० लोण्ण।

लावा—पुं० (काटने वाला, वह श्रमिक जो फसल काटने के लिए रखा जाता है)–सं० लावक>लावअ>लावा।

लावा[2]—पुं० (लवा नामक एक पक्षी)–सं० लावक>हिं० लावा। तुल० पं० लवा।

लावा[3]—पुं (राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो प्रायः ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से विस्फोट होने पर निकलता है)–अं० (lava)।

लाश — स्त्री० (शव, मृतकदेह)–तु० लाश, फ़ा० लाशः (पुं०)।

लास—पुं० (स्त्रियों का कोमल भावमय नृत्य, रास, क्रीड़ा)–सं० पा० लास।

लासी—स्त्री० (जूँ की तरह का एक प्रकार का काला कीड़ा जो गेहूँ के पेड़ों में लगकर उन्हें निकम्मा बना देता है)–देशज।

लाह[1] (पद०)—पुं (लाभ)–सं० प्रा० लाभ, प्रा० लाह।

लाह[2] — पुं० (चमक, आभा, काँति दीप्ति)–देशज।

लाहल—वि० (जो हल न हो सके)–अ० लाहल (ल्ल)।

लिंग—पुं० (१- चिह्न, लक्षण, २- पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिव की इस आकार की मूर्ति, ४- प्राणियों के शरीर में होने वाले स्त्री या पुरुष के चिह्नों के आधार पर किया जाने वाला स्त्री जाति एवं पुरुष-जाति का विभाग)–सं०लिङ्ग, पा० लिङ्ग (चिह्न, निशान)>प्रा० हिं० लिंग।

लिए—कारक चिह्न (संप्रदान परसर्ग)–सं० लग्ने>(सं० लग्न=चिपकना)> लग्गे। अवधी लगि, लाग।

लिखना—क्रि० (१- लिपि-बद्ध करना, २- चित्रित या अंकित करना, ३- ग्रन्थ लेख, काव्य, आदि की रचना करना)–सं० लिखति, स० √ लिख् (अक्षर विन्यासे)>पा० लिखति > प्रा० लिह >हिं० लिख+ना, ब्र० लिखति, लिखवाई (लिखवाता हैं)। तुल०कु० लेखणो, सिं० लिखणु, गु० लिखवूँ, लखवुं। पुं०–सं० लेखन।

लिखनी (पद०)—स्त्री० (१- लेखनी, २- भाग्य लिपि, प्रारब्ध, ३- लिखने की क्रिया)–सं० लेखनी>प्रा० लेहणी > हिं० लिखनी (प्रा० प्र०)।

लिडार—वि० (कायर)–देशज।

लिडौरी—स्त्री० (अनाज के वे दाने जो पीटने के पीछे वाल में लगे रह जाते हैं)–देशज।

लित्ती—स्त्री० (लम्बी दराँती, घास काटने का एक औजार)–सं० लवित्रिका >लवित्तिआ>लइत्ती>लित्ती।

लिपटना—क्रि० (एक वस्तु को घेर कर उससे खूब सट जाना, किसी वस्तु से दृढ़तापूर्वक जा लगना) – सं० लिप्, लिप्यते।

लिपड़ा—पुं० (लुगड़ा, कपड़ा)–देशज।

लिपना—क्रि० (कच्चे मकान की धरती गोबर से पोतना)–सं० लिप्यते>पा० लिम्पति > प्रा० लिप्प (इ)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिं० लिपना, ब्र० लीपि ।

लिपि — स्त्री० (अक्षर लिखने की प्रणाली)–सं० लिपि, लिपी, पा० लिपि ।

लिप्त—वि० (संयुक्त, जुड़ा हुआ, २- फँसा हुआ, व्यसनादि में डूबा हुआ)–सं० लिप्त ।

लिफाफा—पुं० (कागज का वह चौकोर घर या पुट जिसके अन्दर चिट्ठियाँ आदि रखी जाती हैं)–अ० लिफाफ़ः ।

लिबड़ी-बरताना[२१]—पुं० (साधारण या तुच्छ गृहस्थी अथवा निर्वाह का सब सामान, सारी सामग्री या असबाव)–अं० लिवरी=वर्दी, अं० बैटन=सिपाहियों का डंडा ।

लिबास—पुं० (पहनने के कपड़े)–अ० लिबास ।

लियाकत — स्त्री० (योग्यता) – अ० लियाक़त ।

लिलाट (र) — पुं० (भाल, माथा, मस्तक)–सं० ललाट > लिरार > हिं० लिलाट, लिलार, छ० लिलाल ।

लिलाही—पुं० (हाथ का बटा हुआ देशी सूत)–देशज ।

लिहाज—पुं० (व्यवहार या बरताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्ण ध्यान, मुलाहजा, २- शील-सकोच, ३- शर्म)–अ० लिहाज़ ।

लिहाजा — अव्य० (इसलिए) – अ० लिहाज़ा ।

लिहाड़ा—वि० (१- नीच, २- खराब, निकम्मा)–देशज ।

लिहाड़ी—स्त्री० (उपहास, विडंबना, निंदा)–देशज ।

लीक—स्त्री० (लकीर, रेखा)–सं० लिख् > प्रा० लिह > अप० लीह (प० च०) > हिं० लीक ।

लींडरी — स्त्री० (मल) – वै० सं० लेण्डिका (अज-लेण्डिका-round lump of dunk) ।

लीका (पद०)—स्त्री० (छाप, चिह्न, पहिए से बनी लकीर, पगडंडी, लोक-परंपरा)–सं० लिख > प्रा० लिह > अप० लीह > हिं० लीक, लीका ।

लीख—स्त्री० (जूं का अंडा)–सं० लिक्षा > प्रा० लिक्खा > हिं० लीख । तुल० ह० ल्हीख्, बं० लिक्का, कु० लिखो, पं० लीस ।

लीचड़—वि० (१- निकम्मा, सुस्त, २- चिपटने वाला)–देशज ।

लीद—स्त्री० (घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल)–प्रा० लद्दी (हाथी आदि की विष्ठा) > हिं० म० गु० लीद । तुल० सिं० लिदी, कु० लिदो ।

लीपना—क्रि० (गीली वस्तु का पतला लेप चढ़ाना)–सं० लिम्पति (वै० सं० √ लिप्) > प्रा० लिंप, लिंपइ > हिं० लीप + ना ।–पुं०–सं० लेपन > प्रा० लिंपण । तुल० पं० लिपणा, कश्मी० लिवुन्, म० लिंपणे, गु० लिंपवुं, बं० लेपा, अस० लेप, ओ० लिपिबा ।

लीमू—पुं० (नीबू)–फ़ा० लेमूँ ।

लील (पद०)—पुं० (नीले रंग का अश्व)–वि० (नीले रंग का) – सं० नील ।

लीला[1]—वि० (नीला रंग)–सं० नीलक > प्रा० णीलअ > लीला ।

लीला[2]—स्त्री० (केवल मनोरंजन के

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिए किया जाने वाला काम या व्यापार)–सं० लीला।

लीहा (पद०)—क्रि० (चाटना, चटकारना)–सं√लिह् >प्रा० अप० लिह।

लुँगा—पुं० (पंजाब में धान रोपने की एक रीति)–देशज।

लुंगी[1]—स्त्री० (कमर में लपेटने का एक प्रकार का बड़ा अँगोछा, तहमत)–सं० लिङ्गपटी>प्रा० लिंगअडी>लुंगअइ>लुंगी।

लुंगी[2]—स्त्री० (एक बड़ी चिड़िया जो तालों के किनारे पाई जाती हैं)–देशज।

लुंचना — क्रि० (नोचना)–सं० पा० लुञ्चति>प्रा० लुंचइ>हिं० लुंचना। तुल० म० लुंचणें, कु० लुच्णो।–पुं० (नोचना)–सं० लुञ्चन>अप० लुंचण।

लुंचित—वि० (उखाड़ा हुआ, नोचा हुआ, उत्पाटित)–सं० लुञ्चित>प्रा० प्रा० लुंचिअ।

लुंज—वि० (लंगड़ा)–सं० लुञ्जित।

लुंटाक—पुं० (चोर, तस्कर, लुटेरा)–लुण्टाक>प्रा० हिं० लुंटाक।

लुंठक—पुं० (चोर, लुटेरा)–सं० लुण्ठक >प्रा० लुंठग>हिं० लुंठक।

लुंठि—स्त्री० (चोरी, लूटपाट)–सं० लुण्ठि, लुण्ठी>प्रा० हिं० लुंठि।

लुंडमुड—वि० (१- जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों, २- बिना हाथ-पैर का)–सं० रुण्ड+मुण्ड।

लुंडी[2]—स्त्री० (विवेकपूर्ण व्यवहार, न्यायसारिणी)–सं० लुण्डी (proper behaviour, acting and judging rightly, मो० वि०, पृ० ९०४)।

लुंडी[2]—स्त्री० (लपेटे हुए सूत की पिंडी या गोली)–सं० लुण्डिका (round mass of anything, मो०वि०, पृ० ९०४)।

लुंडी[3]—वि० (जिसकी पूँछ या पर झड़ गए हों)–सं० वण्ड+क (बिना पूँछ का बैल)>वण्डअ>लुंडअ, लुंडा, लुंडी।

लुंबिका — स्त्री० (एक प्रकार का बाजा)–सं० लुम्बिका (लुम्ब्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्)।

लुंबिनी—स्त्री० (कपिलवस्तु के पास का एक वन या उपवन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे)–सं० लुम्बिनी।

लुआब—पुं० (लासा, चिपचिपा गूदा)–अ० लुआब।

लुकना — क्रि० (छिपना)–सं० लीयते (√लीङ् to cover), सं० निली का धात्वादेश लुक्क, लुक्कइ>अप० लुक्क (प० च०), लुक्किअ (हेम० ४,५५)> अव० लुक्किआ (की०)>हिं० लुकना। तुल० कु० लुकणो, पं० लुकणा, सिं० लुकणू।

लुकाठी—स्त्री० (लुकारी जलती हुई लकड़ी, 'लुकाठी' शब्द कबीर द्वारा प्रयुक्त—'कबिरा खड़ा बाजार में लिये लुकाठी हाथ')–सं० ज्वलित काष्ठ> प्रा० जलिअकट्ठ > वलिअकट्ठ > उलिअकट्ठ > लुकट्ठ > लुकाठ > लुकाठी।[२६]

लुकाना[२५] — क्रि० (छिपाना)–सं० लुप्यते>लुज्जए>लुक्कै>लुकै, लुकाए, लुकाने लुकावत।

लुच्चा—वि० (१- नीच और पाजी, २- बदमाश)–सं० लुञ्चक > लुच्चअ >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लुच्चा। तुल० पं० म० लुच्चा, सिं० लुचो, गु० लुच्चूं। मुं० लुचा, तु० लुच।

लुच्चा - लुंगाड़ा[१] — वि० (कुकर्मी, ओछा)–सं० लुंचित नग्नाटक > लुच्चा-लुंगाडा।

लुज्जा—तुं० (समुद्र में वह स्थल जो बहुत गहरा हो)–देशज।

लुटावत[३५]—क्रि० (लुटाते या लूट लेने देते हैं)–सं० लुंटति > लुट्टइ > लूटत > ब्र० लुटावत।

लुटेखा—पुं० (एक प्रकार का पक्षी)–देशज।

लुटेरा—पुं० (दस्यु)–सं० लुण्ठक, सं० लुण्ठाकार > प्रा० लुट्टआर > लुट्टार > लुट्टेर > हिं० लुटेरा। मु० लुटेरा। (मु० इं० डि०, पृ० ११०)।

लुट्टुर—स्त्री० (वह भेड़ जिसके कान छोटे हों)–देशज।

लुढ़कना—क्रि० (लोटना, लेटना)–सं० लुठ् > प्रा० लुढ > अप० लुल (प० च०) अप० अव० लुर (की०) > हिं० लुढ़कना।

लुतरा—पुं० (इधर-उधर की गाने वाला)–देशज।

लुत्फ — पुं० (आनंद, मज़ा)–अ० लुत्फ।

लुनरो—पुं० (एक जाति जिसे लोनिया या नोनिया भी कहते है, यह जाति पहले नमक निकालती थी)–सं० लवण > पा० लोण > प्रा० लूण > लुन + रा (सम्बन्ध वाचक प्र०), लुनरो।

लुनिए, लुनै, लूनना, लूननो — क्रि० (फसल काटना)–सं० लुनाति > लुनाइ > ब्र० लुनै, लुनिए।

लुबाब—पुं० (सार, तत्त्व)–अ० लुबाब।

लुब्धक—वि० (लुब्ध करने वा लुभाने वाला)–सं० लुब्धक > प्रा० लोद्धअ > प्रा० अप० लुद्धअ > अव० लुद्धउ (की०)।

लुब्ध्यो—क्रि० (लालच करना, मोहित होना, लुभाना) – सं० √लुभ् > प्रा० लुब्भ > ब्र० लुब्धौ, लुब्ध्यो लब्धौ।

लुभाइ—क्रि० (लुभाना)–सं० लुभ्यति (सं० लोभय् > प्रा० लोभ) > लुभइ > ब्र० लुभाइ, लुभाईं।

लुभौहाँ—वि० (लुभाने या मोहित करने वाला, सुंदर)–सं० लुब्ध > प्रा० लुद्ध (पाइअ०) > हिं० लुभाना + औहाँ।

लुरना—क्रि० (१- झूलना, २- लटकना, ३- जमीन पर इधर-उधर लोटना)–सं० लुल् > हिं० लुर + ना।–पुं०–सं० लुलन।

लुर्राहि (पद०)—क्रि० (लोटते हैं, हिलते हैं, झुकते हैं, रीझते हैं)–सं० √लुल् (विमर्दने to roll, to move to and fro)।

लूलै (आ० क०)—वि० (बिना हाथ का, लूला, अक्षम)–सं० लून।

लुहंडी—स्त्री० (लोहे का एक पात्र)–सं० लोह-भाण्डिका > प्रा० लोह-डंडिआ > लोह-आंडिआ < लोहांडिआ > लोहांडिया > लुहांडी > लुहंडी।

लुहार — पुं० (लोहार)–सं० प्रा० लोहकार > लोहआर > लोहार > हिं० लुहार।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लूक—स्त्री० (उल्का, टूटा हुआ तारा)–सं० उल्का > लूका > हिं० लूक।

लूकट—पुं० हिं०, पुं० (जलती हुई लकड़ी)–सं० ज्वलित + काष्ठ > प्रा० जलिअ-कट्ठ > वलिअकट्ठ > उलिअ-कट्ठ > लुकट्ठ > हिं० लूकट।

लूट—स्त्री० (लूटना)–सं० लुण्ठनम् > प्रा० लुट्ट > लूट। तुल० मु० लुट।

लूटत[२५]—क्रि० (अन्याय या अनुचित रीति से हरण करता है)–सं० लुंटति > लुट्टइ > ब्र० लूटत।

लूटना—क्रि० (मारपीट कर या छीन झपट कर लेना)–सं० लुण्ठयति (सं० लुण्ठ्) > पा० लुठति > प्रा० लुंट, लुट्ट, लूड > अव० लूलि > हिं० लूटना।–पुं०–सं० लुण्ठनम्। तुल० पं० लुटणा, कश्मी० लुटुन्, सिं० लुटणु, म० लुटणें, गु० लुटवुं, अस० लुट।

लूनिया—वि० (खारा)–सं० लावण।

लूला—वि० (१- जिसका हाथ कट गया हो, बिना हाथ का, लुंजा, २- बेकाम, असमर्थ)–सं० लून(>√लू) > प्रा० लूण, प्रा० लुअ (छेदना, काटना) + अल्ल (प्र०) > हिं० लूला। तुल० गु० लूलँ, सिं० लूलो, पं० लूला।

लूलू—वि० (परम मूर्ख)–सं० लूलुक > हिं० लूलू।

लूसना—क्रि० (मटियामेट करना, नष्ट करना) – सं० लूषयति > सं० लूष् (हिंसायाम्), प्रा० लूस > हिं० लूसना।

लूसि[१]—(पद०) क्रि० (लूटना)–सं० लूषय् > प्रा० लूस।

लूसौं[१] (पद०)—क्रि० (नाश करता था)–सं० लूषति > प्रा० लूसइ।

लेंड—पुं० (बँधा मल, मल की बत्ती जो उत्सर्ग के समय बँध जाती है)–सं० लेण्ड (excrement = मल, मो० वि०, पृ० ९०५) > लेंड़े (गधे, घोड़े आदि की विष्ठा), लेंड़ी (बकरी आदि की विष्ठा)।

लेआ[१]—प्रा० प्र०, पुं० (चूल्हे पर फेरा जाने वाला मिट्टी का पोता)–सं० लेप्यक > लेवअ > लेवा > लेआ।

लेई—स्त्री० (घुला हुआ आटा जो आग पर पकाकर गाढा और लसदार किया गया हो और कागज आदि चिपकाने के काम में आवे, २- किसी चूर्ण का गाढ़ा लसीला पदार्थ)–सं० लेही।

लेकिन– संयो० (परन्तु)–फ़ा० लेकिन, अ० लाकिन।

लेक्चरबाज़ी—स्त्री० (व्याख्यान)–अं० लेक्चर + फ़ा० बाज़ी।

लेख—पुं० (लिखे हुए अक्षर)–सं० प्रा० हिं० लेख।

लेखना — क्रि० (लेखा या हिसाब करना) – सं० लिखति > प्रा० अप० लेख्खइ, अव० लेष्खइ (की०)।

लेखनी—स्त्री० (कलम, लेखनी)–सं० पा० लेखनी > प्रा० लेहणी।

लेखा—पुं० (हिसाब, २- व्यापार)–सं० लेख्य > प्रा० लेक्ख > हिं० लेखा।

लेजिम (पद०)—पुं० (एक प्रकार की कमान, जिसमें डोरी की तरह लोहे की सिकड़ी लगी रहती है और जिसके सहारे कसरत की जाती है)–फ़ा० लेज़म।

लेजु—स्त्री० (रस्सी)–सं० रज्जु > प्रा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लज्जु > हिं० लेजु, लेजुर ।

लेजुरी—स्त्री० (रस्सी)–सं० रज्जुरिका (रज्जु + र + इका) ।

लेटना— क्रि० (पड़ना, पौढ़ना)– सं० लेट्यति (√लेट् to sleep) तुल० पं० लेटणा, सिं० लेटणु । पुं०–सं० लोठन > प्रा० लोलण ।

लेना— क्रि० (प्राप्त करना, ग्रहण करना)–(१) वै० सं० लभ्, लभते, प्रा० लहइ, लेइ > अव० लेलि (की०) > हिं० लेना । (२) सं० ला (आदाने to take to receive) > प्रा० ले > अप० लेविणु > हिं० ले + ना, ब्र० लीनै ।

लेप—पुं० (लीपने, पोतने या चुपड़ने की वस्तु)– सं० लेप्यम् √ लिप् > पा० लेप, प्रा० लेप्प, लेव, स्त्री० लेप्पा (लेपन-क्रिया) > हिं० लेप । तुल० सिं० लेपु ।

लेपना— क्रि० (गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना, लेप लगाना)– सं० लिप् > पा० लेपेति । –पुं० (लेपने की क्रिया)– सं० लेपन ।

लेप्पण— पुं० (लेपनीय वस्तु, उबटन आदि)–सं० पा० लेपन ।

लेरूवा—पुं (गाय का सद्य जात बच्चा, लवारा)–वै० सं० घरुण ।

लेवा—पुं० (१- गिलावा, २- मिट्टी का गिलावा, ३- लेपन)– सं० लेप > पा० लेपो > प्रा० लेव > हिं० म० लेवा । तुल० बं० ओ० लेइ, पं० लेउ ।

लेस (पद०)—वि० (थोड़ा, अल्प)–सं० लेश (अणु, सूक्ष्मता) > प्रा० लेस ।

लेसना[1]— क्रि० (दिया जलाना)–सं० लसति (√लस् = चमकना, दमकना, दमदमाना) लेसा, लेसि (पद०) । —पुं०–सं० लेश्या > प्रा० लेस्सा > लेसा, पछाहीं हिं० लेसना ।

लेसना[2]—क्रि० (१- किसी चीज पर लेस लगाना, पोतना, २- घर की दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना, ३- चिपकाना, सटाना)–सं० √श्लिष् > प्रा० लेस, लेसण > हिं० लेसना ।

लेह—पुं० (१-खाना, आहार, भोजन)– सं० लेह > प्रा० लेह (अवलेहन, चाटन,– पाइअ०), हिं० लेह ।

लेहेन[1] (की०)— पुं० (लेख के अनुसार, भाग्यानुसार)– सं० लेखन > प्रा० लेहन, लेहण > अप० अव० लेहेन ।

लोंदा—पुं० (किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो ढेले की तरह बँधा हो)–सं० लोष्टम् ।

लोई—सं० स्त्री० (कम्बल, ऊन से बुना हुआ कपड़ा)–सं० लोमपटी > प्रा० अप० लोअडी (पाइअ०) > लोअई > हिं० लोई ।

लोक-व्यवहार— पुं० (सामान्य व्यवहार)–सं० लोक-व्यवहार > पा० लोक-वोहार ।

लोखर—पुं० (१- नाई के औजार जैसे छुरा, कैंची आदि, २- लोहारों या बढ़इयों आदि के लोहे के औजार, ३- इन औजारों को रखने की पेटी)–सं० लोह + खण्ड > अप० लोह खण्ड (प० च०) > लोखर ।

लोग— पुं० (जन, मनुष्य)– सं० पा० लोक > प्रा० लोअ > अव० लोअह । तुल० रुसी ल्यूदी ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लागड़—पुं० (लिहाफ़ की पुरानी रुई)—सं० रोमिका > रुई, रुवड़, रोगड़, लोगड़।

लोट— प्रा० प्र०, पुं० ['नोट' (धन-पत्र)] मु० लोट (मु० इं० डि०, पृ० १०८)।

लोटा— पुं० (धातु का एक पात्र जो प्रायः गोल होता है और पानी रखने के काम आता है)—देशज।

लोटना—क्रि० (लोटना)—सं० लोट्यते (√लोट्) > प्रा० लोट्ट, प्रा० लोट्टइ > अप० लोट्टावण (प० च०) > हिं० लोट + ना। —पुं०—सं० लोटनम्। तुल० कु० लोटणो, ओ० लोटिबा, गु० लोटवूँ, म० लोटणें।

लोढ़ना— क्रि० (ओटना, यथा—कपास लोढ़ना)—प्रा० लोढ > हिं० लोढ़ + ना।

लोढ़ा—पुं० (सिल के साथ का पत्थर का वह टुकड़ा जिससे चीजें पीसते हैं)—वै० सं० लोष्ट, सं० लोष्ठ > प्रा० लोट्ठ > लोड्ढ, लोढ > हिं० लोढ़ा।

लोण, लोन—पुं० (लवण, नमक)—सं० लवण > पा० प्रा० लोण > हिं० लोण, पु० हिं० लोन (प्रा० प्र०)। तुल० ओ० लुण, सिं० लूणु, गु० लुण्, सिंह० लुणु, म० लोण।

लोथ, लोथि— स्त्री० (किसी प्राणी का मृत शरीर, लाश, शव) — (१) सं० लोष्ट > प्रा० लोट्ठ > हिं० लोथ। (२) वै० सं० लोध (मृतक शरीर) > हिं० लोथ। (३) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार—'सं० लोत्र > लोत > लोत > लोथ।

लोद— स्त्री० (पीले फूलों वाला एक वृक्ष)—सं० लोध्र।

लोदा—पुं०, प्रा० प्र० (ढेर)—सं० लोष्ट > प्रा० लुट्ठ > हिं० लोदा।

लोन[1] (पद०)— पुं० (सौन्दर्य)— सं० लावण्य > लावण्ण > लाउण्ण > लोन।

लोन[2]—पुं० (नमक)—सं० लवण > पा० लोण > प्रा० लूण > लउण > हिं० लोन।

लोना (पद०)—वि० (सलोना, लावण्य-पूर्ण, सुंदर)—सं० लावणिक (मनोहर)।

लोनि (पद०)—वि० (सुन्दरी, लावण्य-मयी)—सं० लावण्यवती > प्रा० लायण्ण-वई > लऊणअई > लोणई > हिं० लोनी।

लोनी, लौनी—स्त्री० (मक्खन, नैनूँ)—सं० नवनीत > पा० नोनीत > प्रा० णव-णीअ > हिं० लोनी, लौनी (वर्ण-लोप) नैनु, लैनु (स्था० प्र०)। तुल० कु० पं० नउणी, ने० नौनि।

लोप—पुं० (लुप्त होना)—सं० लोपन > पा० लोप > प्रा० लुंपण (विनाश) > हिं० लोप।

लोपना—पुं०हिं०, क्रि० (लुप्त करना)—सं० लूप् > प्रा० लुंपइ > हिं० लोप + ना।

लोबान—पुं० (एक प्रकार का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में आता है)—फ़ा० लोबान।

लोभ—पुं० (लालच)—सं० पा० अव० हिं० लोभ।

लोभा (पद०)—क्रि० (लुब्ध हुआ)—सं० लुभ्यति (√लुभ्), प्रा० लुब्ध (लोभ करना) > लोभा।

लोभी—वि० (लालची)—सं० लोभिन् > प्रा० हिं० लोभी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोम[1]—पुं० (रोवाँ शरीर भर के छोटे-छोटे बाल)–सं० प्रा० हिं० लोम।

लोम[2]—पुं० (लोमड़ी)–सं० लोमश।

लोमड़ी— स्त्री० (गीदड़ की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली छोटा पशु)– सं० लोमशा।

लोयन— पु० हिं०, पुं० (आँख)–सं० पा० लोचन > प्रा० लोअण > अव० लोअन।

लोरी—स्त्री० (एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं)–सं० लोल+इका।

लोल—वि० (१- हिलता हुआ, चंचल, २- बदलता हुआ, ३- उत्सुक)–सं० पा० लोल।

लोलना— पुं० हिं०, क्रि० (हिलना, डोलना)–सं० √ लोड्, पा० लोलेति (हिलाता है), प्रा० लोल (विलोड़न करना) > हिं० लोल+ना। —पुं०– सं० लोलन।

लोलुप—वि० (लालची, परम उत्सुक)– सं० पा० लोलुप > प्रा० लोलुअ।

लोवा—पुं० (खेत काटने वाला)–सं० लावक।

लोहा—पुं० (एक प्रसिद्ध धातु)–वै० सं० पा० प्रा० लोह > हिं० लोहा। तुल० पं० लोहा, सिं० लोहु, गु० लोढुं, ओ० लुहा, बं० अस० लोहा।

लोहार—पुं० (एक जाति जो लोहे का काम करती है)–सं० लोहकार > पा० लोहकार > प्रा० हिं० लोहार। तुल० पं० लुहार, गु० लुहार।

लोहिया—पुं० (१- लोहे की बनी हुई गोली, २- लोहे की चीजों का व्यापार करने वाला)–सं० लौह > प्रा० लोह > हिं० लोह+इया (प्र०)।

लोहू (पद०)— पुं० लोहित, रक्त, रुधिर)–वै० सं० लौह-अ, सं० लोहित।

लौंग— पुं० (एक झाड़ की कली जो तोड़कर सुखा ली जाती है)–सं० पा० लवङ्ग > प्रा० लवंग > लोंग > लौंग।

लौंडा—पुं० (१- छोकरा, बालक, २- खूबसूरत लड़का, ३- शिश्न, लिंग)– देशज।

लौंडी—स्त्री० (दासी, मजदूरनी, मजदूरिन)–देशज।

लौ—स्त्री० (१- दीप शिखा, २- आग की लपट)– सं० लोक > प्रा० लोअ (प्रकाश, पाइअ०) > हिं० लौ।

लौआ (पद०)—पुं० लौकी, घीआ)– सं० लाबु+क।

लौकहि (पद०)—क्रि० (दिखाई पड़ती है)–सं० √लोक्, लोकय् > प्रा० लोअ।

लौकिक—वि० (लोक सम्बन्धी, सांसारिक)–सं० लौकिक > पा० लोकिक > लोकिय > प्रा० लोगिग, लोइअ।

लौकी—स्त्री० (लंबी लौकी)–सं० लाबु > प्रा० अलाउ > लाउ+ की > हिं० लौकी। तुल० बं० लाउ, अस० लाओ, ओ० लाउ।

लौर—पुं० (लाट, स्तम्भ, यष्टि)–सं० लकुट > लउड > लौर।

लौह-शलाका—स्त्री० (लोहे की सलाई)– सं० लौह-शलाका > पा० लौह-सलाका।

ल्यारी (लल्लू, शब्द०)— प्रा० प्र०, पुं (भेड़िया)–देशज।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ल्हिस—क्रि० (चिमटना)–सं० श्लिष्>लिस>ल्हिस ।

ल्हेफ—पुं० (गीली या पानी आदि के साथ मिली हुई वस्तु जिसकी तह किसी वस्तु के ऊपर फैलाकर चढ़ाई जाय)–सं० लेप>हिं० ल्हेफ, ह० ल्हेफ् ।

व

वंक—वि० (टेढ़ा)–सं० वङ्क, सं० वक्रम्>पा० वङ्क>प्रा० वंक ।

वंकटक—पुं० (एक पर्वत, जिसे वंकाटक भी कहा गया है)–सं० वङ्कटक ।

वंकिम—वि० (कुछ टेढ़ा या झुका हुआ)–सं० वङ्किम > अप० वङ्किम (आचार्य हेमचन्द्र का अपभ्रंश व्याकरण, पृ० १०९) ।

वंग—पुं० (देश विशेष)–सं० वङ्ग> अप० (प० च०)>हिं० वंग) ।

वंचक—पुं० वि० (ठग, चोर)–सं० सं० पा० वञ्चक ।

वंचना—पुं० हिं० क्रि० (धोखा देना, ठगना)–सं० √ वञ्च्>प्रा० वंच> हिं० वंच+ना ।–स्त्री०–(धोखा, छल)–सं० वञ्चना>प्रा० वंचणा ।

वंजुल—पुं० (अशोक वृक्ष)–सं० वञ्जुल >प्रा० वंजुल ।

वंटक—पुं० (विभाग, भाग, बाँट)–सं० वण्टक>प्रा० वंटग ।

वंठ—पुं० (१- अविवाहित पुरुष, २- दास, ३- वामन, बौना)–प्रा० वंठ> हिं० वंठ ।

वंदक—पुं० (१- स्तुति कर्त्ता, चारण)–सं० वन्दक>प्रा० वंदग, वंदअ>हिं० वंदक ।

वंदन — पुं० (स्तुति और प्रणाम, पूजन)–सं० वन्दन>प्रा० वंदण>हिं० वंदन ।

वंदना—स्त्री० (१- स्तुति, २- प्रणाम, अभिवादन)–सं० पा० वन्दना > प्रा० वंदणा>हिं० वंदना ।

वंध्या—स्त्री० (बाँझ स्त्री जिसे संतान न उत्पन्न हो)–सं० वन्ध्या>पा० वञ्झा >प्रा० वंझा>हिं० वंध्या ।

वंश—पुं० (१- कुटुम्ब, जाति, परिवार, २- बाँस, ३- संतान, ४- एक ही जैसी वस्तुओं का समूह, ५- शाल का वृक्ष)–सं० वंश>प्रा० वंस ।

वंशी—स्त्री० (वाद्य विशेष, मुरली)–सं० वंशी>प्रा० वंसी ।

व— अव्य० (और) – वै० सं० वै (अवश्यमेव), एवम् (ऐसे) ।

वइसाना—पुं० हिं०, क्रि० (बैठाना)–सं० उपविश्>प्रा० उववित्स > अप० वइठ, वइट्ठ (प० च०)>अव० वइस, बइस>हिं० वइसाना ।

वकालत—स्त्री० (वकील का काम, अभिभाषण)–अ० वकालात ।

वकील—पुं० (वकालत करने वाला, अभिवक्ता, प्रतिनिधि)–अ० वकील । तुल० सिं० वकीलु, बं० अस० उकिल, ओ० ओकिल, ते० वकीलु ।

वक्त — पुं० (समय, अवसर) –अ० वक़्त ।

वक्र—वि० (१- टेढ़ा, २- तिरछा, ३- कुटिल ४- बेईमान, ५- निर्दय)–सं० वक्र >पा० प्रा० वक्क>प्रा० वंक ।

वखाण — ग्रा० प्र० (बखान) – सं० व्याख्यान>प्रा० वक्खाण, अप० वक्खाय

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>हिं० वखाण, वखान।

वच—पुं० (वचन, वाक्य)–सं० वचस् >अप० वय (प० च०)।

वचन—पुं० (वाणी, वाक्य)–सं० वचनम् >पा० वचन > प्रा० वयण>अप० वअण>अव० वयण, वअन (की०)> प्राचीन राज० वयण[२४]।

वजन—पुं० (तोलने का बाँट, भार, बोझ)–अ० वज़न। तुल० पं० उर्दू वज़न, कश्मी० वज़ान, सिं० वज़ानु, म० गु० वजन।

वजनी — वि० (भारी, बोझल)–अ० वज़नी।

वजीफा — पुं० (छात्रवृत्ति) – अ० वजीफः।

वजीर—पुं० (अमात्य, मंत्री, सचिव)–अ० वज़ीर।

वजूद, वुजूद—पुं० (अस्तित्व, उपस्थिति, मौजूदगी)–अ० वुजूद।

वज्र—पुं० (इन्द्र का प्रधान शस्त्र, कुलिश, पवि, २- आकाश में बिजली चमकने और बादल गरजने के बाद का वह विद्युत प्रवाह जो आकाश से चलकर पृथ्वी पर कहीं आ गिरता है, बिजली, ३- हीरा, ४- भाला)–सं० वज्र >पा० वजिर>प्रा० वज्ज, वइर, अप० वज्ज (प० च०)>अव० वज्ज (की०)।

वट—पुं० (बरगद का पेड़)–सं० पा० वट>प्रा० वड। तुल० पं० वड, सिं० बड़ु, गु० म० वड।

वडवाग्नि—स्त्री० (समुद्र के भीतर की आग)–सं० वडवाग्नि>प्रा० वडवग्गि।

वणीजार—पु० हिं०, प्रा० प्र०, पुं० (व्यापारी, वनजारा)–सं० वाणिज्यकार। तुल० गु० वणज, पं० वणजारा।

वतन—पुं० (जन्मभूमि)–अ० वतन।

वत्त[१] (की०)—पुं० (आरोग्य)–सं० वार्त्ता >अव० वत्त।

वत्त[२] (की०)—पुं० (समाचार)–सं० वार्ता>प्रा० वत्ता, वत्त।

वत्त[३] (की०)—वि० (व्याप्त) अव०–सं० व्याप्त, प्रा० अप० वत्त।

वत्स — पुं० (गौ का बच्चा, बछड़ा २- बालक)–सं० वत्स>पा० वच्छ।

वत्सर—(वर्ष, साल)–सं० वत्सर > पा० वच्छर।

वदन—पुं० (१- मुख, २- बात कहना)–सं० पा० वदन > प्रा० वयण>अव० वअन (की०)।

वध—पुं० (किसी मनुष्य को जान-बूझकर किसी उद्देश्य से मार डालना)–सं० पा० वध>प्रा० वह।

वधक—पुं० (वध करने वाला, २- मृत्यु, ३- व्याध)–सं० पा० वधक>प्रा० वहक।

वधू—स्त्री० (१- दुलहन, २- भार्या, ३- पुत्र की बहू)–सं० पा० वधू>प्रा० वहू, बहु > अप० वहु, वहुय, वहुव। तुल० गु० वहु।

वन—पुं० (जंगल)–सं० पा० वन> प्रा० वण।

वनवासी—वि० (वन में रहने वाला)–सं० वनवासिन्>अप० वणवस, स्त्री० वनवसि (प० च०)।

वनस्पति — स्त्री० (पेड़ पौधे)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वनस्पति > अप० वणप्फइ, वणासइ (प० च०)।

वनिता—स्त्री० (औरत, स्त्री)–सं० पा० वनिता>प्र० वणिआ > अप० वणिय (च० च०)।

वन्ही[1] (की०)—स्त्री० (सुन्दर वर्ण या कीर्तिवाली)–सं० वर्णिनी>वन्ही।

वपु—पुं० (शरीर, देह)–सं० वपुष्> पा० वयु>प्रा० वप्पु, बउ>हिं० बपु।

वफा—स्त्री० (वफादारी)–अ० वफ़ा।

वफादारी—स्त्री० (स्वामी या मित्र का तन-मन-धन से साथ देना)–अ० वफ़ा+ फा० दारी।

वमन—पुं० (वमन किया हुआ तरल पदार्थ)–सं० वमन, पा० वमथु>प्रा० वमण। तुल० बं० अस० वमि, क० वमन।

वय—स्त्री० (अवस्था, उम्र) – सं० वयस्>पा० प्रा० हिं० वय।

वर[1]—(पति, स्वामी, दुलहा)–सं० प्रा० हिं० वर।

वर[2]—वि० (श्रेष्ठ)–सं० वर, पा० वर (श्रेष्ठ, वरदान)>प्रा० वर (पाइअ०), अप० वर (प० च०), हिं० वर।

वरजिश—स्त्री० (व्यायाम, कसरत)– फ़ा० वर्ज़िश।

वरजिशी—वि० (कसरती, जो व्यायाम का अभ्यस्त हो)–फ़ा० वर्ज़िशी।

वरन[4]—पु० हिं०, प्रा०प्र०, पुं० (वर्ण)– सं० वर्ण>प्रा० वण्ण>हिं० वरन।

वरना[1] — पुं० हिं०, क्रि० (वरण करना) – सं०√वृ>प्रा० वर > हिं० वर+ना।–पुं०–(सगाई, विवाह संबंध)– सं० प्रा० वरण।

वरना[2]—पुं० (ऊँट)–सं० वरण।

वरना[3] — अव्य० (नहीं तो)–फ़ा० वर्नः।

वराह—पुं० (सूअर)–सं० प्रा० वराह >छ० बर्हा।

वरिस—क्रि० (दृष्टि करना)–सं०√ वृष्>प्रा० वरिस, वरिसइ।

वरुण—पुं० (एक वैदिक देवता)–सं० प्रा० हिं० वरुण। तुल० कश्मी० वरुण्, सिं० वरणु, म० गु० वरुण, बं० अस० ओ० बरूण, त० मल० वरुणन्।

वर्ग—पुं० (१- एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह, कोटि, श्रेणी, २- सामान्य धर्म या स्वरूप रखने वाले पदार्थों का समूह)–सं० वर्ग।

वर्गचूलिका—स्त्री० (एक प्राचीन जैन ग्रन्थ)–सं० वर्गचूलिका > प्रा० वग्ग-चूलिआ।

वर्गित—वि० (वर्ग किया हुआ)–सं० वर्गित>प्रा० वग्गिअ।

वर्चस्विन्—वि० (तेजस्वी)–सं० वर्च-स्विन्>प्रा० वच्चंसि।

वर्जन—पुं० (१- मनाही, २- त्याग, ३-कोई काम करते समय किसी विशेष कारण से कोई बात छोड़ देना)–सं० वर्जन>पा० वज्जन।

वर्ण—पुं० (पदार्थों के लाल, काले आदि भेदों के नाम, रंग, २- हिन्दुओं के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जाति, ३-अकारादि अक्षरों के चिह्न या संकेत, अक्षर, ४- रूप)–सं० वर्ण>प्रा० वण्ण।

वर्णन — पुं० (विवेचन, विवरण, निरुपण)–सं० वर्णन>प्रा० वण्णण। तुल० बं० बर्णन, बर्णना, अस० बिबरण,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्णना, ओ० वर्णन, ते० वर्णनमु, त० वरुणनै, गु० म० वर्णन ।

वर्णनीय—वि० (वर्णन करने योग्य)–सं० वर्णनीय>पा० वण्णनीय ।

वर्णित—वि० (निरुपित, वर्णन किया हुआ)–सं० वर्णित>पा० वण्णित ।

वर्णिनी—स्त्री० (वनिता)–सं० वर्णिनी >अव० वानिनी ।

वर्तक—पुं० (बटेर, पक्षी-विशेष)–सं० वर्तक>प्रा० वट्टय (पाइअ०) ।

वर्तुल—पुं० (गोला, गेंद, वृत्त)–वि० (गोल, वृत्ताकार)–सं० वर्तुल > पा० वट्टुल ।

वर्त्म—पुं० (मार्ग)–सं० वर्त्मन्>अप० वट्टय (प० च०) ।

वर्धक—वि० (बढ़ाने वाला, पूरक)–अप० वद्धावय (प० च०) ।

वर्धन—वि० (वृद्धि करने वाला)–सं० वर्धन>पा० प्रा० वद्धण ।

वर्धनक — वि० (१- अभ्युदय कराने वाला, २- उल्लास और आनन्ददायक)–सं० वर्धनक>अप० वद्धावणय (प० च०) ।

वर्ष—पुं० (१- वृष्टि, २- साल)–सं० वर्ष>प्रा० वरिस>अप० वरिस (प० च०)>हिं० वर्ष । तुल० म० वर्ष, गु० वर्ष, वरस; बं० बत्सर, अस० बछर ।

वर्षांत—पुं० (वर्षा-काल का अन्त)–सं० वर्षान्ति>प्रा० वासंत ।

वर्षा—स्त्री० (वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है)–सं० वर्षा>प्रा० वरिसा> अप० वरिस (प० च०) । तुल० बं० अस० ओ० वर्षा ।

वर्षाकाल—पुं० (बरसाती मौसम)–सं० वर्षाकाल > पा० वस्स-काल > प्रा० वरिसाकाल ।

वलदीयत—स्त्री० (बाप का नाम आदि–) अ० वलदीयत ।

वलय—पुं० (१- कंकण, २- चूड़ी, ३- कड़ा)–सं० प्रा० वलय ।

वलयिता—वि० (वेष्टित करने वाला, घेरने वाला)–सं० वलयितृ ।

वल्कत— पुं० (वृक्ष की छाल)–सं० वल्कल > प्रा० वक्कल > अ० मा० वागल ।(२३)

वल्मीक—पुं० (कीट विशेष-कृत मिट्टी का स्तूप, ढूह, दीमकों के रहने की बाँबी)–सं० वल्मीक > प्रा० वम्मीअ, वम्मिअ>महाराष्ट्री वम्मीअ>अ० मा० वम्मिय>अप० वम्मीय (प० च०) ।

सं० वल्लभ—वि० (प्यारा), पुं० (पति, प्रिय मित्र)–सं० वल्लभ>प्रा० वल्लह अप० वल्लहु>राज० वाहिलु ।

वल्लि—स्त्री० (लता)–सं० वल्लि> पा० प्रा० वल्ली>अप० वेल्लि, विल्ली, उव्वेलिर ।

वल्ली—स्त्री० (लता, बेल)–सं० प्रा० हिं० वल्ली ।

वश—पुं० (१- अधिकार, प्रभुत्व, २- इच्छा, चाह)–वि० (अधीन)–सं० वश >प्रा० वस ।

वसन—पुं० (१- वस्त्र, निवास)–सं० पा० वसन>प्रा० वसण ।

वसना—स्त्री० (स्त्रियों की कमर का एक आभूषण)–सं० वसनम् ।

वसने (की०)—क्रि० (निवास करना)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० वसन > प्रा० वसण > अप० वसन > अव० वसने ।

वसीयत—स्त्री० (मरने वाले का अन्तिम कथन, मरते समय अपनी संपत्ति के प्रबंध एवं व्यय के लिए अन्तिम आदेश)—अ० वसीयत ।

वसुंधरा—स्त्री० (पृथ्वी)—सं० पा० वसुन्धरा > प्रा० वसुंधरा > अप० वसुन्धरि (प० च०) > हिं० वसुंधरा ।

वसु—पुं (धन दौलत)—सं० पा० प्रा० हिं० वसु ।

वसुधा — स्त्री० (पृथ्वी)—सं० पा० वसुधा ।

वसूल, वुसूल—पुं० (प्राप्ति, वसूली)—अ० वुसूल ।

वसूली—स्त्री० (प्राप्ति)—अ० वुसूली ।

वस्ति—स्त्री० (१- पेडू, २- मूत्राशय, ३- आँते साफ करने के लिए गुदा के मार्ग से जल ऊपर चढ़ाने की क्रिया, जिसने रेचन होता है)—सं० वस्ति > पा० प्रा० वत्थि (अपान, गुदा), मल साफ करने के लिए गुदा में वत्ती आदि का किया जाता प्रक्षेप) ।

वस्तु—स्त्री० (१- पदार्थ, चीज, २- विषय, किसी नाटक का कथानक, किसी काव्य की कथा)—सं० वस्तु > पा० प्रा० वत्थु ।

वस्त्र — पुं० (कपड़ा, पोशाक)—सं० वस्त्र > पा० प्रा० वत्थ ।

वह—सर्व० (एक शब्द जिसके द्वारा दूसरे मनुष्य से बातचीत करते समय किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है)— १- सं० असौ (अदस् — वह) > पा० असु०, प्रा० असो, अहो > ओह > औहु > वह । २- किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार—सं० सः (तद्) > प्रा० सो > हिं० वह । तुल० उर्दू वो ।

वहन—पुं० (१- खींच या ढो कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना, २- ऊपर लेना, उठाना)—सं० पा० वहन > प्रा० वहण (ढोना) ।

वहम—पुं० (१- मिथ्या धारणा, २- भ्रम)—अ० वह्म ।

वहमी—वि० (१- वहम करने वाला, शक्की मिज़ाज)—अ० वह्मी ।

वहल[1] (की०)—क्रि० (ले जाना)—सं० वह् > प्रा० वह (पहुँचाना, ले जाना) > अव० वहल ।

वहित्र—पुं० (नौका)—सं० वहित्र > अप० वोहित्थ (प० च०) ।

वही[1]—सर्व० (पूर्वोक्त व्यक्ति)—सं० असौ > पा० असु > प्रा० असो, अहो > ओह > औहु > हिं० वह + ही । तुल० अ० वही ।

वही[2]—पुं० (१- बैल, भारवाहक, बोझा ढोने वाला)—सं० वहिन् ।

वहूता—(की०) वि० (बहुत, एक दो से अधिक)—सं० प्रभूत > प्रा० बहुत्त (पाइअ०) > अव० वहूत, वहूता ।

वाँकुले (की०)—वि० (बाँका, टेढ़ा)—सं० वक्र > प्रा० वंक > अप० ववक + र > अव० व्राँकुले ।

वा[1]—वि० (खुला हुआ)—फ़ा० वा ।

वा[2]—अव्य० (या, अथवा)—सं० पा० वा । तुल० फ़ा० वा (पुनः) ।

वाकई—वि० (ठीक, यथार्थ, वास्तव

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में)–अ० वाक़िई ।

वाकया—पुं० (कोई बात जो घटित हो)–अ० वाक़िअः ।

वाक्य—पुं० (शब्दों का सार्थक समूह)–सं० पा० वाक्य>प्रा० वक्क (पाइअ०), अप० वक्क (प० च०) ।

वाग[1] (की०)—स्त्री० (लगाम) – सं० वल्गा>प्रा० अप० वग्गा>अव० वाग >हिं० बाग ।

वागुरा—पुं० (पशु फँसाने का जाल, मृग-बन्धन)–सं० वागुरा>प्रा० वग्गुरा ।

वाचक—पुं० (वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो)–वि० (कहने वाला, बोधक)–सं० वाचक > प्रा० वायग (अभिधावृत्ति से अर्थ का प्रकाशक शब्द) ।

वाचाल—वि० (बहुत बोलने वाला)–सं० पा० वाचाल>प्रा० वायाल>अप० वायाल (प० च०) ।

वाछि[1] (की०)—स्त्री० (वक्ष स्थल)–सं० वक्षस्>प्रा० अप० वच्छ>अव० वाछि ।

वाछी—पु० हिं०, प्रा० प्र० (वत्स)–सं० वत्स+क>प्रा० वच्छअ, वच्छय ।

१- वाज[1] (की०)—वि० (श्रेष्ठ)–सं० वर्य>प्रा० वज्ज >अव० वाज ।

२- वाज पुं० (१- उपदेश, २- धार्मिक व्याख्यान)–अ० वा'ज़ ।

३- वाज—वि० (स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट)–फ़ा० वाज़ ।

४- वाज[1] (की०) — क्रि० (जा पहुँचना)–सं० व्रज>प्रा० अप० वच्च> वच्चइ, वज्ज, वज्जइ ।

५- वाज—पुं० (१- घृत, २- यज्ञ, ३- अन्न, ४-जल, ५-युद्ध, ६-पंख, ७- बाजू, डैना ,८- यज्ञ की पूर्णाहुति का मंत्र)–सं० वाजः ।

६- वाज—पुं० (१- घोड़ा, २- बाण, ३- पक्षी)–स० वाजिन् ।

वाजिब — वि० (उचित, मुनासिब, अनिवार्य)–अ० वाजिब ।

वाजी—पुं० (घोड़ा)–सं० वाजिन् > पा० वाजी प्रा० वाजि>हिं० वाजी ।

वाजू (की०)—पुं० (भुजा, तरफ)–फ़ा० बाज़ू, सं० बाहु ।

वाट[1] (की०)—पुं० (मार्ग)–सं० वाट (सड़क), सं० वर्त्म>प्रा० अप० वाट> हिं० बाट ।

वाट[2] (की०)—क्रि० (होना, वर्तमान होना)–सं० वृत्>प्रा० अप० वट्ट> अव० वाट ।

वाटिका—स्त्री० (बगीचा, उद्यान)–सं० वाटिका>प्रा० वाडिआ ।

वाड—पुं० (घेरा, बाड़)–सं० वाटः (बाड़ा, घिरा हुआ भूभाग) ।

वाड़व—पुं० (अग्नि)–सं० प्रा० वाडव >अप० वालव (प० च०) ।

वाड़ी—स्त्री० (वाटिका)–सं० वाटिका >प्रा० वाडिआ ।

वाणिज—पुं० (व्यापारी, बनिया)–सं० वाणिज>प्रा० वाणिअ ।

वाणिज्य—पुं० (व्यापार)–सं० वाणिज्य >पा० वाणिज्ज, वणिज्जा>प्रा० वाणिज्ज ।

वाणिअ (की०)—पुं० (व्यापारी)–सं० वाणिज>प्रा० अप० वाणिअ>अव०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाणिज्य।

वाणी—स्त्री० (वचन, वाक्य) > सं० प्रा० वाणी।

वात—पुं० (वायु)–सं० वात>प्रा० वाय।

वातातप—पुं० (हवा और धूप)–सं० पा० वातातप।

वातिक—पुं० (एक प्रकार का ज्वर)–सं० वातिक>पा० वातिक (वायु से सम्बन्धित)।

वातुल—पुं० (बावला, पागल)–सं० वातुल>प्रा० वाऊल, वाउल (पाइअ०) >अप० वाउल, वाउल्लो।

वाद—पुं० (१- शास्त्रार्थ, २- तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित तत्त्व या सिद्धान्त, ३- बहस, ४- अभियोग)–सं० वाद, पा० वाद (सिद्धान्त)।

वादित्र—पुं० (वाद्य, बाजा) – सं० वादित्र।

वादी—पुं० (१-वक्ता, बोलने वाला २- मुकदमा चलाने वाला)>सं० वादिन्।

वाद्य—पुं० (बाजा)—सं० वाद्य>पा० प्रा० वज्ज।

वान[1]—पु० हिं०—स्त्री० (वाणी)–सं० प्रा० वाणी।

वान[2]—प्र० टि० (वाण)–सं० वाण।

वानर—पुं० (बन्दर)–सं० पा० वानर >प्रा० वाणर > हिं० वानर, स्त्री० वानरी।

वापस—वि० (लौटा हुआ, फिरा हुआ)–फ़ा० वापस।

वापसी—स्त्री० (प्रतिदान, लौटाना)–फ़ा० वापसी।

वापि—स्त्री० (बावली, छोटा जलाशय)–सं० वापि०, वापी।

वाम—वि० (१- बायाँ, वामभाग स्थित, २- कुटिल स्वभाव का, प्रतिकूल, टेढ़ा)–सं० पा० प्रा० वाम।

वामन—वि० (बौना)–सं० वामन> अप० वावण्य (प० च०)।

वायस—पुं० (कौवा)–सं० पा० प्रा० वायस>अप० वायसु>हिं० वायस।

वायु—स्त्री० (हवा)–सं० पा० प्रा० वायु, प्रा० वाउ।

वार[1]—पुं० (बारी, मौका)–सं० पा० प्रा० वार>अप० वारिय (प० च०), वार, बारी, क्रम)>हिं० वार।—वार, क्रि० वि० (वार-बार)–सं० वारंवारम् >अप० वार-वार (प० च०)। तुल० पश्तो वार।

वार[2]—पुं० (आक्रमण, आघात)–फ़ा० वार।

वार[3]—पुं० (युद्ध)–अं० वार (war)।

वार[4]—पु० (बालक)–सं० बाल।

वारदात—पुं० (भीषण दुर्घटना, मार-पीट, दंगा-फसाद)–अ० वारिदात।

वारवाण[1]—पुं० (कंचुक की अपेक्षा कुछ लम्बा, घुटनों तक नीचा पहनावा)–सं० वारवाण। फ़ा० बारवान, अरमाइक भाषा वरपानक, सीरिया की भाषा में 'गुरमानका', अरबी 'जुरमानकह्'।

वारा—स्त्री० (देरी, विलम्ब)–सं० प्रा० वारा।

वारि—पुं० (जल)–सं० पा० प्रा० हिं० वारि।

वारिग्गह (की०)—पुं० (दरबारी शामियाना)–फ़ा० बारगाह।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वारिज— पुं० (कमल)- सं० पा० वारिज।

वारिद— पुं० (बादल)- सं० पा० वारिद।

वारिस—पुं० (उत्तराधिकारी, अभिभावक, सरपस्त)–अ० वारिस। पं० वारस, सिं० वारिसु, म० गु० वारस, बं० वारिस, ओ० वारस, त० वारिसु।

वारुणी—स्त्री० (मदिरा)- सं० प्रा० हिं० वारुणी।

वालिद— पुं० (पिता, बाप)- अ० वालिद।

वालिदा—स्त्री० (माता)–अ० वालिदः।

वाली[1]—पुं० (सुग्रीव का बड़ा भाई)–सं० वालिन्।

वाली[2]—पुं० (१- मित्र, २- शासक)–अ० वाली।

वालुका— स्त्री० (बालू, रेत)–सं० पा० वालुका>प्रा० वालुआ। तुल० म० वाळू, गु० वालु।

वाल्मीकि—पुं० (एक प्रसिद्ध ऋषि)–सं० वाल्मीकि>प्रा० वम्मीइ।

वास[1] (पद०)— पुं० (वर्षा काल)–सं० वर्षा>प्रा० वरिस>वास।

वास[2]—पुं० (निवास)–सं० पा० प्रा० वास।

वासना— स्त्री० (१- कुछ पाने की कामना, २- विचार)–सं० वासना, पा० वासना (पूर्व संस्कार, पूर्व स्मृति)>प्रा० वासणा।

वासर—पुं० (दिन, दिवस)–सं० पा० प्रा० वासर।

वासुकि वासुकी—पुं० (एक महानाग, सर्पराज)– सं० वासुकि>प्रा० वासुगि, वासुइ।

वास्तु—पुं० (घर, रहने का स्थान)–सं० वास्तु>प्रा० वत्थु>अव० वथ्थु।

वाह—अव्य० (प्रशंसासूचक शब्द, धन्य)–फ़ा० वाह।

वाहवाह—अव्य० (बहुत अच्छा, साधुवाद, धन्य-धन्य, ख़ूब-ख़ूब)–फ़ा० वाहवाह। स्त्री० वाहवाही (लोगों की प्रशंसा)।

वाहइ (की०)—क्रि० (बहाता है)–सं० वर्ष>प्रा० वरिस का अप० आदेश वह (बरसना)>अव० वाहइ।

वाहक—पुं० (बोझा ढोने या खींचने वाला)–सं० वाहक>प्रा० वाह>अप० वाह (प० च०)।

वाहन—पुं० (सवारी, गाड़ी, जिस पर चढ़कर चलते है)–सं० पा० वाहन>प्रा० वाहण।

वाहा—स्त्री० (भुजा)–सं० बाहु>प्रा० बाह>अव० वाह, वाहि (की०)>हिं० वाहा।

वाहिनी— स्त्री० (सेना)- सं० पा० वाहिनी>प्रा० वाहिणी>हिं० वाहिनी।

वाहियात— वि० (व्यर्थ एवं निरर्थक बातें)–अ० वाहियात।

विकल—वि० (व्याकुल)–सं० विकल>प्रा० विगल।

विकीर्ण— वि० (बिखेरा हुआ)–सं० विकीर्ण>पा० विकिण्ण, विकिरण>प्रा० विइण्ण।

विकृति—स्त्री० (विकार, बिगाड़)–सं० विकृति>पा० विकति>प्रा० विग्गइ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विकृत्त—वि० (काटा हुआ, छिन्न)–सं० विकृत्त>प्रा० विगत्त।

विक्रम— पुं० (शौर्य, पराक्रम)–सं० विक्रम>प्रा० विक्कम।

विक्रय—पुं० (बिक्री)– सं० विक्रय> पा० विक्कय>प्रा० विक्कय।

विक्रयण—पुं० (बेचने की क्रिया)–सं० विक्रयण>प्रा० विकिण्ण।

विक्षेप—पुं० (१- क्षोभ, २- मन का इधर उधर भटकना, ३- विघ्न, बाधा)– सं० विक्षेप > पा० विक्खेप > प्रा० विक्खेव।

विक्षोभ—पुं० (१- मन की चंचलता, २- उथल-पुथल, ३- किसी अप्रिय घटना के कारण मन में होने वाला विकार)– सं० विक्षोभ>पा० विक्खोभन।

विखरना—क्रि० (बिखरना)–सं० वि+ √कृ>प्रा० विकिर, विक्खर>अप० विक्खिर, विक्खिरन्ति (प० च०)>हिं० बिखरना।

विगत—वि० (१-बीता हुआ, २-विहीन, रहित, ३- जो अभी तुरन्त बीता है)– सं० पा० विगत>प्रा० विगय।

विगलित—वि० (१- अधः पतित, २- शिथिल, ३- बिगड़ा हुआ, ४- लुप्त, ५- अस्त-व्यस्त)– सं० विगलित> अप० वियलियय (प० च०)।

विगाथा— स्त्री० (छन्द-विशेष)–सं० विगाथा>अप० विग्गाहा।

विज्ञान— पुं० (१- किसी विषय का निश्चयात्मक एवं अनुभवजन्य ज्ञान। २- जानकारी, ज्ञान)– सं० विज्ञान> प्रा० विण्णाण। तुल० सिं० विज्ञानु, बं० अस० बिज्ञान, ओ० विज्ञान, त० विज्ञानमु।

विघटन—पुं० (१- विगाडना, २- नष्ट करना, ३- तोड़ना-फोड़ना)–सं० विघटन >पा० विघट्टन>प्रा० विघट्टण।

विचक्षण— वि० (दक्ष, विद्वान्)–सं० विचक्षण>प्रा० अप० अव० विअक्खण।

विचरण—पुं० (१- चलना, २- घूमना-फिरना)–सं० पा० विचरण।

विचार—पुं० (१- संकल्प, २- ख्याल, ३- किसी बात को सोचना-समझना, ४- मुकदमे की सुनवाई और फैसला)–सं० पा० विचार>प्रा० विआर।

विचारक—पुं० (विचार करने वाला)– सं० पा० विचारक>प्रा० विचारग।

विचित्र—वि० (अद्भुत)– सं० विचित्र >पा० प्रा० विचित्त।

विच्छेद—पुं० (१- विभाग, २-वियोग)– सं० विच्छेद>प्रा० विच्छेअ।

विछोह—पुं० (वियोग, प्रिय से अलग होना)–सं० विच्छेद> प्रा० विच्छेह> अप० विच्छोह>विछोह।

विजय— स्त्री० (जीत)– सं० प्रा० विजय। तुल० ओ० अस० बिजय, मल० विजयम्, म० गु० विजय।

विजार[1]—पुं० (भेड़िया)–अ० विजार।

विजार[2]—पुं० (एक प्रकार की मटिया भूमि जिसमें धान और कभी कभी चना भी बोया जाता है)–देशज।

विज्ञ—वि० (जानकार)– सं० विज्ञ> प्रा० विण्णुअ, विण्णु।

विटप—पुं० (वृक्ष)–सं० विटप (छत-नार पेड़, शाखा), पा० विटप (शाखा)।

वितरण— पुं० (बाँटना)– सं० पा० वितरण>प्रा० विअरण।

वितस्ति—पुं० (बालिश्त, बारह अंगुल

Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का परिमाण)– सं० वितस्ति >प्रा० विहत्थि ।

वित्त— पुं० (धन, संपत्ति)–सं० पा० प्रा० वित्त ।

वित्थरिअ(१) (की०)—क्रि० (फैलाया)– सं० विस्तृ>प्रा० वित्थर । सं० विस्तारय्>प्रा० वित्थार । सं० विस्तारित> प्रा० वित्थारिय ।

विथराना— क्रि० (१- फैलाना, इधर उधर करना)–सं० विस्तृ>प्रा० वित्थर >अव० विथ्थरि (विथुरे हुए थे, की०) >हिं० विथराना । — पुं–सं० विस्तरण>प्रा० विथ्थरण ।

विदग्ध—पुं० (रसिक पुरुष)–सं० विदग्ध>अप० वियड्ढ (प० च०) ।

विदारक—वि०(विदारण करने वाला)– सं० विदारक > अप० वियारय (प० च०) ।

विदारण—पुं० (१- फाड़ना, २- मार डालना)– सं० पा० विदारण > प्रा० विदालण>अव० वेआलण (की०) ।

विदारना—क्रि० (फ़ाड़ना)–सं० विदारयति>प्रा० विदारइ ।

विदूषक—पुं० (मसखरा, दिल्लगीबाज, नक्काल, भाँड)– सं० विदूषक > प्रा० विदूसग, विदूसय ।

विदेश—पुं० (दूसरा देश, परदेश)–सं० विदेश>पा० प्रा० विदेस, प्रा० विएस ।

विदेह—पुं० (राजा जनक)–सं० प्रा० विदेह ।

विद्वेष—पुं० (द्वेष)–सं० विद्वेष>प्रा० विद्देस ।

विद्या—स्त्री० (१- शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त हुआ ज्ञान, २- ज्ञान के विशेष विभाग)–सं० विद्या>पा० प्रा० अप० विज्जा । तुल० पं० विदिआ, अस० विद्या, ओ० विद्या, म० ते० विद्य ।

विद्यालय— पुं० (पाठशाला)– सं० विद्यालय>अप० विज्जालय (प० च०) ।

विद्युत—स्त्री० (बिजली)–सं० विद्युत >प्रा० विज्जुआ>अप० विज्जु (प० च०) । तुल० गु० वीज ।

विधवा—स्त्री० (वह स्त्री जिसका पति मर गया हो)–वै० सं० विधवा (विगत धवः यस्याः सा, विधवा)>पा० विधवा >प्रा० विहवा । तुल० सिं० गु० म० विधवा, बं० अस० ओ० विधवा । स्पे० विउदा, ले० Vidvua ।

विधान—पुं० (१- किसी कार्य का आयोजन, २- प्रबन्ध, ३- विधि, ४- कानून) – सं० पा० विधान > प्रा० विहाण ।

विधायक — वि० (व्यवस्था करने वाला)–सं० पा० विधायक ।

विधि[1]—पुं० (सृष्टि का विधान करने वाला, विधाता)–सं० विधि प्रा० अप० विहि, अव० विहि (की०) ।

विधि[2]—स्त्री० (१- काम करने का ढंग, २- व्यवस्था, ३- शास्त्रीय विधान, ४- राज्य द्वारा निर्धारित नियम) – सं० विधि>पा० विधि (भाग्य, प्रकार)> प्रा० विहि ।

विधु—पुं० (चन्द्रमा)–सं० विधु>प्रा० विहु ।

विध्वंस—पुं० (१- विनाश, २- अनादर, ३- वैमनस्य) सं० विध्वंस>प्रा० विद्धंस

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>अव० बिधाँसव (की०)।

विनती—स्त्री० (प्रार्थना)–सं० विनति >पा० विण्णत्ति>प्रा० विण्णत्ति>हिं० विनती। तुल०सि० विनती, गु० विनति, ने० बिन्ति, गु० विनति, म० विनती

विनवना—पु० हिं०, क्रि० (निवेदन करना) – सं० विज्ञापयति > अप० विनवई।

विना—अव्य० (अभाव में, बगैर)–सं० विना>प्रा० अप० विणा (प० च०)।

विनाश—पुं० (नाश)–सं० विनाश> प्रा० विणास>हिं० विनाश।

विनाशक—वि० (विनाशकर्त्ता) – सं० विनाशक>प्रा० विणासग।

विनियम—पुं० (अदल-बदल)–सं० प्रा० हिं० विनिमय।

विनियोग — पुं० (कार्य में लगाना, उपयोग)–सं० विनियोग>प्रा० विणियोग।

विपक्ष—पुं० (१- विरोधी पक्ष, २- विरोध या खंडन)–सं० विपक्ष>पा० विपक्ख>प्रा० अप० विपख्ख>अव० विपष्ख (की०)।

विपत्—स्त्री० (विपत्ति)–सं० विपद्> प्रा० विपय>अव० विपअ (की०)।

विपरीत—वि० (१- प्रतिकूल, २- जो विपर्यय के रूप में हो, ३- रुष्ट, ४- हितसाधन के अनुपयुक्त)–सं० विपरीत >अप० विवरिय (प० च०)।

विपिन—पुं० (जंगल)–सं० विपिन> प्रा० विविण।

विपुल—वि० (१- विस्तार, संख्या या परिमाण में बहुत अधिक, २- बृहत्, बड़ा)–सं० विपुल>प्रा० अप० विउल।

विफल—वि० (व्यर्थ, निष्फल)–सं० पा० विफल।

विभु—पुं० (प्रभु, स्वामी, ईश्वर)–सं० विभु>प्रा० विहु (पाइअ०) >अप० विहु (प० च०)।

विभूति—स्त्री० (१- ऐश्वर्य, २- संपत्ति, ३- दिव्य या अलौकिक शक्ति)–सं० विभूति>प्रा० विभूइ।

विभ्रम—पुं० (चित-भ्रम, संदेह)–सं० विभ्रम>प्रा० विब्भम।

विमर्दन—पुं० (१- दलना, २-कुचलना, ३- ध्वस्त करना, ४- मार डालना, ५- पीड़ित करना)–सं० विमर्दन > प्रा० विमद्दण, अप० विमद्दण (प० च०)।

विमल—वि० (विशुद्ध)–सं० प्रा० अप० हिं० विमल।

विमुंचइ(१) (की०) — क्रि० (वर्षा करना)–सं० वि+मुच्>प्रा० विमुंच >अप० वि+मुक्क>अव० विमुक्क, विमुक्कइ।

विमुक्त — वि० (अच्छी तरह मुक्त, स्वतन्त्र) – सं० विमुक्त > पा० प्रा० विमुत्त, विमुक्क।

विमुक्ति—स्त्री० (मोक्ष)–सं० विमुक्ति >प्रा० विमुत्ति।

वियोग—पुं० (पृथक् होने का भाव)– सं० वियोग>अप० वियोय, विच्छोय (प० च०)।

विरक्त—वि० (उदासीन)–सं० विरक्त प्रा० विरत्त।

विरक्ति—स्त्री० (वैराग्य, उदासीनता)– सं० विरक्ति>प्रा० विरत्ति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विरथ—वि० (१- रथ से गिरा हुआ, २- पैदल, ३- रथ-रहित)–सं० वि+रथ >अप० विरह (प० व०)।

विरल—वि० (१- दुर्लभ, २- कम, ३- पतला, ४- निर्जन)–सं० पा० प्रा० विरल।

विरह—पुं० (वियोग, जुदाई)–सं० प्रा० विरह>अप० विरहु, विरहहो, विरह> हिं० विरह।

विराग—पुं० (अनुराग का अभाव)–वि० (उदासीन)–सं० प्रा० हिं० विराग।

विरागी—वि० (जिसे राग न हो, जिसे चाह न हो, जिसने मन न लगाया हो)–सं० विरागिन्>प्रा० विराइ।

विराना—वि० (बिराना, पराया)–फ़ा० बेगानः।

विराम—पुं० (निवृत्ति, अवसान)–सं० प्रा० हिं० विराम।

विरुद—पुं० (१-यश-कीर्तन, २- गुण, प्रताप आदि का वर्णन, ३- कीर्ति)–सं० विरुद>महाराष्ट्री प्रा० विरुअ>शौरसेनी विरुत>अव० विरुद (की०)।

विरूप—वि० (१-कुरूप, बदसूरत, भद्दा, २- शोभाहीन) – सं० विरूप > प्रा० विरूव, प्रा० अप० विरूअ।

विरोध—पुं० (विपरीत भाव, प्रतिकूल होना)–सं० पा० विरोध>प्रा० विरोह।

विलंब—पुं० (देरी, धीमापन, सुस्ती)–वि० (अति काल)–सं० विलम्ब>प्रा० विलंब>अप० विलम्बु>हिं० विलंब।

विलय—पुं० (विनाश, तल्लीनता)–सं० प्रा० हिं० विलय।

विलह[1] (की०)—क्रि० (बाँटना)–अव० सं० विलभ् > प्रा० विलह > अव० विलह।

विलाप—पुं० (बिलख बिलख कर रोने की क्रिया)–सं० विलाप (वि√लप्+घञ्)। (सं० वि०+√लप् > प्रा० वडवड=विलाप करना)।

विलायत—स्त्री० (परराष्ट्र, अन्य देश)–अ० विलायत।

विलायती—वि० (विलायत का)–अ० विलायती।

विलासिनी—स्त्री० (छन्द-विशेष)–सं० विलासिनी > अप० विलासिणि (प० च०)।

विलेपन—पुं० (लेप, लेप करने या लगाने की क्रिया)–सं० पा० विलेपन> प्रा० विलेवण।

विलोम—वि० (विपरीत, उलटा)–सं० पा० विलोम।

विवश—वि० (बेवश, लाचार)–सं० विवश>पा० विवस।

विवाह—पुं० (शादी)–सं० पा० प्रा० विवाह>प्रा० विआह।

विवाहित—वि० (जिसकी शादी कराई गई हो)–सं० विवाहित>प्रा० विवाहिय।

विवेक—पुं० (ठीक-ठीक वस्तु स्वरूप का निर्णय)–सं० विवेक>प्रा० विवेग।

विवेचन—पुं० (१- मीमांसा, विचारपूर्वक निर्णय करना, २- भलीभाँति परीक्षा करना)–सं० पा० विवेचन> प्रा० विवेयण।

विशद—वि० (शुद्ध, स्वच्छ, स्पष्ट,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुंदर, विस्तार रूप से, जैसे विशद व्याख्या)–सं० विशद>पा० प्रा० विसद प्रा० विसय।

विशाल—वि० (१- बड़ा, महान्, लंबा-चौड़ा, २- भव्य, शानदार)–सं० विशाल >पा० प्रा० विसाल।

विश्व—पुं० (संसार)–सं० विश्वम्। तुल० ओ० बं० अस० बिश्व, ते० विश्वमु, म० गु० विश्व। अवेस्ता वीस्पम्।

विश्वस्त — वि० (विश्वसनीय)–सं० विश्वस्त>अप० वीसत्थय (प० च०)।

विष—पुं० (जहर)–सं० विष>पा० प्रा० विस।

विषम—वि० (ऊँचा-नीचा)–सं० विषम >प्रा० अप० विसम>हिं० विषम।

विषय—पुं० (गोचर, इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ–शब्द, रूप, रस आदि वस्तु)–सं० विषय>प्रा० विसय। तुल० सिं० विशय, बं० ओ० अस० विषय, ते० विषयमु। पं० विशा, त० विषयम्, म० विषयं, म० गु० क० विषय।

विषाण—पुं० (१- हाथी का दाँत, २- पशु का सींग, ३- शृंगवाद्य, ४- मेढ़ा-सिंगी)–सं० विषाण > प्रा० विसाण (हाथी का दाँत, सींग, सूअर का दाँत, देश-विशेष) > अप० विसाण (प० च०)।

विषैला—वि० (विषवाला, जहरीला)–सं० विष>प्रा० विस>हिं० विष+ऐला (प्र०)=बिषैला।

विष्ठा—स्त्री० (मल)–सं० विष्ठा > प्रा० विट्ठा।

विष्णु—पुं० (हिंदुओं के एक प्रधान देवता, जो सृष्टि का भरण, पोषण और पालन करने वाले माने जाते हैं)–सं० विष्णु>प्रा० विण्हु (पाइअ०), अप० विण्हु (प० च०)।

विसहरा—पुं० (सर्प)–सं० विषधर> अव० विसहर>हिं० विसहरा।

विस्तृत—वि० (१- जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो, २- विशाल, ३- यथेष्ट विवरण वाला)– सं० विस्तृत (वै० सं० √स्तृ, स्तृ के दो रूप स्तृत, स्तीर्ण) >अप० वित्थह।

विस्तार—पुं० (फैलाव)–सं० विस्तार >पा० प्रा० वित्थार।

विस्फोटक—पुं० (१- फोड़ा, २- भभकने वाला पदार्थ)–सं० विस्फोटक > प्रा० विप्फोडअ।

विस्मय—पुं० (आश्चर्य)–सं० विस्मय >अप० विम्भय (प० च०)।

विस्सरइ (१) **की०**— क्रि० (भूलना) –सं० विस्मरति (सं० वि +स्मृ) > प्रा० विस्सरइ > अप० वीसरइ, अव० विस्सरइ।

विहँसना—क्रि० (हँसना)–सं० वि+हस् >प्रा० विहस, विहसइ, विहंसति > हिं० विहँस+ना।–पुं० (हास्य)–सं० विहसन।

विहग—पुं० (पक्षी)–सं० प्रा० विहग> अप० विहय (प० च०)।

विहरना—क्रि० (घूमना)–सं० वि√हृ >प्रा० विहर, विहरइ>हिं० विहर+ना।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विहान—पुं० (सवेरा)–सं० विहान> प्रा० विहाण>अप० विहाणय (प०च०), अप० विहाणु>हिं० विहान।

विहीन—वि० (१- रहित, २- त्यागा हुआ, ३- अधम)–सं० विहीन > प्रा० विहीण>अप० विहूण (प० च०)।

विह्वल—वि० (१- व्याकुल, २- डरा हुआ, ३- उन्मत्त, ४- पीड़ाग्रस्त, ५- विषादयुक्त, ६- द्रवित)–सं० विह्वल> प्रा० अप० अव० विहल>अप० विम्भल (प० च०), अव० विभालि (की०)।

वीचि—स्त्री० (लहर, तरंग)–सं० वीचि >अप० विच्ची (प० च०)।

वीछा — (श्रीधर भाषा कोश)–पुं० (विच्छू)–सं० वृश्चिक।

वीरान — पुं० (निर्जन स्थान)–फ़ा० वीरानः।

वीरानी—स्त्री० (निर्जनता, उजाड़ होने का भाव)–फ़ा० वीरानी।

वूट—पुं० (जो प्रातः काल जन्मा हो)– सं० व्युष्ट>प्रा० वुट्ट>वूट।

वृंत—पुं० (शाखा का वह भाग जिससे पुष्प, फल, पत्ते आदि संयुक्त रहते हैं)–सं० वृन्त>प्रा० वंट।

वृंहित—वि० (परिवर्धित, पुष्ट किया हुआ)–सं० वृंहित।

वृक—पुं० (भेड़िया)–सं० वृक>पा० वक>अप० विग (प० च०)।

वृकोदर—पुं० (भीमसेन, एक पाण्डव)– सं० वृकोदर>प्रा० विओदर।

वृक्क—पुं० (गुरदा)–सं० वृक्क।

वृक्ष—पुं० (पेड़, विटप)–सं० वृक्षम्> प्रा० वक्ख>प्रा० वच्छ, अप० वच्छ (प० च०) तुल० अवे० वरेशेम्।

वृत्त—पुं० (हालचाल, समाचार, वृत्तांत, हाल)–सं० वृत्त>प्रा० वुत्त>अप० वट्ट (प० च०)>अव० वुत्त (की०)।

वृत्तांत—पुं० (हाल, समाचार)–सं० वृत्तान्त>प्रा० अप० अव० वित्तन्त।

वृत्ति—स्त्री० (जीविका, निर्वाह, साधन, रोजी)–सं० वृत्ति >प्रा० वित्ती।

वृद्ध— वि० (बड़ी उम्र का), पुं० (बूढ़ा आदमी)–सं० वृद्ध>पा० वुड्ढ> प्रा० वड्ढ (पाइअ०)>प्रा० वद्ध, विद्ध >अप० वुड्ढ (प० च०)। तुल० म० वडील।

वृद्धि—स्त्री० (१- बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव, २- अभ्युदय, समृद्धि)–सं० वृद्धि>पा० वड्ढि>प्रा० वड्ढी।

वृश्चिक—पुं० (बिच्छू नामक प्रसिद्ध कीड़ा जिसके डंक में बहुत तेज जहर होता है)–सं० वृश्चिकः>प्रा० विञ्चुओ >अप० विच्छिय (प० च०)।

वृषभ — पुं० (बैल या साँड़)–सं० वृषभ (सं०√वृष्=पैदा करना)>प्रा० वसभ।

वृष्टि—स्त्री० (बारिश)–सं० वृष्टि> प्रा० विट्ठी।

वे(१) (की०)—सर्व० (दोनों)–सं० द्वे > प्रा० बे, वे, अव० वे।

वे(२)—सर्व० (वह का बहुवचन)–सं० अवेभिः>अवहि>अवइ>वइ>वै > वे। तुल० उर्दू वे, म० ते, गु० तेओ।

वेदना—स्त्री० (पीड़ा, दुःख, संताप)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० वेदना > प्रा० विअणा।

वेत्र—पुं० (बेंत का वृक्ष)–सं० वेत्र > पा० वेत्तम् > प्रा० वेत्त (पाइअ०)।

वेणी—स्त्री० (स्त्रियों के बाल की गूँथी हुई चोटी)–सं० प्रा० वेणी > अप० वेणि (प० च०)।

वेतंड—पुं० (हाथी)–सं० वेतण्ड > अप० वेयण्ड (प० च०)।

वेला—स्त्री० (काल, समय)–सं० वेला > पा० वेळा > प्रा० वेला। तुल० सिं० वेर, म० वेळ।

वेवहार—पु० हिं०, पुं० (व्यवहार)–सं० व्यवहार > प्रा० वेवहार > अव० ववहार (की०)।

वेवि—पु० हिं०, प्रा० प्र० वि०–(दोनों ही)–सं० द्वापि (द्वे अपि) > प्रा० दु + अवि > अव० वेवि (की०)।

वेश—पुं० (शरीर पर वस्त्र आदि की सजावट, भेष)–सं० वेश > पा० प्रा० वेस।

वेश्या — स्त्री० (रंडी)–सं० वेश्या > पा० वेसिया > प्रा० वेस्सा > अप० वेस (प०च०)। तुल० पं० वेशवा, सिं० गु० म० वेश्या, बं० अस० ओ० वेश्या, ते० वेश्य, त० वेसि, मल० वेश्य।

वेष्टित — वि० (लपेटा हुआ)–सं० वेष्टित > पा० वेठति, वेटित, प्रा० वेढिअ (पाइअ०) > महा० वेढइ, अर्धमा०, जै० महा० वेढेइ, शौ० वेढिद > अप० वेंढिअं (प०च०) > अव० वेढल (की०)।

वेसर—पुं० (१- गदहा, २- खच्चर)–सं० प्रा० वेसर > अव० वेसरि (की०)।

वैतरणी—स्त्री० (यम के द्वार के पास की एक कल्पित पौराणिक नदी)–सं० वैतरणी < अप० वइतरणि (प० च०)।

वैदेश — वि० (विदेश संबन्धी)–सं० वैदेश > प्रा० वइएश।

वैदेशिक—वि० (विदेश का)–सं० वैदेशिक (विदेश + ठक्) > पा० विदेसिक।

वैदेही—स्त्री० (सीता)–सं० वैदेही > प्रा० वेदेही > अप० वइदेहि (प०च०)।

वैद्य—पुं० (पंडित, जो आयुर्वेद का ज्ञाता हो)–सं० वैद्य (सं० विद् = जानना) > प्रा० वेज्ज (पाइअ०) > महाराष्ट्री, नै० महा० शौ० वेज्ज > अप० वेज्ज (प० च०)।

वैमानिक—वि० (विमान का चालक)–सं० वैमानिक > अप० वइमाणिय (प० च०)।

वैराग्य—पुं० (विरक्ति, उदासीनता)–सं० वैराग्य > प्रा० वइराग (पाइअ०) > अप० वइराय (प० च०)।

वैरी—पुं० (शत्रु)–सं० वैरिन् > पा० वेरि।

वैरिणी—स्त्री० (शत्रु)–सं० वैरिणी > अप० वइरिणि (प० च०)।

वैशाख—पुं० (चैत्र के बाद पड़ने वाले मास का नाम)– सं० वैशाख > पा० वेसाख। तुल० पं० विसाख (विसाख्), सिं० वेसाखु, ओ० बं० बैशाख, अस० बहाग, म० गु० वैशाख।

वैशाखी— स्त्री० (वैशाख मास की पूर्णिमा)–सं० वैशाखी > प्रा० वेसाही।

वैश्य—पुं० (भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ग, जिसके काम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कृषि, गो-रक्षा और वाणिज्य हैं)–सं० वैश्य>पा० प्रा० वेस्स, प्रा० वइस्स।

वैश्वानर—पुं० (अग्नि)–सं० वैश्वानर >प्रा० वइस्साणर, वइसानर, वेसानर (पाइअ०)।

वैषम्य—पुं० (विषमता, असमानता)–सं० वैषम्य>प्रा० वेसम्म।

वैसा—क्रि० वि० (१- उस प्रकार का, २- उस प्रकार, ३- उतना)–सं० अमूदृशः >अउइसो>वइसो>वैसा।

व्यंजक— पुं० (१- भाव-प्रकाशन की चेष्टा, २- वह शब्द जो गूढ़ार्थ को प्रकट करे)– वि०— (व्यंजित करने वाला)–सं० व्यञ्जक>प्रा० वंजय।

व्यंजन—पुं० (वर्ण, स्वर-भिन्न अक्षर)–सं० व्यञ्जन>प्रा० वंजण>हिं० व्यंजन।

व्यंजना— स्त्री० (१- प्रकट करनें की क्रिया, शब्द की तीन प्रकार की शक्तियों में से एक प्रकार की शक्ति या वृत्ति, जिसके द्वारा शब्द या शब्द-समूह के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न और ही अर्थ का बोध होता है)– सं० व्यञ्जना।

व्यंजित—वि० (व्यक्त किया हुआ)–सं० व्यञ्जित>प्रा० वंजिअ।

व्यक्त—वि० (प्रकट, स्पष्ट)–सं० व्यक्त >प्रा० विअत्त।

व्यधन—पुं० (वेधने की क्रिया, बींधना)–सं० व्यवधन>प्रा० विंधण।

व्यवसाय—पुं० (उद्यम, व्यापार, रोजगार)–सं० प्रा० व्यवसाय।

व्यवस्था—स्त्री० (१- प्रबन्ध, २-प्रक्रिया, ३- मर्यादा, स्थिति)– सं० व्यवस्था> प्रा० ववत्था।

व्यवस्थित—वि० (व्यवस्थायुक्त)– सं० व्यवस्थित>प्रा० ववत्थिअ।

व्यवहार—पुं० (१- आचरण, बरताव, २- प्रथा, रीति, ३- लेन-देन का काम, ४- व्यापार)– सं० व्यवहार>प्रा० ववहार।

व्यवहारी—पुं० (व्यवहार या वाद करने वाला)–सं० व्यवहारिन्>प्रा० ववहारि >अप० विवहारी।

व्याख्यान—पुं० (भाषण, किसी विषय की व्याख्या)–सं० व्याख्यान>पा० व्याख्खान>प्रा० वक्खाण। तुल० पं० वखाणना, सिं० वखाणणूँ, गु० वखाणवूँ।

व्याघ्र—पुं० (बाघ)–सं० व्याघ्र>पा० व्यग्घ>प्रा० वग्घ (पाइअ०)।

व्याध—पुं० (शिकारी, बहेलिया)–सं० व्याध>प्रा० वाह (पाइअ०) > अप० वाह (प० च०)।

व्यापन—पुं० (फैलाव, विस्तार)–सं० व्यापन>प्रा० वावण।

व्यापार—पुं० (१- काम, २- उद्योग, ३- प्रक्रिया, ४- कारबार, व्यवसाय)–सं० व्यापार>प्रा० वावार (पाइअ०) >अप० वावार (प० च०)।

व्यापारी—वि० (व्यापार वाला)–पुं० (सौदागर)– सं० व्यापारिन् > प्रा० वावारि>हिं० व्यापारी। तुल० सिं० वापारी, गु० वेपारी, ओ० बेपारी, मल० क० व्यापारि।

व्यायाम—पुं० (कसरत)–सं० व्यायाम >अप० वाम (प० च०)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्याल—पुं० (१- सर्प, २- दुष्ट हाथी, कोई हिंसक जंतु)- सं० व्याल>प्रा० वाल।

व्यावहारिक—वि० (व्यवहार संबन्धी)- सं० व्यावहारिक>प्रा० ववहारिअ।

व्याहृत— पुं० (१- बोलना, कहना, वार्त्ता करना, २- अस्पष्ट कथन, ३- निर्देश)- सं० व्याहृतम्>प्रा० वाहित्तं >अप० वाहित्त (प० च०)।

व्युत्पत्ति—स्त्री० (किसी पदार्थ का मूल, उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो, किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञान)-सं० व्युत्पत्ति (सं० वि +उत्+पद्+क्तिन्)।

व्युत्पन्न—वि० (जो किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या अभ्यासी हो)- सं० व्युत्पन्न (वि—उद्√पद्+क्त)।

व्यूह—पुं० (रचना-विशेष)- सं० व्यूह >प्रा० विऊह।

व्रण—पुं० (१-जख्म, घाव, २-फोड़ा)- सं० व्रण>पा० प्रा० वण>अप० वण (प० च०)।

व्रत—पुं० (१- किसी बात का पक्का सङ्कल्प, प्रतिज्ञा, २- पुण्य या धार्मिक अनुष्ठान के लिए नियमपूर्वक उपवास करना)-सं० व्रत>पा० वत।

व्रतिक—पुं० जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो)-सं० व्रतिन्>प्रा० अप० वइ।

श

शंकना— क्रि० (संशय करना, सन्देह करना)-सं० शङ्कते (शकि शङ्कायाम्) >प्रा० संक>हिं० शंक+ना (प्र०)।

शंकर—वि० (मंगलकारक, शुभ), पुं०- (शिव, महादेव जी, हिन्दू धर्म के एक आचार्य, शङ्कराचार्य)-सं० शङ्कर>प्रा० संकर>अप० संकरु।

शंका—स्त्री० (१-डर, खटका, २-सन्देह, संशय)-सं० शङ्का>पा० प्रा० सङ्का> अवधी संका। तुल० पं० उर्दू शक, कश्मी० शेंख, सिं० म० गु० ने० शंका, ते० मल० शंक।

शंकित—वि० (जिसे शंका हुई हो)-सं० शङ्कित > प्रा० संकिअ। तुल० ने० शंकित।

शंकु—पुं० (१- मेख, कील, २- खूँटी, ३- भाला, बरछा, ४- वह खूँटी जिससे प्राचीन काल में सूर्य या दीये की छाया नापी जाती थी)- सं० शङ्कु > प्रा० संकु।

शंख— पुं० (एक प्रकार का घोंघा, जिसमें रहने वाले जन्तु को मार कर लोग बजाने के काम में लाते हैं)-सं० शङ्ख> पा० सङ्ख> प्रा० संख> अव० शंख, अवधी संख। तुल० पं० संख, सिं० शंखु, बं० शंख, शाँख, त० शंगु, ने० शङ्ख, मल० शंखुं, क० शँख।

शंबर— पुं० (१- एक राक्षस जिसे प्रद्युम्न ने मारा था, २- एक पर्वत, ३- साबर मृग, ४- चित्रक वृक्ष, ५- लोध्र वृक्ष, ६- अर्जुन-विशेष, ७- युद्ध, ८- इंद्रजाल)-सं० शम्बर>प्रा० संबर।

शंबरारि—पुं० (१- प्रद्युम्न, जिन्होंने शंबर नामक राक्षस को मारा था, २-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कामदेव)–सं० शम्बर+अरि।

शंबूक—पुं० (१- शंख, २- खरदूषण का पुत्र)–सं० शम्बूक>प्रा० संबुक्क।

शंसिका— स्त्री० (किसी व्यक्ति या घटना के सम्बन्ध में आलोचना के रूप में प्रकट किया हुआ संक्षिप्त विचार, उप कथन, टिप्पणी)– सं० शंसा> प्रा० संसा।

शऊर—पुं० (कोई बात या काम करने का ठीक ढंग या तरीका)–अ० शुऊर।

शक[1]—पुं० (सन्देह)–अ० शक (क्क)।

शक[2]—पुं० (१- एक प्राचीन अनार्य जाति जो शक द्वीप की रहने वाली थी और म्लेच्छों में गिनी जाती थी, २- शकाब्द, ३- एक प्राचीन राजा का नाम, विशेषकर शालिवाहन का, ४- शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत् (ईसा के सन् के ७८ वर्ष पीछे शक संवत्सर का आरम्भ होता है)–सं० शक्र।

शकट—पुं० (गाड़ी, छकड़ा)–सं० शकट >पा० सकट>प्रा० सगड। तुल० ने० शकट।

शकटिका—स्त्री० छोटी गाड़ी, गाड़ी का खिलौना)–सं० शकटिका (शकट–ङीष् +कन्–टाप्, ह्रस्व)>प्रा० सगडिया।

शकटी—स्त्री० (गाड़ी)–सं० शकटी> प्रा० सगडी।

शकरखोर—वि० (शकर खाने वाला)– फ़ा० शकरखोर।

शकरदान—पुं० (शकर रखने का बरतन)–फ़ा० शकरदान।

शकल—पुं० (टुकड़ा, खंड)–सं० शकल >प्रा० सयल।

शकली—स्त्री० (सकुची मछली, मीन)– सं० शकलिन्>प्रा० सयलि।

शकुन[1]—पुं० (पक्षी)–सं० शकुन>पा० सकुण>प्रा० सउण।

शकुन[2]— पुं० (विशिष्ट पशु-पक्षी, व्यक्ति, वस्तु, व्यापार आदि के देखने-सुनने, होने आदि से मिलने वाली शुभ-अशुभ की पूर्व सूचना)– सं० शकुन> प्रा० सउण>अप० सउणय (प० च०)। तुल० सिं० सोगु, ने० शकुन, ते० शकुनमु, त० शगुनम्, पं० सगण, उर्दू शुगून, कश्मी० शा'गुन।

शकुनि—पुं०(गिद्ध पक्षी, पक्षी, पखेरू)– सं० शकुनि > पा० सकुणी > प्रा० सउणि। –पुं० (गांधारराज सुबल का एक पुत्र, दुर्योधन का मामा)– सं० शकुनिः।

शकुनी—स्त्री० (श्यामा पक्षी, गौरैया पक्षी की मादा)– सं० शकुनिका>प्रा० सउणिआ, सउणी।

शकुल—पुं० (सौरी मछली)–सं० शकुल >प्रा० सउल।

शक्कर—स्त्री० (चीनी, पक्की खांड)– सं० शर्करा>पा० सक्खर>प्रा० सक्करा >अप० सक्कर (प्र० चि०) >हिं० शक्कर। तुल० ने० सक्खर, शखर, पं० शक्कर, उर्दू शकर, म० साखर, त० शक्करै, क० सक्कर। पह० शकर, अ० शकर, फ्रें० सुकर (sucre), ग्रीक सक्खरोन, फ़ा० शकर, यूनानी सक्खरि अथवा सेक्खॉन, स्पे० आजुकार (azucar), बल्गा० ज़ाखर, मेसीडोनियन जाहर।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शक्की— वि० (शक या सन्देह करने वाला)–अ० शक+ई (प्र०)। भो० सकिया। तुल० ने० शक्की।

शक्त—पुं० (समर्थ या शक्तिवान्)–सं० शक्त>प्रा० सत्त।

शक्ति—स्त्री०(पराक्रम, बल, सामर्थ्य)–सं० शक्ति>पा० प्रा० सत्ति, अव० हिं० शक्ति। भो० सकती। तुल० पं० शकती, सिं० शक्ती, ते० त० मल० क० शक्ति, ने० शक्ति।

शक्ति-पाणि—पुं० (भालाधारी पुरुष, कार्त्तिकेय)–सं० शक्ति-पाणि।

शक्ति-पूजक—वि० (१-शक्ति का उपासक, २- वाममार्गी)– सं० शक्ति-पूजक >पा० प्रा० सत्ति+प्रा० पूअय।

शक्तिशाली—वि० (बलवान्, ताकतवर)–सं० शक्तिशालिन्।

शक्तिहीन—वि०(निर्बल, कमजोर)–सं० शक्तिहीन>प्रा० सत्तिहीण।

शक्ती—पुं० (एक प्रकार का मात्रिक-छंद जिसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ होती हैं)–सं० शक्ति।

शक्र—पुं० (दैत्यों का नाश करने वाले इंद्र)–सं० शक्र>प्रा० सक्क।

शक्रात्मज— पुं० (इन्द्रपुत्र जयन्त, अर्जुन)–सं० शक्र+आत्मज।

शक्रासन—पुं० (कुटज वृक्ष)–सं० शक्र +अशनम्।

शक्रोत्सव— पुं० (भाद्रशुक्ला १२ को किया जाने वाला इन्द्रोत्सव विशेष)–सं० शक्र+उत्सव>प्रा० सक्क+उस्सव।

शक्ल— स्त्री० (आकृति, मुखमंडल, हालत, चेहरा)–अ० शक्ल।

शख्स—पुं० (व्यक्ति)–अ० शख्स।

शख्सियत— स्त्री० (व्यक्तित्व)–अ० शख्सियत।

शगल— पुं० (मनोविनोद, कामधंधा, व्यापार)–अ० शग़ल।

शगूफा—पुं० (खिला हुआ फूल)–फ़ा० शिगूफः।

शची—स्त्री० (इन्द्र की स्त्री का नाम)–सं० शचि, शची (शच्+इन्)>प्रा० सची, सइ।

शजर—पुं० (वृक्ष)–पह० शजरा, अ० शजर।

शजरा—पुं० (१- वंश-वृक्ष, २- खेतों का वह नक्शा जो पटवारी अपने पास रखते हैं)–अ० शजरः।

शठ—वि० (कपटी, धूर्त, दुष्ट)– सं० शठ>पा० सठ>प्रा० सढ (पाइअ०)।

शठता—स्त्री० (१- दुष्ट उद्देश्य से किया जाने वाला कोई काम, २- शठ का धर्म या भाव)–सं० शठता (शठ+तल्+टाप्)>पा० सठता।

शण— पुं० (सन नामक पौधा, धान्य-विशेष, तृण-विशेष जिसके तंतु रस्सी आदि बनाने के काम में लाये जाते हैं)–सं० शण>प्रा० सण।

शत— वि० (सौ)–सं० शतम्>पा० सत, प्रा० सत, सय, अव० हिं० शत। तुल० ने० शत, बल्गा० स्तो, पुरानी बल्गा० सतो, अवेस्ता सतेम्।

शतक—पुं० (१- एक ही तरह की सौ वस्तुओं का समूह या संग्रह, २-शताब्दी)–सं० शतक> प्रा० सअग। तुल० ने० शयको, शतक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शत-कुंडी—स्त्री० (वह महायज्ञ जिसमें सौ कुंडों में एक साथ यज्ञ होता है)–सं० शत-कुण्ड (कुण्ड= हवन की अग्नि या जल-संचय के लिए खोदा हुआ गढ़ा)।

शतधा— क्रि० वि० (सौ तरह से, सैकड़ों प्रकार से)– सं० शतधा> पा० सतधा।

शतरंज—स्त्री० (एक प्रसिद्ध खेल)–फ़ा० शत्रंज। तुल० सिं० शतरंजु, गु० शेतरंज, बं० शतरञ्ज, अस० शतरंच, त० शतुरंगम्।

शतरंजबाज—वि० (शतरंज का अच्छा खिलाड़ी)–फ़ा० शत्रंजबाज़।

शतरंजी— स्त्री० (१- शतरंज का खिलाड़ी, २- शतरंज खेलने की बिसात, ३- ऐसी चादर या दरी जिसमें रंग-बिरंगे खाने बने हुए हों)–फ़ा० शत्रंजी।

शतांश—पुं० (सौ हिस्सों में से एक, १०० वाँ भाग)– सं० शतांश>प्रा० सतांस।

शताब्दी—स्त्री० (शती, सदी, सौ वर्षों की अवधि)–सं० शताब्दी। तुल० ते० शताब्दमु, म० शताब्दं, ने० शताब्दी।

शतायु— वि० (सौ० वर्षों की आयु वाला)– सं० शतायुस्>प्रा० सतायु।

शतालि— पुं० (भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिन देव का पूर्व जन्मीय नाम)–सं० शतालि>प्रा० सयालि।

शती—स्त्री० (सौ का समूह, सैकड़ा)–सं० शतिन्। तुल० ने० शती।

शत्रुंजय— पुं० (१- काठियावाड़ में पालीताना के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत जो जैनों का सर्व श्रेष्ठ तीर्थ है, २- एक राजा का नाम)–सं० शत्रुञ्जय> प्रा० सत्तुंजय।

शत्रुंदम—पुं० (एक राजा का नाम)–सं० शत्रुन्दम>प्रा० सत्तुंदम।

शत्रु—पुं० (दुश्मन)– सं० शत्रु>पा० प्रा० सत्तु। तुल० क० शथ्रुर, सिं० शत्रू, ते० शत्रुवु, क० शत्रु, बं० ओ० मल० शत्रु।

शत्रुता— स्त्री० (वैर, दुश्मनी)–सं० शत्रु+तल्+टाप्)। तुल० म० शत्रुत्व, बं० अस० ओ० शत्रुता।

शनाख्त—स्त्री० (पहचान)–फ़ा० शिनाख्त।

शनि—पुं० (ग्रह-विशेष, शनैश्चर)–सं० शनि>प्रा० सणि। ने० शनि। —वार, पुं० (शुक्रवार के बाद और रविवार के पहले का वार या दिन)–सं० शनिवार। ने० शनिवार।

शनैश्चर—पुं० (शनि-ग्रह, ग्रह-विशेष)–सं० शनैश्चर>प्रा० सणिचर।

शपथ—स्त्री० (सौगंध)–सं० शपथ> पा० सपथ। तुल० ने० म० गु० बं० अस० शपथ, ते० शपथमु, मल० शपथं। —ग्रहण, पुं० (किसी विशेष अवसर पर विधिवत् शपथपूर्वक कोई प्रतिज्ञा करने की रीति या भाव)– सं० शपथ-ग्रहण। —पत्र, पुं० (वह पत्र जो किसी बात की सत्यता प्राख्यापित करने के लिए शपथपूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाता है)–सं० शपथ-पत्र।

शफ—पुं० (१- वृक्ष की जड़, २- खुर, ३- नखी नामक गन्ध द्रव्य)–सं० शफ (√शम्+अच्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शफक—स्त्री० (सूर्य के निकलने और डूबने के समय क्षितिज पर दिखाई देने वाली लाली)–अ० शफ़क़ ।

शफरी— स्त्री० (एक प्रकार की मच्छली)–सं० शफरी>पा० सफरी> अप० सफरि (प० च०), अव० हिं० शफरी ।

शबनम—स्त्री० (ओस)–फ़ा० शबनम ।

शबबरात—स्त्री० (मुसलमानों का एक त्यौहार)–फ़ा० अ० शबबरात । भो० सुबरात ।

शबर—पुं० (दक्षिण में रहने वाली एक जंगली या पहाड़ी जाति–किरात, भील आदि)–सं० शबर>प्रा० सबर ।

शबरी—स्त्री० (भील जाति की स्त्री)–सं० शबरी>प्रा० सबरी ।

शबल—पुं० (देवों की एक जाति)–वि० (चितकबरा)–सं० शवल>प्रा० सबल ।

शबाब—पुं० (जवानी)–फा० शबाब ।

शबाहत—स्त्री० (१- रूप, २-आकृति, सूरत, ३-अनुरूपता)–अ० शबाहत ।

शबीह—स्त्री० (चित्र, तस्वीर)– फ़ा० शबीह ।

शब्द—पुं० अक्षरों, वर्णों आदि से बना और मुँह से उच्चारित होने या लिखा जाने वाला वह संकेत जो किसी कार्य, बात या भाव का द्योतक हो)–सं० शब्द >पा० प्रा० सद्द, अव० सद्द (की०), अवधी सबद । तुल ने० शब्द । —वेधी, पुं० (केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारने वाला)–सं० शब्द-वेधिन् ।

शमन— पुं० (१- वह ओषधि जो वातादि दोषों को वमन, विरेचन आदि द्वारा दूर करे, २- बढ़े हुए उपद्रव, कष्ट, दोष को दवाने की क्रिया, ३- शांति)– सं० शमन>प्रा० समण । तुल० ने० म० गु० बं० ओ० क० शमन, ते० शमनमु, मल० शमनं ।

शमशीर— स्त्री० (तलवार, खड्ग)– पह० शवशीर, फ़ा० शम्शीर ।

शमा—स्त्री० (मोमबत्ती)–अ० शमा' । —दान–पुं० (वह आधान जिसमें मोम-बत्ती जलाई जाती है)–अ० शमा+फ़ा० दान ।

शमित—वि० (शान्त किया हुआ)–स० शमित>पा० समित>प्रा० समिअ ।

शमिला—स्त्री० (युग-कीलक, गाड़ी की घोंसरी में दोनों ओर डाला लकड़ी का खीला)–सं० शमिला>प्रा० समिला ।

शमी—स्त्री० (१- सफेद कीकर, २- एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, ३- शिवा, फली)– सं० शमी>प्रा० समी ।

शय्या—स्त्री० (१- बिछौना, बिस्तर, २- सोने के लिए ओढ़ना-बिछौना)–सं० शय्या>प्रा० सेज्जा > सिज्जा । ने० शय्या । —दान, पुं० (मृत्यु के बाद मृत के संबंधियों का महापात्र को चार-पाई, बिछौना आदि दान देना)– सं० शय्या-दान ।

शर—पुं० (१- बाण, २- सरकंडा, ३- सरपत)–सं० शर>प्रा० सर । ने० शर ।

शरअ—स्त्री० (१- सीधा राह, २-कुरान में दी हुई आज्ञा, ३- धर्म, ४- दस्तूर)– अ० शरअ ।

शरण— स्त्री० (आश्रय, पनाह, रक्षा)– सं० शरण> पा० प्रा० सरण, अवधी सरन । तुल० ने० शरण, पं० कश्मी०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शरन, सिं० शरणि, ते० शरणु, मल० शरणं।

शरणार्थी—वि० (शरण मांगने वाला)–सं० शरणार्थिन्। तुल० पं० शरनारथी, ते० शरणार्थि, सिं० म० ओ० शरणार्थी।

शरत—स्त्री० (शरद ऋतु)– सं० शरद् >प्रा० सरय। तुल० सिं० सरउ, म० शरद, बं० अस० ओ० शरत्काल, ने० शरद्।

शरतिया— क्रि० वि० (शर्त के साथ, निश्चयपूर्वक, जरूर)– अ० शर्तियः। अवधी, सरतिया।

शरबत— पुं० (शक्कर डालकर मीठा किया हुआ पानी जो पिया जाता है)–अ० शर्बत > हिं० शरबत, अवधी सरबत। तुल ने० सर्बत, शरबत, सिं० शर्बतु, म० सरबत, ओ० सर्बत, ते० शरब्त्तु, त० शर्बत्तु।

शरभ—पुं० (१- राम की सेना का एक वानर, २- शिकारी पशु की एक जाति, ३- हाथी का बच्चा)–सं० शरभ>प्रा० सरह।

शरम—स्त्री० (लज्जा)– फ़ा० शर्म। तुल० ने० पं० म० गु० शरम, सिं० शरम, उर्दू शर्म। बंगा० शर्म।

शरमनाक—वि० (लज्जा-जनक)– फ़ा० शर्मनाक।

शर्मिंदा— वि० (लज्जित)– फ़ा० शर्मिंदः। भो० सरमीना।

शरमीला— वि० (लज्जालु)– फ़ा० शर्म +ईला (प्र०)।

शराकत—स्त्री० (साझा)– अ० शराकत।

शराकतनामा— पुं० (साझे का दस्तावेज)–अ० शराकत+फ़ा० नामः।

शराफत—स्त्री० (सज्जनता, सुशीलता)–अ० शराफ़त।

शराब—स्त्री० (मदिरा)–अ० शराब। तुल० ने० पं० उर्दू, कश्मी० गु० शराब, सिं० शराबु, त० शारायम।

शराबखोर—वि० (शराब पीने वाला)–अ० शराब+फ़ा० खोर।

शराबखोरी— स्त्री० (मद्यपान)–अ० शराब+फ़ा० खोरी।

शराबफरोश—वि० (शराब का ठेकेदार)–अ० शराब+फ़ा० फ़रोश।

शराबी—वि० (शराब पीने वाला)–अ० शरावी। अवधी सराबी। तुल० ने० शराबी।

शरारत—स्त्री० (दुष्कृत्य, उपद्रव)–अ० शरारत। तुल० पं० उर्दू शरारत।

शरारतन— वि० (बुरी नियत से, तंग करने के लिए)–अ० शरारतन।

शरासार— पुं० (बाण-वृष्टि)– सं० शरासार (शर+ आसार= बाणों की मूसलधार वृष्टि (आसार—आ√सृ+घञ्)>अव० सरासार (की०)।

शरीक—वि० (१- किसी काम में साथ देने वाला, २- शामिल)–अ० शारिकः।

शरीकदार— वि० (साझीदार)–अ० शरीक+फ़ा० दार।

शरीफ—वि० (सज्जन)–अ० शरीफ़।

शरीफा—पुं० (मझोले आकार का एक प्रसिद्ध वृक्ष, इस वृक्ष का फल)– सं० सीताफल>हिं० शरीफा, अवधी सरीफां। तुल० ने० शरीफ़ा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टि०—कोशकारों इसे श्रीफल (बेल का फल) से भी व्युत्पन्न माना है, जो कि अशुद्ध व्युत्पत्ति है। 'सीताफलं गण्डगात्रं कृष्णबीजं तथैव च'—यादव शर्मा, द्रव्य-गुण विज्ञान, पृ० ७२।

शरीर—पुं० (देह, तन)–सं० शरीर> पा० प्रा० सरीर>अप० सरीर, अव० सरीर(की०)>पुरानी राज० सरिर।[२४] पं० सरीर, सिं० सरीर, ते० शरीरमु, मल० शरीरं, म० गु० बं० अस० ओ० क० शरीर।

शर्त्त—स्त्री० (१- बाज़ी, २- दाँव, ३- पारस्परिक निश्चय, संविदा आदि से संबन्ध रखने वाली वे सब बातें जिनका पालन प्रायः नियम के रूप में सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है)–अ० शर्त। भो० सरत।

शर्त्तिया—क्रि० वि० (निश्चयपूर्वक)–अ० शर्तिय:।

शर्वरी—स्त्री० (रात्रि)–सं० शर्वरी> प्रा० सव्वरी।

शर्वल—पुं० (कुन्त, बर्छा)–सं० शर्वल >प्रा० सव्वल>हिं० सब्बल।

शर्वाणी—स्त्री० (पार्वती, दुर्गा)–सं० शर्वाणी (शर्व—आनुक—ङीष्)।

शर्विला[१]—पुं० (बर्छा)– सं० शर्विला >अव० सावर (की०)।

शलगम— पुं० (शलजम, एक प्रसिद्ध तरकारी)–फ़ा० शल्ग़म।

शलाका— स्त्री० (१- सलाई, सुरमा लगाने की सलाई, २- पिंजड़े, खिड़की आदि की छड़)– सं० शलाका>पा० सलाका>प्रा० सलागा, सलाया।

शल्य—पुं० (शरीर में घुसा हुआ काँटा, तीर आदि, अस्त्र-विशेष)–सं० शल्य> पा० प्रा० सल्ल>अव० सल्लि (की०)।

शल्यक—वि० (१- शल्य संबंधी, २- शल्य-चिकित्सा से संबंधित) – सं० शल्यक।

शव—पुं० (मृत शरीर)– सं० शव> प्रा० सव।

शवर— पुं० (एक प्राचीन जंगली जाति)–सं० शवर।

शशि—पुं० (चन्द्रमा)– सं० शशिन्> पा० ससी> प्रा० ससि। तुल० ने० शशि।

शस्य—पुं० (१- क्षेत्रगत धान्य, २-वृक्ष आदि का फल)–सं० शस्य>प्रा० सास। तुल० ने० शस्य।

शस्त्र—पुं० (१- हथियार, २- उपकरण, औजार, आयुध)– सं० शस्त्र>प्रा० सत्थ। तुल० पं० शसतर, सिं० शस्त्रु, म० गु० बं० अस० क० शस्त्र।

शहंशाह—पुं० (सम्राट्)– फ़ा० शाहं-शाह।

शह (पद०)—पुं० (बादशाह को रोकने वाला शतरंज का वह घात जिसमें किसी मोहरे के बल पर फरजी को आगे बढ़ा-कर शह दी जाती है, शतरंज की किश्त)–फ़ा० शह। —मात (पद०)– स्त्री० (पूरी हार)- फ़ा० शह+अ० मात।

शहजादा— पुं० (राजकुमार)– फ़ा० शाहज़ादः।

शहतीर—पुं० (लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्रायः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छत छाने के काम आता है)–फ़ा० शह-तीर। तुल० उर्दू शाहतीर।

शहद—पुं० (मधु)–फ़ा० शहद। तु० पं० शहिद, उर्दू शहद।

शहनाई—स्त्री० (नफीरी, वाद्य-विशेष)–फ़ा० शहनाई। तुल० क० शहनाई, ने० सनाई, सनाही, शहनाई; सिं० पं० शहिनाई, म० सनई, गु० शरणाई, बं० सानाइ, ते० सन्नाइ, म० शहनायि।

शहर—पुं० (मनुष्यों की बस्ती जो कस्बे से बहुत बड़ी हो, नगर)–पह० शहर, फ़ा० शह्र। तुल० पं० उर्दू ने० म० बं० शहर, कश्मी० शहर्, सिं० शहरु, गु० शहेर, ओ० सहर।

शहादत—स्त्री० (गवाही, धर्म या देश आदि के लिए बलिदान)–अ० शहादत।

शहीद— वि० (जिसने धर्म, देश या किसी लोक-हित के लिए बलिदान किया हो)–अ० शहीद। तुल० पं० उर्दू कश्मी० शहीद, सिं० शहीदु, बं० अस० ओ० शहीद।

शांखिक—वि० (शंख बजाने वाला, शंख संबन्धी)–सं० शाङ्खिक>प्रा० संखिय।

शांडिल्य— पुं० (१- गोत्र-विशेष, २- उस गोत्र में उत्पन्न)– सं० शाण्डिल्य> प्रा० संडेल्ल।

शांत—वि० (१- मौन, चुप, २- आवेग, चंचलता, वासना अथवा विकास से रहित)– सं० शान्त (√शम्+क्त)> प्रा० संत। तुल० कश्मी० शांथ, पं० म० गु० ओ० क० शांत, बं० शान्त, ते० शांतमु, म० शांतन्।

शांति—स्त्री० (१- क्रोध आदि का जय, उपशम, २- स्थिरता, चंचलता का अभाव, ३- अमंगल दूर करने का उपचार जैसे ग्रह-शांति)– सं० शान्ति>प्रा० संति। तुल० सिं० शांती, म० शांतता, शान्ति; गु० बं० असं० ओ० ते० मल० क० शान्ति।

शाक— पुं० (भाजी, तरकारी)–सं० शाक>प्रा० साग। –वि० (शक जाति संबंधी)–सं० शाक।

शाखदार—वि० (जिसमें डालिया हों)–सं० शाखा>फ़ा० शाखदार।

शाखा— स्त्री० (टहनी, डाला)–सं० शाखा। तुल० फ़ा० शाख, उर्दू सिं० शाख।

शागिर्द—पुं० (चेला)–फ़ा० शागिर्द।

शागिर्दी— स्त्री० (किसी गुरु से किसी कला या विद्या सीखना)–फ़ा० शागिर्दी।

शाटिका—स्त्री० (साड़ी, धोती)– सं० शाटिका>प्रा० साडिआ>अप० साडी (महा०)।

शाण—पुं० (शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यंत्र)–सं० शाण>प्रा० साण। तुल० कु० साणो, बं० सान, पं० ओ० साण।

शातकुंभ—पुं० (सुवर्ण, सोना)– सं० शातकुम्भ>प्रा० सायकुंभ।

शादी— स्त्री० (विवाह)–पह० फ़ा० शादी।

शाप—पुं० (किसी अनिष्ट की कामना से कहा हुआ शब्द या वाक्य, बददुआ, भर्त्सना)–सं० शाप (√शप्+घञ्)। तुल० ने० शाप।

शाबास— वि० अव्य० (एक प्रशंसा सूचक शब्द)– फ़ा० शादबाश shād-bash)। भो० साबस, अबधी स्याबास।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० पं० उर्दू शाबाश, सिं० म० शाबास, ओ० बं० साबास, त० सबासु।

शाम—स्त्री० (सांयकाल)–फ़ा० शाम। तुल० पं० उर्दू सिं० शाम, कश्मी० शाम्।

शामत—स्त्री० (दुर्भाग्य)–अ० शामत।

शामियाना—पुं० (छाया के लिए ताना जाने वाला कपड़ा)–फ़ा० शामियानः।

शामिल— वि० (सम्मिलित)– अ० शामिल।

शायद—अव्य० (सम्भव है, कदाचित्)–फ़ा० शायद। भो० साईत। तुल० पं० शाइद, उर्दू शायद, सिं० शायदि।

शायर—पुं० (कवि)– अ० शाइरः।

शायरी—स्त्री० (कविताएँ रचना)–अ० शाइरी।

शायिका—स्त्री० [शयनिका (स्लीपर)]–सं० शायिका (सं० शायिका+टाप्)। तुल० गु० शायिकी, ओ० बं० शयनिका। टि०—वल्गा० 'शायिका'— लघु शय्या (बच्चों को बैठाकर बरफ पर घुमाई जाने वाली लघु शय्या)।

शायिनी—स्त्री० (शयन करने वाली)–सं० शायिन्>प्रा० साइ।

शायी— वि० (सोने वाला)– सं० शायिन्।

शारंग— पुं० (साँप, मोर, दीपक, मेघादि, रात, वस्त्र)–सं० सारंग।

शार—वि० (१- चितकबरा, कई रंगों का, २- पीला, ३- नीले, पीले और हरे रंग का)। पुं०— (सार, पासा, खेलने के लिए काठ आदि का चौपहल रंग-बिरंगा साँचा)–सं० शार>प्रा० सार।

शारदा—स्त्री० (सरस्वती देवी)– सं० शारदा>प्रा० सारया।

शार्दूल—पुं० (श्वापद, पशु की एक जाति, बाघ) – सं० शार्दूल > प्रा० सद्दूल।

शार्ङ्ग—पुं० (१- धनुष, कमान, २- विष्णु का धनुष)–वि० (धनुषधारी, सींग का बना हुआ)–सं० शार्ङ्ग>अप० सारङ्ग (प० च०)।

शाल[1]—पुं० (वृक्ष-विशेष, साखू का पेड़)–सं० शाल>प्रा० साल।

शाल[2]—स्त्री० (ओढ़ने की एक प्रकार की गरम चादर)–फ़ा० शाल। तुल० पं० उर्दू सिं० म० गु० बं० ओ० शाल, ते० शाल्व, त० शाल्वै, मल० साल्व, क० शालु। अं०shawl।

शाला—स्त्री० (१- घर, २- स्थान, यथा–पाठशाला, धर्मशाला)–सं० शाला >प्रा० साला, साल। तुल० ने० शाला, स्पे० साला (निवास-कक्ष), ज० शूले (schule=विद्यालय)।

शालि—पुं० (जड़हन धान)–सं० शालि >फ़ा० शाली।

शालीन — वि० (लज्जाशील, सुशील, शिष्ट)–सं० शालीन। तुल० ने० म० गु० बं० क० शालीन, ओ० शाळीन।

शालूक — पुं० (भसींड, जल-कन्द-विशेष, कमल कन्द)–सं० शालूक>प्रा० सालुअ।

शाश्वत—वि० (सतत्, स्थायी, नित्य, सनातन)–सं० शाश्वत > प्रा० सासय (पाइअ०), अप० सासय (प० च०)। तुल० म० क० अस० ओ० शाश्वत, त०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाश्वतमु, मल० शाश्वतं ।

शासक—पुं० (वह जो शासन करता हो)–सं० शासक । तुल० गु० ने० बं० अप० ओ० शासक ।

शासन—पुं० (राज्य के कार्यों का प्रबन्ध और संचालन, हुकूमत) – सं० शासन (√ श.स् + ल्युट्) > प्रा० सासण । तुल० गु० बं० ओ० शासन ।

शासना—प्रा० प्र०,क्रि० (हुकूमत करना, शासन करना)–सं० शास् (हुकुम करना) >प्रा० सास>हिं० शास+ना ।–स्त्री० (आज्ञा)–सं० शासना>प्रा० सासणा (पाइअ०) ।

शास्त्र—पुं० (हितोपदेशक ग्रंथ, पुस्तक, तत्त्व-ग्रंथ, किसी विशिष्ट विषय से संबन्धित क्रमबद्ध ज्ञान, जिसे संग्रह करके रखा गया हो)–सं० शास्त्र>पा० प्रा० सत्थ । भो० साहतर । तुल० ने० शास्त्र ।

शाह—पुं० (राजा)–पह० फ़ा० शाह ।

शाही — वि० (बादशाहों का)–फ़ा० शाही ।

शिंघानक—पुं० (श्लेष्मा, नाक में से बहता हुआ द्रव पदार्थ)–सं० शिङ्घानक> प्रा० संघाणय ।

शिंजन—पुं० (१- धातुखंड का परस्पर बजना, झंकार करना, २- झंकार, अस्पष्ट शब्द, भूषण की आवाज)–सं० शिञ्जन >प्रा० सिंजण ।

शिंबा—स्त्री० (१- छीमी, फली, २- सेम, ३- शिंबी धान्य)–सं० शिम्बा> प्रा० सिंबा ।

शिकंजा—पुं० (कोई ऐसा यंत्र जिससे कोई चीजें कसकर दबाई जाती हों)–फ़ा० शिकंजः ।

शिकन — स्त्री० (सिलवट, सिकुड़न, झुर्री)–फ़ा० शिकन ।

शिकवा — पुं० (शिकायत) – फ़ा० शिकवा ।

शिकस्त — स्त्री० (पराजय) – फ़ा० शिकस्त । भो० सिकस्त ।

शिकायत—स्त्री० (१- चुगली, २- उपालंभ, उलाहना, ३- निन्दा, ४- रोग)–अ० शिकायत । तुल० पं० शिकाइत, कश्मी० शकायथ, सिं० उर्दू शिकायत ।

शिकायतनामा—पुं० (वह पुस्तक जिसमें शिकायतें लिखी जाती हैं)–अ० शिकायत +फ़ा० नामः ।

शिकार—पुं० (आखेट, अहेर)–फ़ा० शिकार । भो० सिकरवा । तुल० गु० पं० उर्दू कश्मी० बं० शिकार, सिं० शिकारु, ने० शिकार ।

शिकारी—पुं० (शिकार करने वाला)–फ़ा० शिकारी । तुल० ने० शिकारी ।

शिक्षा—स्त्री० (किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया)–सं० शिक्षा>प्रा० सिक्खा, अव० हिं० शिक्षा । तुल० ने० शिक्षा, पं० सिखिआ, सिं० सिख्या, बं० शिक्षा, शेखा, ओ० शिख्या ।

शिखंडी—पुं० (१- मोर, २- मुरगा, ३- तीर, ४- मयूरपुच्छ, ५- घुँघची, ६- द्रुपद का पुत्र)–सं० शिखण्डिन् ।

शिखर—पुं (१- पर्वत की चोटी, २- किसी चीज का सबसे ऊपरी भाग, सिरा, चोटी, कलश, कंगूरा)–सं० शिखर> प्रा० सिहर>अव० सेहर (की०) । तुल० पं० सिखर, ने० म० गु० बं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस० ओ० क० शिखर।

शिखरिणी—स्त्री० (उत्तम स्त्री, रोमावली, सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके छटे और ग्यारहवें वर्ण पर यति हो)–सं० शिखरिणी > अप० सिहरिणि (प० च०)।

शिखरी—पुं० (पर्वत)–सं० शिखरिन् > अप० सिहरि (प० च०)।

शिखा[1] — स्त्री० (छन्द-विशेष)– सं० शिखा > अप० सिक्खा।

शिखा[2]—स्त्री० (चोटी, सिर पर के बालों का गुच्छा)–सं० शिखा > प्रा० सिहा।

शिखि—पुं० (१- अग्नि)–सं० शिखिन् > प्रा० सिहि (पाइअ०), अप० सिहि (प० च०) (२- मयूर, पर्वत)-सं० शिखिन् > प्रा० सिहि। (३- बाण, घोड़ा, घमंडी, शिखाधारी, वृक्ष, ब्राह्मण, साधु)– सं० शिखिन्।

शिताब—क्रि० वि० (जल्द, शीघ्र)–फ़ा० शिताब।

शिथिल—वि० (ढीला)–सं० शिथिल > प्रा० सिढिल। अवधी सिथिल। तुल० गु० बं० अस० शिथिल, ओ० शिथिळ, ते० शिथिलमु, मल० शिथिलं।

शिद्दत से—क्रि० वि० (जोर से, तेजी से)–अ० शिद्दत + हिं० से।

शिनाख्त — स्त्री० (पहचान) – फ़ा० शिनाख्त। अवधी सिनाखत।

शिया, शीया—पुं० (एक मुसलमानी सम्प्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है)–अ० shi'ah।

शिर—पुं० (मस्तक, माथा, सिर)–सं० शिरस् > प्रा० सिर। तुल० ने० शिर।

शिरकत—स्त्री० (१- शरीक होने की अवस्था, २- साझेदारी)–अ० शिर्कत। तुल० उर्दू शिर्कत, कश्मी० शर्यकात, सिं० शिरकत।

शिरनी—स्त्री० (मिठाई)–पह० फ़ा० शीरीनी।

शिरस्त्राण—पुं० (लोह टोप, वह टोप जो युद्ध आदि के समय सैनिक सिर पर पहनते हैं)–सं० शिरस्त्राण। तुल० म० बं० अस० ओ० शिरस्त्राण, ते० शिरस्त्राणमु।

शिरोमणि—पुं० (श्रेष्ठ पुरुष, २- सिर पर धारण करने का रत्न) – सं० शिरोमणि। तुल० पं० सिरोमणी, सिं० शिरोमणी, ओ० ते० गु० म० शिरोमणि।

शिला—स्त्री० (चट्टान, सिल)–सं० शिला > प्रा० अवधी सिला। तुल० ने० शिला।

शिलालेख—पुं० (पत्थर पर गुदा हुआ लेख) – सं० शिला-लेख। तुल० पं० सिलालेख, सिं० शिलालेखु, ने० म० गु० शिलालेख।

शिलीमुख—पुं० (१- भ्रमर, २- तीर, ३- मूर्ख, ४- युद्ध)–सं० शिलीमुख > अप० सिलिम्मुह (प० च०)।

शिल्प—पुं० (हस्तकला, दस्तकारी)–सं० शिल्प (√ शील् + प, ह्रस्व) प्रा० सिप्प। तुल० पं० शिलप, बं० शिल्प, ओ० शिळ्प, ते० शिल्पमु, त० शिर्पम्।

शिल्पी—पुं० (शिल्पकार)–सं० शिल्पिन् > प्रा० सिप्पि। तुल० पं० शिलपी, गु०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बं० अस० शिल्पी, ओ० शिळ्पी, ते० शिल्पि, त० शिर्पि, म० क० शिल्पि।

शिवंकर — पुं० (मंगल करने वाले शिव)–सं० शिवङ्कर > प्रा० सिवंकर।

शिव — पुं०(१- मंगल, कल्याण, २- महादेव, ३- देव-विशेष, ४- परमेश्वर भगवान)–सं० शिव > प्रा० सिव। तुल० ने० शिव।

शिव-शिव—विस्म० (घृणासूचक)–सं० शिव।

शिवाला—पुं० (शिव जी का मंदिर)–सं० शिवालय > प्रा० सिवालअ > हिं० शिवाला, अवधी सिवाला। तुल० ने० शिवालय।

शिविका—स्त्री० (पालकी, डोली)– सं० शिविका > प्रा० सिविया।

शिविर—पुं० (पड़ाव, छावनी)–सं० शिविरम् > प्रा० शिविर > अप० सिमिर (प०च०)। तुल० अस० बं० ओ० म० गु० शिबिर, ते० शिविरमु।

शिशिर—पुं० (एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है)–सं० शिशिर > प्रा० सिसिर (पाइअ०), अप० सिसिर (प० च०)।–वि० (ठंडा, शीतल)–सं० शिशिर।

शिशु—पुं० (सात आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा)–सं० शिशु > प्रा० सिसु। कश्मी० शुर, म० अस० शिशु, ते० शिशुवु, त० शिरुवन, ने० क० शिशु।

शिशुमार—पुं० (सूँस नामक जलजन्तु, एक नक्षत्र-मण्डल जिसकी आकृति मगर या सूँस की तरह है)–सं० शिशुमार > अप० सुंसुअर।

शिश्न—पुं० (पुरुष-लिंग)–सं० शिश्न > प्रा० सिण्ह। तुल० ने० शिश्न।

शिष्य★—पुं० (शिष्य) – सं० शिष्य > जै० महा०, शौ० सिस्स, अ० मा० और जै० महा० सीस > अप० सीस (प०च०)। तुल० पं० शिश, सिं० शिष्यु, म० गु० आ० बं० क० शिष्य, ते० शिष्युडु।

शिष्ट—वि० (सभ्य, सज्जन)–सं० शिष्ट (√शिष् वा √शास् + क्त) > अप० सिट्ठ)। तुल० गु० ने० बं० अस० ओ० शिष्ठ, ते० शिष्टुडु, मल० शिष्टन्।

शिष्टता — स्त्री० (शिष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव, सौजन्य)–सं० शिष्टता (शिष्ट+तल्—टाप्)। तुल० ने० गु० बं० अस० ओ० शिष्टता, ते० म० शिष्टत।

शीकर—पुं० (१- तुषार, ओस, २- जलकण, ३- शीत, जाड़ा)–सं० शीकर > अप० सीयर (प० च०)।

शीघ्र—क्रि० वि० (अविलंब, जल्द, फौरन)–सं० शीघ्रम्। तुल० सिं० सिघो, अस० शीघ्रे, ते० शीघ्रमु, मल० शीघ्रं, ने० म० गु० बं० ओ० शीघ्र।

शीत—पुं० (१- शीत-काल, २- ओस, तुषार, ३- सर्दी ठंड)–सं० शीत > प्रा० सीअ > अप० सीय। तुल० ने० शीत।

शीतकाल—पुं० (शीत ऋतु, जाड़े का मौसम) – सं० शीतकाल > अप० सीयालय। तुल० गु० शीयालो। तुल० ने० शीतकाल।

शीतल—वि० (१- ठंडा, सर्द)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शीतल > प्रा० सीअल > अप० सीयलय (प० च०), अवधी सीतल। तुल० पं० सीतल, सिं० सीतलु, म० ओ० शीतळ, ते० शीतलमु, ने० शीतल।

शीरीनी—स्त्री० (मिष्टान्न, मिठाई, खाने की वस्तु जिसमें खूब चीनी या मीठा पड़ा हो)–फ़ा० शीरीनी > अव० सेरणी (की०)।

शीश✱—पुं० (शिर)–सं० शीर्ष > प्रा० सीस > हिं० शीश।

शीशा—पुं० (काँच)–फ़ा० शीशः। तुल० सिं० शीशो, ने० पं० शीशा।

शीशी—स्त्री० (बोतल के आकार का छोटा पात्र)–फ़ा० शीशः। तुल० पं० उर्दू सिं० गु० शीशी, बं० ओ० शिशि, कश्मी० शीशुँ। बल्गा० शिशे।

शीर्ष[1]—पुं० (सिर)–सं० शीर्ष > प्रा० सीस। तुल० उर्दू सर, कश्मी० शेर, सिं० सिरु, गु० सिर, अस० शिर, ते० शिरमु।

शीर्ष[2]—पुं० (१- किसी चीज का सबसे ऊपरी तथा उन्नत सिरा)–सं० शीर्ष > प्रा० सीस। तुल० पं० सिरा, सिं० सिरो, म० गु० बं० अस० ओ० शीर्ष, ते० शीर्षमु।

शुंडा—स्त्री० (१- सुरा, दारू)–सं० शुण्डा > प्रा० सोंडा।–(२- हाथी की सूंड, वेश्या, कुटनी, दूती)–सं० शुण्डा।

शुंडिका—स्त्री० (दारू का पात्र-विशेष)–सं० शुण्डिका > प्रा० सोंडिया।

शुंडी — पुं० (हाथी, शराब बेचने वाला)–शुण्डिन् > प्रा० सुंडिअ (कलवार, दारू बेचने वाला)।

शुक—पुं० (तोता)–सं० शुक > प्रा० सुक, सुअ > अप० सुअ (प० च०)। तुल० ने० शुक।

शुक्र—पुं० (ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह, दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य)–सं० शुक्र > प्रा० सुक्क। भो० सूक। तुल० पं० शुक्कर, सिं० शुकरु, म० गु० बं० अस० ने० ओ० शुक्र। ते० शुक्रुडु।

शुक्रिया—पुं० (धन्यवाद)–अ० शुक्रियः।

शुक्ल—वि० (सफेद, उजला, धवल)–सं० शुक्ल > प्रा० सुक्क, अ० मा० सुक्किल।

शुगुन—पुं० (शकुन)–फ़ा० शुगुन।

शुचि—स्त्री० (पवित्रता, स्वच्छता)–सं० शुचि > प्रा० सुइ। तुल० ने० शुचि।

शुतुर—पुं० (ऊँट)–फ़ा० शुतुर।

शुतुरमुर्ग—पुं० (एक बहुत बड़ा पक्षी जो अफ्रीका में होता है, उष्ट्रपक्षी)–फ़ा० शुतुरमुर्ग। तुल० म० गु० शहामृग, पं० उर्दू शुतरमुर्ग, कश्मी० शुतर्मुर्ग।

शुद्ध—वि० (पवित्र, निर्मल)–सं० शुद्ध > प्रा० सुद्ध। भो० सूचा। तुल० ने० पं० शुद्ध, कश्मी० शॅद, ते० शुद्धमु। बल्गा० चिस्त।

शुद्धता—स्त्री० (पवित्रता)–सं० शुद्धता। तुल० म० गु० ने० शुद्धता, मल० शुद्धत।

शुद्धि — स्त्री० (शुद्धता, निर्मलता, निर्दोषता)–सं० शुद्धि > प्रा० सुद्धि, सोहि।

शुद्धैषणिक—वि० (निर्दोष आहार की खोज करने वाला)–सं० शुद्धैषणिक > प्रा० सुद्धेसणिअ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुनक — पुं० (कुक्कुर, कुत्ता)–सं० शुनक > प्रा० सुणय, सुणह।

शुनकी – स्त्री० (कुत्ती, मादा-कुक्कर)–सं० शुनकी > प्रा० सुणहिल्लया।

शुबहा—पुं० (सन्देह)–अ० शुब्हः।

शुभंकर—पुं० (वरुण नामक लोकतांत्रिक)–सं० शुभंकर > प्रा० सुभंकर।

शुभ — वि० (सुन्दर, कल्याणप्रद, अच्छा)–सं० शुभ (√शुभ्+क) > प्रा० सुभ। तुल० ने० शुभ।

शुभकर — वि० (शुभ कारक)–सं० शुभकर > प्रा० सुहंकर।

शुमार—पुं० (१- गिनती, गणना, २- हिसाब, लेखा)–पह० फ़ा० शुमार।

शुमारी—स्त्री० (गिनने का काम)–फ़ा० शुमारी।

शुरू—पुं० (प्रारंभ)–अ० शुरूअ। तुल० ने० पं० शुरू, उर्दू शुरूअ, कश्मी० शोरु बं० शुरु।

शुरूआत — स्त्री० (प्रारम्भ) – अ० शुरूआत।

शुल्क—पुं० (वह धन जो वस्तुओं की उत्पत्ति, उपभोग, आयात, निर्यात आदि करने पर कानून कर के रूप में देय हो)–सं० शुल्क > प्रा० सुंक, सुक्क। तुल० गु० ने० शुल्क, अस० शुलक, ते० शुल्कमु।

शुश्रुषण, शुश्रूषणा — स्त्री० (सेवा, शुश्रूषा)–सं० शुश्रुषण, शुश्रूषणा > प्रा० सुस्सूसण, सुस्सूसणा, सुस्सूसणया।

शुश्रूषा —स्त्री० (सेवा)–सं० शुश्रूषा > प्रा० सुस्सूसा।

शुषिर—वि० (पोला, खाली, छूँछा)–सं० शुषिर > प्रा० सुसिर।

शुष्क—वि० (सूखा)–सं० शुष्क > प्रा० सुक्क, सुस्ख; अ० मा०, जै० महा० सुक्क > अप० सुक्कय (प० च०)। भो० सुकठा। तुल० पं० सुक्का, बं० म० गु० शुष्क, अस० शुकान, ते० शुष्कमु, मल० शुप्कं। बल्गा० सुखो, रूसी सूखा।

शूक—पुं० (धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्रभाग)–सं० शूक > प्रा० सूअ।

शूकर—पुं० (सूअर, वराह)–सं० शूकर > प्रा० सूअर > पप० सूयर (प० च०)। तुल० गु० सूवर।

शून्य—पुं० (बिंदु, सहिफ़र, जीरो)–सं० शून्य > अप० सुण्णय > भो० सूने। तुल० म० अस० शून्य, ते० सुन्न, क० सा'न्न'। ज० नुल (null), बल्गा० नुला। –वि० (रिक्त, खाली)–सं० शून्य > प्रा० सुण्ण। तुल० कश्मी० शिन्यह, म० गु० बं० अस० ओ० शून्य, ते० शन्यमु।

शून्यगृह—पुं० (खाली घर, उजड़ा हुआ घर)–सं० शून्यगृह > अप० सुण्णहर (प० च०)।

शूर—वि० (पराक्रमी)–सं० शूर > प्रा० सूर > अव० सूर (की०)।

शूल—पुं० (१- लोहे का सुतीक्ष्ण काँटा, शूली, २- शस्त्र-विशेष, ३- रोग-विशेष, ४- बबूल आदि का तीक्ष्ण अग्रभाग वाला काँटा)-सं० शूल > प्रा० सूल।

शूला—स्त्री० (शूली, सुतीक्ष्ण लोह-कंटक)–सं० शूला > प्रा० सूला।

शृंखला—स्त्री० (१- क्रम, सिलसिला, २- साँकल, ३- मेखला, ४- चाँदी का

Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं, तागड़ी)–सं० शृङ्खला > प्रा० संकल (पाइअ०)। तुल० गु० शृंखला, ओ० शृंखळा, म० ते० शृंखल।

शृङ्ग—पुं० (सींग)–सं० शृङ्ग>प्रा० सिंग>अप० सिङ्ग (प० च०)।

शृंगार—पुं० (सौन्दर्य-वृद्धि के लिए सौन्दर्य-प्रसाधनों द्वारा बनाव-सजाव)–सं० शृंङ्गार>प्रा० सिंगार। तुल० पं० शिंगार, उर्दू कश्मी० सिंगार, सिं० सिंगारु, ते० शृंगारमु, क० सिंगार।–पुं० (साहित्य में एक रस)–तुल० पं० शिंगार, सिं० शृंगार रसु, क० शृंगार, म० गु० अस० शृंगार रस।

शृंगि—पुं० (१- वह पशु जिसके सिर पर सींग हों, सींग वाला जानवर)–सं० शृंगिन् > अव० सीगिनि (की०)। (२- आभूषणों के लिए सोना, स्त्री० सिंगी मछली)–सं० शृंगि।

शृंगी—पुं० (१- वृक्ष, हाथी, पहाड़)–सं० शृंङ्गिन्>प्रा० सिंगि।–(२- एक प्रकार का विष, सिंगी मछली, एक ओषधि)–सं० शृंगी।

शृगाल—पुं (सियार, गीदड़) – सं० शृगाल>प्रा० सिआल>अप० सिवाल >अव० सियालू (की०)>सियार। तुल० पह० फ़ा० शग़ाल।

शेखर—पुं० (षट्पट छन्द का एक भेद)–सं० शेखर >प्रा० अप० सेहर। –पुं० (शिखा)–सं० शेखर>प्रा० सेहर।

शेखी — स्त्री० (डींग, शान) – तु० शेखी।

शेटिठचत्तज[1]—पुं० ('मृच्छकटिक' में सेठों के मुहल्ले का नाम)–सं० श्रेष्ठि-चत्वर>प्रा० सेट्ठिचच्चर।

शेफाली — स्त्री० (लता-विशेष)–सं० शेफाली>प्रा० सेहाली।

शेर—पुं० (गजल के दो चरण, व्याघ्र)–पह० sher, फ़ा० शे'र। तुल० पं० शेर, उर्दू शेरबबर।–स्त्री०–(शेरनी)। तुल० पं० शेरणी, उर्दू शेरनी।

शेष—वि० (बचा हुआ, बाकी)–सं० शेष>प्रा० सेस। तुल० गु० बं० ओ० शेष, ते० शेषमु।–पुं० (शेषनाग, सर्प-राज, छन्द का एक भेद)–सं० शेष> प्रा० सेस।

शैक्ष— पुं० (नव दीक्षित साधु, जिसको दीक्षा दी जाने वाली हो, शिष्य)–सं० शैक्ष>प्रा० सेह।

शैतान—पुं० (धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करने वाली शक्ति या तमोगुणमय देवता)–अ० शैतान>अवधी सैतान।

शैलकज — पुं० (एक गोत्र) – सं० शैलकज>प्रा० सेलयम।

शैलू—पुं० (श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष)–सं० शैलु>प्रा० सेलु।

शैलेश—पुं० (मेरु पर्वत)–शैलेश>प्रा० सेलेस।

शैलेशी—स्त्री० (मेरु की तरह निश्चल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था)–सं० शैलेशी>प्रा० सेलेसी।

शैला—स्त्री० (तीसरी नरक—पृथिवी)–सं० शैला>प्रा० सेला।

शैल्य—पुं (एक राजा)–सं० शैल्य> प्रा० सेल्ल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शैवाल—पुं० (सिवार, सेवार, एक प्रकार की घास जो नदियों में लगती है)–सं० शैवाल>प्रा० सेवाल, सेवाड, सेवल।

शैवालिन—पुं० (एक तापस, जिसको गोतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था)–सं० शैवालिन्>प्रा० सेवालि।

शैतान—पुं० (ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता, जो मनुष्यों को धर्म-मार्ग से हटाता है, २- प्रेत, ३- दुष्ट)–अ० शैतान। तुल० पं० उर्दू शैतान, कश्मी० शेतान, सिं० शैतानु, म० सैतान, गु० बं० शयतान, ओ० सइतान, क० सैतान।

शैली—स्त्री० (ढंग, तरीका, पद्धति)–सं० शैली (शील+ष्यञ्)। तुल० ओ० शैळी।

शैशव—पुं० (शिशु होने की अवस्था)–स० शैशव>प्रा० सेसव। म० गु० बं० शैशव, अस० शैशब, ते० ओ० शैशवमु, मल० शैशवं, क० शैशव।

शोक—पुं० (मनोविनोद प्राप्ति के लिए कोई काम बराबर करने की स्वाभाविक लालसा)–अ० शौक। अवधी सोग। तुल० पं० सोग, कश्मी० शूख, सिं० शोकु, म० गु० बं० अस० शोक, ते० शोकमु।

शोचन—पुं० (शोक, रंज)–सं० शोचन >प्रा० सोअण।

शोण—वि० (लाल, रक्त वर्णवाला)–सं० शोण>प्रा० सोण।

शोणित—वि० (लाल. रक्त वर्ण का)–पुं० (रुधिर)–सं० शोणित >. प्रा० सोणिअ>अप० सोणिय (प० च०)।

शोध—पुं० (खोज)–सं० शोध>प्रा० सोह। तुल० म० शोध, गु० संशोधन।

शोधक—वि० (शुद्धि-कर्त्ता, सफाई करने वाला)–सं० शोधक>प्रा० सोहय।

शोधना—क्रि० (१- शुद्ध करना, साफ़ करना, २- दुरुस्त करना, ३- खोजना)–सं० शोधय्>प्रा० सोह>हिं० शोध+ना।

शोधनी — स्त्री० (संमार्जनी, झाड़ू, बुहारी)–सं० शोधनी>प्रा० सोहणी।

शोधित—वि० (साफ कराया हुआ)–सं० शोधित>प्रा० सोहाविय > अप० सोहिय (प० च०)।

शोध्य—वि० (शुद्धि-योग्य, शोधनीय)–सं० शोध्य>प्रा० सोज्झ।

शोभन—वि० (चमकने वाला, सुन्दर, शोभायुक्त)–सं० शोभन>अव० सोहणा (की०)।

शोभना[1] — क्रि० (शोभित होना, सोहना) – सं० शोभय्, सं० शुभति (√शुभ, शोभार्थे)>प्रा० सोभ, सोभेइ >हिं० शोभ+ना।

शोभना[2]—स्त्री०(सुन्दर या सती स्त्री)–सं० शोभना>प्रा० सोहणा।

शोभा — स्त्री० (कांति, चमक)–सं० शोभा>प्रा० सोहा। अवधी सोभा। तुल० पं० सोभा, कश्मी० शूब, सिं० सोभ्या, ते० शोभ, सोबगु; गु० बं० अस० शोभा।

शोभित—वि० (शोभा से युक्त)–सं० शोभित>प्रा० सोहिअ>अप० सुहासिय अव० सोहिया (की०)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोर—पुं० (कोलाहल)–फ़ा० शोर। अवधी सोर। तुल० पं० उर्दू शोर, कश्मी० शोर्।

शोरबा—पुं० (गोश्त का पका हुआ रस, पके हुए मांस का पानी)–अ० शोरबा > अवधी सुरुआ, भो० सुरुवा। तुल० बंगा० चोरबा।

शोला—पुं० (एक छोटा पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत हल्की होती है)–देशज।

शोषण—पुं० (परोक्ष उपायों से किसी के धन को धीरे-धीरे अपने हाथ में करना)–सं० शोषण > अप० सोसण (प०च०)। तुल० पं० शोशण, म० गु० अस० बं० ओ० शोषण, ते० शोषणमु।

शोहदा—पुं० (बदमाश, गुंडा)–अ० शोहदा। तुल० उर्दू शोहदा, ते० म० सोदा, त० चोदा, सोदा।

शौंडिक—पुं० (दारू बेचने वाला)–सं० शौण्डिक > प्रा० सुंडिअ।

शौंडीर—वि० (१- बहुत घमंड करने वाला, अहंकारी, अभिमानी, उद्दंड)–सं० शौण्डीर > अप० सोण्डीर (प०च०)।

शौक—पुं० (अभिलाषा, उत्कंठा, अधिक चाह, लगन, व्यसन, टेव)–अ० शौक। भो० सउक, अवधी सौक, सौख, ने० सोख।

शौकीन—वि० (जिसे किसी काम, चीज का बहुत शौक हो)–अ० शौक + ईन (हिं० प्र०)। अवधी सौखीन।

शौच—पुं० (शुद्धता, पवित्रता)–सं० शौच > प्रा० सोअविय (पाइअ०), अवधी सउच।

शौनिक—पुं० (कसाई)–सं० शौनिक > प्रा० सुणिअ।

शौरसेनी — स्त्री० (शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद)–सं० शौरसेनी > प्रा० सोरसेणी।

शौल्किक—वि० (शुल्क लेने वाला, चुंगी पर नियुक्त पुरुष)–सं० शौल्किक > प्रा० सुंकिअ।

शौवनिक — वि० (कुत्तों को पालने वाला)–सं० शौवनिक > प्रा० सोवणिअ।

श्मशान—पुं० (मरघट, वह स्थान जहाँ मुरदे जलाये जाते हैं)–सं० शवसान।

श्याम—वि० (१- काला और नीला मिला हुआ रंग, गहरा हरा, २- काला, साँवला)–सं० श्याम > प्रा० साम, अव० हिं० श्याम।

श्यामल — वि० (कृष्ण, काला रंग वाला)–सं० श्यामल > प्रा० सामल।

श्यामला — स्त्री० (कृष्ण वर्ण वाली स्त्री)–सं० श्यामला > प्रा० सामला।

श्यामा—स्त्री० (१- नारी, काले रंग की स्त्री, २- रात, रात्रि, ३- गौ, ४- प्रियंगु-लता, ५- नील का पौधा, ६- शीशम, ७- हरी दूब, ८- तुलसी, ९- यौवन मध्यस्था)–सं० श्यामा > प्रा० साम।

श्याल—पुं० (साला, वहू का भाई)–सं० श्याल > प्रा० शिआल, साल > अप० सालथ (प०च०)।

श्येन—पुं० (पक्षि-विशेष, विद्याधर वंश का एक राजा)–सं० श्येन > प्रा० सेण।

श्रद्धा—स्त्री० (पूज्य और बड़े लोगों के प्रति आदरपूर्ण आस्था या भावना)–सं० श्रद्धा > पा० सद्धा > प्रा० सद्दहा, सद्धा। अवधी सरधा। तुल० प०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शरधा, कश्मी० श्रदा, सिं० म० गु० बं० अस० ओ० श्रद्धा, ते० श्रद्ध।

श्रद्धालु—वि० (जिसके मन में श्रद्धा हो)–सं० श्रद्धालु>पा० सद्धालु।

श्रम—पुं० (परिश्रम, आयास)–सं० श्रम >प्रा० सम। तुल० कश्मी० गु० अस० ओ० ते० श्रम।

श्रमण—पुं० (भगवान् महावीर, २-बौद्ध या जैन मतावलंबी संन्यासी, ३-मुनि, ४- भिक्षुक)–सं० श्रमण >पा० प्रा० समण।

श्रमिक—पुं० (मजदूर)–सं० श्रमिक> प्रा० समिअ (वि०, श्रमयुक्त)। तुल० म० गु० बं० अस० श्रमिक।

श्रविष्ठा—स्त्री० (धनिष्ठा नक्षत्र)–सं० श्रविष्ठा>प्रा० सविट्ठा।

श्राद्ध—(पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण, पिण्ड-दानादि)–सं० श्राद्ध>प्रा० सद्ध। भो० सराधि। पं० उर्दू सराध, कश्मी० श्राद, सिं० श्राधु, अस० श्राद्ध, मल० श्राद्धम्।

श्राप—पुं० (दुराशिष)– सं० शापः (शप्+घञ्)>अ० मा० साव। तुल० पं० सराप, कश्मी० शाफ, सिं० सिरापु, ते० शापमु, मल० शापम्।

श्रामण्य—पुं० (साधुपना, श्रमणता)–सं० श्रामण्य>प्रा० सामण्ण।

श्राविष्ठी — स्त्री० (श्रावण मास की पूर्णिमा)–सं० श्राविष्ठी>प्रा० साविट्ठी।

श्रीफल—पुं० (बेल का फल, बेल का पेड़) – सं० श्रीफल > भो० अवधी सिरफल।

श्रीमती—स्त्री० (श्रीमान् का स्त्रीलिंग वाचक शब्द, पत्नी)–सं० श्रीमती>प्रा० सिरिमइ। तुल० सिं० पं० ने० म० श्रीमती, बं० ओ० श्रीमति।

श्रीमान—पुं० (पुरुषों के नाम के पूर्व प्रयुक्त एक आदरसूचक विशेषण)–सं० श्रीमान्>प्रा० सिरीमाण। भो० अवधी सिरमान। पं० स्रीमान, सिं० श्रीमानु, गु० बं० अस० ने० ओ० क० श्रीमान, मल० श्रीमान्। स्पे० सेन्योर।

श्रुत—वि० (सुना हुआ)–सं० श्रुत> प्रा० सुअ।

श्रेणि—स्त्री० (१-रेखा, पंक्ति, २-समूह समुदाय, ३- व्यवसायियों का संघ)–सं० श्रेणि>प्रा० सेणि (पाइअ०) > अप० सेणी (प०च०)। तुल० गु० ओ० श्रेणी, बं० श्रेणी, ते० म० श्रेणि।

श्रेणिक—पुं० (मगध देश का एक प्रख्यात राजा, एक जैन मुनि)–सं० श्रेणिक>प्रा० सेणिअ।

श्रेय—पुं० (यश, धर्म, मंगल, कल्याण, पुण्य), वि० (सर्वोत्तम, मंगलमय)–सं० श्रेयस्। तुल० गु० अस० ओ० श्रेय, ते० श्रयस्सु, मल० श्रेयस्स्।

श्रेयस्कर—पुं० (ज्योतिष्क ग्रह-विशेष)–सं० श्रेयस्कर>प्रा० सेअंकर।

श्रेयांस—पुं० (एक जैन मुनि, ग्याहरवें जिनदेव का नाम, एक राजपुत्र, भगवान् महावीर का पिता, मार्गशीर्ष मास का लोकोत्तर नाम)–सं० श्रेयांस > प्रा० सेअंस, सेज्जंस।

श्रेष्ठ—वि० (१- सर्वोत्तम, २- पूज्य)–सं० श्रेष्ठ। तुल० सिं० श्रेष्ठु, म० ने० गु० बं० अस० श्रेष्ठ, ते० श्रेष्ठमु। तुल०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवस्ता स्रएश्तेम्।

श्रेष्ठी—पुं० (महाजन, सेठ, साहूकार, व्यापारियों का मुखिया)–सं० श्रेष्ठिन् > प्रा० सेट्ठि। तुल० ने० श्रेष्ठ (महाजन)।

श्रोता—पुं० (सुनने वाला)–सं० श्रोतृ (√श्रु+तृच्)। तुल० पं० स्रोता, म० गु० बं० अस० ओ० श्रोता, ते० श्रोत, ने० श्रोता, क० श्रोतृ, मल० श्रोतावु, । फ़ा० (शिनावा: (shinavā)।

श्रोत्र—पुं० (कान)–सं० श्रोत्र>प्रा० सोत। तुल० ने० श्रोत्र।

श्रोत्रिय— पुं० (वेदाभ्यासी ब्राह्मण)–वि० (वेद में पारंगत, सभ्य)– सं० श्रोत्रिय>प्रा० सोत्तिअ।

श्लाघा—स्त्री० (प्रशंसा)–सं० श्लाघन >प्रा० सलहण। तुल० पं० शलाघा, सिं० साराहा, म० गु० बं० श्लाघा, ओ० श्लाघा, मल० ते० श्लाघ।

श्लाघ्य—वि० (प्रशंसनीय)–सं० श्लाघ्य >अप० सलग्घ (प० च०)।

श्लीपदी—वि० [जिसे श्लीपद (फील-पाव) का रोग हो गया हो]–सं० श्लीप-दिन्>प्रा० सिलवइ।

श्लोक — पुं० (१- संस्कृत की कोई कविता या पद्य, २- स्तोत्र, स्तुति, ३- पद्यबद्ध कीर्तिगान)–सं० श्लोक>प्रा० सिलोग, सिलोअ > अप० सिलोअ (प० च०)। तुल० ने० श्लोक।

श्वान—पुं० (कुत्ता)–सं० श्वान>प्रा० साण।

श्वाशुर—पुं० (श्वशुर-गृह)–सं० श्वाशुर >प्रा० सासुर > अप० सासुरय (प० च०)। तुल० गु० सासरुं।

श्वास — पुं० (सांस) – सं० श्वास (√श्वस्+घञ्)>प्रा० सास>भो० साँसि। तुल० पं० साह, उर्दू सांस, कश्मी० शाह, सिं० साहु, म० गु० ने० अस० ओ० श्वास, मल० श्वासं।

श्वेत—वि० (धवल, सफेद, गोरा)–सं० श्वेत>प्रा० सेअ। तुल० ने० म० गु० बं० ओ० श्वेत, मल० श्वेतं।

श्वेतांबर — पुं०(१- एक जैन संप्रदाय, २- सफेद वस्त्र) – सं० श्वेताम्बर> प्रा० सेअंबर।

ष

षंड—पुं० (बैल, नपुंसक)– सं० षण्ड (√सन्+ड)।

षंडक— पुं० (हिजड़ा, नपुंसक)–सं० षण्डक।

षंडाली—स्त्री० (१- व्यभिचारिणी स्त्री, २- ताल, तलैया, ३- एक छटाँक तेल नापने का पात्र)–सं० षण्डाली (षण्ड√ अल्+अच्–ङीप्)।

षंढ—पुं० (नपुंसक, शिव, धृतराष्ट्र का एक पुत्र)–सं० षण्ढ (√सन्+ढ)।

षट्—वि० (गिनती में छः)– सं० षट्। तुल० बल्गा० शस्त, फ़ा० शश।

षट् कर्म—पुं० (ब्राह्मणों के ६ कर्म— यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना, दान लेना)– सं० षट्कर्म्मन्। —कोण–वि० (छः कोण वाला)–सं० षट्कोण। —गुण– वि० (छः गुना, छः गुणों वाला)– सं० षड्गुण। —अंग, पुं० [राजनीति के छः अङ्ग, यथा– सन्धि, विग्रह, यान (चढ़ाई), आसन (विश्राम), द्वैधी भाव और संश्रय]–सं० षडङ्ग। —चक्र– पुं० [१- हठ योग में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माने हुए कुण्डलिनी के ऊपर पड़ने वाले छः चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा), २- षड्-यंत्र]– सं० षट्चक्र । —चरण– पुं० (भौंरा, टिड्डी, जूँ)–सं० षट्चरण ।

षड्ज—पुं० (१- सरगम का प्रथम या चौथास्वर, २- ब्रह्मा का १६ वाँ कल्प)–सं० षड्ज ।

षट्-दर्शन—पुं० (भारतीय आर्यों के छः दर्शन या शास्त्र— सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त)–सं० षड्दर्शन ।

षट्-प्रज्ञ—पुं० (१- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता, २- कामुक)–सं० षट्प्रज्ञ ।

षट्भुजा—स्त्री० (दुर्गा देवी, खरबूजा)–सं० षट्भुजा ।

षट्-मुख—पुं० (कीर्तिकेय)–सं० षट्मुख (षण्मुख) ।

षड्यंत्र—पुं० (१- किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जाने वाली कार्रवाई, भीतरी चाल, २- कपटपूर्ण आयोजन) – सं० षड्यंत्र । भो० सालिस ।

षट्-रस—पुं० (छः प्रकार के रसों का समुदाय, मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल)–सं० षट्रस ।

षट्-वर्ग — पुं० (छः वस्तुओं का समुदाय–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर का समूह)–सं० षट्वर्ग (षड्वर्ग) ।

षष्टि—स्त्री० (साठ की संख्या)–वि०–(साठ) – सं० षष्टि । तुल० बल्गा० शैसत ।

षष्ठ—वि० (छठा)–सं० षष्ठ । तुलना स्पे० सेइस (seis) ।

षष्ठांश—पुं० (छठा भाग, विशेषकर पैदावार का छठा भाग जो राजा अपनी प्रजा से ले)–सं० षष्ठांश ।

षष्ठी—स्त्री० (१- चान्द्र मास के किसी पक्ष की छठी तिथि, २-कात्यायनी देवी, ३- संबन्ध कारक, ४- शिशु के जन्म से छठे दिन का कृत्य)–सं० षष्ठी । तुल० बल्गा० शैस्ती ।

षेत (जा०)—पुं० (क्षेत्र, खेत)–सं० क्षेत्र ।

षोडश—वि० (सोलह)–सं० षोडश । तुल०बल्गा० शैस्ना देसत, शैसनाइसत ।–आंगुलक–वि० (जो सोलह अंगुल माप का हो, सोलह अंगुल के नाप की चौड़ाई का)–सं० षोडशाङ्गुलक ।–उपचार, पुं०–(पूजन के ये १६ अंग—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गन्ध (चन्दन), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वंदना)–सं० षोडशोपचार ।–कला, स्त्री० (चन्द्रमा की सोलह कलाएँ–अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टीरतिर्धृतिः । राशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्सना श्रीः प्रीतिरेव च । अङ्गदा च तथा पूर्णामृता षोडश वै कलाः)–सं षोडशकला ।–गण–पुं० (दार्शनिक क्षेत्र में, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों कर्मेन्द्रियों, पाँचों भूतों और मन का वर्ग या समूह)–सं० षोडश गण ।–दान, पुं० (सोलह प्रकार के दान जो ये हैं–१- भूमि, २- आसन, ३- पानी, ४- कपड़ा, ५-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीपक, ६- अन्न, ७- पान, ८- छत्र, ९- सुगंधि, १०- फूलमाला, ११- फल, १२- सेज, १३- खड़ाऊँ, १४- गाय, १५- सोना, १६- चाँदी)–सं० षोडशदान ।– मातृका–स्त्री० (एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह हैं–गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शान्ति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, माता, आत्मदेवता) ।– श्रृंगार – पुं० (साहित्य में वर्णित स्त्रियों का पूर्ण श्रृंगार जो सोलह अंगों वाला कहा गया है–उबटन लगाना, मंजन करना, नहाना, अच्छे कपड़े पहनना, बाल सँवारना, काजल लगाना, माँग में सिंदूर डालना, पैर में महावर लगाना, बिंदी लगाना, ठोड़ी पर तिल बनाना, हाथ में मेंहदी लगाना, शरीर में गंध द्रव्य लगाना, गहने पहनना, फूलों की माला पहनना और पान खाना)–सं० षोडश श्रृंङ्गार > प्रा० सोलह सिंगार । – संस्कार–पुं० (वैदिक रीति के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ संस्कार जो द्विजातियों के लिए कहे गये है)–सं० षोडश संस्कार ।

षोडशी[1] — स्त्री० (१- सोमरस-पूर्ण यज्ञपात्र-विशेष, २- अग्निष्टोम यज्ञ का रूपान्तर)–सं० षोडशिन् ।

षोडशी[2]—वि० (१- सोलहवीं, सोलह वर्ष की, यथा – षोड़शी बाला)–सं० षोडशी ।

षोढा—क्रि० वि० (छह् प्रकार से, छह् ढंग से)–सं० षोढा ।

षोढामुख — पुं० (कार्तिकेय, छः मुख वाला)–सं० षोढामुख ।

ष्ठेविता — वि० (थूकने वाला)–सं० ष्ठेवितृ (√ष्ठिव् = थूकना, मुँह से खखार निकालना) ।

ष्ठ्यूत—वि० (थूका हुआ)–सं० ष्ठ्यूत (√ष्ठिव् + क्त, ऊ) ।

स

संग्रन—पुं० (एक पक्षी)–सं० शकुन > प्रा० शअन, हिं० संअन ।

संकट— पुं० (विपत्ति, मुसीबत)–सं० सङ्कट (सम् √ कट् + अच्) > प्रा० संकड । तुल० सिं० संकटु, पं० कश्मी० म० गु० बं० अस० ओ० संकट, ते० संकटमु, त० संकड़म् ।

संकर—पुं० (मिलावट, मिश्रण)–सं० संकर > प्रा० संकर ।

संकरे[1] (पद०)—पुं० (संकट)–सं० संकट > प्रा० अप० संकड > संकट ।

संकल्प—पुं० (दृढ़ निश्चय, इरादा)– वै० सं० सं—कल्प्—अ, सं० सङ्कल्प > प्रा० संकप्प । तुल० पं० संकलप, सिं० संकल्पु, ओ० संकळ्प, ते० संकल्पमु ।

संकलित—वि० (एकत्र किया हुआ)– सं० संकलित > प्रा० संकलिअ ।

संक्लिष्ट—वि० (संक्लेश युक्त)–सं० संक्लिष्ट > प्रा० संकिलिट्ठ ।

संकीर्ण—वि० (तंग, संकुचित, अनुदार)– सं० सङ्कीर्ण > प्रा० सकिण्ण । तुल० पं० संकीरण, गु० अस० ओ० संकीर्ण, ते० संकीर्णमु, मल० संकीर्ण ।

संकुचित—वि० (सकुचा हुआ)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकुचित>प्रा० संकुइय।

संकुल—वि० (व्याप्त, पूर्ण)–सं० प्रा० संकुल।

संकेत — पुं० (१- अभिप्राय-सूचक अंगचेष्टा, इशारा, २- चिह्न)–सं० पा० सङ्केत>प्रा० संकेअ। तुल० पं० म० गु० बं० अस० संकेत, ते० संकेतमु।

संकेतित—वि० (संकेत-युक्त) – सं० संकेतित>प्रा० संकेइअ।

संकोच—पुं० (१- झिझक, हिचक, २- सिकुड़ने की क्रिया या भाव)–सं० संङ्कोच>पा० संकोच>प्रा० संकोअ। तुल० पं० गु० ओ० संकोच, ते० संकोचमु, कश्मी० संकूच।

संकोचन—पुं० (संकोच, सकुचाना)–सं० संकोचन>प्रा० संकोअण।

संक्रन्दन—पुं० (इन्द्र, देवाधीश)–सं० संक्रन्दन>प्रा० संकंदण।

संक्रम—पुं० (सेतू, पुल, २- संचार, गमन)–सं० संक्रम>प्रा० संकम।

संक्रमण—पुं० (प्रवेश)–सं० संक्रमण>प्रा० संकमण।

संक्रांत—वि० (प्रविष्ट, घुसा हुआ)–सं० संक्रान्त>प्रा० संकंत।

संक्रांति—स्त्री० (१- संक्रमण, प्रवेश, २- सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि में जाना)–सं० संक्रान्ति>प्रा० संकंति।

संक्षिप्त — वि० (संक्षेप-युक्त) – सं० संक्षिप्त>प्रा० संखित्त।

संक्षेप—पुं० (१- थोड़े में कोई बात कहना, २- संकोचन, ३- सार)–सं० सङ्क्षेप>पा० सङ्खेप>प्रा० संखेव। तुल० पं० संखेप, ओ० संक्खेप, ते० संक्षेपमु, मल० संक्षेपं।

संक्षुब्ध — वि० (क्षोभ-प्राप्त)– सं० संक्षुब्ध>प्रा० संखुद्ध।

संक्षेपण—पुं० (अल्प करना, संक्षिप्त करना)–सं० संक्षेपण>प्रा० संखेवण।

संक्षोभ—पुं० (भय आदि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता)–सं० संक्षोभ>प्रा० संखोह।

संखचूर(?) — पुं० (एक सर्प) – सं० शंखचूड।

संख्या — स्त्री० (गिनती)–वै० सं० संख्या>प्रा० संखा।

संग—पुं० (मिलन, संसर्ग)– सं० पा० सङ्ग>प्रा० संग>अव० संग। तुल० सिं० संगु। –संगहिं (संग में)–सं० संगस्मिन्>अप० संगहिँ, राज० संगिइँ।

संगठन—पुं० (कार्य-विशेष की सिद्धि के लिए निर्मित कोई संस्था)–सं० संङ्घटन>पा० सङ्घट्टन>प्रा० संघडण, संघयण। तुल० पं० संगठण, सिं० संगठनु, ते० संगठनमु, मल० संघटन।

संगति—स्त्री० (संग, साथ)–सं० पा० सङ्गति>प्रा० संगइ। तुल० पं० म० संगत, गु० ओ० बं० संगति।–स्त्री० (उपयुक्तता)। तुल० पं० संगती, अस० संगति।

संगम—पुं० (१- मेल, २-नदियों का आपस में मिलान, ३- साथ, ४-स्त्री-पुरुष का संयोग)–सं० सङ्गम>प्रा० संगम।

संगमरमर—पुं० (एक मशहूर पत्थर)–फा० संगे मर्मर। तुल० सिं० संगमर्मरु।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संगीत — पुं० (गाना, जिसका गान किया गया हो)–सं० संगीत>प्रा० संगीअ ।

संगीन—स्त्री० (एक लंबी और पतली बरछी जो बंदूक के सिरे पर लगायी जाती है)–फ़ा० संगीन । तुल० पं० सिं० गु० बं० अस० संगीन, ओ० संगिन कश्मी० संगीन् ।

संगृहीत—वि० (जिसका संचय किया गया हो) – सं० सङ्गृहीत > प्रा० संगिहीय ।

संग्रह — पुं० (जमा करना, संकलन, संचय)–सं० सङ्ग्रह>पा० सङ्गाह> प्रा० संगह । तुल० सिं० संग्रहु, खा० संगकाहो ।

संग्रहण—पुं० (संग्रह)–सं० सङ्ग्रहण (सम्√ग्रह+ल्युट्) प्रा० संगहण ।

संग्रहालय — पुं० (वह स्थान जहाँ पुरातत्त्व एवं कला संबन्धी विशेष महत्त्व की वस्तुओं का संग्रह किया गया हो)– सं० सङ्ग्रहालय>प्रा० संगहालय । तुल० म० गु० अस० संग्रहालय, ओ० संग्रहाळय ।

संग्राम—पुं० (युद्ध, लड़ाई, समर)–सं० सङ्ग्राम > प्रा० संगाम । तुल० पं० संगराम, सिं० संग्रामु, ते० संग्राममु, म० गु० बं० संग्राम ।

संघ—पुं० (जमाव, समूह)–सं० पा० सङ्घ>प्रा० संघ । तुल० सिं० संघु, खामति सांगखा ।

संघर्ष — पुं० (१- स्पर्धा, होड़, २- विरोधी शक्तियों का दमन करने के लिए प्राणपण से की गई चेष्टा)–सं० सङ्घर्ष >प्रा० संघंष>अव० संघल । तुल० पं० संघरश, सिं० संघर्षु, ते० संघर्षमु, म० संघर्ष ।

संघल[1] (की०)—पुं० (एकत्र करना, ढेर, समूह)–सं० सम्भार>प्रा० संहर> अव० संघल ।

संघलिअ (की०) — क्रि० (टकराना)– संघट्ट>प्रा० अप० संघट्ट>संघड़ > अव० संघल । संघट्टित>संघलिअ ।

संघटना — स्त्री० (१- संबंध, २- रचना)–सं० सङ्घट्टना>प्रा० संघाडणा ।

संघटित—वि० (१- संबद्ध, २- गठित)– सं० संघटित>प्रा० संघडिअ ।

संघट्टण—पुं० (संघर्ष)–सं० सङ्घट्टन> प्रा० संघट्ट ।

संघात—पुं० (१- संयोग, जनसमुदाय, २- हत्या, वध)–सं० सङ्घात>प्रा० संघाय ।

संघार, पु० हिं०, प्रा० प्र०— पुं० (नाश)–सं० संहार>प्रा० संघार ।

संचना — क्रि० (एकत्र करना)–सं० सञ्चयति(चिञ्—चयने—to collect) ।

संचय—पुं० (१- चीजें इकट्ठी करने की क्रिया, २- राशि, समूह)–सं० सञ्चय >प्रा० संचय । तुल० म० गु० बं० ओ० क० संचय ।

संचार—पुं० (संचरण, गमन, चलना, चलाना)–सं० सञ्चार (सम्√चर+ घञ् वा णिच्+घञ्)>पा० सञ्चार> प्रा० संचार । तुल० पं० गु० बं० ओ० क० संचार, ते० संचारमु । –(संदेश, समाचार तथा सामान आदि भेजने के साधन)–तुल० पं० संचार, सिं० संचारु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कं० संचार।

संचारित—वि० (जिसका संचार कराया गया हो) – सं० सञ्चारित > प्रा० संचारिअ।

संचितन—पुं० (चिन्तन, विचार)–सं० सञ्चिन्तन>प्रा० संचितण।

संचित — वि० (एकत्रित)–वै० सं० संचित>प्रा० संचिणिय।

संचेतना—स्त्री० (अच्छी तरह से सुधि)–संचेतना>प्रा० संचेयणा।

संच्यौ — क्रि० (संचित किया)–सं० संचिनोति>संच्योइ>ब्र० संच्यौ।

संछादित — वि० (ढका हुआ)–सं० संछादित>प्रा० संछाइय।

संछोलि(३५)—क्रि० (छीलकर, छिलका उतार कर) – सं० संछुरति (√छुर् छेदने) >संछुरइ>संछोरि>संछोलै> ब्र० संछोलि।

संजीदगी—स्त्री० (गंभीरता, संजीदा होने की अवस्था या भाव) – फ़ा० संजीदगी।

संजीदा—वि० (१- गंभीर और शान्त, २- बुद्धिमान, ३- समझदार) – फ़ा० संजीदः।

संजीवनी—स्त्री० (मरते हुए को जीवित करने वाली ओषधि)–सं० संजीवनी> प्रा० संजिवणी।

संजोग (पद०)—पुं० (विवाह-योग्य)–सं० संयोग्य>संजोग्ग>संजोग।

संजौ — क्रि० (जोड़ कर रखना)–संयोजयति (√युज्)>प्रा० संजोअ> संजौ।

संज्ञा—स्त्री० (संज्ञान)–वै० सं० संज्ञा, सं० संज्ञा>प्रा० संणा>अप० सण्ण (प० च०), राज० सान।

संड—(साँड़)–सं० शण्ड, षण्ड>प्रा० हिं० संड।

संड़सी—स्त्री० (चीजें पकड़ने का एक प्रकार का कैंचीनुमा उपकरण)–वै० सं० संदश, सं० संदंशिका>पा० सण्डासी> प्रा० संदसी> संड़सी, सँडासी, अवधी सणसी।

संतति — स्त्री० (संतान, बाल-बच्चे, औलाद)–वै० सं० संतति>पा० सन्तति >प्रा० संतइ। तुल० सिं० संतानु, म० गु० ओ० ते० त० म० संतति।

संतप्त — वि० (संताप-युक्त)–सं० संतप्त>प्रा० संतत्त, संतप्पिअ।

संतरा — पुं० (फल-विशेष) – फ़ा० संगतरः। तुल० पं० उर्दू संगतरा, कश्मी० संगतर्, म० संत्रें, गु० संतरुं।

संतान—पुं० (बाल बच्चे, संतति)–सं० संतान>प्रा० संताण।

संतापै(३५) — क्रि० (दुःख या कष्ट पहुँचाता है)–सं० संतापयति>संतापयइ >संतापए>ब्र० संतापै।

संतुष्ट — वि० (संतोष-प्राप्त) – सं० संतुष्ट>प्रा० संतुट्ठ।

संतोष—पुं० (वह मानसिक अवस्था जिसमें व्यक्ति प्राप्त होने वाली वस्तु को यथेष्ट समझता है और उससे अधिक की कामना नहीं करता)–सं० सन्तोष> पा० सन्तोख>प्रा० संतोस। तुल० पं० संतोख, सिं० संतोषु, ओ० संतोष, बं० अस० सन्तोष, मल० संतोषं।—(सब्र,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धीरज)। – तुल० पं० संतोख, अस० सन्तोष।

संतोषी—वि० (जो सदा संतोष रखता है)–सं० संतोषिन्>प्रा० संतोषि > हिं० संतोषी।

संत्राण—पुं० (परित्राण, संरक्षण)–सं० संत्राण>प्रा० संताण।

संत्रास—पुं० (भय)–सं० संत्रास>प्रा० संतास।

संदर्शन—पुं० (देखना, साक्षात्कार)–सं० संदर्शन>प्रा० संदंसण।

संदर्भ—पुं० (१- प्रसंग, संबंध, २- रचना ३- साहित्यिक रचना)–सं० संदर्भ>प्रा० संदब्भ।

संदिग्ध — वि० (संशय युक्त)–सं० संदिग्ध>प्रा० संदिद्ध।

संदूक—पुं० (लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ बकस या पेटी)–अं० सुंदूक़ (sundooq)। तुल० सिं० संदूक़।

संदेश—पुं० (समाचार, पैगाम, खबर)–सं० सन्देश>पा० सन्देस>प्रा० संदेस >हिं० संदेश। तुल० पं० संदेस, सिं० संदेशु, संदेशो, म० गु० ओ० संदेश, ते० संदेशमु, मल० संदेशं।

संदूकचा, पुं०; **संदूकची**—प्रा०प्र०, स्त्री० (छोटा बकस या पेटी)–संदूकचः (छोटा संदूक)। टि०– लघुतावाची 'चा' प्र० मूलतः फ़ा० से लिया गया है। हिन्दी में इसका 'ची' रूप विकसित हुआ है, यथा–डोलची। तुल० बल्गा० संदक (संदूक)।

संदेसरा—पुं० (संदेश)–सं० सन्देश> पा० सन्देस>संदेस+रा (लघुतावाची प्र०)।

संदेह—पुं० (शक, संशय)–सं० पा० सन्देह>प्रा० संदेह।

संधान—पुं० (अनुसंधान)–सं० संधान> प्रा० संधण।

संधि—स्त्री० (१- दो शब्दों का मेल)–सं० पा० सन्धि>प्रा० संधि। तुल० बल्गा० सन्दि। (२- सुलेहनामा)– तुल० पं० गु० अस० ओ० संधि।

संध्या—स्त्री० (साँझ, शाम, सायंकाल)–सं० सन्ध्या>प्रा० संझा>महा०, जै० महा०, शौ० संझा(३३)>अप० संझा। तुल० पं० संधिया, कश्मी० संधा, ते० संध्य, त० सन्दिया, सिं० संझी, संझो।

संनिपात—पुं० (संयोग, सम्बन्ध)–सं० संनिपात>प्रा० संनिवाय।

संनिरोध—पुं० (अटकाव, रुकावट)–सं० संनिरोध>प्रा० संणिरोह।

संन्यास—पुं० (संसार-त्याग, भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम)–सं० संन्यास>प्रा० संणास।

संन्यासी—पुं० (संसार-त्यागी, वह जो संन्यास-आश्रम में हो)–सं० सन्यासिन्> प्रा० संणासि।

संपजिअ (१) (की०) — क्रि० (सम्पूर्ण होना)–सं० सम्पद्यते>प्रा० सम्पजइ> अव० संपजिअ।

संपन्न—वि० (पूर्ण, पूरा किया हुआ)–सं० पा० सम्पन्न>प्रा० संपण्ण। तुल० म० संपूण, ओ० संपन्न।–(किसी गुण या वस्तु से युक्त)–तुल०. म० संपन्न, ते० संपन्नमु।–(खुशहाल, धनी)–तुल०– म० संपन्न, ते० संपन्नुडु, मल० संपन्नन्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संपर्क—पुं० (सम्बन्ध)–सं० सम्पर्क > प्रा० संपक्क।

संपादक—पुं० (वह जो किसी पुस्तक, पत्रिका आदि के सब लेख संशोधित करके उन्हें प्रकाशन योग्य बनाता है)–सं० पा० सम्पादक > प्रा० संपाडग। तुल० पं० म० गु० ओ० क० संपादक, बं० अस० सम्पादक, ते० संपादकुडु।

संपुट—पुं० (१- दोना, २- पात्र के आकार की वस्तु, ३- अंजली, ४- डिब्बा)–सं० सम्पुट > प्रा० संपुड।

संपूरित—वि० (पूरा किया हुआ)–सं० सम्पूरित > प्रा० संपूरिय।

संपूर्ण—वि० (१- आदि से अन्त तक, सब, सारा, कुल, समूचा)–सं० सम्पूर्ण > पा० सम्पुण्ण > प्रा० संपुण्ण। तुल० अस० ओ० म० संपूर्ण, ते० संपूर्णमु।– (२- पूरा या समाप्त किया हुआ)–तुल० ओ० संपूर्ण, सिं० समूरो।

संप्रति—अव्य० (१- इस समय)–सं० सम्प्रति > प्रा० संपइ।

संप्रदाय—पुं० (१- एक ही तरह के मत या सिद्धान्त रखने वाले लोगों का समूह या वर्ग)–सं० सम्प्रदाय > प्रा० संपदाय। तुल० पं० संपरदाइ, सिं० म० गु० ओ० क० संप्रदाय, बं० अस० सम्प्रदाय।– (२- परंपरा से चला हुआ कोई विशिष्ट ज्ञान, परिपाटी)–तुल० म० संप्रदाय, ते० संप्रदायमु। (३- कोई विशेष धर्म संबन्धी मत)–तुल० ते० संप्रदायमु, त० सम्प्रदायम्।

संप्रेक्षक—पुं० (देखने वाला)–सं० सम्प्रेक्षक > प्रा० संपेहअ।

संप्रेषण—पुं० (प्रेषण, अच्छी तरह भेजना)–सं० सम्प्रेषण > प्रा० संपेषण।

संबद्ध—वि० (संलग्न)–वै० सं० संरब्ध।

संबंध—पुं० (१- संसर्ग, संयोग, २- नाता, ३- मेल)–सं० सम्बन्ध > प्रा० हिं० संबंध।

संबंधी—वि० (संबंध रखने वाला)–सं० सम्बन्धिन् > प्रा० संबंधि।

संभलइ[1] (की०)—क्रि० (याद करना)– सं० सम्+स्मृ > प्रा० अप० संभल, अव० संभलइ।

संभालना—क्रि० (देखभाल करता है, पालन-पोषण एवं रक्षा करता है)– (१) सं० सम्भरति > संभरइ > संभारै, ब्र० संभारत, सम्हालत, हिं० संभालना, सम्हालना। (२) सं० सं+भालय् > प्रा० संभाल।

संभ्रम—पुं० (१- भय, घबराहट, २- भूल, चूक, गलती, ३- मोह, भ्रम)–सं० सं+भ्रम् > प्रा० संभम।

संभ्रम्यौ—क्रि० (घबराया, संभ्रमित हुआ)– सं० संभ्रमति > संभ्रमे, ब्र० संभ्रम्यौ।

संभ्रान्त—वि० (घबड़ाया हुआ, घूमा हुआ, स्फूर्तियुक्त)–सं० सम्भ्रान्त (सम् √भ्रम्+क्त) > प्रा० संभंत।

संभ्रान्ति—स्त्री० (संभ्रम)–सं० सम्भ्रान्ति > प्रा० संभंति।

संयम—पुं० (१- इन्द्रिय-निग्रह, २- नियन्त्रण, ३- हिंसादि पाप-कर्मों से निवृत्ति)– सं० संयम (सम् √यम्+अप्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संयोग—पुं० (मेल, जोड़, वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों में से एक)– सं० संयोग (सम्√युज्+घञ्) > प्रा० संजोग, संजोअ।

संयोजन—पुं० (जोड़ना, मिलाना २- आयोजन, प्रबन्ध, ३- भव-बंधन का कारण)– सं० संयोजन (सम्+युज्+ल्युट्) > प्रा० संजोअण।

संवत्सर—पुं० (वर्ष, साल)– वै० सं० संवत्सर।

संवाद—पुं० (बातचीत, वार्तालाप)– सं० संवाद (सम√वद्+घञ्) > प्रा० संवाद। तुल० ओ० पं० संबाद, म० गु० संवाद। –(खबर, समाचार)–तुल० पं० अस० संबाद।

संवारत[३५]—क्रि० (अलंकृत करता है)– सं० सम्भरति > संवरइ > संवरै > संवारै, ब्र० संवारत।

संशय—पुं० (सन्देह)– सं० संशय > अव० संसअ।

संसर्ग—पुं० (संबन्ध, संग, सोहब्बत)– सं० संसर्ग (सम्√सृज्+घञ्) > प्रा० संसग्ग > अप० संसग्गि।

संसार—पुं० (भव)– सं० पा० प्रा० हिं० संसार। तुल० गु० म० संसार, सिं० संसारु।

संस्कार—पुं० (१- परिष्कार)–वै० सं० सं-स्कार्-अ, सं० संस्कार > पा० संङ्खार > प्रा० संकार, सक्कार। तुल० पं० उर्दू म० गु० अस० ओ० संस्कार, सिं० संस्कारु, खामति सांखाला। —(२- पूर्व जन्म के आचार-व्यवहार, पाप-पुण्य आदि का आत्मा पर पड़ा प्रभाव जो मनुष्य के अगले जन्म में उसके कार्यों, प्रवृत्तियों आदि के रूप में प्रकट होता है, ३- हिन्दुओं में जन्म से मरण तक होने वाले विशिष्ट धार्मिक कृत्य)– तुल० पं० संसकार, कश्मी० म० क० संस्कार ते० सस्कारमु।

संस्कृत— स्त्री० (भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा)–सं० संस्कृत > प्रा० सक्कय, महाराष्ट्री सक्कअ, अर्ध मा०, जैन महा० सक्कय, शौ० सक्कद >[३३] अप० सक्कय > अव० सक्कअ (की०)।

संस्कृति—स्त्री० (१- संस्कार, २- शुद्धि, ३- भीतर-बाहर से संस्कार की गई सभ्यता)– सं० संस्कृति। तुल० सिं० संस्कृती, मल० संस्कारं, पं० म० गु० बं० अस० ओ० ते० संस्कृति।

संस्तुति— स्त्री० (स्तुति, प्रशंसा)–सं० संस्तुति > प्रा० संथुइ। तुल० गु० ओ० संस्तुति।

संस्था—स्त्री० (समाज या समूह, सभा, समिति)– सं० संस्था (सम्√स्था+अङ्–टाप्) > प्रा० संथा। तुल० पं० संसथा, कश्मी० सिं० म० गु० बं० अस० ओ० संस्था, ते० संस्थ।

संस्थान—पुं० (साहित्य, कला, विज्ञान आदि की उन्नति के लिए स्थापित संस्था)– सं० संस्थान (सम्√स्था+ल्युट्)। तुल० पं० संसथान, म० अस० संस्था, ओ० क० संस्थान।

संस्थापक—पुं०(स्थापित करने वाला)– सं० संस्थापक > प्रा० संथावग। तुल० पं०संसथापक, म० गु० बं०अस०ओ० क०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संस्थापक।

संस्थापित—वि० (रखा हुआ, निर्मित, जमाया हुआ, बैठाया हुआ, स्थित किया हुआ, जारी किया हुआ)–सं० संस्थापित >प्रा० संठविअ।

संस्मरण—पुं० (किसी व्यक्ति के जीवन की महत्त्वपूर्ण एवं मुख्य घटनाओं या बातों का उल्लेख अथवा कथन)– सं० संस्मरण। तुल० पं० म० गु० बं० संस्मरण।

संहल[1] (की०)—पुं० (निकर, समूह)–सं० संभार>प्रा० संहर>अव० संहल।

संहार—पुं० (ध्वंस, नाश)–सं० संहार >प्रा० संहार, संघार>अप० संघार। तुल० पं० संघार, अस० ओ० संहार, ते० संहारमु, मल० संहारं।

सँकरा—वि० (संकीर्ण)–सं० संकीर्ण> प्रा० संकिण्ण>संकीरअ>सँकरअ>हिं० सँकरा।

सँजोइ[३५]—क्रि० (सँजोना)–सं० संयोजति>संजोजइ>संजोजै > संजोए> ब्र० संजोइ।

सँड़सा—पुं० (मोटा चिमटा, लोहे का एक औजार जो दो छड़ों से बनता है)–सं० संदंशः, संदशकः> पा० सण्डासो, प्रा० संडास>हिं० सँड़सा, सांड़स।

सँपेरा—पुं० (साँप पालने वाला, मदारी)– सं० सर्पधारक>प्रा० सप्पधारग>सप्पधार>सप्पआर>सप्पेर> हिं० सपेरा, सँपेरा।

सँपोले—पुं० (साँप का बच्चा)–सं० सर्प +पोतलक।

सँभरइ (की०)— क्रि० (भरण-पोषण करना)–सं० सम्भृ>प्रा० संभरइ।

सँभरना—क्रि० (सँभलना)–सं० संभृति (सं० सम्+भृ+क्तिन्)> प्रा० संभर >हिं० संभर+ना।

सँभार[1]—पुं० (होश, ध्यान, याद अथवा खबर-सुध)–सं० स्मार>समार>सवाँर >सँवार>सँवार>सँभार।

सँभार[2]—पु० हिं०, प्रा० प्र०, पुं० (१-देख-रेख, निगरानी, २- पालन-पोषण)–सं० सम्भार।

सआनी—स्त्री० (चतुर)–सं० सज्ञान> प्रा० सयाण>अव० सआन, सआनी।

सईस, साईस—पुं० (घोड़े की देख-रेख करने वाला)–अ० सईस।

सउं[1] (की०)— अव्य० (साथ)–सं० समम्>प्रा० समं>अव० सउं।

सउँपब—क्रि० (समर्पित करना)–सं० समर्पय्>प्रा० समप्प>अवधी सउँपब।

सउजन्ह[1](पद०)—पुं० (जंगली पशु)–सं० श्वापद>प्रा० सावज्ज>साउज> सउज।

सएल (की०)— वि० (सम्पूर्ण)– सं० सकल>प्रा० सयल>अव० सएल।

सकना—क्रि० (कोई काम करने में समर्थ होना)– सं० शक्>प्रा० सक्क>हिं० सकना।

सकल—वि० (सम्पूर्ण)– सं० सकल> प्रा० सयल>अव० सएल (की०)।

सकलकन्द—पुं० (शकरकंद)–सं० शर्करा +कन्द।

सकारना— क्रि० (मंजूर करना)–सं० स्वीकरोति (स्वी+√कृ), सं० स्वीकरण।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकारे, सकारैं—प्रा० प्र०, क्रि० वि० (प्रातः काल)–सं० सकाल ।

सकी, सकै— क्रि० (समर्थ हुई, समर्थ है)–सं० शक्यति > सक्कइ > ब्र० सकै, सकी ।

सकुचना—क्रि० (संकोच करना, संकुचित होना)– सं० संकुचति > ब्र० संकुचत, हिं० सकुचना ।

सकेलना—क्रि० (इकट्ठा करना)– सं० संकलयति > संकलअइ > संकलए > संकलै, ब्र० सकेलि, सकेलना ।

सकोरना—क्रि० (संकुचित करना, सिकोड़ना)–सं० संकोचति > सकोचत > ब्र० सकोरना, सकोरत ।

सख्त— वि० (कठोर, निष्ठुर)–अ० सख्त । तुल० गु० पं० सखत, उर्दू सख्त, सिं० सख्तु, ओ० शक्त ।

सख्ती— स्त्री० (कठोरता, कड़ापन)–फा० सख्ती ।

सगर (की०)— वि० (समस्त)–सं० सकल > प्रा० सयल, सगल > अव० सगर ।

सगरा, सगरौ—प्रा० प्र० – वि० (सब, तमाम)– सं० सकलः > प्रा० सगलो > सअल, सयल > अप० सगल > सगरौ । तुल० गु० सघळुं, सिंह० सियल, सियल्ल । बल्गा० सिचको ।

सगा— वि० (एक माता से उत्पन्न सम्बन्धी)–सं० स्वक > पा० सको > प्रा० सय, प्रा० सक्क, सग्ग > हिं० सगा । तुलना० सिं० सगो ।

सगाई—स्त्री० (वाग्दान)–सं० स्वक > प्रा० सक्क, सग्ग > सगा + आई (प्र०) ।

सगुण—वि० (गुणों से युक्त)–सं० प्रा० सगुण । तुल० सिं० सगुणु ।

सगुन—पुं० (शकुन)–सं० शकुन । तुल० मु० सागुन ।

सगुनावै[२५]— क्रि० (शकुन की सूचना देता है)– सं० शकुन > सगुन, ब्र० सगुनावै ।

सगुनिया[१] (पद०)—पुं० (सगुन बताने वाला व्यक्ति)– सं० शाकुनिक > प्रा० सागुनिअ > सगुनियाँ ।

सघन—वि० (घना, अविरल, ठोस)–सं० सघन । तुल० पं० संघणा, गु० ओ० सघन, अस० सघने, ते० सघनमु ।

सच—पुं० (यथार्थ)–सं० सत्य > पा० प्रा० अप० सच्च > अव० सच्चु (की०) > हिं० सच । तुल० सिं० सचु ।

सचमुच— क्रि० वि० (यथार्थतः, ठीक-ठीक, वस्तुतः)–सं० सत्य + मुच (अनु०)। तुल० पं० सचमुच, सिं० सचुपचु ।

सचापन—पुं० (सत्य होने का भाव)–सं० सत्य + त्वन्[१३] > सच्चापन > द० हिं० सचापन ।

सचिव—पुं० (१- प्रधान, मन्त्री, अमात्य)–सं० सचिव > प्रा० सइव ।

सच्चरित्र— वि० (सदाचारी)– सं० सच्चरित्र, सच्चचरित । तुल० गु० बं० ओ० सच्चरित्र ।

सच्चा—वि० (सत्यवादी)–सं० सत्य > प्रा० सत्त > अप० सच्चा । तुल० पं० उर्दू म० ओ० सच्चा, सिं० सचो, गु० सच्चुं, साचुं ।

सजन—पुं० (एक ही कुल के आदमी)–वै० सं० स-जन (साथी), सं० स्वजन >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सज्जण > सजन ।

सजना—पु० हिं०, पुं० (प्रिय जन)–सं० स्वजनः । —स्त्री०, सजनी (सखी, सहेली) । तुल० सिं० सजनी, म० साजणी ।

सज़ा—स्त्री० (बुरे काम का राज्य की ओर से दंड, अर्थ-दंड)– फ़ा० सज़ा । तुल० उर्दू ओ० कश्मी० पं० सिं० सज़ा, गु० सजा, बं० साजा ।

सजाई— (सजाते हैं)–सं० सजति > सजइ, सजि, ब्र० सजाई ।

सजाना—क्रि० (वस्तुओं को यथास्थान रखना)–सं० सज्जयति > पा० सज्जेति > प्रा० अप० सज्ज, सज्जेइ > अव० सज्ज्जह > हिं० सजा + ना (प्र०) । तुल० कु० सजूणो, ओ० सजाइबा, पं० सजाउणा, क० सजावुन, गु० सजवुं, बं० साजानी ।

सजावट—स्त्री० (सज्जित होने का भाव या धर्म)–सं० सज्जा+आवट (प्र०) । तुल० पं० उर्दू सिं० म० गु० सजावट, कश्मी० सजावठ ।

सजीव— वि० (१- जीवयुक्त, जिसमें प्राण हों, २- फुरतीला)– सं० सजीव > प्रा० सज्जीव, सज्जीअ > अप० सज्जीउ । तुल० अस० सजीव, ते० सजीवमु ।

सज्जन—पुं० (१- भला आदमी, २- प्रिय मनुष्य)–सं० सज्जन (सत्+जन) > प्रा० सज्जण । तुल० पं० सज्जण, सिं० सजणु, म० गु० बं० अस० ओ० क० सज्जन ।

सटकना[1]— क्रि० (धीरे से खिसकना, चुपचाप खिसकना)– सं० सारयति > साडयइ > साडे, साटे, सटकै, सटकि ।

सटकना[2]—क्रि० (निगलना)–सं० सटति (√सट् =बाँटना, भाग बनाना) ।

सटीक—वि० १- (बिलकुल ठीक, जैसा चाहिए ठीक वैसा ही)– सं० सटीक । सिं० ठीकु, अस० ठिक । (२- टीका सहित)–तुल० पं० म० गु० अस० सटीक, ओ० सठीक ।

सड़क—स्त्री० (मार्ग)– सं० सृ+अक् (सृ =सरकना, चलना) । टि०—हिं० मा० को० में सड़क को अ० शरक से व्युत्पन्न दिखाया है, परन्तु śaraka (शरक) का अर्थ—to become a youth, grow from childhood to maturity, 'Hans Wehr A Dictionary of Modern Written Arabic", p. 463. तुल० पं० उर्दू, सिं० गु० बं० ओ० सड़क, कश्मी० सड़ख, म० सडक ।

सड़ना—क्रि० (किसी चीज में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग गलने लगें और उसमें दुर्गन्ध आने लगे)–(१) सं० शर्घति-ते (√शृधु उन्दनं क्लेदनम् =गलाना) > प्रा० सडइ > हिं० सड़+ना । (२) सं० शट् > प्रा० सड > हिं० सड़+ना । —पुं०, सं० शटनं > प्रा० सडण । तुल० सिं० सडणु, गु० सडवूं, पं० सड़ना, कश्मी० सडुन, म० सडणें ।

सड़सठ—वि० (साठ और सात)–सं० सप्तषष्टि > पा० प्रा० अप० सत्तसट्ठि > हिं० सड़सठ । तुल० पं० सतासठ, उर्दू सडसठ, सिं० सतहठि, म० सदुसष्ठ, बं० सातषट्टि । बल्गा० शइसेति सैदेम ।

सड़ियल—वि० (सड़ा हुआ)– सं० शट् +तृ =शटितृ > शटितर > सडिअर >

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सड़ियल। अथवा सं० शटित>प्रा० सडिअ>हिं० सड़+इयल (प्र०)।

सत—पुं०(किसी पदार्थ का मूल तत्त्व)–सं० सत्व>पा० प्रा० सत्त>हिं० सत।

सतत— अव्य० (निरंतर, लगातार, बराबर)–वै० सं० संतत, सं० सतत (सम्√तन्+क्त)>पा० सतत। तुल० म० गु० बं० ओ० सतत, ते० सततमु, अस० सतते।

सतर—स्त्री० (लकीर, रेखा)–अ० सत्र।

सतरह, सत्रह—वि० (दस और सात)–सं० सप्तदश> प्रा० सत्तरस > अप० सत्तरह, सत्तारह>हिं०, पु० राज० सतरह, हिं० सत्रह। पं० सतारां, कश्मी० सदाह, सिं० सत्रहं, म० सतरा, बं० सतेरो, अस० सोतर, ओ० सतर। तुल० बल्गा० सैदमनांइसेत।

सतसंग—पुं० (अच्छे व्यक्तियों के साथ उठना-बैठना)–सं० सत्संग। तुल० पं० सतसंग, कश्मी० सथसंग, सिं० सत्संगु, म० गु० अस० सत्संग, मल० सत्संगं।

सतसंगति—स्त्री० (सत्संग)–सं० सत्सङ्गति।

सतसई—स्त्री० (वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों)–सं० सप्तशती>प्रा० सत्तसई >हिं० सतसई।

सतहत्तर—वि० (छियतर और एक)–सं० सप्तसप्तति> पा० अट्ठसत्तति>अर्ध मागधी सत्तहत्तरि>प्रा० अप० अट्ठहत्तरि>हिं० अठहत्तर। तुल० सिं० सतहतरि, बल्गा० सैदम दैसेति सैदम।

सतही—वि० (१- सतह या ऊपरी सतह पर होने वाला, २- जो ऊपरी मन से हो, जिस पर गौर न हुआ हो)–अ० सत'ही।

सताए[३५]— क्रि० (कष्ट दिए)–सं० संतापयति > संतापयइ > संतापए > संतापै, संतावै, सताए।

सताना— क्रि० (१- तंग या परेशान करना, २- संतप्त करना, ३- मानसिक क्लेश पहुँचाकर परेशान करना)– सं० सं+तापय्>प्रा० संताव, संतावेति> हिं० सताना। –पुं०–सन्तापन (सम्√तप्+णिच्+ल्युट्)>प्रा० संतावण।

सतासी—वि० (छियासी और एक)–सं० सप्ताशीति>पा० सतासीति>प्रा० अर्धमागधी सत्तासीइ > अप० सत्तासी, सत्तासीति >हिं० सत्तासी, सतासी।

सती—स्त्री० (पतिव्रता स्त्री)–सं० पा० सती>प्रा० सई। तुल० सिं० सती।

सतुआ—प्रा० प्र० पुं० (सत्तू)–सं० सक्तु+क>पा० प्रा० सत्तु > प्रा० सत्तुअ>हिं० सतुआ, सत्तू, सातू(बो०)। तुल० गु० म० सातु, म० सत्तू, पं० सत्तू, सिं० सांतूं।

सत्कार—पुं० (आदर, सम्मान)– सं० सत्कार > पा० प्रा० सक्कार > छ० सकार। तुल० पं० सतकार, सिं० म० गु० सत्कार, अस० ओ० सत्कार, ते० सत्कारमु।

सत्यनिष्ठा—स्त्री० (सत्य में विश्वास)–सं० सत्यनिष्ठा> प्रा० सच्चणिट्ठा> अव० सच्चुणिट्ठा। तुल० म० गु० अस० ओ० सत्यनिष्ठा।

सत्याग्रह—पुं० (सत्य का पालन एवं रक्षा करने के लिए किया जाने वाला आग्रह)–सं० सत्याग्रह। तुल० पं० सतिआग्रहि, सिं० सत्याग्रहु, क० गु० अस०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ० सत्याग्रह ।

सत्व—पुं० (१- तत्त्व, सार, २- सत्ता, ३- प्राण, जीव तत्त्व)–सं० सत्व>पा० प्रा० सत्त । तुल सिं० सतु ।

सथ्य (की०)—पुं० (समूह)–सं० सार्थ >प्रा० सत्थ>अव० सथ्य ।

सत्तर—वि० (उनहत्तर और एक)–सं० सप्तति>पा० सत्तति>प्रा० सत्तरि> अर्ध मागधी सत्तरि> अप० सत्तरि > हिं० सत्तर । तुल० कश्मी० सतथ्, गु० सित्तेर, ओ० सतुरि, बं० म० अस० सत्तर, बल्गा० सैदम दैसेति, स्पे० सेतेन्ता ।

सत्ता— स्त्री० (अस्तित्व)–सं० सत्ता (सत्+तल्–टाप्)>प्रा० सत्ता । तुल० पं० म० गु० ओ० सत्ता ।

सत्ताइस—वि० (बीस और सात)–सं० सप्तविंशति>पा० सत्तवीसति > प्रा० सत्तवीस>अर्ध मागधी सत्तवीस>अप० सत्ताइसा, सत्ताइस > हिं० सत्ताइस, राज० सत्तावीस । तुल० सिं० सतावीह ।

सत्तानवे—वि० (नब्बे और सात)–सं० सप्तनवति>पा० सत्तनवुति>अर्धमागधी सत्ताणउइ>अप० सत्ताणवइ>सत्तानउए, >हिं० सत्तानवे, सत्तानबे। तुल० सिं० सतानवे ।

सत्तावन—वि० (पचास और सात)–सं० सप्तपंचाशत्>प्रा०, अर्ध मागधी सत्तावण्ण>अप० सत्तावण>हिं० सत्तावन । तुल० सिं० सतुवंजाहु ।

सत्तु[१] (की०)—पुं० (बल)–सं० सत्त्व >अव० सत्तु ।

सत्तू— पुं० (भुने हुए जौ, चने आदि का आटा)–सं० सक्तुक>प्रा० सत्तुअ ।

सदन—पुं० (घर रहने का स्थान)–सं० पा० सदन । तुल० म० गु० बं० ओ० सदन, ते० सदनमु ।

सदमा—पुं० (आघात, धक्का, चोट)–अ० सद्मः । तुल० सिं० सदिमो ।

सदर—पुं० (१- सभा का सभापति, किसी संस्था या राज्य का प्रधान शासक)–वि० (प्रधान, मुख्य)–अ० सद्र (One who occupies the highest position in the house, heart, leader, commander, front heart).

सदरु[१] (पद०)—पुं० (व्याघ्र)– सं० शार्दूल>प्रा० सद्दूल>सदूर ।

सदलोनी[१८]—प्रा० प्र० (ताजा मक्खन)–सं० सद्यः नवीनीत>सद लोनी (व्रज में प्रचलित) ।

सदस्य—पुं० (१- सभासद, किसी सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति)–सं० सदस्य (सदस्+यत्) । तुल० म० गु० अस० ओ० क० सदस्य ।

सदा— क्रि० वि० (हमेशा)–वै० सं० सदा, पा० सदा>प्रा० सदा>अप० सइ (प०च०) । तुल० सिं० सदाईं, पं० उर्दू म० गु० बं० ओ० ते० मल० सदा । अ० सदा ।

सदाचार—पुं० (अच्छा आचरण)–सं० सदाचार । तुल० पं० म० गु० बं० असं० सदाचार, ते० सदाचारमु, सिं० सदाचारु ।

सदारत— स्त्री० (सभापतित्व, अध्यक्षता)–अ० सदारत ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सदी—स्त्री० (शताब्दी)– अ० सदी। तुल० पं० उर्दू कश्मी० सिं० गु० सदी।

सद्दर[1]— वि० (सात दाँत वाला)–सं० सप्तदन।

सदुपयोग—पुं० (उत्तम उपयोग)–सं० सदुपयोग। तुल० म० गु० बं० ओ० क० सदुपयोग, मल० सदुपयोगं।

सदृश—वि० (समान)–वै० सं० सदृश्।

सद्भाव— पुं० (हित का भाव, शुभ भाव)–सं० सद्भाव। तुल० पं० अस० सदभाव, म० गु० बं० ओ० सद्भाव, ते० सद्भावमु, मल० सद्भावं।

सद् व्यवहार—पुं० (अच्छा व्यवहार)–सं० सद् व्यवहार। तुल० म० गु० सद्-व्यवहार, अस० ओ० सद् व्यबहार, मल० सद्व्यवहारं।

सद्य (गीतावली)— क्रि० वि० (आज, अभी, तुरन्त, शीघ्र)–वै० सं० सद्यः।

सधायो, सधायौ[२५]—क्रि० (साधना में लगाया, साधने को प्रवृत्त किया)–सं० साध्यति>साध्यइ, साधै, ब्र० सधायो, सधायौ।

सन्[1]—पुं० (वर्ष)–अ० सना (sana)। तुल० सिं० सनु।

सन[2]— पुं० (बोया जाने वाला एक पौधा जिसकी छाल के रेशे से मजबूत रस्सियाँ आदि बनती हैं)–सं० शण> प्रा० सण>हिं० छ० सन।

सन[3]—पुं० (मोखा नामक पेड़, घण्टा-पारुलि वृक्ष)– सं० सन (√सन्+ अच्)।

सनद—स्त्री० (प्रमाण-पत्र)– अ० सनद (authority, support)। तुल सिं० ओ० पं० उर्दू कश्मी० म० गु० बं० सनद, अस० चनद, ते० सनदु।

सनम—पुं० (१- प्रेमपात्र, प्रियतम, २-देवमूर्ति)–अ० सनम (idol)।

सनमुख— क्रि० वि० (समक्ष, आगे, सामने)–सं० सम्मुख।

सनै सनै (सूर०)—क्रि० वि० (धीरे-धीरे)–सं० शनैः शनैः।

सन्तरि[1] (की०)—कृ० (तैरकर, पार कर)–सं० संतृ>प्रा० अप० संतर।

सपना— पुं० (नींद में अनुभव होने वाली बात, वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े)–सं० स्वप्न। तुल० पं०-सुफना, सुपना, सिं० सुपनो, सपनो, गु० स्वप्न, सपनु, म० स्वप्न, अस० सपोन, बं० स्वप्न, ओ० स्बप्न, सपोन, सपन, कश्मी० सोपुन।

सपूत—पुं० (अच्छा पुत्र)–सं० सुपुत्र> प्रा० सुपुत्त, सउत्त। तुल० सिं० सुपुटु।

सपोरा, सपोलया, सपोलिया, सपोला—पुं० (साँप का बच्चा)–सं० सर्पपोतलक >सप्पोलय>सपोलया।

सप्तक—पुं० (सात वस्तुओं का समूह)–सं० सप्तक। तुल० पं० सपतक, कश्मी० सफतक, अस० ओ० सप्तक, ते० सप्तकमु, मल० सप्तकं।

सप्ताह—पुं० (सात दिनों का काल)–सं० सप्ताह>पा० सत्ताह। तुल० सिं० हफ्तो, बलगा० सैद्मित्सा।

सफर—पुं० (यात्रा)–अ० सफ़र। तुल० पं० कश्मी० गु० सफर, उर्दू सफ़र, सिं० सफ़रु।

सफल—वि० (कामयाब)–सं० सफल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० सिं० सफलु, म० सफळ, बं० असं० क० पं० सफल।

सफलता—स्त्री० (कामयाबी, सिद्धि)—सं० सफलता। तुल० प० सिं० असं० सफलता, ओ० सफळता, ते० साफल्यमु, मल० साफ़ल्यं।

सफहा—पुं० (पुस्तक का पृष्ठ) अ० सफ़्हः।

सफा—वि० (स्वच्छ)—अ० सफ़ा (स्त्री० स्वच्छता)। तुल० मु० sāphā, सिं० सुफो।

सफाई—स्त्री० (स्वच्छता, निर्मलता, निर्दोषता)—अ० सफ़ाई।

सफेद—वि० (श्वेत, शुभ्र, जो रंगीन न हो)—फ़ा० सफ़ेद। तुल० कश्मी० सफेद, सिं० सफ़ेद, म० सफेत।

सफेदी—स्त्री० (सफेद होने की अवस्था या भाव, श्वेतता, धवलता)—फ़ा० सफ़ेदः, सफ़ेदी।

सब—सर्व० (समस्त)—सं० सर्व>पा० प्रा० अप० सब्ब, अप० साव (प० च०) >हिं० सब। तुल० सिं० सभु।

सबक—पुं० (१- पाठ, २- नसीहत, शिक्षा)—अ० सबक़।

सबल—वि० (बलशाली)—सं० सबल। तुल० ओ० गु० म० सबळ, असं० सबल, सिं० सबरुं।

सबू—पुं० (मिट्टी, का घड़ा, २- शराब रखने का पात्र)—फ़ा० सुबू।

सबूत—पुं० (प्रमाण)—अ० सुबूत। तुल० सिं० सबूतु, गु० साबिति, क० साबीतु। मु० साबुत (sābut)।

सब्ब—पुं० (कारण, वजह से)—अ० सबब।

सब्र—पुं० (धैर्य, धीरज)—अ० सब्र।

सभा—स्त्री० (परिषद्, गोष्ठी, समिति)—वै० सं० सभा (संसद्, शाला) >पा० प्रा० हिं० सभा। तुल० पं० सिं० म० गु० बं० असं० ओ० सभा, खामति साफाङ्।—पति—पुं० (सभा का अध्यक्ष)—वै० सं० सभापति। तुल० पं० सिं० सभापती, म० बं० असं० सभापति।

सभ्य—वि० (सभा के योग्य, शिष्ट, विनम्र)—सं० सभ्य (सभा + यत्)। तुल० सिं० सभ्यु, म० गु० बं० असं० ओ० सभ्य।

समग्र—वि० (समस्त)—वै० सं० समग्र >पा० समग्ग (समग्र-भाव, एकता) > प्रा० समग्ग>अप० समग्ग (प० च०)।

समझ—स्त्री० (समझने की शक्ति)—सं० सज्ञान।

समझना—क्रि० (किसी बात को अच्छी तरह जान लेना)—सं० संबुध्यते (सम्+ बुध्, अवगमने=to know) >पा० संज्झति>प्रा० संबुज्झइ>हिं० समझ +ना। तुल० पं० उर्दू समझना, सिं० समुझणु, म० समजणें, गु० समजवुं।

समझाना—क्रि० (कोई बात अच्छी तरह किसी के मन में बैठाना)— संबोधयति (सम+बुद्धिर्—अवबोधने—प्रेरणार्थक)। तुल० मु० samjhāo।

समता—स्त्री० (बराबरी)— सं० पा० समता। तुल० पं० गु० बं० असं० ओ० समता, ते० समत्वमु, मल० समत्वं।

समथ्य (क्री०)— वि० (शक्ति वाला, शक्तिमान्)— सं० समर्थ>प्रा० अप०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समत्थ > अव० समत्थ ।

समदर्शी—वि० (सबको एक सा देखने-समझने वाला)–सं० समदर्शिन् । तुल० पं० समदरशी, म० गु० बं० अस० ओ० समदर्शी, ते० मल० क० समदर्शि ।

समधिन— स्त्री० (पुत्र या कन्या की सास)–सं० सम्बन्धिन् > समधिन । तुल० उर्दू समधन, कश्मी० सैन्यन्य, सिं० सेणि, ओ० समंधुणी, समुदुणी ।

समधी—पुं० (पुत्र या पुत्री का ससुर)–सं० सम्बन्धी > भो० समधी । तुल० ओ० समधी, कश्मी० सोन्य, सिं० सेणु ।

समन—पुं० (शान्ति)–सं० शमन ।

समन्दर—पुं० (सागर)–सं० समुद्र > मैथिली समुंदर > द० हिं० समन्दर ।

समन्वय—पुं० (१- विरोध का अभाव, २- कार्य-कारण का निर्वाह होना, ३- नियमित परंपरा या क्रमबद्धता)–सं० समन्वय । तुल० पं० समनवे, म० गु० अस० ओ० क० समन्वय, ते० समन्वयमु ।

समन्वित—वि० (युक्त, सहित)– सं० समन्वित > प्रा० समन्निअ ।

समर—पुं० (युद्ध)–सं० पा०प्रा० समर । तुल० म० गु० अस० ओ० समर, ते० समरमु ।

समरथ—पु० हिं०, वि० (समर्थ)–सं० समर्थ > प्रा० समट्ठ । तुल० पं० समरथ, सिं० समर्थु, म० गु० अस० ओ० समर्थ, ते० समर्थमु ।

समरपे—क्रि० (भेंट में दिये, अर्पित किये)–समर्पयति (सम्+अर्पय्) > प्रा० सम्प्प, समप्पेइ > ब्र० समरपे ।

समर्पण — पुं० (अर्पण, प्रदान)–सं० समर्पण > प्रा० समप्पण ।

समर्पित—वि० (जो समर्पण किया गया हो)–सं० समर्पित > प्रा० समप्पिअ > अप० अव० समप्पिअ ।

समष्टि—स्त्री० (सब का समूह, कुल एक साथ, व्यष्टि का उलटा)–सं० समष्टि (सम्√अश्+क्तिन्) ।

समस्त—वि० (१- संपूर्ण, २- सकल, सब)–सं० समस्त > पा० प्रा० समत्त, महा०, अ० मा० समत्त ।

समाँ[1]—पुं० (सुन्दर और सुहावना दृश्य, नज़्ज़ारा)–अ० समाँ ।

समाँ[2]—पुं० (१- ऋतु, २- जमाना, युग, ३- समय, वक्त)–सं० समय ।

समागम—पुं० (संयोग, संबन्ध, प्राप्ति)–सं० समागम > पा० समागम (सभा) > प्रा० समागम ।

समाधान—पुं० (संदेह-निवारण करना)–सं० समाधान (सम्—आ√धा+ल्युट्) > प्रा० समाहाण (समाधि, चित्त-स्वस्थता) । तुल० म० गु० अस० ओ० पं० समाधान, ते० समाधानमु ।

समाधि—स्त्री० (१- शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता रूप ध्यानावस्था, २- समता, राग आदि का अभाव)–सं० पा० समाधि > प्रा० समाहि ।

समान—वि० (बराबर, तुल्य, एकरूप)–सं० पा० समान । तुल० मु० सामान (sāmān) ।

समाना—क्रि० (प्रवेश करना)–सं० समापयति (सम्+आप्तृ—(णिच्)—व्याप्तौ) > पा० सम्मितो > प्रा० सम्माइ, अव० समाइअ (क्री०) > हिं० समाना । तुल०

Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पं० समाउण, गु० समाववूं, सिं० समाइजणु।

समापन—पुं० (समाप्ति, समाप्त करने की क्रिया या भाव)–सं० समापन (सम् √ आप + ल्युट्), पा० समापन्न (कार्यरत), प्रा० समापण। तुल० म० गु० बं० अस० ओ० समापन, सिं० समाप्ती।

समारोह—पुं० (ऐसा आयोजन जिसमें धूम-धाम के साथ चहल-पहल हो)–सं० समारोह (सम्—आ √ रुह् + अप्)। तुल० पं० म० अस० ओ० समारोह।

समालोचक — पुं० (समीक्षक) – सं० समालोचक > प्रा० समालोचग, समालोयग। तुल० पं० गु० बं० अस० ओ० समालोचक।

समास—पुं० (योग, मेल, दो या अधिक पदों के मेल से बनने वाला नवीन पद)–सं० पा० प्रा० हिं० समास। तुल० म० गु० समास, ते० समासमु, सिं० समासु।

समाहार—पुं० (संग्रह)–सं० पा० प्रा० समाहार। तुल० गु० बं० अस० ओ० समाहार, ते० समाहारमु, मल० समाहरणं।

समिण (१) (की०) क्रि० (ले आना, लाना)–सं० समानी > प्रा० समाणी।

समुचा — वि० (समग्र, संपूर्ण)–सं० समुच्चय > समुच्चअ > समुच्चा > हिं० समूचा।

समिति—स्त्री० (सभा, संस्था, परिषद्, सोसाइटी)–सं० पा० समिति > प्रा० समिइ, अवधी समीती।

समुझाइ — क्रि० (समुझाना) – सं० संवुध्यते > संबुज्झए, संबुज्झइ, समुझै > ब्र० समुझाइ।

समुदाय—पुं० (समूह, झुंड)–सं० पा० प्रा० हिं० समुदाय। तुल० म० गु० बं० ओ० समुदाय, ते० समुदायमु, मल० समुदायं।

समुद्र—पुं० (सागर)–सं० समुद्र (सम् √उन्द् + रक् वा सम् — उद् √रा + क)–सं० समुद्र > पा० प्रा० समुद्द। तुल० पं० समुंदर, उर्दू समन्दर, कश्मी० समंदर, म० गु० बं० ओ० क० समुद्र, खामति सामुत्तो।

समूचा—वि० (सारा, पूरा)–सं० पा० प्रा० समुच्चय।

समृद्ध — वि० (धनी, सम्पत्तिशाली, भरा पूरा)–सं० समृद्ध (सम् √ऋध् + क्त) > पा० प्रा० समद्ध। तुल० म० गु० अस० समृद्ध, ते० समृद्धमु।

समृद्धि—स्त्री० (बहुत अधिक सम्पन्नता, सामर्थ्य, शक्ति)– सं० समृद्धि (सम् √ऋध् + क्तिन्) > पा० प्रा० समिद्धि। तुल० म० गु० बं० अस० ओ० ते० मल० समृद्धि।

समोसा—पुं० (आलू की पिट्ठी से बनाया हुआ पदार्थ)–फ़ा० समोसा। तुल० सिं० संबोसो, म० सामोसा, गु० ते० समोसा, मल० समोस।

सम्पओ (की०) – क्रि० (अर्पण करना, देना, लौटाना)–सं० सम् + अर्पय् > प्रा० समप्प > अप० सम्प, सपओ > अव० सम्पओ।

सम्पलहु(१) (की०) — क्रि० (आकर उपस्थित होना)–सं० सम्पत् > अप० संपल, सम्पलइ, अव० सम्पलहु।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सम्बर (की०)—पुं० (सम्बल, खाने का भोजन)–सं० शम्बल>अव० सम्बर।

सम्बल(१)(की०)—पुं० (पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन या सामग्री)–सं० प्रा० अव० सम्बल।

सम्मान—पुं० (आदर, इज्जत)–सं० सम्मान (सम् √मन् + घञ्)>प्रा० संमाण। तुल० पं० सनमान, म० गु० अस० सन्मान, ते० सन्मानमु।

सम्वरिअ(१) (की०)—क्रि० (छिपाना)–सं० सम्+वृ>प्रा० अप० संवर। सं० संवृत>प्रा० संवरिअ>अव० सम्वरिअ।

सयानी—वि० (१-बुद्धिमान्, समझदार, २- चालाक, होशियार, ३- कपटी, धूर्त)–सं० सज्ञान>सन्नान>सयान+अ >सयाना, सयानी।

सय्याद—पुं० (व्याध, चिड़ियाँ पकड़ने वाला)–अ० सय्याद।

सर, सरा—प्र० ('दूसर', दूसरा' आदि में 'सर' 'सरा' का प्रयोग)–(१) डा० हार्नले–सृतः। (२) डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या–सर। (३) किशोरी दास वाजपेयी–सृ (रेंगना)।

सरई—क्रि० (पूरा होता, काम चलता है, काम निकालता है)–सं० सम्पूरयति >संपूरयइ>संपरए, संपरै, सअरै>ब्र० सरई।

सरकंडा—पुं० (सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठ वाली छड़ें होती हैं)–सं० शर+काण्डम्।

सरकना—क्रि० (जमीन से सटे हुए आगे बढ़ना, रेंगना) – सं० सरति (√सृ)। सं० सरण>प्रा० सरण। तुल० पं० सरकणा, सिं० सिरिकणु, सुरणु, म० सरपटणें।

सरकार—स्त्री० (राज्य, हुकूमत, बड़े व्यक्तियों के लिए संबोधन का शब्द, किसी राष्ट्र के सम्राट्, अधिनायक, राष्ट्रपति या मुख्यमंत्री द्वारा चुने हुए मंत्रियों का वह दल जो किसी राष्ट्र का शासन करता है)–फ़ा० सरकार। तुल० पं० उर्दू कश्मी० म० गु० बं० ओ० क० सरकार सिं० सरकारि।

सरकारी — वि० (राजकीय) – फ़ा० सरकारी।

सरगर्मी — स्त्री० (सरगर्म होने की अवस्था या भाव, बढ़ा हुआ आवेग)–फ़ा० सरगर्मी।

सरजी—क्रि० (बनी हैं, रची गई हैं)–सं० सृजति (√सृज्>प्रा० सिर)> सिरजई>ब्र० सरजी।

सरताज—वि० (शिरोमणि, सबसे अच्छा, नायक, सरदार)–फ़ा० सरताज।

सरदर्द—पुं० (सिर की पीड़ा, झंझट, जंजाल) – फ़ा० सरदर्द। तुल० पं० सिरदर्द, उर्दू सरदर्द।

सरदार—पुं० (किसी मंडली का नायक, अध्यक्ष, स्वामी, किसी प्रदेश का शासक, श्रेष्ठ व्यक्ति, वह जो सिख संप्रदाय को मानता हो)–फ़ा० सरदार।

सरदारी—स्त्री० (सरदार का भाव, अध्यक्षता, स्वामित्व)–फ़ा० सरदारी।

सरदी—स्त्री० (ठंड का मौसम, जाड़ा, शीत)–फ़ा० सर्दी। तुल० पं० उर्दू सरदी (सर्दी), कश्मी० सिं० सर्दी।

सरना—क्रि० (१- सरकना, खिसकना, २- हिलना-डोलना, ३- काम चलना या निकलना, उद्देश्य सिद्ध होना)–सं० पा० सरति>प्रा० सरइ>हिं० सर+ना। —सं० प्रा० सरण (गमन)। तुल० पं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्ना, सिं० सरणु, गु० सरवूँ।

सरनाम — वि० (जिसका नाम हो, प्रसिद्ध)–फ़ा० सरनाम।

सरपरस्त—पुं० (१- रक्षा करने वाला, २- श्रेष्ठ पुरुष, ३- अभिभावक)–फ़ा० सरपरस्त।

सरपुत—पुं० (साले का पुत्र)–सं० श्यालक+पुत्र>अव० सरपुत।

सरफा—पुं० (व्यय, खर्च)–फ़ा० सर्फ़ः।

सरबस[1] (की०)—अव्य० (सब प्रकार से, सब ओर से)–सं० सर्वशः>प्रा० सव्वसो>अव० सबस।

सरबदा (पद०)—क्रि० वि० (हमेशा)–सं० सर्वदा>पा० सव्वदा।

सरमद—वि० (नित्य, अनश्वर)–फ़ा० सरमद।

सरमायादार—पुं० (पूँजीपति, धनी व्यक्ति)–फ़ा० सरमायःदार।

सरमायदारी—स्त्री० (पूँजीवाद, रुपया लगाकर निर्धनों के परिश्रम से नाजाइज़ लाभ कमाना)–फ़ा० सरमायःदारी।

सरल—वि० (आसान)–सं० प्रा० हिं० सरल। तुल० पं० गु० बं० सरल, ओ० म० सरळ, ते० सरळमु।

सरवा — पुं० (छोटा सकोरा)–सं० शराव>सरवा, सरबा।

सरस— वि० (१- रसयुक्त, रसीला २- जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो, जैसे सरस काव्य)–सं० प्रा० हिं० सरस। तुल० पं० बं० सरस।

सरसब्ज—वि० (हरा-भरा, उपजाऊ)–फ़ा० सरसब्ज़।

सरसरी—वि० (जल्दी में उचटती हुई नज़र डालने का काम, २- चलते ढंग पर)–फ़ा० सरसरी।

सरसाम—पुं० (सन्निपात या त्रिदोष नामक रोग, दिमाग के वरम की एक बीमारी)–अ० सर्साम।

सरसि (पद०) — वि० (जैसी)–सं० सदृशी>सरिसी, सरसि।

सरसैया—पुं० (घाट का नाम)– सं० सरस्वती>प्रा० सरस्सइ>सरसैया।

सरसों—स्त्री० (तिलहन)–सं० सर्षप> पा० सासप>प्रा० सस्प>अप० सरिसव >सरिसउ>सरसों। तुल० सिं० सरिहं, गु० सरसियुं, अस० सरियह, ओ० सोरिष।

सरस्वती—स्त्री० (वाग्देवी, भारती, शारदा, विद्या या वाणी की देवी)–सं० सरस्वती>प्रा०, शौ० सरस्सदी, महा० जै० महा० सरस्सइ।

सरहद — स्त्री० (सीमा, हद)–फ़ा० सरहद। तुल० मु० सरहद (sarhad)।

सरा—स्त्री० (चिता)–सं० शर। पुं० (बाण)–सं० शर।

सरापै—क्रि० (शाप देता है, अनिष्ट होने की संभावना व्यक्त करना)– सं० शपति >सरापइ>ब्र० सरापै, सरापे।

सराफ—पुं० (सोने-चाँदी का व्यापारी)–अ० सर्राफ़।

सराफा—पुं० (जहाँ चाँदी-सोना बेचने वालों की मंडी हो)–अ० सर्राफ़ः।

सराव — पुं० (सकोरा, मिट्टी का कटोरनुमा पात्र)–सं० शराव (अमरकोश) >प्रा० सराव (पाइअ०)।

सरावक—पुं० (जैन धर्म मानने वाला, जैन)–सं० श्रावक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरासर—क्रि० वि० (एक सिरे से दूसरे तक, नितान्त, साक्षात्, पूर्णतः)–फ़ा० सरासर।

सराहनीय — वि० (प्रशंसनीय) – सं० श्लाघनीय > प्रा० सलाहणीअ > हिं० सराहनीय।

सरिच्छ—वि० (समान, सदृश)– सं० सदृश > प्रा० सरिस > पु० हिं० सरिस।

सरिस—वि० (समान)–सं० सदृश > प्रा० सारिस, सरिस, सरीवण्णो > हिं० सरिस।

सरीखा—वि० (समान)–सं० सदृश > प्रा० सरिक्ख > हिं० सरीखा, सरीख।

सरूप—प्रा० प्र० (स्वरूप)–सं० स्वरूप > प्रा० सरूय, सरूव।–वि० (सुंदर)– सं० स्वरूप > प्रा० सरूय > अव० सरूअ (की०)।

सरेआम—क्रि० वि० (सबके सामने, खुले आम)–फ़ा० सरेआम।

सरेखा[1] (पद०)—वि० (श्रेष्ठ, बुद्धिमान्, गुणी)–सं० सलेख > सरेखा।

सरेशाम—क्रि० वि० (शाम होते ही, शाम के समय ही)–फ़ा० सरेशाम।

सरोकार — पुं० (वास्ता, संबंध, प्रयोजन)–फ़ा० सरोकार। तुल० पं० उर्दू सरोकार।

सरोवर—पुं० (तालाब) – सं० प्रा० सरोवर। तुल० पं० म० गु० बं० अस० क० सरोवर, मल० सरोवरं, ते० सरोवरमु।

सरौत (पद०)—पुं० (सरौता)–सं० सार पत्र + क > सारवत्तअ > सारउत्तअ > सरौता, सरौत।

सर्ग—पुं० (किसी ग्रन्थ विशेष रूप से काव्य-ग्रन्थ का अध्याय) – सं० सर्ग (√सृज् + घञ्), प्रा० सग्ग (१- सृष्टि, रचना, २- मुक्ति)। तुल० पं० सरग, म० गु० ओ० ते० मल० सर्ग।

सर्द — वि० (शीतल, ठंडा) – फ़ा० सर्द।

सर्वज्ञ—वि० (सब कुछ जानने वाला)– सं० सर्वज्ञ > प्रा० सव्वज्ज। तुल० पं० सरवग्ग, ओ० सर्वज्ञ, मल० सर्वज्ञन, म० बं० सर्वज्ञ।

सर्वत्र—क्रि० वि० (सब जगह)–सं० सर्वत्र (सर्व + त्रल्) > पा० सव्वत्र > प्रा० सव्वत्थ। तुल० पं० सरवत्त, कश्मी० सरवतुर, ते० म० गु० बं० सर्वत्र, ओ० सर्वत्र।

सर्वथा—अव्य० (हर प्रकार से, सब तरह से, बिलकुल, सम्पूर्णतः)– सं० सर्वथा > पा० सव्वथा।

सर्वदा—क्रि० वि० (हमेशा)–सं० सर्वदा (सर्व + दाच्) > पा० सव्वदा।

सर्वस्व—पुं० (सब कुछ)–सं० सर्वस्व > पा० सव्वसो > प्रा० सव्वस्स > अव० सव्वस्स (की०), सरवस्स (की०)।

सर्वांगीण—वि० (जो सभी अंगों से युक्त हो)–सं० सर्वांगीण > महा० सव्वंगीण, प्रा० सव्वंगिअ (पाइअ०)। तुल० पं० सरवंगी।

सर्वेक्षण—पुं० (किसी विषय के ठीक तथ्यों को जानने के लिए उसके सभी अंगों का किया गया आधिकारिक निरीक्षण) – सं० सर्वेक्षण > प्रा० सव्वेक्खण। तुल० पं० सरवेखण।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वोदय—पुं० (सभी का उदय या उन्नति)–सं० सर्वोदय>प्रा० सव्वोदय। तुल० पं० सरबौदै, बं० सवाइर, सर्वोदय, ओ० सर्वोदय, ते० सर्वोदयमु, मल० सर्वोदयं।

सलजम—पुं० (एक प्रसिद्ध तरकारी)–अ० सल्जम।

सलतनत— स्त्री० (राज्य, शासन, सत्ता)–अ० सल्तनत।

सलाई—स्त्री० (धातु की बनी हुई कोई पतली छड़)–सं० शलाका>प्रा० सलागा, सलाया>अप० सल (प०च०), >हिं० सलाई।

सलाख — स्त्री० (धातु की छड़, शलाका)–तु० सलाख।

सलामत—वि० (जो जीवित या कुशल-पूर्वक हो, सुरक्षित)–अ० सलामत।

सलाह—स्त्री० (परामर्श, राय)–अ० सलाह (righteousness, goodness)। तुल० मु० सलहा (salhā)।

सलाहकार—वि० (परामर्शदाता)– अ० सलाह+फ़ा० कार।

सलीक़ा—पुं० (१- कार्य संपादन करने का सामान्य तथा स्वाभाविक ढंग, २- तमीज, ३- शिष्टता)–अ० सलीकः।

सलोतरी—पुं० (पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करने वाला, अश्व-विद्या के विशेषज्ञ)–सं० शालिहोत्र (घोड़ा)> सलोतरी।

सल्लो—प्रा० प्र०, वि० (सीधी, मूर्ख)–सं० सरला।

सवांन— अव्य० (समान)–प्रयोग–'सत गुरु सवांन को सगा.... .. कबीर।–सं० समान>प्रा० सवांन, पू० तथा मध्य हिं० सवांन।

सवाँ—पुं० (चावल की किस्म, सावाँ नाम का अनाज)–सं० श्यामाक >प्रा० सामाय, छ० समवाँ, हिं० सावाँ, साँवाँ।

सवा—वि० (+¼, सवाया, सवाई, सवाये)–सं० सपाद>प्रा० सवाय>हिं० सवा। तुल० म० सवा,—व्वा, कु० गु० सवा, बं० सओया।

सवाद—पुं० (कोई चीज खाने या पीने पर जबान या रसनेन्द्रिय को होने वाली अनुभूति)–सं० स्वाद>सवाद।

सवाब—पुं० (१-पुण्य, २-नेकी, भलाई, ३- सत्कर्मों का पर-लोक में मिलने वाला शुभ फल)–अ० सवाब।

सवाया—वि० (अधिक बढ़चढ़ कर)–सं० सपाद + क > प्रा० सवायअ > हिं० सवाया।

सवार — पुं० (अश्वारोही) – सं० अश्ववार>अप० असवार (सवार के अर्थ में प्रयुक्त)>हिं० सवार। तुल० फ़ा० सवार (घुड़सवार)।

सवारना—क्रि० (सजाना)–सं० संवरति >(सम्+√वृञ् वरणे—to choose), संवृणोति (वृञ् वरणे = वरण करना, छाँटना)।

सवारी—स्त्री० (सवार होने की वस्तु)–फ़ा० सवारी।

सवाल — पुं० (प्रश्न पूछना)–अ० सवाल। तुल० मु० सवाल।

सवेर — स्त्री० (प्रातः काल) – सं० स + बेला(११)। तुल० पं० सवेर, बं० सकाल, ओ० सकाळ, उर्दू गु० सवेरा, सवेळा, म० सवेर, सवेळ।

सवैया—पुं० (तौलने का एक बाट जो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सवा सेर का होता है)–सं० सपाद> प्रा० सवाय>हिं० सवा+ऐया (प्र०)।

ससुर—पुं० (पति या पत्नी का पिता)–सं० श्वशुर>पा० प्रा० ससुर >हिं० ससुर, सुसर। तुल० ओ० शशुर, कश्मी० ह्युहुर, पं० सौहरा, सिं० सहुरो, उर्दू० सुसर, ख़ुसुर, अस० शहुर, म० सासरा। ग्रीक ekuros, लैटिन socer, जर्मन sweher।

ससुराल—स्त्री० (श्वसुर का घर)–सं० श्वशुरालय > प्रा० सासुर+आलय। तुल० पं० सहुर, सिं० साहुरा, म० सासर, गु० सासरुं।

सस्ता—वि० (जो महँगा न हो)–मु० सस्ता (sastā)। तुल० पं० ससता, कश्मी० सस्तु, सिं० सस्तो, गु० सस्तु, अस० सस्तीया, ओ० शस्ता।

सहज—वि० (१-जन्मजात, प्राकृतिक)–सं० सहज। तुल० पं० सहिज, गु० अस० ओ० क० सहज, ते० सहजमु।–(२-सरल)–सं० सहज। तुल० सिं० सविलो, म० बं० अस० सहज।

सहनक—पुं० (एक प्रकार की रकाबी जिसका व्यवहार प्रायः मुसलमान लोग करते हैं)–अ० सह्नक।

सहना[३१]—क्रि० (सहन करना)–सं० सह्यति, सहते(सं०√सह्)>पा० सहति >प्रा० सहइ>हिं० सहना।–पुं०–सं० सहन(√सह+ल्युट्)=सहने की क्रिया, पा० सहन। तुल० पं० सहिणा, सिं० सहणु, गु० सहेवुं, ओ० सहिबा, क० सहिसुबुदु।

सहमत—वि० (जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो, एक मत का)–सं० सहमत। तुल० पं० सहिमत, म० गु० सहमत, बं० सम्मत।

सहमति—स्त्री० (सहमत होने का भाव, एक मत होना)–सं० सहमति। तुल० पं० सहिमति, सिं० सहमती, ओ० सहमतिता, ब० सम्मति।

सहरोसा—पुं० (क्रोध)–सं० सहरोष> सहरोस, अव० सहरोसा।

सहल—वि० (आसान, सुगम)–अ० सहल>अप० सहल (प० च०)।

सहस्र—वि० (पाँच सौ का दूना)–सं० सहस्र>प्रा० सहस्स (पाइअ०), मागधी शहश्श, महा०, अ० माग०, जै० महा०, जै० शौर०, शौ० सहस्स>अप० सहस्स (प० च०)।

सहाय, सहाए—पुं० (सहायक)–सं० साहाय>सहाय, बहु वचन सहाए।

सहायता—स्त्री० (मदद)–सं० सहायता–(सं० सहाय+तल्—टाप्)। तुल० पं० सहाइता, सिं० म० गु० अस० सहायता, बं० साहाय्य, ओ० साहाय्य।

सहिजन—पुं० (एक प्रकार का बड़ा वृक्ष)–सं० शोभाञ्जन>सोहञ्जण> हिं०सहिजन्।

सहिदानी—पु० हिं०, प्रा० प्र०, स्त्री० (निशानी)–सं० सज्ञानदायिनी।

सहियत—क्रि० (भोगते या सहते हैं)–सं० सह्यति>सहति, ब्र० सहियत।

सहिष्णु—वि० (सहनशील)–सं० सहिष्णु (√सह्+इष्णुच्)। तुल० क० म० बं० ओ० सहिष्णु, ते० सहिष्णुवु।

सहिष्णुता—स्त्री० (सहनशीलता)–सं० सहिष्णुता (सहिष्णु+तल्—टाप्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० म० गु० बं० अस० ओ० सहिष्णुता, ते० मल० सहिष्णुत ।

सहिहु[1] (पद०)—क्रि० (कहो)—सं० कथय या शास् का धात्वादेश>प्रा०अप० साह (कहना) ।

सही—क्रि० वि० (भला, जरूर, जरा, कोई बात नहीं)–अ० सहीह । तुल० सिं० उर्दू सही ।

सही-सही — क्रि० वि० (ठीक-ठीक, अच्छी तरह)–अ० सहीह ।

सहुं (पद०)—क्रि० वि० (सामने)–सं० सम्मुख>अप० हिं० सहुं ।

सहृदयता—स्त्री० (दयालुता, करुणा)–सं० सहृदयता । तुल० पं० सहिरदता, गु० बं० ओ० सहृदयता, ते० सौहार्दमु ।

सहेली—स्त्री० (संगिनी)–सं० सखी> प्रा० सही+एली (प्र०) । तुल० पं० सहेली, सिं० साहिडी ।

सांकेतिक—वि० (संकेत संबंधी)–सं० साङ्केतिक । तुल० पं० संकेतक, क० सकेतद, म० गु० बं० सांकेतिक ।

सांख्य—पुं० (दर्शन-विशेष, कपिलमुनि-प्रणीत दर्शन)–सं० सांख्य>प्रा० संख ।

सांगोपांग—वि० (सभी अंगों और उपांगों सहित)–सं० साङ्गोपाङ्ग । तुल० कश्मी० सोंगूपांग, ते० सांगोपांगमु, म० गु० अस० ओ० सांगोपांग, बं० साङ्गोपाङ्ग

सांझ-पहाऊं—क्रि० वि० (सायं-प्रातः)–सं० संध्या+प्रभात ।

सांधि—स्त्री०(धनुष पर बाण चढ़ाना)–सं० सन्धानम्>संधान, संधानत, ब्र० सांधि ।

सांबर — पुं० (साँभर, हरिन)–सं० शम्बर>प्रा०संवर>हिं० सांवर । तुल० पं० सावर, गु० सावर, कु० साब्लो ।

साँइँ—पुं० (स्वामी)–सं० स्वामिन्> पा० सामिको>प्रा० सामि, सामिण> अप० सामिआ>सामी > हिं० साँइँ । तुल० गु० साँइ, पं० साईं, म० सांई ।

साँकर, साँकल — स्त्री० (जंजीर, अर्गला)–सं० शृङ्खला>पा० संखला, संक्खल>प्रा० संकला>सकाँल, साँकर । तुल० बं० सिखल, पं० संग्गल, गु० सांकळ, सिं० सांघर ।

साँखौ[1] (पद०)—पुं० (क्षोभ, चित्त की व्यग्रता, मन का दुःख)–सं० संक्षोभ >प्रा० संखोह>साँखोह>साँखौ ।

साँच, साचा—पुं० (सच्च)–सं० सत्य> पा० प्रा० सच्च>हिं० साँच । तुल० पं० सच्च, सिं० सच्चु, सचो, गु० साचूँ, म० साच, सांचा ।

साँझ—स्त्री० (सायंकाल)–सं० संध्या> संज्झ, सञ्जा, स० साँझे>संझा>हिं० साँझ, सांझ (बो०) । तुल० पं० संधिया, कश्मी० संद्या, सिं० ओ० क० संध्या, ते० संध्य ।

साँझ-सकारे—(प्रातःकाल से संध्या तक, संध्या से प्रभात तक)–सं० सकाल> सकार>सकारे (अधिकरण कारक, एक वचन) ।

साँठ[1] (पद०) — स्त्री० (पूँजी या कमाई)–सं० संस्था>प्रा० संठा > हिं० साँठ ।

साँड—पुं०(वह बैल जो मृतक की स्मृति में धर्मार्थ हिंदू लोग दाग कर छोड़ देते हैं)–सं० षण्ड>प्रा० सण्ड>हिं० साँड ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साँड़नी—स्त्री० (सवारी के लिए प्रयुक्त बहुत तेज दौड़ने वाली ऊँटनी)–प्रा० संढो>सु०, हिं० साँड़नी।

साँथरि, साँथरी[1]—स्त्री० (चटाई) – सं० संस्तार (बिस्तर)>प्रा० संथार> साँथर>हिं० साँथरि, साँथरी, पु० हिं० साँथरा।

साँप—पुं० (सर्प)–वै० सं० सर्प>प्रा० सप्प, सप्पो>अप०, पूर्वी अवधी साँपु> हिं० साँप। तुल० पं० सप्प, उर्दू सांप, कश्मी० सरुफ, बं० ओ० साप, म० सांप, सर्प।

साँवला—वि० (श्याम वर्ण का)–सं० श्यामल+क>प्रा० सामलअ>साँवला। तुल० पं०साँवला, साउला, सिं० साँविरो, गु० सामळूं।

साँवाँ—पुं० (कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न)–सं० श्यामाकः>पा० सामाको > प्रा० सामाअ>हिं० सामा, साँवा। तुल० पं० साँवाक, सिं० साँआँ, ने० सामा।

साँस—स्त्री० (श्वास, दम)–सं० श्वास >प्रा० सास>हिं० साँस, ओ० साँसि।

साँसौ(पद०)—पुं०(संशय)–सं० संशय >प्रा० संसय>साँसौ, ब्र० साँसो।

सा—संबंध सूचक अव्य० (जैसा, तरह, समान, ठीक वही नहीं प्रत्युत उसके समान अर्थ को द्योतित करने के लिए प्रयुक्त जैसे लाल-सा)– सं० सम् (समास में संज्ञा शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका अर्थ है— की भाँति, समान)>अव० सम>सअं>सा।

साइत—क्रि० वि० (शायद) – फ़ा० शायद।

साउज — पुं० (जंगली जानवर, वे जानवर जिनका शिकार किया जाता है)–सं० श्वापद>प्रा० सावय>साउज्ज >पु० हिं० साउज, अवधी सौंजा।

साकबनिक — पुं०, (साक-भाजी का व्यापारी)–सं० शाकवणिक् > साकव-निक।

साकम[1](की०)— पुं० (जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बंधा हुआ मार्ग)–सं० संक्रम (पुल)>प्रा० संकम>सक्कम>अव० साकम।

साख[1]— (प्रमाण, गवाह)–सं० साक्ष्य >सक्ख>हिं० साख।

साख[2]— (वंश-परम्परा, प्रतिष्ठा)–सं० शाखा>हिं० साख।

साकार—वि० (मूर्त, आकारयुक्त)–सं० साकार। तुल० सिं० साकारु, ते० साकारमु, पं० कश्मी० गु० बं० अस० ओ० साकार।

साकी—पुं० (शराब पिलाने वाला)–अ० साक़ी।

साक्षरता—स्त्री० (पढ़े-लिखे होने का भाव)–सं० साक्षरता। तुल० पं० साख-रता, ओ० साख्यरता, मल० साक्षरत्वं, क० साक्षरत।

साखी—पुं० (वह मनुष्य जिसने किसी घटना को घटित होते हुए अपनी आँखों से देखा हो)–सं० साक्षिन्>प्रा० सक्खि >अप० सक्खी>हिं० साखी। तुल० क० मल० साक्षि, म० गु० अस० ते० साक्षी।

साग— पुं० (पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ)–सं० शाक>प्रा०, हिं० साग।

सागर—पुं० (समुद्र)–सं० सागर>प्रा० सायर>अव० साअर (की०)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साज—पुं० (उपकरण, सामान, बाजा)—सं० सज्जा, फ़ा० साज़।

साजन— पुं० (१- भला आदमी, २- पति, स्वामी)—सं० सज्जन > प्रा० सज्जण तुल० पं० सज्जण, सिं० साजनु, गु० साजन — (२- प्रेमी)— तुल० सिं० साजनु, म० साजण।

साजा(पद०)—क्रि० (आसक्ति करना)—सं० सञ्ज् > प्रा० सज्ज, सज्जइ।

साजिंदा—पुं० (साज या बाजा बजाने वाला)—फ़ा० साज़िन्दः।

साजिश—स्त्री० (षड्यंत्र, कुचक्र)—फ़ा० साज़िश। तुल० सिं० साज़िश।

साजिशी—वि० (साजिश करने वाला, कुचक्री)—फ़ा० साज़िशी।

साझा—पुं० (हिस्सेदारी)—सं० सहार्ध, सहार्द्ध > प्रा० सह + अद्ध > साद्ध > सज्झ < हिं० साझा।

साझासीर—स्त्री० (आधा बटाई, हिस्सा पट्टी, सीर या हल में साझा)—सं० सार्द्ध-कसीर > साद्धकसीर > साझकसीर सज्झ असीर > साझासीर।

साझेदारी— स्त्री० (हिस्सेदारी)—सं० सहार्द्ध > प्रा० सह + अद्ध > हिं० साझे + फ़ा० दार + ई० (प्र०)। तुल० सिं० हिसेदारी, कश्मी० हिसुदारी।

साठ— वि० (पचास और दस)—सं० षष्ठि > पा० प्रा० अप० सट्ठि > हिं० साठि, साठ। तुल० सिं० सठि, गु० म० साठ। स्पे० से सेन्ता, बल० शैस्त देसत।

साठी—पुं० (एक प्रकार का धान)—सं० षष्टिक > प्रा० सट्ठिअ > सट्ठिय > हिं० साठी।

साड़ी—स्त्री० (स्त्री-वस्त्र, सारी)—सं० शाटिका > प्रा० साडिआ, साडी, अप० साडी (महा०) > हिं० साडी, साड़ी। तुल० ओ० साडी, सिं पं० साढी, बं० गु० म० साडी।

साड़े, साढ़े—वि० (+१/२ आधा और एक के साथ)—सं० सार्द्ध > प्रा० सड्ढ > हिं० साढ़े, साड़े। तुल० बं० साडे, सिं० साढा, ने० साडे, म० गु० साडा।

साढ़ी[1] (पद०)— स्त्री० (१- मोटी मलाई, २- श्रद्धा)—सं० श्रद्धा > सड्ढा > साढ़ > साढ़ि > साढ़ी। अथवा सं० श्रद्धिका > सड्ढिआ > सड्ढी > साढ़ी।

साढ़ू—पुं० (साली का पति)—सं० श्यालीवोढ्ऋ > प्रा० सालढुओ > हिं० साढ़ू। तुल० पं० साढ़ू, उर्दू साढ़ू, ओ० सढ़ू, क० सड्डक, कश्मी० सोजुव, सिं० संढ़ू, म० साडू, गु० साढु, अस० शालपति।

सात— वि० (सात की संख्या)—सं० सप्त > पा० प्रा० अप० सत्त > हिं० सात, सत्ता (ताश का पत्ता)। तुल० पं० सत्त, कश्मी०। सथ, सिं० सत, गु० बं० अस० सात। स्पे० सेप्तिमो(सातवाँ), सिएते 'siete' (सात), बल्गा० सैदेम, पह० शबा।

सातवाँ— वि० (जो क्रम से सात पर हो)—सं० सप्तमः, पा० प्रा० सत्तम > हिं० पं० सातवाँ। तुल० गु० सातमूँ, ने० सातौं, सिं० सतों।

१- साति— स्त्री० (शासन, दंड)— सं० शास्ति।

२- साति[1] (की०)— स्त्री० (बल-प्रयोग)— सं० शक्ति > प्रा० सत्ति > साति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३- साति[1] (की०)—स्त्री० (सुख)–सं० प्रा० सात>अव० साति।

सात्विक— वि० (सतोगुणी, सत्त्वगुण-प्रधान, सच्चा, यथार्थ)– सं० सात्त्विक (सत्त्व+ठञ्)। तुल० पं०सातविक, सिं० सात्विकु, ओ० क० बं० म० सात्विक, गु० सात्त्विक।

साथ—संबन्धसूचक अव्य० (सहित)–सं० सार्धम्>प्रा० सत्थ>हिं० साथ।–पुं० (संगत, संग रहने का भाव)–सं० सार्थः, पा० प्रा० अप० सत्थ>हिं० पं० साथ। तुल० सिं० साथु, राज० साथि। बल्गा० सस, स (सं० सह)।

साथी—पुं० (साथ रहने वाला)–सं० सार्थिक>प्रा० सत्थिय (सार्थवाह, सार्थ का मुखिया)। तुल० सिं० साथी।

सादगी— स्त्री० (१- सादापन, २- सीधापन)–फ़ा० सादगी। तुल० सिं० सादगी।

सादा—वि० (१- जिसमें किसी तरह की उलझन, पेंच की बात या बनावट न हो, सरल)–फ़ा० सादः। तुल० त० पं० सादा, म० साधा, गु० सादुं। २- (२- खालिस, बिना मिलावट का)– तुल० पं० उर्दू ओ० सादा, कश्मी० सादु, सिं० सादो।

साविक[1]—वि० (१- सच्चा, २- ठीक, दुरुस्त)–अ० सा'दिक।

सादिक[2]—पुं० (मित्र)–अ० सदिक।

साध[1]—स्त्री० (अभिलाषा, इच्छा)– सं० श्रद्धा>प्रा० सद्धा > अव० साध (की०)>हिं० साध।

साधु[1]—पुं० सं० पा० साधु > प्रा० साहु। तुल० कु० साऊ।

साधन — पुं० (१- सामान, सामग्री, उपकरण)–सं० साधन (√सिध्+णिच् साधादेश+ल्युट्) अप० साहण (प० च०)। तुल० पं० गु० ओ० साधन, ते० साधनमु, सिं० साधनु।–(२- ऐसी कोई वस्तु या उपाय जिससे कुछ करने की सामर्थ्य आती है)–तुल० पं० म० गु० क० साधन, ते० साधनमु।

साधना — स्त्री० (सिद्धि, आराधना, उपासना, तुष्टीकरण) – सं० साधना (√ सिध् + णिच्, साधादेश, युच्— टाप्)–तुल० पं० ओ० सिं० म० साधना। कश्मी० सादना।

साधना — क्रि० (सिद्ध करना, पूरा करना)–सं० साध्नोति (सं०√साध्)> प्रा० साहइ, साहेइ, साहेंति।

साधारण—वि० (मामूली, सामान्य)–सं० साधारण [सधारण+अण् (स्वार्थे)]। तुल० पं० गु० अस० ओ० मल० साधारण, ते० साधारणमु, सिं० साधा-रणु, कश्मी० सादारन।

साधु—वि० (नेक, उत्तम, पुण्यात्मा, विशुद्ध, मनोहर)–सं० साधु (√साध्+ उन्)>प्रा० साहु। तुल० पं० सिं० साधू, म० गु० बं० अस० ओ० साधु, ते० साधुवु, त० सादु।

साध्य—वि० (सिद्ध करने योग्य, साध-नीय, सम्भव होने योग्य, स्थापित करने योग्य, जानने योग्य) – सं० साध्य (√सिध्+णिच्, साधादेश + यत्)। तुल० म० गु० ओ० साध्य, ते० साध्यमु।

सान—पुं० (चाकू या छुरी आदि पर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धार रखने का पत्थर)–फ़ा० सान।

सानी—वि० (१- दूसरा, २- बराबरी का, तुल्य)–अ० सानी। तुल० सिं० सानी।

सानो[1](की०) —पुं० (इशारा)–सं० संज्ञा > प्रा० अप० सण्णा > साना, सान।

सान्निध्य—पुं० (निकटता, समीपता)–सं० सांनिध्य > प्रा० संनिज्झ। तुल० गु० बं० अस० म० सान्निध्य, ते० सान्निध्यमु।

सापेक्ष—वि० (अपेक्षा सहित, जिसमें किसी की अपेक्षा हो)–सं० सापेक्ष। तुल० पं० सापेख, म० गु० बं० अस० क० सापेक्ष, ओ० सापेख्य।

साफ—वि० (स्पष्ट, पवित्र, स्वच्छ, निर्मल, सरल, बेदाग़, चिकना, सपाट)–अ० साफ़। तुल० पं० गु० साफ, कश्मी० उर्दू साफ़, ओ० सफ़ा, सिं० साफु।

साफदिल—वि० (किसी की ओर से मन में द्वेष न रखने वाला)–अ० साफ़+फ़ा० दिल।

साबर—पुं० (मिट्टी खोदने का एक लंबा नुकीला औजार)–सं० शर्वला> प्रा० सव्वला > सव्वरा > साबरा > साबर।

साबित — वि० (प्रमाण द्वारा सिद्ध किया हुआ)–फ़ा० साबित।

साबुत—वि० (समूचा, सारा) – फ़ा० सबूत। तुल० सिं० सबूतु।

साबुन—पुं० (एक पदार्थ जिससे शरीर एवं कपड़े साफ किये जाते हैं)–अ० साबुन। तुल० पं० म० साबण, गु० साबु, बं० साबान, अस० चाबोन, सिं० सावुणु, क० साबूनु।

सामंजस्य—पुं० (संगति, मेल, मिलान, औचित्य)–सं० सामञ्जस्य (समञ्जस+ष्यञ्)। तुल० म० गु० क० अस० सामंजस्य, मल० सामंजस्यं, बं० सामञ्जस्य।

सामग्री—स्त्री० (सामान, वे पदार्थ जिनका किसी कार्य-विशेष में उपयोग होता हो)–सं० सामग्री (समग्र+ष्यञ्—ङीष्, यलोप)>प्रा० सामग्गी। तुल० पं० समग्री, कश्मी० सामुग्री, मल० ते० सामग्रि, गु० बं० अस० सामग्री।

सामायिक—वि० (समय की दृष्टि से उपयुक्त, ठीक समय का)–सं० सामयिक (समय+ठक्), स्त्री० सामयिकी। तुल० पं० समेसिर, गु० बं० ओ० सामयिक।

सामर्थ्य—पुं० (कोई कार्य करने की क्षमता)–सं० सामर्थ्य (समर्थ+ष्यञ्) > अव० सामथ्थ (की०)। तुल० पं० समरत्था, गु० बं० अस० ओ० क० सामर्थ्य, ते० सामर्थ्यमु।

सामाजिक—वि० (समाज संबंधी)–सं० सामाजिक (समाज + ठक्) > प्रा० सामाइअ। तुल० पं० समाजक, सिं० समाजिक, म० गु० बं० अस० ओ० सामाजिक, ते० सामाजिकमु।

सामान—पुं० (उपकरण, सामग्री)–फ़ा० सामान। तुल० सिं० सामानु।

सामने—क्रि० वि० (१- संमुख, समक्ष, २- उपस्थिति में, ३- सीधे, आगे, ४- मुकाबले में) – सं० सम्मुख > प्रा० सम्मुहे>प्र० हिं० सामुहें। तुल० पं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साह्मणे, म० समोर (आगे), सिं० साम्हूं (समक्ष)।

सामान्य—वि० (मामूली, तुच्छ, समूचा, समस्त)–सं० सामान्य (समान+ष्यञ्) >प्रा० सामण्ण। तुल० गु० बं० अस० ओ० क० सामान्य, ते० सामान्यमु।

सामुद्रिक — वि० (समुद्र में उत्पन्न, समुद्र-सम्भूत)–सं० सामुद्रिक (समुद्र+ठञ्)>प्रा० सामुद्दिअ (सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता)। तुल० पं० समुंदरी, सिं० सामूंडी, ओ० सामुदिरक।

सामुहें (पद०)—क्रि० वि० (सामने, आगे)–सं० सम्मुख>प्रा० संमुह>समुह >हिं० सामुह+ए।

सामूहिक—वि० (समूह से संबंध रखने वाला) – सं० सामूहिक। तुल० पं० समूहक, गु० बं० अस० ओ० क० सामूहिक, ते० सामूहिकमु।

साम्राज्य—पुं० (वे अनेक राष्ट्र जिन पर कोई एक शासन-सत्ता राज्य करती हो)–सं० साम्राज्य (सम्राज्+ष्यञ्)। तुल० पं० उर्दू सामराज, कश्मी० साम्राज, सिं० साम्राजु, ते० साम्राज्यमु, त० साम्राज्यम्, मल० साम्राज्यं।

साया — पुं० (छाया, परछाँई)–फ़ा० सायः।

सारंगी—स्त्री० (एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा)–सं० सारंग। तुल० कश्मी० सारंग, गु० अस० ओ० सारंगी, ते० त० मल० क० सारंगि।

सार[1]—पुं० (साला, पत्नी का भाई)–सं० श्याल।

सार[2] — स्त्री० (पशुशाला, गोठ, गोशाला)–सं० शाला>सार।

सार[3]—पुं० (शतरंज का मोहरा, गोट)–सं० शार (√शार्+अच् वा√शृ+घञ्)>हिं० सार।

सार[4]—पुं० (मूल भाग, सत, सारांश)–सं० सार (√सृ+घञ्, सार+अच्)> पा० प्रा० हिं० सार। तुल० पं० कश्मी० म० बं० अस० ओ० सार, सिं० सारु, गु० सार, सारुं; ते० सारमु, त० सारु, मल० सारं।

सारका—संबंध सूचक अव्य० (सामान)–सं० सदृश>प्रा० सरिक्ख>हिं० सरीख, सरीक, सारका।

सारथी—पुं० (रथ हाँकने वाला)–सं० सारथिन्।

सारींह[1] (पद०) — क्रि० (टारना, हटाना, इधर से उधर करना)–सं० सारयति>प्रा० सारइ।

सारांश—पुं० (उपसंहार)–सं० सारांश। तुल० सिं० सारु, म० गु० बं० अस० ओ० क० सारांश, ते० सारांशमु, त० सारांशम्।

१- सारा — वि०(समस्त, कुल, पूरा, समग्र)–सं० सर्व। फ़ा० सारा (ख़ालिस, बेमेल, अकृत्रिम)। तुल० पं० उर्दू ओ० सारा, कश्मी० सोरुय, गु० सारुं, सांरूँ, सिं० समूरो।

२-सारा[1] (पद०)—क्रि० (ठीक करना, दुरुस्त करना, सुन्दर बनाना) – सं० सारयति>प्रा० सारइ।

सारिका — स्त्री० (मैना, चिड़िया-विशेष)–सं० सारिका (√सृ+ण्वुल्—टाप्, इत्व)>प्रा० सारिआ, सारिइआ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुल० म० गु० बं० सारिका, ओ० सारी, ते० सारिक।

सारिअ[1] (की०) — क्रि० (प्रेरित करना)–सं० सारय्>प्रा० अप० सार, अव० सारिअ।

सार्थक—वि० (उपयोगी, अर्थ सहित, अर्थ वाला)–सं० सार्थक (सह अर्थेन)। तुल० गं० सारथक, म० सार्थ, गु० बं० ओ० सार्थक, ते० सार्थकमु।

सार्वजनिक — वि० (सर्व-साधारण संबंधी)–सं० सार्वजनिक (सर्वजन+ठक्—इक)। तुल० बं० क० सार्वजनिक, अस० ओ० सार्वजनिक, ते० सार्वजनीनमु।

१- साल[1] (पद०)—पुं० (शरीर में चुभा हुआ काँटा, कष्ट, दुःख)–सं० शल्य>प्रा० सल्ल>साल।

२- साल—पुं० (वर्ष)–पह० फ़ा० साल, जंद सरेध, सं० शरद्। संख्यावाची शब्दों के बाद पहलवी 'सालेह' आता है जिससे फ़ा० सालह, उससे हिं० इकसाला, दुसाला, सौसाला आदि बनते हैं।[1] तुल० सिं० सालु।

३- साल—पुं० (साखू, साल नाम का वृक्ष)–सं० शाल (√शल्+घञ्)>प्रा० साल।

साल-भर—क्रि० वि० (एक वर्ष तक)–फ़ा० साल+हिं० भर।

सालहि[1] (पद०)— स्त्री० (१- छेद, २- घाव)–सं० शल्य>प्रा० साल।

साला[1]—प्र० (इस प्रत्यय के योग से स्थानवाची संज्ञाएँ बनती है)–सं० शाला>साला।

साला[2]—स्त्री० (१- दीवार, भित्ति)–सं० साला (साला+अच्–टाप्)।

साला[3]—वि० (साल का, वर्ष का)–फ़ा० सालः।

साला[4]— पुं० (बहू का भाई)–सं० श्याल>पा० सलको>प्रा० शिआल>अप० सालय>हिं० साला। तुल० सिं० सालो, गु० साळो, बं० शाला, ओ० शळा, कु० सालो।

साला[5]— पु० हिं०, पुं० (सारिका, मैना)– सं० सारिका>प्रा० सारिआ, सारिइआ।

साला[6]—स्त्री० (घर)– सं० शाला>पा० प्रा० साला। तुल० स्पे० साला।

सालां व साल—क्रि० वि० (प्रति वर्ष)–फ़ा० साल ब साला।

सालिम—वि० (संपूर्ण, समूचा, सुरक्षित, यथावत्)–अ० सालिम।

साली— स्त्री० (पत्नी की बहन)–सं० श्याली>प्रा० साली, सालीआ>हिं० साली। तुल० ओ० साळी, सिं० सालि, गु० साळी, म० साली।

सावधान— वि० (सचेत, होशियार)–सं० सावधान (सह अवधानेन)। तुल० पं०ओ० साबधान, म०गु०अस० सावधान, सिं० सावधानु।

सावन—पुं० (श्रावण का महीना)–सं० श्रावण>प्रा० सावण>हिं० सावन, ह० सॉम्मण्। तुल० सिं० सावणु।

सावर (की०)—पुं० (कुन्त, बर्छा)–सं० शर्वल>प्रा० सव्वल>अव० सावर।

सास—स्त्री० (पति या पत्नी की माँ)–सं० श्वश्र>पा० सस्सु>प्रा० सस्सू>

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अप० सस्सु>सासुअ (प० च०)>हिं० सास। तुल० पं० सस्स, सिं० ससु, बं० शाशुड़ि, अस० साहु, म० सास्, ओ० शाशूं। लै० socrus, ज० swiger, schwieger, स्लाव svekry, ग्रीक ekuros, लिथुवानियन szeszuras, गौथिक swaihra।

१- साह—पुं० (सुजन, सज्जन)-सं० साधु>प्रा० साहु>साह।

२- साह[1] (की०)—शासन करना, वश में करना)-सं० साध>प्रा० साह।

साहनी— पुं० (घुड़सवार सेना का अध्यक्ष)-सं० साधनिक>प्रा० साहणिय >हिं० साहनी।

साहि[1] (की०) —वि० (सब)-सं० सर्व >प्रा० सव्व> अप० साह > अव० साहि।

साहित्य— पुं० (लिपिबद्ध विचार या ज्ञान, वाङ्मय)-सं० साहित्य (सहित+ ष्यञ्) > प्रा० साहित्त। तुल० पं० साहित्त, सिं० साहित्यु, ओ० साहित्यमु, मल० साहित्यं, क० साहित्य।

साहु—पुं० (सज्जन, भला व्यक्ति)-सं० साधु>प्रा० साहु। तुल० पं० साऊ, गु० साहु, साऊ, सिं० साहू, म० साव।

साहुकार— पुं० (महाजन, ईमानदार, सच्चा और भला आदमी)-सं० साधु-कार>अप० साहुक्कार (प० च०)> हिं० साहुकार। तुल० ते० षाहुकारु, बं० साहुकार, पं० शाहुकार, उर्दू साहूकार, सिं० शाहूकारु, म० सावकार, गु० शाहु-कार, त० सौकार्।

सिंगार—पुं० (सजधज, सजावट)-सं० श्रृंगार> प्रा० सिंगार। तुल० पं० शिंगार, उर्दू कश्मी० सिंगार, सिं० सींगारु, गु० शणगार, म० बं० श्रृंगार, ते० सिंगारमु।

सिंगारदान—पुं० (सिंगार की सामग्री रखने का छोटा संदूक)-सं० श्रृंगार> प्रा० सिंगार> सिंगार+फ़ा० दान। तुल० पं० शिंगारदान, उर्दू कश्मी० सिंगारदान, सिं० सिंगारदानु।

सिंघाड़ा— पुं० (पानी में फैलने वाली एक लता जिसके तिकोने फल लगते हैं)-सं० श्रृङ्गाटक> सिंगाटक> सिंगाड़अ सिंगाड़ा, सिंघाड़ा।

सिंघासन—पुं० (सिंहासन)-सं० सिंहा-सन>प्रा० सिंघासण, तुल० सिं० सिंघा-सनु।

सिंदूर—पु० हिं०—पुं० (सिंदूर)-सं० सिन्दुर>प्रा० सिंदूर> अव० सिन्दुर। तुल० पं० संधूर, सिं० सिंदुरु, सिंधुरु; म० शेंदूर, गु० बं० सिंदूर, अस० सेन्दुर।

सिंह—पुं० (शेर)-सं० प्रा० सिंह> अप० सिङ्घ (प० च०)। तुल० पं० सिंघ, सिं० शीहुं, ते० सिंहमु, त० सिंगम्, म० सिंहम्, म० गु० बं० ओ० सिंह।

सिआ[1] (की०)—स्त्री०(श्रृगाली)-सं० शिवा>सिआ।

सिआए—क्रि० (कपड़े सिलवाए)-सं० सीव्यति>सिब्बइ>सिबइ> सिअइ> ब्र० सिआए।

सिआन[1] (की०)—वि० (चतुर)-सं० सज्ञान > प्रा० सयाण > सआण > सिआन।

सिआलू[1] (की०)— पुं० (श्रृगाल)-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० शृगाल > प्रा० अप० सिआल, अव० सियालू, सिआलू ।

१- सिउँ[1] (पद०)—अव्य० (संग में, साथ)–सं० समम् > अप० सिउँ ।

२- सिउँ—स्त्री० (सीमा)–सं० सीमन् ।

सिक्का—पुं० (मुद्रा, मुद्रित चिह्न)–सिरियन भाषा सिक्त ।[16] अथवा अ० सिक्क्कह्, फ़ा० सिक्क: ।

सिखाना— क्रि० (पढ़ाना, अभ्यास करना)– सं० शिक्षयति > (सं० √शिक्षय्) > प्रा० सिक्खाव > हिं० सिखाना ।

सिखावन—पुं० (सीख, शिक्षा, उपदेश)–सं० शिक्षण > प्रा० सिक्खावण > हिं० सिखावन ।

सिजदा—पुं० (प्रणाम, दंडवत, माथा टेकना)–अ० सिज्द: ।

सिज्झिहइ[1] (की०)—क्रि० (निष्पन्न होना, पकना)–सं० सिध् (सिध्यति) > प्रा० सिज्झ, सिज्झइ, सिज्झिहिइ > अव० सिज्झिहइ ।

१- सिट्ठ[1] (की०)—वि० (उत्तम)–सं० श्रेष्ठ > प्रा० सिट्ठ ।

२-सिट्ठ[1] (की०)—वि० (सज्जन)–सं० शिष्ट > प्रा० सिट्ठ > अव० सिट्ठ (की०)।

सितंबर—पुं० (पाश्चात्य पंचांग में वर्ष का नवाँ महीना)–अं० सेप्टेंबर । तुल० स्पे० सेप्तिएम्बरे (septiembre) ।

सितार—पुं० (एक बाजा, तंत्री)–फ़ा० सित्तार । तुल० म० सतार, बं० अस० सेतार, क० सितार, ते० सितारु, मल० सितार, त० सितार्, सिं० सितार ।

सितारा—पुं० (तारा, भाग्य, तक़्दीर)–फ़ा० सितार: ।

सिद्धक—वि० (कार्य सिद्ध करने वाला)–सं० सिद्धक: > अप० सिद्धउ > राज० सीधउ ।

सिद्धता—स्त्री० (सिद्धि)– सं० सिद्धता (सं० सिद्ध + तल्–टाप्) ।

सिद्धांत—पुं० (भली भाँति सोच-विचार कर स्थिर किया हुआ मत)–सं० सिद्धांत > प्रा० सिद्धंत । तुल० पं० गु० बं० ओ० ते० सिद्धान्त, सिं० सिद्धान्तु, ते० सिद्धांतमु, मल० सिद्धांतं ।

सिपहसालार—पुं० (सेनापति, सेनानी, सेनाध्यक्ष)–फ़ा० सिपहसालार ।

सिपाही—पुं० (सैनिक)–फ़ा० सिपाही । तुल० कश्मी० सिपाह, म० शिपाई, सिं० सिपाही, गु० सिपाई, ते० सिपायि, त० शिप्पाय । रुसी सल्दात्त ।

सिपुर्दगी— स्त्री० (१- सिपुर्द करना, सौंपना, हिरासत, हवालात)–फ़ा० सिपुर्दगी ।

सिफत—स्त्री० (विशेषता, गुण)– अ० सिफ़त ।

सिफर— पुं० (१- शून्य, २- रिक्त, साधारण या तुच्छ व्यक्ति)–अ० सिफ़र ।

सिफारिश— स्त्री० (किसी के पक्ष में कुछ कहना-सुनना, नौकरी दिलाने के लिए किसी की प्रशंसा)– फ़ा० सिफ़ारिश । तुल० पं० सिफारश, ओ० बं० सुपारिश, त० शिपारिशु, मल० शुपार्श, क० सिफरिसु, सिं० सिफ़रिश ।

सिर्फ—वि० (बस, इतना ही, केवल)–अ० सिर्फ़ । तुल० पं० सिरफ, कश्मी० सिरिफ, सिं० सिर्फ़, गु० सिर्फ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सियर—वि० (ठण्डा)– सं० शीतल > प्रा० सीअल > अप० सीयल (प० च०) > सीअर, सियर।

सिया—स्त्री० (सीता, नाम-विशेष)– सं० सीता > प्रा० सीआ, सीअ > हिं० सिया।

सियाना— वि० (सयाना, बुद्धिमान्, समझदार)–सं० स+ज्ञान > प्रा० सयाण > अव० सिआन (की०) > हिं० सियाना, सयाना। तुल० पं० सियाणा, सिं० सिआणो।

सियार—पुं० (गीदड़)–सं० शृगाल > पा० सिगाल > प्रा० सिगाल, सिआल > हिं० सियार।

सियारी—स्त्री० (गीदड़ी)–सं० शृगाली > प्रा० सिआली > हिं० सियारी।

सियाली—स्त्री० (एक प्रकार का विदारन कंद)–प्रा० सिअल्ली, सीअल्ली, सीअलिया > हिं० सियाली।

सिर[1]—प्र० (यह प्रत्यय संज्ञाओं के साथ 'ठीक तरह से' भाव व्यक्त करने के लिए जोड़ा जाता है, जैसे—वखत–सिर)–सं० सदृश > प्रा० सरिस > सरिह > सरि > सर, सिर।

सिर[2]— पुं० (कपाल, खोपड़ी)–सं० शिरस् > प्रा० अव० सिर। तुल० पं० सिर, उर्दू सिर (सिर), सिं० सरु, त० सिरसु। पह० फ़ा० सर।

सिर[3]—पुं० (रहस्य)–अ० सिर्र।

सिरका— पुं० (फल, गन्ने या ताड़ी आदि का रस जो धूप में रखकर खट्टा किया जाता है)– फ़ा० सिर्क़ः। तुल० सिं० सुर्को, गु० सरको, बं० सिर्का।

सिरजन—पुं० (निर्माण, रचना)–सं० सृजन।

सिरस—पुं० (एक पेड़ जिस पर पीला फूल आता है)–सं० शिरीष (√शॄ + ईषन्)।

सिराहना—पुं० (चारपाई में सिर की ओर का भाग)– सं० शिरःस्थानम् > प्रा० सिरठण > सिरथाण > सिरथान > सिरहान, सिरहाना।

सिलसिला—पुं० (क्रम, शृंखला)–अ० सिल्सिलः। तुल० उर्दू सिल्सिला, कश्मी० सिलसिलु, गु० सिं० सिलसिलो।

सिला—पुं० (१- फसल कट चुकने के पश्चात् खेत में गिरे पड़े अन्न की बालों को चुनने की वृत्ति, २- उक्त प्रकार से बचे और खेत में बिखरे हुए अनाज की बालों को बिनने की क्रिया)–सं० शिल।

सिली[5]— प्रा० प्र० (अनाज)–सं० शिलिका > सिलिआ > सिली।

सिलौटा— पुं० (सिल और उसका बट्टा)–सं० शिलापट्ट+क > प्रा० सिलवट्टअ > सिलउट्टअ > हिं० सिलौटा।

सिवाय— क्रि० (अतिरिक्त, अलावा, छोड़कर, जो है या हो उसे छोड़कर)– अ० सिवा। तुल० कश्मी० गु० सिवाय, सिं० सवाइ, म० शिवाय।

सिवार—स्त्री० (पानी में उगी हुई एक तरह की घास)–सं० शैवाल > सिवाल > हिं० सिवार।

सिवाला—पुं० (शिव का मंदिर)–सं० शिवालय > सिवालअ > हिं० सिवाला।

सिसकत[35]— क्रि० (रोते-रोते साँस लेता है)–सं० श्वसिति > सुसिइ > सुसि-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कइ > सिसुकै > सिसकै > ब्र० सिसकत ।

सिहात— क्रि० (प्रसन्न होता, मुदित होता है, चकित होता है)–सं० संहर्षति > पा० सं + हसति > संहस्सति > संहृहति > संहाति > सिहाति > ब्र० सिहात ।

सिहाना—क्रि० (मुग्ध होना, ललचना)–सं० स्पृह् > प्रा० सिह, सिहइ > हिं० सिहाना ।

सींग—पुं० (विषाण)– सं० शृंङ्ग > पा० सिङ्ग > प्रा० सिंग > हिं० सींग । तुल० पं० सिंग, सिं० सिङु, म० शिंग, गु० शींग, बं० शिङ, अस० शि, ओ० शिंग ।

सींचना—क्रि० (१- पानी देना, आबपाशी करना, २- पानी छिड़क कर तर करना)–सं० सिच् > पा० सिञ्च > प्रा० सिंच, सिंचअ > हिं० सींचना, ब्र० सींचत । –स्त्री०– सींच–(सींचने की क्रिया या भाव)–सं० पा० सिञ्चन । तुल० पं० सिंजणा, गु० सींचवुं, ओ० सिंचिबा ।

सींव— पुं० (सीमा, हद)–सं० पा० सीमा ।

सीअल—स्त्री० (एक देवी जिसकी पूजा से चेचक नहीं निकलती है)–सं० शीतला > प्रा० सीअल ।

सीऊ[1] (पद०)— पुं० (सीमा)– सं० पा० सीमा > सीव > सीऊ ।

सीका—पुं० (छींका)–सं० शिक्यक > पा० प्रा० सिक्कग > सिक्कअ > सिक्का > हिं० सीका, सींका ।

सीख—स्त्री० (शिक्षा, तालीम)– सं० शिक्षा > प्रा० सिक्खा > हिं० सीख । तुल० सिं० सिख्या, म० सीक, पं० सिक्खणा ।

सीखना— क्रि० (किसी विषय या कला का ज्ञान प्राप्त करना, पढ़ना)– सं० शिक्षते (√शिक्ष्) > पा० सिक्खति > प्रा० सिक्खइ, सिक्खह > हिं० सीखना, सिक्खना, ब्र० सीखत । तुल० पं० सिक्कणा, सिं० सिखणु, गु० सिखवूँ, शीखवुँ, ओ० शिखिबा ।

सीगिनि[1] (की०)— पुं० (सींग का बना हुआ धनुष)–सं० शृंगिन् ।

सीझना—क्रि० (आँच या गरमी पाकर गलना, पकना)– सं० सिध्यति > प्रा० सिज्झइ (सं० सिध् > प्रा० सिज्झ) > हिं० सीज, सीझ + ना० (प्र०) ।

सीढ़ी—स्त्री० (बाँस या काठ के लम्बे टुकड़ों का ढाँचा, जिस पर पैर रखकर ऊपर या नीचे उतरा जाता है)– सं० श्रेणी (डंडों की या ईंट-पत्थर की एक व्यवस्थित पंक्ति), प्रा० सिड्ढि > अप० सेढि > हिं० सीढ़ी, सिड्ढी, सीड्ढी ।

सीदना— क्रि० (कष्ट झेलना)–सं० सीदति, पा० सीदति (हार मान लेना) ।

सीदहिं— क्रि० (कष्ट पाते हैं)–सं० सीदन्ति > सीदइँ > सीदहिं ।

सीधा[1]— पुं० (वह बिना पका हुआ अनाज जो ब्राह्मण या पुरोहित को भोजनार्थ दिया जाता है)–सं० सिद्ध ।

सीधा[2]—वि० (सरल, जिसमें छलकपट न हो)–सं० शुद्ध > प्रा० सुद्ध (निर्दोष) > ब्र० सूधा, सूधो । तुल० पं० सिद्धा ।

सीधा[3]—वि० (जिसमें टेढ़ापन या घुमाव न हो)–मु० सिधा (एक प्रकार की इमा-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रती लकड़ी का वृक्ष, जिसमें टेढ़ापन न हो)। तुल० पं० सिद्धा, सिं० सिधो, गु० सीधुं, ओ० सिधा।

सीना[1]— क्रि० (टाका मारना, कपड़े चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई के द्वारा तागा पिरोकर जोड़ना)– सं० सीव्यति (सं० सीव्) > प्रा० सिव्व> हिं० सीना। पुं०–सं० सीवन (√सिव् +ल्युट्)। तुल० पं० सीउणा, कश्मी० सुवुन, सिं० सिबणु, म० शिवणें, गु० सीववुं, ओ० सिइबा।

सीना[2]—पुं० (छाती, वक्षस्थल)– फ़ा० सीनः। तुल० कश्मी० सीनु, गु० सिं० सीनो।

सीप—पुं० (शुक्ति, एक जल-जन्तु का सफेद, कड़ा और चमकीला आवरण जो बटन, चाकू के दस्ते आदि के बनाने के काम में आता है)– सं० शुक्ति, पा० सिप्पिका, प्रा० सुत्ति>सिप्पि > हिं० सीप।

सीमंत—पुं० (बालों में बनाई हुई रेखा-विशेष, स्त्रियों की मांग, ग्राम में लगी हुई भूमि का अन्त, सीमा, गाँव का पर्यन्त भाग)–सं० सीमन्त>प्रा० सीमंत।

सीम— पु० हिं०, स्त्री० (सीमा, हद, पराकाष्ठा, मर्यादा)–सं० सीमन्>प्रा० सीयअ>अप० सीवँ>पु० हिं०, राज० सीम, हिं० सीमा। तुल० पं० म० बं० अस० ओ० सीमा।

सीमित—वि० (सीमा से बँधा हुआ)– सं० सीमित। तुल० पं० गु० बं० अस० ओ० सीमित, मल० सीमितं।

सीर[1]— स्त्री० (वह जमीन जिसे भू-स्वामी स्वयं जोतता आ रहा हो)–सं० सीर (हल, अमरकोश) > पा० प्रा० सीर।

सीर[2]— पुं० (रक्त की नाड़ी)–सं० शिरा।

सीर[3]—वि० (शीतल)– सं० शीतल> प्रा० सीअड>हिं० सीर।

सीमांत—पुं० (सीमा का अन्त)– सं० सीमान्त>प्रा० सीमंत>हिं० सीमांत।

सीला—प्रा० प्र०, वि० (ठंडा)– सं० शैतल (शीतल) >पा० सीतल> प्रा० सीअल>हिं० सीला। तुल० पं० सीला, गु० शीळू, म० शिळा।

सीस—पुं० (सिर, मस्तक)–सं० शीर्ष >प्रा० सीस, अव० सीस (की०), हिं० सीस। तुल० म० सिस, सीस।

सीसम—पुं० (एक वृक्ष)–सं० शिंशपा >प्रा० सीसवा, सीसम>हिं० सीसम।

सीसा—पुं० (धातु-विशेष)–सं० सीसम् >पा० सीस>प्रा० सीस>हिं० सीसा। तुल० कु० सीसो, म० शिसें, बं० ओ० सिसा, पं० सीसा।

सीसो—पुं० (एक वृक्ष)– सं० शिंशपा >प्रा० सीसवा>अप० सीसव>सीसउ हिं० सीसो, सीसों। तुल० बं० ओ० सिसु, ने० सिसो, गु० सिसम्, पं० सीसम्।

सूं—(कबीर द्वारा प्रयुक्त) संबंध सूचक अव्य० (तरह, समान)—सं० समम्> अप० सउ>हिं० सूं।

सुंदर—वि० (खूबसूरत, जो आँखों को अच्छा लगे)– सं० पा० सुन्दर>प्रा० सुंदर। तुल० म० पं० गु० सुंदर, कश्मी० सँदर, सिं० सुंदरू, ते० सुंदरमु, मल० सुन्दरं, बं० अस० ओ० क० सुन्दर।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुँसरी—स्त्री० (सीटी)–सं० सुषिरम् (कोई भी बाजा जो हवा के संयोग से बजाया जाता है) > छ० सुँसरी।

सुअण[1] (की०)—वि० (सज्जन)–सं० सुजन > अव० सुअण।

सुअर— पुं० (एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो जंगली और पालतू होता है)–सं० शूकर > पा० सूकर > प्रा० सूअर, सुअर > अप० सूयर (प० च०) > हिं० सुअर। तुल० पं० सूर, उर्दू सूअर, कश्मी० सोर, सिं० सूअरु, गु० सूंवर, बं० शुयोर।

सुअसनु—पुं० (स्वादिष्ट भोजन)–सं० सुअशनं > अवधी सुअसनु।

सुआ—पुं० (शुक, सूआ)–सं० शुक > पा० प्रा० सुक, प्रा० सुग, सुअ > अप० सुअ (प० च०) > हिं० सुआ, सूआ।

सुआर—पुं० (रसोई बनाने वाला)–सं० सूपकार > सूअआर > अप० सूयार (प० च०) > हिं० सुआर।

सुआसिनी—पु० हिं०, स्त्री० (सधवा, सौभाग्यवती युवती स्त्री)–सं० सुवासिनी > प्रा० सुवासिणी > हिं० सुआसिनी।

सुई—स्त्री० (कपड़ा सीने की सलाई, सूई)–सं० सूची (√ सीव्) > पा० सूचि > प्रा० सूई > अप० सूई > हिं० सुई।

सुकुमार—वि० (कोमल)–सं० सुकुमार > प्रा० सउमार > अप० सोमाल (प० च०)। तुल० गु० सुँवालुँ।

सुकून—पुं० (शान्ति, आराम, संतोष, धैर्य, सन्नाटा, रोग से कमी, विराम)–अ० सुकून।

सुख—पुं० (मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जिसके द्वारा अनुभव करने वाले को सन्तोष, चैन मिलता है)–सं० पा० सुख > प्रा० अप० सुह > अव० सुख्ख, सुख (की०)। तुल० सिं० सुखु ते० सुखमु, मल० सुखं।

सुखित—वि० (सुखी)–सं० सुखित > प्रा० सुहिअ > अव० सुहित (की०)।

सुगंध—स्त्री० (अच्छी गंध)–सं० पा० सुगन्ध > प्रा० सुगंध, सुग्रंध > अप० सुयन्ध (प० च०)। तुल० म० गु० ओ० सुगंध, मल० सुगन्धं।

सुगम— वि० (जिसमें गमन करने में कठिनता न हो)–सं० हिं० सुगम। तुल० पं० गु० बं० अस० ओ० सुगम, मल० सुगमं, ते० सुगम्यमु।

सुग्गा—पुं० (शुक)–सं० शुक > प्रा० सुग > हिं० सुग्गा।

सुघड़— वि० (सुन्दर, सुडौल)–सं० सुघट। तुल० पं० सुग्घड़, गु० सुघड, ओ० सुघट।

सुचारु—वि० (मनोहर, अत्यंत सुन्दर)–सं० सुचारु। तुल० गु० बं० ओ० मल० सुचारु।

सुच्छंद—वि० (स्वतन्त्र)– सं० स्वच्छन्द।

सुजस—पुं० (सुयश)–सं० सुयशस् > प्रा० हिं० सुजस।

सुठि—वि० (सुन्दर, अच्छा)–सं० सुष्ठु पा० सुट्ठ > प्रा० सुट्ठु > सुठ, सुठि।

सुतरनाल— स्त्री० (एक प्रकार की बन्दूक जो ऊँट पर रखकर चलायी जाती है)–फ़ा० शुतुर नाल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुतली—स्त्री० (रस्सी, डोरी, सुतरी)–सं० सूत्र>पा० सुत्त (धागा) > प्रा० सुत्त>हिं० सुत+ली (प्र०)। तुल० ओ० सुतुली, गु० सुत्ळी, म० सुतळी।

सुतिहार[1]—पुं० (संदेशवाहक)– सं० सूत्रधार>प्रा० सुत्तहार> छ० सुतिहार।

सुतिहार[2]— प्रा० प्र०, पुं० (बढ़ई, शिल्पकार, कारीगर)– सं० सूत्रकार> प्रा० सुत्तहार, पु० हिं० सुतिहार, सुतार।

सुथना(1)—पुं० (सूथन, पायजामा)–सं० स्वस्थाना>सुत्थाना> सूथाना > सूथना>सुथना।

सुथरा— वि० (साफ, निर्मल)–सं० सुस्थल>पा० सुथल > हिं० सुथरा, ह० सुथ्रा।

सुदेशी—वि० (स्वदेशी)–सं० स्वदेशी।

सुध— स्त्री० (सचेतनता, होश)–सं० पा० सुधी (अच्छी समझ वाला)।

सुध-बुध— स्त्री० (होश-हवास, चेत, ज्ञान)–सं० पा० सुधी+ बुद्धि> हिं० सुध-बुध। तुल० पं० सुध-बुध, म० शुद्ध-बुद्ध, गु० सूध-बूध।

सुधा—स्त्री० (अमृत)–सं० पा० सुधा >प्रा० सुहा। तुल० गु० म० बं० अस० ओ० सुधा, ते० सुध।

सुधार—पुं० (दोष दूर करने या होने का भाव)–मु० सुधार। तुल० कश्मी० सुदार, सिं० सुधारु, सुधारो, म० सुधारणा, गु० सुधार, बं० शुधरा, ओ० सुधारिबा।

सुधीर—वि० (जिसमें यथेष्ट धैर्य हो)–सं० सुधीर। तुल० गु० बं० अस० ओ० सुधीर, मल० सुधीरन्।

सुनना—क्रि० (श्रवणेंद्रिय के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना)– सं० शृणोति (√श्रू श्रवणे)>पा० सुणाति > प्रा० सुण, सुणाइ>अव० सुनिअ, सुनिअउँ> हिं० सुनना, ब्र० सुनइए, सुनावत। तुल० पं० सुणना, गु० सुणवुं, ओ० शुणिवा। बल्गा० चुवम् (सं०√श्रु)।

सुनहला—वि० (सोने के रंग का)–सं० सुवर्ण>प्रा० सुवण्ण, सुवन्न > हिं० सोना+हला (प्र०)। तुल० पं० सुनहिरा, उर्दू सुनेहरा, म० गु० सोनेरी, बं० सोनाली, अस० सोणाली, ओ० सुनेली।

सुनार—पुं० (सोनी)–सं० सुवर्णकार >पा० सुवण्णकार > प्रा० सुण्णार, सुण्णआर>अप० सोण्णार, सुन्नार> हिं० सुनार। तुल० सिं० सोनारो, पं० सुनिआरा, सिं० सोनारो।

सुनिअ— क्रि० (सुना जाता है)–सं० श्रूयते>सुणए>सुनिअ।

सुन्न—वि० (हाथ-पाँव का ठिठुरना)–सं० शून्य>प्रा० सुण्ण>हिं० सुन्न।

सुन्नी—पुं० (मुसलमानों का एक समुदाय)–अ० सुन्नी।

सुपुर्द—वि० (सौंपा हुआ, दिया हुआ)–फ़ा० सुपुर्द।

सुपेती—स्त्री० (बिछाने की चादर)–फ़ा० सुफ़ैदी।

सुप्रभात— पुं० (१-सुंदर प्रभात या प्रातःकाल, २-मंगल-सूचक प्रभात, ३-प्रातःकाल पढ़ा जाने वाला स्तोत्र)–सं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुप्रभात>प्रा० सुपहाय>अप० सुप्पहाय (प० च०)।

सुबह— स्त्री० (सबेरा)–अ० सुब्ह। तुल० सिं० सुबुहु।

सुबह-शाम—क्रि० वि० (प्रातः सायं)–अ० सुब्ह+फ़ा० शाम।

सुबोध—वि० (बोधगम्य)–सं० सुबोध। तुल० पं० म० गु० बं० अस० ओ० सुबोध, सिं० सवलो।

सुभव्य—वि० (शोभायुक्त)–सं० सुभव्य >प्रा० सुहव्व>अव० सुहव्वा (की०)।

१-सुभाऊ[1] (पद०)—वि०(सुन्दर)–सं० सुभव्य>प्रा० सुभव्व>सुभाव, सुभाउ, सुभाऊ।

२-सुभाऊ—पुं० (स्वभाव)–सं० स्वभाव >सुभाव>सुभाऊ।

सुमति— स्त्री० (अच्छी बुद्धि)–सं० सुमति>प्रा० सुमइ>अप० सुमइ (प० च०)। तुल० पं० सुमत, म० गु० बं० अस० ओ० ते० सिं० सुमति।

सुमन—पुं० (पुष्प)–सं० सुमनस्, सं० सुमः, पा० सुमन (वि०, प्रसन्न), (सुमनपुष्प=चमेली का फूल)>प्रा० सुमण >हिं० सुमन। तुल० म० गु० बं० ओ० सुमन, ते० सुमनमु।

सुमरन—पुं० (स्मरण)–सं० स्मरण> प्रा० सुमरण> अव० सुमरण > हिं० सुमरन, सुमिरण, सुमिरन।

सुमिरत—क्रि० (याद करता है)–सं० स्मरति>प्रा० सुमरइ>ब्र० सुमिरत।

सुरंग—स्त्री० (जमीन खोद कर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता)–सं० सुरङ्गा >प्रा० सुरंगा> हिं० सुरंग। तुल० पं० उर्दू सिं० अस० क० सुरंग, ते० सोरंगमु।

सुर[1]—पुं० (देवता)–सं० सुर (सु√रा +क), पा० प्रा० हिं० सुर। तुल० पं० म० अस० सुर, ते० सुरुलु, मल० सुरन्। बल्गा० सुरा (सुरी बहु व०)।

सुर[2]—पुं० (गले, बाजे आदि से निकलने वाला स्वर)–सं० स्वर।

सुरतरु—पुं० (कल्पवृक्ष)–सं० सुरतरु >अव० सुरअरु (की०)।

सुरपति— पुं० (देवराज इन्द्र)–सं० पा० सुरपति>प्रा० सुरपइ>अप० सुरवइ (प० च०)।

सुरमा— पुं० (एक खनिज पदार्थ जिसका बारीक चूर्ण आँखों में अंजन की तरह लगाया जाता है)– फा० सुर्मः। तुल० उर्दू ते० सुर्मा, सिं० सुर्मो, गु० सुरमो ओ० सुरमा।

सुरसुराना—क्रि० (सुर-सुर की ध्वनि उत्पन्न करना, किसी लघु कीट का शरीर पर रेंगना)–सं० सुरसुरति (ध्वनि-अनुकरणार्थक)>प्रा० सुरसुर>हिं० सुरसुर, सुरसुराना।

सुरा—स्त्री० (मदिरा)–सं० पा० प्रा० सुरा। तुल० खामति सुला।

सुराख—पुं० (छिद्र, छेद, रंध्र)–फ़ा० सूराख।

सुराग— पुं० (खोज, पता, निशान, ठिकाना, तलाश)–तु० सुराग़।

सुरागाय—स्त्री० (एक पौराणिक गाय जो गो जाति की मानी जाती है, सुरगाय, चमरी गाय)–सं० सुरभि+गो>प्रा० सुरही + गावी, सुरह + गाई, हिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुरागाय ।

सुराज[1]—पुं० (स्वराज्य)–सं० स्वराज ।

सुराज[2] — पुं० (अच्छा राज्य)–सं० सुराज्य ।

सुराही—स्त्री० (पानी रखने का एक विशेष प्रकार का मिट्टी का पात्र, जल की कुंभी)–अ० सुराही । तुल० कश्मी० सुरय, म० सुरई, बं० सोराइ, ओ० सोरेइ, सुरेइ, पं० उर्दू सिं० सुराही ।

सुर्ख—वि० (लाल रंग का) – फ़ा० सुर्ख ।

सुलगना—क्रि० (धीरे-धीरे जलना, इस प्रकार जलना कि उसमें से लपट न निकले बल्कि धुंआ निकले) – मु० सुलगाओ (sulgāo) । तुल० पं० सुलगणा, गु० सळगवुं ।

सुलफा—पुं० (सुलपा, चिलम में तमाखू रखकर आग भर देना)–फ़ा० सुल्फ़ह् ।

सुलभ—वि० (जो आसानी से प्राप्त हो जाए)–सं० सुलभ > प्रा० सुलब्भ । तुल० पं० सुलब्भ, सिं० सुलभु, ते० सुलभमु, मल० सुलभं, क० सुलभ्य ।

सुलह—स्त्री० (मेल, संधि, दोस्ती)–अ० सुल्ह । तुल० सिं० सुलिहु ।

सुवटा—पुं० (तोता नामक पक्षी)–सं० शुक > प्रा० सुअ > हिं० सुअ + टा (प्र०), सुअटा, सुवटा ।

सुवास—स्त्री० (अच्छी महक, सुगंध)–सुवास (√वास् + घञ्) । तुल० म० गु० बं० सुवास, अस० ओ० सुबास ।

सुवृष्टि — स्त्री० (अच्छी वर्षा)–सं० सुवृष्टि > अव० सुविट्ठि ।

सुसज्जित—वि० (भली- भाँति सजा या सजाया हुआ)–सं० सुसज्जित (सु + सज्जा + इतच् वा सस्ज् + णिच् + क्त) । तुल० पं० सज्जिआ, म० सजलेला, गु० बं० अस० ओ० क० सुसज्जित ।

सुसार(1) (पद०) —पुं० (रसोई)–सं० सूपशाला > सूअसारा > सूसारा > सुसारा ।

सुसुआना — क्रि० (सु-सु की ध्वनि करना)–सं० सूत्करोति > (सं० सूत्कार) > प्रा० सुस्सुयाय > हिं० सुसुआना ।

सुस्त — वि० (स्फूर्तिहीन, शिथिल, आलसी)–फ़ा० सुस्त ।

सुस्ती—स्त्री० (आलस्य)–फ़ा० सुस्ती ।

सुहाइ, सुहावत—क्रि० (सुन्दर प्रतीत होता है)–सं० शोभते > सोहते > सोहए > सोहै > ब्र० सुहाइ, सुहावत ।

सुहाग—पुं० (स्त्री के सधवा रहने की अवस्था)–सं० सौभाग्य > पा० सोभग्ग > प्रा० सोहग्ग > सुहाग । तुल० पं० उर्दू अस० ओ० सुहाग, सिं० सुहागु ।

सहाना—क्रि० (शोभायमान होना)–सं० शुभति (√शुभ् शोभार्थे) ।

सुहृद — पुं० (मित्र, हितैषी)–सं० सुहृद् > प्रा० सुहिअ, प्रा० अप० सुहि, अव० सुहिअ (की०) ।

सूंघना—क्रि० (गन्ध ग्रहण करना)–सं० शिङ्घति > पा० सिङ्घति > प्रा० सुंघिअ > ब्र० सूंघति, हिं० सूंघना । तुल० पं० सुङ्घणा, सिं० सिंघणु, गु० सूँघवूँ ।

सूँड—स्त्री० (हाथी की सूँड)–सं० शुण्ड > पा० सोण्डा > प्रा० सुंडा > हिं० सूँड । तुल० पं० सुंड, सिं० सूंढि, म० सोंड, गु० सूंढ, बं० शुँड़, अस० शुँर,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ० शुंढ।

सू—क्रि० (प्रसव होना)–सं०√षु (प्रसवे) >सव>सू।

सूक—पु० हिं०, पा० प्र०, पुं० (शुक्र नक्षत्र)–सं० शुक्र>पा० प्रा० सुक्क> हिं० सूक। तुल० म० सूक।

सूखना—क्रि० (आर्द्रता या गीलापन न रहना)–सं० शुष्यति>पा० सुक्खति> प्रा० सुक्खइ>सूखइ>ब्र० सूखै, हिं० सूखना। तुल० पं० सुक्कणा, ओ० सुखिबा, सिं० सुकणु, गु० सुकावूं।

सूखा—वि० (शुष्क)–सं० शुष्क>पा० प्रा० सुक्ख>अप० सुक्कय (प० च०) >हिं० सूखा। तुल० सिं० सुका, गु० सुकूं, पं० सुक्का, म० सुका, बं० ओ० शुखा, ते० शुष्कमु। रूसी सूखा, बल्गा० सुखो।

सूचना—स्त्री० (बतलाना, जतलाना, इत्तिला)–सं० सूचना>पा० सूचन> प्रा० सूअण। तुल० पं० सिं० म० गु० बं० अस० ओ० सूचना।

सूची—स्त्री० (किसी प्रकार की वस्तुओं, नामों आदि का क्रमबद्ध विवरण)–सं० सूची>प्रा० सूइ। तुल० पं० सिं० म० गु० बं० अस० ओ० सूची।

सूजना—क्रि० (रोग, चोट, वात आदि के कारण शरीर के किसी अंग का अधिक फूल या फैल जाना)–सं० शुयते>हिं० सूजना।–पुं०–सं० शोथ (शु+थन्)। तुल० पं० सुज्जणा, सिं० सुजणु, म० सुजणें, गु० सूजवुं।

सूझना—क्रि० (ध्यान में आना)–सं० सुध्यायति>प्रा० सुज्झायइ>सुझाए> सुझाइ > ब्र० सूझई, हिं० सूझना। तुल० पं० सुज्झणा, सिं० सुझणु, गु० सूझवुं।

सूत—(रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है)–सं० सूत्र >पा० प्रा० सुत्त>हिं० सूत। तुल० पं० सूतर, सिं० सुटु, गु० सुत्र, बं० सूता, सुता, सुतो; ओ० सूत्र, ते० सूत्रमु।

सूत्र[1]—पुं० (१- संक्षिप्त विधि, गुर, सूत्र, २-परिभाषा-परक संक्षिप्त वाक्य)–सं० सूत्र। तुल० पं० सूतर, सिं० सुत्रु, म० गु० अस० सूत्र, ते० सूत्रमु, त० सूत्तिरम्, मल० सूत्रं।

सूत्र[2]—पुं० (संकेत, पता, सुराग)–सं० सूत्र। तुल० पं० सूह, सिं० सगु, बं० सूत्र, ते० सूत्रमु।

सूद—पुं० (ब्याज)–सं० सोदय (याज्ञवल्क्य स्मृति में प्रयुक्त)>सोद>सूद। तुल० पं० उर्दू कश्मी० सूद, बं० अस० सुद, ओ० सुध। पह० सूद (लाभ)।

सूदखोर—पुं० (ब्याज खाने वाला)–फ़ा० सूदखोर।

सूध, सूधा—वि० (सीधा, सरल)–सं० शुद्ध>पा० प्रा० सुद्ध > हिं० सूधा, स्त्री० सीधी। तुल० म० सुधा, बं० सुधु, पं० सुद्धा, सिं० सूधो, गु० सूधूं।

सूना—वि० (जनहीन, सुनसान)–सं० शून्य>प्रा० सुण्ण, सुन्न>हिं० सूना। तुल० सिं० सुञो, म० सुने, गु० सूनुं, ओ० शून्य, ते० शून्यमु, मल० शून्यमाय।

सूनु—पुं० (१- पुत्र, बच्चा, २- दौहित्र, बेटी का बेटा, ३- छोटा भाई, ४- सूर्य,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५- आक)–सं० सूनु (सू+नुक्)>प्रा० सूणु।

सूनू—स्त्री० (पुत्री)–सं० सूनू (सूनु—ऊङ्।

सूप[1]—पुं० (१- खाने के लिए पकाई हुई दाल, २- उक्त प्रकार की दाल का पतला रसा, ३- रसेदार तरकारी)–सं० सूप>प्रा० सूप, सूअ। तुल० बल्गा० सूपा, स्पे० sopa, अं० soup।

सूप[2]—पुं० (अनाज फटकने का बना हुआ पात्र)–सं० शूर्प>प्रा० सुप्प>हिं० सूप। तुल० गु० सुपडुं, सिं० सुषु, म० सूप।

सूफी—पुं० (ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मवादी, सारे धर्मों से प्रेम करने वाला)–अ० सूफ़ी।

सूबा—पुं० (प्रान्त, प्रदेश)–अ० सूबः।

सूबेदार—पुं० (सूबे का शासक, राज्य-पाल)–अ० सूबः+फ़ा० दार।

सूरज—पुं० (सूर्य)–सं० सूर्य > पा० सूरिय>प्रा० सुज्ज>हिं० सूरज। तुल० पं० उर्दू सूरज, सिं० सिजु, गु० सूरज, ओ० सूर्ज्य। बल्गा० स्लन्से, स्पे० सोले।

सूरत—स्त्री० (आकृति, शक्ल, चेहरा, तस्वीर)–अ० सूरत।

सूरते हाल—स्त्री० (वर्तमान हालत)–अ० सूरतेहाल।

सूरमा—पुं० (योद्धा, वीर)–सं० शौर्यमान्।

सूराखदार—वि० (छेददार)–फ़ा० सूराखदार।

सूल—पुं० (भाला चुभने की पीड़ा, कसक, २- बरछा, भाला)–सं० शूल> पा० प्रा० हिं० सूल। तुल० ओ० म० सूळ, पं० सूल, कु० सूलू, बं० सुल्।

सूली—स्त्री० (आज-कल फाँसी नामक प्राण-दण्ड)–सं० शूल > प्रा० सूला> >हिं० सूली।

सूवै—(स्त्री)— क्रि० (टपकता है)–सं० स्रवति >स्रवत>स्रवइ>स्सवइ> सुवै, ब्र० सूवै।

सूसमार—पुं० (सूस, मगर की तरह का एक बड़ा जलजतु)–सं० शिशुमार> पा० सुंसुमार>प्रा० सुसुमार > अप० सुंसुआर (प० च०)>हिं० सूसमार। तुल० म० सूसर, पं० सिसार, ने० सोस, हिं० सेसरु।

सृजन—पुं० (उत्पन्न करना या जन्म देना)–सं० सृजन। तुल० पं० सिरजण, अस० सरजन, स्रजन; गु० सर्जन, म० सृजन, ओ० सृजन।

सृष्ट—वि० (निर्मित)–सं० सृष्ट>प्रा० अप० सिट्ठ (पाइअ०)>अव० सिट्ठा-अत।

सेंकना—क्रि० (१- आँच के पास या आग पर रखकर गरम करना अथवा पकाना, २- शरीर को गरमी या धूप देना)–सं० श्रेषति (√श्रिषु—दाहे)–सं० श्रेषण। तुल० पं० सेकणा, उर्दू सेंकना, सिं० सेकणु, गु० शेकवुं, बं० सेंका, अस० सेंक, ओ० सेकिबा।

सेंध—स्त्री० (नकब, चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ बड़ा छेद)–सं० सन्धि>प्रा० संधि>सँइधि>हिं० सेंध।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से—कारक विभक्ति (करण, अपादान परसर्ग)–सं० सम एन > सएँ > सइँ > सें > से।

सेओ[१] (की०)—पुं० (कल्याण)–सं० श्रेयस् > प्रा० सेय > अव० सेओ।

सेइए[२५]—क्रि० (सेवा कीजिए, सेवा करो)–सं० सेवते > प्रा० सेवए > सेवे > ब्र० सेइए, सेवहुं।

सेज—स्त्री० (शैया)–सं० शय्या > प्रा० सज्जा, सिज्जा, सेज्जा > सेज्ज > हिं० सेज। तुल० गु० सेज, ओ० सज्जा।

सेजवाँ[१] (पद०) — स्त्री० (सेज)–सं० शैय्यापार्श्वं > सेज्जपाँह > सेज्जवाँह > सेजवाँ।

सेठ — पुं० (बड़ा साहूकार, संपन्न व्यक्ति)–सं० श्रेष्ठिन् > पा० प्रा० सेठ्ठि > अप० सेठि (प्र० चिं०) > हिं० सेठ। तुल० सिं० सेठि, ने० सेठ्, गु० अस० ओ० शेठ, ते० सेट्ठि, मल० सेट्टु, क० शट्टि।

१- **सेत**[१]—वि० (सफेद)–सं० श्वेत > प्रा० सेत, सेअ > अप० सेत्त > हिं० सेत।

२- **सेत**[२]—पुं० (सेतु)–सं० पा० सेतु > अप० सेउ। तुल० म० बं० सेतु, ते० सेतुवु, क० सेतुवं। बल्गा० मोस्त।

सेना—स्त्री० (फौज, पलटन)–सं० पा० सेना > प्रा० सेण्णा > अप० सेण्ण (प० च०), अव० सेण्ण (की०)। तुल पं० सैना, सिं० म० गु० बं० अस० ओ० सेना, ते० सैन्यमु, मल० सैन्यं, क० सैन्य।–पति–पुं० (सेना का नायक)–सं० सेनापति। तुल० पं० (सैनापत, सि० सेनापती, मं० गु० बं० अस० ओ० ते० त० मल० क० सेनापति।

सेनि[१] (पद०)—पुं० (श्येन पक्षी)–सं० श्येन > प्रा० सेण।

सेनी—स्त्री० (बाज की मादा)–सं० श्येनिका।

सेम—स्त्री० (एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है)–सं० शिम्बा > प्रा० सिंबा > सिम्मा > सिम्म हिं० सेम।

सेमर, सेमल, सैमर—पुं० (सेमल का वृक्ष, एक पेड़ जिस पर लाल रंग का रूईदार फल आता है)–सं० शाल्मली (शाल्मलि — ङीष्) > प्रा० सिंबल, सिंबलि > हिं० सेमर, सेमल, सेंमल, सैमर। तुल० कु० सिमल, बं० सिमुल, पं० सिंबल, गु० सिमळो।

सेम्हड़ — पुं० (कफ, बलगम)–सं० श्लेष्मन् > प्रा० सेम्ह > अप० सेम्म > छ० सेम्हड़।

सेर[१]—पुं० (वज़न को व्यक्त करने का मान, मन का चालीसवाँ भाग)–प्रा० सेर (परिमाण-विशेष) > अव० सेरें (सेर की तौल, की०)। तुल० बं० ओ० पं०, सिं० सेरु। मु० सेर।

सेर[२] (की०) — वि० (स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र)–सं० स्वैर > प्रा० अप० सेर > अव० सेर (की०)।

सेर[३]—पुं० (एक प्रकार का धान)–देशज।

सेर[४]—पु० हिं०, (शेर) – फ़ा० शेर।

सेर[५]—पु० हिं० (तृप्त)–फ़ा० सेर।

सेव—पु० हिं०, स्त्री० (सेवा)–सं० पा० प्रा० हिं० सेवा। तुल० पं० म० गु० बं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस० सेवा, ओ० सेबा ।

सेवती[1] (पद०)— स्त्री० (श्वेत गुलाब)–सं० शतपत्रिका>अप० सयवत्तिअ>सेवत्तिय>सेवती ।

सेवन— पुं० (१- परिचर्या, सेवा, २- उपासना, आराधना, ३- नियमित रूप से किया जाने वाला व्यवहार, ४- उपभोग)–सं० सेवन>पा० सेवन (संगति, सेवा, उपभोग)> प्रा० सेवण> हिं० सेवन ।

सेवरा[1] (पद०)—पुं० (श्वेत पट)–सं० श्वेतपट>सेयवड़>सेवरा ।

सेवा—स्त्री० (परिचर्या, टहल)– सं० पा० प्रा० सेवा, प्रा० सेव्वा > हिं० सेवा ।

सेवादार—पुं० (सिक्ख गुरुद्वारे में रह कर वहाँ की व्यवस्था करने वाला अधिकारी)–सं० पा० प्रा० हिं० सेवा+फ़ा० दार ।

सेवार, सेवाल—स्त्री० (वाली की लच्छों की तरह पानी में फैलने वाली एक घास)–सं० शेवल, शेवाल, शैवाल > पा० सेवालो>प्रा० सेवाल, सेवाडा> हिं० सेवार, सेवाल । तुल० कु० सिवालो, बं० सेयाला, सिं० सेंवरु ।

सेवित — वि० (जिसकी सेवा टहल की गई हो)–सं० सेवित>पा० सेवित (अभ्यस्त, संगति में रहा, उपयोग में लाया गया)>प्रा० सेविय ।

सेवी—वि० (१- सेवन करने वाला, २- किसी की या किसी प्रकार की सेवा करने वाला)– सं० सेविन्>पा० सेवी (संगति करने वाला, अभ्यास करने वाला)>प्रा० सेवि (सेवा करने वाला) >हिं० सेवी ।

सेव्य—वि० (जिसकी सेवा, पूजा करनी हो या की जाए)–सं० सेव्य ।

सेहत—स्त्री० (१- सुख, चैन, आराम, २- रोग-मुक्ति, ३- स्वास्थ्य)– अ० सिह्हत ।

सेहरा—पुं० (फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति या जाल जो दूल्हे के मौर के नीचे लटकता रहता है)– (१) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार—सं० शिखर > सिहर>सेहरा । (२) सं० शेखर+क (√शिङ्ख+अरन्=सिर का आभूषण, मुकुट, सिर पर धारण की जाने वाली पुष्पमाला, चोटी) > सेहरअ > हिं० सेहरा ।

सेहाली— स्त्री० (लता-विशेष)–सं० शेफाली>प्रा० सेहाली ।

सेहुँड़, सेंहड़— पुं० (काँटेदार पौधा जिसमें से दूध सा रस निकलता है थूहर, सेहुँड)– सं० सिहुण्ड (सि+√हुण्ड्+अण्) ।

सैं[1]★ (पद०)— सर्व० (स्वयं)–सं० स्वयं>प्रा० सयं>सइं>सैं ।

सैं[2]★— विभक्ति = से । अव्य० (समान)–सं० सदृश ।

सैंकड़ा—पुं० (सौ, शत की संख्या)– सं० शतक>हिं० सतक+ड़ा । तुल०पं० उर्दू सैंकड़ा, म० शेकडा, गु० सैंकडो, बं० शतकरा, ओ० शतकडा । बल्गा० श्तो (पुरानी बल्गा० सतो) ।

सैंतालिस—वि० (चालीस और सात)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० सप्तचत्वारिंशत् > पा० सत्ताचत्तालीसति > अर्ध मागधी सत्तचत्तालीस > अप० सत्तचालीस > हिं० सैंतालिस।

सैंतीस— वि० (तीस और सात)–सं० सप्तत्रिंशत् > पा० सप्तत्तिसति > प्रा० सत्तिसइ > सत्ततीसं > सत्तत्तीस > हिं० सैंतीस। तुल० बलगा० त्रिस्ती सैंदेन।

सैंयाँ—पुं० (स्वामी)– सं० स्वामि + क > प्रा० सामिअ > साइँअ > सैंया।

सै—वि० (सौ)–सं० शत।

सैन्य—पुं० (१- सैनिक, २- सेना, ३- सेना-दल)–सं० सैन्य > प्रा० सइण्ण।

सैरंध्र—पुं० (१- एक तरह की निम्न श्रेणी का नौकर, २- दस्यु और अयोगवी से उत्पन्न एक संकर जाति)–सं० सैरन्ध्र, सैरिन्ध्र।

सैर—स्त्री० (मनोरंजन के लिए घूमना-फिरना, भ्रमण)–अ० सैर। तुल० पं० उर्दू सैर, कश्मी० सारे, सिं० सैरु।

सैलाब—पुं० (जल-प्लावन, नदी आदि के पानी की बाढ़)–अ० सैल (पानी का बहाव) + फ़ा० आब (पानी)।

सैवाल— पुं० (शैवाल, सेवार)–सं० सैवाल।

१- सों[1] (पद०)— अव्य० (सम्मुख, सामने)–सं० सम्मुख > सऊँह > सोंह > सों।

२- सों—सर्व० (सो, वह)–सं० सः > पा० सो > प्रा० सो > अप० सो > हिं० सो।

सोंचर नमक—पुं० (काला नमक)–सं० सौवर्चल + फ़ा० नमक।

सोंठ—स्त्री० (सूखा अदरक)–सं० शुण्ठि > प्रा० सुंठि > हिं० सोंठ। तुल० म० सुंठ, पं० सुण्ढ, सिं० सुंढि, गु० सुंठ। — **औरा**–प्रा० प्र० (सोंठ तथा कुछ मेवों का बना हुआ लड्डू)–सं० शुण्ठि > प्रा० सुंठि > हिं० सोंठ + औरा (प्र०)।

सोंधा—पुं० (सुगन्ध)– सं० सुगन्ध > प्रा० सुअंध > हिं० सोंधा, सोंध, अवधी सोंध।

सो—सर्व० (वह)–सं० सः।

सोकर[1] (च०)— पुं० (सुअर)–सं० शौकर > प्रा० सोकर, सोअर।

सोच—पुं० (१- चिन्ता, २- दुःख, ३- पछतावा)–सं० शोच > प्रा० सोच, सोच्च > हिं० सोच।

सोचना—क्रि० (मन में किसी बात पर विचार करना, गौर करना)– सं० शोचति, ब्र० सोचत। —पुं० सं० शोचन। तुल० पं० सोचणा, कश्मी० सोंचुन, सिं० सोचणु, गु० शोचवुं।

सोता— पुं० (झरना)–सं० स्रोत + क > प्रा० सोत्तअ > सोता, अवधी सोत्।

१- सोती[1] (पद०)—स्त्री० (सीपी)– सं० शुक्ति > प्रा० सोत्ति > सोती।

२- सोती—स्त्री० (नक्षत्र-विशेष, २७ नक्षत्रों में से १५ वाँ शुभ नक्षत्र)–सं० स्वाति, स्वाती > हिं० सोती।

सोदर—पुं० (सगा भाई)–सं० सोदर > प्रा० अव० सोअर।

सोदरा— स्त्री० (सगी बहन)–सं० सोदरा > प्रा० सोअरा।

सोधना—क्रि० (शुद्ध करना, शुद्धता की जाँच की परीक्षा करना)–सं० शुध्यति (शुध शौचे) > प्रा० सोहइ > हिं० सोध

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

+ना। —पुं०-सं० शोधन।

सोनजूही—स्त्री० (एक प्रकार की पीली चमेली)-सं० स्वर्णयूथिका>प्रा० सुण्ण-जूहिया>अप० सुन्नजुही>हिं० सोन-जूही।

सोना[1]—क्रि० (शयन करना, नींद लेना)-सं० √शीङो स्वप्ने (सिद्धान्त-कौमुदी), सं० शेते, अथवा √स्वप्>प्रा० सुप्प> हिं० सोना। —पुं०-सं० शयनम् अथवा सं० स्वपन> प्रा० सोवण। तुल० बल्गा० स्पी।

सोना[2]— पुं० (स्वर्ण, कांचन)-सं० सुवर्ण, स्वर्ण>पा० सुवण्ण प्रा० सोण्ण, सुवण्ण> हिं० सोना। तुल० सिं० सोनु, म० सोने, गु० सोनुं, अस० सोण, मल० स्वर्णं।

सोनी— पुं० (सुनार, स्वर्णकार, एक जाति-विशेष)-सं० स्वर्णिक>सउण्णिअ >सोण्णिअ>सोण्णि> सोनी।

सोपान—पुं० (सीढ़ी, जीना)-सं० पा० सोपान>प्रा० सोवाण। तुल० म० बं० अस० ओ० सोपान, ते० सोपानमु, मल० सोपानं।

सोभना— क्रि० (शोभा देना)-सं० शुभति> प्रा० सोभइ (शोभय्> प्रा० सोभ, सोह)>हिं० सोभ+ना। —पुं० सं० शोभन (√शुभ्+ल्युट्)।

सोम—पुं० (अमृत)-सं० सोम>प्रा० सोम। तुल० स्पे० सोमा। —पुं० (एक लता जिसका रस यज्ञ के काम में आता है, सोमवल्ली का रस, चन्द्रमा, किरण, कपूर, जल, वायु, कुबेर का नाम, मन)-सं० सोम (√सु+मन्)> पा० सोम (चंद्रमा)।

सोरठा—पुं० (एक छन्द)-सं० सौराष्ट्र +क>प्रा० सोरट्ठअ>हिं० सोरठा।

सोलह— वि० (दस और छह)-सं० षोडशन्>पा० प्रा० सोलस > अप० हिं० सोलह, पु० राज० सोल। तुल० पं० सोलां, सिं० सोरहं, सोहीं, म० सोळा, गु० सोळ, बं० षोल, अस० षोल्ल।

सोवत सोवना—क्रि० (सोता है)-सं० स्वपिति>स्वविइ>सोवइ>ब्र० सोवत सोवना।

सोवनार★, सोवनारा (पद०)— पुं० (शयनागार)- सं० स्वपनागार>प्रा० सुवणागार, सोवणार>सोवनार।

सोसन—पुं० (एक प्रकार का पौधा)-फ़ा० सौसन।

सोहन—वि० (अच्छा लगने वाला)-सं० शोभन>प्रा० सोहण> हिं० सोहन।

हलुआ—पुं० (एक प्रकार की बढ़िया मिठाई)-सं शोभन> प्रा० सोहण > हिं० सोहन+अ० हलवा।

सोहना[1]— क्रि० (शोभित होना)-सं० शोभते>प्रा० सोहए, सोहइ>हिं० सोह +ना।

सोहना[2]—प्रा० प्र०—वि० (शोभायुक्त, सुहावना)-सं० शोभन>प्रा० सोहण> हिं० सोहना।

सोहना[3]—क्रि० (खेत में से अनावश्यक घास आदि उखाड़ना, निराना)-सं० शोध >प्रा० सोह>हिं० सोह+ना।

सोहनी[1]—स्त्री० (बुहारी)-सं० शोधनी >प्रा० अप० सोहणी>हिं० सोहनी।

सोहनी[2]—वि० (सुन्दर)-सं० शोभिनी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

>सोहिणी, सोहनी।

सोहन्ता[1] (की०)—क्रि० (शोभायुक्त करना)–सं० शोभय>प्रा० सोह>अव० सोहन्ता।

सोहबत—स्त्री० (संगत, मित्रता, सहवास, पास बैठना)– अ० सुहबत।

सोहर— पुं० (एक प्रकार का मंगलगीत जो स्त्रियाँ बच्चा होने पर गाती हैं)–सं० सूतिगृह>प्रा० सूइसर>सोइहर>हिं० सोहर।

सोहरा—प्रा० प्र०, वि० (शोभायुक्त)–सं० शोभिल> प्रा० सोहिर > अप० सोहल (प० च०)>हिं० सोहरा।

सोहाग—पुं० (सुहाग)–सं० सौभाग्य> प्रा० सोहग्ग>हिं० सोहाग।

सोहिल—पुं० (एक तारा जो चंद्रमा के पास दिखाई पड़ता है, अगस्त्य तारा)–अ० सुहैल।

सोहिला—पुं० (मांगलिक गीत, शकुन के गीत)–सं० शोभावत्>प्रा० सोहिल्ल, सोहल>हिं० सोहला।

सोहीं—क्रि० वि० (सामने, आगे)–सं० सम्मुख>प्रा० सम्मुह > हिं० सौंह, सोहीं, सौहैं।

सौंकेरा—पुं० (सवेरे का समय)–सं० सकाल।

सौंध—पुं० (सुगन्धि)– सं० सुगंधि> प्रा० सुअंधि, सुअंध>सौंध।

सौंपना—क्रि० (किसी व्यक्ति या वस्तु को दूसरे के अधिकार में करना)–सं० समर्पयति>प्रा० समप्पय> सवँप्प > हिं० सौंप+ना। सं० समर्पण> प्रा० सउप्पण। तुल० पं० सौंपणा, सिं० सौंपणु, म० सोपविणे, गु० सोंपवुं।

सौंफ—स्त्री० (औषध और मसाले में प्रयुक्त होने वाला एक पौधा और उसके फल)–सं० शतपुष्पा>पा० सतपुप्फा> प्रा० सयपुप्फा>हिं० सौंफ। तुल० पं० सिं० सौंफ।

सौंह[1] —(पद०) अव्य० (सामने)–सं० सम्मुख>प्रा० सम्मुह>सऊँह > सौंह, सौंहें (प्रा० प्र०)।

सौ—वि० (नब्बे और दस)–सं० शत> प्रा० सअ, सय, अर्धमा० सय>अप० सय (प०च०), सअ, सुआ (प्रा० पैं०), पु० राज० सउ>हिं० सौ, सै (बो०)।

सौख्य—पुं० (१- सुख का भाव, २-सुख)–सं० सौख्य>प्रा० सुक्ख। म०, अ० मा०, जै० महा० जै० शौ०, शौ०, अप० सोंक्ख।

सौगंद—स्त्री० (शपथ)–सं० सौगन्ध> फ़ा० हिं० सौगंद।

सौगात—स्त्री० (भेंट, उपहार, तोहफ़ा)–तु० सौग़ात।

सौत—स्त्री० (किसी स्त्री के पति की दूसरी स्त्री या प्रेमिका)–वै० सं० सपत्नी>प्रा० सवत्ती, अप० सवत्ति, सउत्ति, सौति, सौत। तुल० पं० सौकन, सौकण, कश्मी० सॅन, बं० सतीन, क० ते० सवति, अस० सतिनी, ओ० साबत।

सौतेला—वि० (सौत से उत्पन्न, सौत का, जैसे सौतेला लड़का)–सं० सपत्नी> प्रा० अप० सवत्ती, सउत्ति, सौति, सौत+एला (प्र०), स्त्री० सौतेली। तुल० गु० सावकुं, म० सावत्र, अस० सँतीया, ते० सवति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सौदा—पुं० (बेचने का सामान)–अ० सौदा। तुल० मु० saodā।

सौदाई—पुं० (पागल)–अ० सौदाई।

सौदागर—पुं० (सौदा बेचने वाला)–फ़ा० सौदागर।

सौदागरी—स्त्री० (सौदा बेचना)–फ़ा० सौदागरी।

सौदेबाजी—स्त्री० (लेन-देन के व्यवहार के संबन्ध में की जाने वाली बातचीत)–अं० सौदा+फ़ा० बाजी।

सौमनस्य—पुं० (प्रसन्नचित्तता, संतुष्ट मन)–सं० सौमनस्य>प्रा० सोमणस।

सौभाग्य—पुं० (अच्छा भाग्य)–वै० सं० सौभग्, सं० सौभाग्य > प्रा० सोहग्ग, महाराष्ट्री, अर्धभा०, जै० महा०, शौ० सोहग्ग। तुल० पं० सुभाग, सिं० सुभागु, गु० बं० अस० ओ० सौभाग्य, मल० सौभाग्यं।

सौम्य—वि० (१- मनोहर, सुन्दर, २- शान्त आकृति वाला)–सं० सौम्य>पा० सोम्म>प्रा० सोम्म, सोम>अप० सोम (प० च०)।

सौर[1] (पद०)—स्त्री० (चादर ओढ़ना)–सं० श्वेतपट>प्रा० सेअ+पड>सेअअड सउअड>सोअड>हिं० सौर।

सौर[2]—पुं० (१- ग्रह-विशेष, शनैश्चर, २- वृक्ष-विशेष, उदुम्बर का पेड़)–सं० सौर>प्रा० सउर।

सौर[3]—वि० (सूर्य संबन्धी, सौर्य)–सं० सौर (सूर+अण्)। तुल० अं० पुर्त० solar।

सौर[4] — स्त्री० (सौरी मछली, एक मछली जिसकी देह काली, पीली और सफेद रंग की होती है)–सं० शकुल>प्रा० सउल>सउर>हिं० सौर।

सौरज—पु० हिं०, प्रा० प्र०, पुं० (शूरता, बहादुरी)–सं० शौर्य>हिं० सौरज।

सौरभ—पुं (सुगन्ध)–सं० सौरभ>प्रा० सोरब्ध, सोरंभ, सोरभ।

सौरी—स्त्री० (वह कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है)–सूतिगृह>प्रा० सुइहर>हिं० सौरी।

सौहार्द — पुं० (मैत्री, बन्धुता)–सं० सौहार्द।

सौहार्द्य—पुं० (मित्रता, बन्धुता)–सं० सौहार्द्य।

स्कूल—पुं० (पाठशाला)–अं० स्कूल। तुल० चैक इकोला, स्पे० एसकुएला।

स्टेशन — पुं० (१- वह स्थान जहाँ निर्दिष्ट समय पर नियमित रूप से रेल गाड़ियाँ ठहरा किया करती हैं, २- सवारियों के ठहरने का स्थान)–अं० स्टेशन। तुल० स्पे० estacion, बल्गा० स्तान्त्सिया।

स्तंभ—पुं० (१- खंभा, थंभा, थूनी, २- पेड़ का तना)–सं० स्तम्भ। तुल० म० स्तंभ, खांब, सिं० थंभो, पं० खंबा, गु० स्तंभ, थांभलो; बं० स्तंभ, थाम; ओ० स्तम्भ, ते० स्तंभमु।

स्तब्ध—वि० (निश्चेष्ट, धीमा, स्थिर)–सं० स्तब्ध। तुल० बं० म० ओ० स्तब्ध, गु० स्तस्थ, मल० स्तब्धं, ते० स्तब्धुडु।

स्तवरक[1] — पुं० (वस्त्र-विशेष)–सं० स्तवरक, पह० स्तव्रक, अ० इस्तब्रक> फ़ा० इस्तब्रक।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्तुति—स्त्री० (गुणकीर्तन, प्रशंसा)–सं० स्तुति। तुल० पं० उसतत, म० गु० अस० ओ० ते० मल० स्तुति।

स्तोत्र—पुं० (किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूपकथन या गुण-कीर्तन)–सं० स्तोत्र (√स्तु+ष्ट्रन्)। तुल० पं० सतोतर, सिं० स्तोत्रु, क० गु० म० स्तोत्र, स्तवन, बं० स्तोत्र, ओ० स्तोत्र, ते० स्तोत्रमु, मल० स्त्रोत्रं।

स्त्री—स्त्री० (१- नारी, औरत, २- पत्नी)–सं० स्त्री (√ स्त्यै + ड्रट् — ङीप्)। तुल० पं० इसत्री, बं० स्त्री।

स्थगन—पुं० (१- ढाँकना, आच्छादन, २- छिपाना, ३- दूर करना, अपवारण, ४- किसी कार्य अथवा सभा आदि को कुछ समय के लिए रोकना)–सं० स्थगन (स्थग्+ल्युट्)। तुल० बं० अस० ओ० स्थगन।

स्थान—पुं० (जगह, स्थल)–सं० स्थान (√स्था+ल्युट्) > प्रा० ठाण। तुल० पं० थाँ, सिं० स्थानु, म० गु० बं० अस० ओ० स्थान, ते० स्थानमु।

स्थानीय—वि० (स्थान-विशेष का)–सं० स्थानीय > प्रा० ठाणीय। तुल पं० सथानक, ते० स्थानिकमु।

स्थापना—स्त्री० (१- स्थापित करने की क्रिया, २-प्रतिपादन, निरूपण)–सं०स्थापना (√स्था+णिच्, पुक्+युच्—टाप्) > प्रा०ठापणा। तुल० पं० सथापणा।

स्थायी—वि० (सदा बना रहने वाला, स्थिर)– सं० स्थायिन् (स्था+ णिनि, युक्) > प्रा० ठाइ।

स्थिर—वि० (१- अटल, निश्चल, २- स्थायी, ३- धीर, शांत)– सं० स्थिर (√स्थिर्+किरच्)। तुल० पं० सथिर, थिर, ते० स्थिरमु।

स्नान— पुं० (नहाना)– सं० स्नान (√स्ना+ल्युट्) > पा० सिनान > प्रा० सिणाण।

स्नुषा—स्त्री० (पुत्र-वधू)– सं० स्नुषा > पैशाची सुनुसा, अर्ध मा० ण्हुसा। तुल० बंगा० स्नखा।

स्नेह—पुं० (१- प्रेम, प्रणय)–सं० पा० स्नेह > प्रा० सणेह > हिं० स्नेह, सिनेह (बो०)। तुल० पं० नेहु, सिं० स्नेहु, म० गु० ओ० क० स्नेह, ते० स्नेहमु, मल० स्नेहं। (२- चिकना पदार्थ) तुल० ते० स्नेहमु।

स्नेहन—पुं० (तेल की मालिश, उबटन)–सं० स्नेहन।

स्नेही—पुं० (प्रेमी, मित्र)–सं० स्नेहिन् (√स्निह्+णिनि)।

स्पंदन— पुं० (१- धीरे-धीरे हिलना अथवा काँपना, २- प्रस्फुरण, गर्भस्थ शिशु का स्फुरण)–सं० स्पन्दन (√स्पन्द +ल्युट्) तुल० ते० स्पंदनमु।

स्पर्श— पुं (१- त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है, २- एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से सटना या छूना)– सं० स्पर्श (√स्पृश्+अच् वा घञ्) > पा० फस्स। तुल० अस० ओ० स्पर्श, ख.मति फास्सा।

स्पष्ट—वि० (साफ दिखाई देने वाला)– सं० स्पष्ट (√स्पर्श्+क्त)। तुल० पं० सपशट, म० गु० बं० अस० ओ० क० स्पष्ट, मल० स्पष्टं, ते० स्पष्टमु।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पृहणीय—वि० (वाञ्छनीय, ईर्ष्या करने योग्य)–सं० स्पृहणीय (√स्पृह्+अनीयर्)।

स्मरण— पुं० (स्मृति)–सं० स्मरण (√स्मृ+ल्युट्)। तुल० पं० सिमरन, सिं० स्मरणु, म० गु० अस० ओ० स्मरण, ते० स्मरणमु।

स्मारक—वि० (स्मरण कराने वाला)–पुं० (यादगार)–सं० स्मारक (√स्मृ+णिच्+ण्वुल्)। तुल० गु० बं० स्मारक।

स्मृति—स्त्री० (१- स्मरण-शक्ति, २- अनुस्मरण, ३- धर्म, आचार-व्यवहार आदि से संबंधित हिन्दू-धर्मशास्त्र जिनकी रचना ऋषियों ने वेदों का स्मरण अथवा चिंतन करके की थी)–सं० स्मृति>प्रा० सइ। तुल० पं० सिमरती, अस० ते० मल० म० उर्दू क० स्मृति (स्मृति-ग्रंथ), सिं० स्मृती (धार्मिक ग्रंथ)।

स्यापा—पुं० (मरे हुए व्यक्ति के शोक में कुछ समय तक स्त्रियों का प्रतिदिन एकत्र होकर शोक करना)–फ़ा० स्याह-पोश।

स्याम—वि० (साँवला)– सं० श्याम> प्रा० साम।

स्यार— पुं० (सियार, गीदड़)–सं० शृगाल>प्रा० सिआल> सिआर>हिं० स्यार। तुल० फ़ा० शग़ाल।

स्यौं★—अव्य० (साथ)– सं० सह।

स्रष्टा-- वि० (सृष्टि या रचना करने वाला)–पुं० (१- सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा, २- विष्णु, ३- शिव)–सं० स्रष्टृ।

स्वपन—पुं० (नींद, निद्रा)–सं० स्वपन>प्रा० सोवण (पाइअ०)>अप० सोवण (प० च०)।

स्वप्न—पुं० (सपना)–सं० स्वप्नम्> पा० सुपिन>अप० सिणिवय, सुविण्ण (प० च०)। तुल० अवेस्ता हव्फ़्नेम्।

स्वभाव—पुं० (१- आदत, २- प्रकृति, मिजाज)– सं० स्वभाव>पा० प्रा० सभाव। तुल० पं० सुभा, अस० स्वभाव, ते० स्वाभावमु।

स्वयं—अव्य० (खुद, आप, आपसे आप)–सं० स्वयम्>प्रा० सयं> अव० सओ (की०)।

स्वर्ग—पुं० (देवलोक)– सं० स्वर्ग> पा० प्रा० सग्ग> अव० सग्ग (की०) तुल० सुरग, सिं० सुर्ग, म० गु० अस० क० स्वर्ग, ते० स्वर्गमु।

स्वस्थ—वि० (तन्दरुस्त, रोग से रहित)–सं० स्वस्थ>प्रा० सुत्थ। तुल० गु० ओ० क० स्वस्थ, अस० सुस्थ।

स्वाँग—पुं० (कृत्रिम या बनावटी वेश जो अपना रूप छिपाने और दूसरे का रूप बनाने के लिए धारण किया जाए, भेस, रूप)–सं० समाङ्ग (समाकार)> हिं० स्वाँग। तुल० कु० स्वांग, पं० सवाँग, गु० सोगँ।

स्वागतम्—पुं० (अभ्यर्थना, किसी आदरणीय व्यक्ति के आने पर आगे बढ़कर आदरपूर्वक उसका अभिनन्दन करने की क्रिया)–सं० स्वागतम् > शौ० साअदं, मागधी शाअदं।

स्वाद—पुं० (जायका, किसी वस्तु के खाने पर रसनेन्द्रिय को होने वाली अनुभूति)–सं० स्वाद(√स्वद् वा√स्वाद्+घञ्)। तुल० पं० सवाद, सुआद, सिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सवादु, म० गु० अस० स्वाद, ओ० स्वादु, बं० स्वाद, मल० स्वादुँ।

स्वामी—पुं० (मालिक)–सं० स्वामिन् >प्रा० सामि, सामिअ, अप० सामि, छ० सामी, स्यामि (पद०)। तुल० सिं० म० गु० ओ० स्वामी।

स्वार्थ—पुं० (अपना अर्थ या उद्देश्य)–सं० स्वार्थ। तुल० सिं० स्वार्थु, म० गु० बं० ओ० स्वार्थ, ते० स्वार्थमु।

स्वावलंबन — पुं० (आत्म-निर्भरता)–सं० स्वावलम्बन। तुल० म० गु० अस० स्वावलंबन, ते० स्वावलंबनमु।

स्वावलंबी—वि० (आत्म-निर्भर)–सं० स्वावलम्बिन्।

स्वास्थ्य—पुं० (आरोग्यता)–सं० स्वास्थ्य (स्वस्थ+ष्यञ्)। तुल० गु० अस० ओ० स्वास्थ्य।

स्वीकार—पुं० (कोई बात मान लेने की क्रिया या भाव)–सं० स्वीकार। तुल० पं० सवीकार।

स्वीकृति— स्त्री० (स्वीकार करने की क्रिया या भाव)–सं० स्वीकृतिः। तुल० गु० अस० ओ० मल० स्वीकृति।

स्वेद—पुं० (पसीना)– सं० स्वेद> पा० सेद>प्रा० सेअ।

स्वैराचारी—वि० (व्यभिचारिणी)–सं० स्वैराचारिन्।

स्वैरिणी—स्त्री० (व्यभिचारिणी)–सं० स्वैरिणी>प्रा० सइरिणी।

स्वैरिन— वि० (स्वच्छन्दी, स्वेच्छाचारी)–सं० स्वैरिन्>प्रा० सइरि।

ह

हंकराई, हंकारए, हंकारत — क्रि० (बुलवाया)–सं० हुङ्करोति>हुंकरोइ> ब्र० हंकराइ, हंकराए।

हंगामा—पुं० (उपद्रव, विद्रोह, कोलाहल, शोरगुल)–फ़ा० हंगामः।

हंडा—पुं० (पानी भरने या रखने का पीतल या ताँबे का एक बड़ा बरतन)–सं० भाण्ड+क>प्रा० भंडअ > हिं० हंडा, स्त्री० हाँडी। तुल० मु० हांडा।

हंस—पुं० (बतख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी-बड़ी झीलों में रहता है)– सं० हंस>पा० प्रा० हिं० हंस।–स्त्री०, हंसी–सं० पा० प्रा० हंसी। तुल० मु० हांसा (hānsā)। पं० उर्दू म० गु० ओ० हंस, सिं० हंसु, बं० हाँस।

हँड़िया—स्त्री० (मिट्टी का बड़ा बरतन, हाँडी)–सं० हण्डिका > अप० हण्डिय (प०च०)>हिं० हँडिया।

हँसना — क्रि० (परिहास करना)–सं० हसति>पा० हसति>(सं० हस्>प्रा० हस)>प्रा० हसइ>हिं० हँसना।–पुं० हसनम्>पा० हसन>प्रा० हसण। तुल० पं० हस्सणा, उर्दू हंसना, म० हंसणें, गु० हंसवूँ, हसवुं।

हँसमुख—वि० (विनोदी, जिसका मुँख हमेशा हँसता हुआ सा रहता है)–सं० हास्यमुख। तुल० पं० हस्समुख, उर्दू हंसमुख, सिं० हसिमुखु, गु० हसमुखुं, बं० हासिमुख।

हँसली[1]—स्त्री० (गरदन के नीचे और छाती के ऊपर धन्वाकार हड्डी)–सं० अंसली। तुल० हस्स, सिं० हसिली,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उर्दू हंसली, गु० हाँसडी ।

हँसली[२]—स्त्री० (एक आभूषण)–मु० हास्ली (hāsli) । तुल० पं० हस्स, बं० हाँसुली, ओ० हंसुली ।

हँसाई—स्त्री० (हँसी)–सं० हास्य । प्रा० हासीअ > हिं० हँसाई ।

हँसाना—क्रि० (दूसरे के हँसाने में प्रवृत्त करना)–सं० √ हासय् > प्रा० हास > हिं० हँसाना ।

हँसिया—पुं० (लोहे का एक धारदार औजार जो अर्धचंद्राकार होता है और जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है)–प्रा० असिय ।

हँसी—स्त्री० (१- विनोद, परिहास, २- हँसने की क्रिया)–सं० हास्य > प्रा० हासीअ > हिं० हँसी, ह० हाँस्सी । तुल० पं० हासा, बं० हासि, गु० हांसी (मजाक), हास्य, हसी, हास (हँसने की क्रिया) । मु० हासी (मज़ाक) ।

हउहरा[१]—स्त्री० (जेठ मास में दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर चलने वाली प्रचण्ड वायु)–सं० हविधारक > हउहरा ।

हक—पुं० (अधिकार)–अ० हक़ । तुल० मु० हक् (hak) । पं० उर्दू हक़, कश्मी० हख, सिं० हकु, म० हक्क, गु० बं० अस० हक, ओ० हक्, ते० क० हक्कु ।

हकलाना—क्रि० (रुक-रुककर बोलना)–सं० ह्लापयति (√ह्लप व्यक्तायां वाचि, to speak) ।

हकीक — पुं० (एक पत्थर) – अ० अक़ीक़ ।

हकीकत—स्त्री० ((यथार्थता, सच्चाई)– अ० हक़ीक़त ।

हक्क-हक्क — (हक्क-हक्क की ध्वनि-विशेष)–प्रा० हिक्किअ (अश्व-शब्द) > हक्क ।

हक्काक[१]—पुं० (रत्न तराशने वाला)–अ० अकीक ।

हक्का-बक्का—वि० (किसी ऐसी बात पर स्तंभित जिसका पहले से अनुमान तक न रहा हो अथवा जो अनहोनी या भयानक हो) – प्रा० हक्का (पुकार, बुलाहट, आह्वान)–dash देश्य शब्द + प्रा० वक्क (सं० वाक्य) ।

हगना—क्रि० (मलोत्सर्ग करना)–सं० हदते (√ हद् उत्सर्जने) ।–पुं०–सं० हदनम् ।

हजम—वि० [(खाद्य पदार्थ) जो खा लिये जाने पर आमाशय में पच गया हो]–अ० हज़्म ।

हजरत—पुं० (१- महात्मा, महापुरुष, २- आदर - सूचक सम्बोधन) – अ० हज़रत ।

हजामत—स्त्री० (बाल बनाना, बाल बनवाना)–अ० हजामत ।

हजार — वि० (सहस्र)–पह० फ़ा० हज़ार । सं० सहस्र > अवेस्ता हजअर > हिं० हजार ।

हज्जाम—पुं० (नाई)–अ० हज्जाम । उर्दू हजाम, सिं० हजमु, म० गु० क० हजाम ।

हटकत[२५] — क्रि० (रोकता है)–सं० अड्ड > हट्ट > हट, हटकत ।

हटना—क्रि० (खिसकना, किसी स्थान को त्यागकर दूसरे स्थान पर हो जाना)–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं० अठति (√अठ् गतौ)।

हटाना—क्रि० (एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना) – सं० आठयति (√अठ् गतौ)।

हट्टा-कट्टा—वि० (हृष्ट-पुष्ट, बलवान)–सं० हृष्ट-काष्ठ>प्रा० हट्ठ-कट्ठ>हिं० हट्टा-कट्टा।

हट्टी—स्त्री० (दूकान, छोटा बाजार)–सं० हट्टिका (सं० हट्ट+इका)>प्रा० हट्टिगा, हट्टी>हिं० हट्टी।

हठ — स्त्री० (जिद)–सं० पा० हिं० हठ।

हड़ताल—स्त्री० (दुःख, विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिए कर्मचारियों या जनसाधारण द्वारा कारबार, दूकानें आदि बंद कर देना)–सं० हट्टतालक> प्रा० हट्टतालय > हठताल > हिं० हड़ताल। तुल० कश्मी० हरताल, सिं० हडिताल, हटताड़, म० हरताळ, गु० हडताल, अस० हरताल। बल्गा० स्ताच्का।

हड़ना—क्रि० (भटकना)–सं० हिण्डते (हिडि गति-अनादरयोः)।

हड़पना—क्रि० (दूसरे की वस्तु अनुचित रीति से ले लेना)–(√हृञ् हरणे)> प्रा० हरइ>हिं० हड़प+ ना।

हड़बड़ाना—क्रि० (शीघ्रता के कारण कोई काम घबराहट से करना)–सं० हडबडायते (ध्वनि-अनुकरणात्मक)।

हड़हड़ाना—क्रि० (शीघ्रता करने की प्रेरणा देना, जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना) – सं० हडहडायते (ध्वनि-अनुकरणात्मक)।

हड़ाक-हड़ाक—पुं० (रेलगाड़ी के दौड़ते समय पहियों और पटरी से उत्पन्न ध्वनि)–सं० हडहड > प्रा० हडहड> हिं० हड़हड़।

हड़ीला — वि० (जिसमें हड्डी या हड्डियाँ ही रह गई हों या दिखाई देती हों अर्थात् बहुत दुबला-पतला)–सं० हड्ड >अप० हड्ड (प०च०)>हिं० हड्डी+ ईला (प्र०)।

हड्डी—स्त्री० (अस्थि)–सं० अस्थि> प्रा० अत्थि, अट्ठि>हड्डि>हिं० हड्डी। तुल० पं० उर्दू हड्डी, गु० म० शो० हाड, अस० हाँड़।

हत—वि० (वध किया हुआ, विनष्ट, आहट)–सं० हत>प्रा० हय > अव० हअ (की०)।

हतक—स्त्री० (अपमान)–अ० हत्क।

हतवासा—पुं० (दस्ताना)–सं० हस्त-वासस् (वासस=वस्त्र, मो० वि०)> प्रा० हत्थ+वासस>हिं० हतवासा।

हतसार—स्त्री० (हाथीशाला) – सं० हस्तिशाला>बु० हत्सार।

हत्था—पुं० (किसी भारी औजार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है, दस्ता, मूठ)–सं० हस्त+क>प्रा० हत्थअ >हिं० हत्था। तुल० पं० हत्था, सिं० हथियों, गु० हाथो, बं० हाता, ओ० हस्ता।

हत्या—स्त्री० (मारकाट)–सं० हत्या> प्रा० हच्चा>अप० हचड (प्र० ड)।

हथकंडा—पुं० (१- हाथ को इस प्रकार जल्दी से और ढंग के साथ चलाने की

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिया जिससे देखने वालों को उसके द्वारा किए हुए काम का ठीक-ठीक पता न लगे, हस्तकौशल, २- गुप्तचाल, चतुराई की युक्ति)–सं० हस्त+सं० काण्ड> हिं० हथकंडा।

हथिनी—स्त्री० (हाथी की मादा)–सं० हस्तिनी>प्रा० हत्थिणी>हिं० हथिनी।

हथियार — पुं० (अस्त्र-शस्त्र) –प्रा० हत्थियार (देश्य शब्द)>हिं० हथियार। तुल० उर्दू हथिआर, कश्मी० हथियार, गु० हथियार, बं० हातियार, ओ० हतिआर।

हथेली – स्त्री० (करतल)–सं० हस्ततल >पा०प्रा० हत्थतल>हत्थल, हथ्थल> अव० हथल (की०)>पु० हिं० हाथल >हिं० हथेली। तुल० पं०उर्दू हथेली, गु० हथेली, हथेळी।

हथोरी[1] (पद०)—स्त्री० (हथेली)– सं० हस्तिपुटिका>हत्थउडिया > हथोडिआ>हथोड़ी।

हथौड़ा[1]—पुं० (किसी वस्तु को ठोंकने, पीटने या गढ़ने के लिए साधन वस्तु)– सं० हस्त+कूट+क=हथौड़ा > पा० हत्थ+कूटम > प्रा० हत्थ + कूडअ >हत्थोडा>हथौडा। तुल० पं० हथौड़ा, उर्दू हतौड़ा, सिं० हथोड़ो, म० हातोडो, बं० ओ० हातुड़ी।

हथौड़ा[2]—(हद०) — पुं० (हाथ का कड़ा)–सं० हस्त-कटक>हथौड़ा।

हद—स्त्री० (सीमा, पराकाष्ठा)–फ़ा० हद (द्द)।

हदबंदी — स्त्री० (दो खेतों, प्रदेशों, राज्यों, देशों की सीमा-निर्धारण करना)– अ० हद(द्द)+फ़ा० बंदी। तुल० पं० उर्दू कश्मी० हदबंदी, गु० हदबंधी।

हफ्ता—पुं० (सात दिनों का समय)– सं० सप्ताह > फ़ा० हफ़्तः > हिं० हफ्ता।

हबश—पुं० (अफ्रीका का एक प्रसिद्ध देश)–अ० हबश।

हम—सर्व०—(मैं का बहु व०)–(१) सं० अस्मे>पा० प्रा० अम्हे>अप० अम्ह> मह>हिं० हम। (२) डॉ धीरेन्द्र वर्मा –वै० सं० अस्मे > प्रा० अम्मे, म्हे। वयं से हिं० हम का किसी तरह का संबध नहीं हो सकता। तुल० म० आम्ही, गु० अमे, बं० आमरा, अस० आमि, ओ० आमे।

हम-असर—पुं० (वे जिन पर एक ही प्रकार का असर पड़ा हो)–फ़ा० हमः+ अ० असर।

हम-दोस्त—पुं० (जो सबका मित्र हो)– फ़ा० हमः दोस्त।

हमराही—पुं० (रास्ते में साथ चलने वाला)–फ़ा० हमराही।

हमला—पुं० (आक्रमण)–अ० हम्लः। तुल० पं० उर्दू हमला, सिं० हमिलो, गु० हुमलो, बं० हामला।

हमवार—वि० (समतल, चौरस)–फ़ा० हमवार।

हमसफर—वि० (सह-यात्री)–फ़ा० हम +अ० सफर।

हमार—सर्व० (हमारा)–सं० अस्मत्+ कर>प्रा० अम्ह+कर>अप० हमार, हम्मार। तुल० ओ० आम्हार, बं० अस० आमार, अवधी हमार, म० आमचा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हमारा—सर्व० (हम का सबन्ध कारक रूप)–सं० अस्मे + कार्यकः > अम्ह + करको > अम्ह अरओ > अम्हारउ, म्हारो > हमारो, हमारा, म्हारा। तुल० बं० आमादेर, अस० आमार, ओ० आमर।

हमें—सर्व० (मैं का बहुव०)–सं० अस्मे > पा० प्रा० अप० अम्हे > प्रा० अप० अम्हइं > अम्हें > हिं० हमें।

हमेशा — अव्य० (सदा, सदैव)–पह० hamisheh, फ़ा० हमेशः। तुल० सिं० हमेशह, हमेशा, गु० हमेश, हमेशां, बं० हमेशा।

हय—पुं० (अश्व)–सं० पा० हय > अव० हअ (की०)।

हया — स्त्री० (शर्म, लज्जा) – अ० हया।

हयादार—वि० (जिसमें लज्जा हो)–अ० हया + फ़ा० दार।

हर—सर्व० (प्रत्येक)–पह० फ़ा० हर (har) > हिं० हर।

हरइ—क्रि० (हर लेता है, हरता है)–सं० हरति > हरइ।

हरई, हरहु — क्रि० (हरण करता है, हरण करो, खो गई, हरण हुई)–सं० हरति > हरइ, ब्र० हरई, हरहु।

हरखना — क्रि० (हर्षित होना)–सं० हर्षति।

हरगिज—क्रि० वि० (कदापि, किसी दशा में भी)–फ़ा० हरगिज़।

हरचंद—क्रि० वि० (कितना ही, बहुत या बहुत बार)–फ़ा० हरचंद।

हरड़—पुं० (हड़, बड़ा पेड़ जिसके पत्ते महुए के से चौड़े होते हैं)–सं० पा० हरीतकी > हरीटकी > हरीडइ > हरडई > हिं० हरड़।

हरण—पुं० (छीनना, लूटना, उठा ले जाना)–सं० पा० प्रा० हिं० हरण। तुल० ओ० अस० पं० गु० हरण, ते० हरणमु।

हरदम—क्रि० वि० (हर समय, हमेशा)–फ़ा० हरदम।

हरना — क्रि० (छीनना, लूटना)–सं० हरति > (हृञे हरणे) > पा० हरति > प्रा० हरइ > (सं० √हृ > प्रा० हर)। तुल० गु० हरवूं, म० हरणें।

हरबार—क्रि० (हमेशा)–फ़ा० हर + फ़ा० बार।

हरम—पुं० (अन्तःपुर, रनिवास, जनानखाना)–सं० हर्म्य (प्रासाद) > हिं० हरम। अ० धातु ह-र-म (मना करना), अ० हरीम (जहाँ जाना मना हो)।

हरषत—क्रि० (हर्षित होता है, प्रसन्न होता है)–सं० हर्षति > (हृष् > प्रा० हरिस) > ब्र० हरषत।

हरषित—पुं० हिं०, वि० (प्रसन्न)–सं० हर्षित > अप० हरिसिय > हरषित।

हरसोत (१) — पुं० (हलस और जोत के द्वारा होने वाला साझा)–सं० हलीषा + योक्तृ > हरसोत।

हरांसु—पुं० (दुःख, भय)–फ़ा० हिरास > अवधी हराँसु, हिं० हरास।

हरा—वि० (हरा रंग)–सं हरित > प्रा० हरिअ > हिं० हरा। तुल पं० हरा, उर्दू हरा (सब्ज़), म० हिरवा, ओ० हरित, क० हसिरु।

हराए—क्रि० (पराजित किए) – सं० हारयति > हारयइ > हारए। टि० –

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'सं० हारयति' का अर्थ 'नष्ट करना या उड़वा देना था,' उसी से पराजित करने का अर्थ लाक्षणिक प्रयोग के कारण विकसित हो गया।

हराना—क्रि० (पराजित करना)-(१) सं० जहर्ति (√हृ प्रसह्य करणे); सं० हराय्>पा० हरापेति>प्रा० हरावेइ> हिं० हराना। तुल० मु० हाराओ (hārāo)। पं० हराउणा, ओ० हराइबा, कु० हराणो।

हरिअर[1] (पद०) — वि० (हरा)-सं० हरितक>हरियर>हरिअर।

हरिण—पुं० (मृग, हिरन)-सं० पा० प्रा० हिं० हरिण। तुल० बं० हरिनी, ओ० हरिणी।

हरियाली—स्त्री० (हरे-भरे पेड़-पौधों आदि का विस्तृत फैलाव या समूह)-सं० हरित्+आलि>प्रा० हरिआली>अप० हरिआली (दे० ना० मा०) > हिं० हरियाली। तुल० पं० हरिआवल, म० हिरवळ, ओ० हरीतिमा।

हरी[1]—स्त्री० (बड़ा हल)-सं० हलि> हरी।

हरीरुद—स्त्री० (नदी का नाम)-सं० सरयू>हरयू>हरीरुद (रुद=नदी)।

हरुआ[1]—वि० (हलका)-सं० लघुक> पा० लहअ, लहुअ>लहुव>हलुव > हरुव>हरुआ।

हरुआना—क्रि० (हलका होना)-सं० ह्रसति>हरहइ>हरुअइ>ब्र० हरुआय, हिं० हरुआना।

हर्ष—पुं० (प्रसन्नता, खुशी)-सं० हर्ष >प्रा० हरिस। तुल० म० गु० बं० अस० मल० हर्ष, ते० हर्षमु।

हल—पुं० (खेत जोतने का एक प्रसिद्ध यंत्र)-सं० पा० प्रा० हिं० हल। तुल० सिं० हरु, ओ० हळ, बं० हल, गु० हळ, पं० उर्दू हल।

हलका—वि० (जो भारी न हो)-(१) सं०लघुक>प्रा०हलुअ (पाइअ०)>अप० हलुव (प०च०)>हलुक>हल्ला। (२) मु० हाल्का (hālkā)। तुल० पं० उर्दू म० हलका, सिं० हल्को, गु० हळवुं, बं० हाल्का, ओ० हलुका।

हलके-से—क्रि० वि० (धीरे से, आहिस्ते से)-सं० लघुक > प्रा० हलुअ>हिं० हलके+से।

हलदी, हल्दी — स्त्री० (हरदी)-सं० हरिद्रा>पा० हलिद्दी>प्रा० हलिद्दा, हलद्दी>हिं० हलदी, हल्दी, छ० हरदी। तुल० म० हळद, बं० हल्दी, पं० हलदी, हलधी, गु० हळद।

हलवा—पुं० (घी, शक्कर, मेवा और आटा आदि से बना पदार्थ)-अ० हलवा। तुल० उर्दू हल्वा, सिं० हल्वो, बं० हालुआ, अस० हालोवा, ओ० हालुआ, ते० त० हल्वा, मल० हलुवा। तुलना० बल्गा० ख्हल्वा (मेसिडोनियन हल्वा)।

हलवाई—पुं० (हल्वा या मिठाई बनाने और बेचने वाला)-अ० हल्वाई। तुल० मु० हलवाई (sweet meat vendor)।

हलवाहा—पुं० (वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो, हल चलाने का काम करने वाला मजदूर)-सं० हलवाहक > प्रा० हलवाहग > हलवाहअ>हिं० हलवाहा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हलस — पुं० (हल का दण्ड)–सं० हलीषा। तुल० बं० हलिसा, पं० हल्स्, म० हळीस्, हळसू।

हल्ला — पुं० (शोर)–मु० हाल्ला, हाला।

हल्लीस—पुं० (मंडल बाँधकर होने वाला एक प्रकार का नाच जिसमें एक पुरुष के आदेश पर कई स्त्रियाँ नाचती हैं) – सं० हल्लीश, हल्लीष > प्रा० हल्लीस > हिं० हल्लीश, हल्लीस।

हवन—पुं० (होम, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अग्नि में घी, जौ आदि की आहुति देने की क्रिया)–सं० हवन > प्रा० हवण। तुल० पं० कश्मी० म० गु० बं० हवन, सिं० हवनु, ओ० हबन।

हवस—स्त्री० (उत्कंठ, लालसा, लोभ)–अ० हवस।

हवा—स्त्री० (पवन, मरुत)–अ० हवा। तुल० पं०, कश्मी०, सिं० उर्दू, गु० हवा।

हवाई छतरी — स्त्री० (संकटकालीन स्थिति में वायुमान से उतरने का छाता)–अ० हवाई + सं० छत्र > प्रा० छत्त। तुल० पं० उर्दू हवाई छतरी, सिं० हवाई छटी, गु० हवाई छत्री, ओ० हावाई छत्री।

हवाई जहाज—पुं० (वायुयान, विमान)–अ० हवाई + अ० जहाज़।

हवाला — पुं० (उदाहरण, दृष्टान्त, प्रमाण का उल्लेख)–अ० हवालः। गु० सिं० हवालो।

हवि—पुं० (१- देवताओं के निमित्त अग्नि में दिया जाने वाला घी, जौ या इसी प्रकार की सामग्री, वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाए, २- घृत)–सं० हविस् > प्रा०, हिं० हवि।

हवेली—स्त्री० (पक्का और बड़ा मकान, भवन)–फ़ा० हवेली।

हव्य—पुं० (किसी देवता के लिए दी जाने वाली आहुति, देवताओं के योग्य अन्न, होम), वि० (हवन के योग्य)–सं० हव्य (√हु + यत्) > प्रा० हव्व।

हसम[1] (कि०)—पुं० (पैदल फ़ौज)–अर० हश्म > अव० हसम।

हसरत—स्त्री० (१- कामना, वासना, २- खेद, ३- पश्चात्ताप)–अ० हसरत। सिं० हसिरत।

हसीन — वि० [सुन्दर, खूबसूरत (व्यक्ति)]–अ० हसीनः।

हसीना — स्त्री० (सुन्दर स्त्री)–अ० हसीनः।

हस्तक्षेप — पुं० (किसी के काम में अनावश्यक रूप से बिना अधिकार दखल देना)–सं० हस्तक्षेप। तुल० गु० बं० अस० हस्तक्षेप, ओ० हस्तख्येप, ते० हस्तक्षेपमु।

हस्ताक्षर—पुं० (दस्तखत)–सं० हस्ताक्षर। तुल० पं० हसताखर, ओ० हस्ताख्यर, अस० हस्ताक्षर।

हांडना—क्रि० (इधर-उधर घूमना)–सं० हिण्डते (सं० हिंडि—गत्यनादरयोः) > पा० हिण्डति > प्रा० हिंडइ > हिं० हिंडना, हांडना, ह० हांड।

हांसी—स्त्री० (हास, हँसी)–सं० हासिका > पा० हस्स, हसन।

हांसुल (पद०)—पुं० (एक प्रकार का घोड़ा)–प्रा० हंसुलय > हिं० हांसुल।

हाँ—अव्य०-(स्वीकृति-सूचक शब्द)–सं० आम् > प्रा० आम > हाँ। तुल० पं० उर्दू

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हां, बं० हाँ, अस० हय, ओ० हं, त० आमाम, सिं० हा, ज० या (ja), स्पे० सिं, बल्गा० आँ, दा।

हाँक—स्त्री० (पुकार, बुलाहट, आह्वान)–प्रा० हक्का>हिं० हाँक।

हाँकना[1]—क्रि० (जोर से पुकारना, हुँकार करना)–सं० हुङ्कारयति, प्रा० हक्क, हक्कार (पुकारना)>हाँक+ना।

हाँकना[2]—क्रि० (मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मार कर जानवरों को आगे बढ़ाना)–मु० हाकाओ (hākāo) > हिं० हाँकना, भो० हाँकल।

हाँपना, हाँफना—क्रि० (तीव्र जल्दी-जल्दी श्वास लेना) – सं० हिक्कति (अव्यक्ते शब्दे)>हिं० हाँपना, भो० हाँफल।

हा—अव्य० (अफसोस सूचक)-सं० पा० प्रा० हिं० हा।

हाकिम—पुं० (पदाधिकारी, स्वामी, शासक)–अ० हाकिम। तुल० सिं० हाकिमु।

हाजत — स्त्री० (ऐसी आवश्यकता जिसकी पूर्ति यथासाध्य शीघ्र की जानी हो, यथा पाखाने या पेशाब की हाजत)–अ० हाज़त।

हाजिर—वि० (उपस्थित)–अ० हाज़िर। तुल० मु० हाजिर (hājir), सिं० हाजुरु।

हाजिर-जवाब — वि० (उत्तर देने में निपुण)–अ० हाज़िर जवाब।

हाजिरी — स्त्री० (उपस्थिति) – अ० हाज़िरी।

हाट—स्त्री० (वह स्थान जहाँ कोई व्यवसायी बेचने के लिए चीजें रखकर बैठता है, बाजार)–सं० हट्ट>प्रा० हट्ट अप० हट्ट (महा०)>हिं० हाट। तुल० मु० हाट (hāṭ), म० ओ० हाट, कु० हाट्।

हाड़—पुं० (हड्डी, अस्थि)–सं० हड्डय्>प्रा० हड्ड>हिं० हाड। तुल० अस० हाँड़, म० ओ० हाड, सिं० हडडी, हडु।

हाता — पुं० (अहाता) – मु० हाता (compound)।

हाथ—पुं० (कर, हस्त)–सं० हस्त> पा० प्रा० हत्थ, प्रा० हथ्थ>अप० हत्थ (प० च०)>अव० हथ्थ (की०), अप० हत्थडा>हिं० हाथ। तुल० ओ० अस० म० हात, पं० हत्थ, सिं० हथु, ओ० हात।

हाथापाई—स्त्री० (वह लड़ाई जिसमें एक-दूसरे के हाथ-पैर को पकड़कर खींचते और ढकेलते हैं, ऐसी लड़ाई जिसमें हाथ-पैर चलाये जायँ)–सं० हस्त +पाद। तुल० पं० हात्थोपाई, उर्दू हाथापाई।

हाथा-हाथी—स्त्री० (एक हाथ से दूसरे हाथ, हाथों-हाथ, तुरन्त)–सं० हस्ता-हस्तिका>प्रा० हत्थाहत्थि>हिं० हाथा-हाथी। ह० हाथ्यूं-हाथ, उ० हाता-हति।

हाथी—पुं० (एक बहुत बड़ा स्तनपायी जंतु जो सूँड के रूप में बढ़ी हुई नाक के कारण विलक्षण लगता है)–सं० हस्तिन्>पा०प्रा० हत्थि>अव० हाथि (की०)>हिं० हाथी। तुल० गु० सिं०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाथी, कु० हाती, ओ० हाति, म० हत्ती।

हाथी-दांत—पुं० (हाथी के मुँह के दोनों ओर निकले हुए सफेद दाँत)–सं० हस्तिन्-दन्त > पा० हत्थि-दन्त > प्रा० हत्थी-दंत > हिं० हाती-दांत। तुल० उर्दू हाथी-दांत, म० हस्तीदंत, अस० हातीर दाँत, ओ० हाती-दांत।

हाथीचक—पुं० (एक पौधे का नाम जो दवा बनाने के काम में आता है)–डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार–"यह शब्द अरबी का है, जो इतालवी भाषा में Articioceo तथा अं० में Artichok हो गया। अंग्रेजों के साथ इसका प्रयोग बं० में 'हाथी चोख' सर्व-प्रथम हुआ। भो० हाथी चिघार।" मुझे यह शब्द अरबी-कोश में नहीं मिला।

हानि—स्त्री० (नुकसान)–सं० पा० हानि > प्रा० हाणि > हिं० हानि। तुल० गु० पं० हाण, सिं० हाणि, हानि।

हाय—विस्म० अव्य० (पश्चाताप, शोक एवं दुःख सूचक)–सं० हा, प्रा० हा > हिं० हा + य। फ़ा० हाए।

हार[1]—पुं० (गले में पहनी जाने वाली माला)–सं० पा० प्रा० हिं० हार। तुल० पं० कश्मी० सिं० गु० म० बं० अस० ओ० क० हार, ते० हारमु। फ़ा० हार।

हार[2] — स्त्री० (पराजय)–सं० प्रा० हारि > हिं० हार। तुल० पं० उर्दू कश्मी० सिं० म० गु० बं० अस० ओ० हार।

हारना—क्रि० (पराजित होना)–सं० हारयति > प्रा० हारिअ (सं० √हारय् > प्रा० हार) हिं० हार + ना (प्र०)। तुल० कश्मी० हारुन, सिं० हाराइणु, म० हारणें, गु० हारवुं, बं० हारानो, अस० हारिबा।

हारसिंगार—पुं० (एक प्रकार का पेड़ और उसका फूल)–सं० हार + श्रृंङ्गार > प्रा० हार + सिंगार > हिं० हारसिंगार।

हारीत—पुं० (गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है)–सं० हारीत > प्रा० हारिअ।

हार्दिक—वि० (हृदय में रहने या होने वाला)–सं० हार्दिक। तुल० पं० हारदिक, म० गु० बं० अस० ओ० क० हार्दिक।

हाल—पुं० (१- अवस्था, दशा; २- बोलचाल में, शोचनीय दशा)–अ० हाल।

हालचाल — पुं० (दशा, समाचार, वृत्तांत)–मु० हालचाल। तुल० उर्दू पं० कश्मी० गु० ओ० हालचाल, सिं० हालुचालु। फ़ा० हाल।

हालत—स्त्री० (दशा)–अ० हालत।

हालना — क्रि० (हिलना-डोलना)–सं० ह्वल् (चलने) > प्रा० हल्लइ > हिं० हालना। तुल० पं० हल्लणा, सिं० हलणु, गु० हालवूं, म० हल (णें)।

हालाँकि—अव्य० (यद्यपि)–अ० फ़ा० हालाँकि। तुल० भो० हलाँकि उर्दू हालाकि, कश्मी० हालांकि।

हाला—स्त्री० (मदिरा)–सं० प्रा० हिं० हाला।

हालात—पुं० (हालतें, दशाएँ, हालत का बहु व०)–अ० हालात।

हालाहल — पुं० (विष-विशेष)–सं० हलाहलं > प्रा० हालाहल > अप० हालाहल (प०च०) > हिं० हालाहल,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हलाहल ।

हाली — (हलवाहा, खेतिहर) – सं० हालिक > प्रा० हालिअ > हिं० हाली ।

हाव—पुं० (१- पास बुलाने की क्रिया या भाव, २- संयोग या शृंगार के समय नायिका की प्रेमभाव-जनित चेष्टाएँ)– सं० प्रा० हिं० हाव ।

हावी—वि० (जो अपनी चतुराई, शक्ति या छल से किसी पर काबू रखता हो)– अ० हावी । तुल० सिं० हावी ।

हाशिया—पुं० (किसी फैली हुई वस्तु का किनारा, कोर, यथा—पुस्तक का हाशिया)–अ० हाशिय: ।

हास—पुं० (१- हँसने की क्रिया या भाव, २- हास्य रस का स्थायी भाव, ३- परिहास । सं० प्रा० हिं० हास ।

हासन—वि० (हास्य कराने वाला, हँसाने वाला, मजाकिया)–सं० हासन > प्रा० हासण > हिं० हासन ।

हासिल—वि० (प्राप्त, वुसूल, उपलब्ध)– अ० हासिल । तुल० सिं० हासुलु ।

हास्य—पुं० (हंसने की क्रिया या भाव)– वि० (हास्य संबन्धी) – सं० हास्य (√हस्+ण्यत्) > प्रा० हस्स । तुल० पं० हासी, उर्दू हंसी, म० गु० बं० क० हास्य, ते० हासमु ।

हाहा — अव्य० (दुःख, वेदना और आश्चर्य सूचक एक अव्यय)–सं० प्रा० हिं० हाहा ।

हाहाकार—पुं० (भय, दुःख या पीड़ा सूचित करने वाली जन-समूह की पुकार, कुहराम)–सं० प्रा० हाहा+सं० प्रा० कार (क्रिया, कृति, व्यापार) हिं० > हाहाकार । सिं० हाहाकारु ।

हिंगोट—पुं० (एक झाड़दार कँटीला जंगली पेड़, इंगुदी)–सं० हिङ्गुपत्र > प्रा० हिंगुवत्त > हिं० हिंगोट ।

हिंगोल—पुं० (मृतक-भोजन, किसी के मरने के उपलक्ष्य में दी जाती जमीन, श्राद्ध)–प्रा० हिंगोल ।

हिंजीर—पुं० (हाथी के पैर में बाँधने की रस्सी या जंजीर)–सं० हिञ्जीर > प्रा०, हिं० हिंजीर ।

हिंडना — पुं० हिं०, क्रि० (घूमना, फिरना, जाना) – सं० हिण्डते (हिडि गत्यनादरयोः), (सं० हिण्ड् > प्रा० हिंड) प्रा० हिंडइ > अव० हिण्डेय (की०) > हिं० हिंड + ना ।–पुं० (परिभ्रमण, गमन)–सं० हिण्डन > प्रा० हिंडण > अप० हिण्डि (प०च०) ।

हिंद—पुं० (भारतवर्ष, हिंदोस्तान)– (१) सं० सिन्धु (सिन्धु नदी के आस-पास का क्षेत्र) > सिन्ध > हिन्ध > हिं० हिंद । (२) अ० फ़ा० हिंद ।

हिंदु—पुं० (भारतवासी आर्य जाति के वंशज)–सं० हिन्दु > प्रा० हिंहु, फ़ा० हिंदू > हिं० हिंदु ।

हिंताल—पुं० (वृक्ष-विशेष, एक प्रकार का जंगली खजूर जिसके पेड़ छोटे-छोटे जमीन से दो तीन हाथ ऊँचे होते हैं)– सं० हिन्ताल > प्रा०, हिं० हिंताल ।

हिंदोला, हिंडोला—पुं० (नीचे-ऊपर घूमने वाला एक चक्कर जिसमें लोगों को बैठने के लिए छोटे-छोटे मंच बने रहते हैं)–सं० हिन्दोल + क > प्रा० हिंदोलअ, हिंडोलय, हिंडोलअ > अव०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिंडोल > हिं० हिंदोला, हिंडोला।

हिंस—स्त्री० (घोड़ों के बोलने का शब्द, हींस, हिनहिनाहट)–सं० ह्रेस > प्रा० हीस > अव० हींस, हिंस (की०) > हिं० हिंस।

हिंसक—वि० (हिंसा करने वाला), पुं० (जीवों को मारने वाला पशु, शत्रु, तांत्रिक ब्राह्मण)–सं० हिंसक > प्रा० हिंसग, हिंसअ।

हिंसा—स्त्री० (हत्या, वध, किसी प्रकार का कष्ट या दुःख देने की क्रिया या भाव)–सं० पा० हिंसा > प्रा० हिंस। तुल० पं० गु० हिंसा, ते० हिंस।

हिंसी — स्त्री० (लता-विशेष) – सं० हिन्सी > प्रा० हिंसी (पाइअ०)।

हिक्का[1]—स्त्री० (हिचकी, बहुत हिचकी आने का रोग) – सं०, प्रा०, हिं० हिक्का।

हिक्का[2]—स्त्री० (रजकी, धोबिन)–प्रा० हिक्का (देश्य शब्द)।

हिक्की—वि० (वह जिसके हिचकी का रोग हो)–सं० हिक्किन्।

हिचकी—स्त्री० (अस्पष्ट ध्वनि)–सं० पा० प्रा० हिक्का।

तुल० पं० उर्दू हिचकी, कश्मी० ह्युक, सिं० हिडिकी, गु० हेडकी, अस० हिकटि, ओ० हाकुटि।

हिडिंबा—स्त्री० (एक राक्षसी, हिडिम्ब राक्षस की बहिन)–सं० हिडिम्बा > प्रा०, हिं० हिडिंबा।

हित—(लाभ, कल्याण)–सं० हित > प्रा० हिअ।

हितानी[२५]—क्रि०— नाम-धातु के रूप में प्रयुक्त (हित की भावना से युक्त हुई)–सं० हित > ब्र० हितानी।

हितैषी—वि० (दूसरों का हित चाहने वाला)–सं० हितैषिन् > पा० हितेषी > प्रा० हिएषी। तुल० गु० बं० अस० हितैषी।

हिनहिनाना—क्रि० (घोड़े का हिन-हिन शब्द करना)–सं० हिनहिनायते। तुल० पं० हिडहिड़ाउणा, उर्दू हिनहिनाना, सिं० हिणिकणु, गु० हणहणवुं।

हिफाजत — स्त्री० (रक्षा, देख-रेख, सतर्कता)–अ० हिफ़ाज़त।

हिम—पुं० (बर्फ)–सं० पा० प्रा० हिं० हिम।

हिमायत—स्त्री० (पक्षपात, तरफदारी)–अ० हिमायत।

हिमाकत—स्त्री० (नासमझी, बेवकूफी, मूर्खता)–अ० हमाक़त। सिं० हिमाकत।

हिम्मत—स्त्री० (साहस)–अ० हिम्मत। सिं० हिमथ।

हिया—पुं० (हृदय, मन)–सं० पा० हृदयम् > प्रा० अप० हिअय, अप० हिआ > हिं० हिया।

हिरगै[1] (पद०)—क्रि० (पास होना, सटना, चिमटना)–सं० हिरुक् > प्रा० हिलुग, हिलुगना, हिरगना।

हिरण्य—पुं० (१- सोना, २- रजत, ३- द्रव्य, धन)–सं० हिरण्य > प्रा० हिरण्ण, हिरन्न।

हिरनौटा—पुं० (हिरन का बच्चा)–सं० हरिण + पुत्र + क > प्रा० हरिण + पुत्त + अ > हरिन + उट्ट + अ > हरिनौट + अ > हिं० हिरनौटा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरासत—स्त्री० (निगरानी, हवालात, ऐसी निगरानी जिसमें व्यक्ति कहीं आ-जा न सके)–अ० हिरासत। तुल० पं० कश्मी० हिरासत।

हिलकनि (रोवै)—क्र० (हिचकी लेकर)–सं० हिक्कति (√हिक्क) > हिलकति > हिलकै > ब्र० हिलकनि।

हिलना—क्रि० (स्थिर न रहना, हरकत करना)–सं० हिल्लोलयति (√हिल्लोन दोलने) > प्रा० हल्लंति (पाइअ०), हल्ल > अप० हल्लइ (महा०) > हिं० हिल + ना।–पुं०–सं० हिल्लोलनम्। तुल० पं० हलणा, म० हलणें, गु० हलवुं।

हिलसा—स्त्री० (एक प्रकार की मछली जो चिपटी और बहुत काँटेदार होती है)–सं० इल्लीश।

हिलाना — क्रि० (डुलाना, चलायमान करना, हरकत देना)–स० हिल्लोलयति (प्रेरणार्थक णिच् प्रत्यय)। तुल० मु० हिलाओ hilāo। गु० हलाववुं, बं० हेलानो, पं० हिलाउणा, हिलाणा, कश्मी० हिलावुन।

हिलोर, हिलोरा—पुं० (१- तरंग, लहर, २- आनन्द की तरंग, ३- मौज)–सं० हिल्लोल, प्रा० हिल्लूरी (स्त्री०) > अप० हिल्लूरी (दे० ना० मा०) > हिं० हिलोर, हिलोरा।

हिसका—पुं० (१- ईर्ष्या, डाह, २- स्पर्धा, ३- किसी की बराबरी करने की हवस)–सं० ईर्ष्या > प्रा० इस्सा > हिं० हिसका।

हिसाब—संबं० अव्य० (मूलतः संज्ञा)–(लिए, मुताबिक, खातिर)–अ० हिसाब। सिं० हिसाबु।

हिसाब-किताब—पुं० (१- आय-व्यय आदि का विवरण, लेखा-जोखा, २- व्यापारिक लेन-देन)–अ० हिसाब + अ० किताब। तुल० पं० हिसाब कताब, उर्दू हिसाब-किताब, सिं० हिसाबु किताबु (लेखा-जोखा)।

हिस्सा—पुं० (१- भाग, खंड, विभाग, साझेदार को मिलने वाला आनुपातिक लाभ या अंश, शेयर)–अ० हिस्सः। तुल० पं०. हिस्सा कश्मी० हिसु, सिं० हिसो, ओ० हिसा (भाग, लाभांश)।

हिस्सेदार—वि० (जो हिस्सा पाने का अधिकारी हो)–अ० हिस्सः + फ़ा० दार। सिं० हिसेदारु।

हींसना—क्रि० (घोड़े का हिनहिनाना)–सं० हेषते, सं० हृषति > पा० हेसित, हेसति > प्रा० हींसमण, हिंसिय, हेसिअ > हीसइ > हिं० हींसना।

हींग—स्त्री० (एक छोटा पौधा जिसका जमाया हुआ दूध या गोंद तीक्ष्ण गंध वाला होता है)–सं० हिङ्गु > पा० प्रा० हिंगु > हिं० हींग। तुल० ओ० हिंगु, गु० हिंग (स्त्री०), प० हिङ्ग (स्त्री०), सिं० हिङु।

हीक—स्त्री० (हिचकी, हलकी अरुचिकर गंध)–सं० हिक्का > हिं० हीक।

हीजड़ा—पुं० (नपुंसक, नामर्द)–फ़ा० हीज़ > हिं० हीज़ + डा (प्र०)।

हीन—वि० (रहित, निकृष्ट, तुच्छ, अल्प, दीन)–सं० हीन > पा० हीन (नीच) > प्रा० हीण > अप० हिण्ण। तुल० पं० हीणा, सिं० हीणो हीणु, गु०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हीरूँ ।

हीरा—पुं० (एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर, हीरक, हीर)–सं० हीर+क> हीरअ > हिं० हीरा । तुल० सिं० हीरो ।

हीला— पुं० (किसी बात के लिए गढ़ा हुआ कारण, बहाना, मिस)–अ० हील: ।

हीस—पु० हिं० (ईर्ष्या, डाह)–सं० ईर्ष्या>प्रा० इस्सा>हीस ।

हीही—स्त्री० (विदूषक का हर्षसूचक अव्यय, ही ही शब्द करके हंसने की ध्वनि-अनुकृति)–प्रा० हीही>हिं० हीही >हींही ।

हुं—विस्म० अव्य० (अस्वीकृति सूचक)–सं० हुम्>प्रा० हुं>हिं० हुं ।

हुंकार—पुं० (घोर शब्द, २- ललकार, ३- चीत्कार, ४- धनुष की प्रत्यंचा के टंकार की ध्वनि)–सं० हुङ्कार>प्रा० हिं० सिं० हुंकार ।

हुंडी— स्त्री० (विधियत्र, धनार्पणादेश पत्र)–सं० हुण्डिका, हुण्डी>हिं० हुंडी। तुल० सिं० पं० उर्दू हुंडी, गु० हूंडी, बं० हुण्डि, ओ० हुंडि ।

हुँकारना—क्रि० (१- गर्व से हुं शब्द का उच्चारण करना, ललकारना, डाँटना, २- घोर शब्द करना, गर्जन करना)–सं० हुङ्कारयति > प्रा० हुंकारइ > अप० हुंकारडएँ>हिं० हुँकारना, भो० हुँकुड़ल।

हुआ—क्रि० (होना क्रि० का भूतकालिक रूप)–१सं० भूत>प्रा० हूअ > अप० हुव>अप० हूअउ, हूआ>अव० हुअ, हुअउ (की०)>हुअ>हिं० हुआ (बो० हुयो, भयो)। २- सं० भवति > प्रा० भविओ > हिं० हुआ (ब्र० हुयो, भयो)[११]। ३-सं० भूताः>अप०हूआ> रा० हूग >हिं० हुआ ।

हुई—क्रि० (किसी घटना या वस्तु का भूत काल में होना)–सं० भूता>भूआ> भूइ>अप० होइ>पु० राज० हुई ।

हुकूमत—स्त्री० (शासन, सत्ता, राज्य, सरकार)–अ० हुकूमत । सिं० हुकूमत ।

हुक्का—पुं० (तंबाकू का धुआँ खींचने के लिए विशेष रूप से बना हुआ एक यंत्र)–अ० हुक़्क़ह् ।

हुक्म — पुं० (आज्ञा, राजादेश)–अ० हुक्म>अव० हुकुम (की०) ।–नामा– पुं० (आदेशपत्र)– अ० हुक्म+फ़ा० नामः ।

हुज्जत—स्त्री० (तर्क, दलील, कलह, झगड़ा, वाद-विवाद)–अ० हुज्जत। सिं० हुजत ।

हुज़ूर—पुं० (सम्बोधन के लिए एक आदरसूचक शब्द)–अ० हुज़ूर । तुल० सिं० हुज़ुरु ।

हुडुक्क—पुं० (एक प्रकार का छोटा ढोल, हुडुक्क नाम का बाजा)–सं० हुडुक्>प्रा० हुडुक्क > अप० हुडुक्का, हुडुक्क (प० च०)>हिं० हुडुक्क ।

हुतासन—पुं० (अग्नि)–सं० हुताशन> पा० हुतासन>प्रा० अव० हुआसन ।

हुनना—क्रि० (आहुति देना, यज्ञ करना, अग्नि में डालना)–सं० जुहोति (√हु दानादानयोः)।

हुनर—पुं० (शिल्प, कला, गुण, हाथ की सफ़ाई, विद्या)–फ़ा० हुनुर । तुल०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिं० हुनिरु ।

हुमनि[1] (की०)— क्रि० (होम करना)–सं० हु > प्रा०हुण > अव० हुमनि ।

हुलसत—क्रि० (प्रसन्न होता है)–सं० उल्लसति > हुलसत ।

हुलास—पुं० (आनंद की उमंग)–सं० उल्लास (ह का आगम) > हिं० हुलास ।

हुश्कारना—क्रि० (हुश्, हुश् शब्द करके कुत्ते को किसी ओर काटने के लिए बढ़ाना या पशु पक्षियों को किसी स्थान से हटाना)–सं० हुश्करोति ।

हूँ[1]—क्रि० (वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष)–सं० अस्मि > प्रा० अम्हि > अहौं > हउँ > हूँ । डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—सं० अस्मि > प्रा० अम्हि > हिं० हूँ (बो० हौं) ।

हूँ[2]—अव्य० (स्वीकृति-उत्तर)–सं० खलु > प्रा० हु > अप० हउँ > हिं० हूँ ।

हूँ[3]—पु० हिं०, सर्व० (मैं, उत्तम पुरुष एक व० सर्वनाम)–सं० अहम् ।

हूँकना—क्रि० (गाय या बछड़े आदि के वियोग में धीरे-धीरे रम्भाना, हुड़कना, सिसकना) – सं० हुङ्करोति ।–पुं०–सं० हुङ्कार > प्रा० हुंकार > हिं० हूँक, हूँकना, अवधी हूँकब ।

हूक—स्त्री० (हू हू जैसी एक पीड़ा सूचक ध्वनि, कसक, टीस, पीड़ा)–सं० हुङ्कार > प्रा० हुंकार > हिं० हूँक, हूक ।

हूण—पुं० (एक प्राचीन मंगोल जाति)–सं० प्रा० हूण ।

हूबहू — क्रि० वि० (एकदम सदृश, समान)–फ़ा० हूबहू ।

हूश[1]—वि० (असभ्य, जंगली, अशिष्ट)–फ़ा० हूश । अवधी हूस ।

हूश[2] — पुं० (जंगली, जानवर)–अ० वुहूश ।

हृदयंगम—वि० (१- मनोहर, चित्ताकर्षक, २- मन में बैठा हुआ, ३- समझ में आया हुआ)–सं० हृदयंगम > प्रा० हिअयंगम ।

हृदय—पुं० (दिल)–सं० हृदय > प्रा० हिअय, हिअ > अव० हीअ (की०) । तुल० पं० हिरदा, सिं० हिर्दो, ते० हृदयमु, मल० हृदयं, क० हृदय ।

हेठ — प्रा० प्र०, वि० (१- नीचा, घटकर)–सं० अधःस्थ > प्रा० अहट्ठ > अप० हेट्ठ > हिं० अवधी हेठ ।

हेठा—वि० (१- नीचा, २- तुच्छ, ३- प्रतिष्ठा या बड़ाई में घटकर)–सं० अधस्तात् > पा० हेट्ठतो > प्रा० हेट्ठा > अ० मा० हेट्ठम्, हेट्ठिम > जैन महाराष्ट्री हेट्ठेण, अ० मा० और जैन महाराष्ट्री हेट्ठओ > हेट्ठट्ठिअ (हेम चन्द्र)[२३] > हिं० हेट्ठा ।

हेत — संबं० अव्य० (लिये, वास्ते, खातिर)–सं० हेतु > अवधी हेंत, हिं० हेत ।

हेतु—संबं० अव्य०, मूलतः संज्ञा (लिए, वास्ते, खातिर)–सं० पा० हेतु > प्रा० हेउ > रा० हेति, हेतइ । तुल० गु० बं० अस० ओ० हेतु, ते० हेतुवु, क० हेतु ।

हेमंत—पुं० (अगहन और पूस मास की ऋतु, शीत ऋतु)–सं० पा० हेमन्त > प्रा०, हिं० हेमंत ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हेम—पुं० (सोना)–सं० पा० प्रा० हिं० हेम।

हेरना — क्रि० (देखना, निरीक्षण करना)–प्रा० हेर > हिं० हेर + ना अवधी हेरब।

हेरा-फेरी—स्त्री० (चालबाजी, हेरफेर, अदल-बदल, गडबड़, दांवपेंच)–मु० हेरा (late, to delay) + देशज फेर। तुल० पं० उर्दू कश्मी० सिं० गु० हेरा-फेरी, ओ० हेरा-फेर।

हेरी—पुं० हिं०, प्रा० प्र० (प्रकार, टेर, सखी के लिए सम्बोधन हे + री)–सं० हला > अप० हेल्लि > हिं० हेरी।

हेलन—पुं० (१- अवज्ञा, तिरस्कार, २- निन्दा, ३- अपराध, ४- तुच्छ समझना)–सं० हेलन > प्रा० हीलण।

हेला—स्त्री० (स्त्री की शृङ्गार-संबन्धी चेष्टा-विशेष)–सं० प्रा० हिं० हेला।

हेषा—स्त्री० (घोड़े की हिनहिनाहट)–सं० हेषा > प्रा० हिंसा।

हैं—क्रि० (सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमान रूप 'है' का बहुवचन)–सं० सन्ति > प्रा० अहइं > अहैं > हैं। तुल० बलगा० सम (सं० अस्मि)।

है — क्रि० (क्रि० होना का वर्तमान-कालिक एकवचन रूप)–सं० अस्ति > अत्थि > अप० अच्छइ (हे०) > अहइ > अहै > हहि (राम०) > हइ > है। तुल० बलगा० ऐ।

हैजा—पुं० (विसूचिका, रोग-विशेष)–अ० हैजः। तुल० पं० उर्दू हैजा।

हैरत — स्त्री० (आश्चर्य, अचंभा, अचरज)–अ० हैरत।

हों—क्रि० (सत्तार्थक क्रिया होना' का बहु व० संभाव्य काल का रूप)–सं० भवन्तु > होंतु > होंउ > हिं० हों।

होंगे — क्रि० (भविष्य निश्चयार्थ)–सं० भविष्यन्ति > प्रा० होहिन्ति > अप० होइं > अव० होसउँ (की०) > हिं० हों (+गे)।

होठ—पुं० (ओष्ठ)–सं० ओष्ठ > प्रा० होट्ठ > हिं० होंठ > होठ, ओठ।

हो—क्रि० (मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप)–सं० भू > प्रा० हव, हो > हिं० हो।

होइ—क्रि० (अस्तित्व में आना)–सं० भवति > प्रा० होइ > अप० होइ > हिं० होइ।

होउ—क्रि० (सत्तार्थक क्रि० होना)–सं० भवतु > प्रा० हवउ > अप०, अवधी होउ।

होऊँ—क्रि० (वर्तमानकालिक क्रिया है का उत्तम पुरुष का रूप)–सं० भवामि > प्रा० होमि > अप० होऊँ > हिं० होऊँ।

होए—क्रि० (होना)–सं० भवेत् > होएद > होएअ > होवै, होवे, होए।

होओ—क्रि० (होना)–सं० भवथ > प्रा० होउव > अप० होव > हिं० हो, होओ।

होगा(१०) क्रि० (भविष्य निश्चयार्थ)–सं० भविष्यामि > प्रा० होहामि > अप० होहऊ > हिं० होऊँ, हूँ (+गा)।

होज(१) (की०)—(होना)–सं० भवितृ > अप० होउ > होअ > अव० होज।

होठ—पुं० (होंठ)–सं० ओष्ठ > प्रा० होट्ठ > हिं० होठ तुल० पं० होठ, उर्दू होंठ, म० गु० ओठ, बं० ओंट, अस० ओंठ, ओ०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओठ (ओठाँ)।

होड़ा-होड़ी—स्त्री० (एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने का प्रयत्न, प्रतिस्पर्धा, होड़, शर्त)–प्रा० हुड्डा हुड्डं>हिं० होड़ा-होड़ी। ह० होड्डम-होड।

होतब—पु० हिं०, प्रा० प्र० (होने वाला, होनहार)–सं० भवितव्य।

होता—क्रि० (सत्तात्मक क्रि० 'होना' का भूतकाल रूप)–१- डॉ० धीरेन्द्र वर्मा–सं० भवन्>प्रा० होन्तो>हिं० होता। २- भवति>भोति > भोदि>होदि> हो+त(प्र०)। पं० होंदा, जांदा।[१८]

होतृक—पुं० [यज्ञ में होता की सहायता करने वाला व्यक्ति, होता (यज्ञ में आहुति देने वाला) का सहायक]–सं० होत्रिक> प्रा० होत्तिय।

होना—क्रि० (अस्तित्व में आना, कार्य या घटना का वास्तविक रूप सामने आना)–सं० भवति, भवन्त>पा०होति> अप० हुन्तउ, होन्त>अव० हुन्ति, हुन्ते> ब्र० हुंति, हुते, होत। अवधी होवब, भो० होइल>हिं० होन। तुल० पं० होणा, गु० होवुं, बं० होवा, ओ० हेबा।

होम—पुं० (आहुति देने का कर्म, देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृत, जौ आदि डालना)–सं० पा० प्रा० होम> अव० हुमन्नि (की०), अवधी हूम।

होमत—क्रि० (हवन करता है) नाम-धातु के रूप में प्रयुक्त।–सं० होमय्> प्रा० होम<ब्र० होमत।

होमी—पुं०(आहुति देने वाला व्यक्ति)–सं० होमिन्>हिं० होमी।

होर—समु० अव्य० (और)–सं० अपर >प्रा० अवर > हिं० अउर > और >होर।

होरा—स्त्री० (एक अहोरात्र का २४वाँ भाग, ढाई घड़ी का समय, घंटा, ज्योतिषशास्त्र में एक लग्न) – सं० अहोरात्र>पा० होरा (घंटा) > हिं० होरा। तुल० स्पे० ओरा hora (समय)।

होला—पुं० (मटर, चने आदि की आग पर भूनी हुई अधपकी फलियाँ)–सं० होलक>होलअ > हिं० होला, अवधी होरा।

होली—स्त्री० (होली का पर्व, लकड़ी, घास, फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है)–सं० होलिका> प्रा० होलिया > हिं० होली, अवधी होरी।

होवें—क्रि० (सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष संभाव्य काल)–सं० भवन्ति> प्रा० होन्ति>अप० होइँ, होव > हिं० होइँ, होवें।

होवे—क्रि० (होना)–सं० भवति>होइ >हो, होवे।

होश—पुं० (चेतना, स्मृति)–पह० होश (understanding)। अवधी होस। तुल०पं० उर्दू कश्मी० होश (संज्ञा), सिं० होशु(चेतना), गु० ओ० होश (चेतना)।

होशियार—वि० (सतर्क, चतुर, कुशल)–पह० हुशियार (hushyār)। अवधी हुसियार। तुल० पं० हुशियार, ओ० हुशियार (सतर्क), बं० हुँशियार (सजग), मु० हुसिआर।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो हो—विस्म०अव्य०(आश्चर्य-सूचक)–सं० अहो। तुल० बल० हे हे (विस्म० हर्ष के लिए)।

हौं—सर्व० (मैं)–१- सं० अहं > प्रा० अहमं या अहम्रं>अप० हमुं, हउँ>ब्रज० हौं। २- सैमुएल हेनरी केलाग के अनुसार–सं० अहम्>प्रा० अहमुम > अप० हमुं>ब्र० हौं, हों। ३- सं० अहं >पु० हिं०, ब्र० हौं।(११)

हौदा—पुं० (हाथी की पीठ पर रक्खा जाने वाला लकड़ी का चौखटा)–अ० हौदज>अव० हौदे>हिं० होदा। तुल० उर्दू हौदा, बं० अस० हाओदा, पं० होदा, सिं० हौदो, ओ० हाउदा।

हौप—पुं० (डर)–अ० ख़ौफ़।

हौल — पुं० (भय, ख़ौफ) – अ० हौल।

हौले-हौले — क्रि० वि० (धीरे-धीरे)–सं० लघुक-लघुक>प्रा० हलुअ-हलुअ> हुलय-हुलय > होलइ - होलइ > हिं० होले-होले।

ह्रास—पुं० (१, क्षय, अपव्यय, २- पतन, अपकर्ष)–सं० ह्रास (√ह्रस्+घञ्)। तुल० म० ह्रास (क्षय), गु० बं० अस० ओ० ह्रास।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सन्दर्भ ग्रन्थ

१- अमरकोष, भानुजी दीक्षित की व्याख्या, संस्क० १९४४, प्रकाशक सत्य भामाबाई पाण्डुरङ्ग, बम्बई।

२- डॉ० अम्बा प्रसाद सुमन, (अ) रामचरितमानस वाग्वैभव, संस्क० १९७३ ई०, प्रकाशक : विज्ञान भारती, नई दिल्ली। (आ) कृषक जीवन संबन्धी ब्रजभाषा-शब्दावली, संस्क० १९६१ ई०, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।

३- आशा किशोर, जायसी कोश, संस्क० १९७६, दि मैकमिलन कं० आफ इंडिया लि०, नई दिल्ली।

४- आ० बदरी प्रसाद साकरिया, प्रो० भूपतिराम साकरिया, राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश, प्रथम संस्क०, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

५- उदयनारायण तिवारी, (अ) भोजपुरी भाषा और साहित्य, संस्क० सं० २०११, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना। (आ) हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, प्रथम संस्क० सं० २०१२ वि०, भारती-भण्डार, प्रयाग।

६- पं० किशोरी दास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुशासन, संस्क० सं० २०२३ वि०, काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

७- कृष्ण लाल वर्मा, हिंदी-मराठी कोश संस्क० १९५१, ग्रन्थभंडार, माहीम, बम्बई।

८- कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी, मराठी व्युत्पत्ति कोश, संस्क० १९४६, केश्व भिकाजी ढवले, श्रीसमर्थ-सदन, गिरगांव, बम्बई।

९- चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा एवं तारिणीश झा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, संस्क० १९५७, प्रकाशक, राम नारायण लाल, इलाहाबाद।

१०- चन्द्र प्रकाश त्यागी, हिन्दी देशज शब्द-कोश, संस्क० १९७७, लिपि प्रकाशन, दिल्ली।

११- जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, परिभाषा-प्रबन्ध, चतुर्थ सस्क०, प्रकाशन—चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

१२-धीरेंद्र वर्मा, हिंदी भाषा का इतिहास संस्क० १९५३ ई०, हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

१३- डॉ० नानक चन्द शर्मा, हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास, संस्क० १९६८ ई०, विश्वेश्वरानन्द वैदिक-शोध संस्थान, होशियारपुर।

१४- नामवर सिंह, हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग, संस्क० १९५४ ई०, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद।

१५- नेमीचन्द जैन, भीली-हिन्दी-कोश, संस्क० १९६२, हीरा-भैया-प्रकाशन, इन्दौर।

१६- डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, अभिनव प्राकृत-व्याकरण, १९६३ ई०, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी।

१७- डॉ० पूर्णसिंह डबास, हिंदी में देशज शब्द, प्रथम संस्क०, नालंदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।

१८- प्रियव्रत शर्मा, द्रव्य गुण-विज्ञान,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संस्क० सं० २०३६, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

१९- डॉ० प्रेम नारायण टंडन, व्रजभाषा सूर-कोश, संस्क० १९६२, प्रकाशक लखनऊ विश्वविद्यालय।

२०- डॉ० बाबूराम सक्सेना, अवधी का विकास, प्रथम संस्क०, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।

२१- भदन्त आनन्द कौसल्यायन, पालि-हिन्दी कोश, संस्क० १९७५, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

२२- भारतीय भाषा कोश, के० हिं० निदेशालय, नई दिल्ली।

२३- भाव प्रकाश, भाव प्रकाश निघण्टुः, संस्क० १९६०, प्रकाशक — पण्डित पुस्तकालय, काशी।

२४- भूषण वामन केश्वदतार (सम्पादक), चरकसंहिता, (अग्निवेश) प्रकाशन, पाँडुरंग जावजी, बम्बई संस्क०,१९२२।

२५- डॉ० भोलानाथ तिवारी,(अ) शब्दों का अध्ययन, प्रथम संस्क०, प्रकाशक : शब्दकार, २२०३, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली। (आ) हिन्दी भाषा, संस्क० १९६६, किताब महल, इलाहाबाद। (इ) तुलसी-शब्द-सागर, प्रथम संस्क०, हिंदुस्तानी एकेडमी, उ० प्र० इलाहाबाद।

२६- डॉ० मंगल बिहारी शरण सिन्हा, सिद्धों की सन्धा भाषा, प्रथम संस्क० १९७३ ई०, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।

२७- एम० श्रीपथी शास्त्री, संस्कृत धातु-सागर - तरणिः, संस्क० १९६८ ई०, दि लिटिल फलावर कं०, मद्रास।

२८- मगन भाई प्रभुदास देसाई, हिंदी-गुजराती कोश, संस्क० १९४६ ई०, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-१४।

२९- मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ 'मद्दाह, उर्दू-हिंदी शब्दकोश, प्रथम संस्क०, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उ० प्र०।

३०- मेरुतुङ्गाचार्य विरचित प्रबन्ध चिंतामणि, संस्क०वि० १९८९, सिंधी जैन ज्ञानपीठ, विश्वभारती, शान्ति निकेतन, सं० १९८७।

३१- योगरत्नाकार (वैद्यक ग्रन्थ), संस्क० १९१९, प्रकाशक : पाण्डुरङ्ग जावजी, बम्बई।

३२- डॉ०रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', भाषा-शब्द-कोश, संस्क० १९५१ ई०, प्रकाशक : रामनारायण लाल, इलाहाबाद।

३३- राजशेखर सूरि, प्रबन्ध कोश, विक्रमाब्द १९९१, अधिष्ठाता—सिंधी जैन ज्ञानपीठ, शान्ति निकेतन।

३४- रामचन्द्र वर्म्मा, (अ) कोश-कला, संस्क० सं०२००९, साहित्य-रत्न-माला कार्यालय, बनारस।

(आ) प्रामाणिक हिन्दी कोश, संस्क० सं० २००८ वि०, साहित्य रत्न माला कार्यालय, वाराणसी।

(इ) मानक हिंदी कोश, प्रथम संस्क०, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

३५- रामज्ञा द्विवेदी 'समीर', अवधी-कोष, संस्क० १९५५ ई०, हिंदुस्तानी एकेडेमी, उ० प्र०, इलाहाबाद।

३६- रामसरूप शास्त्री, आदर्श हिन्दी-संस्कृत-कोशः, संस्क० १९५७ ई०,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चौखम्बा विद्या भवन, चौक, वाराणसी ।
३७- एल० पी० तेस्सितोरी, पुरानी राजस्थानी, अनुवादक : नामवर सिंह, संस्क० सं० २०१२ वि०, ना०प्र० सभा, काशी ।
३८- वाग्भट, अष्टाङ्गहृदयम्, टीकाकार कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त,संस्क० १९७५, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी ।
३९- वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत-हिन्दी कोश, संस्क० १९६६ ई०, मोतीलाल बनारसी दास ।
४०-डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, पं० दलसुख भाई मालवणिया, पाइअ-सद्द-महण्णवो, संस्क० १९६३, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी ।
४१- डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, (अ) जायसी कृतपदमावत(संजी०व्या०),साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी । (आ)पृथिवी-पुत्र, संस्क०, १९४९ । (इ) कीर्तिलता (संजी० व्या०), संस्क० १९६२, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी ।
४२- विश्वनाथ दिनकर नरवणे, भारतीय व्यवहार कोश, संस्क० १९६१ ई०, त्रिवेणी संगम भाषा विभाग, बम्बई ।
४३- विरेश्वर, रसपद्धतिः, संस्क० सन् १९२५, प्रकाशक : वैद्य जादव जी त्रिकम जी, होली चकला फोर्ट, बम्बई ।
४४- वीरेन्द्र श्रीवास्तव, अपभ्रंश भाषा का अध्ययन, संस्क० १९७६, एस० चाँद एण्ड कं० लि०, रामनगर, नई दिल्ली ।
४५- डॉ० हरदेव बाहरी, (अ) सूर शब्द-सागर, प्रथम संस्क०, १९८१ ई०, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद ।
(आ) अवधी शब्द संपदा, संस्क० १९८२, स्मृति प्रकाशन, १२४, शहरारा बाग, इलाहाबाद ।
(इ) भोजपुरी शब्द-सम्पदा, संस्क० १९८१, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद ।
४६- सैमुएल हेनरी केलाग (अनुवादक : डॉ० श्रीराम शर्मा), हिन्दी व्याकरण, संस्क० सन् १९८०, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।
४७- हरिवल्लभ चूनीलाल भायाणी (संपादन कर्त्ता) स्वयम्भूदेव, पउमचरिउ, सं० २०१७, सिंधी जैनशास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, ७ ।
४८-हिन्दी नेपाली कोश, संस्क० १९७९, नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा ।
४९- हिन्दी शब्द-सागर, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।
५०- हिंदी-सिंधी व्यावहारिक लघु कोश, के० हिं० निदेशालय, नई दिल्ली ।
५१- हेमचन्द्र, अपभ्रंश व्याकरण संस्क० १९६५, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी ।
५२-डॉ० हेमचन्द्र जोशी(अनुवादक),आर० पिशल द्वारा लिखित प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, प्रकाशक : विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना, प्रथम संस्क० ।
53-Arthur Angeli, A New English-Spanish and Spanish-English Dictionary, David Mackay Company, New York.
54- Burrow and Emeneau, Dravidian Etymological Dictionary, Ed. 1961, Oxford at the clarendon Press.
55-David Shumaker, Seven Languages Dictionary, Avenel Books,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

New York.

56- Davids and William, Pali English Dictionery, Ed. 195_, The Pali Text Society, London.

57- Destur Hoshangji Jamaspji Asa, An old Pahlavi—Pazand Glossary, Ed. 1870, Published by the order of the Govt. of Bombay.

58- E.H. Palmer, A Concise Dictionary of the Persian Language, Ed. 1949, London, Routledge and Kegan Paul Ltd.

59- Franklin Edgerton, Buddhist Hybrid Sanskrit Grammar and Dictionary, Ed. 1953, New Haven; Yale Univ. Press.

60-Ganesh Vasudev Tagare, Historical Grammar of Apabhramsa, Ed. 1948, Deccan College, Poona.

J. Miton Cowan, Hanswehr, A Dictionery of Modern Written Arabic, Ed, 1961, Otto Harrasowitz Wiesboden.

61- Manindra Bhusan Bhaduri, A Mundari-English Dictionary, Ed. 1931, Calcutta Univ. Press.

62-Platts, Urdu Classical Hindi and Eng. Dictionary, Ed. 1968, Oxford Univ. Press.

63- R. L. Turner, A Cooparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages, Ed. 1966, London, Oxford Univ. Press, New York, Toronto.

64-A Comparative and Etymological Dictionary of the Nepali Language, Ed. 1931, Routledge and Kegan Paul Ltd., London.

65- Sir Monier-Williams, A Sanskrit - English Dictionary, Ed. 1899, Univ. Press, Oxford.

66- Sorobshaw Byramji Dictor, The Students Persian and English Dictionery, Ed. 1898, Printed at Education Society Press, Calcucutta.

67- Surya Kanta, A Practical Vedic Dictionary, Ed. 1981, Delhi, Oxford Univ Press.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संपादक : डॉ० नरेश कुमार

जन्म-स्थान :—नकुड़, जि० सहारनपुर, उ० प्र० ।

शिक्षा—एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत, अर्थशास्त्र), एम०एड०, एम०काम०, पी-एच०डी०, साहित्यरत्न, आयुर्वेदरत्न, अनुवाद प्रमाण-पत्र कोर्स (दिल्ली विश्वविद्यालय), विदेशी भाषा विद्यालय, आर०के० पुरम, नई दिल्ली से स्पेनी भाषा की शिक्षा प्राप्त ।

प्रकाशित साहित्य—डॉ०वासुदेवशरण अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व । श्रम-सम्बन्ध । भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र । भाषा विज्ञान । वीणा, संस्कृति, परिषद्-पत्रिका, सम्मेलन-पत्रिका, विश्व-ज्योति, आर्य-पथ, मेरठ विश्व वि० संस्कृत शोध-पत्रिका, नागरी संगम, मेरठ विश्व वि० हिन्दी परिषद् पत्रिका, रश्मिरथी, भारत-सावित्री, द्वीपान्तर, जीवन-साहित्य, ज्ञान-विविधा, मिलन, पालिका-समाचार आदि पत्रिकाओं में विविध विषयों पर गवेषणापूर्ण लेख एवं कविताएँ प्रकाशित ।

अप्रकाशित—शिक्षा शास्त्र—एक अध्ययन ।

अनूदित साहित्य—श्री राबर्ट सी० मकीन एवं एच०एच० हिल्स द्वारा लिखित 'Supervisor' का हिन्दी में अनुवाद—'पर्यवेक्षक'। 'दूत' पत्रिका में अंग्रेजी के लेखों का हिन्दी-अनुवाद ।

शिक्षा के क्षेत्र में शोध का विषय—Attitude of undergraduates towards Innovations introduced by Meerut University.

व्यवसाय—लगभग २४½ वर्ष अध्यापन-कार्य में व्यतीत । सम्प्रति केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, आर० के० पुरम, नई दिल्ली के अनुसंधान एवं सन्दर्भ ब्यूरो में कार्यरत ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

विद्वानों के अभिमत

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डॉ० नरेश कुमार कृत 'हिन्दी व्युत्पत्ति-कोश' का मैंने इसकी मुद्रणावधि में अवलोकन किया। मेरी निश्चित मान्यता है कि कोश-निर्माण का कार्य अपनी सलीब खुद ढोकर चलना है। इसीलिए मैं डॉ० नरेश कुमार को इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि उन्होंने इतना कष्टसाध्य कार्य अंततः पूरा कर लिया।

यों तो अब तक हिन्दी के अनेक कोश निकले हैं, जिनमें व्युत्पति के प्रसंग को यत्रतत्र छुआ भर गया है। पर इस कोश में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है। प्रायः कोशों में व्युत्पत्ति देते समय संस्कृत का मूल शब्द ही दिया जाता है, पर प्रसन्नता है कि इस कोश में मात्र उसी लीक पर न चलकर शब्दों का प्रायः पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट भाषाओं में विकास-क्रम भी दिखाया गया है। इस कोश की यह भी उल्लेखनीय विशेषता है कि किसी शब्द को हठात् संस्कृत से ही विकसित नहीं दिखाया गया है। यदि शब्द का सम्बन्ध द्रविड़भाषाओं अथवा मुण्डारी या विदेशी भाषाओं से रहा है तो उसका विकास उन भाषाओं से भी दिखाया गया है। व्युत्पत्ति का विषय निरन्तर शोध का विषय है। आशा है, जब तक अन्यथा प्रामाणिक व्युत्पत्ति की नई दिशा नहीं प्राप्त होती, तब तक इसे एक प्रामाणिक ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

डॉ० नरेन्द्र व्याम
प्रधान सम्पादक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली।

'हिन्दी शब्द-सागर' एवं 'मानक हिन्दी कोश' में शब्दों की व्युत्पत्ति की दृष्टि से अनेक कमियाँ रह गई हैं। 'श्रीधर-भाषा-कोष' एवं 'भाषा-शब्द-कोष' (डॉ० रमाशङ्कर शुक्ल 'रसाल) भी व्युत्पत्ति की दृष्टि से अपूर्ण रहे। वास्तविकता यह है कि अपभ्रंश का बहुत सा साहित्य 'हिन्दी शब्द सागर' (प्रथम संस्करण) के सम्पादन के समय तक प्रकाश में नहीं आया था और बाद के संस्करण में दी गई सभी व्युत्पत्तियों को समीचीन नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी में एक प्रामाणिक व्युत्पत्ति-कोश का अभाव बना रहा। वस्तुतः प्रस्तुत 'हिन्दी व्युत्पत्ति-कोश' एक सीमा तक इस अभाव की पूर्ति कर सकेगा, ऐसा विश्वास है। इस कोश की निम्नलिखित विशेषताएँ लक्ष्य करने योग्य हैं—इसमें अनेक ऐसे अपभ्रंश, अवहट्ट तथा देशज शब्दों का ग्रहण किया गया है, जिनका पूर्व प्रकाशित कोशों में समावेश नहीं हो पाया है। वैदिक संस्कृत, संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अवहट्ट में क्रमिक विकास दिखाते हुए यत्र-तत्र भारतीय प्रादेशिक भाषाओं एवं बोलियों में प्रयुक्त शब्दावली का उल्लेख करने के साथ शब्दों की व्युत्पत्ति के निर्धारण में भाषावैज्ञानिक दृष्टि का सन्निवेश है। यह भी उल्लेख्य है कि इसमें जिन मूल शब्दों से व्युत्पत्ति दिखाई गई है, वे संस्कृत के प्राचीन एवं अर्वाचीन कोशों में उपलब्ध हैं तथा प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट के शब्दों को भी प्रामाणिक शब्द-कोशों एवं साहित्यिक रचनाओं से ही लिया गया है। अतः व्युत्पत्तियों की विश्वसनीयता ध्यान देने योग्य है। मेरा विश्वास है कि विद्वज्जन और जिज्ञासु इस प्रयत्न का स्वागत करेंगे।

(डॉ०) जयचन्द्र राय
प्राचार्य, एम० एम० एच० कालिज, गाजियाबाद।

शब्दों की व्युत्पत्ति निश्चित करना उनके जन्म की उस स्थिति को प्रत्यक्ष करना है जिसमें उसका बाह्य ध्वनि रूप तथा अन्तः संकेतित अर्थ दोनों शिशु के शैशव-काल-सदृश मनोरम होते हैं। यह प्रत्यक्षीकरण रमणीय तो होता है, किन्तु उनके शब्द-कोशों, विभिन्न भाषाओं और बोलियों के साहित्य के अवलोकन रूपी बीहड़ पथ को पार करने के पश्चात् ही सम्भव हो पाता है। डॉ० नरेश कुमार ने इस बीहड़ पथ को पार कर 'हिन्दी व्युत्पत्ति-कोश' में इस प्रत्यक्षीकरण का श्लाघ्य प्रयत्न किया है। इसमें पहली बार विभिन्न प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग कर वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक-से-अधिक शब्दों की व्युत्पत्ति दी गई है जो अब तक प्रकाश में आए कार्य को आगे बढ़ाती है।

डा० एल० बी० राम अनन्त
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
एम० एम० एच० कालिज, गाजियाबाद।

डॉ० नरेश कुमार का 'हिन्दी व्युत्पत्ति कोश' मेरे ज्ञान में हिन्दी में इस प्रकार का पहला प्रयास है। यह एक ऐतिहासिक श्रीगणेश है। यह हिन्दी का नया निरुक्त है। मेरा विश्वास है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र में विद्वानों और शोधार्थियों के लिए यह ग्रन्थ बहुत सहायक सिद्ध होगा। सुधी लेखक ने भारतीय एवं विदेशी भाषाओं से हिन्दी शब्दों की तुलना करके बहुत [illegible] कार्य किया है। वस्तुतः भारतीय वाङ्मय में यह एक मील-प्रस्तर है।

डॉ० रामकृष्ण कौ[illegible]
अध्यक्ष, हिन्दी [illegible]
लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद, गाजिय[illegible]

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

इण्डो-विजन प्राइवेट लिमिटेड,
II ए-२२० नेहरू नगर, गाजियाबाद-२०१००१